अभिधम्म-मूलटीका

संसोधको

प्रो. रामशङ्करत्रिपाठी

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालयः
वाराणसी

पालि-ग्रन्थमाला

[७]

भदन्ताचरियबुद्धघोस-विरचिता

अभिधम्म-मूलटीका

अनुटीका-सहिता

संशोधको

प्रो० रामशङ्करत्रिपाठी

पालि-बुद्धदस्सनाचरियो समणविज्जासंकाय-
बुद्धदस्सनविभागपमुखो च
सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालये

सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयः

PĀLI-GRANTHAMĀLĀ

[Vol. 7]

Abhidhammapitake

AṬṬHASĀLINIYĀ DHAMMASAṄGAṆI-AṬṬHAKATHĀYA

BHADANTĀCARIYA-ĀNANDATTHERENA KATĀ

LĪNATTHAPADAVAṆṆANĀ NĀMA

ABHIDHAMMA-MŪLAṬĪKĀ

SĀ CA

Bhadantācariya Dhammapālattherena Viracitāya

ANUṬĪKĀYA SAMANNĀGATĀ

EDITED BY

PROF. RĀMAŚAṄKARA TRIPĀṬHĪ

Pali-Buddhadassanācariyo Samaṇavijjāsaṅkāya-

Buddhadassanavibhāgapamukho ca

Sampurnanand Sanskrit University

VARANASI

1988

Research Publication Supervisor—
Director, Research Institute,
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi.

Published by—
Dr. Harish Chandra Mani Tripathi.
Publication Officer,
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi–221 002.

Available at—
Sales Department,
Sampurnanand Sanskrit University
Varanasi–221 002.

First Edition, 1000 Copies
Price Rs. 70·00

Printed by—
VIJAYA PRESS,
Sarasauli,
Varanasi.

पालि-ग्रन्थमाला

[७]

अभिधम्मपिटके

अट्ठसालिनिया धम्मसङ्गणि-अट्ठकथाय

भदन्ताचरिय-आनन्दत्थेरेन कता

लीनत्थपदवण्णना नाम

अभिधम्म-मूलटीका

सा च

भदन्ताचरिय-धम्मपालत्थेरेन विरचिताय

अनुटीकाय समन्नागता

संसोधको

प्रो० रामशङ्करत्रिपाठी

पालि-बुद्धदस्सनाचरियो समणविज्जासंकाय-
बुद्धदस्सनविभागपमुखो च
सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालये

वाराणस्याम्

२०४५ तमे वैक्रमाब्दे २५३२ तमे बुद्धाब्दे १९८८ तमे ख्रैस्ताब्दे

अनुसन्धानप्रकाशनपर्यवेक्षकः—
निदेशकः, अनुसन्धानसंस्थानस्य
सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालये
वाराणसी

□

प्रकाशकः—
डॉ० हरिश्चन्द्रमणित्रिपाठी
प्रकाशनाधिकारी,
सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य
वाराणसी–२२१ ००२.

□

प्राप्तिस्थानम् —
विक्रयविभागः,
सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य
वाराणसी–२२१ ००२.

□

प्रथमं संस्करणम्, १००० प्रतिरूपाणि
मूल्यम्—७०.०० रूप्यकाणि

□

मुद्रकः—
विजय-प्रेस,
सरसोली,
वाराणसी।

प्राक्कथन

वस्तुतः वर्तमान युग बौद्ध-विद्याओं के पुनर्जागरण का युग है। पूरे विश्व में बौद्ध-विद्याओं का बड़े पैमाने पर अध्ययन हो रहा है। परम्परागत बौद्ध-देशों में ही नहीं, अपितु यूरोप, अमेरिका आदि अनेक देशों में इनके अध्ययन के लिए अनेक विद्या-संस्थान और विश्वविद्यालयों में नये विभाग खोले गये हैं, जिनमें बहुसंख्यक विद्वान् महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का सम्पादन, अनुवाद, अध्ययन एवं अनुसन्धान आदि कार्य कर रहे हैं। पालि, संस्कृत, तिब्बती, चाइनीज़, सिंहली, बर्मी आदि भाषाएँ बौद्ध-अध्ययन की प्रमुख स्रोत-भाषाएँ हैं। इन भाषाओं के ज्ञान के बिना कोई भी बौद्ध-अध्ययन प्रायः अधूरा रहता है। अतः विदेशों में इन भाषाओं के अध्ययन की पूरी व्यवस्था के साथ-साथ विश्व के किसी कोने में प्रकाशित ग्रन्थों से समृद्ध पुस्तकालयों की भी सुविधा है। इधर वहाँ के विद्वानों ने अनूदित ग्रन्थों पर निर्भर न रहकर मूल ग्रन्थों के आधार पर अपना अध्ययन प्रारम्भ किया है। प्रामाणिक अध्ययन के लिए उनका यह महनीय एवं अनुकरणीय प्रयास है।

भगवान् बुद्ध भारतवर्ष में उत्पन्न हुए थे। अपनी शिक्षाओं के द्वारा उन्होंने इस देश को गौरवान्वित किया। प्राचीन काल में विश्वभर के विद्वान् अपनी जिज्ञासा की शान्ति के लिए यहाँ के नालन्दा, विक्रमशिला आदि विद्या-संस्थानों में आते रहे। यहाँ के मनीषियों के सत्प्रयास एवं मुक्त विद्या-दान से भारत वर्ष को जगद्गुरु होने का गौरव प्राप्त हुआ। दैवदुर्विपाक से भारत से बौद्ध-विद्याओं का लोप हो गया। इधर पिछली शताब्दी से विद्वानों का ध्यान इस ओर आकृष्ट हुआ है। विदेशी विद्वानों ने भी इस दिशा में महत्त्वपूर्ण योगदान किया है। पालि-भाषा में उपलब्ध बौद्ध-विद्याओं का अध्ययन अपेक्षाकृत पहले प्रारम्भ हुआ। इधर महायान और बौद्ध-तन्त्र के अध्ययन की ओर विद्वानों की रुचि जागरित हुई है। विश्व के विद्वान् भगवान् बुद्ध की जन्मभूमि भारत के विद्वानों से इस दिशा में स्वभावतः सविशेष आलोक और निर्देश की अपेक्षा करते हैं; किन्तु खेद है कि भारत में बौद्ध-अध्ययन का संगठित और योजनाबद्ध प्रयास नहीं हो रहा है। केन्द्रीय शासन, प्रादेशिक शासन और विश्व-विद्यालयों द्वारा इस दिशा में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रयास हो रहे हैं; किन्तु उससे हमें तृप्त नहीं होना चाहिए। अन्ताराष्ट्रिय सद्भाव, भ्रातृभाव, आपसी सौमनस्य एवं शान्ति के लिए भी इस प्रकार के अध्ययन की नितान्त आवश्यकता है।

भारतवर्ष के समस्त विश्वविद्यालयों में सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय ही एकमात्र ऐसी उच्च शिक्षा-संस्था है, जहाँ प्राच्य-विद्याओं का प्राचीन परिपाटी से मूल-

ग्रन्थाधारित तलस्पर्शी अध्ययन-अध्यापन होता है। यहाँ बौद्ध-विद्याओं से सम्बद्ध दो विभाग हैं, यथा—पालि-विभाग और बौद्ध-दर्शन-विभाग। यद्यपि ये दोनों विभाग अध्यापक-संख्या और अध्ययन की आधुनिक सामग्री की दृष्टि से पूर्ण विकसित नहीं कहे जा सकते, फिर भी अध्ययनाध्यापन के स्तर, प्रकाशन, अनुसन्धान, सेमिनार और सम्मेलनों के आयोजन की दृष्टि से इन विभागों की उपलब्धि पूर्ण विकसित विभागों की तुलना में किसी भी तरह न्यून नहीं है।

बुद्धत्व-प्राप्ति के अनन्तर ४५ वर्षों तक भगवान् बुद्ध ने लगातार भारत के विभिन्न जनपदों में चारिका करते हुए सद्धर्म की देशना की। उनके महापरिनिर्वाण के अनन्तर उनके शिष्यों ने सद्धर्म की रक्षा की दृष्टि से उनका तीन पिटकों में संग्रह किया, यथा—विनयपिटक, सूत्रपिटक एवं अभिधर्मपिटक। विनयपिटक में प्रमुखरूप से भिक्षु-भिक्षुणियों से सम्बद्ध आचार निर्दिष्ट है। सूत्रपिटक में सामान्य गृहस्थ-जनों के लिए दान, शील, ध्यान, सेवा आदि नैतिक और धार्मिक शिक्षाओं का निरूपण है। इन दोनों में तत्कालीन भारत की संस्कृति की पर्याप्त झलक मिलती है। अभिधर्मपिटक में सात ग्रन्थ संगृहीत हैं—धम्मसंगणि, विभंग, धातुकथा, पुग्गलपञ्ञत्ति, यमक, पट्ठान एवं कथावत्थु। इनमें धम्मसंगणि शीर्ष-स्थानीय है। इसमें जिन धर्मों का विवेचन किया गया है, प्रायः उन्हीं धर्मों का विभिन्न शैलियों में एवं विभिन्न प्रकार के वर्गीकरण द्वारा शेष ग्रन्थों में निरूपण किया गया है। पिटक-साहित्य पर बाद में अट्ठकथा-साहित्य का निर्माण हुआ। अट्ठकथा पर मूलटीकाएँ और उन पर अनुटीकाएँ रची गईं।

प्रस्तुत ग्रन्थ अभिधर्मपिटक के प्रमुख ग्रन्थ धम्मसंगणि की मूल-टीका और उस पर अनुटीका सम्पूर्ण त्रिपिटक का नागरी-अक्षरों में संस्करण एवं प्रकाशन नवनालन्दा महाविहार से हो चुका है। अधिकांश अट्ठकथाएँ भी वहाँ से प्रकाशित हो चुकी हैं; किन्तु मूलटीका और अनुटीका-साहित्य का अभी तक देव-नागरी-लिपि में प्रकाशन कहीं से भी नहीं हुआ है। हमें प्रसन्नता है कि सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय ने सर्वप्रथम यह कार्य सम्पन्न किया है। शेष मूलटीकाओं और अनुटीकाओं का योजना-बद्ध प्रकाशन भी यहीं से हो, ऐसी हमारी कामना है। बौद्ध-विद्याओं से सम्बद्ध पालि-विभाग और बौद्धदर्शन-विभाग इस दिशा में प्रयत्नशील एवं कार्यरत हैं।

पालिभाषा का वाङ्मय अत्यन्त विशाल है। यह भारतीय संस्कृति की अमूल्य निधि है। पालि, संस्कृत एवं प्राकृत भारतीय संस्कृति की संवाहिका भाषाएँ हैं। संस्कृत विश्वविद्यालय इन तीनों भाषाओं के वाङ्मय की सुरक्षा और विकास के लिए संस्थापित है। हमें सन्तोष है कि विश्वविद्यालय इस दिशा में अपने सीमित साधनों के बावजूद ठोस प्रगति कर रहा है।

बौद्ध अभिधर्मशास्त्र वस्तुतः प्राचीन चित्तविश्लेषण-शास्त्र है। मनोविज्ञान के अध्ययन की दृष्टि से इसका अत्यधिक महत्त्व है। भारतीय दर्शनों ने, विशेषतः योग-शास्त्रों ने मन का सूक्ष्म विश्लेषण किया है। बौद्ध-आचार्यों ने तो इस दिशा में अभूतपूर्व कार्य किया है। चित्त और चित्तवृत्तियों (चैतसिकों) का जितना सूक्ष्म, गम्भीर एवं विस्तृत विवेचन बौद्ध अभिधर्म शास्त्रों में उपलब्ध है, वह आश्चर्यजनक है। इसका एक कारण भी है। बौद्ध आत्मा और ईश्वर के अस्तित्व को नकारते हैं। फलतः व्यक्तित्व के विश्लेषण के लिए उनके अध्ययन का एकमात्र केन्द्र-बिन्दु मन ही अवशिष्ट रहता है। इस विषय पर जितना विशाल साहित्य पालि, बौद्ध-संस्कृत ग्रन्थों एवं सम्बद्ध बौद्ध-भाषाओं के वाङ्मय में उपलब्ध है, वह विश्व की किसी भी भाषा में अन्यत्र दुर्लभ है। इधर आधुनिक मनोविज्ञान का प्रभूत विकास एवं विपुल विस्तार हुआ है। बौद्धप्रमुख भारतीय चित्तविश्लेषण शास्त्रों के साथ उसका तुलनात्मक अध्ययन न केवल मनोविज्ञान शास्त्र के विकास के लिए, अपितु लोक-कल्याण की दृष्टि से भी अत्यधिक महत्त्वपूर्ण होगा। निःसन्देह इस प्रकार के अध्ययन से मनोवैज्ञानिकों के सम्मुख उपस्थित अनेक समस्याओं का समाधान होगा और अनेक नये तथ्य प्रकाश में आयेंगे। हमारे विचार में 'भारतीय मनोविज्ञान-शास्त्र' के अध्ययन एवं अनुसन्धान की एक महत्त्वाकांक्षिणी योजना प्रस्तुत करना संस्कृत विश्व-विद्यालय के सर्वथा अनुरूप होगा।

बौद्धदर्शन-विभाग के अध्यक्ष प्रो० रामशंकर त्रिपाठी हमारे धन्यवाद के पात्र हैं, जिनके सत्प्रयास से यह महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ प्रथम बार देवनागरी-लिपि में सम्पादित एवं प्रकाशित होकर विद्वानों के समक्ष प्रस्तुत है। उन्होंने इससे पहले भी अनेक पालि-अभिधर्म और बौद्धदर्शन-प्रस्थान के प्रामाणिक ग्रन्थ देकर निश्चितरूप से बौद्ध-अध्ययन को आगे बढ़ाया है। भविष्य में भी इस दिशा में उनसे बहुत आशाएँ हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ आपके हाथों में है। सुधी जन गुण-दोष का विवेचन करेंगे।

धन्यवाद।

शिवरात्रि
१७ फरवरी, १९८५

रामकरण शर्मा
कुलपति

भूमिका

लोक में बुद्ध का उत्पाद दुर्लभ है[1]। उनके उत्पाद से निश्चय ही मानव जाति का गौरव बढ़ा है। चारों ओर के हाहाकार, उत्पीड़न एवं अभावों से ग्रस्त इस संसार में भी मनुष्य को एक प्रकार का आश्वासन प्राप्त हुआ और बुद्धत्व के रूप में उसे एक आदर्श प्राप्त हुआ। यही कारण है कि उनका धर्म उनके जीवन काल में ही अत्यन्त लोकप्रिय हो गया और लोग अहमहमिकया उसमें प्रविष्ट होने लगे। धर्मों के इतिहास में यह घटना अभूतपूर्व है।

बुद्धत्व प्राप्ति के अनन्तर जीवन के अन्तिम क्षण पर्यन्त लोक के अनन्त सुख और कल्याण के लिए जो उन्होंने निरन्तर धर्मदेशना की, वह धर्म और विनय के रूप में प्रसिद्ध है। उनका धर्म त्रिधा विभक्त है, यथा—परियत्ति, प्रतिपत्ति और प्रतिवेध[2]। समस्त बुद्धवचन 'परियत्ति' नामक सद्धर्म है और यही बुद्धशासन की आधारशिला है। इस 'परियत्ति' धर्म के होने पर ही अन्य प्रतिपत्ति और प्रतिवेध धर्म सुरक्षित रह सकते हैं। इसीलिए सद्धर्म की चिरस्थिति की कामना से महाकाश्यप आदि भिक्षु प्रमुखों ने 'परियति' नामक बुद्धवचनों का संगायन किया।

संगीतियाँ

प्रथम संगीति—भगवान् बुद्ध के परिनिर्वाण के बाद अभी एक सप्ताह भी नहीं बीता था कि पावा और कुसिनारा के बीच ५०० भिक्षुओं के साथ चारिका करते हुए महाकाश्यप ने सुभद्र नामक एक वृद्ध प्रव्रजित को यह कहते हुए सुना—"बस, आयुष्मानों, मत शोक

१—(क) दुर्लभा अष्टाक्षणविनिवृत्तिः, दुर्लभो मनुष्यभावप्रतिलम्भ, दुर्लभा क्षणसम्पद्विशुद्धिः। दुर्लभो बुद्धोत्पादः।

द्र०—गण्डव्यूहसूत्रम्, पृ० ९०।

(ख) मानुष्यं दुर्लभं लोके बुद्धोत्पादोऽतिदुर्लभः।
ततोऽपि श्रद्धाप्रव्रज्याप्रतिपत्तिः सुदुर्लभा॥
बोधौ चित्तं दृढं सर्वसत्त्वानामनुकम्पया।
सर्वदुःखप्रशान्त्यर्थं दुर्लभानां परम्परा।

द्र०—बोधिचर्यावतारे उद्धृतम्, पृ० ५।

२—परियत्तीति तीणि पिटकानि, पटिवेधो ति सच्चपटिवेधो, पटिपत्तीति पटिपदा।

द्र०—विभङ्गट्ठकथा, पृ० ४३५।

करो, मत विलाप करो, हम उस महाश्रमण (भगवान् बुद्ध) से अच्छी तरह मुक्त हो गए। हम उसके द्वारा सदा यह कहते हुए उत्पीड़ित किये जाते थे—'यह तुम्हें विहित है, यह तुम्हें विहित नहीं है'। अब हम जो चाहेंगे करेंगे, जो नहीं चाहेंगे, नहीं करेंगे';[१] सुभद्र के ये वचन सुनकर महाकाश्यप जैसे उत्तरदायी भिक्षुओं का चिन्तित होना स्वाभाविक था। उन्होंने सोचा, अधर्म और अविनय प्रकट हो रहा है। अतः आवश्यक है कि शासन की सुरक्षा के लिए धर्म और विनय का संगायन किया जाए[२]।

इस संगीति के लिए महाकाश्यप ने पाँच सौ अर्हत् भिक्षुओं को चुना। स्वयं महाकाश्यप इस संगीति के अध्यक्ष थे। उन्होंने धर्म सम्बन्धी प्रश्न आनन्द से तथा विनय सम्बन्धी प्रश्न उपालि से पूछे। अन्त में भिक्षुओं ने उनका संगायन किया। यह संगीति भगवान् बुद्ध के महापरिनिर्वाण के अनन्तर चतुर्थ मास में राजगृह की सप्तपर्णी गुहा में आयोजित की गई थी। मगधशासक अजातशत्रु इसमें सहायक थे। यह संगीति लोक में 'पंचशतिका' नाम से विख्यात है।

द्वितीय संगीति—भगवान् बुद्ध के परिनिर्वाण के सौ वर्ष बाद एक समय आयुष्मान् यश ने वैशाली के वज्जिपुत्तक भिक्षुओं को विनय विपरीत दश वस्तुओं का आचरण करते हुए देखा, जिनमें सोने, चाँदी का ग्रहण भी था[३]। उनका यह आचरण निष्ठावान् भिक्षुओं की दृष्टि में निन्दित था। इनका निर्णय करने के लिए वैशाली में संगीति का आयोजन किया गया, जिसमें सात सौ अर्हद् भिक्षु सम्मिलित हुए। यह संगीति आठ मास तक चलती रही। महास्थविर रेवत इस संगीति के नायक थे। सभा ने वैशाली के भिक्षुओं के दश वस्तुविषयक आचरण को विनयविपरीत निश्चित किया। तदनन्तर वहाँ धर्म एवं विनय का संगायन किया। बौद्ध जगत् में यह संगीति 'सप्तशतिका' नाम से विख्यात है। कालाशोक इस संगीति में प्रमुख सहायक थे।

१—अलं आवुसो, मा सोचित्थ, मा परिदेवित्थ। सुमुत्ता मयं तेन महासमणेन। उपद्दुता च होम—'इदं वो कप्पति, इदं वो न कप्पती' ति। इदानि पन मयं यं इच्छिस्साम तं करिस्साम, यं न इच्छिस्साम न तं करिस्सामा ति। द्र०—दी० नि० द्वि० भा०, पृ० १२५।

२—हन्द, मयं आवुसो, धम्मं च विनयं च संगायाम। पुरे अधम्मो दिप्पति, धम्मो पटिबाहिय्यति। अविनयो दिप्पति, विनयो पटिबाहिय्यति। द्र०—चुल्ल० (विनयपिटक), पृ० ४१६।

३—कप्पति सिंगिलोणकप्पो, कप्पति द्वयंगुलकप्पो, कप्पति गामन्तरकप्पो, कप्पति आवासकप्पो, कप्पति अनुमतिकप्पो, कप्पति आचिण्णकप्पो, कप्पति अमथितकप्पो, कप्पति जळोगिं पातुं, कप्पति जातरूपरजतं ति। द्र०—चुल्ल० (विनयपिटक), पृ० ४१६।

वैशाली के वज्जिपुत्तक भिक्षुओं ने द्वितीय संगीति के इन महास्थविरों का निर्णय अमान्य कर दिया और कौशाम्बी में उन्होंने एक पृथक् संगीति का आयोजन किया, उसमें दस हजार भिक्षु सम्मिलित हुए। उन्होंने संगीति में अपने मत के अनुकूल निर्णय किए। यह सभा 'महासंघ' या 'महासंगीति' कहलाई तथा इन निर्णयों को माननेवाले 'महासांघिक' कहलाए। 'दीपवंस' के अनुसार महासंगीति में सम्मिलित भिक्षुओं ने शासन को एकदम विपरीत कर डाला। मूलसंघ में भेद डालकर उन्होंने एक नय संघ बना लिया। उन्होंने सूत्रों के संग्रह का क्रम बदल दिया तथा विनय और पाँचो निकायों में सूत्रों का अर्थ और क्रम बदल दिया तथा कुछ स्वरचित सन्दर्भ भी जोड़ दिये[१]।

अष्टादश बौद्ध निकाय—इस विभाजन से स्थविरवादी और महासांघिक दो निकाय विकसित हुए। कालान्तर में महासांघिक भी दो भागों में विभक्त हो गए, यथा—(१) एक-व्यावहारिक और (२) गोकुलिक। गोकुलिक से पुनः दो शाखाएँ निकलीं—१. प्रज्ञप्तिवादी और २. बाहुलिक (बाहुश्रुतिक)। बाहुलिक से चैत्यवादी नामक एक और शाखा विकसित हुई। इस तरह महासांघिक से पाँच निकाय विकसित हुए जो महासांघिक के साथ कुल छह निकाय होते हैं। दूसरी ओर स्थविरवादी निकाय भी दो भागों में विभक्त हुआ—(१) वज्जि-पुत्तक (वात्सीपुत्रीय) एवं (२) महीशासक। व त्सीपुत्रीय चार भागों में विभक्त हुए यथा—१. धर्मोत्तरीय, २. भद्रयाणिक, ३. छन्नागरिक (षाण्णागरिक) ४ सम्मितीय। महीशासक भी दो शाखाओं में विभक्त हुए—१. धर्मगुप्तिक एवं २. सर्वास्तिवादी। सर्वास्तिवादियों से क्रमशः काश्यपीय, काश्यपीय से सांक्रान्तिक, सांक्रान्तिक से सूत्रवादी (सौत्रान्तिक) निकाय विकसित हुए। इस प्रकार स्थविरवादी निकाय से ११ निकाय विकसित हुए, जो स्थविर-वादी निकाय के साथ कुल १२ होते हैं। दोनों प्रकार के कुल निकायों की संख्या १८ होती है।

इन १८ निकाय नामों के अतिरिक्त महावंस, कथावत्थु-अट्ठकथा आदि ग्रन्थों में अन्य निकायों के नाम भी उपलब्ध होते हैं, यथा—राजगिरिक, सिद्धत्थक, पुब्बसेलिय, अपरसेलिय, हेमवत, वजिरिय, उत्तरापथक, हेतुवादी एवं वेतुल्लक। इनके अतिरिक्त शारिपुत्रपरिपृच्छा, भव्य, वसुमित्र, विनीतदेव आदि आचार्यों के अनुसार इन निकायों की भिन्न सूचियाँ भी उपलब्ध होती हैं। अपि च, सर्वास्तिवादी विनय, ह्वेनसांग एवं तारानाथ आदि के अनुसार

१—महासंगीतिका भिक्खू विलोमं अकंसु सासनं।
भिन्दित्वा मूलसंघं अञ्ञं अकंसु संघं॥
अञ्ञथा संगहितं सुत्तं अञ्ञथा अकरिंसु ते।
अत्थं धम्मं च भिन्दिसु ये निकायेसु पंचसु॥
द्र०—दीपवंस।

संगीतियों के वर्णन, निकायभेद के कारण आदि में कुछ भिन्नता भी पाई जाती है। विस्तार-भय से वे सब यहाँ छोड़े जा रहे हैं।

तृतीय संगीति—बुद्ध के परिनिर्वाण के २३६ वर्ष पश्चात् सम्राट् अशोक के काल में पाटलिपुत्र में तृतीय संगीति आयोजित की गई, जिसमें एक सहस्र भिक्षु सम्मिलित हुए थे। इसके अध्यक्ष मोग्गलीपुत्त तिस्स महास्थविर थे। यह संगीति नौ मास तक चलती रही। इसी संगीति के बीच मोग्गलीपुत्त तिस्स ने अपने से भिन्न अवशिष्ट १७ बौद्ध निकायों का निराकरण करते हुए 'कथावत्थु' नामक ग्रन्थ की रचना की, जिसे अभिधम्मपिटक में स्थान मिला। सम्पूर्ण अभिधम्मपिटक का अन्तिम स्वरूप इस संगीति तक निश्चित हो चुका था। इस संगीति की सबसे बड़ी उपलब्धि बौद्ध धर्म का विदेशों में प्रचार के लिए भिक्षुओं को भेजने का निश्चय करना था। इसी निश्चय के अनुसार सम्राट् अशोक ने अपने विस्तृत साम्राज्य के विभिन्न प्रान्तों, सीमान्तों तथा यवन, कम्बोज, गान्धार, सुवर्ण भूमि, सिहलद्वीप आदि में बौद्ध धर्म के प्रचारार्थ धर्मोपदेशक भेजे।

चतुर्थ संगीति—सम्यक् सम्बुद्ध के परिनिर्वाण से ४५० वें वर्ष में श्रीलंका द्वीप में राजा वट्टगामणि अभय के शासन काल (प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व) में चतुर्थ संगीति आयोजित की गई। यह सिंहल द्वीप के मातुल जनपद की 'आलोक' नामक गुहा मे सम्पन्न हुई। इसमें पाँच सौ अर्हद् भिक्षु सम्मिलित हुए। इसके अध्यक्ष महास्थविर धर्मरक्षित थे। भगवान् बुद्ध से लेकर अब तक उनके उपदेशों का अध्ययन-अध्यापन मौखिक रूप से ही प्रचलित था। इस संगीति में पहली बार समस्त बुद्धवचन लिपिबद्ध किये गए। इसलिए यह संगीति 'पुस्तकारोपण' संगीति कहलाती है।

पंचम संगीति—२४१५ वें बुद्धाब्द में ब्रह्मदेश (बर्मा) के धार्मिक राजा 'मित्तुं' के शासनकाल में उनकी सहायता से पंचम संगीति का आयोजन हुआ। यह बर्मा के 'माण्डले' नाम से प्रसिद्ध रत्नपुंज नामक नगर में सम्पन्न हुई। इसमें २४०० भिक्षु सम्मिलित हुए थे। इसके अध्यक्ष दक्षिणारामवासी त्रिपिटकधर भदन्त जागर महास्थविर थे। इस संगीति में समस्त बुद्ध वचन शिलापट्ट पर अंकित किये गए। अतः यह संगीति 'शिलाक्षरारोपण' संगीति के नाम से प्रसिद्ध है।

षष्ठ संगीति—बर्मा के तत्कालीन प्रधानमन्त्री ऊ नू द्वारा संस्थापित बुद्धशासन समिति ने सद्धर्म की चिरस्थिति एवं बहुजन के हित-सुख के लिए षष्ठ संगीति आयोजित करने का निश्चय किया। तदनुसार भगवान् बुद्ध के परिनिर्वाण के २५०० वें वर्ष में बर्मा की राजधानी रंगून में 'श्रीमंगल' नामक स्थान पर लोकशम (कम्भाए) नामक चैत्य के समीप इसी

कार्य के लिए नवनिर्मित महापाषाण शैलगुहा में षष्ठ संगीति आयोजित की गई। भदन्त रेवत महास्थविर इस संगीति के अध्यक्ष थे। इसमें देश-विदेश के २५०० भिक्षुओं ने सम्मिलित होकर सम्पूर्ण त्रिपिटक का संशोधन करके संगायन किया।

बुद्धवचन

बुद्धगया में बोधि प्राप्ति के अनन्तर निरन्तर ४५ वर्षों तक मध्य मण्डल में चारिका करते हुए विभिन्न स्थानों पर भगवान् बुद्ध ने जो उपदेश दिए, उनके तत्कालीन शिष्यों ने उन्होंने कण्ठस्थ कर लिया, वे ही बुद्ध वचन कहलाते हैं। यह अत्यन्त विशाल भण्डार है। बुद्ध के महापरिनिर्वाण के बाद उनके महास्थविर शिष्यों ने बुद्धवचनों की शुद्धि और सुरक्षा की दृष्टियों से उपर्युक्त छह संगीतियों में उनका संगायन किया और उनका विभिन्न भागों में वर्गीकरण किया। प्रथम संगीति के वर्णन प्रसंग में यद्यपि 'धम्मं विनयं च संगायाम' [चुल्ल०] इस वचन के अनुसार धर्म और विनय के संगायन की ही बात उल्लिखित है, वहाँ अभिधर्म के संगायन का उल्लेख नहीं है, फलतः कुछ इतिहासवेत्ता यह निष्कर्ष निकालते हैं कि अभिधर्मपिटक की रचना प्रथम संगीति से परवर्ती काल की है, तथापि यह निष्कर्ष बौद्ध परम्परा को मान्य नहीं है। आचार्य बुद्धघोष ने प्रथम संगीति के अवसर पर ही अभिधर्म के संगायन भी स्पष्ट उल्लेख किया है[१]। ह्वेनसांग भी इससे सहमत है। इतना निश्चित है कि राजगृह की प्रथम संगीति में बुद्धवचनों का जो स्वरूप निश्चित हुआ था, वही वर्तमान त्रिपिटक का आधार है। आचार्य बुद्धघोष के मतानुसार प्रथम संगीति के अवसर पर ही महास्थविरों ने समस्त बुद्धवचनों का तीन पिटक, पाँच निकाय, नौ अंग और ८४,००० धर्मस्कन्धों में विभाजन कर दिया था। जो त्रिपिटक साहित्य आज हमें उपलब्ध है, यह वही है, जिसका पाटलिपुत्र की तृतीय संगीति में संगायन हुआ था और जिसे कुछ ही काल बाद सम्राट् अशोक के पुत्र भिक्षु महेन्द्र धर्मप्रचार के लिए श्रीलंका ले गये थे।

१. त्रिपिटक

त्रिपिटक बुद्धवचनों का एक वर्गीकरण है। पिटक तीन हैं, यथा—विनयपिटक, सूत्रपिटक और अभिधर्म पिटक। पिटक पिटारी को कहते हैं। पिटारी की भाँति होने से एक प्रकार का संग्रह 'पिटक' कहलाता है।

१—धम्मसंगणि-विभंगं च कथावत्थुं च पुग्गलं।
धातु-यमक-पट्ठानं अभिधम्मा ति वुच्चती'ति॥

एवं संवण्णितं सुखुमञाणगोचरं तन्ति संगायित्वा इदं अभिधम्मपिटकं नामा ति वत्वा पंच अरहन्तसतानि सज्झायमकंसु। द्र०—सीलक्खन्धवग्गट्ठकथा।

विनयपिटक—विनय का अर्थ अनुशासन है। जिसमें भगवान् बुद्ध द्वारा प्रज्ञप्त भिक्षु एवं भिक्षुणियों के आचरण से सम्बद्ध नियम संगृहीत हैं; वह विनयपिटक कहलाता है। इसे भिक्षुसंघ का संविधान कह सकते हैं। धार्मिक दृष्टि से इस पिटक का अत्यधिक महत्त्व है। विनय सम्बन्धी आचरण को लेकर ही प्रायः अष्टादश निकायों का विभाजन हुआ। बौद्ध संघ में विनयपिटक के प्रति सर्वदा अत्यधिक समादर रहा है। उन्होंने उसे सूत्र पिटक से भी ऊँचा स्थान दिया है। यह बुद्ध शासन की आयु है। उनका विश्वास है कि जब तक विनयपिटक विशुद्ध रहेगा तब तक बुद्धशासन भी अक्षुण्ण रहेगा।

विनयपिटक के विषय तीन भागों में विभक्त हैं यथा—सुत्तविभंग, खन्धक (स्कन्धक) एवं परिवार। सुत्तविभंग के दो विभाग हैं—पाराजिक एवं पाचित्तिय। खन्धक भी दो भागों में विभक्त है—महावग्ग एवं चुल्लवग्ग। इस तरह विनयपिटक के पाँच भाग हो जाते हैं, यथा—पाराजिक, पाचित्तिय, महावग्ग, चुल्लवग्ग एवं परिवार। पाराजिक एवं पाचित्तिय ही भिक्षुविभंग एवं भिक्षुणीविभंग कहलाते हैं और इन्हीं का सार भिक्षु-प्रातिमोक्ष और भिक्षुणी-प्रातिमोक्ष है।

सूत्रपिटक—इसमें विनय से भिन्न सामान्य बुद्धवचनों का संग्रह है। यह पाँच भागों में विभक्त हैं, यथा—दीघ (दीर्घ) निकाय, मज्झिम (मध्यम) निकाय, संयुत्त (संयुक्त) निकाय, अंगुत्तर (अंकोत्तर) निकाय एवं खुद्दक (क्षुद्रक) निकाय।

सर्वास्तिवादी सूत्रपिटक भी उपर्युक्त पाँच भागों में ही विभक्त हैं। उसमें निकाय के स्थान पर आगम शब्द का प्रयोग किया गया है। सर्वास्तिवादियों का पिटक साहित्य मूलतः संस्कृत में था, किन्तु आज वह पूर्णतया उपलब्ध नहीं है। उसका चीनी अनुवाद उपलब्ध है। उसका अध्ययन हुआ है और पालि-त्रिपिटक के साथ उसका तुलनात्मक अध्ययन भी हुआ है। सर्वास्तिवादी एवं स्थविरवादी सूत्रपिटक और विनयपिटक में मूलभूत समानताएं पाई जाती हैं। केवल विषय विन्यास में थोड़ा-बहुत भेद दिखलाई पड़ता है। यही बात अभिधर्मपिटक के सम्बन्ध में नहीं कही जा सकती। दोनों परम्पराओं में अभिधर्मपिटक की ग्रन्थ संख्या समान होने पर भी विषय वस्तु में समता नहीं है।

क. दीघनिकाय—यह दीर्घ आकार के सूत्रों का संग्रह है। आकार की दृष्टि से जो बुद्धोपदेश लम्बे हैं, वे इस निकाय में संगृहीत हैं। दीघनिकाय में कुल ३४ सूत्र हैं, जो तीन वर्गों में विभक्त हैं, यथा—१. सीलक्खन्धवग्ग, इसमें १-१३ सूत्र हैं। २. महावग्ग, इसमें १० सूत्र (१४-२३) हैं तथा ३. पाथेय्यवग्ग, इसमें ११ सूत्र (२४-३४) हैं।

ख. मज्झिमनिकाय—इसमें मध्यम आकार के सूत्रों का संग्रह है। यह तीन भागों में

विभक्त है, यथा—मूल पण्णास, मज्झिम पण्णास तथा उपरि पण्णास। इसमें कुल १५ वर्ग हैं, जिनमें १५२ सूत्र संगृहीत हैं।

ग. संयुक्तनिकाय—जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट है, इसमें छोटे-बड़े सभी आकार के सूत्रों का संग्रह है। अधिकतर छोटे आकार के सूत्रों की बहुतायत है। बुद्धघोष के अनुसार इसमें ७७६२ सूत्र हैं, जो ५ वर्ग और ५६ संयुक्तों में संगृहीत हैं, यथा—१. सगाथवग्ग में ११ संयुत्त, २. निदानवग्ग में १० (१२–२१) संयुत्त, ३. खन्धवग्ग में १३ (२२–३४) संयुत्त, ४. सळायतनवग्ग में १० (३५–४४) संयुत्त तथा ५. महावग्ग में १२ (४५–५६) संयुत्त हैं।

घ. अंगुत्तरनिकाय—यह सूत्रपिटक का सबसे बड़ा भाग है। इसका विषय पूर्व के तीन निकायों से भिन्न नहीं है, किन्तु प्रतिपादन शैली इसकी अवश्य सबसे विलक्षण है। संख्याबद्ध शैली इसकी विशेषता है। सम्पूर्ण निकाय एक-निपात, दुक-निपात आदि ११ निपातों में विभक्त है। एक एक निपात अनेक वर्गों में विभक्त है तथा एक एक वर्ग में अनेक लघु आकार के सूत्र हैं। बुद्धघोष के अनुसार इसमें कुल ९५५७ सूत्र हैं, जो ११ निपात और १६२ वर्गों में संगृहीत हैं।

ङ. खुद्दकनिकाय—यह सूत्रपिटक का पाँचवाँ मुख्य भाग है। पहले के चार निकायों की भाँति इसमें सूत्र नहीं है, अपितु यह छोटे छोटे स्वतन्त्र ग्रन्थों का संग्रह है। सभी ग्रन्थ बिलकुल छोटे भी नहीं हैं, कुछ तो जातक आदि काफी बड़े ग्रन्थ भी हैं, इसमें कुल १५ ग्रन्थ संगृहीत हैं, किन्तु ग्रन्थ संख्या के बारे में मतभेद भी है। बुद्धघोष के अनुसार १५ ग्रन्थ इस प्रकार हैं—१. खुद्दकपाठ, २. धम्मपद, ३. उदान, ४. इतिवुत्तक, ५. सुत्तनिपात, ६. विमानवत्थु, ७. पेतवत्थु, ८. थेरगाथा, ९ थेरीगाथा, १०. जातक, ११. निद्देस, १२. पटिसम्भिदामग्ग, १३. अपदान, १४. बुद्धवंस तथा १५. चरियापिटक।

सिंहल देशीय परम्परा निद्देस के चूलनिद्देस और महानिद्देस इन दो भागों को दो स्वतन्त्र ग्रन्थ मानकर खुद्दकनिकाय में ग्रन्थों की संख्या १६ मानती है तथा ब्रह्मदेशीय परम्परा पूर्वोक्त १५ ग्रन्थों के अतिरिक्त इन चार ग्रन्थों को भी खुद्दकनिकाय में सम्मिलित करती है, यथा—मिलिन्दपञ्ह, सुत्तसंगह, पेटकोपदेस एवं नेत्तिप्पकरण।

अभिधम्मपिटक—त्रिपिटक का यह तीसरा मुख्य भाग है। इसमें भगवान् बुद्ध द्वारा उपदिष्ट तथ्यपरक दार्शनिक मन्तव्यों का संग्रह है। यह सात प्रकरणों (ग्रन्थों) में विभक्त है, यथा—धम्मसंगणि, विभंग, धातुकथा, पुग्गलपञ्ञत्ति, कथावत्थु, यमक एवं पट्ठान। यद्यपि इन ग्रन्थों में अनेक गम्भीर एवं दुर्बोध दार्शनिक तत्त्वों का विवेचन किया गया है, तथापि संक्षेपतः चित्त, चैतसिक, रूप एवं निर्वाण—ये चार परमार्थ धर्म ही इन सभी

प्रकरणों के सामान्य अभिधेय हैं। इन चार परमार्थ धर्मों का स्पष्ट और अभ्रान्त ज्ञान उत्पन्न करने के लिए इन ग्रन्थों में इनका विविध प्रकार से, संयोग और विभाग करके प्रतिपादन किया गया है। इस प्रकार शैली के भेद से इस अभिधम्मपिटक के सात ग्रन्थों का विभाजन होता है।

अभिधर्मपिटक का उद्भव—स्थविरवादी बौद्ध परम्परा के अनुसार भगवान् बुद्ध ने बुद्धत्व प्राप्ति के अनन्तर सप्तम वर्षावास में त्रायस्त्रिंश देवभूमि में जाकर वहाँ स्थित अपनी माता को लगातार तीन महीने तक विस्तार पूर्वक अभिधर्म का उपदेश किया। साथ ही साथ निर्मित बुद्ध (निर्माणकाय) के रूप में अनवतप्त ह्रद में आकर प्रज्ञावानों में श्रेष्ठ शारीपुत्र को उसी अभिधर्म का मातिका के रूप में नातिविस्तार एवं नातिसंक्षेप पद्धति से उपदेश किया। शारीपुत्र ने भी उस अभिधर्म का व्याख्यान चुने हुए मतिमान् पाँच सौ जिज्ञासु भिक्षुओं को किया। तभी से लेकर अभिधर्म का अध्ययन-अध्यापन भी प्रारम्भ हुआ और संघ में सूत्रधर, विनयधर की भाँति आभिधार्मिक भिक्षु भी होने लगे। आभिधार्मिकों की यह परम्परा शिष्यानुशिष्य क्रम से आगे बढ़ती रही। यद्यपि अभिधर्म का शारीपुत्र से ही प्रारम्भ हुआ और उन्हीं ने सर्वप्रथम पट्ठान का गणनवार स्थापित किया, तथापि भगवान् बुद्ध ही सर्वप्रथम आभिधार्मिक हुए और उनके जीवनकाल में ही शारीपुत्र सहित ५०१ भिक्षु अभिधर्म के ज्ञाता थे। इस प्रकार इस परम्परा के अनुसार अभिधर्मपिटक बुद्धवचन माना जाता है और इसका ही प्रथम दो संगीतियों में संगायन हुआ।

अभिधर्मपिटक का बुद्धवचनत्व—सूत्र और विनय पिटक के बुद्धवचन होने में अधिक विवाद नहीं है, किन्तु अभिधर्मपिटक को बुद्धवचन मानने में प्रारम्भ से ही अत्यधिक विवाद है। यद्यपि स्थविरवादी परम्परा आज जिस रूप में अभिधर्मपिटक उपलब्ध है, उसे उसी रूप में बुद्धवचन मानने की पक्षधर है और भिक्षुसंघ ने भी यत्नपूर्वक उसकी आज तक सुरक्षा की, किन्तु अन्य निकाय (प्रस्थान) वाले भिक्षुओं ने विशेषतः सौत्रान्तिकों ने उनके इस दावे को स्वीकार नहीं किया। अभिधर्मपिटक को बुद्धवचन न माननेवाले कहते हैं कि जैसे सूत्रपिटक में 'एकं समयं भगवा राजगहे विहरति' इत्यादि रूप में सर्वत्र निदान कहा गया है, वैसा निदान अभिधर्म में नहीं है, अतः वह बुद्धवचन नहीं माना जा सकता। इस विषय में स्थविरवादियों का कहना है कि निदान उक्त न होने से उसे बुद्धवचन न मानना युक्त नहीं है, क्योंकि जातक, सुत्तनिपात, धम्मपद इत्यादि में भी उक्त प्रकार का निदान कथित न होने से उनको भी बुद्धवचन न मानने का प्रसंग होगा। अतः निदान का न होना बुद्धवचन न होने में सम्यक् हेतु नहीं है। अभिधर्म सर्वज्ञ भगवान् बुद्धों का ही विषय है, अन्य का नहीं।

पुनश्च, अभिधर्मपिटक में निदान भी है। मण्डलारामवासी तिस्स स्थविर ने "महाबोधिनिदानो एस अभिधम्मो नाम[१]"—इस प्रकार अभिधर्मपिटक का निदान कहा है। गामवासी सुमनदेव स्थविर का कहना है कि परवादी अभिधर्म का निदान जानते ही नहीं, इसलिए उक्त प्रकार का आक्षेप करते हैं। वस्तुतः "एकं समयं भगवा देवेसु विहरति तावतिंसेसु पारिच्छत्तकमूले पण्डुकम्बलसिलायं। तत्र खो भगवा देवानं तावतिंसानं अभिधम्मकथं कथेसि—कुसला धम्मा, अकुसला धम्मा, अब्याकता धम्मा ति[२]"—यह अभिधर्म का निदान ही है।

अपि च, सूत्रों में तो एक ही निदान होता है, जब कि अभिधर्म में दो निदान कथित है, यथा—अधिगम निदान और देशना निदान। इनमें से दीपंकर दशबल से लेकर महाबोधिपर्यंक पर्यन्त 'अधिगम निदान' तथा धर्मचक्रप्रवर्तन से 'देशनानिदान' है।

इन दोनों निदानों के सम्यग् ज्ञान के लिए आचार्य बुद्धघोष ने कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठाये हैं और उनका समाधान भी प्रस्तुत किया है[३], यथा—यह अभिधर्म किससे प्रभावित है, कहाँ परिपक्व हुआ है, कहाँ अधिगत (प्राप्त) हुआ है, कब अधिगत हुआ है, किसने अधिगत किया है, कहाँ विचित (अन्वेषित) हुआ है, कब विचित हुआ है, किसने अन्वेषण किया है, कहाँ देशित हुआ है, किस पुद्गल के लिए देशना की गई है, किस लाभ के लिए देशना की गई है, किसने इसका प्रतिग्रहण किया है, कौन इसे सीखते हैं; कौन शिक्षित हैं, कौन धारण करते हैं, यह किसका वचन है तथा यह किसके द्वारा लाया गया है?

समाधान—बोधि के प्रति अभिनीहार करनेवाली श्रद्धा से प्रभावित है। ५५० जातकों में परिपक्व हुआ है। बोधिवृक्ष के मूल में अधिगत हुआ है। वैशाखी पूर्णिमा की रात्रि में अधिगत हुआ है। सर्वज्ञ बुद्ध ने प्राप्त किया है। बोधिमण्ड में अन्वेषण (विचार) किया गया है। रत्नगृह सप्ताह में अन्वेषित हुआ है। सर्वज्ञ बुद्ध ने अन्वेषण किया है। त्रायस्त्रिंश देवभूमि में देशना की। देवताओं के लिए देशना की गई। चतुर्विध ओघ से निस्तरण (निर्वाण) के लिए देवताओं ने ग्रहण किया। शैक्ष और कल्याण पृथग्जन शिक्षा ग्रहण करते है। क्षीणास्रव अर्हत् शिक्षित हैं। जिनमें योग्यता है, वे धारण करते हैं। अर्हत् भगवान् सम्यक् संबुद्ध का वचन है। आचार्य परम्परा द्वारा यह लाया गया है।

अभिधार्मिकों की वह आचार्य परम्परा इस प्रकार है—सारिपुत्त, भद्दजि, सोभित, पियजाली, पियपाल, पियदस्सी, कोसियपुत्त, सिग्गव, सन्देह, मोग्गलीपुत्त, सुदत्त, धम्मिय,

---

१—द्र०—अट्ठसालिनी, पृ० २६।
२—द्र०—अट्ठसालिनी, पृ० २६।
३—द्र०—अट्ठसालिनी, पृ० २७।

दासक, सोणक और रेवत। इस आचार्य परम्परा ने जम्बूद्वीप (भारत) में बुद्ध के उपदेश काल से लेकर तृतीय संगीति पर्यन्त अभिधर्म को पहुँचाया। तदनन्तर उनके शिष्यों, अनुशिष्यों ने इस क्रम को आगे भी जारी रखा। इसके बाद महिन्द, इट्टिय, उत्तिय, संबल, पंडित, भद्दनाम आदि आचार्य इसे (अभिधर्म को) सिंहल द्वीप ले गए। तदनन्तर इन आचार्यों के शिष्यों, अनुशिष्यों की परम्परा ने इसे आज तक जीवित रखा है।

कथावत्थु का बुद्धवचनत्व—यह सर्वविदित है कि अशोककालीन तृतीय संगीति के अध्यक्ष मोग्गलीपुत्त तिस्स ने भिन्न मतावलम्बी १७ निकायों के मतों का निराकरण करते हुए स्थविरवादी मतों के अनुसार कथावत्थु नामक प्रकरण की रचना की। ऐसी स्थिति में उसे अभिधर्मपिटक के अन्तर्गत बुद्धवचन मानना कथमपि समीचीन नहीं है ?

यह प्रश्न आज ही नहीं, बुद्धघोष के समय में भी ज्वलन्त रूप से विद्यमान था। स्थविरवादी परम्परा, जो सम्पूर्ण अभिधर्मपिटक को बुद्धवचन मानती है, वह भी जिस रूप में आज कथावत्थु उपलब्ध है, उसे आचार्यभाषित ही मानती है, किन्तु उसका कहना है कि भगवान् बुद्ध ने अभिधर्म की देशना करते समय कथावत्थु की देशना के अवसर पर केवल मातिकाओं (मातृकाओं) की स्थापना की और कहा कि मेरे परिनिर्वाण के २१८ वर्ष बाद मोग्गलीपुत्त तिस्स महास्थविर परवादियों का खण्डन और स्वकीयवाद का मण्डन करते हुए इन मातृकाओं का विस्तृत व्याख्यान करेंगे। मोग्गलीपुत्त तिस्स महास्थविर ने भी इस ग्रन्थ का व्याख्यान करते समय अपने स्वयम्भूत ज्ञान से नहीं, अपितु शास्ता के अधिष्ठान से उनके द्वारा प्रदर्शित नय के अनुसार स्थापित मातृकाओं के आधार पर ही व्याख्यान किया। अतः शास्ता द्वारा स्थापित मातृकाओं के आधार पर देशित होने से आचार्यभाषित होने पर भी वह बुद्धभाषित ही है[१]।

कुछ विद्वानों का कथन है कि इसमें अशोक के काल के बाद प्रादुर्भूत अन्धक, अपरशैलीय, पूर्वशैलीय, राजगिरिक, सिद्धार्थक, वैपुल्यक, उत्तरापथिक, हेतुवादी आदि निकायों का भी खण्डन है, अतः यह ग्रन्थ तृतीय संगीति से भी परवर्ती रचना है। किन्तु जिन निकायों (प्रस्थानों) का ऊपर उल्लेख किया गया है, कथावत्थु में उनके नामों का उल्लेख नहीं है, वहाँ तो केवल सिद्धान्तमात्र का उल्लेख है। सम्प्रदायों के नामों का उल्लेख तो अट्ठकथाचार्य बुद्धघोष ने पाँचवीं शताब्दी में किया है। अतः यह सम्भव है कि अशोक के समय सिद्धान्तमात्र का अस्तित्व हो, अभी वे विचार इतने परिपक्व न हुए हों कि उनके साथ किसी निकाय का नाम जोड़ा सके। बुद्धघोष का समय आते आते उन विचारों ने निकाय का स्वरूप ग्रहण कर लिया हो। अतः कथावत्थु में निकायों के नाम का उल्लेख

१—द्र०—अट्ठसालिनी, पृ० ४–५।

न होने से तथा अट्ठकथाकार द्वारा अशोक के बाद के निकायों का उल्लेख किया जाने से यह रचना तृतीय संगीति के बाद की है—ऐसा नहीं माना जा सकता।

सर्वास्तिवादी अभिधर्मपिटक - यह कहा जा चुका है कि स्थविरवादियों एवं सर्वास्तिवादियों के दो पिटकों सूत्र और विनय में पर्याप्त समानता है, किन्तु यही बात अभिधर्मपिटक के बारे में सत्य नहीं है। सर्वास्तिवादियों के अभिधर्मपिटक के सारे ग्रन्थ चीनी भाषा में सुरक्षित हैं। कभी वे मूलतः संस्कृत भाषा में थे, किन्तु आज कोई भी ग्रन्थ पूर्णतया मूल रूप में उपलब्ध नहीं है। सर्वास्तिवादियों का कथन है कि यद्यपि अभिधर्मपिटक मूलतः बुद्धवचनों पर आधृत है, तथापि बाद में आचार्यों ने उनका संकलन किया है। स्थविरवादियों की भाँति उनके अभिधर्म ग्रन्थों की संख्या भी सात ही है।

ग्रन्थ	**आचार्य**
१. ज्ञानप्रस्थानशास्त्र	आर्य कात्यायन
२. प्रकरणपाद	स्थविर वसुमित्र
३ विज्ञानकायपाद	स्थविर देवशर्मा
४. धर्मस्कन्धपाद	आर्य शारीपुत्र
५. प्रज्ञप्तिशास्त्रपाद	आर्य मौद्गल्यायन
६. धातुकायपाद	पूर्ण (या वसुमित्र)
७. संगीतिपर्यायपाद	महाकौष्ठिल्ल

पालि अभिधर्मपिटक के ग्रन्थों के साथ इनका पर्याप्त नामसाम्य परिलक्षित होता है, यथा—

पालि अभिधर्मपिटक	**सर्वास्तिवादी अभिधर्मपिटक**
१. धम्मसंगणि	४. धर्मस्कन्धपाद
२. विभंग	३. विज्ञानकायपाद
३. पुग्गलपञ्ञत्ति	५. प्रज्ञप्तिशास्त्र
४. धातुकथा	६. धातुकायपाद
५. पट्ठान	१. ज्ञानप्रस्थानशास्त्र
६. यमक	७. संगीतिपर्यायपाद
७. कथावत्थु	२. प्रकरणपाद

नामों में पर्याप्त साम्य होने पर भी विषयगत साम्य अत्यल्प है। दोनों निकायों के अभिधर्मपिटक अपने अपने सूत्रपिटक पर आधृत हैं और दोनों के सूत्रपिटकों में अधिक वैषम्य नहीं है, किन्तु एक निकाय के ग्रन्थविशेष का दूसरे निकाय के जिस ग्रन्थविशेष से नामसाम्य है; उन दोनों के विषय अवश्य समान नहीं है।

पालि अभिधर्मपिटक का संक्षिप्त परिचय

१. **धम्मसंगणि**—यह अभिधर्मपिटक का मूल ग्रन्थ माना जाता है। इसमें समस्त धर्मों का कुशल, अकुशल एवं अव्याकृत जाति में विभाजन कर उनकी व्याख्या की गई है। यह बौद्ध नीतिवाद की मनोवैज्ञानिक व्याख्या कही जा सकती है। इसमें समस्त धर्मों का १२२ मातिकाओं में विभाजन किया गया है। इसमें २२ त्रिक मातृकाएं तथा १०० द्विक मातृकाएं हैं। समस्त ग्रन्थ चार भागों में विभक्त हैं, यथा—चित्तकाण्ड, रूपकाण्ड, निक्खेपकाण्ड एवं अत्थुद्धारकाण्ड।

चित्तकाण्ड में चित्त का कामावचर, रूपावचर, अरूपावचर एवं लोकोत्तर इन भूमियों में विभाजन वर्णित है। कामावचर चित्त कुशल, अकुशल, विपाक एवं क्रिया इन चार भागों में विभक्त हैं। इनमें कुशल चित्त ८, अकुशल १२, कुशल विपाक १६, अकुशल विपाक ७ एवं क्रिया चित्त ११ हैं। रूपावचर चित्तों में कुशल ५, विपाक ५ एवं क्रिया चित्त ५ हैं। अरूपावचर चित्तों में कुशल ४, विपाक ४ एवं क्रिया चित्त ४ हैं। लोकोत्तर चित्तों में ४ कुशल एवं ४ विपाक चित्तों का वर्णन है। इस प्रकार चित्त काण्ड में ८९ चित्तों का सविस्तर वर्णन उपलब्ध होता है।

रूपकाण्ड में रूपी धर्मों का 'एकविध रूप संग्रह, द्विविध रूपसंग्रह' इत्यादि मातिकाओं में विभाजन करके सविस्तर वर्णन किया गया है।

निक्षेपकाण्ड में समस्त धर्मों का मूल, स्कन्ध (मूलतः स्कन्धतः) इत्यादि प्रकार से विभाजन करके उनका विस्तृत व्याख्यान किया गया है।

अन्त में समस्त बुद्धवचनों का सारभूत सरणद्विक पर्यन्त अत्थुद्धार (अर्थोद्धार) काण्ड प्रतिपादित है।

२. **विभंग**—यह १८ भागों में विभक्त हैं, यथा—खन्धविभंग, आयतनविभंग, धातुविभंग, सच्चविभंग, इन्द्रियविभंग, पच्चयाकारविभंग, सतिपट्ठानविभंग, सम्मप्पधानविभंग, इद्धिपादविभंग, बोज्झंगविभंग, मग्गविभंग, झानविभंग, अप्पमञ्ञाविभंग, सिक्खापदविभंग, पटिसम्भिदाविभंग, ञाणविभंग, खुद्दकवत्थुविभंग और धम्महदयविभंग।

खन्धविभंग सुत्तन्तभाजनीय, अभिधम्मभाजनीय एवं पञ्हपुच्छक—इस प्रकार तीन भागों में विभक्त है। इसी प्रकार अन्य विभंग भी तीन-तीन नयों में विभक्त हैं। इन्द्रियविभंग में सुत्तन्तभाजनीय नहीं है। पच्चयाकारविभंग में पञ्हापुच्छक नहीं है। सिक्खापदविभंग में भी सुत्तन्त भाजनीय नहीं है। ञाणविभंग दस प्रकार से विभक्त है। इसी प्रकार खुद्दकविभंग भी दस प्रकार से विभक्त है। धम्महदयविभंग तीन प्रकारों में विभक्त है।

३. **धातुकथा**—इस ग्रन्थ में धर्मों का नयमातिका, अब्भन्तरमातिका, नयमुखमातिका, लक्खणमातिका, और बाहिरमातिका—इन पंचविध मातिकाओं में विभाजन कर उनका संग्रह, असंग्रह, सम्प्रयोग, विप्रयोग आदि १४ प्रकार से संग्रह कर विस्तारपूर्वक व्याख्यान किया गया है।

४. **पुग्गलपञ्ञत्ति**—पुद्गल आत्मा को कहते हैं। बौद्धों में द्रव्यसत् न होकर आत्मा नितान्त प्रज्ञप्तिसत् है। इस ग्रन्थों में पुद्गल का अनेक प्रकार से वर्गीकरण किया गया है। एकविध पुद्गल-प्रज्ञप्ति से लेकर दशविध पुद्गल-प्रज्ञप्ति तक पुद्गलों का संग्रह कर उनका सविस्तर प्रतिपादन किया गया है। स्कन्ध-प्रज्ञप्ति, आयतन-प्रज्ञप्ति, धातु-प्रज्ञप्ति, सत्य-प्रज्ञप्ति, इन्द्रिय-प्रज्ञप्ति, और पुद्गल-प्रज्ञप्ति—इस प्रकार प्रज्ञप्तियाँ ६ भागों में विभक्त हैं।

५. **कथावत्थु**—तृतीय संगीति के अवसर पर सम्राट् अशोक के गुरु मोग्गलीपुत्त तिस्स महास्थविर ने इसका व्याख्यान किया है। यह ग्रन्थ २३ अध्यायों में विभक्त है। अशोक के समय बौद्ध धर्म १८ निकायों में विभक्त था। उनमें से स्थविरवाद को छोड़कर शेष १७ निकायों का इस ग्रन्थ में खण्डन किया गया है तथा स्थविरवाद के मन्तव्यों का प्रतिपादन किया गया है। इसमें निकायों के नामों का उल्लेख नहीं है, केवल उनके सिद्धान्तों का ही उल्लेख है। निकाय के नामों का उल्लेख बाद में अट्ठकथाकार बुद्धघोष ने किया है।

कहा गया है कि अशोक के समय में बौद्ध धर्म अनेक निकायों में विभक्त हो गया था। वे लोग अपने-अपने मत के अनुसार बुद्ध के मन्तव्यों की व्याख्या करते थे। यह समझ पाना मुश्किल हो गया था कि बुद्ध का असली मन्तव्य क्या है ? इसी उद्देश्य को लक्ष्य कर महाराज अशोक ने तृतीय संगीति का आयोजन किया था। स्थविरों ने स्थविरवाद को ही बुद्ध के मन्तव्यों का असली व्याख्याता ठहराया। संगीति के अध्यक्ष मोग्गलीपुत्त तिस्स ने परवादियों के २१६ दार्शनिक सिद्धान्तों को पूर्वपक्ष में रखकर उनका स्थविरवादी दृष्टिकोण से निराकरण किया। इस ग्रन्थ में कुल १००० सूत्र हैं, जिनमें ५०० सूत्र अपने मत को तथा ५०० सूत्र परमत को प्रदर्शित करते हैं।

६. **यमक**—यह एक विशाल ग्रन्थ है। यमक का अर्थ युगल (युग्म या जोड़ा) है। इसमें प्रत्येक प्रश्न जोड़े में रखा गया है। इसी शैली का आदि से अन्त तक निर्वाह किया गया है। समस्त ग्रन्थ १० यमकों में विभक्त है, यथा—मूलयमक, स्कन्ध यमक, आयतन यमक, धातु यमक, सत्य यमक, संस्कार यमक, अनुशय यमक, चित्त यमक, धर्म यमक एवं इन्द्रिय यमक।

७. पट्ठान—इसे 'महाप्रकरण' भी कहते हैं। यह आकार में अत्यधिक विशाल तथा समझने में अत्यन्त दुरूह है। इसमें २४ प्रत्ययों का विस्तारपूर्वक प्रतिपादन किया गया है। २४ प्रत्यय ये हैं—हेतु प्रत्यय, आलम्बन प्रत्यय, अधिपति प्रत्यय, अनन्तर प्रत्यय, समनन्तर प्रत्यय, सहजात प्रत्यय, अन्योन्य प्रत्यय, निःश्रय प्रत्यय, उपनिःश्रय प्रत्यय, पूर्वजात प्रत्यय, पश्चाज्जात प्रत्यय, आसेवन प्रत्यय, कर्म प्रत्यय, विपाक प्रत्यय, आहार प्रत्यय, इन्द्रिय प्रत्यय, ध्यान प्रत्यय, मार्ग प्रत्यय, सम्प्रयुक्त प्रत्यय, विप्रयुक्त प्रत्यय, अस्ति प्रत्यय, नास्ति प्रत्यय, विगत प्रत्यय और अविगत प्रत्यय।

इस ग्रन्थ में प्रधानतः २२ त्रिक और १०० द्विक मातृकाएँ हैं। सूत्रपिटकानुसारी ४२ मातृकाएँ भी हैं। यह ग्रन्थ ४ प्रकार के पट्ठानों में विभक्त है, यथा—अनुलोम पट्ठान, पच्चनिय पट्ठान, अनुलोम-पच्चनिय पट्ठान तथा पच्चनिय-अनुलोम पट्ठान।

अनुलोम पट्ठान में ६ प्रकार के पट्ठान हैं, यथा—(१) त्रिक मातृकाओं के आधार पर 'त्रिक पट्ठान', (२) द्विक मातृकाओं के आधार पर 'द्विक पट्ठान', (३) २२ त्रिकों को १०० द्विकों में मिलाकर 'त्रिक-द्विक पट्ठान', (४) १०० द्विकों को २२ त्रिकों में मिलाकर 'द्विक-त्रिक पट्ठान', (५) त्रिकों को त्रिकों में मिलाकर 'त्रिक-त्रिक पट्ठान' तथा (६) द्विकों को द्विकों में मिलाकर 'द्विक-द्विक पट्ठान'।

इसी प्रकार पच्चनिय, अनुलोम-पच्चनिय और पच्चनिय-अनुलोम पट्ठान में भी ६-६ पट्ठान वर्णित हैं। इस प्रकार इसमें कुल २४ पट्ठान प्रतिपादित हैं।

पिटक तीन ही

भगवान् बुद्ध की देशना त्रिविध है, उनका शासन त्रिविध है, कथाएँ तीन प्रकार की हैं, शिक्षा तीन हैं, प्रहाण भी तीन हैं तथा एक एक पिटक में ४–४ गाम्भीर्य हैं, अतः तीन ही पिटक होते हैं।

त्रिविध देशना—भगवान् की देशना तीन हैं, अतः पिटक भी तीन ही हैं, यथा—आणा (आज्ञा) देशना, वोहार (व्यवहार) देशना तथा परमत्थ (परमार्थ) देशना।

आज्ञा देने योग्य भगवान् बुद्ध द्वारा उपदिष्ट विनय पिटक आज्ञाबहुल होने से 'आणा' देशना है।

व्यवहार कुशल भगवान् बुद्ध द्वारा बहुलतया उपाय कौशल्य नय से उपदिष्ट सूत्र-पिटक 'वोहार'-देशना है।

परमार्थकुशल भगवान् द्वारा प्रमुखतया परमार्थ धर्मों के यथार्थ स्वरूपावबोध के लिए उपदिष्ट अभिधर्मपिटक 'परमत्थ' देशना है।

त्रिविध शासन—बुद्ध का शासन तीन प्रकार का है, अत: पिटक भी तीन हैं, यथा—यथापराध शासन, यथानुलोम शासन तथा यथाधम्म शासन।

विनयपिटक यथापराधशासन है, क्योंकि इसमें अधिक अपराध वाले सत्त्व शासित किए जाते हैं।

सूत्रपिटक यथानुलोमशासन है, क्योंकि इसमें विविध प्रकार के अध्याशय वाले, अनेक प्रकार के अनुशय वाले, अनेक प्रकार की चर्या और अधिमुक्ति वाले सत्त्व अपने-अपने अध्याशय, अनुशय, चर्या और अधिमुक्ति के अनुसार शासित किये जाते हैं।

अभिधर्मपिटक यथाधम्म (यथाधर्म) शासन है, क्योंकि इस पिटक में चित्त, चैतसिक और रूप आदि धर्मसमूह में 'अहम्' और 'मम' संज्ञावाले सत्त्व धर्मों के ययार्थ स्वभाव के अनुरूप शासित किये जाते हैं।

त्रिविध कथा—कथाएँ तीन हैं, अत: पिटक भी तीन हैं, यथा—संवरासंवर कथा, दिट्ठिविनिवेठन कथा एवं नाम-रूपपरिच्छेद कथा।

विनयपिटक में अत्याचरण के प्रतिपक्ष संवर (संयम) और असंवर का कथन किया गया गया है, अत: विनयपिटक 'संवरासंवरकथा' है।

सूत्रपिटक में ६२ प्रकार की मिथ्यादृष्टियों की प्रतिपक्ष दृष्टिविघातक कथाएँ उपदिष्ट हैं, अत: सूत्रपिटक 'दिट्ठिविनिवेठन कथा' है।

अभिधर्मपिटक में राग आदि क्लेशों का प्रतिपक्ष नाम-रूपपरिच्छेद कहा गया है, अत: अभिधर्मपिटक 'नाम-रूपपरिच्छेदकथा' है।

अपि च, विनयपिटक करुणाप्रधान है, सूत्रपिटक करुणा और प्रज्ञा प्रधान है तथा अभिधर्मपिटक प्रज्ञाप्रधान है।

त्रिविध शिक्षा—भगवान् की शिक्षा तीन प्रकार की है, अत: पिटक भी तीन ही हैं, यथा—अधिशील शिक्षा, अधिचित्त शिक्षा तथा अधिप्रज्ञ शिक्षा।

विनयपिटक में विशेषत: अधिशील शिक्षा प्रतिपादित है। सूत्रपिटक में प्रधानत: अधिचित्त शिक्षा उपदिष्ट है तथा अभिधर्मपिटक में प्रमुखत: अधिप्रज्ञ शिक्षा अभिहित है।

त्रिविध प्रहाण—तीन प्रकार के प्रहाण हैं, यथा—वीतिक्कम (व्यतिक्रम) प्रहाण, परियुट्ठान (पर्युत्थान) प्रहाण एवं अनुशय प्रहाण। प्रहाण की दृष्टि से पिटक भी तीन ही हैं।

विनयपिटक में व्यतिक्रम प्रहाण उपदिष्ट है, क्योंकि इस पिटक में प्रतिपादित शील व्यतिक्रम करनेवाले क्लेशों का प्रतिपक्ष है।

सूत्रपिटक में पर्युत्थान प्रहाण वर्णित है, क्योंकि इस पिटक में प्रतिपादित समाधि पर्युत्थान क्लेशों की प्रतिपक्ष है।

अभिधर्मपिटक में अनुशयप्रहाण प्रतिपादित है, क्योंकि इस पिटक में अभिहित प्रज्ञा अनुशय क्लेशों की प्रतिपक्ष है।

विनयपिटक में क्लेशों का तदङ्गप्रहाण (अस्थायी प्रहाण) तथा अन्य सूत्र एवं अभिधर्म पिटक में क्रमशः उनका विष्कम्भण और समुच्छेद प्रहाण प्रतिपादित है। विनय-पिटक में दुश्चरित आदि क्लेशों का प्रहाण निर्दिष्ट है तथा अन्य दो पिटकों में तृष्णा, दृष्टि आदि क्लेशों का प्रहाण है।

चतुर्विध गाम्भीर्य—उपर्युक्त तीन पिटकों में से प्रत्येक में चार-चार प्रकार के गाम्भीर्य हैं, यथा धर्म, अर्थ, देशना एवं प्रतिवेध।

उनमें से बुद्धवचन 'धर्म' हैं। उनका अर्थ ही 'अर्थ' है। उनकी देशना 'देशना' है तथा उन बुद्ध वचनों का यथार्थ अवबोध 'प्रतिवेध' है।

अथवा—धर्म 'हेतु' है। अर्थ हेतुओं का 'फल' है। देशना 'प्रज्ञप्ति' है। अर्थात् धर्मों का अनुलोम, प्रतिलोम, संक्षेप, विस्तार आदि क्रम से कथन। प्रतिवेध 'अभिसमय' है। अर्थात् उन कहे हुए धर्मों का स्वलक्षण याने अविपरीत स्वभाव का अवबोध।

इन तीनों पिटकों में जो धर्म और अर्थ कहे गये हैं, उन धर्मों और अर्थों का श्रोताओं को यथार्थ अबबोध होने के लिए जो देशना की गई है तथा धर्मों का जो अविपरीत अवबोध अर्थात् प्रतिवेध है, ये सब जिनमें कुशल सम्भार उपचित नहीं है, ऐसे दुष्प्रज्ञ पुद्गलों के लिए दुर्ज्ञेय हैं। अतः इन्हें गम्भीर कहा है।

देशना - सासन - कथाभेदं तेसु यथारहं।
सिक्खा - पहान - गम्भीरभावं च परिदीपये[१] ॥

२. निकाय

पहले कहा गया है कि संगीतिकारक महास्थविरों ने बुद्धवचनों का विविध प्रकार से वर्गीकरण किया है, यथा—पिटक, निकाय, अंग आदि। उनमें से एक प्रकार का वर्गी-करण 'पिटक' कह दिया गया है। अब दूसरे प्रकार का वर्गीकरण निकाय कहा जा रहा है। अर्थात् समस्त बुद्धवचनों का संग्रह पाँच निकायों में भी किया जा सकता है। वे पाँच निकाय ये हैं, यथा—दीघनिकाय, मज्झिम निकाय, संयुत्त निकाय, अंगुत्तर निकाय तथा खुद्दक निकाय।

इनमें से प्रथम चार निकाय तो ऊपर सूत्रपिटक के वर्णन प्रसंग में कह दिये गये हैं। पंचम खुद्दकनिकाय में पूर्वोक्त १५ ग्रन्थों के अतिरिक्त समस्त विनयपिटक और अभिधर्म-पिटक का भी ग्रहण किया जाता है। जैसे कहा भी गया है—

१—अट्ठसालिनी, पृ० २०।

ठपेत्वा चतुरो पेते निकाये दीघ-आदिके।
तदञ्ञं बुद्धवचनं निकायो खुद्दको मतो ति[1] ॥

३. अंग

समस्त बुद्धवचनों का विभाजन नौ अंगों में भी किया जाता है, यथा—सुत्त, गेय्य, वेय्याकरण, गाथा, उदान, इतिवुत्तक, जातक, अब्भुतधम्म एवं वेदल्ल।

इनमें से दीघनिकाय, सुत्तनिपात, निद्देस, खन्धक, परिवार आदि जितने बुद्धवचन 'सूत्र' के नाम से गद्य में हैं, वे सब 'सुत्त' कहलाते हैं। गाथाओं से युक्त सूत्र 'गेय्य' हैं। 'वेय्याकरण' वस्तुतः व्याख्यापरक साहित्य का नाम है। इसमें सम्पूर्ण अधिधर्मपिटक और वे सब सूत्र संगृहीत हो जाते हैं, जो अन्य आठ अंगों में संगृहीत नहीं होते। धम्मपद, थेर-गाथा, थेरीगाथा आदि पद्य में रचित अंश 'गाथा' हैं। सौमनस्य एवं ज्ञान से युक्त होकर समय-समय पर भगवान् बुद्ध के मुख से गाथा के रूप में निकले हुए भावनामय प्रीति-उद्गार उदान' हैं। 'वुत्तं हेतं भगवता' (भगवान् ने ऐसा कहा) इत्यादि प्रकार से प्रवृत्त ११० सूत्रान्त 'इतिवुत्तक' हैं। 'जातक' का अर्थ है, बुद्ध के पूर्व जन्मों की कथाएँ। अपण्णक आदि ५५० कथाएँ जातक' हैं। 'चत्तारो मे भिक्खवे, अच्छरिया अब्भुतधम्मा आनन्दे' (भिक्षुओ, आनन्द में ये चार आश्चर्यजनक अद्भुत धर्म हैं)—इत्यादि प्रकार से प्रवृत्त अद्भुत वस्तुओं का निरूपण करने वाले सूत्रान्त 'अब्भुतधम्म' हैं। 'वेदल्ल' वे उपदेश हैं, जो प्रश्न और उत्तर के रूप में उपलब्ध होते हैं। मज्झिम निकाय के चुल्लवेदल्ल, महा-वेदल्ल, सम्मादिट्ठि तथा सक्कपञ्ह आदि सूत्र इस विभाग के अन्तर्गत आते हैं। बुद्धवचनों का यह ९ प्रकार का संग्रह विषय की दृष्टि से नहीं है।

४. ८४,००० धर्मस्कन्ध

बुद्ध वचनों के विभिन्न वर्गीकरणों में संग्रह का यह भी एक प्रकार है। इसमें समस्त बुद्धवचन ८४,००० धर्मस्कन्धों में विभक्त किये जाते हैं। स्थविरवाद 'विभज्यवाद' भी कहलाता है। यह उनकी विभाजन-प्रियता का ही एक उदाहरण है। सम्राट् अशोक द्वारा ८४,००० स्तूपों के निर्माण का भी यही आधार है।

एक अनुसन्धिवाला सूत्र एक धर्मस्कन्ध कहलाता है। जिसमें अनेक अनुसन्धियाँ होती हैं, वहाँ अनुसन्धियों के अनुपात में धर्मस्कन्धों की गणना की जाती है। गाथाबद्ध बुद्धवचनों में 'प्रश्न' एक धर्मस्कन्ध होता है और उसका 'उत्तर' दूसरा धर्मस्कन्ध। अभि-धर्म में तिकपट्ठान, दुकपट्ठान आदि पृथक् पृथक् धर्मस्कन्ध होते हैं। विनयपिटक में वत्थु

१—अट्ठसालिनी, पृ० २२।

(वस्तु), मातिका, पदभाजनीय, आपत्ति, अनापत्ति, अन्तरापत्ति आदि होते हैं। ये सब विभाग पृथक् पृथक् धर्मस्कन्ध होते हैं। इस प्रकार धर्मस्कन्ध कुल ८४,००० हो जाते हैं। इनमें ८२,००० धर्मस्कन्ध भगवान् बुद्ध द्वारा उक्त हैं तथा २,००० धर्मस्कन्ध शारीपुत्र—आदि भिक्षुओं के वचन हैं, यथा—

द्वासीतिं बुद्धतो गण्हिं द्वे सहस्सानि भिक्खुतो।
चतुरासीति सहस्सानि ये मे धम्मा पवत्तिनो'ति[1] ॥

सर्वास्तिवाद आदि अन्य निकायों में बुद्धवचनों का ८०,००० धर्मस्कन्धों में विभाजन उपलब्ध होता है। जैसा कि अभिधर्मकोश में उल्लिखित है—

धर्मस्कन्धसहस्राणि यान्यशीतिं जगौ मुनिः[2]।

बुद्धवचनों का उपर्युक्त पिटक, निकाय, अंग एवं धर्मस्कन्ध—इन चारों प्रकारों में वर्गीकरण अत्यन्त प्राचीन है। इसकी पुष्टि स्वयं त्रिपिटक, अशोक के शिलालेख, मिलिन्द प्रश्न, दीपवंस, महावंस, गन्धवंस, अट्ठकथा आदि ग्रन्थों से होती है। आचार्य बुद्धघोष के अनुसार ये चारों विभाजन प्रथम संगीति के समय ही कर दिये गये थे। उनका कहना है कि महाकाश्यपप्रमुख भिक्षुसंघ ने प्रथम संगीति के काल में ही "यह प्रथम बुद्धवचन है, यह मध्यम बुद्धवचन है, यह अन्तिम बुद्धवचन है, यह विनयपिटक है, यह सूत्रपिटक है, यह अभिधर्मपिटक है, ... यह दीघनिकाय है, यह खुद्दकनिकाय है, ये 'सुत्त' आदि नौ अंग हैं, ये ८४,००० धर्मस्कन्ध हैं"—इस प्रकार विभाजन करके बुद्धवचन व्यवस्थापित कर दिये थे[3]।

प्रथम बुद्धवचन—बुद्धत्व प्राप्ति के अनन्तर बोधिवृक्ष के नीचे सात दिन तक एक ही आसन पर बैठे हुए भगवान् बुद्ध द्वारा कथित निम्न उदान प्रथम बुद्धवचन है, यथा—

यदा हवे पातुभवन्ति धम्मा आतापिनो झायतो ब्राह्मणस्स।
अथस्स कंखा वपयन्ति सब्बा यतो पजानाति सहेतुधम्मं ॥
यदा हवे पातुभवन्ति धम्मा आतापिनो झायतो ब्राह्मणस्स।
अथस्स कंखा वपयन्ति सब्बा यतो खयं पच्चयानं अवेदि ॥

१—द्र०—अट्ठसालिनी, पृ० २३।

२—द्र०—अभिधर्मकोश, १ : २५, पृ० ३९।

३—एवमेतं सब्बं पि बुद्धवचनं पंचसतिकसंगीतिकाले संगायन्तेन महाकस्सपपमुखेन वसीगणेन इदं पठमं बुद्धवचनं ... इदं विनयपिटकं ... अयं दीघनिकायो ... इमानि सुत्तादीनि नवंगानि, इमानि चतुरासीति धम्मक्खन्धसहस्सानीति इमं पभेदं ववत्थापेत्वा व संगीतं। द्र०—अट्ठसालिनी, पृ० २३।

यदा हवे पातुभवन्ति धम्मा आतापिनो झायतो ब्राह्मणस्स ।
विधूपयं तिट्ठति मारसेनं सूरो व ओभासयमन्तलिक्खं ति[१] ॥

किन्तु धम्मपदभाणक स्थविर उपर्युक्त वचन को प्रथम बुद्धवचन मानने के पक्ष में नहीं है। उनके मतानुसार निम्न वचन प्रथम बुद्धवचन है, यथा—

अनेकजातिसंसारं सन्धाविस्सं अनिब्बिसं ।
गहकारकं गवेसन्तो दुक्खा जाति पुनप्पुनं ॥
गहकारक, दिट्ठो सि पुन गेहं न काहसि ।
सब्बा ते फासुगा भग्गा गहकूटं विसंखतं ॥
विसंखारगतं चित्तं तण्हानं खयमज्झगा[२] ॥

अन्तिम बुद्धवचन—महापरिनिर्वाण होते समय कुशीनगर में दो शालवृक्षों के बी r परिनिर्वाणमंच पर लेटे हुए भगवान् बुद्ध का भिक्षुओं के प्रति निम्न उपदेश अन्तिम बुद्ध-वचन है, यथा—

"हन्द, दानि भिक्खवे, आमन्तयामि वो; वयधम्मा संखारा, अप्पमादेन सम्पादेथा ति"[३] ।

मध्यम बुद्धवचन

इस प्रथम और अन्तिम वचनों के बीच भगवान् तथागत द्वारा पुष्पमाला गूंथने के समान, रत्नावलि गूंथने के समान उपदिष्ट अमृतत्व का प्रकाशक सम्पूर्ण सद्धर्म मध्यम बुद्धवचन है।

इस प्रकार संगीतिकारक महास्थविरों द्वारा संगृहीत समस्त बुद्धवचन पिटक की दृष्टि से तीन पिटक, निकाय की दृष्टि से पाँच निकाय, अंग की दृष्टि से नौ अंग, तथा धर्म-स्कन्धों की दृष्टि से ८४,००० धर्मस्कन्ध हैं।

उनमें से अभिधर्मपरक बुद्धवचन पिटक की दृष्टि से अभिधर्मपिटक, निकाय की दृष्टि से खुद्दकनिकाय, अंग की दृष्टि से वेय्याकरण, धर्मस्कन्ध की दृष्टि से कुछ सहस्र धर्म-स्कन्ध हैं।

अभिधर्म का अध्ययन

सात अभिधर्म शास्त्रों की चर्चा ऊपर की गई है। उनमें अनेक विषयों का वर्णन है, फिर भी परमार्थतया चार ही पदार्थ अभिधर्म-शास्त्रों के मुख्य प्रतिपाद्य हैं, चित्त, चैतसिक,

---

१—महावग्ग (विनयपिटक) पृ० ३–४।

२—खुद्दकनिकाय, प्रथमभाग (धम्मपद), पृ० ३२।

३—दीघनिकाय, द्वि० भा०, पृ० ११९।

रूप एवं निर्वाण। इन सात ग्रन्थों में धम्मसंगणि शीर्ष-स्थानीय है। शेष ग्रन्थों में उन्हीं विषयों का विभिन्न शैलियों में वर्णन है। बौद्धों की विभाजनप्रियता सर्वप्रसिद्ध है। विभिन्न दृष्टियों से योग-विभाग करके वे वस्तु के यथार्थ स्वरूप का निर्धारण करते हैं। इसीलिए वे विभज्यवादी कहलाते हैं।

धम्मसंगणि में उपर्युक्त चार अभिधर्मार्थों का अनेकविध संग्रह एवं विभाजन प्रतिपादित है, यथा—स्कन्ध, आयतन, धातु एवं सत्य आदि। समस्त धर्मों का वर्गीकरण इनमें हो जाता है। धम्मसंगणि के अध्ययन से पूर्व यह जान लेना आवश्यक होता है कि किन धर्मों का किसमें संग्रह होता है, अन्यथा ग्रन्थ अत्यन्त दुरूह प्रतीत होता है। ग्रन्थ में गति नहीं हो पाती। अभिधर्म-ग्रन्थों में धर्मों का योग-विभाग गणितीय पद्धति से निश्चित नियमों के आधार पर होता है। एक बार उन नियमों का परिज्ञान हो जाने पर अभिधर्म का अध्ययन अत्यन्त रुचिकर एवं आसान हो जाता है। अन्यथा पदार्थों के नामों के अतिरिक्त कुछ समझ में नहीं आता। यही कारण है कि भारतवर्ष में पालि की संस्थाओं एवं विभागों में कहीं भी अभिधर्म का अध्ययन नहीं होता। कहीं भी पाठ्यक्रम में धम्मसंगणि, धातुकथा, यमक, पट्ठान आदि मूलग्रन्थ निर्धारित नहीं हैं। वस्तुतः भारत में अभी तक अभिधर्म का विधिवत् अध्ययन प्रारम्भ ही नहीं हुआ है।

धम्मसंगणि में २२ त्रिक मातृकाएं (तिक मातिका) एवं १०० द्विक (दुक मातिका) मातृकाएं हैं। पूरे ग्रन्थ में इन्हीं का विस्तार है। पालि अभिधर्म के अनुसार ८९ या १२१ चित्त, ५२ चैतसिक, २८ रूप एवं १ निर्वाण इतने ही परमार्थ धर्म हैं। ग्रन्थ के प्रारम्भ में मातृकाएं हैं। मातृकाएं एक प्रकार की विषयसूची है। मातृकाओं के स्थल पर ही यदि यह समझ लिया जाय कि यहाँ कितने चित्त, कितने चैतसिक, कितने रूप, कितने स्कन्ध, आयतन, धातु, सत्य आदि संगृहीत होंगे तो ग्रन्थ के भीतर वही बातें, वे ही धर्म उपलब्ध होंगे और ग्रन्थ अत्यन्त आसान प्रतीत होगा।

(१) आभिधार्मिकों ने चित्त-पदार्थ का भूमि, जाति, वेदना, सम्प्रयोग आदि के भेद से अनेक प्रकार का विभाजन एवं संग्रह किया है। चिन्तनमात्र चित्त का लक्षण है। भूमि के भेद से चित्त कामावचर, रूपावचर, अरूपावचर और लोकोत्तर इस तरह चार प्रकार के होते हैं। जाति के भेद से वे कुशल, अकुशल एवं अव्याकृत इस तरह तीन प्रकार के होते हैं। वेदना के योग से वे सुखसहगत, सौमनस्यसहगत, दुःखसहगत, दौर्मनस्यसहगत एवं उपेक्षासहगत पाँच प्रकार के होते हैं। दृष्टिसम्प्रयुक्त, प्रतिघसम्प्रयुक्त, औद्धत्यसम्प्रयुक्त, विचिकित्सासम्प्रयुक्त आदि सम्प्रयोग के भेद से भी चित्तों का विभाजन किया जाता है।

(क) कामावचर चित्त ५४

(१) अकुशल १२

लोभमूल ८

- सौमनस्य सहगत—
  - दृष्टिसम्प्रयुक्त—
    - असंस्कारिक
    - ससंस्कारिक
  - दृष्टिविप्रयुक्त—
    - असंस्कारिक
    - ससंस्कारिक

- उपेक्षा सहगत—
  - दृष्टिसम्प्रयुक्त—
    - असंस्कारिक
    - ससंस्कारिक
  - दृष्टिविप्रयुक्त—
    - असंस्कारिक
    - ससंस्कारिक

द्वेषमूल २

- दौर्मनस्य सहगत प्रतिघसम्प्रयुक्त—
  - असंस्कारिक
  - ससंस्कारिक

मोहमूल २

- उपेक्षासहगत—
  - विचिकित्सासम्प्रयुक्त
  - औद्धत्यसम्प्रयुक्त

(२) अहेतुक १८

इस संग्रह में प्रायः विपाक और क्रिया चित्त होते हैं। अकुशल अहेतुक विपाक ७, कुशल अहेतुक विपाक ८ एवं पंचद्वारावर्जन, मनोद्वारावर्जन और हसनचित्त ये तीन क्रियाचित्त— इस तरह ये १८ अहेतुक चित्त कहलाते हैं।

(३) कामावचर शोभन २४

(कुशल ८, विपाक ८ एवं क्रिया ८)

- सौमनस्य सहगत—
  - ज्ञानसम्प्रयुक्त—
    - असंस्कारिक
    - ससंस्कारिक
  - ज्ञानविप्रयुक्त—
    - असंस्कारिक
    - ससंस्कारिक

उपेक्षासहगत—
- ज्ञानसम्प्रयुक्त—
  - असंस्कारिक
  - ससंस्कारिक
- ज्ञानविप्रयुक्त—
  - असंस्कारिक
  - ससंस्कारिक

(ख) रूपावचर चित्त १५

(कुशल ५, विपाक ५ एवं क्रिया ५)

(१) प्रथम ध्यान—वितर्क, विचार, प्रीति, सुख, एकाग्रता सहित
(२) द्वितीय ध्यान—विचार, प्रीति, सुख, एकाग्रता सहित
(३) तृतीय ध्यान—प्रीति, सुख, एकाग्रता सहित
(४) चतुर्थ ध्यान—सुख, एकाग्रता सहित
(५) पंचम ध्यान—उपेक्षा, एकाग्रता सहित

(ग) अरूपावचर चित्त १२

(कुशल ४, विपाक, ४ एवं क्रिया ४)

आकाशानन्त्यायतन, विज्ञानानन्त्यायतन; आकिंचन्यायतन एवं नैवसंज्ञानासंज्ञायतन चित्त।

रूपावचर और अरूपावचर चित्त ध्यानचित्त हैं। आलम्बन का उपनिध्यान (चिन्तन) करना अथवा प्रत्यनीक धर्मों का दहन करना ध्यान का लक्षण है।

(घ) लोकोत्तर चित्त ८

(कुशल ४ एवं विपाक ४)

स्रोतापत्ति, सकृदागामी, अनागामी एवं अर्हत्—४ मार्ग एवं ४ फल चित्त लोकोत्तर चित्त कहलाते हैं। ध्यानाङ्गों की दृष्टि से इनका विभाजन करने पर इनकी संख्या ४० हो जाती है।

(ङ) वेदना भेद से चित्तों का विभाजन

	सौमनस्य	उपेक्षा	दौर्मनस्य	सुख	दुःख	
(१) अकुशल	४	६	२	×	×	— १२
(२) अहेतुक	२	१४	×	१	१	— १८
(३) कामावचर (शोभन)	१२	१२	×	×	×	— २४
(४) रूपावचर	१२	३	×	×	×	— १५
(५) अरूपावचर	×	१२	×	×	×	— १२
(६) लोकोत्तर	३२	८	×	×	×	— ४०
	६२	५५	२	१	१	= १२१

(च) कुशल आदि जाति भेद से चित्तों का विभाजन

	अकुशल	कुशल	विपाक	क्रिया
(१) कामावचर (५४)	१२	८	२३	११
(२) रूपावचर (१५)	×	५	५	५
(३) अरूपावचर (१२)	×	४	४	४
(४) लोकोत्तर (८)	×	४	४	×
योग —	१२	२१	३६	२० = ८९

कामावचर शोभन २४ चित्तों में ८ कुशल चित्तों को महाकुशल, ८ विपाक चित्तों को महाविपाक तथा ८ क्रियाचित्तों को महाक्रिया कहते हैं। रूपावचर १५ एवं अरूपावचर १२ कुल २७ चित्त महद्गत (महग्गत) चित्त कहलाते हैं। विपाक चित्त और क्रियाचित्त ये दोनों प्रकार के चित्त अव्याकृत चित्त कहे जाते हैं। अव्याकृत चित्त वे हैं, जिनका कुशल और अकुशल में विभाजन नहीं किया जा सकता। यहाँ अव्याकृत शब्द में 'अ'-कार अन्यार्थक है। जो कुशल और अकुशल से अन्य (भिन्न) रूप में व्याकृत होते हैं, वे अव्याकृत हैं। ३६ विपाक और २० क्रिया कुल ५६ चित्त अव्याकृत हैं।

(छ) सम्प्रयोग आदि की दृष्टि से चित्तविभाजन

	सम्प्रयुक्त	विप्रयुक्त	असंस्कारिक	ससंस्कारिक
(१) अकुशल (१२)	८	४	५	५
(२) अहेतुक (१८)	×	×	×	×
(३) कामावचर शोभन (२४)	१२	१२	१२	१२
(४) रूपावचर (१५)	×	×	× (मतभेद)	× (मतभेद)
(५) अरूपावचर (१२)	×	×	× (मतभेद)	× (मतभेद)
(६) लोकोत्तर (८)	×	×	× (मतभेद)	× (मतभेद)

(२) चैतसिक ५२

चित्त के साथ सम्प्रयुक्त धर्म चैतसिक कहलाते हैं। ये चित्त के साथ (समान काल में) उत्पन्न होते हैं और निरुद्ध होते हैं। चित्त का आलम्बन ही इनका आलम्बन होता है तथा चित्त जिस इन्द्रिय पर आश्रित होता है, उसी इन्द्रिय का ये भी आश्रयण करते है। इनका अन्यसमान, अकुशल और शोभन इन तीन राशियों में विभाजन होता है। अन्यसमान चैतसिक १३ हैं। ये कुशल, अकुशल आदि सभी चित्तों से सम्प्रयोग करते हैं। जब ये कुशल के साथ सम्प्रयुक्त होते हैं तो कुशल, जब अकुशल के साथ सम्प्रयुक्त होते हैं तो अकुशल तथा जब अव्याकृत के साथ सम्प्रयुक्त होते हैं तो अव्याकृत हो जाते हैं। इनका अपना कोई निजी स्वभाव नहीं होता, अतः अन्य (चित्त)-समान कहलाते हैं। इन तेरह में सात चैतसिक तो सर्वसाधारण होते हैं, जो संयुक्तरूप से सभी चित्तों से सम्प्रयोग करते हैं। शेष ६ प्रकीर्णक कहलाते हैं, जो सभी चित्तों से सम्प्रयोग तो करते हैं, किन्तु संयुक्तरूप से नहीं, किन्तु विप्रकीर्णरूप से करते हैं। चौदह चैतसिक अकुशल हैं, जो केवल अकुशल चित्तों से ही सम्प्रयुक्त होते हैं। २५ चैतसिक शोभन हैं, जो केवल शोभन चित्तों से ही सम्प्रयुक्त होते हैं।

(३) स्कन्धों में धर्म-विभाजन

स्कन्ध पाँच हैं, यथा—रूपस्कन्ध, वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध, संस्कारस्कन्ध एवं विज्ञानस्कन्ध। चित्त, चैतसिक रूप आदि सभी संस्कृत धर्मों का संग्रह इन पाँच स्कन्धों में हो जाता है। तथा हि—

(१) **रूपस्कन्ध**—रूप २८ होते हैं। सभी २८ रूप रूपस्कन्ध में संगृहीत होते हैं, यथा—पृथ्वी, अप्, तेजस् और वायु ये चार भूतरूप; चक्षुष्, श्रोत्र, घ्राण, जिह्वा एवं काय ये पाँचप्रसादरूप; रूप, शब्द, गन्ध, रस एवं स्प्रष्टव्य ये पाँच गोचररूप; स्त्रीत्व और पुंस्त्व ये दो भावरूप; हृदयेन्द्रिय हृदयरूप—१; जीवितेन्द्रिय जीवितरूप—१; कवलीकार आहार आहाररूप—१; आकाशधातु परिच्छेदरूप—१; कायविज्ञप्ति एवं वाग्विज्ञप्ति विज्ञप्तिरूप–२; रूप की लघुता, मृदुता एवं कर्मण्यता विकाररूप—३; (यद्यपि विकार रूप ५ होते हैं, किन्तु दो विज्ञप्तियाँ पहले परिगणित हो गई हैं, अतः उन्हें यहाँ जोड़ा नहीं गया); रूप का उपचय, सन्तति, जरता और अनित्यत ये चार लक्षणरूप। इस तरह रूप कुल २८ होते हैं। इनमें अब्धातु, स्त्रीन्द्रिय, पुरुषेन्द्रिय, हृदयेन्द्रिय, जीवितेन्द्रिय, आहार, कायविज्ञप्ति, वाग्विज्ञप्ति, रूप की लघुता, मृदुता, कर्मण्यता, उपचय, सन्तति, जरता, अनित्यता एवं आकाश—ये १६ सूक्ष्मरूप कहे जाते हैं।

(२) **वेदनास्कन्ध** ५२ चैतसिकों में से एक वेदना चैतसिक वेदनास्कन्ध हैं।

(३) **संज्ञास्कन्ध**—एक संज्ञा चैतसिक संज्ञास्कन्ध कहा जाता है।

(४) **संस्कारस्कन्ध**—उपर्युक्त वेदना एवं संज्ञा दो चैतसिको को छोड़कर अवशिष्ट ५० चैतसिक संस्कारस्कन्ध कहे जाते हैं।

(५) **विज्ञानस्कन्ध**—सभी ८९ चित्त विज्ञानस्कन्ध हैं।

उपर्युक्त सभी स्कन्ध संस्कृत धर्म हैं। असंस्कृत निर्वाण स्कन्धसंग्रह में संगृहीत नहीं होता। वह स्कन्धविनिर्मुक्त धर्म है।

(४) आयतनों में धर्मविभाजन

आयतन १२ होते हैं। इन १२ आयतनों में सभी संस्कृत एवं असंस्कृत धर्म संग्रहीत हो जाते हैं।

१. चक्षुरायतन	—	चक्षुःप्रसाद
२. श्रोत्रायतन	—	श्रोत्रप्रसाद
३. घ्राणायतन	—	घ्राणप्रसाद
४. जिह्वायतन	—	जिह्वाप्रसाद
५. कायायतन	—	कायप्रसाद
६. रूपायतन	—	रूप आलम्बन (वर्ण मात्र)
७. शब्दायतन	—	शब्दालम्बन
८. गन्धायतन	—	गन्धालम्बन
९. रसायतन	—	रसालम्बन

१०. स्प्रष्टव्यायतन	—	स्प्रष्टव्यालम्बन
११. मन आयतन	—	सभी ८९ चित्त
१२. धर्मायतन	—	५२ चैतसिक (सभी), १६ सूक्ष्म रूप एवं निर्वाण

(५) धातुओं में धर्म-विभाजन

धातुएँ १८ हैं। इनमें सभी संस्कृत और असंस्कृत धर्मों का संग्रह हो जाता है।

१. चक्षुर्धातु	—	चक्षुःप्रसाद
२. श्रोत्रधातु	—	श्रोत्रप्रसाद
३. घ्राणधातु	—	घ्राणप्रसाद
४. जिह्वाधातु	—	जिह्वाप्रसाद
५. कायधातु	—	कायप्रसाद
६. रूपधातु	—	रूपालम्बन
७. शब्दधातु	—	शब्दालम्बन
८. गन्धधातु	—	गन्धालम्बन
९. रसधातु	—	रसालम्बन
१०. स्प्रष्टव्यधातु	—	स्प्रष्टव्यालम्बन
११. चक्षुर्विज्ञानधातु	—	चक्षुर्विज्ञानद्वय (कुशल-अकुशल विपाक)
१२. श्रोत्रविज्ञानधातु	—	श्रोत्रविज्ञानद्वय (,, ,,)
१३. घ्राणविज्ञानधातु	—	घ्राणविज्ञानद्वय (,, ,,)
१४. जिह्वाविज्ञानधातु	—	जिह्वाविज्ञानद्वय (,, ,,)
१५. कायविज्ञानधातु	—	कायविज्ञानद्वय (,, ,,)
१६ मनोधातु	—	पंचद्वारावर्जन-१, सम्पटिच्छन-२
१७. मनोविज्ञानधातु	—	पंचविज्ञानद्वय (१०) चित्तवर्जित एवं मनोधातु (३) चित्तवर्जित अवशिष्ट सभी ७६ चित्त
१८. धर्मधातु	—	५२ चैतसिक, १६ सूक्ष्म रूप एवं निर्वाण।

(६) चार आर्यसत्यों में धर्मविभाजन

आर्यसत्य चार हैं, यथा--दुःख आर्यसत्य, समुदय आर्यसत्य, निरोध आर्यसत्य एवं मार्ग आर्यसत्य। इन चार आर्यसत्यों में सभी संस्कृत एवं असंस्कृत धर्मों का संग्रह हो जाता है।

१. **दुःख सत्य**—लोकोत्तर ८ चित्तों को छोड़कर अवशिष्ट लौकिक सभी ८१ चित्त, लोभ चैतसिक को छोड़कर अवशिष्ट सभी ५१ चैतसिक तथा सभी २८ रूप।

२ **समुदय सत्य**—लोभ चैतसिक-१।

३. **निरोध सत्य**—निर्वाण।

३. **मार्गसत्य**– आर्य आष्टाङ्गिक मार्ग।

१. सम्यग्दृष्टि—प्रज्ञा चैतसिक
२ सम्यक् संकल्प– वितर्क चैतसिक
३. सम्यग् वाक्
४. सम्यक् कर्मान्त } — तीन विरति चैतसिक
५. सम्यग् आजीव
६. सम्यग् व्यायाम — वीर्य चैतसिक
७. सम्यक् स्मृति — स्मृति चैतसिक
८. सम्यक् समाधि — एकाग्रता चैतसिक

चारों मार्ग चित्त परमार्थतया एक चित्त है। इनके साथ १३ अन्यसमान चैतसिक तथा २५ शोभन चैतसिकों में से करुणा एवं मुदिता दो अप्रामाण्य (अप्पमञ्ञा) चैतसिकों को छोड़कर २३ शोभन चैतसिक अर्थात् कुल ३६ चैतसिक यथायोग्य सम्प्रयुक्त होते हैं। इनमें से ८ चैतसिक आर्य आष्टांगिक मार्गसत्य हैं। शेष २८ चैतसिक और १ चित्त कुल २९ धर्म मार्ग चित्तोत्पाद (मग्गचित्तुप्पाद) कहे जाते हैं।

चारों फलचित्त परमार्थतया एक चित्त हैं। इनके साथ १३ अन्यसमान एवं अप्रामाण्यद्वयवर्जित २३ शोभन चैतसिक कुल ३६ चैतसिक सम्प्रयुक्त होते हैं। ३६ चैतसिक एवं १ चित्त कुल ३७ धर्म फलचित्तोत्पाद (फलचित्तुपाद) कहे जाते हैं।

सत्यविमुक्त धर्म—२९ मार्गचित्तोत्पाद एवं ३७ फलचित्तोत्पाद ये धर्म सत्यविमुक्त हैं। अर्थात् इनका सत्यों में संग्रह नहीं होता।

उपर्युक्त संग्रह-विभाग का ठीक परिज्ञान हो जाने पर तथा अभिधम्मत्थसंगहो के प्रथम चित्तपरिच्छेद और द्वितीय चैतसिक परिच्छेद का विशेषतया उसके सम्प्रयोगनय और संग्रहनय का ठीक-ठीक अभ्यास हो जाने पर धम्मसंगणि का अध्ययन निश्चित रूप से आसान हो जाता है। उपर्युक्त वर्णन के आधार पर निदर्शन के रूप में हम धम्मसंगणि की प्रथम त्रिक मातृका का विस्तार प्रस्तुत कर रहे हैं।

धम्मसंगणि की प्रथम त्रिक मातृका

(क) कुशल धर्म

(ख) अकुशल धर्म

(ग) अव्याकृत धर्म

(क) **कुशल धर्म**—विपाक के रूप में अनवद्य सुख प्रदान करना तथा कुत्सित अवद्य धर्मो का प्रहाण करना कुशल धर्मों का लक्षण है। निम्नलिखित धर्म कुशल होते हैं।

(क) चित्त—२१

कामावचर कुशल ८, रूपावचर कुशल ५, अरूपावचर कुशल ४ तथा लोकोत्तर कुशल ४ = २१।

(ख) चैतसिक—३८

अन्यसमान चैतसिक १३ तथा शोभन चैतसिक २५ = ३८।

स्कन्ध, आयतन, धातु और सत्यों में इन कुशल चित्त—चैतसिक धर्मो का विभाजन करने पर इनमें ४ स्कन्ध, २ आयतन, २ धातु एवं २ सत्य उपलब्ध होते हैं।

स्कन्ध—४

(क) वेदना चैतसिक—(१) वेदना स्कन्ध

(ख) संज्ञा चैतसिक—(२) संज्ञा स्कन्ध

(ग) वेदना और संज्ञा को छोड़कर शेष ३६ चैतसिक—(३) संस्कार स्कन्ध

(घ) २१ कुशल चित्त—(४) विज्ञान स्कन्ध

आयतन—२

(क) २१ कुशल चित्त (१) मन आयतन

(ख) ३८ चैतसिक (२) धर्म आयतन

धातु—२

(क) २१ कुशल चित्त (१) मनोविज्ञान धातु

(ख) ३८ चैतसिक (२) धर्म धातु

सत्य—२

(क) लोकोत्तर ४ कुशल चित्तों को छोड़कर अवशिष्ट लौकिक कुशल चित्त १७ तथा इनके साथ सम्प्रयुक्त चैतसिक—३८ ये धर्म (१) दुःखसत्य हैं।

(ख) लीकोत्तार कुशल मार्ग चित्तों के साथ सम्प्रयुक्त चौतसिक ३६ (३८ चैतसिकों में करुणा और मुदिता लोकोत्तर चित्तों से सम्प्रयुक्त नहीं होते) में से सम्यग्दृष्टि आदि ८ चौतसिक (आर्य आष्टांगिक मार्ग) (२) मार्ग सत्य हैं।

विशेष—चारों मार्ग चित्तों को एक मार्ग चित्त मान लिया जाए तो मार्गचित्त—१ तथा (मार्गसत्य कहे जानेवाले सम्यग्दृष्टि आदि ८ चैतसिकों को छोड़कर अवशिष्ट) चैतसिक २८ कुल २९ धर्म मार्गचित्तोत्पाद हैं, किन्तु मार्गसत्य नहीं हैं। अर्थात् ये सत्यविमुक्त हैं।

(ख) अकुशल धर्म

विपाक के रूप में सावद्य दुःख प्रदान करना, इनका लक्षण है। 'अकुशल' शब्द में 'अ'-कार विपरीतार्थक है। अतः ये धर्म कुशलविरोधी होते हैं। ये विपक्ष कहे जाते हैं और प्रहातव्य हैं।

कामावचर चित्तों में अकुशल चित्त १२ होते हैं। इनके साथ अन्यसमान चैतसिक १३ तथा अकुशल राशि में पठित १४ चैतसिक सम्प्रयुक्त होते हैं। ये १२ अकुशल चित्त तथा २७ चैतसिक 'अकुशल धर्म' हैं।

स्कन्ध, आयतन, धातु, और सत्यों में इन अकुशल धर्मों का विभाजन करने पर इनमें ४ स्कन्ध, २ आयतन, २ धातु और दो सत्य उपलब्ध होते हैं।

स्कन्ध—४

(१) वेदना स्कन्ध--वेदना चैतसिक

(२) संज्ञा स्कन्ध- संज्ञा चैतसिक

(३) वेदना और संज्ञा दो चैतसिकों को छोड़कर अवशिष्ट चैतसिक २५ संस्कार स्कन्ध हैं।

(४) विज्ञान स्कन्ध--१२ अकुशल चित्त।

आयतन--२

(१) मन-आयतन--१२ अकुशल चित्त

(२) धर्म-आयतन--२७ अकुशल सम्प्रयुक्त चैतसिक

धातु --२

(१) मनोविज्ञान धातु—१२ अकुशल चित्त

(२) धर्म धातु--२७ सम्प्रयुक्त चैतसिक

सत्य--२

(१) दुःखसत्य—१२ अकुशल चित्त तथा इनसे सम्प्रयुक्त २७ चैतसिकों में से लोभ चैतसिक को छोड़कर अवशिष्ट चैतसिक २६ 'दुःखसत्य' हैं।

(२) समुदय सत्य--लोभ चैतसिक

(ग) अव्याकृत धर्म

जिनका कुशल अथवा अकुशल में विभाजन नहीं किया जा सकता, वे धर्म अव्याकृत

कहलाते हैं। 'अव्याकृत' शब्द में 'अ'-कार अन्यार्थक है। अर्थात् कुशल तथा अकुशल से भिन्न धर्म अव्याकृत' कहे जाते हैं।

पालि अभिधर्म के अनुसार विपाक और क्रिया चित्त अव्याकृत चित्त हैं। अतः (क) ३६ विपाक चित्त (७ कामावचर अहेतुक अकुशल विपाक, ८ कामावचर अहेतुक कुशल विपाक, ८ कामावचर सहेतुक महाविपाक, ५ रूपावचर विपाक, ४ अरूपावचर विपाक तथा ४ लोकोत्तर विपाक); तथा २० क्रियाचित्त (पंचद्वारावर्जन, मनोद्वारावर्जन एवं हसन ३ अहेतुक क्रियाचित्त, ८ कामावचर महाक्रियाचित्त, ५ रूपावचर क्रियाचित्त एवं ४ अरूपावचर क्रिया- चित्त); इनके साथ सम्प्रयुक्त चैतसिक ३८ (१३ अन्यसमान तथा २५ शोभन चैतसिक); सभी रूप २८ एवं निर्वाण 'अव्याकृत धर्म' है। संक्षेप में ३६ विपाकचित्त, २० क्रियाचित्त, ३८ चैतसिक, २८ रूप एवं निर्वाण ये धर्म अव्याकृत कहे जाते हैं।

इन धर्मों का स्कन्ध, आयतन, धातु एवं सत्यों में विभाजन करने पर इनमें ५ स्कन्ध, १२ आयतन, १८ धातु एवं २ सत्य उपलब्ध होते हैं।

स्कन्ध—५

(१) रूपस्कन्ध — २८ रूप
(२) वेदनास्कन्ध — वेदना चैतसिक
(३) संज्ञास्कन्ध — संज्ञा चैतसिक
(४) संस्कार स्कन्ध — वेदना, संज्ञा चैतसिकों को छोड़कर अवशिष्ट चैतसिक ३६
(५) विज्ञान स्कन्ध — ३६ विपाक चित्त एवं २० क्रियाचित्त (अतीत, अनागत, प्रत्युत्पन्न भेद से रहित निर्वाण स्कन्ध संग्रह से विनिर्मुक्त है)।

आयतन—१२

(१) चक्षुरायतन — चक्षुःप्रसाद
(२) श्रोत्रायतन – श्रोत्रप्रसाद
(३) घ्राणायतन — घ्राणप्रसाद
(४) जिह्वायतन — जिह्वाप्रसाद
(५) कायायतन — कायप्रसाद
(६) रूपायतन — रूपालम्बन
(७) शब्दायतन — शब्दालम्बन

(८) गन्धायतन -- गन्धालम्बन
(९) रसायतन — रसालम्बन
(१०) स्प्रष्टव्यायतन – स्प्रष्टव्यालम्बन
(११) मन आयतन – ३६ विपाकचित्त, २० क्रियाचित्त
(१२) धर्मायतन —३८ चैतसिक, १६ सूक्ष्म रूप (अब्धातु, स्त्रीन्द्रिय, पुरुषेन्द्रिय, हृदयवस्तु, जीवितेन्द्रिय, आहाररूप, कायविज्ञप्ति, वाग्विज्ञप्ति, रूपलघुता, रूपमृदुता, रूपकर्मण्यता, उपचय, सन्तति, जरता, अनित्यता, आकाश) एवं निर्वाण।

धातु—१८

(१) चक्षुर्धातु — चक्षुःप्रसाद
(२) श्रोत्रधातु — श्रोत्रप्रसाद
(३) घ्राणधातु — घ्राणप्रसाद
(४) जिह्वाधातु — जिह्वाप्रसाद
(५) कायधातु — कायप्रसाद
(६) रूपधातु — रूपालम्बन
(७) शब्दधातु — शब्दालम्बन
(८) गन्धधातु — गन्धालम्बन
(९) रसधातु -- रसालम्बन
(१०) स्प्रष्टव्यधातु — स्प्रष्टव्यालम्बन
(११) चक्षुर्विज्ञानधातु — चक्षुर्विज्ञानद्वय कुशल, अकुशल विपाक)
(१२ श्रोत्रविज्ञानधातु — श्रोत्रविज्ञानद्वय ,, ,,
(१३) घ्राणनिज्ञानघातु — घ्राणविज्ञानद्वय ,, ,,
(१४) जिह्वाविज्ञानधातु — जिह्वाविज्ञानद्वय ,, ,,
(१५) कायविज्ञानधातु — कायविज्ञानद्वय ,, ,,
(१६) मनोधातु -- पंचद्वारावर्जन एवं सम्प्रतिच्छन्नद्वय
(१७) मनोविज्ञानधात — द्विपंचविज्ञान—१०, सम्प्रतिछन्नद्वय २ इन १२ विपाक चित्तों को छोड़कर शेष विपाक चित्त २४ तथा पंचद्वारावर्जनवर्जित १९ क्रियाचित्त
(१८) धर्मधातु -- चैतसिक ३८, सूक्ष्मरूप १६ तथा निर्वाण

सत्य--२

१. दुःखसत्य -- लौकिक विपाक चित्त ३२ (३६ विपाक चित्तों में से ४ लोकोत्तर विपाक छोड़कर); क्रियाचित्त २०; इनके साथ सम्प्रयुक्त चैतसिक ३५ (बिरतित्रयवर्जित) एवं रूप-२८ ।

२. निरोधसत्य — निर्वाण

विशेष—चारों लोकोत्तर विपाक (फल) चित्तों को एक फल चित्त मानकर फलचित्त —१ तथा इनके साथ सम्प्रयुक्त चैतसिक ३६ (३८ में से करुणा एवं मुदिता अप्रमाण्य चैतसिकों को छोड़कर) ये ३७ धर्म फलचित्तोत्पाद कहलाते हैं। ये 'सत्यविमुक्त' हैं।

ध्यातव्य--इसी तरह धम्मसंगणि की २२ त्रिक मातृकाओं और १०० द्विक मातृकाओं का विस्तार किया जा सकता है। ऐसा करने पर धम्मसंगणि समझ में आने लगती है तथा उनके बारे में जो नाहक दुरूहता का भय है, वह दूर हो जाता है। वह अत्यन्त आसान एवं रुचिकर हो जाती है। इस तरीके से न समझा जाए तो उसमें केवल धर्मों की परिगणनामात्र नजर आती है। वह अत्यन्त रूक्ष एवं क्लिष्ट प्रतीत होती है। उसका स्मरण रखना अत्यन्त कठिन कार्य हो जाता है। सच पूछा जाय तो भारत में अभी तक अभिधर्म का विधिवत् पठन-पाठन कहीं प्रारम्भ ही नहीं हुआ है। विस्तारभय से शेष मातृकाओं का यहाँ विस्तार छोड़ा जा रहा है।

ग्रन्थ एवं ग्रन्थकर्ता का परिचय

विदित है कि प्रस्तुत ग्रन्थ धम्मसंगणि और उसकी अट्ठकथा (भाष्य) की व्याख्या है। तीनों पिटकों में अभिधर्मपिटक विचार-प्रधान है। इसमें धर्मों (पदार्थों) के स्वलक्षण-सामान्यलक्षण, उनकी द्रव्यसत्ता-प्रज्ञप्तिसत्ता आदि गूढ़ दार्शनिक प्रश्नों पर स्थविरवादी दृष्टिकोण से मन्तव्य प्रकट किये गये हैं। त्रिपिटक का टीका साहित्य अत्यन्त विशाल है। त्रिपिटक पर अट्ठकथाएँ, अट्ठकथाओं पर मूलटीका, अनुटीका, मधुटीका, योजना, गण्ठी आदि विस्तृत वाङ्मय की रचना हुई है। यह सम्पूर्ण साहित्य बर्मा, सिंहल, श्याम, कम्बोज आदि बौद्ध देशों में आज भी सुरक्षित है। न केवल वहाँ सुरक्षित ही है, अपितु अध्ययन-अध्यापन, ग्रन्थलेखन आदि द्वारा अनुदिन वृद्धिगत भी हो रहा है।

भारतवर्ष में पूरा त्रिपिटक नागरी अक्षरों में उपलब्ध है। अधिकांश अट्ठकथाएँ भी प्रकाशित हो गई हैं, किन्तु मूलटीका, अनुटीका आदि अभी तक नागरी अक्षरों में प्रायः अप्रकाशित ही हैं। फलतः पालि और विशेषतः अभिधर्म का अध्ययन अधूरा ही रह जाता है। इस अभाव की पूर्ति की दिशा में यह प्रथम प्रयास किया गया है।

अट्ठकथाओं पर सबसे पहले लिखी गई टीकाएँ मूलटीका कहलाती हैं। अभिधर्म-पिटक के सर्वप्रथम एवं सर्वप्रमुख ग्रन्थ धम्मसंगणि की अट्ठकथा का नाम 'अट्ठसालिनी' है। अट्ठसालिनी की सर्वप्रथम टीका 'मूलटीका' है। मूलटीका पर बाद में 'अनुटीका' का निर्माण हुआ। प्रस्तुत ग्रन्थ धम्मसंगणि की 'मूलटीका' है। नागरी अक्षरों में यह भारतवर्ष का प्रथम संस्करण है। सावधानी के बावजूद इसमें त्रुटि की सम्भावनाएँ हैं। विद्वज्जनों के सुझाव पर अगले संस्करण में संशोधन सम्भव है।

अभिधर्मपिटक के प्रमुख प्रतिपाद्य विषय चार होते हैं, यथा—चित्त, चैतसिक, रूप एवं निर्वाण। प्रस्तुत ग्रन्थ अभिधर्मपिटक का ही अनुसरण करता है। अतः इसके भी प्रमुख प्रतिपाद्य ये ही विषय हैं, फिर भी मूलटीकाकार और अनुटीकाकारों ने प्रसंगानुसार अपने ग्रन्थों में उन सब विचारों की समीक्षा की हैं, जो उनके काल तक विकसित हो गए थे। सांख्यों के परिणामवाद और न्याय-वैशेषिक के आरम्भवाद से मूलटीकाकार भलीभाँति परिचित मालूम होते हैं। तथा हि—

"पकतिवादीनं महतो विय अणुवादीनं द्विअणुकस्स विय"[१]।

एक दूसरी जगह एक कारणवाद की व्याख्या करते हुए वे कहते हैं कि इसका तात्पर्य प्रकृति-कारणवाद और ईश्वरकारणवाद है, यथा—

"एककारणवादो ति पकतिकारणवादो इस्सरकारणवादो वा"[२]।

अनुटीकाकार कहते हैं कि यह तो निदर्शनमात्र है। प्रजापतिकारणवाद, पुरुषकारणवाद, कालकारणवाद आदि भी इसी के अन्तर्गत हैं। तथा हि—

"पकतिस्सरग्गहणं निदस्सनमत्तं दट्ठब्बं। पजापति-पुरिस-कालवादादयो पि एककारणवादो"[३]।

कहीं कहीं मूलटीकाकार परम्परागत मान्यताओं से भिन्न अपना स्वतन्त्र विचार भी प्रस्तुत करते है। विभंग की मूलटीका में उन्होंने अपने पूर्ववर्ती अट्ठकथाचार्यों के मत का निरास करते हुए वस्तु के स्थितिकाल का खण्डन किया है[४]। स्थविरवादी परम्परा में वस्तु के उत्पाद, स्थिति और भंग तीन काल माने जाते हैं। किन्तु मूलटीकाकार ने इसमें असंगति दिखलाई है और अपनी अरुचि प्रकट की है। उनके मतानुसार उत्पाद और भंग ये दो ही काल होने चाहिए। किन्तु उनके ये विचार स्थविरवादी परम्परा में स्थान नहीं बना सके। स्वयं मूलटीका की अनुटीका के रचयिता ने उनके मत का खण्डन किया और पूर्ववर्ती अट्ठकथाचार्य के मत का समर्थन किया।

१—द्र०—मूलटीका पृ० १०९।
२—द्र०—मूलटीका, पृ० १०७।
३—द्र०—अनुटीका, पृ० १०७।
४—द्र०—विभंग-मूलटीका, पृ० २२ (बर्मीसंस्करण)।

मूलटीकाकार आनन्द स्थविर

ऊपर कहा गया है कि पालि त्रिपिटक पर सर्वप्रथम निर्मित टीका 'मूलटीका' कहलाती है। अभिधर्मपिटक के धम्मसंगणि ग्रन्थ की अट्ठकथा 'अट्ठसालिनी' की मूलटीका (प्रस्तुत ग्रन्थ) के रचयिता का पूरा नाम 'आनन्द वन रतन महास्थविर' था। श्रीलंका के विद्योदयटीका–मुद्रणांक में मुद्रित 'अट्ठसालिनी-मूलटीका' के 'विञ्ञापन' (भूमिका) में उल्लिखित है कि ये स्थविर १७९७ बुद्धवर्ष में राज्यप्राप्त सर्वज्ञ पण्डित पराक्रमबाहु के काल में विद्यमान थे। किन्तु यह भारी भूल प्रतीत होती है। यद्यपि उस काल में भी आनन्द स्थविर नामक एक भिक्षु हुए थे, किन्तु वे मूलटीकाकार आनन्द वन रतन महास्थविर नहीं थे। द्वितीय पराक्रमबाहु के काल में विद्यमान उपर्युक्त आनन्द स्थविर ही यदि मूलटीका के रचयिता हैं तो उसे (मूलटीका को) आचार्य धम्मपाल की विसुद्धिमग्गमहाटीका, सुमंगलाचार्य की विभावनी टीका, वाचिस्सर महास्वामी की कई टीकाओं से पश्चाद्वर्ती होना चाहिए। किन्तु ऐसा सम्भव नहीं है। क्योंक बर्मी 'सासनवंस' के दूसरे परिच्छेद में आगत "सा च सब्बासं टीकानं मूलभूतत्ता मूलटीका ति पाकटा" इस वचन से विरोध होता है। इस वाक्य के अनुसार मूलटीका सभी टीकाग्रन्थों की पूर्ववर्तिनी एवं मूलभूत है। अपि च, मूलटीका की अनुटीका के रचयिता धम्मपाल स्थविर हैं, जैसे उल्लिखित है कि अनुटीका "आचरियधम्मपालत्थेरेन कता इति" तथा उपर्युक्त 'सासनवंस' में ही आगत "अनुटीकं पन आचरियधम्मपालत्थेरो इति" इत्यादि वचनों से प्रतीत होता है कि मूलटीका इतनी नवीन नहीं है। उपर्युक्त सासनवंस में उल्लिखित आचार्य धम्मपाल यदि थेरगाथा-अट्ठकथा आदि के भी रचयिता हैं तो आचार्य आनन्द स्थविर (मूलटीकाकार) के उनसे भी पूर्ववर्ती होने की सम्भावना है। अनुटीका के रचयिता धम्मपाल वही धम्मपाल हैं कि नहीं ? यह विचारणीय है।

सारिपुत्त के शिष्य सुमंगल महास्वामी द्वारा विरचित 'अभिधम्मत्थ-विभावनी' टीका में कई स्थलों पर आनन्द आचार्य और उनकी मूलटीका का उल्लेख उपलब्ध होता है। अतः सम्भावना इस बात की है कि मूलटीका दिवुलागल महाकाश्यप महास्वामी के काल में अथवा उससे भी पूर्व निर्मित हो तथा महापराक्रमबाहु के राज्यकाल से भी पूर्ववर्ती हो।

अभिधम्मत्थसंगहटीका विभावनी के षष्ठ परिच्छेद में "आनन्दाचरियादयो पन 'सब्बेसम्पि चुतिचित्तं रूपं न समुट्ठापेती' ति वदन्ति। विनिच्छयो पन नेसं संखेपतो मूलटीकादीसु वित्थारतो च अभिधम्मत्थविकासनियं वुत्तनयेन दट्ठब्बो[1]" इस प्रकार

१—द्र०—विभावनी, पृ० १७२, भदन्त रेवतधम्म-सम्पादित [बौद्ध स्वाध्याय सत्र, वाराणसी १९६५]

वचन मिलता है। इसमें मूलटीका और उसके रचयिता आनन्दाचार्य दोनों का उल्लेख है। इसी तरह "मूलटीकाकारादयो पन अञ्ञथा पि तं साधेन्ति[१]". तथा "आनन्दाचरियो पनेत्थ[२]" से भी उनका परिचय उपलब्ध होता है। इसी भाँति विभावनी में आचार्य धम्मपाल का उल्लेख भो उपलब्ध होता है, यथा—"देसना-सवनदिट्ठिजुका पन कुसलधम्मा सेवनतो भावनामये संगहं गच्छन्ती ति आचरियधम्मपालत्थेरेन वुत्तं[३]" तथा "आचरिधम्म पालत्थेरेन पनेत्थ[४]" इत्यादि उद्धरणों से इन दोनों आचार्यों की समीपवर्तिता सिद्ध होती है।

मूलटीका अट्ठसालिनी-अट्ठकथा के गूढ़ अर्थों को प्रकाशित करनेवाली टीका है. इसीलिए इसे 'लीनत्थजोतिका' अथवा 'लीनत्थपदवण्णना' कहा गया है। उपसंहार में स्वयं आचार्य ने कहा है –

चत्तारि च सहस्सानि पुन तीणि सतानि च।
अट्ठसालिनिया एते पदा लीनत्थजोतका ॥

यह ग्रन्थ २७ हजार गाथा-प्रमाण है। इसमें अट्ठसालिनी के अर्थ को खुलासा करनेवाले ४,३०० पद हैं।

रूपसिद्धि व्याकरण के रचयिता आचार्य 'बुद्धप्पिय' मूलटीकाकार आनन्द स्थविर के शिष्य हैं। यह उस ग्रन्थ की अवसान-गाथा से सिद्ध है। तथा हि—

विख्यातानन्दथेरह्वयवरगुरुनं तम्बपण्णिद्धजानं,
सिस्सो दीपंकराख्यो दमिलवसुमतीदीपलद्धप्पकासो।
बालादिच्चादिवासद्वितयमधिवसं सासनं जोतयी यो;
सो यं बुद्धप्पियह्वो यति इममुजुकं रूपसिद्धिं अकासी ॥

'सारत्थसमुच्चय' नामक चतुभाणवारट्ठकथा के रचयिता भी आनन्दवनरतन स्थविर के शिष्य थे। जैसा कि उस ग्रन्थ की अवसानगाथा से स्पष्ट है –

सो यं दयालुगुरु मे जयती ह पञ्ञो,
आनन्दरञ्ञरतनादिमहायतिन्दो ।
निस्साय यस्स यतयो हि यतिस्स तेजं;
जोतेन्ति धम्ममतिसेमुसीगोचरं पि ॥

१—द्र०—विभावनी, पृ० १४४।
२—द्र०—विभावनी पृ० ९६।
३—द्र०—विभावनी, पृ० १३६।
४—द्र०—विभावनी पृ० १०५।

निकायसंग्रह में दो स्थानों पर आनन्द स्थविर का उल्लेख उपलब्ध होता है। जहाँ आचार्यों के नाम गिनाये गए है, वहाँ बुद्धदिन्न, धम्मपाल, जोतिपाल, खेम, धम्मसिरि, नन्द, आनन्द, अनुरुद्ध, उपतिस्स, बुद्धरक्खित, मोग्गलान—यह क्रम उल्लिखित है तथा एकश्रुतिनयिक ग्रन्थसहस्रधारणसमर्थ आचार्यों का नाम गिनाते समय वज्रज्ञान सारिपुत्त महास्वामी से लेकर संघरक्खित, सुमंगल, धर्मकीर्ति, नागसेन, आनन्द, वेदेह, बुद्धप्पिय, अनोमदस्सी आदि क्रम प्रदर्शित किया गया है। इन दोनों में आनन्द, अनुरुद्ध वाला प्रथम क्रम ऐतिहासिक दृष्टि से उचित प्रतीत होता है। इसके अनुसार मूलटीकाकार आचार्य आनन्द आचार्य अनुरुद्ध से पूर्ववर्ती सिद्ध होते हैं। प्रथम गणना-क्रम में सर्वप्रथम उल्लिखित बुद्धदिन्न यह बुद्धदत्त का नाम हो सकता है। धम्मपाल यह अट्ठकथाचार्य धम्मपाल हो सकते हैं। जोतिपाल स्थविर ने किसी ग्रन्थ की रचना की है या नहीं, यह ज्ञात नहीं है, किन्तु विभावनी टीका के चतुर्थ परिच्छेद में उनके मत का उल्लेख उपलब्ध होता है, यथा- "आचरियजोतिपालत्थेरेन पन सहेतुकं भवंगं ति अविसेसेन वुत्तत्ता[१]" यह वचन उद्धृत है। इससे प्रतीत होता है कि उन्होंने भी किसी अभिधर्मविषयक ग्रन्थ की रचना अवश्य की होगी। आचार्य खेम के नाम से उपलब्ध 'नाम-रूपसमास' नामक ग्रन्थ आचार्य खेम (क्षेम) की रचना है। बर्मा में यह ग्रन्थ 'खेमप्पकरण' नाम से प्रसिद्ध है। आचार्य धम्मसिरि ने 'खुद्दकसिक्खा' नामक ग्रन्थ का प्रणयन किया है। नन्द यह सिरिसंघबोधि महाराज के मामा हो सकते हैं। आनन्द यह मूलटीका के रचयिता हैं। अनुरुद्ध यह 'अभिधम्मत्थसंगहो', 'नामरूपपरिच्छेद' आदि ग्रन्थों के रचयिता सुप्रसिद्ध आचार्य अनुरुद्ध हैं। बर्मी 'सासनवंस' में "सच्चसंखेपो धम्मपालत्थेरेन कतो" यह पाठ मिलता है। इससे सच्चसंखेप आचार्य धर्मपाल की कृति है—ऐसा ज्ञात होता है, किन्तु इससे बहुत काल के बाद उत्पन्न धर्मकीर्ति नामक स्थविर ने अपने सद्धम्मसंगह नामक ग्रन्थ में लिखा है कि सच्चसंखेप आचार्य आनन्द की कृति है। तथा हि—

कतो यो सच्चसंखेपो निपुणत्थविनिच्छयो।
आनन्दत्थेरपादेन विचित्तनयमण्डितो ॥

संघराज सारिपुत्त के शिष्य वाचिस्सर महास्वामो ने सच्चसंखेप की टीका लिखी है। अतः निश्चय ही आनन्दाचार्य इन (वाचिस्सर) से पूर्ववर्ती हैं। रसवाहिनी आदि ग्रन्थों के प्रणेता वेदेह स्थविर भी आनन्दवनरतन महास्थविर के शिष्य हो सकते हैं, क्योंकि उन्होंने अपनी समन्तकूटवण्णना में इस आशय का वर्णन किया है। तथा हि—

१—द्र०—विभावनी, पृ० १०९।

भुवनोदरम्हि पञ्ञातो रविवम्बरमण्डले।
अरञ्ञरतनानन्दमहाथेरो महागणी॥
जीवितं विय यो सत्थु सासनस्स महाकवि।
सारो सुप्पटिट्ठीसु सत्थसागरपारगो॥
तस्स सिस्सो पि यो विप्पगामवंसेककेतुको।
ञातागमो रञ्ञवासी सीलादिगुणभूसनो॥
यो कासीहलभासाय सीहलं सद्दलक्खणं।
तेन वेदेहथेरेन कतायं पियसीलिना॥

अनुटीकाकार धम्मपाल स्थविर

सूत्रपिटकान्तर्गत खुद्दकनिकाय में पठित अनेक ग्रन्थों की अट्ठकथा के रचयिता आचार्य धम्मपाल हैं, जिनकी अट्ठकथा आचार्य बुद्धघोष ने नहीं की थी, जैसे—उदान, इतिवुत्तक, पेतवत्थु, विमानवत्थु, चरियापिटक आदि ग्रन्थों पर आचार्य धम्मपाल ने अट्ठकथा लिखी। इसका नाम परमत्थदीपनी है। इस प्रकार इन्होंने आचार्य बुद्धघोष के अधूरे काम को पूरा किया। इसके अलावा नेतिप्पकरण-अट्ठकथा, विसुद्धिमग्ग-महाटीका (परमत्थमंजूसा), प्रथम तीन दीघनिकाय, मज्झिम निकाय और संयुत्तनिकायों की अट्ठकथाओं पर टीका आदि आचार्य धम्मपाल की रचनाएँ हैं। धम्मपाल नाम के अनेक भिक्षु अनेक शताब्दियों में हुए हैं। अतः अनेक ऐसे ग्रन्थ हैं, जिनके बारे में यह कह सकना मुश्किल है कि वस्तुतः यह रचना किस धम्मपाल की है। ये स्थविर दक्षिण भारत के नागपत्तन में प्रतिष्ठित बदरतित्थ नामक विहार में निवास करते थे। यह बात उनके नेत्तिप्पकरण-अट्ठकथा की अवसानगाथा से प्रमाणित है। तथा हि—

सद्धम्मोत्तरणट्ठाने पट्टने नागसव्हये।
धम्मासोकमहाराजविहारे वसता मया॥

अपि च,

बदरतित्थमहाविहारवासिना आचारियधम्मपालत्थेरेन कता नेत्तिप्पकरणस्स अत्थवण्णना समत्ता।

ये आचार्य बुद्धघोष के विसुद्धिमग्ग की महाटीका के रचनाकार हैं, अतः यह सिद्ध है कि ये बुद्धघोष के पश्चाद्वर्ती हैं। अभिधम्मत्थसंगहो की अभिधम्मत्थविभावनी टीका में अनेक स्थलों पर आचार्य धम्मपाल के मतों का उल्लेख है, इसे हमने ऊपर दर्शाया है। अतः निश्चय ही विभावनीटीकाकार सुमंगल स्वामी से पूर्ववर्ती हैं। आचार्य धम्मपाल न केवल पालि-अभिधर्मशास्त्र के ही प्रकाण्ड पण्डित थे, अपि तु ये अनेक शास्त्रों के ज्ञाता थे, यह

बात उनकी अट्ठकथाओं के अवलोकन से स्पष्टतया प्रतीत होती है। अनेक स्थलों पर कुछ वचनों का आचार्य बुद्धघोष द्वारा प्रदत्त अर्थ स्वीकार न करते हुए इन्होंने उनका स्वतन्त्र अर्थ दिया है।

ऊपर कहा गया है कि धम्मपाल नाम के अनेक भिक्षु हुए हैं। उनमें एक चुल्ल धम्मपाल भी हैं। ये मूल टीकाकार आचार्य आनन्द के शिष्य थे। सम्भव है अनुटीका के रचयिता ये ही हों। बुद्धदत्त, बुद्धघोष, आनन्द, धम्मपाल आदि आचार्य समय के थोड़े हेरफेर के साथ प्रायः समकालिक ही हैं। पालि इतिहासकारों ने इनका काल ईसवी चौथी-पाँचवीं शताब्दी निश्चित किया है।

संस्करण—प्रस्तुत ग्रन्थ धम्मसंगणि-मूलटीका एवं अनुटीका का नागरी अक्षरों में यह प्रथम संस्करण है। बर्मा, श्रीलंका आदि स्थविरवादी बौद्ध देशों में तत्तद् भाषाओं में इसके अनेक संस्करण हैं, किन्तु भारतीय लिपियों में इसका अभाव था। फलतः अभिधर्म के गम्भीर अध्ययन में कमी का अनुभव हो रहा था। हमने उस अभाव की पूर्ति का यथासम्भव प्रयास किया है। बर्मा में षष्ठ संगायन के अनन्तर बुद्ध शासन-समिति के तत्त्वावधान में प्रायः सम्पूर्ण पालि-वाङ्मय का पुनः संशोधित प्रकाशन हुआ है। हमने उसे ही अपने संस्करण का आधार बनाया है तथा प्रामाणिक सिंहली-संस्करण से मिलान करने पर जो पाठ-भेद दृष्टिगोचर हुए, वे पादटिप्पणी में उद्धृत कर दिये हैं। ग्रन्थ में जो अनेक ग्रन्थों के उद्धरण हैं, उनका भी यथाशक्य स्थल-निर्देश पाद-टिप्पणी में संकेतित है। इस रह हमने सांगोपांग शुद्ध संस्करण करने का प्रयास किया है। फिर भी त्रुटि की सम्भावना से इन्कार नहीं किया जा सकता। इसके लिए विद्वज्जन क्षमा करेंगे।

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति प्रो० बदरीनाथ शुक्ल, भूतपूर्व श्रमणविद्यासंकायाध्यक्ष एवं पालिविभागाध्यक्ष प्रो० जगन्नाथ उपाध्याय एवं ग्रन्थाध्यक्ष पं० श्री लक्ष्मीनारायण तिवारी के सत्प्रयास एवं प्रेरणा का ही यह ग्रन्थ फल है। इन्होंने ही इसको प्रकाशन-योजना को स्वीकृति प्रदान की और प्रकाशन-कार्य का प्रबन्ध किया। कार्यशैथिल्य होने पर बीच-बीच में गति देने के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन भी प्रदान किया। हम इनके प्रति साभार नतमस्तक हैं।

हमारे शिष्य भिक्षु अग्गधम्म (बर्मी बौद्ध विहार, मलदहिया, वाराणसी) ने बर्मी संस्करण से मिलान करने में तथा संस्कृत विश्वविद्यालय के पालि-विभाग के प्राध्यापक कल्याणमित्र डॉ० सोमरतन थेरो (श्रीलंका) ने सिंहली संस्करण से मिलान करने में

हमारी अत्यधिक सहायता की है। इन दोनों भिक्षुओं के उपकार को हम कभी भुला नहीं सकते। हमारे ही शिष्य श्री भगवती प्रसाद भट्ट ने प्रैस-कापी तैयार करने तथा प्रूफ संशोधन में सहायता की है। वे हमारे आशीर्वाद के पात्र हैं।

स्वस्तिक प्रेस के व्यवस्थापक एवं कर्मचारियों के हम कृतज्ञ है, जिन्होंने बड़े धैर्य एवं परिश्रम के साथ पालि जैसी अपरिचित एवं दुरूह भाषा के मुद्रण-कार्य के सम्पादन में पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

मकर संक्रान्ति वि०सं० २०४०
दि० १५-१-१९८४

रामशङ्कर त्रिपाठी
सम्पादक

ये धम्मा हेतुप्पभवा हेतुं तेसं तथागतो आह।
तेसं च यो निरोधो एवंवादी महासमणो॥

अभिधम्म-मूलटीका
अनुटीकाय समन्नागता

विसयानुक्कमणिका

सहायकगन्थानुक्कमणिका नामसंकेतो च

अंगुत्तरनिकायो (अं०)
अंगुत्तरनिकायट्ठकथा (अं० अट्ठ०)
अट्ठसालिनी (अट्ठ०)
अभिधर्मकोशम्
अभिधम्मपिटकम् (अभि०)
अभिधम्मपिटकट्ठकथा (अभि० अट्ठ०)
इतिवुत्तकं (इति०)
उदानं
कथावत्थु (कथा०)
खुद्दकनिकायो (खु०)
गण्डव्यूहसूत्रम्
चुल्लनिद्देसो
चुल्लवग्गो (चुल्ल०)
थेरगाथा
थेरापदानं
दीघनिकायो (दी०, दी० नि०)
दीघनिकायट्ठकथा (दी० अट्ठ०)
दीपवंसो
धातुकथा (धातु०)
धम्मपदं (धम्म०)
धम्मसंगणि (ध० सं०)
नेत्तिप्पकरणं (नेत्ति०)
नेत्तिप्पकरणट्ठकथा (नेत्ति० अट्ठ०)
पट्ठानं
पटिसम्भिदामग्गो
पाचित्तियं
बुद्धवंसो
बोधिचर्यावतारः
मज्झिमनिकायो (म०)
मज्झिमनिकायट्ठकथा (म० अट्ठ०)
महानिद्देसो (महा० नि०)
महावग्ग (महा०)
मूलटीका
यमकं
वजिरटीका
विनयपिटकम्
विभंगो (विभ०)
विभंगट्ठकथा (विभ० अट्ठ०)
विसुद्धिमग्गो
सम्मोहविनोदनी (सं० विनोद०)
संयुत्तनिकायो (सं०)
संयुत्तनिकायट्ठकथा (सं० अट्ठ०)
सीलक्खन्धवग्गट्ठकथा
सुत्तनिपातो (सुत्त०)

अभिधम्मपिटके

अट्ठसालिनिया धम्मसङ्गहट्ठकथाय

भदन्ताचरिय-आनन्दत्थेरेन कता

लीनत्थपदवण्णना नाम

अभिधम्ममूलटीका

भदन्ताचरियधम्मपालत्थेरेन कताय

अनुटीकाय समन्नागता

अभिधम्मपिटके

अट्ठसालिनिया धम्मसङ्गहट्ठकथाय

भदन्ताचरिय-आनन्दत्थेरेन कता

लीनत्थपदवण्णना नाम

अभिधम्ममूलटीका

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मा सम्बुद्धस्स

वीसतिगाथावण्णना

धम्मसंवण्णनायं सत्थरि पणामकरणं धम्मस्स स्वाक्खातभावेन सत्थरि पसादजननत्थं, सत्थु च अवितथदेसनभावप्पकासनेन[1] धम्मे पसादजननत्थं।

अनुटीका

वीसतिगाथावण्णना

अभिधम्मसंवण्णनाय अत्थं संवण्णेतुकामो तस्सा आदिगाथाय ताव पयोजनसम्बन्धाभिधानपुब्बङ्गमं अत्थं निद्धारेन्तो उळारज्झासयानं निसम्मकारीनं पटिपत्ति परेसं विविधहितसुखनिप्फादनप्पयोजना ति आचरियस्सा पि धम्मसंवण्णनाय आदिम्हि सत्थरि निपच्चकारस्स अन्तरायविसोसनत्थता विय सत्थरि धम्मे च परेसं अच्चन्तसुखप्पटिलाभसंवत्तनियसद्धारतनुप्पादनत्थता पि सिया ति दस्सेतुं "धम्मसंवण्णनायं" ति आदिमाह। तत्थ यथानुसिट्ठं पटिपज्जमाने अपायेसु अपतमाने धारेती ति धम्मो ति सामञ्ञवचनो पि धम्म-सद्दो सद्दन्तरसन्निधानेन इध परियत्तिविसेसविसयो। संवण्णीयति अत्थो एताया ति संवण्णना अट्ठकथा।

तिविधयानमुखेन विमुत्तिधम्मं यथारहमनुसासती ति सत्था। पणमनं पणामो, कायवाचाचित्तेहि सत्थु गुणनिन्नता। किरिया करणं, पणामस्स करणं पणामकरणं, वन्दनापयोगो। सो च किञ्चा पि "इदानि अधिप्पेतं पणामं करोन्तो" ति आदिना "तस्स पादे नमस्सित्वा" ति आदिकस्स अधिप्पेतपणामभावं दस्सेस्सति, "करुणा विया" ति आदिकस्स पन सब्बस्स थोमनावसेन वुत्तस्स पि वसेन वेदितब्बो। सो हि सत्थु महाकरुणादिगुणविसेसकित्तनवसेन पवत्तो महाकरुणादिगुणविसेसाविनाभाविना संवण्णियमानसंवण्णनाधम्मविभावितेन धम्मस्स स्वाक्खातभावेन स्वाक्खातधम्मे [म०-२] सत्थरि

1. ०देसना०- सी०।

तदुभयप्पसादा हि धम्मसम्पटिपत्ति महतो च अत्थस्स सिद्धि होतीति ।

अथ वा रतनत्तयपणामवचनं अत्तनो रतनत्तयपसादस्स विञ्ञापनत्थं, तं पन विञ्ञूनं चित्ताराधनत्थं, तं अट्ठकथाय गाहणत्थं, तं सब्बसम्पत्तिनिप्फादनत्थं ति । इदं पन आचरियेन अधिप्पेतप्पयोजनं अन्तरायविसोसनं । वक्खति हि **"निपच्चकारस्सेतस्स.... प...असेसतो"** ति ।

रतनत्तयपणामकरणं हि[1] अन्तरायकरापुञ्ञविघातकरपुञ्ञविसेसभावतो मङ्गलभावतो भयादि-उपद्दवनिवारणतो च अन्तरायविसोसने समत्थं होति । कथं पनेतस्सापुञ्ञविघातकरादिभावो[2] विजानितब्बो ति ? "यस्मि महानाम, समये अरियसावको तथागतं अनुस्सरति,

अनुप्पन्नसद्धानं सद्धाजननाय उप्पन्नसद्धानं च भिय्योभावाय होति । सत्थुनो च अविपरीतधम्मदेसनभावेन अवितथदेसनाभूते धम्मे ति एतेन सत्थुनो महाकरुणादिगुणानं येव च फलविसेसनिप्फादनसमत्थताय पसादावहतं आह । धम्मेन हि सत्थुसिद्धि, सत्थारा च धम्मसिद्धि, धम्मसम्पत्तिया पि सत्थुगुणताय सत्थुगुणविभावनेन सम्पज्जतीति ।

एवं सत्थरि पणामकरणस्स एकं पयोजनं दस्सेत्वा इदानि **सम्बन्धं** विभावेति **"तदुभयप्पसादा हि"** ति आदिना । न हि सत्थरि धम्मे वा अप्पसन्नो संवण्णियमाने तदधिगन्तब्बे च धम्मे सम्मा पटिपज्जति, नापि सीलादि-अनुपादापरिनिब्बानन्तं महन्तं अत्थं साधेति, तस्मा धम्मसंवण्णनासु परेसं सम्मापटिपत्ति-आकङ्खाय तथारूपधम्मपटिग्गाहकेहि च विनियोजितेन सत्थरि धम्मे च पसादुप्पादनं सत्थरि पणामकरणं विहितं ति अधिप्पायो ।

भगवतो गुणसंकित्तनं तस्स धम्मसंघानम्पि थोमना होति येवा ति वुत्तं **"रतनत्तयपणामवचनं"** ति । तथा च वक्खति "भगवतो थोमनेनेवा" ति आदि । वक्खमानं वा "सद्धम्मञ्चस्स पूजेत्वा" ति आदिं सन्धाय वुत्तं । विञ्ञापनत्थं परेसं विञ्ञूनं ति वा सम्बन्धनीयं । अविञ्ञूनं अप्पमाणताय अभाजनताय च विञ्ञूनं गहणं । ते हि बुद्धादीसु सगारवस्स पमाणभूततं जानन्ता तस्स वचनं सोतब्बं सद्धातब्बं मञ्ञन्ति, सम्मदेव च नं अनुतिट्ठन्ता तदधिप्पायं पूरेन्ति । इधा पि पुरिमनयेनेव सम्बन्धो वेदितब्बो पसादविञ्ञापनादिमुखेन पि सम्मापटिपत्ति-आकङ्खाय पवेदितत्ता ।

एत्थ च पठमो अत्थविकप्पो सद्धानुसारीनं पुग्गलानं वसेन वुत्तो, दुतियो धम्मानुसारीनं । पठमो वा असंसिद्धसत्थुधम्मानं वसेन वुत्तो, दुतियो संसिद्धसत्थुधम्मानं । तथा पठमो पठमे रतने पणामकिरियादस्सनपरो, दुतियो इतरेसुपीति अयं विसेसो वेदितब्बो ।

पणामो करीयति एताया ति पणामकरणं, **पणामकिरियाभिनिप्फादिका** चेतना । सा हि

१. च–सी० । २. ०करणादिभावो–सी० ।

नेवस्स तस्मिं समये रागपरियुट्ठितं चित्तं होती"[१] ति आदिवचनतो "पूजा च पूजनेय्यानं, एतं मङ्गलमुत्तमं"[२] ति च "एवं बुद्धं सरन्तानं, धम्मं संघञ्च भिक्खवो। भयं वा छम्भितत्तं वा, लोमहंसो न हेस्सती"[३] ति च वचनतो ति।

तत्थ यस्स सत्थुनो पणामं कत्तुकामो तस्स गुणविसेसदस्सनत्थं "**करुणाविया**" ति आदिमाह। गुणविसेसवा हि [२ म०] पणामारहो होति, पणामारहे च कतो पणामो वुत्तप्पयोजनसिद्धिकरो व होतीति।

भगवतो च देसना विनयपिटके करुणाप्पधाना,[४] सुत्तन्तपिटके पञ्ञाकरुणाप्पधाना। तेनेव च कारणेन विनयपिटकस्स सवण्णनं करोन्तेन करुणाप्पधाना भगवतो थोमना कता, आगमसंवण्णनञ्च करोन्तेन उभयप्पधाना, अभिधम्मदेसना पन पञ्ञाप्पधाना ति कत्वा

खेत्तसम्पत्तिया आचरियस्स च अज्झासयसम्पत्तिया दिट्ठधम्मवेदनीयभूता यथालद्धसम्पत्तिनिमित्तकस्स [म०-३] कम्मस्स बलानुप्पदानवसेन पुरिमकम्मनिप्फन्नस्स विपाकसन्तानस्स अन्तरावेमज्झे आयन्ति आपतन्तीति अन्तराया ति लद्धनामानं रोगादि-अनत्थानं विधायकस्स उपपीळकस्स उपच्छेदकस्स वा कम्मस्स विद्धंसनसमत्थो पुञ्ञातिसयो ति इममत्थं दस्सेति "**रतनत्तयपणाम**···प०····**विसेसभावतो**" ति। एवञ्च कत्वा रागादिपरियुट्ठानाभाववचनेन अन्तरायस्स कारणभूताय पयोगविपत्तिया अभावस्स, अत्थलाभादिवचनेन अनन्तरायताहेतुभूताय पयोगसम्पत्तिया सब्भावस्स, "सब्यापज्झाय पजाय अब्यापज्झो विहरतो"[५] ति वचनेन दिट्ठेव धम्मे सुखविहारिताय च पकासनं **महानामसुत्तं** येव उदाहटं।

गुणविसेसदस्सनत्थं ति एतेन सति पि कायमनोपणामानं अन्तरायविसोसनसमत्थभावे तेहि पणामविसयस्स पणामारहभावविभावनेन सातिसयो वचीपणामो विहितो ति दस्सेति। **गुणविसेसवा ही** ति आदिना आचरियस्स युत्तपत्तकारितं दस्सेति। **देसना विनयपिटके** ति एत्थ ननु विनयपिटकस्स पि देसनाभावतो देसनाविनयपिटकानं भेदवचनं न युत्तं ति? नो न युत्तं "तीसु पि चेतेसु एते धम्मत्थदेसनापटिवेधा"[६] ति एत्थ च विय समुदायदेसनाय अवयवदेसनानं आधारभावतो। देसनाकाले वा मनसा ववत्थापिताय विनयतन्तिया विनयपिटकभावतो तदत्थपञ्ञापनस्स च देसनाभावतो भेदवचनं। अथ वा देसीयति एतेना ति देसना, देसनासमुट्ठापको चित्तुप्पादो, तस्स च विनयपिटकविसयो करुणापुब्बङ्गमो च सो ति एवमेत्थ भेदवचनोपपत्ति दट्ठब्बा। **सुत्तन्तपिटके** ति आदीसु पि एसेव नयो।

कथं पन भगवतो विनयपिटके करुणाप्पधाना, सुत्ताभिधम्मपिटकेसु च पञ्ञाकरुणापञ्ञाप्पधाना ति विञ्ञायती ति? यतो उक्कंसपरियन्तगतहिरोत्तप्पो पि भगवा लोकियसाधुजनेहि पि परिहरितब्बानि "सिखरणी" ति आदीनि वचनानि यथापराधञ्च गरहवचनानि विनयपिटकदेसनायं

---

१. अं० ३:८। २. खु० १:५। ३. सं० १:१२२।
४. करुणापधाना-सी० सब्बत्थ। ५. अं० ३:१०। ६. अट्ठ० ४४।

पञ्ञाप्पधानमेव थोमनं करोन्तो **"करुणा विय सत्तेसू"** ति करुणं उपमाभावेन गहेत्वा पञ्ञाय थोमेति।

तत्थ **करुणा विया** ति निदस्सनवचनमेतं, यस्स यथा करुणा सब्बेसु सत्तेसु पवत्तित्थ, एवं सब्बेसु ञेय्यधम्मेसु पञ्ञापि पवत्तित्था ति अत्थो। [२-सी०] **सत्तेसू** ति विसयनिदस्सनमेतं **पञ्ञा** ति निदस्सेतब्बधम्मनिदस्सनं। **यस्सा** ति तदधिट्ठानपुग्गलनिदस्सनं। **महेसिनो** ति तब्बिसेसनं। **ञेय्यधम्मेसू** ति पञ्ञाविसयनिदस्सनं। **सब्बेसू** ति तब्बिसेसनं। **पवत्तित्था** ति किरियानिदस्सनं[1]। **यथारुची** ति वसीभावनिदस्सनं।

तत्थ किरतीति **करुणा**, परदुक्खं विक्खिपति अपनेतीति अत्थो। रूपादीसु सत्ता विसत्ता ति **सत्ता**। तस्सा पन पञ्ञत्तिया खन्धसन्ताने निरुळ्हभावतो निच्छन्दरागा पि "सत्ता" ति वुच्चन्ति। पजानातीति **पञ्ञा**, यथासभावं पकारेहि पटिविज्झतीति अत्थो। **यस्सा** ति अनियमनं। "तस्स पादे नमस्सित्वा" ति एतेन नियमनं वेदितब्बं। **महेसी** ति महन्ते सीलक्खन्धादयो एसि गवेसीति महेसि। ञातब्बा ति ञेय्या, सभावधारणादिना अत्थेन

महाकरुणासञ्चोदितमानसो महापरिसमज्झे अभासि, तंतंसिक्खापदपञ्ञत्तिकारणापेक्खाय वेरञ्जादीसु [४-म०] सारीरिकञ्च खेदमनुभोसि, तस्मा किञ्चापि भूमन्तरपच्चयाकारसमयन्तरकथानं विय विनयपञ्ञत्तिया पि समुट्ठापिका पञ्ञा अनञ्ञसाधारणताय अतिसयकिच्चवती, ततो पि करुणाय किच्चं अधिकं ति अधिप्पायेन वुत्तं **"विनयपिटके करुणाप्पधाना"** ति करुणाब्यापाराधिकताय हि देसनाय करुणाप्पधानता, सुत्तन्तदेसनाय महाकरुणासमापत्तिबहुलो वेनेय्यसन्तानेसु तदज्झासयानुलोमेन गम्भीरमत्थपदं पतिट्ठपेसीति करुणापञ्ञाप्पधानता, अभिधम्मदेसनाय पन सब्बञ्ञुतञाणस्स विसयभावप्पहोनको रूपारूपपरिच्छेदो धम्मसभावानुरोधेन पवत्तितो ति पञ्ञाप्पधानता। **तेनेव च कारणेना** ति आदिना देसनानुरूपतंतंसंवण्णनाय थोमना आचरियस्स पकतीति दस्सेति।

कुसला रूपं चक्खुमा दस दाळिमादि समूहवसेन अत्थानवबोधनत्थो विय अत्थावबोधनत्थो हि सद्दप्पयोगो अत्तपराधीनो केवलो अत्थपदत्थको, सो पदत्थविपरियेसकारिना इति-सद्देन सद्दपदत्थको जायती ति आह **"करुणा विया ति निदस्सनवचनं"** ति। निदस्सनं हि नाम निदस्सितब्बधम्मे तेन च सम्बन्धे सति होति, नाञ्ञथा ति तस्स निदस्सनभावं विभावेन्तो आह **"यस्स यथा ····प०····पवत्तित्था ति अत्थो"** ति।

"तत्थ करुणा विया ति निदस्सनवचनं" ति आदिना निदस्सननिदस्सितब्बधम्मानं आधारविसयब्यापारेहि सविसेसनेहि सह पकासनवसेन गाथाय अत्थतत्त्वं दस्सेत्वा अवयवभेदवसेन अत्थं दस्सेतुं **"किरतो ति करुणा"** ति आदि वुत्तं। तत्थ निच्छन्दरागानं भूतपुब्बगतिया वा सत्तता

---

१. क्रिया०—सी०।

धम्मा। तत्थ "ञेय्या" ति वचनेन धम्मानं अञेय्यत्तं पटिक्खिपति। **"धम्मा"** ति वचनेन ञेय्यानं सत्तजीवादिभावं पटिक्खिपति। ञेय्या च ते धम्मा चा ति **ञेय्यधम्मा**। **सब्बेसू** ति अनवसेसपरियादानं। तेन अञ्ञाताभावं दस्सेति। **पवत्तित्था** ति उप्पज्जित्थ। **यथारुची** ति या या रुचि यथारुचि, रुचीति च इच्छा, कत्तुकामता सा। या या पवत्ता तप्पभेदा, यथा वा रुचि तथा, रुचि-अनुरूपं पवत्ता "यथारुचि पवत्तित्था" ति वुच्चति। यथा यथा वा रुचि पवत्ता, तथा तथा पवत्ता पञ्ञा "यथारुचि पवत्तित्था" ति वुच्चति।

तत्थ भगवति पवत्ता व करुणा भगवतो पञ्ञाय निदस्सनं ति गहेतब्बा। सा हि असाधारणा महाकरुणा, न अञ्ञा। **यस्सा** ति च करुणापञ्ञानं उभिन्नम्पि आधार-पुग्गलनिदस्सनं। न हि निराधारा करुणा [३-म०] अत्थीति **"करुणा"** ति वुत्ते तदाधारभूतो पुग्गलो निदस्सेतब्बो होति, सो च इध अञ्ञो वुत्तो नत्थि, न च आसन्नं वज्जेत्वा दूरस्स गहणे पयोजनं अत्थीति "यस्सा" निदस्सितपुग्गलो व करुणाय आधारो। तेन इदं वुत्तं होति "यस्स अत्तनो करुणा विय पञ्ञापि पवत्तित्था" ति। कथं पन करुणा सत्तेसु पवत्तित्थ यथा पञ्ञापि धम्मेसु पवत्तित्था ति? निरवसेसतो यथारुचि च। भगवतो हि करुणा कञ्चि[1]

वेदितब्बा। एकस्स पि धम्मस्स अनेकसामञ्ञाकारवन्तताय **"यथासभावं पकारेही"** ति वुत्तं। तथा हि वुत्तं—"सब्बे धम्मा सब्बाकारेन।" ति धम्मानं अञ्ञेय्यत्तं पटिक्खिपति ञातुं असक्कुणेय्यत्ताभावतो। एतेन तस्सा पञ्ञाय अकिच्छवुत्तितं आह। यथेव हि "ञेय्येसु सब्बेसु पवत्तित्था" ति एत्तावता अधिप्पेतत्थे सिद्धे तेसं अत्तत्तनियताविरहसंसूचनत्थं परेसं सत्तादिमिच्छागाहपटिसेधनेन धम्म-सद्देन ञेय्या विसेसितब्बा, एवं **"धम्मेसु सब्बेसु पवत्तित्था"** ति [५-म०] एत्तावता च अधिप्पेतत्थे सिद्धे धम्मेसु तस्सा पञ्ञाय आकङ्खप्पटिबद्धताय अकिच्छवुत्तितं दस्सेतुं अञ्ञेय्यत्त-पटिसेधनेन **ञेय्य**-सद्देन धम्मा विसेसिता ति। ञेय्यधम्म-सद्दा नीलुप्पलसद्दा विय अञ्ञमञ्ञं भेदाभेदमुत्ता ति "ञेय्या च ते धम्मा चा" ति वुत्तं। **या या** ति यथा-सद्दस्सत्थं दस्सेति। ब्यापनिच्छायं हि अयं यथा-सद्दो, तप्पभेदा पञ्ञा पवत्तित्था ति सम्बन्धो ति।

भगवति पवत्ता वा ति इदं येभुय्येन उपमानोपमेय्यत्थानं भिन्नाधारताय भिन्नाधारस्स च उपमानत्थस्स इध असम्भवतो वुत्तं। भगवतो करुणाय अञ्ञेहि असाधारणभावो सत्ते संसारदुक्खतो उद्धरित्वा अच्चन्तसुखे निब्बाने पतिट्ठपेतुं अत्तनो सरीरजीवितपरिच्चागेन पि एकन्तहितज्झासयतावसेन वेदितब्बो, यतो विनेय्यानं कोसोहितवत्थगुय्हपहूतजिव्हाविदंसनम्पि कतं, यञ्च यदिमे सत्ता जानेय्युं, भगवतो सासनेन रहदमिव सीतलं सम्पज्जलितं अग्गिक्खन्धम्पि समोगाहेय्य अञ्ञेसं पसन्तानं ति सम्बन्धो। **उद्धटा** ति पदं अपेक्खित्वा महोघपक्खन्दानं सत्तानं ति कम्मत्थे सामिवचनं। अयं हेत्थ

---

1. किञ्चि—सी०।

सत्तं अवज्जेत्वा सब्बेसु सत्तेसु निरवसेसेसु पवत्तति, पवत्तमाना च रुचिवसेन एकस्मिं अनेकेसु च अञ्ञेहि असाधारणा पवत्तति। न हि अञ्ञेसं "महोघपक्खन्दानं सत्तानं नत्थञ्ञो कोचि ओघा उद्धता अञ्ञत्र मया" ति पस्सन्तानं करुणोक्कमनं होति यथा भगवतो ति।

पञ्ञापि भगवतो सब्बेसु धम्मेसु निरवसेसेसु पवत्तति, पवत्तमाना च एकस्मिं अनेकेसु च धम्मेसु सभावकिच्चादिजाननेन अनावरणा असाधारणा पवत्तति यथारुचि, यथा च पस्सन्तस्स भगवतो करुणा यथारुचि पवत्तति। तं सब्बं **पटिसम्भिदामग्गे** महाकरुणाञाणविभङ्गवसेन जानितब्बं, पञ्ञाय च यथारुचि पवत्ति सेसासाधारणञाणविभङ्गादिवसेन।

सङ्खेपत्थो—कामादिमहोघपक्खन्दे सत्ते ततो उद्धटा नत्थञ्ञो कोचि मं ठपेत्वा ति पस्सतो यथा भगवतो करुणाय आविसनं होति, न एवं अञ्ञेसं तथादस्सनस्सेव अभावतो। अथवा अञ्ञेसं पस्सन्तानं ति यदि पि परे पस्सेय्युं, तथा पि न तेसं भगवतो विय करुणोक्कमनं अत्थि अप्पटिपत्तितो अत्तहितमत्तपटिपत्तितो वा ति अत्थो।

अनावरणा तीसु कालेसु सब्बत्थ अप्पटिहतवुत्तिताय, **असाधारणा** सब्बधम्मानं निरवसेसहेतुपच्चयपरिग्गहवसेन तेसञ्च सभावकिच्चादि-अवत्थाविसेसादिपरिजाननेन आयूहनवेलायमेव तं-तंकम्मानं तंतंफलविसेसहीनमज्झिमपणीतादिविभागस्स इन्द्रियबद्धेसु अनिन्द्रियबद्धेसु च अतिसुखुमतिरोहितविदूरवुत्ति-अतीतानागतादिभेदभिन्नानं रूपधम्मानं तंतंकारणसमवायविभावनेनेव तंतंफलेसु वण्णसण्ठानगन्धरसफस्सादिविसेसस्स निरवसेसतो पटिविज्झनेन वेदितब्बा। अयञ्च अत्थो भगवतो अनेकधातुनानाधातुलोकं यथाभूतं ञाणादिवसेन वेदितब्बो। **यथा च पस्सन्तस्सा** ति इदं [६–म०] रागग्गि-आदीहि लोकसन्निवासस्स आदित्ततादि-आकारदस्सनं भगवतो महाकरुणोक्कमनुपायं सन्धाय वुत्तं। तं पन बहुकेहि आकारेहि पस्सन्तानं बुद्धानं भगवन्तानं सत्तेसु महाकरुणा ओक्कमति। "आदित्तो लोकसन्निवासो ....प०.... उय्युत्तो ....प०.... पयातो ....प०.... कुम्मग्गप्पटिपन्नो ....प०.... उपनीयति लोको अधुवो .... प० .... अताणो लोको अनभिस्सरो ....प० ....अस्सको लोको सब्बं पहाय गमनीयं ....प०.... ऊनो लोको अतित्तो तण्हादासो ति पस्सन्तानं बुद्धानं भगवन्तानं सत्तेसु महाकरुणा ओक्कमती" ति आदिना पटिसम्भिदामग्गे परोसतं आकारेहि दस्सितं ति गन्थवित्थारं परिहरितुं संवण्णयितुञ्च उपायं दस्सेतुं आह "**तं सब्बं पटिसम्भिदामग्गे महाकरुणाञाणविभङ्गवसेन जानितब्बं**" ति। इन्द्रियपरोपरियत्त-आसयानुसय-यमकपाटिहारिय-सब्बञ्ञुतानावरणञाणानि सेसासाधारणञाणानि। तेसम्पि हि विभङ्गो "इध तथागतो सत्ते पस्सति अप्परजक्खे" ति आदिना पटिसम्भिदामग्गे नानप्पकारेन दस्सितो ति पुरिमनयेनेव अतिदिसति। आदि-सद्देन तत्थ विभत्तानं पटिसम्भिदासच्चञाणादीनं सङ्गहो कतो ति वेदितब्बो।

पञ्ञागहणेन[1] च तीसु कालेसु अप्पटिहतञाणं [३–सी०] चतुसच्चञाणं चतुपटिसम्भिदाञाणं, करुणागहणेन महाकरुणासमापत्तिञाणस्स गहितत्ता तं वज्जेत्वा अञ्ञानि असाधारणञाणानि चतुवेसारज्जञाणं दसबलानि[2] छ-अभिञ्ञा चतुचत्तालीस[3] ञाणवत्थूनि सत्त-सत्तति ञाणवत्थूनीति एवमादयो अनेके पञ्ञाप्पभेदा सङ्गय्हन्ति, तस्मा तस्सा तस्सा पञ्ञाय पवत्तिवसेन यथारुचि पवत्ति[4] वेदितब्बा। तेनाह "करुणाविय...प०... यथारुची" ति।

निप्पदेससप्पदेसविसया करुणा विय भगवतो पञ्ञापि इध निप्पदेससप्पदेसविसया निरवसेसा अधिप्पेता ति तस्सा कतिपयभेददस्सनेन नयतो तदवसिट्ठभेदा गहेतब्बा ति दस्सेन्तो "**पञ्ञाग्गहणेन चा**" ति आदिमाह। ते पन सीलसमाधिपञ्ञाविमुत्तिविमुत्तिञाणदस्सन–द्वाचत्तालीससतदुकधम्म–बावीसतितिकधम्म–चतुसतिपट्ठान-सम्मप्पधान-इद्धिपाद-सामञ्ञफल–अरियवंसादि-पञ्चगति-पञ्चपधानियङ्ग-पञ्चङ्गिकसमाधि–इन्द्रिय–बल–निस्सारणीयधातु–विमुत्तायतन–विमुत्तपरिपाचनीयधम्मसञ्ञादि-छ सारणीयधम्म–अनुस्सतिट्ठान–अगारव-गारव-निस्सारणियधातु–सततविहार-अनुत्तरिय–निब्बेधभागियपञ्ञादि–सत्त अपरिहानियधम्म–अरियधन-बोज्झङ्ग-सप्पुरिसधम्म-निज्जरवत्थु-सञ्ञा–दक्खिणेय्यपुग्गलखीणासवबलादि–अट्ठ पञ्ञापटिलाभहेतु–मिच्छत्तसम्मत्त-लोकधम्म-अरियानरियवोहार–आरम्भवत्थु-कुसीतवत्थु-अक्खण-महापुरिसवितक्क-अभिभायतन-विमोक्खादि-[७ म०] नव योनिसोमनसिकार-मूलधम्म-पारिसुद्धिपधानियङ्ग-सत्तावास-आघातवत्थु-आघातपटिविनय-सञ्ञानानत्त-अनुपुब्बविहारादि–दस नाथकरधम्म-कसिणायतन-अकुसलकम्मपथ-कुसलकम्मपथ-मिच्छत्त–सम्मत्त–अरियवास–दसबलञाण–असेक्खधम्मादि-एकादस मेत्तानिसंस-सीलानिसंस-धम्मता-बुद्धिहेतु-द्वादसायतन पटिच्चसमुप्पाद-धम्मचक्काकार-तेरस धुतगुण-चुद्दस बुद्धञाण-पञ्चदस चरणविमुत्तिपरिपाचनीयधम्म-सोळस आनापानस्सति-सच्चाकार-सुत्तन्तपट्ठान-अट्ठारस बुद्धधम्म-धातुभेदकरवत्थु-एकूनवीसति-पच्चवेक्खण-चतुवीसति पच्चय-अट्ठातीसति सुत्तन्तपट्ठान-पण्णास उदयब्बयदस्सन-परोपण्णासकुसलधम्म-द्वासट्ठिदिट्ठिगत-अट्ठसत तण्हाविचरितादिभेदानं धम्मानं पटिविज्झनदेसनाकारप्पवत्ता, ये च चतुवीसतिकोटिसतसहस्ससमापत्तिसञ्चारिमहावजिरञाणप्पभेदा, ये च अनन्तरनयसमन्तपट्ठानपविचयदेसनाकारप्पवत्ता, ये च अनन्तासु लोकधातूसु अनन्तानं सत्तानं आसयानुसयचरितादिविभावनाकारप्पवत्ता ति एवंपकारा भगवतो पञ्ञापभेदा, सब्बे पि इध आदि–सद्देन नयतो सङ्गय्हन्तीति वेदितब्बं। को हि समत्थो भगवतो पञ्ञाय पभेदे अनुपदं निरवसेसतो दस्सेतुं। तेनेव भगवन्तं ठपेत्वा पञ्ञवन्तानं अग्गभूतो धम्मसेनापतिसारिपुत्तत्थेरो पि बुद्धगुणपरिच्छेदनं पति अनुयुत्तो "अपि च मे भन्ते धम्मन्वयो विदितो"[5] ति आहा ति।

---

१. पञ्ञागहणे–सी०। २. दसबलञाणानि– सी०।
३. चतुचत्ताळीस–सी०। ४. पवत्ता– सी०। ५. दी० २ : ६७।

तत्थ **करुणागहणेन** महाबोधिया मूलं दस्सेति। महादुक्खसम्बाधप्पटिपन्नं हि सत्तनिकायं दिस्वा "तस्स नत्थञ्ञो कोचि सरणं, अहमेतं मुत्तो मोचेस्सामी" ति करुणाय सञ्चोदितमानसो अभिनीहारं दीपङ्करस्स भगवतो पादमूले कत्वा बोधिसम्भारे समोधानेत्वा अनुपुब्बेन सब्बोधिं पत्तो ति करुणा महाबोधिया मूलं ति। **सत्तेसू** ति एतेन महाबोधिया पयोजनं दस्सेति। सत्ता हि महाबोधिं पयोजेन्ति। सत्तसन्तारणत्थं हि सब्बञ्ञुता अभिपत्थिता। यथाह—

[४ म०] 'किं मे एकेन तिण्णेन, पुरिसेन थामदस्सिना।
सब्बञ्ञुतं पापुणित्वा सन्तारेस्सं सदेवकं' ति[१]॥

पञ्ञागहणेन महाबोधिं दस्सेति। सब्बञ्ञुताय हि पदट्ठानभूतं मग्गञाणं, मग्गञाणपदट्ठानञ्च सब्बञ्ञुतञ्ञाणं "महाबोधी" ति वुच्चती ति। **ञेय्यधम्मेसु सब्बेसू** ति एतेन सन्तारेतब्बानं सत्तानं अभिञ्ञेय्य-परिञ्ञेय्य-पहातब्ब-भावेतब्ब-सच्छिकातब्बे खन्धायतन-धातुसच्चिन्द्रिय-पटिच्चसमुप्पाद-सतिपट्ठानादिभेदे कुसलादिभेदे च सब्बधम्मे दस्सेति। **पवत्तित्थ यथारुची** ति एतेन पटिवेधपच्चवेक्खणपुब्बङ्गमदेसनाञाणप्पवत्तिदीपनेन पयोजनसम्पत्तिं दस्सेति। सब्बधम्मानं हि पटिवेधञाणं बोधिपल्लङ्के अहोसि। मग्गञाणमेव हि तं ति। पच्चवेक्खणञाणञ्च विसेसेन रतनघरसत्ताहे अहोसि। एवं पटिविद्धपच्चवेक्खितानं धम्मानं धम्मचक्कप्पवत्तनादीसु देसनाञाणं अहोसि, विसेसेन च पण्डुकम्बलसिलायं सत्तप्पकरणदेसनायं ति। देसनाञाणेन च देसेन्तो भगवा सत्तेसु हितपटिपत्तिं पटिपज्जतीति। एतेन सब्बेन अत्तहितपटिपत्तिं परहितपटिपत्तिञ्च दस्सेति। महाबोधिदस्सनेन हि अत्तहितपटिपत्ति, इतरेहि पि परहितपटिपत्ति दस्सिता ति। तेन अत्तहितपटिपन्नादीसु चतूसु पुग्गलेसु भगवतो चतुत्थपुग्गलभावं दस्सेति, तेन च अनुत्तरदक्खिणेय्यभावं निरतिसयपणामारहभावञ्च अत्तनो च किरियाय[२] खेत्तङ्गतभावं दस्सेति।

एत्थ च **करुणागहणेन** लोकियेसु महग्गतभावप्पत्तासाधारणगुणदीपनतो सब्बलोकियगुणसम्पत्ति भगवतो दस्सिता होति, **पञ्ञागहणेन** पि सब्बञ्ञुतञ्ञाणपदट्ठानमग्गञाणदीपनतो सब्बलोकुत्तरगुणसम्पत्ति। [४–सी०] करुणावचनेन च उपगमनं निरुपक्किलेसं,

---

संसारमहोघपक्खन्दानं सत्तानं ततो सन्तारणत्थं पटिपन्नो तेहि पयोजितो नाम होति, असति पि तेसं तथाविधे अभिसन्धियं ति वुत्तं "**सत्ता हि महाबोधिं पयोजेन्ती**" ति। **एतेन सब्बेना** ति महाबोधिमूलादिदस्सनेन। अपगमनं निरुपक्किलेसं ति योजेतब्बं जातसंवद्धभावदस्सनेन "अनादि अनिधनो च सत्तो" हि एवंपकारा मिच्छावादा पटिसेधिता होन्ति। **समञ्ञा**…प०… दस्सेति सत्ते परमत्थतो असति पि सत्तपञ्ञत्तिवोहारसूचनतो। **करुणा आदि पञ्ञा परियोसानं** ति इदं सम्भरणनिप्फत्ति-

---

१. [बुद्धवंसे ३०९ पि०]। २. क्रियाय– सी०।

पञ्ञावचनेन अपगमनं दस्सेति। उपगमनं दस्सेन्तो च लोके सञ्ञातसंवड्ढभावं दस्सेति, अपगमनं दस्सेन्तो लोकेन अनुपलित्ततं। "करुणा विय सत्तेसू" ति च लोकसमञ्ञानुरूपं भगवतो पवत्तिं दस्सेति, "ञेय्यधम्मेसु सब्बेसु यथारुचि पञ्ञा पवत्तित्था" ति एतेन समञ्ञाय अनतिधावनं। सब्बधम्मसभावानवबोधे हि सति समञ्ञं अतिधावित्वा "सत्तो जीवो अत्थी" ति परामसनं होतीति। सब्बेसञ्च बुद्धगुणानं करुणा आदि तन्निदानभावतो, पञ्ञा परियोसानं [५-म०] ततो उत्तरिकरणीयाभावतो। आदिपरियोसानदस्सनेन च सब्बे बुद्धगुणा दस्सिता व होन्ति। करुणागहणेन च सीलक्खन्धपुब्बङ्गमो समाधिक्खन्धो दस्सितो होति। करुणानिदानं हि सीलं ततो पाणातिपातादिविरतिप्पवत्तितो तस्सा च झानत्तय-सम्पयोगतो। पञ्ञावचनेन पञ्ञाक्खन्धो। सीलञ्च सब्बबुद्धगुणानं आदि, समाधि मज्झं, पञ्ञा परियोसानं ति एवम्पि आदिमज्झपरियोसानकल्याणा सब्बे बुद्धगुणा दस्सिता होन्ति॥ १॥

एवं सङ्खेपेन सब्बबुद्धगुणेहि भगन्तं थोमेत्वा यस्सा संवण्णनं कत्तुकामो, ताय अभिधम्मदेसनाय अञ्ञेहि असाधारणाय थोमेतुं **"दयाय ताया"** ति आदिमाह। तस्सा पन देसनाय निदानञ्च समुट्ठानञ्च दस्सेतुं **"दयाय ताया"** ति आदि वुत्तं। निदानञ्च दुविधं अब्भन्तरं बाहिरञ्चा ति। अब्भन्तरं करुणा, बाहिरं देसकालादि। समुट्ठानं देसनापञ्ञा। तत्थ अब्भन्तरनिदानं दस्सेन्तो **"दयाय ताय सत्तेसु, समुस्साहितमानसो"** ति आह। तत्थ **दया** ति करुणा अधिप्पेता। ताय हि समुस्साहितो अभिधम्मकथामग्गं सम्पवत्तयोति। ताया ति अयं त-सद्दो पुब्बे वुत्तस्स पटिनिद्देसो होति।

पुरिमगाथाय च पधानभावेन पञ्ञा निद्दिट्ठा, तब्बिसेसनभावेन करुणा। सा हि तस्सा निदस्सनभूता अप्पधाना तं विसेसेत्वा विनिवत्ता, तस्मा "ताया" ति पटिनिद्देसं नारहति।

कालापेक्खाय वुत्तं, न परिच्छेदवन्तताय। तेनेवाह "तन्निदानभावतो ततो उत्तरि करणीयाभावतो" ति। **सब्बे बुद्धगुणा दस्सिता** होन्ति नयतो दस्सितत्ता। एसो एव हि अनवसेसतो बुद्धगुणदस्सनुपायो यदिदं नयग्गाहणं। परधनहरणादितो पि विरति परेसं [८ म०] अनत्थपरिहरणवसप्पत्तिया सिया करुणूपनिस्सया ति करुणानिदानं सीलं। ततो एव "ततो पाणातिपातादिविरहितप्पवत्तितो" ति वुत्तं॥ १॥

यस्सा संवण्णनं ति आदिना "दयाया" ति आदि थोमनाय सम्बन्धं दस्सेति। पयोजनं पन वुत्तनयेन वेदितब्बं। अब्भन्तरं नियकज्झत्तं, ततो बहिभूतं बाहिरं। दया ति करुणा अधिप्पेता ति दया-सद्दस्स मेत्ताकरुणानं वाचकत्ता वक्खमानञ्च अनुयोगं मनसि कत्वा वुत्तं। ताय हि समुस्साहितो, न मेत्ताया ति अधिप्पायो। पुब्बे वुत्तस्स पटिनिद्देसो होतीति त-सद्दस्स अत्थं आह।

तं ति पञ्ञं **विसेसेत्वा** उपमाभावेन विनिवत्ता चरितत्थताय। पटिनिद्देसं नारहति पधानापधानेसु पधाने किच्चदस्सनतो। द्विन्नं पदानं····प०····वतो ति करुणावाचिना दया-सद्देन एकाधिकरणभावेन

या च पधानभूता पञ्ञा, सा देसनाय समुट्ठानं, न समुस्साहिनीति तस्सा च पटिनिद्देसो न युत्तो ति ? पञ्ञाय ताव पटिनिद्देसो न युत्तो ति सुवुत्तमेतं, करुणाय पन पटिनिद्देसो नो न युत्तो "दयाय ताया" ति द्विन्नं पदानं समानाधिकरणभावतो। समानाधिकरणानं हि द्विन्नं पदानं रूपक्खन्धादीनं विय विसेसनविसेसितब्बभावो होति। रूप-सद्दो हि अञ्ञक्खन्धनिवत्तनत्थं वुच्चमानो विसेसनं होति, खन्धसद्दो च निवत्तेतब्बगहेतब्बसाधारणवचनभावतो विसेसितब्बो[1], एवमिधापि "दयाय ताया" ति द्विन्नं पदानं एकविभत्तियुत्तानं समानाधिकरणभावतो विसेसनविसेसितब्बभावो होति। तत्थ दया समुस्साहिनी ति पधाना, निवत्तेतब्बगहेतब्बसाधारणवचनञ्चिदं[2]। तस्मा "दयाया" ति विसेसितब्बवचनमेतं, तस्स च यथा विसेसन[3] होति। [६ म०] "ताया" ति इदं वचनं, तथा तस्स पटिनिद्देसभावो [५-सी०] योजेतब्बो। न हि पञ्ञापटिनिद्देसभावे दयाविसेसनं त-सद्दो होति, करुणापटिनिद्देसभावे च होतीति। पधानञ्च पञ्ञं वज्जेत्वा "दयाया" ति एतेन सम्बज्झमानो "ताया" ति अयं त-सद्दो अप्पधानाय करुणाय पटिनिद्देसो भवितुमरहति। अयमेत्थ अत्थो—याय दयाय समुस्साहितो, न सा या काचि, सब्बञ्ञुतञ्ञाणस्स पन निदस्सनभूता महाकरुणा, ताय समुस्साहितो ति।

कथं पन करुणा "दया" ति ञातब्बा, ननु वुत्तं "दयापन्नो" ति एतस्स अट्ठकथायं "मेत्तचित्ततं आपन्नो" ति, तस्मा दया मेत्ता ति युज्जेय्य, न करुणा ति ? यदि एवं "अदयापन्नो" ति एतस्स अट्ठकथायं "निक्करुणतं आपन्ना" ति वुत्तं ति दया मेत्ता ति च न युज्जेय्य, तस्मा दया-सद्दो यत्थ यत्थ पवत्तति, तत्थ तत्थ अधिप्पायवसेन योजेतब्बो।

वुच्चमानो त-सद्दो ततो अञ्ञधम्मविसयो भवितुं न युत्तो ति अधिप्पायो। अपरियायसद्दानं समानाधिकरणभावो विसेसनविसेसितब्बभावे सति होति, नाञ्ञथा ति आह "समाना...प०....होती" ति। समानाधिकरणभावेन हेत्थ विसेसनविसेसितब्बभावो साधीयति, सा च समानाधिकरणता विसिट्ठविभत्तिकानं न होती ति समानविभत्तिताय पि तमेव साधीयती ति "दया....प०.. चिदं" ति इदं दयाय विसेसितब्बभावे कारणवचनं। पधानताय हि सामञ्ञताय च सा विसेसितब्बा जाता। तत्थ भगवतो तदञ्ञेसञ्च करुणानं वाचकत्ता सामञ्ञता वेदितब्बा। तस्स चा ति दया-सद्दस्स। "पधानं च पञ्ञं" ति आदिना किञ्चा पि पुरिमगाथाय पञ्ञाप्पधाना, "तायो" ति पन केवलं अवत्वा दयाविसेसनभावेन वुत्तत्ता अप्पधानाय पि करुणाय पटिनिद्देसो युत्तो ति दस्सेति। अप्पधानता च करुणाय पुरिमगाथाय वसेन वुत्ता, इध पन पधाना एव। तथा च वुत्तं "दया समुस्साहिनीति पधाना" ति।

कथं पन"प०...ञातब्बा ति वक्खमानञ्ञेव अत्थं हदये ठपेत्वा चोदेति। यदि एवं ति यदि अट्ठकथाय अधिप्पायं अग्गहेत्वा वचनमत्तमेव गण्हसि। मेत्ता ति च न युज्जेय्या ति यथा "मेत्तचित्ततं

---

१. विसेसितब्बो ति -सी०। २. साधारणभावञ्चिदं-सी०। ३. विसेसणं-सी०।

दया-सद्दो हि अनुरक्खणत्थं अन्तोनीतं कत्वा पवत्तमानो मेत्ताय च करुणाय च पवत्ततीति नो न युज्जति। एवं हि अट्ठकथानं[1] अविरोधो होतीति। करुणा च देसनाय निदानभावेन वुत्ता, न मेत्ता "अच्चन्तमेव हि तं समयं भगवा करुणाविहारेन विहासी" ति एवमादीसु[2], तस्मा इध करुणा व दयावचनेन गहिता ति वेदितब्बा। सा हि समुस्साहिनी, न मेत्ता, मेत्ता पन पञ्ञागतिकपवत्तिनी[3] होतीति।

"सत्तेसू" ति कस्मा एवं वुत्तं, ननु "ताया" ति एतेन वचनेन सत्तविसया करुणा गहिता ति? नो न गहिता, पुरिमगाथाय पन 'सत्तेसु करुणा यथारुचि पवत्तित्था" ति सप्पदेससत्तविसया निप्पदेससत्तविसया च सब्बा वुत्ता, इध पन निप्पदेससत्तविसयतं गहेतुं "सत्तेसू" ति निप्पदेससत्तविसयभूता दस्सिता। तेन सब्बसत्तविसयाय करुणाय समुस्साहितो अभिधम्मकथामग्गं देवानं सम्पवत्तयि, न देवविसयाय एव, तस्मा सब्बसत्तहितत्थं अभिधम्मकथामग्गं[4] देवानं सम्पवत्तयि, न देवानं एव अत्थाया ति अयमत्थो दस्सितो व होति। अथ वा "सत्तेसू" ति इदं न दयाय आलम्बननिदस्सनं, समुस्साहनविसयो पन एतेन दस्सितो।

आपन्नो" ति एतिस्सा अट्ठकथाय वसेन न दया [९ म० करुणा, एवं "निक्करुणतं आपन्नो" ति एतिस्सा अट्ठकथाय वसेन न दया मेत्ता ति वचनमत्तग्गहणे अट्ठकथानम्पि विरोधं दस्सेति। 'अधिप्पायवसेन योजेतब्बो" ति वत्वा तमेव अधिप्पायं दया-सद्दो ही ति आदिना विवरति। अक्खरचिन्तका हि दया-सद्दं दानगतिरक्खणेसु पठन्ति। अनुरक्खणञ्च मेत्ताकरुणानं हितूपसंहारदुक्खापनयनाकारवुत्तीनं समानकिच्चं, तस्मा उभयत्थ दया-सद्दो पवत्ततीति वुत्तं। अन्तोनीतं ति अन्तोगधं, रुक्खत्थो विय धवखदिरादीनं अनुरक्खणत्थो मेत्ताकरुणानं सामञ्ञं ति अत्थो, अधिप्पायो पन "दयापन्नो" ति एत्थ सब्बपाणभूतहितानुकम्पीति अनन्तरं करुणाय वुत्तत्ता दया-सद्दो मेत्तापरियायो ति विञ्ञायति। मेत्ता पि हि करुणा विय पाणातिपातविरतिया कारणं ति। "अदयापन्नो" ति एत्थ पन कारुणिको अविहिंसज्झासयत्ता परेसं विहेसामत्तम्पि न करोति, को पन वादो पाणातिपातने ति निक्करुणताय पाणातिपातिता दस्सिता ति वेदितब्बा। एतमेवत्थं सन्धाय एवं हि अट्ठकथानं अविरोधो होती ति आह। यदि दया-सद्दो मेत्ताकरुणानं वाचको, एवम्पि कथं पन करुणा "दया" ति जानितब्बा ति अनुयोगो तदवत्थो एवा ति चोदनं मनसि कत्वा करुणा च देसनाया ति आदिना करुणाय एव गहणे कारणमाह।

ननु ताया ति आदिना सामत्थियतो पि पकरणं बलवं ति पकरणवसेनेव करुणाविसयस्स ञाततं दस्सेति। यथारुचि पवत्तित्था ति एतं पुरिमगाथाय सप्पदेसनिप्पदेससत्तविसयाय करुणाय गहितभावस्स कारणवचनं। यथारुचि पवत्ति हि एकस्मिं अनेकेसु च इच्छानुरूपप्पवत्तीति। "इध पन निप्पदेससत्तविसयतं गहेतुं" ति एतेन सिद्धे सति आरम्भो ञापकत्थो होतीति पुन "सत्तेसू" ति वचनं

---

१. अट्ठकथायं–सी०। २. दी० अट्ठ०–१:३४; म० अट्ठ०–१:११।
३. पञ्ञागतिका पवत्तिनी–सी०। ४. अभिधम्मं कथामग्गं–सी०।

अभिधम्मकथामग्गप्पवत्तनत्थं हि भगवा करुणाय न देवेसु येव [७-म०] समुस्साहितो सब्बबोधनेय्येसु पन सत्तेसु समुस्साहितो सब्बेसं अत्थाय पवत्तत्ता, तस्मा **सत्तेसु समुस्साहितमानसो** ति सत्तेसु विसयभूतेसु निमित्तभूतेसु वा समुस्साहितमानसो उय्योजितचित्तो ति अत्थो दट्ठब्बो।

एवं अब्भन्तरनिदानं दस्सेत्वा बाहिरनिदानं दस्सेन्तो **"पाटिहीरावसानम्हि"** ति आदिमाह। तत्थ यस्मिं काले भगवता अभिधम्मकथामग्गो पवत्तितो, तं दस्सेतुं **"पाटिहीरावसानम्हि वसन्तो"** ति वुत्तं।

"अवसानम्हि वसन्तो तिदसालये" ति वचनतो यस्सावसानम्हि तिदसालये वसि, तं कण्डम्बमूले[1] कतं यमकपाटिहारियं इध **"पाटिहीरं"** ति वुत्तं, न बोधिमूलादीसु कतं पाटिहारियं, नापि [६-सी०] आदेसनानुसासनियो ति विञ्ञायति, पाकटत्ता च आसन्नत्ता च तदेव गहितं ति दट्ठब्बं। पाटिहारियपदस्स वचनत्थं "पटिपक्खहरणतो रागादिकिलेसापनयनतो पाटिहारियं" ति वदन्ति, भगवतो पन पटिपक्खा रागादयो न सन्ति ये हरितब्बा। पुथुज्जनानम्पि हि विगतुपक्किलेसे अट्ठङ्गगुणसमन्नागते चित्ते हतपटिपक्खे इद्धिविधं पवत्तति, तस्मा तत्थ पवत्तवोहारेन च न सक्का इध "पाटिहारियं" ति वत्तुं। सचे पन महाकारुणिकस्स भगवतो वेनेय्यगता च किलेसा पटिपक्खा, तेसं हरणतो **"पाटिहारियं"** ति वुत्तं, एवं सति युत्तमेतं। अथ वा भगवतो च सासनस्स च पटिपक्खा तित्थिया, तेसं हरणतो पाटिहारियं। ते हि दिट्ठिहरणवसेन दिट्ठिप्पकासने असमत्थभावेन च इद्धि-आदेसनानुसासनीहि हरिता अपनीता होन्तीति। अथ वा पटी ति अयं सद्दो "पच्छा" ति एतस्स अत्थं बोधेति "तस्मिं पटिपविट्ठम्हि, अञ्ञो आगञ्छि ब्राह्मणो[2]" ति आदीसु विय, तस्मा समाहिते चित्ते विगतुपक्किलेसे च कतकिच्चेन पच्छा हरितब्बं पवत्तेतब्बं ति पटिहारियं, अत्तनो वा उपक्किलेसेसु चतुत्थज्झानमग्गेहि हरितेसु

इममत्थविसेसं बोधेतीति दस्सेति। न देवेसु ये वा ति आदिना पि दयासाधनस्स समुस्साहनस्स सत्तविसयभावे सामत्थियलद्धे पि "सत्तेसू" ति वचनं तस्स निप्पदेससत्तविसयभावो अधिप्पेतो ति इमं विसेसं ञापेतीति दस्सेति।

कालदेसदेसकपरिसादिपरिदीपनं बाहिरनिदानं ति कालादीनि निद्धारेन्तो **"यस्मिं काले"** ति आदिमाह।

(१८) **अवसानम्हि** वसन्तो तिदसालये ति वचनतो ति एतेन तस्स पाटिहारियस्स [१०-म०] सद्दन्तरसन्निधानेन अवाचकत्तं दस्सेति। तत्थ पवत्तवोहारेन च न सक्का ति पुथुज्जनसन्ताने पि

---

1. गण्डम्बमूले-सी०। 2. खु० १:४१९ (सुत्तनिपाते)।

पच्छा हरणं पटिहारियं, इद्धि-आदेसनानुसासनियो च विगतुपक्किलेसेन कतकिच्चेन च सत्तहितत्थं पुन पवत्तेतब्बा, हरितेसु च अत्तानो उपक्किलेसेसु परसत्तानं उपक्किलेसहरणानि होन्तीति पटिहारियानि भवन्ति, पटिहारियमेव **पाटिहारियं**। पटिहारिये वा इद्धि-आदेसनानुसासनिसमुदाये भवं एकेकं **पाटिहारियं** ति वुच्चति। [८–म०] पटिहारियं वा चतुत्थज्झानं मग्गो च पटिपक्खहरणतो, तत्थ जातं, तस्मि वा निमित्तभूते, ततो वा आगतं ति **पाटिहारियं**। पाटिहारियमेव इध "पाटिहीरं" ति वुत्तं। **अवसानम्हि वसन्तो** ति एतेहि कालं निदस्सेति। पाटिहीरकरणावसानेन हि तिदसालयवासेन च परिच्छिन्नो अभिधम्मकथामग्गप्पवत्तानस्स कालो ति। **तिदसालये** ति देसं निदस्सेति। सो हि अभिधम्मकथामग्गप्पवत्तानस्स देसो तत्थ वसन्तेन पवत्तितत्ता ति ॥ २ ॥

तत्था पि देसविसेसदस्सनत्थं **"पारिच्छत्तकमूलम्ही"** ति आदि वुत्तं। **युगन्धरे** ति सीतपब्बतेस्वेको[१] द्वेचत्तालीसयोजनसहस्सुब्बेधो आदिच्चो च तदुब्बेधमग्गचारी, सो सति सम्भवे यथा युगन्धरे सोभेय्य, एवं सोभमानो निसिन्नो ति अत्थो ॥३॥

इदानि पुग्गले धम्मपटिग्गाहके अपदिसन्तो **"चक्कवाळसहस्सेही"** ति आदिमाह। **सब्बसो** ति समन्ततो आगम्म सब्बेहि दिसाभागेहि, सन्निवेसवसेन वा समन्ततो सन्निविट्ठेहि दसहि चक्कवाळसहस्सेहीति अधिप्पायो, न सब्बसो चक्कवाळसहस्सेहि दसहि दसहीति। एवं सति चत्तालीसचक्कवाळसहस्सेहि अधिकेहि वा आगमनं वुत्तं सिया, न चेतं अधिप्पेतं ति। समन्ततो सन्निसिन्नेना ति वा योजेतब्बं। समं, सम्मा वा निसिन्नेन **सन्निसिन्नेन,** अञ्ञमञ्ञं अब्याबाधेत्वा भगवति गारवं कत्वा सोतं ओदहित्वा [७–सी०] निसज्जदोसे वज्जितब्बे वज्जेत्वा निसिन्नेना ति अत्थो। मातरं पमुखं कत्वा

रागादिपटिपक्खहरणस्स अभावतो निच्छन्दरागेसु सत्तवोहारो विय पुथुज्जनसन्ताने रागादिपटिपक्खहरणवसेन पवत्तं तदभावे पि भगवतो सन्ताने रुळ्हीवसेन पाटिहारियन्त्वेव वुच्चती ति न सक्का वत्तुं ति अधिप्पायो। दिट्ठिहरणवसेन ये सम्मादिट्ठिका जाता अचेलककस्सपादयो विय, दिट्ठिप्पकासने असमत्थभावेन अप्पटिभानभावादिप्पत्तिया सच्चकादयो विय ॥ २ ॥

सीतपब्बता नाम "सिनेरुं परिवारेत्वा ठिता युगन्धरो ···प०··· गिरिब्रह्मा" ति एवं वुत्तपब्बता ॥ ३ ॥

सब्बसो चक्कवाळसहस्सेहि सब्बसो आगम्म सब्बसो सन्निसिन्नेना ति सम्बन्धवसेन तयो विकप्पा युत्ता, सब्बसो चक्कवाळसहस्सेहि दसहि दसहीति पन अनिट्ठसाधनतो पटिसेधितो।

१, कुलपब्ब०–सी०।

सन्निसिन्नेन देवानं गणेन परिवारितो ति वा,[१] मातरं पमुखं कत्वा अभिधम्मकथामग्गं सम्पवत्तयीति वा योजना कातब्बा।

इदानि देसनाय समुट्ठानं दस्सेन्तो **"तस्सा पञ्ञाय तेजसा"** ति आह। या सा आदिम्हि करुणाय उपमिता सब्बञेय्यधम्मानं यथासभावजाननसमत्था, तेसं देसेतब्बप्पकारजाननसमत्था, बोधेतब्बपुग्गलानं आसयाधिमुत्तियादिविभावनसमत्था च पञ्ञा, तस्सा च यथावुत्तबलयोगतो ति अत्थो। तेन सब्बञ्ञुतञ्ञाणमेव अभिधम्मकथाय समुट्ठानभावे समत्थं नाञ्ञं ति इममत्थं दीपेन्तो अभिधम्मकथाय असाधारणभावं दस्सेति। **मग्गो** ति उपायो। खन्धायतनादीनं कुसलादीनञ्च धम्मानं अवबोधस्स, सच्चपटिवेधस्सेव वा [९-म०] उपायभावतो **"अभिधम्मकथामग्गो"** ति वुत्तो। पबन्धो वा "मग्गो" ति वुच्चति। सो हि दीघत्ता मग्गो विया ति **मग्गो**, तस्मा अभिधम्मकथापबन्धो **"अभिधम्मकथामग्गो"** ति वुत्तो। **देवानं गणेन परिवारितो** ति वत्वा पुन **देवानं** ति वचनं तेसं गहणसमत्थतं दीपेति। न हि असमत्थानं भगवा देसेतीति॥ ४-५॥

एवं करुणापञ्ञामुखेहि गुणेहि भगवतो अभिधम्मकथामग्गप्पवत्तनेन च हितप्पटिपत्तिया परमपणामारहतं दस्सेत्वा इदानि अधिप्पेतं पणामं करोन्तो आह **"तस्स पादे नमस्सित्वा"** ति। भगवतो थोमनेनेव[२] च धम्मस्स स्वाक्खातता संघस्स च सुप्पटिपन्नता दस्सिता होति तप्पभवस्स अनञ्ञथाभावतो, तस्मा पणामारहं तञ्च रतनद्वयं पणमन्तो **"सद्धम्मञ्चस्स ....प०.... चञ्जलिं"** ति आह। तत्थ[३] यस्मा[३] बुद्धो "सदेवके लोके तथागतो वन्दनीयो"[४] ति, संघो च **"सुपटिपन्नो ....प०.... अञ्जलिकरणीयो"**[५] ति वुत्तो, तस्मा **"तस्स पादे नमस्सित्वा, कत्वा संघस्स चञ्जलिं"**

वज्जितब्बे ति ये वज्जेतुं सक्का "अतिसम्मुखा अतिसमीपं उन्नतप्पदेसो" ति, एते। इतरे पन तस्सा परिसाय महन्तभावेन न सक्का परिहरितुं।

"सब्बञेय्य ....प०.... समत्था" ति वत्वा तेसं **देसेतब्बप्पकारजाननसमत्था** ति वचनं अत्तना पटिविद्धाकारस्स धम्मसामिना पि परेसं देसेतुं असक्कुणेय्यत्ता वुत्तं। अञ्ञथा सब्बे पि सत्ता दिट्ठसच्चा एव भवेय्युं। सब्बञेय्यधम्मानं यथासभावजाननसमत्थतादि येव **यथावुत्तबलं**। **तेसं गहणसमत्थतं दीपेति**, अधिकवचनमञ्ञमत्थं बोधेति ति अधिप्पायो॥ ४-५॥

तथागतो वन्दनीयो ति आदिना "नमस्सित्वा" ति आदि किरियाविसेसानं तं-

---

१. नत्थि-सी०। २. थोमनेन-सी०। ३-३. तस्मा-सी०।
४. वि० ३६१ (परिवारे)। ५. अं० ३ : ८-९।

ति वुत्तं। धम्मो पन स्वाक्खातितादिगुणयुत्तो तथानुस्सरणेन पूजेतब्बो होति "तमेव[1] धम्मं[1] सक्कत्वा गरुं कत्वा[2] उपनिस्साय विहरेय्यं"[3] ति वचनतो,[4] कायवाचाचित्तेहि सब्बथा पूजेतब्बो, तस्मा **"सद्धम्मञ्चस्स पूजेत्वा"** ति वुत्तं।

सिरीमतो ति एत्थ **सिरी** ति पञ्ञापुञ्ञानं अधिवचनं ति वदन्ति । अथ वा पुञ्ञनिब्बत्ता सरीरसोभग्गादिसम्पत्ति कतपुञ्ञे निस्सयति, कतपुञ्ञेहि वा निस्सीयती ति "सिरी" ति वुच्चति, सा च अतिसयवती भगवतो अत्थीति सिरीमा, भगवा, तस्स **सिरीमतो** ॥ ६ ॥

निपच्चकारस्सा ति पणामकिरियाय[5]। **आनुभावेना** ति बलेन । **सोसेत्वा** ति सुक्खापेत्वा अन्तरधापेत्वा अत्थं पकासयिस्सामीति सम्बन्धो । **अन्तराये** ति अत्थप्पकासनस्स उपघातके। **असेसतो** ति निस्सेसे सकले ॥ ७ ॥

इदानि अभिधम्मस्स गम्भीरत्थत्ता अत्थप्पकासनस्स दुक्करभावं दीपेतुं **"विसुद्धाचारसीलेना"** ति अदिना अभियाचनं दस्सेति । [८-सी०] थुल्लच्चयादि-विसुद्धिया **विसुद्धाचारो,** पाराजिकसंघादिसेसविसुद्धिया **विसुद्धसीलो** । [१०-म०] चारित्तवारित्तविसुद्धिया वा **विसुद्धाचारसीलो**, तेन । **सक्कच्चं** ति चित्तिं[6] कत्वा । **अभियाचितो** ति अभिमुखं[7] याचितो[7]। तेन अनादरियं अत्थप्पकासने कातुं असक्कुणेय्यं[8] दस्सेति ॥ ८ ॥

तं-सुत्तन्तानुरोधेन पवत्तितमाह। **सरीरसोभग्गादी** ति आदि सद्देन कल्याणवाक्करणता आधि-पच्चपरिवारसम्पत्ति-आदि सङ्गण्हाति ॥ ६ ॥

अन्तरधापेत्वा ति निरोधेत्वा। निरोधनञ्चेत्थ उप्पादकहेतुपरिहरणवसेन तेसं अनुप्पत्तिकरणं ति वेदितब्बं। **अत्थं पकासयिस्सामी** ति **सम्बन्धो** ति "सोसेत्वा" ति पुब्बकालकिरियाय अपरकालकिरियापेक्खताय वुत्तं ॥ ७ ॥

[११-म०] **दुक्करभावं दीपेतुं** ति अदुक्करस्स तथा अभियाचेतब्बताभावतो ति अधिप्पायो। पाराजिकसंघादिसेसानं सीलविपत्तिभावतो थुल्लच्चयादीनञ्च येभुय्येन आचारविपत्तिभावतो आचार-सीलानं तथा योजना कता, तथा चारित्तसीलस्स आचारसभावत्ता इतरं सभावेनेव गहेत्वा दुतिया। **असक्कुणेय्यं** ति विसुद्धाचारादिगुणसमन्नागतेन सब्रह्मचारिना सद्धम्मचिरट्ठितत्थं सादरं अभियाचितेन तेन च अभिधम्मत्थप्पकासने समत्थो ति याथावतो पमाणितेन तब्बिमुखभावो न सुकरो ति अधिप्पायो ॥ ८ ॥

१-१. धम्मा एव– सी० । २. कत्वा''' प०''''सी० । ३. विहरेय्युं–सी० ।
४. सं० १ : १४०; अं० २ : २३ । ५. क्रियाय–सी० ।
६. चित्ती–सी० । ७-७. अभिमुखयाचितो–सी० । ८. असक्कुणेय्यनं–सी० ।

इदानि यस्स अत्थं पकासेतुकामो, तं दस्सेतुं "**यं देवदेवो**" ति आदिमाह। तत्थ यं ति अभिधम्मं। **देवदेवो** ति विसुद्धिसम्मुत्ति-उपपत्तिदेवानं देवो। लोके हि ये "सरणं परायणं" ति गन्तब्बा गतिभूता, ते "देवा" ति वुच्चन्ति, भगवा च सब्बदेवानं गतिभूतो ति। **नयतो** ति सङ्खेपतो। **समाचिक्खी** ति सम्मा आचिक्खि यथा थेरो बुज्झति। वेनेय्यसत्ते विनेतीति **विनायको**, नायकविरहितो वा, सयम्भू ति अत्थो ॥ ९ ॥

यञ्च ति यञ्च अभिधम्मं भिक्खूनं पयिरुदाहासी ति सम्बन्धो। **पयिरुदाहासी** ति कथेसि। **इती** ति इमिना अनुक्कमेन। "यो धारितो" यं ति उपयोगवसेन वुत्तो यं-सद्दो **धारितो** ति पच्चत्तेन सम्बज्झमानो पच्चत्तवसेन परिणमति, तस्मा यो धारितो, यो च सङ्गीतो, तस्स अत्थं पकासयिस्सामीति योजना कातब्बा।

वेदेन पञ्ञाय ईहति पवत्ततीति **वेदेहो**, तेन मुनिना। **अभिण्हसो** ति बहुसो। **अभिधम्मस्सा** ति एतं "अत्थं पकासयिस्सामी" ति एतेन योजेतब्बं। इदानि यो अत्थप्पकासनस्स निस्सयो, तं दस्सेतुं "**आदितो**" ति आदिमाह। तत्थ **आदितो** ति आदिह्मि पठमसङ्गीतियं ॥ १०-१२ ॥

या अट्ठकथा सङ्गीता, कस्स पन सा अट्ठकथा ति? अञ्ञस्स वुत्तस्स अभावा "यस्स अत्थं पकासयिस्सामी" ति वुत्तं, अधिकारवसेन "तस्स अभिधम्मस्सा" ति विञ्ञायति। **सङ्गीता** ति अत्थं पकासेतुं युत्तट्ठाने "अयं एतस्स अत्थो, अयं एतस्स अत्थो" ति सङ्गहेत्वा वुत्ता, पच्छा पि च दुतियततियसङ्गीतीसु **अनुसङ्गीता** ॥ १३ ॥

अभिसङ्खता ति रचिता। **ततो** ति अट्ठकथातो। **तन्तिनयानुगं** ति तन्तिगतिं अनुगतं। **भासं** ति मागधभासं। **निकायन्तरलद्धीहि** ति अन्तरन्तरा अनुप्पवेसिताहि। **असम्मिस्सं** ति अवोकिण्णं। **अनाकुलं** ति सनिकाये पि अनाविलं परिच्छिन्नं। असम्मिस्सो अनाकुलो च यो महाविहारवासीनं अत्थविनिच्छयो, तं दीपयन्तो अत्थं

देवदेव-सद्दस्स अत्थो पट्ठानसंवण्णनाटीकायं विपञ्चितो ति न वित्थारयिम्ह ॥ ९-१२ ॥

पठमसङ्गीतियं या अट्ठकथा सङ्गीता ति वचनेन सा भगवतो धरमानकाले पि अट्ठकथा संविज्जति, तेन पाठो विय भगवं-मूलिका वा ति विञ्ञायति। "अभिधम्मस्सा" ति पदं "अत्थं पकासयिस्सामी" ति एतदपेक्खं ति "कस्स पन सा अट्ठकथा" ति पुच्छित्वा अधिकारवसेन तमेव अभिधम्मपदं आकड्ढति। आवुत्ति-आदिवसेन वा अयमत्थो विभावेतब्बो ॥ १३ ॥

अरियमग्गस्स बोज्झङ्गमग्गङ्गझानङ्गविसेसं पादकज्झानमेव नियमेती ति आदिनयप्पवत्तो तिपिटकचूळनागत्थेरवादो, आदि-सद्देन विपस्सनाय आरम्मणभूता खन्धा नियमेन्ति, पुग्गलज्झासयो नियमेतीति एवमादयो मोरवापिवासिमहादत्तत्थेर-तिपिटकचूळाभयत्थेरवादादयो

[११-म०] पकासयिस्सामीति । एतेन **तिपिटकचूळनागत्थेरादीहि**[1] वुत्तो थेरवादो पि सङ्गहिता होति । अथ वा तम्बपण्णिभासं अपनेत्वा मागधभासञ्च आरोपेत्वा पकासियमानो यो[2] अभिधम्मस्स अत्थो[3] असम्मिस्सो अनाकुलो येव च होति **महाविहारवासीनं** च विनिच्छयभूतो, तं अत्थं "एसो महाविहारवासीनं विनिच्छयो" ति दीपयन्तो पकासयिस्सामि । तप्पकासनेनेव हि सो तथा दीपितो होतीति ॥ १४-१६ ॥

तोसयन्तो विचक्खणे ति विचक्खणे तोसयन्तो गहेतब्बं गहेत्वाना ति एवं योजेत्वा "गहेतब्बट्ठाने येव गहितं सुट्ठु कतं" ति एवं तोसयन्तो ति अत्थं वदन्ति । एवं सति गहेतब्बग्गहणेनेव तोसनं कतं, न अञ्ञेन अत्थप्पकासनेना ति [९-सी०] एतं आपज्जेय्य । तोसयन्तो अत्थं पकासयिस्सामीति एवं पन योजनाय सति गहेतब्बग्गहणं अञ्ञञ्च-सब्बं अत्थप्पकासनं होतीति सब्बेन तेन तोसनं कतं होति, तस्मा तोसयन्तो अत्थं पकासयिस्सामीति युत्तरूपा[4] ॥ १७ ॥

इदानि यं अत्थप्पकासनं कत्तुकामो, तस्स महत्तं परिहरितुं **"कम्मट्ठानानी"** ति आदिमाह । **अत्थवण्णनं** ति एत्थ **वण्णना** नाम विवरित्वा वित्थारेत्वा वचनं । **इती** ति "अपनेत्वा ततो भासं" ति **एवमादिना** यथादस्सितप्पकारेन । इति सोतूनं उस्साहुप्पादनस्स हेतुं दस्सेति । **अभिधम्मकथं** ति अभिधम्मट्ठकथ । निसामेथा ति सुणाथ । इदानि अवस्सं अयं सोतब्बा येवा ति दळ्हं उस्साहेन्तो आह "**दुल्लभा हि अयं कथा**" ति ॥ १८-२० ॥

लीनत्थपदवण्णनायं अभिधम्ममूलटीकायं
वीसतिगाथावण्णना निट्ठिता ॥

सङ्गह्यन्ति । **तप्पकासनेनेवा** ति अभिधम्मस्स अत्थप्पकासनेनेव । **सो** ति महाविहारवासीनं विनिच्छयो । **तथा** ति असम्मिस्सानाकुलभावेन । असम्मिस्सानाकुलभूतो वा विनिच्छयो महाविहारवासीनं सन्तकभावेन, एतेन अभिधम्मस्स अत्थप्पकासनेनेव महाविहारवासीनं विनिच्छयो इध अभिनिप्फादीयती ति दस्सेति । अथ वा **तप्पकासनेनेवा** ति असम्मिस्सानाकुलभावप्पकासनेनेव । **सो** ति पकासियमानो अभिधम्मत्थो । **तथा** ति महाविहारवासीनं विनिच्छयभावेन । इमस्मिं अत्थविकप्पे "असम्मिस्सं अनाकुलं अत्थं पकासयिस्सामी" ति सम्बन्धनीयं ॥ १४-१६ ॥

[१२–म०] अञ्ञञ्च सब्बं अत्थप्पकासनं होती ति तोसनं होती ति अत्थो । तेनेवाह **"सब्बेन तेन तोसनं कतं होती"** ति युत्तरूपा योजना ॥ १७-२० ॥

अनुटीकायं वीसतिगाथावण्णना निट्ठिता ।

---

१. चूळ०–सी० । २. नत्थि–सी० ।
३. यो अत्थो–सी० । ४. युत्तरूपं—सी० ।

निदानकथा

अट्ठसालिनिं ताव वण्णेन्तेहि आचरियेहि तस्सा सन्निवेसो विभावेतब्बो। तस्मा इदं वुच्चति--

"वचनत्थो परिच्छेदो सन्निवेसो च पाळिया[1]।
सागरेहि तथा चिन्ता देसनाहि गम्भीरता॥
[१२ म०] देसनाय सरीरस्स पवत्तिग्गहणं तथा[2]।
थेरस्स वाचनामग्ग-तप्पभाविततापि[3] च॥
पटिवेधा तथा बुद्ध-वचनादीहि आदितो।
आभिधम्मिकभावस्स साधनं सब्बदस्सिनो॥
विनयेनाथ गोसिङ्ग-सुत्तेन च महेसिना।
भासितत्तस्स[4] संसिद्धि निदानेन च दीपिता॥
पकासेत्वा इमं सब्बं पटिञ्ञातकथा कता।
अट्ठसालिनिया एतं सन्निवेसं विभावये ति॥

वचनत्थविजाननेन विदिताभिधम्मसामञ्ञत्थस्स अभिधम्मकथा **वुच्चमाना** सोभेय्या ति अभिधम्मपरिजाननमेव आदिम्हि युत्तरूपं ति तदत्थं पुच्छति **"तत्थ केनट्ठेन अभिधम्मो" ति**। तत्थ **तत्था** ति "अभिधम्मस्स अत्थं पकासयिस्सामी"ति यदिदं वुत्तं,

---

निदानकथावण्णना

परिच्छेदो सत्तप्पकरणभावो। सन्निवेसो सत्तन्नं पकरणानं तदवयवानञ्च ववत्थानं। सागरेहि तथा चिन्ता ति "इमस्स अभिधम्मस्स गम्भीरभावविजाननत्थं चत्तारो सागरा वेदितब्बा" ति आदिना नयेन जलसागरादीहि सह नयसागरविचारो। "सतभागेन सहस्सभागेन धम्मन्तरा धम्मन्तरं सङ्कमित्वा सङ्कमित्वा देसेसी" ति आदिना देसनाभेदेहि अभिधम्मस्स गम्भीरभावकथा देसनाहि गम्भीरता।

"एवं तेमासं निरन्तरं देसेन्तस्सा" ति आदिना देसनाकाले भगवतो सरीरस्स यापिताकारविचारो देसना.....प०....... गहणं। तथा थेरस्स .....प०......पि चा ति "अभिधम्मे वाचनामग्गो नामा" ति आदिना अभिधम्मे वाचनामग्गस्स सारिपुत्तत्थेरसम्बन्धितता तस्स च तेनेव उप्पादितता। यो हि भगवता देवतानं देसिताकारो, सो अपरिच्छिन्नवारनयतन्तिताय अनन्तो अपरिमाणो न भिक्खूनं वाचनायोग्गो, यो च थेरस्स देसिताकारो, सो अतिसङ्खित्तताय। नातिसङ्खेपनातिवित्थारभूतो पन पाठनयो थेरप्पभावितो वाचनामग्गो ति।

वचनत्थविजाननेना ति आदिना कुसला धम्मा ति आदिपदानञ्ञेव अत्थवण्णनं अकत्वा अभिधम्म-सद्दविचारस्स सम्बन्धमाह। "ये ते मया धम्मा अभिञ्ञा देसिता। सेय्यथिदं--चत्तारो सति-

---

१. पाळिया--सी०। २. ततो--सी०। ३. तप्पभावि तथापि--सी०। ४. भासितत्थस्स--सी०।

तस्मिं। "यस्स अत्थं पकासयिस्सामी" ति पटिञ्ञातं, सो अभिधम्मो केनट्ठेन अभिधम्मो ति अत्थो। तत्था ति वा "अभिधम्मकथं" ति एतस्मिं वचने यो अभिधम्मो वुत्तो, सो केनट्ठेन अभिधम्मो ति अत्थो। धम्मातिरेकधम्म.विसेसट्ठेना ति एत्थ धम्मो अतिरेको धम्मातिरेको, सुत्तन्ताधिका पाळीति[1] अत्थो। धम्मो विसेसो धम्मविसेसो धम्मातिसयो, विचित्ता पाळीति अत्थो, धम्मातिरेकधम्मविसेसा[2] एव अत्थो धम्मातिरेकधम्मविसेसट्ठो।

द्विन्नम्पि अत्थानं अभिधम्मसद्दस्स अत्थभावेन सामञ्ञतो एकवचननिद्देसो कतो। तस्मा ति यस्मा "अभिक्कमन्ति, अभिक्कन्तवण्णा"ति आदीसु विय अतिरेकविसेसट्ठदीपको अभि-सद्दो, तस्मा अयम्पि धम्मो धम्मातिरेकधम्मविसेसट्ठेन "अभिधम्मो" ति वुच्चतीति सम्बन्धो।

तत्थ सिया--"अभिक्कमन्ति, अभिक्कन्तवण्णा" ति एत्थ धातुसद्दस्स पुरतो पयुज्जमानो अभिसद्दो 'किरियाय'[3] [१० सी०] अतिरेकविसेसभावदीपको होतीति युत्तं[4] उपसग्गभावतो, धम्मसद्दो पन न धातुसद्दो ति एतस्मा पुरतो अभिसद्दो पयोगमेव नारहति। अथापि पयुज्जेय्य, किरियाविसेसका[5] उपसग्गा, न च धम्मो किरिया ति धम्मस्स अतिरेकविसेसभावदीपनं न युत्तं ति? नो न युत्तं। अञ्ञस्स पि[6] हि उपसग्गस्स [१३-म०] अधातुसद्दा पुरतो पयुज्जमानस्स अकिरियाय पि अतिरेकविसेसभावदीपकस्स दस्सनता ति एतमत्थं विभावेतुं अतिछत्तादि-उदाहरणं दस्सेन्तो आह "यथा" ति आदि।

पट्ठाना....प०.... सिक्खितं सिक्खिंसु द्वे भिक्खू अभिधम्मे नानावादा" ति'आदि-सुत्तवसेन किञ्चा पि बोधिपक्खियधम्मा "अभिधम्मो" ति वुच्चन्ति, धम्म-सद्दो च समाधि-आदीसु दिट्ठप्पयोगो, परियत्ति-धम्मो एव पन इध अधिप्पेतो ति दस्सेन्तो "सुत्तन्ताधिका पाळी ति अत्थो" ति आह। तत्थ धम्मब्यभिचारभावेन विसेसतो अभिधम्मो विय सुत्तन्तो पि "धम्मो" ति वुच्चति।

[१३-म०] "यो वो आनन्द, मया धम्मो च विनयो च देसितो पञ्ञत्तो" ति' आदीसु[7] अञ्ञत्थ चासम्भवतो अभिसद्देन निवत्तेतब्बत्थं दीपेतुं "सुत्तन्ता" ति वुत्तं। ननु च अतिरेकविसेसट्ठा भिन्नसभावा यतो ते यथाक्कमं अधिकविचित्तपरियायेहि बोधिता, तस्मा "धम्मातिरेकधम्मविसेस-ट्ठेही" ति बहुवचनेन भवितब्बं, न एकवचनेना ति अनुयोगं मनसिकत्वा आह "द्विन्नम्पि...प....एक-वचननिद्देसो कतो" ति।

पयोगमेव नारहति उपसग्गसद्दानं धातु-सद्दस्सेव पुरता पयोजनीयत्ता। अथा पि पयुज्जेय्य अतिमालादीसु अति-सद्दादयो विय। एवम्पि यथा "अतिमाला" ति एत्थ समासवसेन अनाविभूताय कमनकिरियाय विसेसको अति-सद्दो न मालाय, एवमिधा पि अभि-सद्दो धम्मविसेसको युत्तो ति

---

१. पाळीति—सी० सब्बत्थ। २. विसेसो—सी०। ३. क्रियाय—सी०।
४. वुत्तं—सी०। ५. क्रिया०—सी० सब्बत्थ। ६. अञ्ञस्सा पि-सी०। ७. दी० २:११८।

एवमेवा ति यथा छत्तातिरेकछत्तविसेसादि-अत्थेन अतिछत्तादयो होन्ति अतिसद्दस्स उपसग्गस्स अधातुसद्दस्स पि पुरतो पयुज्जमानस्स अकिरियाय च तब्भावदीपकत्ता, एवमयम्पि धम्मो धम्मातिरेकधम्मविसेसट्ठेन[1] "अभिधम्मो"ति वुच्चति अभि-सद्दस्स उपसग्गस्स अधातुसद्दस्स पि[2] पुरतो पयुज्जमानस्स अकिरियाय च तब्भावदीपकत्ता ति अधिप्पायो।

एकदेसेनेव विभत्ता ति "कतमे च भिक्खवे पञ्चक्खन्धा? रूपक्खन्धो...प... विञ्ञाणक्खन्धो। कतमो च भिक्खवे रूपक्खन्धो? यं किञ्चि रूपं अतीता[3] प...सन्तिके वा, अयं वुच्चति रूपक्खन्धो" ति एवमादिना उद्देसनिद्देसमत्तेनेव विभत्ता, "तत्थ कतमं रूपं अतीतं"ति एवमादिना पटिनिद्देसस्स अभिधम्मभाजनीयस्स पञ्हपुच्छकस्स च अभावा न निप्पदेसेन। अभिधम्मं पत्वा पन प...निप्पदेसतो व विभत्ता, तस्मा[4] अयम्पि धम्मो धम्मातिरेकधम्मविसेसट्ठेन **अभिधम्मो** ति वुच्चति निप्पदेसानं तिण्णम्पि नयानं अतिरेकपाळिभावतो[5] विसेसपाळिभावतो[6] चा ति अधिप्पायो। सुत्तन्ते बावीसतिया इन्द्रियानं एकतो अनागतत्ता इन्द्रियविभङ्गे सुत्तन्तभाजनीयं नत्थि।

अधिप्पायो। **अञ्ञस्स** पि हि उपसग्गस्सा ति इदं रुळ्हीवसेन, अत्थे उपसज्जती ति वा उपसग्गस्स अन्वत्थसञ्ञतं गहेत्वा वुत्तं। अतिछत्तादीसु हि अति-सद्दो इध उपसग्गो ति अधिप्पेतो। तत्थ यथा कल्याणो पूजितो वा पुरिसो अतिपुरिसो ति भवति, एवं अतिरेकविसेसट्ठानम्पि कल्याणपूजितत्थभावसम्भवतो कल्याणं वा पूजितं वा छत्तं अतिछत्तं ति सद्दनयो वेदितब्बो। कल्याणपूजितभावा हि गुणविसेसयोगेन इच्छितब्बा। गुणविसेसो चेस यदिदं पमाणातिरेको च विचित्तरूपता च। एवञ्च पन कत्वा "अकिरियाय पी" ति वचनं समत्थितं भवति। यथा च अतिछत्तादीसु, एवं अभिधम्म-सद्दे पि दट्ठब्बं। अनेकत्था हि निपाता ति। **तब्भावदीपकत्ता** ति अतिरेकविसेसभावदीपकत्ता।

एकतो अनागतत्ता ति इदं सुत्तन्ते एकतो आगतानं खन्धायतनादीनं सुत्तन्तभाजनीयस्स दिट्ठत्ता "छ इमानि भिक्खवे, इन्द्रियानी" ति[7] आदिना चक्खादीनं छन्नं इत्थिन्द्रियादीनं तिण्णं सुखिन्द्रियादीनं पञ्चन्नं सद्धिन्द्रियादीनं पञ्चन्नं अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियादीनञ्च तिण्णं वसेन विसुं विसुं सुत्तन्तभावेन आगतत्ता एकसुत्तभावेन अनागतानं बावीसतिया इन्द्रियानं सुत्तन्तभाजनीयस्स अदिट्ठत्ता च वुत्तं, न सुत्तन्ते एकतो आगमनस्स सुत्तन्तभाजनीयस्स कारणत्ता। सुत्तन्ते एकतो सब्बेन सब्बञ्च अनागता हि भुम्मन्तरपरिच्छेदपटिसम्भिदा सुत्तन्तभाजनीयवसेन विभत्ता दिस्सन्ति, एकतो आगतानि [१४-म०] च सिक्खापदानि तथा न विभत्तानि। वेरमणीनं विय पन सभावकिच्चादिविभागविनिमुत्तो बावीसतिया इन्द्रियानं समानो विभजनप्पकारो नत्थि, यो सुत्तन्तभाजनीयं सिया ति इन्द्रियविभङ्गे सुत्तन्तभाजनीयं नत्थी ति युत्तं सिया।

---

१. विसेसत्थेन —सी०। २. अधातुसद्दस्सा पि—सी०। ३. अतीतं—सी०।
४. कस्मा—सी०। ५. ०पालिभावतो–सी०। ६. विसेसनभावतो–सी०। ७. सं० ५: १७७।

"अविज्जापच्चया सङ्खारा सम्भवन्ती" ति आदिना पटिच्चसमुप्पादे तस्स तस्स पच्चयधम्मस्स पच्चयुप्पन्नधम्मानं पच्चयभावो उद्दिट्ठो, उद्दिट्ठधम्मानञ्च कुसलादिभावो पुच्छित्वा विस्सज्जेतब्बो, न चेत्थ **"अविज्जा सङ्खारा"** ति एवं वुत्तो उद्देसो अत्थीति पञ्हपुच्छकं नत्थि।

सुत्तन्ते पञ्चसिक्खापदानि उद्दिट्ठानि पाणातिपाता वेरमणीति आदीनि। सा पन वेरमणी यदि सभावकिच्चादिवसेन विभजियेय्य, "आरति विरती" ति आदिना अभिधम्म-भाजनीयमेव होति। अथापि चित्तुप्पादवसेन विभजियेय्य, तथापि अभिधम्मभाजनीयमेव होति। अञ्ञो पन वेरमणीनं विभजितब्बप्पकारो नत्थि, येन पकारेन सुत्तन्तभाजनीयं वत्तब्बं[1] सिया। तस्मा सिक्खापदविभङ्गे सुत्तन्तभाजनीयं नत्थि।

वचनत्थतो अभिधम्मे ञाते परिच्छेदतो ञापेतुं आह **"पकरणपरिच्छेदतो"** ति आदि। **कतिपया व पञ्हवारा अवसेसा** ति धम्महदयविभङ्गे अनागता हुत्वा महाधम्महदये

यदि पि पच्चयधम्मविनिमुत्तो पच्चयभावो नाम नत्थि, यथा पन पवत्तो पच्चयधम्मो पच्चयु-प्पन्नधम्मानं पच्चयो होति, सो तस्स पवत्ति-आकारविसेसो हेतु-आदिभावो ततो अञ्ञो विय पच्चय-धम्मस्स पच्चयभावो ति वुत्तो, सो च "अविज्जापच्चया सङ्खारा सम्भवन्ती" ति आदीसु पधानभावेन वुत्तो। तत्थ च गुणीभूता हेतुहेतुफलभूता अविज्जासङ्खारादयो ति वुत्तं "पच्चयभावो उद्दिट्ठो" ति। **उद्दिट्ठधम्मानं** ति आदि उद्देसेन परिच्छिन्नानं येव खन्धादीनं खन्धविभङ्गादीसु पञ्हपुच्छकनयो दस्सितो, न इतो अञ्ञथा ति कत्वा वुत्तं।

सुत्तन्ते सङ्गीतिसुत्तन्तादिके। **पञ्चसिक्खापदानि** पाणातिपाता... प०... पमादट्ठाना वेरमणी ति एवं उद्दिट्ठानि। **अञ्ञो पन वेरमणीनं विभजितब्बप्पकारो नत्थी** ति इदं अतीता-निच्चादिविभागो वेरमणीनं खन्धायतनादीसु अन्तोगधत्ता तब्बसेनेव विजानितब्बो, ततो पन अञ्ञो अभिधम्मनयविधुरो वेरमणीनं विभजितब्बप्पकारो नत्थी ति अधिप्पायेन वुत्तं। तथा च पटिसम्भि-दामग्गे "चक्खुं अनिच्चं... प०... जरामरणं अनिच्चं" ति अनुपदधम्मसम्मसनकथायं न वेर-मणियो उद्धटा।

ननु धम्मसङ्गणीधातुकथादीनम्पि वसेन अभिधम्मपाळिया अतिरेकविसेसभावो दस्सेतब्बो ति? सच्चमेतं, सो पन एकन्त-अभिधम्मनयनिस्सितो अवुत्तो पि सिद्धो ति कत्वा न दस्सितो। एतेन वा निदस्सनेन सो पि सब्बो नेतब्बो। अभिधम्मनयसामञ्ञेन वा अभिधम्मभाजनीयपञ्हपुच्छकेहि सो वुत्तो एवा ति न वुत्तो ति दट्ठब्बो।

पञ्हवारा ति पुच्छाविस्सज्जनवसेन पवत्ता पाळिनया। **एत्थे वा** ति धम्महदयविभङ्गे

---

१. पत्तब्बं-सी०।

आगता [१४-म०] धम्महदयविभङ्गवचनवसेन अवसेसा कतिपया व पञ्हवारा ति अत्थो। एत्थेव सङ्गहिता ति **"अपुब्बं नत्थी"** ति वुत्तं। **अप्पमत्तिका व तन्ति अवसेसा** ति धम्महदयविभङ्गे अनागन्त्वा महाधम्महदये आगततन्तितो यदि पथवी-आदीनं वित्थारकथा महाधातुकथा रूपकण्डधातुविभङ्गादीसु[1], [११-सी०] अथ धातुकथाय वित्थारकथा धातुकथाय अनागन्त्वा महाधातुकथाय आगततन्ति अप्पमत्तिका वा ति अधिप्पायो।

यं पन वुत्तं "सावकभासितत्ता छड्डेथ नं" ति तं बुद्धभासितभावदस्सनेन पटिसेधेतुं **"सम्मासम्बुद्धो हो"** ति आदिमाह। **चतूसु पञ्हेसू** ति "उपलब्भति नुपलब्भती" ति पटिञ्ञाय गहिताय पटिक्खेपगहणत्थं "यो सच्चिकट्ठो" ति[2] वुत्तं[2] सच्चिकट्ठं[3] निस्सयं कत्वा उपादाय पवत्ता द्वे पि पञ्चका[4] एको पञ्हो, "सब्बत्था" ति सरीरं सब्बं वा देसं उपादाय पवत्ता एको, "सब्बदा" ति कालमुपादाय एको, "सब्बेसू" ति यदि खन्धायतना-दयो गहिता, ते उपादाय पवत्ता, अथ पन "यो सच्चिकट्ठो सब्बत्थ सब्बदा" ति एतेहि न कोचि सच्चिकट्ठो देसो कालो वा अग्गहितो अत्थि ते पन सामञ्ञवसेन गहेत्वा अनुयोगो कतो, न भेदवसेना ति भेदवसेन गहेत्वा अनुयुञ्जितुं "सब्बेसू" ति वुत्ता[5] सच्चिकट्ठ-

एव। अपेक्खावसिकत्ता अप्पमहन्तभावस्स यतो अप्पमत्तिका महाधातुकथातन्ति धम्महदयविभङ्ग-वचनवसेन अवसेसा, तं दस्सनत्थं "धम्महदयविभङ्गे अनागन्त्वा महाधम्महदये आगततन्तितो" ति वुत्तं। धम्महदय...प० ... आगततन्तितो रूपकण्डधातुविभङ्गादीसु अनागन्त्वा महाधातुकथायं आगततन्ति अप्पमत्तिका वा ति [१५-म०] सम्बन्धो। अथ धातुकथाय वित्थारकथा महाधातु-कथा धम्महदयविभङ्गे अनागन्त्वा महाधम्महदये आगततन्तितो धातुकथायं अनागन्त्वा महाधातु-कथाय आगततन्ति अप्पमत्तिका वा ति योजेतब्बं।

उपलब्भती ति अनुलोमपच्चनीयपञ्चकस्स, **नुपलब्भती** ति पच्चनीयानुलोमपञ्चकस्स उपलक्खणवसेन वुत्तं। **सच्चिकट्ठं निस्सयं** ति "सब्बत्था" ति आदिना देसादि-अनामसनेन रूपादिसत्तपञ्ञासधम्मप्पभेदं सच्छिकट्ठमेव निस्सयभूतं। **सब्बत्था** ति एत्था पि "उपलब्भति नुपलब्भतीति पाटिञ्ञाय गहिताय पटिक्खेपग्गहणत्थं" ति आनेत्वा सम्बन्धनीयं, तथा **सब्बदा सब्बेसू** ति एत्था पि। यदि खन्धायतनादयो गहिता अट्ठकथायं आगतनयेन, अथ पन वुत्तं ति सम्बन्धो। **यो सच्छिकट्ठो** ति सच्छिकट्ठनिस्सयं उपलक्खेति। **एतेही** ति एतेहि वचनेहि। सच्छिकट्ठदेसकालप्पदेसेहि कथं सच्छिकट्ठादीनं पदेसो एकदेसभूतो सब्बो ति वुच्चति? पदेसानं

१. रूपतण्हाधातु०–सी०। २-२. वुत्तो–सी०। ३. तं सच्चिकट्ठं–सी०।
४. पञ्चका ति–सी०। ५. वुत्तं–सी०।

देसकालप्पदेसे उपादाय च पवत्ता एको ति एतेतु चतूसु।

द्विन्नं पञ्चकानं ति एत्थ "पुग्गलो उपलब्भति ...प०... मिच्छा" ति[1] एकं, 'पुग्गलो नुपलब्भति ...प०... मिच्छा" ति एकं, "त्वं चे पन मञ्ञसि ...प०... इदं ते मिच्छा" ति[2] एकं, "ऐसे[3] चे दुन्निग्गहिते ...प०... इदं ते मिच्छा" ति एकं, "न हेवं निग्गहेतब्बे, तेन हि यं निगण्हासि ...प०... सुकता पटिपादना"[4] ति एकं ति एवं निग्गहकरणं, पटिकम्मकरणं, निग्गहस्स सुनिग्गहभावं इच्छतो पटिञ्ञाठपनेन पटिकम्मवेठनं, पटिकम्मस्स दुप्पटिकम्मभावं इच्छतो तंनिदस्सनेन निग्गहस्स दुन्निग्गहभावदस्सनेन निग्गहनिब्बेठनं, अनिग्गहभावारोपनादिना छेदो ति अयं एको पञ्चको, यो अट्ठकथायं अनुलोमपञ्चक-पटिकम्म-चतुक्क-निग्गहचतुक्क-उपनयनचतुक्क-निगमनचतुक्कनामेहि सकवादिपुब्बपक्खे अनुलोमपच्च-नीकपञ्चको ति वुत्तो, परवादिपुब्बपक्खे च एवमेव पच्चनीयानुलोमपञ्चको ति वुत्तो। एवं द्वे पञ्चका वेदितब्बा। एवं सेसपञ्हेसुपी ति अट्ठपञ्चका **अट्ठमुखा** [१५-म०] **वादयुत्ती** ति वुत्ता। युत्तीति उपायो, वादस्स युत्ति **वादयुत्ति,** वादप्पवत्तनस्स उपायो ति अत्थो।

पुथुत्ता। "सब्बेसु पदेसेसू" ति पच्चेकं भेदामसनवसेन चायं पञ्हो पवत्तो ति न पुरिमेहि अवसेसो।

उपलब्भति ...प०... मिच्छा ति एकं ति उपलब्भती ति पटिञ्ञाग्गहणपटिक्खेपग्गहण-निग्गण्हनानं अनुलोमपटिलोमतो पटिञ्ञाठपननिग्गहपापनारोपनानञ्च वसेन पवत्ता तन्ति पठमपञ्च-कस्स एकं अङ्गं एको अवयवो ति अत्थो। एवं सेसेसु पि नेतब्बं। **निग्गहस्स सुनिग्गहभावं इच्छतो** सकवादिनो "त्वं चे पन मञ्ञसि वत्तब्बे खो पुग्गलो नुपलब्भती" ति आदिना[2] पटिञ्ञाठपनेन, तेन "तव तत्थ हेताय पटिञ्ञाय हेवं पटिजानन्तो हेवं निग्गहेतब्बे अथ तं निग्गण्हाम सुनिग्गहितो च होती" ति वत्वा "हञ्चि पुग्गलो नुपलब्भती" ति आदिना[2] परवादिनो अत्तनो पटिकम्मं यथा सकवादी न निब्बेठेति, एवं करणं **पटिकम्मवेठनं**। परवादिनो **पटिकम्मस्स दुप्पटिकम्मभावं इच्छतो** सकवादिनो **तंनिदस्सनेन** "एसो चे दुन्निग्गहितो हेवं" ति पटिकम्मनिदस्सनेन, 'वत्तब्बे खो पुग्गलो उपलब्भति...प० परमत्थेना ति[5]। नो च मयं तया तत्थ हेताय पटिञ्ञाय हेवं पटिजानन्तो हेवं निग्गहेतब्बा। अथ अम्हे निग्गण्हासि दुन्निग्गहिता च होमा" ति वत्वा "हञ्चि पुग्गलो उपलब्भती" ति आदिना[5] **निग्गहस्स** [१६-म०] **दुन्निग्गहितभावदस्सनेन** अनिग्गहितभावकरणं **निग्गहनिब्बेठनं**। "तेन हि यं निग्गण्हासि हञ्चि पुग्गलो उपलब्भती" ति आदिं वत्वा "तेन हि ये कते निग्गहे से निग्गहे दुक्कटे सुकते पटिकम्मे सुकता पटिपादना" ति सकवादिनो निग्गहस्स, अनि-ग्गहभावारोपनेन अत्तनो पटिकम्मस्स सुपटिकम्मभावकरणेन च सकवादिनो निग्गहस्स छेदो विनासनं पुग्गलवादनिसेधनवसेन समुट्ठितत्ता। धम्मताय अनुलोमनवसेन उट्ठहित्वा तब्बिलोमन-वसेन पवत्तो अनुलोमपच्चनीकपञ्चको वुत्तविपरियायेन दुतियपञ्चको वेदितब्बो।

---

१. कथा० १३–१४ पि०। २. कथा० ४ पि०। ३. एसो—सी०।
४. कथा० ९ पि०। ५. कथा० १ पि०।

अनुलोमपच्चनीकपञ्चके आदिनिग्गहं दस्सेत्वा पच्चनीयानुलोमपञ्चके च आदिनिग्गहमेव दस्सेत्वा मातिकं दीपेतुं **"सा पनेसा"** ति आदिमाह। **पुग्गलो** ति अत्ता सत्तो जीवो। **उपलब्भती** ति पञ्ञाय उपगन्त्वा लब्भति। **सच्चिकट्ठपरमत्थेना** ति मायामरीचि-आदयो विय नाभूताकारेन, अनुस्सवादीहि गहेतब्बा विय न अनुत्तमत्थभावेन, अथ खो भूतेन उत्तमत्थभावेन उपलब्भतीति पुच्छति। इतरो तादिसं इच्छन्तो पटिजानाति। पुन यो सच्चिकट्ठ-परमट्ठेन उपलब्भति, सो सच्चिकट्ठपरमत्थतो अञ्ञो तदाधारो, अञ्ञत्र वा तेहि, तेसं वा आधारभूतो, अनञ्ञो वा ततो रुप्पनादिसभावतो सप्पच्चयादिसभावतो वा उपलब्भमानो आपज्जतीति अनुयुज्जति **यो सच्चिकट्ठो''''प''''परमत्थेना"** ति इतरो पुग्गलस्स रूपादीहि अञ्ञत्तं अनञ्ञतञ्च अनिच्छन्तो **"न हेवं"** ति पटिक्खिपति।

तदाधारो ति ते सच्छिकटठपरमत्था रूपादयो आधारा एतस्सा ति तदाधारो। एतेन "रूपस्मिं अत्ता" ति एवंपकारो पुग्गलवादो दस्सितो होति। **तेसं वा आधारभूतो** ति एतेन "अत्तनि रूपं" ति एवंपकारो। **अञ्ञत्र वा तेही** ति तेहि रूपादीहि विना। आधाराधेय्यादिभावेन असंसट्ठो विसुं एव विना। तेन सत्तादिगुणेहि अवोकिण्णो पुरिसो ति एवमादिको। तं सामिभूतताय वा तदधीनभावेन "अञ्ञत्र वा तेही" ति वुत्तं ति "रूपवा अत्ता" ति एवंपकारो पुग्गलवादो दस्सितो ति वेदितब्बो। **अनञ्ञो** ति एतेन "रूपं अत्ता" ति एवंपकारो। **रूपनादिसभावो** रूपक्खन्धादीनं विसेसलक्खण, **सप्पच्चयादिसभावो** सामञ्ञलक्खणं। रूपादितो अञ्ञो अनञ्ञो वा अञ्ञत्ते च तदाधारादिभूतो **उपलब्भमानो आपज्जती ति अनुयुञ्जति** सकवादी पकारन्तरस्स असम्भवतो। **पुग्गलवादी पुग्गलस्स रूपादीहि न अञ्ञत्तं इच्छति** रूपादि विय पच्चक्खतो अनुमानतो वा गाहयितुं असक्कुणेय्यत्ता तस्स च कारकवेदकभावस्स अयुज्जमानकत्ता। ना पि अनञ्ञत्तं रुप्पनसप्पच्चयादिसभावप्पसङ्गतो पुग्गलस्सेव अभावप्पसङ्गतो च। यथेव हि न विना इन्धनेन अग्गि पञ्ञापियति, न च अञ्ञं इन्धनतो अग्गिं सक्का पटिजानितुं, ना पि अनञ्ञं। यदि हि अञ्ञो सिया, न उण्हं इन्धन सिया। अथ अनञ्ञो, निद्दहितब्बं येव दाहकं सिया। एवमेव न विना रूपादीहि पुग्गलो पञ्ञापियति, न च तेहि अञ्ञो, ना पि अनञ्ञो सस्सतुच्छेदभावप्पसङ्गतो ति लद्धियं ठत्वा पुग्गलवादी "न हेवा" ति पटिक्खिपति। तत्थ अग्गिन्धनोपमा ताव यदि लोकवोहारेन वुत्ता, अपळित्तं कट्ठादि इन्धनं निद्दहितब्बं च पळित्तं भासुरुण्हं अग्गि दाहकञ्च, तञ्च ओजट्ठमकरूपं [१७-म०] पुरिमपच्छिमकालिकं अनिच्चं संखतं पटिच्चसमुप्पन्नं, यदि एवं पुग्गलो रूपादीहि अञ्ञो अनिच्चो च आपन्नो। अथ परमत्थतो, तस्मिं येव कट्ठादिके पळित्ते यं उसुमं सो अग्गि, तंसहजातानि तीणि भूतानि इन्धनं, एवम्पि सिद्धं लक्खणभेदतो अग्गिक्खन्धानं अञ्ञत्तं ति अग्गि विय इन्धनतो रूपादीहि अञ्ञो पुग्गलो अनिच्चो च आपन्नो ति ब्याहता ति वेदितब्बं।

[१२-सी०] पुन सकवादी पटिञ्ञाय एकत्तापन्नं अप्पटिक्खिपितब्बं पटिक्खिपतीति कत्वा निग्गहं आरोपेन्तो आह **"आजानाहि निग्गहं"** ति। **"पुग्गलो नुपलब्भती"** ति पुट्ठो सकवादी पुग्गलदिट्ठिं पटिसेधेन्तो **"आमन्ता"** ति पटिजानाति। पुन इतरो यो सच्चिकट्ठेन[1] नुपलब्भति पुग्गलो, सो सच्चिकट्ठपरमत्थतो अञ्ञो वा अनञ्ञो वा नुपलब्भतीति आपज्जति अञ्ञस्स पकारस्स अभावा ति अनुयुज्जति **"यो सच्चिकट्ठो... प... परमत्थेना"** ति। यस्मा पन पुग्गलो सब्बेन सब्बं नुपलब्भति, तस्मा तस्स अञ्ञत्तानञ्ञत्तानुयोगो अननुयोगो पुग्गललद्धिं पटिसेधेन्तस्स अनापज्जनतो ति **"न हेवं"** ति पटिक्खिपति। इतरो पटिञ्ञाय आपज्जनलेसमेव पस्सन्तो अविपरीतं अत्थं असम्बुज्झन्तो येव निग्गहं आरोपेति **"आजानाहि निग्गहं"** ति।

इती ति यं दिस्वा मातिका ठपिता, एवं देसितत्ता ति अधिप्पायो[2]। **यथा किं** ति येन पकारेन बुद्धभासितं नाम जातं, तं निदस्सनं किं ति अत्थो। **यतो निदानं** ति यंकारणा छ-अज्झत्तिकबाहिरायतनादिनिदानं ति अत्थो। **पपञ्चसञ्ञासङ्खा** ति तण्हामानदिट्ठिपपञ्चसम्पयुत्ता सञ्ञा कोट्ठासा। **समुदाचरन्ती** ति अज्झाचरन्ति। **एत्थ चे** ति एतेसु आयतनादीसु तण्हामानदिट्ठीहि अभिनन्दितब्बं अभिवदितब्बं अज्झोसि-

---

पुग्गलो उपलब्भती ति पटिजानन्तस्स पकारन्तरस्स असम्भवतो वुत्तेसु पकारेसु एकेन पकारेन उपलब्भमानो उपलब्भती ति "आपन्नं" ति वुत्तं **"पटिञ्ञाय एकत्तापन्नं"** ति एकत्तापन्नत्ता एव अप्पटिक्खिपितब्बं, पुग्गले पटिसिद्धे तदभिनिवेसो पि अयाथावतो पुग्गलवादिनो गहिताकारसुञ्ञताविभावनेन सकट्ठानतो चावितो पटिसेधितो एव नाम होती ति वुत्तं **"पुग्गलदिट्ठिं पटिसेधेन्तो"** ति। पुग्गलो येव वा तथा पस्सितब्बत्ता दिट्ठि। "सामी निवासी कारको वेदको निच्चो धुवो" ति अभिनिवेसविसयभूतो हि परिकप्पमत्तसिद्धो पुग्गलो इध पटिक्खिपीयति, "न चत्तारो मे भिक्खवे पुग्गला" ति आदिना वुत्तवोहारपुग्गलो ति **अननुयोगो** आकासकुसुमस्स रत्तनीलादिभावविचारणा विया ति अत्थो। पुब्बे "नुपलब्भती" ति पटिजानित्वा विसेसचोदनाय अनापज्जनतो पुन "न हेवा" ति पटिक्खेपो **पटिञ्ञाय आपज्जनलेसो**। वञ्झा पुत्तकस्स दीघरस्सतानुयोगस्स विय सब्बेन सब्बं परमत्थतो अनुपलब्भमानस्स पुग्गलस्स रूपादीहि अञ्ञानञ्ञतानुयोगस्स अननुयोगभावो एव इध अविपरीतत्थो।

यं कारणा ति एतेन "यतो निदानं" ति एत्थ विभत्ति-अलोपो दट्ठब्बो ति दस्सेति। **अज्झाचरन्ती** ति अभिभवन्ति। अभिनन्दनादयो तण्हादीहि यथासङ्ख्यं योजेतब्बा, तण्हादिट्ठीहि वा अभिनन्दनज्झोसानानि, तीहि पि अभिवदनं अविसेसेन वा तीहि पि तयो योजेतब्बा। **एत्थ चे नत्थि**

---

1. सच्छिकट्ठपरमट्ठेन–सी०। 2. अधिप्पायेन–सी०।

तब्बञ्च नत्थि [१६–म०] चे। ननु नत्थि येव, कस्मा "नत्थि चे" ति वुत्तं ति? सच्चं नत्थि, अप्पहीनाभिनन्दनाभिवदनज्झोसानानं[1] पन पुथुज्जनानं अभिनन्दितब्बादिप्पकारानि[2] आयतनादीनि होन्तीति तेसं न सक्का "नत्थी" ति वत्तुं, पहीनाभिनन्दनादीनं पन सब्बथा नत्थीति "नत्थि चे" ति वुत्तं। **एसेवन्तो** ति अभिनन्दनादीनं नत्थिभावकरो मग्गो तप्पटिप्पस्सद्धिभूतं फलं वा रागानुसयादीनं अन्तो अवसानं, अप्पवत्तीति अत्थो।

जानं जानाती ति सब्बञ्ञुतञ्ञाणेन जानितब्बं जानाति। न हि पदेसञ्ञाणवा जानितब्बं सब्बं जानातीति। **पस्सं पस्सती** ति दिब्बचक्खु-पञ्ञाचक्खु-धम्मचक्खु-बुद्धचक्खु-समन्तचक्खुसङ्खातेहि पञ्चहि चक्खूहि पस्सितब्बं पस्सति। अथ वा **जानं जानाती** ति यथा अञ्ञे सविपल्लासा कामरूपपरिञ्ञावादिनो जानन्ता पि विपल्लासवसेन जानन्ति, न एवं भगवा, भगवा पन पहीनविपल्लासत्ता[3] जानन्तो जानाति येव, दिट्ठिदस्सनस्स च अभावा पस्सन्तो पस्सति येवा ति अत्थो। **चक्खुभूतो** ति पञ्ञाचक्खुमयत्ता सत्तेसु च तदुप्पादनतो लोकस्स चक्खुभूतो। **ञाण-भूतो** ति एतस्स च[4] एवमेव अत्थो दट्ठब्बो। **धम्मा** बोधिपक्खिया। **ब्रह्मा** मग्गो, तेहि उप्पन्नत्ता लोकस्स च तदुप्पादनतो तब्भूतो। **वत्ता** ति चतुसच्चधम्मे वदतीति वत्ता। **पवत्ता** ति चिरं सच्चप्पटिवेधं पवत्तेन्तो वदतीति पवत्ता। **अत्थस्स निन्नेता** ति अत्थं उद्धरित्वा दस्सेता, परमत्थं वा निब्बानं[5] पापयिता। **अमतस्स दाता** ति अमतसच्छिकिरियं[6] सत्तेसु उप्पादेन्तो अमतं ददातीति अमतस्स दाता। बोधिपक्खियधम्मानं तदायत्तभावतो

अभिनन्दितब्बं ति आदिना अभिनन्दनादीनं अभावसूचनेन फलूपचारतो अभिनन्दनादीनं समुच्छेदपटिप्पस्सद्धिभूतं मग्गफलं वुच्चति, तं पच्चामसनञ्च एसे वा ति इदं ति कत्वा वुत्तं "अभि····प०··· फलं वा" ति।

"ञायतीति ञाणं" ति उक्कंसगतिविजाननेन निरवसेसं ञेय्यजातं परिग्गह्यती ति तब्बिसयाय जानाति-किरियाय 'सब्बञ्ञुतञ्ञाणमेव' करणं [म.–१८.] भवितुमरहती ति "सब्बञ्ञुतञ्ञाणेन जानितब्बं जानाती" ति वुत्तं। अथ वा पकरणवसेन, "भगवा" ति सद्दन्तरसन्निधानेन वा अयं अत्थो विभावेतब्बो। **पस्सं पस्सती** ति एत्था पि एसेव नयो। **जानन्ता पि विपल्लासवसेन जानन्ति** तित्थिया पठमज्झान-अरूपज्झानेहि कामरूपपरिञ्ञावादिनो। **जानन्तो जानाति येव भगवा** अनागामि-अरहत्तमग्गेहि तंपरिञ्ञावादिताय। अयञ्च अत्थो दुक्खक्खन्धसुत्तवसेन[7] विभावेतब्बो।

१. अप्पहीणा०–सी०। २. ०दिप्पकारेन–सी०। ३. पहीण० –सी० सब्बत्थ।
४. नत्थि–सी०। ५. निब्बाणं वा–सी०। ६. ०सच्छिक्रियं–सी०।
७. म० १ : ११७–१२५ पि०।

धम्मस्सामी। सुवण्णालिङ्गं ति सुवण्णमयं आलिङ्गं खुद्दकमुदिङ्गं। [१३-सी०] सुपुप्फितसतपत्तपदुममिव सस्सिरिकं[1] ससोभं **सुपुप्फितसतपत्तसस्सिरिकं**।

अनुमोदितकालतो पट्ठाय····प···बुद्धभासितं नामं जातं ति एतेन अनुमोदना बुद्धभासितभावस्स कारणं ति अयमत्थो वुत्तो विय दिस्सति, एवञ्च सति कथावत्थुस्स बुद्धभासितभावो न सिया अननुमोदितत्ता, तस्मा एवमेत्थ अत्थो दट्ठब्बो—"महाकच्चायनो एवं विभजिस्सती" ति दिस्वा भगवा मातिकं निक्खिपित्वा विहारं पविट्ठो, तथेव च थेरो भगवता दिन्ननयेन ठपितमातिकाय विभजीति बुद्धभासितं नाम जातं, तं पन अनुमोदनाय पाकटं जातं ति एतमत्थं सन्धाय "एवं सत्थारा ····प ··· नाम जातं" ति वुत्तं ति।

[१७-म०] इदानि पाळिया[2] सन्निवेसं दस्सेतुं "**तत्थ धम्मसङ्गणीपकरणे**" ति आदिमाह। **कामावचरकुसलतो** अट्ठा ति कामावचरकुसले चत्तारो खन्धे गहेत्वा ततो अट्ठ चित्तानि उद्धरति। पठमा[3] विभत्तीति पि वदन्ति। **एकूननवुति चित्तानी** ति यत्थ एतानि चित्तानि विभत्तानि, ते पाळिप्पदेसा" एकूननवुति चित्तानि" ति वुत्ता। तेसञ्च समुदायो चित्तविभत्ति, तस्मा उपपन्नमेतं "**एकूननवुति चित्तानि चित्तविभत्ती**" ति। मातिकञ्च उद्दिसित्वा तत्थ एकेकं पदं उद्धरित्वा यस्मा चित्तानि विभत्तानि, तस्मा मातिका पि चित्तविभत्ति-अन्तोगधा येवा ति चित्तुप्पादकण्डं मातिकापदभाजनीयवसेन दुविधं ति इदं पि वचनं युज्जति।

मूलतो ति "तीणि कुसलमूलानी" ति आदिना[4] कुसलादीनं मूलवसेन सङ्खिपित्वा वचनं। "वेदनाक्खन्धो" ति आदिना **खन्धतो**। "कायकम्मं" ति आदिना **द्वारतो**।

पञ्ञाचक्खुना उप्पन्नत्ता वा **चक्खुभूतो**। **ञाणभूतो** ति आदीसु पि एसेव नयो। अथ वा **दिब्ब-चक्खु-आदिकं** पञ्चविधम्पि चक्खुं भूतो पत्तो ति चक्खुभूतो। एवं ञाणभूतो ति आदीसु पि दट्ठब्बं। सामुक्कंसिकाय धम्मदेसनाय सातिसयो भगवतो वत्तु-आदिभावो ति वुत्तं "**चतुसच्चधम्मे वदतीति वत्ता**" ति आदि। "**पवत्ता**" ति एत्थ प-कारस्स पकट्ठत्थतं दस्सेतुं "**चिरं···प०···पवत्ता**" ति आह। निद्धारेत्वा नेता निन्नेता।

"**एकूननवुति चित्तानी**" ति वुत्ता चित्तसहचरियाय यथा "कुन्ता पचरन्ती" ति। तेसञ्च पाळिपदेसानं एकेकं पदं उद्धरित्वा पि किञ्चापि कुसलत्तिकपदानि येव उद्धरित्वा चित्तुप्पादकण्डे चित्तानि विभत्तानि, कुसलत्तिकेन पन सभावधम्मसङ्गहितानं सेसत्तिकदुकपदानं असङ्गहितानं

---

१. सस्सिरीकं–सी०। २. पालिया–सी०। ३. पठम०–सी०। ४. ध० सं० २२९ पि०।

"सुखभूमियं कामावचरे" ति आदिना[1] **भूमितो**। **अत्थो** ति हेतुफलं। **धम्मो** ति हेतु। "तीणि कुसलमूलानि तीणि अकुसलमूलानी" ति आदिना[1] हेतुवसेन सङ्गहो **धम्मतो** निक्खेपो। "तंसम्पयुत्तो, तंसमुट्ठाना तदेकट्ठा च किलेसा" ति आदिना[1] हेतुफलवसेन सङ्गहो **अत्थतो** निक्खेपो।

अथ वा **धम्मो** ति भासितो। **अत्थो** ति भासितत्थो। "तयो कुसलहेतू" ति[2] **धम्मो** "तत्थ कतमे तयो कुसलहेतू अलोभो" ति आदि[2] **अत्थो, सो च धम्मो**। "तत्थ कतमो अलोभो" ति आदि[2] **अत्थो** ति एवं अट्ठधम्मवसेन निक्खेपो वेदितब्बो। **नामतो** ति "तीणि कुसलमूलानी" ति वुत्तधम्मानं अलोभो ति आदि नामवसेन। **लिङ्गतो** ति उद्दिट्ठस्स एकस्सेव धम्मस्स "अलोभो अलुब्भना अलुब्भितत्तं" ति[2] पुरिसादिलिङ्गवसेन निक्खेपो।

गणनचारं ति गणनप्पवत्तिं। **समानेन्ती** ति समानं करोन्ति पूरेन्ति, तथा **समानेतब्बं** ति एत्थापि। "विज्जाभागिनो अविज्जाभागिनो' ति एवमादीसु[3] एत्थ विञ्ञातेसु आभिधम्मिकत्थेरा सुत्तन्तं सुणन्ता चिन्तेन्ता च सुत्तन्तेसु "विज्जाभागिनो" ति आदीसु आगतेसु अत्थस्स विञ्ञातत्ता न किलमन्तीति एतमत्थं सन्धाय वुत्तं **"आभिधम्मिकत्थेरानं ....प०... अकिलमत्थं ठपिता"** ति।

[१४-सी०] [१८–म०] **अनमतग्गो** ति अञ्ञातग्गो। **खन्धन्तरं** ति खन्धनानत्तं, खन्धमेव वा। गहेतुं असक्कुणेय्यत्ता सण्हं, सुखुमाय पञ्ञाय गहेतब्बतो सुखुमञ्च धम्मं **सण्हसुखुमधम्मं**। बलवता ञाणवेगेन पवत्तत्ता बलवतो ञाणवेगस्स निमित्तभावतो च **बलवं**। गम्भीरमेव **गम्भीरगतं**, गम्भीरानि वा गतानि गमनानि एतस्स सन्तीति **गम्भीरगतं**। यथानुपुब्बं ति यथानुपुब्बेन। **निखिलेना** ति निरवसेसेन देसितं, पञ्चखिलरहितेन वा

अभावतो कुसलत्तिकपदुद्धारेन नयदस्सनभूतेन इतरत्तिकदुकपदानि पि उद्धटानेवा ति वुत्तं। एवञ्च कत्वा मातिकाग्गहणं समत्थितं भवति।

सो च धम्मो ति "तयो कुसलहेतू" ति आदीसु[2] पुरिमाय पुरिमाय पाळिया पच्छिमा पच्छिमा अत्थनिद्देसो ति वुत्तं।

"समानेन्ती" ति सद्दस्स पटपटायति-सद्दस्स विय सद्दनयो दट्ठब्बो ति दस्सेतुं **"समानं करोन्ती"** ति वुत्तं। समानकरणञ्च ऊनपक्खिपनेन अधिकापनयनेन वा होति, इध ऊनपक्खिपनेना ति दस्सेतुं **"पूरेन्ती"** ति वुत्तं। **समानेतब्बं ति एत्थापी** ति "पट्ठानं समानेतब्बं" ति एत्थ।

बलवता ञाणवेगेन अभिधम्मपच्चवेक्खणवसप्पवत्तेन। **बलवतो ञाणवेगस्स** सब्बकिले-

---

१. ध० सं० २२९ पि०।　२. ध० सं० २३९ पि०।　३. ध० सं० १३ पि०।

भगवता देसितं। **रूपगतं वा** ति हत्थगतं रूपं विय चक्खुना। "पटिवेधञाणेन समन्तपट्ठानं यो पस्सति, सो अत्थेव, नो नत्थी" ति अत्तानं सन्धाय थेरो वदती ति।

खुद्दकवत्थुविभङ्गे[1] आगतेसु एकाधिकेसु अट्ठसु किलेससतेसु अट्ठसततण्हाविचरितानि अपनेत्वा सेसा द्वासट्ठि दिट्ठियो च उप्पन्नानुप्पन्नभावेन दिगुणितानि दियड्ढकिलेससहस्सानि दसाधिकानि होन्ति, अप्पकं पन ऊनमधिकं वा न गणनूपगं होती ति **"दियड्ढकिलेससहस्सं"** ति वुत्तं। इतरेसं अतीतादिभावामसना अग्गहणं खेपने दट्ठब्बं।

मेचकपटा[2] ति नीलनिभा[3] पटा[4]। **चित्तसमुट्ठाना वण्णधातू** ति चित्तपच्चय-उतुसमुट्ठाना वण्णधातू ति अत्थो गहेतब्बो। कस्मा? न हि चित्तसमुट्ठानं रूपं बहि निग्गच्छतीति, चित्तसमुट्ठानरूपपरम्पराय आगतत्ता पन एवं वुत्तं। अथ वा **चित्तसमुट्ठाना वण्णधातू** ति एत्थ पच्चय-उतुसद्दानं लोपं कत्वा सो येव पुब्बे वुत्तो अत्थो सुवण्णता सुस्सरता विय। एत्थ[5] हि[5] "सुस्सरता" ति उपादिन्नकाधिकारे आगतं, न च सद्दो

सक्खेपनवसप्पवत्तस्स। गम्भीरमेव **गम्भीरगतं** दिट्ठिगतं ति आदीसु विय। **निरवसेसेना** ति न कञ्चि अवसेसेत्वा। **पञ्चखीलरहितेना** ति पञ्चचेतोखीलरहितेन।

[१९-म०] **एकाधिकेसु अट्ठसु किलेससतेसू** 'ति' "जातिमदो" ति आदिना एककवसेन आगता तेसत्तति, "कोधो च उपनाहो चा" ति आदिना दुकवसेन छत्तिंस, "तीणि अकुसलमूलानी" ति आदिना तिकवसेन पञ्चाधिकं सतं, "चत्तारो आसवा" ति आदिना चतुक्कवसेन छप्पञ्ञास, "पञ्चोरम्भागियानि संयोजनानी" ति आदिना पञ्चकवसेन पञ्चसत्तति, "छ विवादमूलानी" ति आदिना छक्कवसेन चतुरासीति, "सत्त अनुसया" ति आदिना सत्तकवसेन एकूनपञ्ञास, "अट्ठ किलेसवत्थूनी" ति आदिना अट्ठकवसेन चतुसट्ठि, "नव आघातवत्थूनी" ति आदिना नवकवसेन एकासीति, "दस किलेसवत्थूनी" ति आदिना दसकवसेन सत्तति, "अज्झत्तिकस्सुप्पादाय अट्ठारस तण्हाविचरितानी" ति आदिना अट्ठारसकवसेन अट्ठसतं ति एवं एकाधिकेसु अट्ठसु किलेससतेसु। सेसा तेनवुताधिकं छसतं किलेसा। ते ब्रह्मजालसुत्तागताहि द्वासट्ठिया दिट्ठीहि सह पञ्चपञ्ञासाधिकं सत्तसतं होन्ति।

अथ वा चुद्दसेकन्ता कुसला, पञ्चवीसति कुसलाब्याकतसाधारणा, चुद्दस कुसलत्तिकसाधारणा, उपचयादिद्वयं एकं कत्वा सत्तवीसति रूपानि चा ति इमे असीति धम्मा, इमेसु भावद्वये एकं ठपेत्वा अज्झत्तिका एकूनासीति, बाहिरा एकूनासीतो ति सब्बे पि अट्ठपञ्ञासाधिकं सतं होन्ति। इमेसु एकेकस्मिं दसन्नं किलेसानं उप्पज्जनतो असीति-अधिकं दियड्ढकिलेसहस्सं होन्ति।

---

१. विभ० ४०९–४१४ पि०। २. मेचकपटं–सी०। ३. नीलनिभं–सी०। ४. पटं–सी०। ५-५. नत्थि–सी०।

उपादिन्नको अत्थि, तस्मा उपादिन्नकरूप-ओट्ठतालु-आदिनिस्सयत्ता एवं वुत्तं ति, एवमेत्थापि चित्तपच्चय-उतुसमुट्ठानं सन्धाय "चित्तसमुट्ठाना वण्णधातू" ति वदति।

कायसक्खि ति पच्चक्खं। **दन्तावरणं** ति ओट्ठद्वयं। **मुखादानं** ति मुखविवरं। **सिलिट्ठं** ति संगतं सुसण्ठितं। **सरे निमित्तं गहेत्वा** ति "धम्मो एसो वुच्चती" ति धम्मस्सरवसेन निमित्तं गहेत्वा, न किलेसानुब्यञ्जनवसेन। **एकप्पहारेना** ति एत्थ **पहारो** ति दिवसस्स

अथ वा तेपञ्ञास अरूपधम्मा, अट्ठारस रूपरूपानि, आकासधातु, लक्खणरूपानि चा ति पञ्चसत्तति धम्मा अज्झत्तबहिद्धाभेदतो पञ्ञाससतं होन्ति। तत्थ एकेकस्मिं दस दस किलेसा ति पि दियड्ढकिलेससहस्सं। तथा एत्थ वेदनं सुखिन्द्रियादिवसेन पञ्चविधं कत्वा सत्तपञ्ञास अरूपधम्मा, अट्ठारस रूपरूपानि चा ति पञ्चसत्तति विपस्सनूपगधम्मा अज्झत्त-बहिद्धाभेदतो पञ्ञाससतं होन्ति। एतेसु एकेकस्मिं दस दस किलेसा ति पि दियड्ढकिलेस-सहस्सं।

अपरो नयो—द्वादस-अकुसलचित्तुप्पादेसु पठमे छ किलेसा. दुतिये सत्त, ततिये छ, चतुत्थे सत्त, पञ्चमे छ, छट्ठे सत्त, सत्तमे छ, अट्ठमे सत्त, नवमे पञ्च, दसमे छ, एकादसमे पञ्च, द्वादसमे चत्तारो ति सब्बे द्वासत्तति, इमे पञ्चद्वारिका पञ्चसु रूपादीसु [२०-म०] आरम्मणेसु एकेकस्मिं द्वासत्तती ति सट्ठि-अधिकानि तीणि सतानि, मनोद्वारिका पन छसु आरम्मणेसु एकेकस्मिं द्वासत्तति द्वासत्ततीति कत्वा द्वत्तिंसाधिकानि चत्तारि सतानि, सब्बानि पि द्वानवुति-अधिकानि सत्त-सतानि, तानि अज्झत्तबहिद्धाविसयताय चतुरासीति-अधिकं दियड्ढकिलेससहस्सं होन्ती ति वेदितब्बं।

अथ वा रूपारम्मणादीनि पञ्च, अवसेसरूपवेदनासञ्ञासङ्खारविञ्ञाणवसेन पञ्च धम्मारम्मणका सेसा चा ति दस, ते अज्झत्तबहिद्धाभेदतो वीसति, पञ्ञत्ति चा ति एकवीसतिया आरम्मणेसु द्वासत्तति द्वासत्तति किलेसा ति द्वादसाधिकं दियड्ढकिलेससहस्सं होन्ति।

अथ वा द्वादससु अकुसलचित्तुप्पादेसु पठमे वीसति धम्मा, दुतिये द्वावीसति, ततिये वीसति, चतुत्थे द्वावीसति, पञ्चमे एकूनवीसति, छट्ठे एकूनवीसति, सत्तमे एकूनवीसति, अट्ठमे एकवीसति, नवमे एकूनवीसति, दसमे एकवीसति, एकादसमे सोळस, द्वादसमे सोळसा ति सब्बे अकुसलधम्मा छत्तिंसाधिकानि द्वे सतानि, इमे छसु आरम्मणेसु पच्चेकं छत्तिंसाधिकानि द्वे सतानि, सब्बे सोळसाधि-कानि चत्तारि सतानि च सहस्सं होन्ती ति एवम्पि दियड्ढकिलेससहस्सं वेदितब्बं।

इतरेसं ति तण्हाविचरितानं "अतीतानि छत्तिंसा" ति आदिना अतीतादिभावामसनतो। **खेपने** ति अरियमग्गेन समुच्छिन्दने। "दियड्ढकिलेससहस्सं खेपेत्वा" ति हि वुत्तं। परमत्थतो अतीतादीनं मग्गेन अप्पहातब्बत्ता "अतीतादिभावामसना अग्गहणं खेपने" ति वुत्तं। यं पन पट्ठाने

ततियो भागो वुच्चति। **एवं सन्ते** ति पुब्बे वुत्तमग्गहेत्वा वाचनामग्गस्स थेरप्पभवत्तवचनमेव गहेत्वा तेन पुरिमवचनञ्च पटिक्खिपन्तो चोदेति।

[१९-म०] **तेनेतमेतस्सा** ति विनयस्स। **अत्तत्थपरत्थादिभेदे** ति यो तं सुत्तं सज्झायति सुणाति वाचेति चिन्तेति देसेति, सुत्तेन सङ्गहितो सीलादि-अत्थो तस्स पि होति, तेन परस्स साधेतब्बतो परस्स पि[1] होतीति तदुभयं तं सुत्तं **सूचेति** दीपेति। तथा दिट्ठधम्मिकसम्परायिकत्थे लोकियलोकुत्तरत्थे ति एवमादिभेदे अत्थे **आदि-सद्देन** सङ्गण्हाति। **अत्थ-सद्दो चायं** हितपरियाय-**वचनं**, न भासितत्थवचनं। यदि सिया, सुत्तं अत्तनो पि भासितत्थं सूचेति परसुत्तस्सपी ति[2] अयमत्थो सिया, सुत्तेन च यो अत्थो पकासितो, सो तस्सेव होतीति न तेन परत्थो सूचितो होति, तेन च सूचेतब्बस्स परत्थस्स निवत्तेतब्बस्स अभावा अत्तग्गहणं न [१५-सी०] कत्तब्बं, अत्तत्थपरत्थविनिमुत्तस्स भसितत्थस्स अभावा आदिग्गहणञ्च न कत्तब्बं, तस्मा यथावुत्तस्स अत्थस्स सुत्ते असम्भवतो सुत्ताधारस्स पुग्गलस्स वसेन अत्तत्थपरत्था वुत्ता।

अथवा सुत्तं अनपेक्खित्वा ये अत्तत्थादयो पि अत्थप्पभेदा वुत्ता **निद्देसे**[3] "अत्तत्थो परत्थो उभयत्थो दिट्ठधम्मिको अत्थो सम्परायिको अत्थो उत्तानो अत्थो गम्भीरो अत्थो गुळ्हो अत्थो पटिच्छन्नो अत्थो नेय्यो अत्थो नीता अत्थो अनवज्जो अत्थो निक्किलेस अत्थो वोदानो अत्थो परमत्थो अत्थो" ति, ते सुत्तं सूचेतीति अत्थो। **अथ वा** "अत्तना च अप्पिच्छो होती" ति अत्तत्थं, "अप्पिच्छकथञ्च परेसं कत्ता होती" ति परत्थं सूचेतीति।

"दस्सनेन पहातब्बो धम्मो दस्सनेन पहातब्बस्स धम्मस्स अनन्तरपच्चयेन पच्चयो" ति आदिना[4] (तिके, तथा दस्सनेन पहातब्बातीततिकतिके "अतीता दस्सनेन पहातब्बा" ति आदिना च) [२१-म०] तीसु कालेसु दस्सनादिपहातब्बवचनं कतं, तं अतीतादीनं संकिलिट्ठताय अपायगमनीयताय च दस्सनपहातब्बेहि निरतिसयत्ता वुत्तं ति दट्ठब्बं।

न भासितत्थवचनं ति इदं "हितपरियायवचनं" ति एतेन निवत्तितस्स एकदेसकथनं। यथा हि अयं अत्थ-सद्दो न भासितत्थवचनं, एवं विसयप्पयोजनादिवचनम्पि न होती ति। **यथावुत्तस्सा** ति हितपरियायस्स।

"न हञ्ञदत्थ 'त्थिपसंसलाभा" ति पदस्स निद्देसे "अत्तत्थो वा परत्थो वा" ति आदिना[3] किञ्चापि सुत्तनिरपेक्खं अत्तत्थादयो वुत्ता सुत्तत्थभावेन अनिद्दिट्ठत्ता, तेसु पन एको पि अत्थप्पभेदो सुत्तेन दीपेतब्बतं नातिक्कमती ति आह "**ते सुत्तं सूचेती**" ति। इमस्मिं विकप्पे अत्थ-सद्दो भासितत्थवचनम्पि होति। पुरिमका हि पञ्च अत्थप्पभेदा हितपरियाया, ततो परे छ भासितत्थप्पभेदा,

---

१. परस्सा पि—सी०। २. परसुत्तस्सापीति—सी०।
३. महा० नि० १५० पि०; चुल्ल० नि० १८५ पि०। ४. पट्ठान २ : १७५ पि०।

एवं "अत्तना च पाणातिपाता पटिविरतो होती" ति[१] आदिसुत्तानि योजेतब्बानि। विनयाभिधम्मेहि च विसेसेत्वा सुत्तसद्दस्स अत्थो वत्तब्बो, तस्मा वेनेय्यज्झासयवसप्पवत्ताय देसनाय अत्तहितपरहितादीनि सातिसयं पकासितानि होन्ति, न आणाधम्मसभाववसप्पवत्ताया ति इदमेव **"अत्थानं सूचनतो सुत्तं"** ति वुत्तं।

सुत्ते च आणाधम्मसभावा वेनेय्यज्झासयं अनुवत्तन्ति, न विनयाभिधम्मेसु विय वेनेय्यज्झासयो आणाधम्मसभावे अनुवत्तति, तस्मा वेनेय्यानं एकन्तहितपटिलाभसंवत्तनिका सुत्तन्तदेसना होतीति **"सुवुत्ता चेत्थ अत्था"** ति आदि वुत्तं।

पसवती ति [२०-म०] फलति। **"सुत्ताणा"** ति एतस्स अत्थं पकासेतुं **"सुट्ठु च ने तायती"** ति वुत्तं। अत्तत्थपरत्थादिविधानेसु च सुत्तस्स पमाणभावो तेसञ्च सङ्गाहकत्तं[२] योजेतब्बं, तदत्थप्पकासने पधानत्ता सुत्तस्स इतरेहि विसेसनञ्च। **एतं** ति "अत्थानं सूचनतो" ति आदिकं अत्थवचनं। **एतस्सा** ति सुत्तस्स।

अभिक्कमन्ती ति एत्थ **अभि**-सद्दो कमनस्स वुद्धिभावं अतिरेकत्तं[३] दीपेति। **अभिक्कन्तेना** ति च एत्थ कन्तिया अधिकत्तं[४] विसेसभावं ति युत्तं किरियाविसेसकत्ता[५] उपसग्गस्स। **अभिञ्ञाता, अभिराजा, अभिविनये** ति एत्थ लक्खणपूजितपरिच्छिन्नेसु[६] रत्ति-आदीसु अभि-सद्दो वत्ततीति कथमेतं युज्जेय्या ति? लक्खणकरणञाणपूजनपरिच्छेदकिरिया-

---

पच्छिमका पन उभयसभावा। तत्थ दुरधिगमताय विभावने अलद्धगाधो गम्भीरो, न विवटो गुळ्हो मुलुदकादयो विय पंसुना अक्खरसन्निवेसादिना तिरोहितो पटिच्छन्नो, निद्धारेत्वा ञापेतब्बो नेय्यो, यथारुतवसेनेव वेदितब्बो। नीतो अनवज्जनिक्किलेसवोदाना परियायवसेन वुत्ता, कुसलविपाककिरियधम्मवसेन वा। परमत्थो निब्बानं, अविपरीतसभावो एव वा। सातिसयं पकासितानि तप्परभावेन पकासितत्ता। "एत्तकं तस्स भगवतो सुत्तागतं सुत्तपरियापन्नं" ति,[७] "सकवादे पञ्चसुत्तसतानी" ति[८] च एवमादीसु सुत्त-सद्दो उपचरितो ति अधिप्पायेनाह "इदमेव अत्थानं सूचनतो सुत्तं ति वुत्तं" ति।

एकन्तहितपटिलाभसंवत्तनिका सुत्तन्तदेसना ति इदम्पि विनेय्यानं हितसम्पापने सुत्तन्तदेसनाय तप्परभावं येव सन्धाय वुत्तं। तप्परभावो च विनेय्यज्झासयानुलोमतो दट्ठब्बो, तथा अत्तत्थादिप्पकासनपधानता पि। इतरेही ति विनयाभिधम्मेहि।

रत्ति-आदीसू ति रत्तिराजविनयेसु विसयभूतेसु। ननु च "अभिरत्ती" ति अवुत्तत्ता रत्तिग्गहणं न कत्तब्बं, "अभिञ्ञाता अभिलक्खिता" ति च ञाणलक्खणकिरियाविसेसको अभि-सद्दो ति? न, "अभिञ्ञाता अभिलक्खिता" ति अभि-सद्दविसिट्ठानं ञातलक्खितसद्दानं [२२-म०]

---

१. अं० २ : १०३ पि०। २. संगाहणत्थं-सी०। ३. अतिरेकत्थं-सी०। ४. अधिकत्थं-सी०। ५. क्रिया०-सी० सब्बत्थ। ६. सलक्खण०-सी०। ७. पाचि० ४९० पि०। ८. अट्ठ० १८ पि०।

दीपनतो ताहि च किरियाहि रत्तिराजविनयानं युत्तत्ता। भावनाफरणवुद्धीहि **बुद्धिमन्तो**। **आरम्मणादीही** ति आरम्मणसम्पयुत्तकम्मद्वारपटिपदादीहि। **अविसिट्ठं** ति अञ्ञमञ्ञविसिट्ठेसु विनयसुत्तन्ताभिधम्मेसु अविसिट्ठं समानं पिटकसद्दं ति अत्थो। **यथावुत्तेनेवा** ति[1] "एवं दुविधत्थेना" ति आदिना नयेन।

कथेतब्बानं अत्थानं देसकायत्तेन आणादिविधिना अतिसज्जनं पबोधनं **देसना**। सासितब्बपुग्गलगतेन यथापराधादिना सासितब्बभावेन अनुसासनं विनयनं **सासनं**। कथेतब्बस्स संवरासंवरादिनो[2] अत्थस्स कथनं वचनपटिबद्धकरणं **कथा**। **भेद**-सद्दो विसुं विसुं योजेतब्बो "देसनाभेदं सासनभेदं कथाभेदञ्च यथारहं परिदीपये" ति। **भेदं** ति नानत्तं, नानाकरणं ति अत्थो। सिक्खा च पहानानि[3] च गम्भीरभावो च [१६–सी०] **सिक्खापहानगम्भीरभावं**, तञ्च **परिदीपये**। यं ति परियत्ति-आदिं। **यथा** ति उपारम्भादिहेतुपरियापुणनादिप्पकारेहि।

तीसु पि चेतेसु एते धम्मत्थदेसनापटिवेधा ति एत्थ तन्ति-अत्थो तन्तिदेसना तन्ति-अत्थपटिवेधो च तन्तिविसया होन्ती ति विनयपिटकादीनं अत्थदेसनापटिवेधाधारभावो युत्तो, पिटकानि पन तन्तियो येवा ति धम्माधारभावो कथं युज्जेय्या ति?

रत्तिसद्देन समानाधिकरणताय रत्तिविसयत्ता। एत्थ च वाचकसद्दसन्निधाने निपातानं तदत्थजोतकमत्तत्ता लक्खितसद्दत्थजोतको अभि-सद्दो लक्खणे वत्ततीति वुत्तो। अभिलक्खितसद्दपरियायो च अभिञ्ञातसद्दो ति दट्ठब्बो, अभिविनयसद्दस्स पन अभिपुरिसस्स विय समाससिद्धि दट्ठब्बा। अनेकत्था हि निपाता, अनेकत्थभेदो च सद्दानं पयोगविसयो ति।

किञ्चा पि देसनादयो देसेतब्बादिनिरपेक्खा न सन्ति, आणादयो पन विसेसतो देसकादि-अधीना ति तंतंविसेसयोगवसेन तेसं भेदो वुत्तो। यथा हि आणाविधानं विसेसतो आणारहाधीनं तत्थ कोसल्लयोगतो, एवं वोहारपरमत्थविधानानि च विधायकाधीनानी ति **आणादिविधिनो** देसकायत्तता वुत्ता। अपराधज्झासयानुरूपं विय धम्मानुरूपम्पि सासनं विसेसतो तथाविनेतब्बपुग्गलापेक्खं ति वुत्तं "सासितब्ब"" प०""तब्बभावेना" ति। संवरासंवरनामरूपानं विय विनिवेठेतब्बाय दिट्ठिया पि कथनं सति वाचावत्थुस्मिं, नासती ति विसेसतो तदधीनं ति आह "कथेतब्बस्स""प०""कथा" ति। **उपारम्भादी** ति उपारम्भनिस्सरणधम्मकोसरक्खणानि। **परियापुणनादी** ति परियापुणनसुप्पटिपत्तिदुप्पटिपत्तियो।

तन्तिसमुदायो अवयवतन्तिया आधारो यथा "रुक्खे साखा" ति। न चोदेतब्बमेतं समुखेन, विसयविसयिमुखेन वा विनयादीनं येव गम्भीरभावस्स वुत्तत्ता ति अधिप्पायो। धम्मो हि

---

१. यथा वुत्तेना ति–सी०। २. संवारादिनो–सी०। ३. पहाणानि–सी० सब्बत्थ।

तन्तिसमुदायस्स अवयवतन्तिया आधारभावतो, धम्मादीनञ्च दुक्खोग्गाहभावतो[1] तहिं विनयादयो गम्भीरा ति विनयादीनञ्च चतुब्बिधो गम्भीरभावो वुत्तो, तस्मा "धम्मादयो एव दुक्खोगाहत्ता गम्भीरा, [२१-म०] न विनयादयो" ति न चोदेतब्बमेतं। तत्थ पटिवेधस्स दुक्करभावतो धम्मत्थानं, देसनाञाणस्स दुक्करभावतो देसनाय च दुक्खोगाहभावो वेदितब्बो। पटिवेधस्स पन उप्पादेतुं असक्कुणेय्यत्ता तब्बिसयञाणुप्पत्तिया च दुक्करभावतो दुक्खोगाहता वेदितब्बा।

हेतुम्हि ञाणं धम्मपटिसम्भिदा ति एतेन वचनत्थेन धम्मस्स हेतुभावो कथं ञातब्बो ति? "धम्मपटिसम्भिदा" ति एतस्स समासपदस्स अवयवपदत्थं दस्सेन्तेन "हेतुम्हि ञाणं"ति वुत्तत्ता। "धम्मे पटिसम्भिदा" ति एत्थ हि "धम्मे" ति एतस्स अत्थं दस्सेन्तेन 'हेतुम्ही" ति वुत्तं, "पटिसम्भिदा" ति एतस्स च अत्थं दस्सेन्तेन "ञाणं" ति, तस्मा हेतुधम्मसद्दा एकत्था ञाणपटिसम्भिदासद्दा चा ति इममत्थं दस्सेन्तेन साधितो धम्मस्स हेतुभावो। अत्थस्स हेतुफलभावो च एवमेव दट्ठब्बो। **यथाधम्मं** ति एत्थ **धम्म**-सद्दो हेतुं हेतुफलञ्च सब्बं गण्हाति[2] सभाववाचको हेस, न परियत्तिहेतुभाववाचको, तस्मा **यथाधम्मं** ति यो यो अविज्जासङ्खारादिधम्मो, तस्मिं तस्मिं ति अत्थो। **धम्माभिलापो** ति अत्थब्यञ्जनको अविपरीताभिलापो। एतेन "तत्र धम्मनिरुत्ताभिलापे ञाणं निरुत्तिपटिसम्भिदा" ति[3] एत्थ वुत्तधम्मनिरुत्तिं दस्सेति। **अनुलोमादिवसेन वा**

विनयादयो, तेसञ्च विसयो अत्थो, धम्मत्थविसया च देसना पटिवेधा ति। "पटिवेधस्सा" ति आदिना धम्मत्थानं दुप्पटिविद्धत्ता देसनाय उप्पादेतुं असक्कुणेय्यत्ता पटिवेधस्स उप्पादेतुञ्च पटिविज्झितुञ्च असक्कुणेय्यत्ता दुक्खोगाहतं दस्सेति।

धम्मानुरूपं यथाधम्मं ति च अत्थो युज्जति। देसना पि हि पटिवेधो विय अविपरीतं सविसयविभावनतो धम्मानुरूपं पवत्तति यतो "अविपरीताभिलापो" ति वुच्चति। धम्मनिरुत्तिं दस्सेती ति एतेन देसना सद्दसभावा ति दीपेति। तथा हि निरुत्तिपटिसम्भिदाय परित्तारम्मणादिभावो पाळियं वुत्तो, अट्ठकथायञ्च "तंतंसभावनिरुत्तिसद्दं आरम्मणं कत्वा" ति आदिना सद्दारम्मणता। इमस्स अत्थस्स अयं सद्दो वाचको ति [२३-म०] वचनवचनीयं ववत्थपेत्वा तंतंवचनीयविभावनवसेन पवत्तितो हिसद्दो देसना ति। ननु च "धम्मो तन्ती" ति इमस्मिं पक्खे धम्मस्स पि सद्दसभावत्ता धम्मदेसनानं विसेसो न सिया ति? न, तेसं तेसं अत्थानं बोधकभावेन ञातो उग्गहितादिवसेन च पुब्बे पवत्तितो सद्दप्पबन्धो धम्मो, पच्छा परेसं अवबोधनत्थं पवत्तितो तदत्थप्पकासनको सद्दो देसना ति। अथ वा यथावुत्तसद्दसमुट्ठापको चित्तुप्पादो देसना मुसावादादयो विय। **वचनस्स पवत्तनं** ति च यथावुत्तचित्तुप्पादमाह। सो हि वचनं पवत्तेति, तं वा एतेन पवत्तीयती ति **पवत्तनं**।

---

१. दुक्खोगाहभावतो-सी०। २. सङ्गण्हाति-सी०। ३. विभ० ३५० पि०।

कथनं ति एतेन तस्सा धम्मनिरुत्तिया अभिलापं कथनं तस्स वचनस्स पवत्तनं दस्सेति। **अधिप्पायो** ति एतेन "देसना ति पञ्ञत्ती" ति एतं वचनं धम्मनिरुत्ताभिलापं सन्धाय वुत्तं न तब्बिनिमुत्तं पञ्ञत्तिं सन्धाया ति दस्सेति।

सो च लोकियलोकुत्तरो ति एवं वुत्तं अभिसमयं येन पकारेन अभिसमेति, यञ्च अभिसमेति, यो च तस्स सभावो, तेहि पाकटं कातुं "**विसयतो असम्मोहतो च अत्थादि-अनुरूपं धम्मादीसु अवबोधो**" ति आह। तत्थ हि **विसयतो** अत्थादि-अनुरूपं धम्मादीसु अवबोधो अविज्जादिधम्मसङ्खारादि-अत्थतदुभयपञ्ञापनारम्मणो लोकियो अभिसमयो। **असम्मोहतो** अत्थादि-अनुरूपं धम्मादीसु अवबोधो निब्बानारम्मणो मग्गसम्पयुत्तो यथा-वुत्तधम्मत्थपञ्ञत्तीसु सम्मोहविद्धंसनो लोकुत्तरो अभिसमयो ति। अभिसमयतो अञ्ञम्पि पटिवेधत्थं दस्सेतुं "**तेसं** [१७–सी०] **तेसं वा**" ति आदिमाह। [२२–म०] "पटिवेधनं पटिवेधो" ति इमिना हि वचनत्थेन अभिसमयो, पटिविज्झीयतीति पटिवेधो ति इमिना तं-तं-रूपादिधम्मानं अविपरीतसभावो च पटिवेधो ति युज्जति।

यथावुत्तेहि धम्मादीहि पिटकानं गम्भीरभावं दस्सेतुं "**इदानि यस्मा एतेसु पिटकेसू**" ति आदिमाह। **यो चेत्था** ति एतेसु तं-तं-पिटकगतेसु धम्मादीसु यो पटिवेधो एतेसु च पिटकेसु तेसं तेसं धम्मानं यो अविपरीतसभावो ति योजेतब्बो। दुक्खोगाहता च वुत्त-नयेनेव वेदितब्बा। अयं पनेत्थ विसेसो "अविपरीतसभावसङ्खातो पटिवेधो दुब्बिञ्ञेय्यताय एव दुक्खोगाहो" ति।

यं ति परियत्तिदुग्गहणं सन्धाय वुत्तं। **अत्थं** ति भासितत्थं पयोजनत्थञ्च। **न उप-परिक्खन्ती** ति न विचारेन्ति। **न निज्झानं खमन्ती** ति निज्झानपञ्ञं न खमन्ति, निज्झा-यित्वा पञ्ञाय दिस्वा रोचेत्वा न गहेतब्बा होन्तीति अधिप्पायो। **इती** ति एवं एताय परियत्तिया **वादप्पमोक्खानिसंसा** अत्तनो उपरिपरेहि आरोपितवादस्स निग्गहस्स पमो-

---

देसीयति अत्थो एतेना ति देसना। पकारेहि ञापीयति एतेन, पकारतो ञापेती ति वा पञ्ञत्ती ति वुच्चती ति। तेनेवाह "अधिप्पायो" ति आदि।

अभिसमेति, अभिसमीयति वा एतेना ति अभिसमयो ति एवम्पि अभिसमयत्थो सम्भवति। अभिसमेतब्बतो पन अभिसमयो ति दुतियविकप्पे पटिवेधो येवा ति।

वुत्तनयेन वेदितब्बा ति अविज्जासङ्खारादीनं धम्मत्थानं दुप्पटिविज्झताय दुक्खोगाहता, तेसं पञ्ञापनस्स दुक्करभावतो तंदेसनाय पटिवेधनसङ्खातस्स पटिवेधस्स उप्पादनविसयिकरणानं असक्कुणेय्यताय दुक्खोगाहता वेदितब्बा।

कारणे फलवोहारेन ते धम्मा दुक्खाय संवत्तन्ती ति वुत्तं ति आह "उपारम्भ"...प०...

क्खप्पयोजना हुत्वा धम्मं परियापुणन्ति। **वादप्पमोक्खो** ति वा निन्दापमोक्खो। **यस्स चत्थाया** ति यस्स च सीलादिपरिपूरणस्स अनुपादाविमोक्खस्स वा अत्थाय। **धम्मं परियापुणन्ती** ति ञायेन परियापुणन्तीति अधिप्पायो। **अस्सा** ति अस्स धम्मस्स। **नानुभोन्ती** ति[1] न विन्दन्ति। तेसं ते धम्मा दुग्गहितत्ता उपारम्भमानदप्पमक्खपलासादिहेतुभावेन दीघरत्तं अहिताय दुक्खाय संवत्तन्ति। भण्डागारे नियुत्तो भण्डागारिको, भण्डागारिको विया ति भण्डागारिको, धम्मरतनानुपालको। अञ्ञं अत्थं अनपेक्खित्वा भण्डागारिकस्सेव सतो परियत्ति **भण्डागारिकपरियत्ति**।

तासं येवा ति अवधारणं पापुणितब्बानं छळभिञ्ञाचतुपटिसम्भिदानं विनये पभेदवचनाभावं सन्धाय वुत्तं। वेरञ्जकण्डे हि तिस्सो विज्जा व विभत्ता ति। दुतिये **तासं येवा** ति अवधारणं चतस्सो पटिसम्भिदा अपेक्खित्वा कतं, न तिस्सो विज्जा। ता हि छसु अभिञ्ञासु अन्तोगधा ति सुत्ते विभत्ता येवा ति। ञत्वा सङ्गय्हमानं ति योजना। **तेसं** ति तेसं पिटकानं। **सब्बम्पी** ति सब्बं पि बुद्धवचनं।

अत्थानुलोमनामतो **अनुलोमिको**। अनुलोमिकत्तं येव विभावेतुं **"कस्मा पना"** ति आदि वुत्तं। **एकनिकायम्पी** ति एकसमूहम्पि। [२३-म०] पोणिका च चिक्खल्लिका च खत्तिया, तेसं निवासो **पोणिकनिकायो चिक्खल्लिकनिकायो** च। एवं धम्मक्खन्धतो चतुरासीति धम्मक्खन्धसहस्सानीति बुद्धवचनपिटकादीनि निट्ठापेत्वा अनेकच्छरियपातुभावपटिमण्डिताय सङ्गीतिया पठमबुद्धवचनादिको सब्बो वुत्तप्पभेदो अञ्ञो पि उद्दानसङ्गहादिभेदो[2] सङ्गीतिया ञायतीति एतस्स दस्सनत्थं **'एवमेतं सब्बम्पी"** ति आदि आरद्धं। **अयं अभिधम्मो पिटकतो अभिधम्मपिटकं** ति आदिना पिटकादिभावदस्सनेनेव मज्झिमबुद्धवचनभावो तथागतस्स च आदितो आभिधम्मिकभावो दस्सितो ति वेदितब्बो।

हेतुभावेना" ति। **अञ्ञं अत्थं ति** उपारम्भं निस्सरणञ्च।

निट्ठापेत्वा ति कथनवसेन परियोसापेत्वा। तस्स "आरद्धं" ति एतेन सम्बन्धो। **उद्दानसङ्गहादिभेदो सङ्गीतो** पाठो युत्तो, "सङ्गीतिया" ति पन लिखन्ति। पुरिमं वा **सङ्गीतिया** ति भावेन भावलक्खणे भुम्मं, पच्छिमं अधिकरणे। **पिटकादी** ति पिटकनिकायङ्गधम्मक्खन्धानि।

तत्थ अङ्गेसु सुत्तङ्गमेव न सम्भवति "सगाथकं सुत्तं गेय्यं, निग्गाथकं सुत्तं वेय्याकरणं" ति[3] वुत्तत्ता, मङ्गलसुत्तादीनञ्च सुत्तङ्गसङ्गहो न सिया गाथाभावतो धम्मपदादीनं विय, गेय्यङ्गसङ्गहो वा सिया सगाथकत्ता सगाथावग्गस्स विय, तथा उभतोविभङ्गादीसु सगाथकपदेसानं ति वुच्चते—

---

१. नानुभवन्तीति -सी' २. उदान० -सी०। ३. अट्ठ० ५२ पि०।

एत्थ सिया "यदि तथागतभासितभावो अभिधम्मस्स सिद्धो सिया, मज्झिमबुद्धवचनभावो च सिद्धो भवेय्य, सो एव च न सिद्धो" ति तस्स विनयादीहि बुद्धभासितभावं साधेतुं वत्थुं दस्सेन्तो **"तं धारयन्तेसु भिक्खूसू"** ति आदिमाह ।

[१८–सी०] **सब्बसामयिकपरिसाया** ति सब्बनिकायिकपरिसाय पञ्च पि निकाये परियापुणन्तिया । **न उग्गहितं** ति सकलस्स विनयपिटकस्स अनुग्गहितत्ता आह । **विनयमत्तं उग्गहितं** ति विभङ्गद्वयस्स उग्गहितत्ता आह । विनयं अविवण्णेतुकामताय "अभिधम्मं परियापुणस्सू" ति भणन्तस्स अनापत्ति, अभिधम्मे अनोकासकतं भिक्खुं पञ्हं पुच्छन्तिया पाचित्ति-

[२४-म०] सुत्तं ति सामञ्ञविधि विसेसविधयो परे ।
सनिमित्ता निरुळ्हत्ता सहताञ्ञेन नाञ्ञतो[१] ॥

सब्बस्स पि हि बुद्धवचनस्स सुत्तं ति अयं सामञ्ञविधि । तेनेवाह आयस्मा महाकच्चायनो नेत्तियं "नविधसुत्तन्तपरियेट्ठी" ति[२] । "एत्तकं तस्स भगवतो सुत्तागतं सुत्तपरियापन्नं[३] सकवादे पञ्चसुतसतानी" ति[४] एवमादि च एतस्स अत्थस्स साधकं, तदेकदेसेसु पन गेय्यादयो विसेसविधयो तेन तेन निमित्तेन पतिट्ठितत्ता । तथा हि गेय्यस्स सगाथकत्तं तब्भावनिमित्तं । लोके पि हि ससिलोकं सगाथकं वा चुण्णियगन्थं "गेय्यं" ति वदन्ति । गाथाविरहे पन सति पुच्छं कत्वा विस्सज्जनभावो वेय्याकरणस्स । पुच्छाविस्सज्जनं हि ब्याकरणं ति वुच्चति । ब्याकरणमेव वेय्याकरणं ति ।

एवं सन्ते सगाथकानम्पि पञ्हविस्सज्जनवसेन पवत्तानं वेय्याकरणभावो आपज्जतीति ? नापज्जति, वेय्याकरणादिसञ्ञानं अनोकासभावतो 'गाथाविरहे पन सती" ति विसेसितत्ता च । तथा हि धम्मपदादीसु केवलं गाथाबन्धेसु सगाथकत्ते पि सोमनस्सञाणमयिकगाथापटिसंयुत्तेसु "वुत्तं हेतं" ति आदिवचनसम्बन्धेसु अब्भुतधम्मपटिसंयुत्तेसु च सुत्तविसेसेसु यथाक्कमं गाथा-उदान-इतिवुत्तक-अब्भुतधम्मसञ्ञा पतिट्ठिता, तथा सति पि गाथाबन्धभावे भगवतो अतीतासु जातीसु चरियानुभावप्पकासकेसु जातकसञ्ञा । सति पि पञ्हविस्सज्जनभावे सगाथकत्ते च केसुचि सुत्तन्तेसु वेदस्स लभापनतो वेदल्लसञ्ञा पतिट्ठिता ति एवं तेन तेन सगाथकत्तादिना निमित्तेन तेसु तेसु सुत्तविसेसेसु गेय्यादिसञ्ञा पतिट्ठिता ति विसेसविधयो सुत्तङ्गतो परे गेय्यङ्गादयो । यं पनेत्थ गेय्यङ्गादिनिमित्तरहितं, तं सुत्तङ्गं विसेससञ्ञापरिहारेन सामञ्ञसञ्ञाय पवत्तनतो ति ।

ननु च सगाथकं सुत्तं गेय्यं, निगाथकं सुत्तं वेय्याकरणं ति सुत्तङ्गं न सम्भवती ति चोदना तदवत्था ति ? न, सोधितत्ता । सोधितं हि पुब्बे गाथाविरहे सति पुच्छाविस्सज्जनभावो वेय्याकरणभावस्स निमित्तं ति । यञ्च वुत्तं "गाथाभावतो मङ्गलसुत्तादीनं सुत्तङ्गसङ्गहो न सिया" ति, [२५-म०] तं न निरुळ्हत्ता । निरुळ्हो हि मङ्गलसुत्तादीसु सुत्तभावो । न हि तानि धम्मपदबुद्धवंसादयो विय गाथाभावेन पञ्ञातानि, किन्तु सुत्तभावेनेव । तेनेव हि अट्ठकथायं

१. नेत्ति० अट्ठ० १३ पि० । २. नेत्ति० १ पि० । ३. पाचि० ४९० पि० । ४. अट्ठ० १८ पि० ।

यञ्च वदन्तेन भगवता अभिधम्मस्स बुद्धभासितभावो दीपितो बुद्धभासितेहि सुत्तादीहि सह वचनतो, बाहिरकभासितेसु च ईदिसस्स वचनस्स अभावा।

इतो पि बलवतरं आभिधम्मिकस्स साधुकारदानेन विचिकिच्छाविच्छेदस्स कतत्ता। कम्मतो अञ्ञं कम्मं **कम्मन्तरं**, तं कामावचरादिं रूपावचरादिभावेन, कण्हविपाकादिं सुक्कविपाकादिभावेन कथेन्तो आलोळेति[१]।

जिनचक्के ति जिनसासने। **विसंवादेती** ति विप्पलम्भेति। **भेदकरवत्थूसु एकस्मि** ति "भासितं लपितं तथागतेन अभासितं अलपितं तथागतेना ति दीपेती" ति एकस्मिं सन्दिस्सति। **उत्तरि पि[२] एवं वत्तब्बो**" **प**[३] " **न**[४] **अञ्ञेसं विसयो**[५] "..**प** " **निदानकिच्चं नाम नत्थी** ति अपाकटानं कालदेसदेसकपरिसानं पाकटभावकरणत्थं तदुपदेससहितेन **निदानेन** भवितब्बं, अञ्ञेसं अविसयत्ता देसको पाकटो, ओक्कन्तिकालादीनं पाकटत्ता कालो च, देवलोके देसितभावस्स पाकटत्ता देसपरिसा च पाकटा ति किं निदानकिच्चं सिया ति।

[२४-म०] यत्थ खन्धादयो निप्पदेसेन विभत्ता, सो अभिधम्मो नाम, तस्मा तस्स निदानेन खन्धादीनं निप्पदेसतो पि पटिविद्धट्ठानेन भवितब्बं ति अधिप्पायेन थेरो **"महाबोधिनिदानो अभिधम्मो"** ति दस्सेति। "सो एवं पजानामि सम्मादिट्ठिपच्चया पि वेदयितं" ति[६] आदिना नयेन पच्चयादीहि वेदनं उपपरिक्खन्तो खन्धादिपदेसानं वेदनाक्खन्धादीनं वसेन विहासि। **धम्मे** ति कुसलादि-अरणन्ते।

सुत्तनामकं ति नामग्गहणं कतं। य पन वुत्तं "सगाथकत्ता गेय्यङ्गसङ्गहो वा सिया" ति, तदपि नत्थि। यस्मा **सहताञ्ञेन**। सह गाथाहीति सगाथकं, सहभावो च नाम अत्ततो अञ्ञेन होति, न च मङ्गलसुत्तादीसु गाथाविनिमुत्तो कोचि सुत्तप्पदेसो अत्थि, यो "सह गाथाहि" ति वुच्चेय्य, न च समुदायो नाम कोचि अत्थि। यदपि वुत्तं "उभतो विभङ्गादीसु सगाथकप्पदेसानं गेय्यङ्गसङ्गहो सिया" ति, तदपि न, **अञ्ञतो**। अञ्ञा एव हि ता गाथा जातकादिपरियापन्नत्ता। अतो न ताहि उभतो विभङ्गादीनं गेय्यङ्गभावो ति एवं सुत्तादीनं अङ्गानं अञ्ञमञ्ञसङ्कराभावो वेदितब्बो।

जिनसासनं अभिधम्मो।

पटिविद्धट्ठानं पटिवेधभूमि पटिवेधावत्था, पटिवेधहेतु वा। "सो एवं पजानामि सम्मादिट्ठिपच्चया पि वेदयितं" ति[६] वुत्तं। पाळियं पन "सो एवं पजानामि मिच्छादिट्ठिपच्चया पि वेदयितं। सम्मादिट्ठिपच्चया पि वेदयितं" ति[६] आगतं। **पच्चयादीही** ति पच्चयसभाववूपसमतदुपायादीहि।

---

१. आळोळेति –सी०। २. उत्तरिं पि –सी०। ३. नत्थि –सी०।
४. नत्थि –सी०। ५. अविनयो –सी०। ६. सं० ५ : १२ पि०।

धम्मं परिवत्तेन्तो ति साट्ठकथं पाळि[1] परिवत्तेन्तो एतं परवादीचोदनं पत्वा "अयं परवादी" ति आदिमाह। अम्हादिसेसु निदानं जानन्तेसु पटिसरणेसु विज्जमानेसु अप्पटिसरणो अरञ्ञे कन्दन्तो विय निदानसब्भावे सक्खिभूतेसु पि अह्मेसु विज्जमानेसु असक्खिकं[2] अड्डं[3] करोन्तो विय होति, निदानस्स अत्थिभावम्पि न जानाति, ननु एतं निदानं ति कथेन्तो एवमाह। **एकमेवा** ति देसनानिदानमेव अज्झासयानुरूपेन देसितत्ता। **द्वे निदानानी** ति अधिगन्तब्बदेसेतब्बधम्मानुरूपेन देसितत्ता। अभिधम्माधिगमस्स मूलं अधिगमं निदेतीति **अधिगमनिदानं। बोधि-अभिनीहारसद्धाया** ति याय सद्धाय दीपङ्कर-दसबलस्स सन्तिके बोधिया चित्तं अभिनीहरि पणिधानं अकासि।

सुमेधकथावण्णना

चतुरो च असङ्ख्येय्ये[4] ति उद्धं आरोहनवसेन अतिक्कमित्वा अमरं नाम नगरं अहोसीति वचनसेसयोजना कातब्बा। **दसही** ति हत्थि-अस्सरथभेरीसङ्खमुदिङ्गवीणागीतसम्मताळेहि "असनाथ पिवथ खादथा" ति दसमेन सद्देन। ते पन एकदेसेन दस्सेतुं **"हत्थिसद्दं"** ति आदि वुत्तं। **"हत्थिसद्दं"** ति करणत्थे उपयोगो दट्ठब्बो। भेरीसङ्खरथानञ्च सद्देहि [१९-सी०] अविवित्तं ति वा घोसितं ति वा योजेतब्बं। हत्थिसद्दं ति वा हत्थिसद्दवन्तं नगरं। **खादथ पिवथ चेवा** ति इति-सद्दो ञातत्थत्ता अप्पयुत्तो दट्ठब्बो।

सब्बङ्गसम्पन्नं उय्यानपोक्खरणी-आदिसम्पन्नत्ता। **लक्खणे** ति इत्थिलक्खणे पुरिसलक्खणे च। **इतिहासे** ति पोराणे। **सधम्मे** ति अत्तनो तेविज्जधम्मे च यञ्ञविधि-आदिके च। **पारमिं** ति पारञाणं पाराधिगमं गतो। चिन्तेसहं ति चिन्तेसिं अहं सुमेधभूतो ति सत्था वदति। [२५-म०] **अत्थि हेहिती** ति सो विज्जमानो भविस्सति। **न हेतुये** ति अभवितुं। **एवमेवा** ति एवमेवं[5]। **न गवेसती** ति न गन्तुं एसति न इच्छति नानुगच्छति वा। **धोवे** ति धोवन्ते। **सेरी** ति सायत्तिको। **सयंवसी** ति सवसो। **महाचोरसमो विया** ति कायसारागवसेन दुच्चरितानेसनेहि कुसलभण्डच्छेदना। **नाथा** ति नाथवन्तो।

परवादिचोदनं पत्वा ति अट्ठकथायं आगतं परवादिचोदनं पत्वा। अधिग "प०""रूपेन। ति अधिगन्तब्बो च सो देसेतब्बो चा ति अधिगन्तब्बदेसेतब्बो, सो एव धम्मो, तदनुरूपेन। एत्थ च यथाधम्मसासनत्ता यथाधिगतधम्मदेसनाभावतो अभिधम्मस्स अभिसम्बोधि अधिगमनिदानं। देस-कालादि येव देसनानिदानं। यं पन अट्ठकथायं "देसनानिदानं याव धम्मचक्कप्पवत्तना" ति वुत्तं, तं अभिधम्मदेसनाविसेसेन धम्मचक्कप्पवत्तनं ति कत्वा वुत्तं। धम्मचक्कप्पवत्तनसुत्ते वा देसितेहि

---

१. पाळि–सी०। २. असक्खितं–सी०।
३. अट्टं–सी०। ४. खु० ७ : ३०५ (बुद्धवंसे)। ५. एव एवं–सी०।

पञ्चदोसविवज्जितं ति एवमादिकस्स अत्थो केसुचि अट्ठकथापोत्थकेसु लिखितो ति कत्वा न वक्खाम।

सासने ति एत्थ तापससासनं झानाभिञ्ञा च। **वसीभूतस्स** सतो। मयि एवम्भूते दीपङ्करो जिनो उप्पज्जि। सोधेति जनो। **अञ्जसं वटुमायनं** ति परियायवचनेहि मग्गमेव वदति। **मा नं अक्कमित्था** ति एत्थ नं ति पदपूरणमत्ते निपातो। **घातियामहं ति एत्थ च** अ-इति च हं-इति च निपाता, अहं-इति वा एको निपातो सानुनासिको कतो। **आहुतीनं** ति दक्खिणाहुतीनं। **मं ति मम**, मं वा अब्रवि।

कप्पे अतिक्कमित्वा वुत्ते पि बोधिम्हि मातादिसंकित्तने[1] सङ्गण्हितुं **"बोधि तस्स भगवतो"** ति आदिमाह। **सुखेना** ति उत्तमेन सुखेन। **असमो** ति तापसेहि असमो। अभिञ्ञासुखतो पि विसिट्ठं **ईदिसं** बुद्धत्तब्याकरणजं **सुखं अलभिं**। **या** ति यानि निमित्तानि। **आभुजती** ति आवत्तति। **अभिरवन्ती** ति[2] सद्दं करोन्ति। **छुद्धा** ति[3] निक्खन्ता। **नुद्धंसती** ति न उद्धं गच्छति। **उभयं** ति उभयवचनं। **धुवसस्सतं** ति एकन्तसस्सतं, अविपरीतमेवा ति अत्थो। **आपन्नसत्तानं** ति गब्भिनीनं[4]। **यावता दस दिसा**, तत्थ। **धम्मधातुया** ति धम्मधातुयं, सब्बेसु धम्मेसु विचिनामीति अत्थो।

यस्स सम्पुण्णो, तं **वमते व** उदकं निस्सेसं। **एते** ति एकिस्सापि दानपारमिताय अनेकप्पकारताय बहुवचननिद्देसो कतो। **पटिलग्गितं** रक्खतीति वचनसेसो, भुम्मत्थे वा उपयोगो। **चतूसु भूमीसू** ति पातिमोक्खादीसु संवरभूमीसु। **अद्वेज्झमानसो** ति

अरियसच्चेहि सकलाभिधम्मपदत्थसङ्गहतो, परमत्थतो अभिधम्मभूतानं वा सम्मादिट्ठि-आदीनं तत्थ देसितत्ता वुत्तं। तत्तकानं येव देसनारुळ्हताय अड्ढछक्केसु जातकसतेसु परियापनं वुत्तं ति दट्ठब्बं। न हि एत्तकासु एव जातीसु पुञ्ञादिसम्भारसम्भरणं, किं पन कारणं एत्तका एव जातियो देसिता ति ? तदञ्ञेसं अट्ठुप्पत्तिया अभावतो।

सुमेधकथावण्णना

उप्पन्ने बुद्धे ततो अत्तानं सेय्यतो वा सदिसतो वा दहन्तो झानाभिञ्ञाहि परिहायति, न तथा सुमेधपण्डितो अट्ठासीति तस्स झानाभिञ्ञाहि अपरिहानि दट्ठब्बा। तेनेवाह "तापसेहि असमो" ति। यथा निब्बानं, अञ्ञं वा निच्चाभिमतं अविपरीतवुत्तिताय सब्बकालं तथाभावेन "सस्सतं" ति वुच्चति, एवं बुद्धानं वचनं ति तस्स सस्सतता वुत्ता। तेनेवाह "**अविपरीतमेवा**" ति।

उपपारमी-आदिविभागेन अनेकप्पकारता। समादानाधिट्ठानं ति समादानस्स अधिट्ठानं

---

१. मातादि यं कित्तने-सी०। २. आरवन्तीति-सी०।
३. छद्धा ति-सी०। ४. गब्भिणीनं-सी०।

कदाचि खमनं कदाचि अक्खमनं, कस्सचि खमनं कस्सचि अक्खमनं ति एवं द्वेधाभावं अनापन्नमानसो हुत्वा। सच्चस्स वीथि नाम दिट्ठादि च अदिट्ठादि च यथाभूतं व वत्थु। **अधिट्ठानं** ति कुसलसमादानाधिट्ठानं, समादिन्नेसु कुसलेसु अचलता अधिट्ठानं नाम। **पथविया**[1] **उपेक्खनं** नाम विकारानापत्ति। **अञ्ञत्रा** ति अञ्ञं। **सभावरसलक्खणे** **ति**[2] एत्थ **भावो** ति अविपरीतता विज्जमानता, सह भावेन सभावो, अविपरीतो अत्तनो [२६-म०] **बोधिपरिपाचनकिच्चसङ्खातो** रसो, अनवज्जवत्थुपरिच्चागादिसङ्खातं लक्खणञ्च **सभावरसलक्खणं,** ततो **सम्मसतो। धम्मतेजेना** ति ञाणतेजेन। **चलता** ति [२०-सी०] चलताय कम्पनताय। **सेसी** ति सयि। **मा भाथा** ति मा भायित्थ। **सब्बीतियो** ति सब्बा ईतियो उपद्दवा तं विवज्जन्तु।

सुमेधकथावण्णना निट्ठिता

पवच्छती ति देति। **योगेना** ति उपायेन। **समिंसु** ति सन्निपतिंसु। **अप्पत्तमानसा** ति अप्पत्त-अरहत्ता भिक्खू गरहिता भवन्ति। **रित्ता** ति सुञ्ञा अन्तरहिता। **साल-कल्याणी** नाम एको रुक्खो। बुद्धचक्कवत्तिकाले येव किर एकाहेनेव उप्पज्जति।

लिङ्गसम्पत्ती ति पुरिसलिङ्गता। **हेतू** ति तिहेतुकपटिसन्धिता। **गुणसम्पत्ती** ति अभिञ्ञासमापत्तिलाभिता। **अधिकारो** ति बुद्धानं सक्कारकरणं। **छन्दता** ति बुद्धत्तप्पत्तियं छन्दसमायोगो। **सब्बङ्गसम्पन्ना** ति अट्ठङ्गानि समोधानेत्वा कतपणिधाना। **पक्खिका** ति पीठसप्पिका। **पण्डका** ति उभयलिङ्गरहिता। बोधिसत्ता च ब्रह्मलोकूप-पत्तिपठमकप्पिकेसु कालेसु उभयलिङ्गरहिता होन्ति, न पन पण्डकपरियापन्ना ति एतमत्थं दस्सेतुं "**परियापन्ना न भवन्ती**" ति वुत्तं, यथावुत्तेसु वा दोसेसु सब्बेसु

पवत्तनं करणं ति अत्थो। **ञाणतेजेना** ति पारमीपविचयञाणप्पभावेन।

महानुभावं हि तं ञाणं बोधिसम्भारेसु अनावरणं अनाचरियकं महाबोधिसमुप्पत्तिया अनु-रूपपुब्बनिमित्तभूतं। तथा हि तं मनुस्सपुरिसभावादि-आधारमेव जातं। कायादीसु असुभसञ्ञादि-

---

1. पठविया–सी०।
2. ०लक्खणो ति–सी०।

परियापन्ना न भवन्ति। बोधिसत्तेसु वा परियापन्ना तदन्तोगधा, परिच्छिन्नसंसारत्ता वा परियापन्ना बोधिसत्ता उभतोब्यञ्जनपण्डका न भवन्तीति अत्थो। **सब्बत्थ सुद्धगोचरा** यस्मा, तस्मा **मिच्छादिट्ठिं न सेवन्ति।** **मिच्छादिट्ठि** ति नत्थिकाहेतुकाकिरियदिट्ठि[1]। **भवाभवे** ति खुद्दके चेव महन्ते च भवे। **भोजपुत्ते** ति लुद्दके। **लगनं** ति सङ्गो। **अञ्ञथा** ति लीनता। **गामण्डला**[2] ति गामदारका। **रूपं** ति विप्पकारं। अयं ताव निदानकथा याय अभिधम्मस्स बुद्धभासितत्तासिद्धीति अत्थयोजना कातब्बा॥

लीनत्थपदवण्णनायं मूलटीकायं निदानकथावण्णना निट्ठिता

भावेन सुद्धगोचरा। "अञ्ञथा" ति पदस्स पकरणपरिच्छिन्नं अत्थं दस्सेन्तो "लीनता" ति आह। लीनता ति च सङ्कोचो वीरियहानि वीरियारम्भस्स अधिप्पेतत्ता। तेनाह "सो मे वीरियपारमी" ति।

अनुटीकायं निदानकथावण्णना निट्ठिता।

---

१. ०किरियदिट्ठिं-सी०।

२. गोमण्डला-सी०।

१–चित्तुप्पादकण्डं

तिकमातिकापदवण्णना

[२७-म०] इदानि पटिञ्ञातकथं कातुं **"इदानि[1] इति मे ···प···· कथनोकासो सम्पत्तो"** ति आदिमाह। **इतो पट्ठाया** ति कुसलधम्मपदतो पट्ठाय।

सब्बपदेहि लद्धनामो ति तीसु पि पदेसु वेदनासद्दस्स विज्जमानत्ता तेन लद्धनामो सब्बपदेहि लद्धनामो होति। ननु सुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता धम्मा ति चत्तारि पदानि, एवं सेसेसु पी ति द्वादसेतानि पदानि, न तीणीति वेदनासद्दस्स पदत्तयावयवत्तं सन्धाय "सब्बपदेही" ति वुच्चेय्य, न युत्तं। "वेदनाया" ति हि विसुं पदं न कस्सचि पदस्स अवयवो होति, नापि सुखादिपदभावं भजतीति तेन लद्धनामो कथं सब्बपदेहि लद्धनामो सिया ति? अधिप्पेतप्पकारत्थगमकस्स पदसमुदायस्स पदत्ता। पज्जति अवबुज्झीयति एतेना ति हि पदं, "सुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता धम्मा" ति एतेन च पदसमुदायेन यथाधिप्पेतो अत्थो समत्तो विञ्ञायति, तस्मा सो पदसमुदायो "पदं" ति वुच्चति। एवं इतरे पि वेदितब्बा। तस्मा तेसं तिण्णं समुदायानं [२१-सी०] अवयवेन लद्धनामो सब्बपदेहि लद्धनामो ति युत्तो।

गन्थतो च अत्थतो चा ति एत्थ हेतुपदसहेतुकपदादीहि सम्बन्धत्ता गन्थतो च हेतु-अत्थसहेतुकत्थादीहि सम्बन्धत्ता अत्थतो च अञ्ञमञ्ञसम्बन्धो वेदितब्बो।

१–चित्तुप्पादकण्डं

तिकमातिकापदवण्णना

[२७-म०] तेना ति वेदनासद्देन। **सब्बपदेही** ति तीहि पदेहि लद्धनामो होति अवयवधम्मेना पि समुदायस्स अपदिसितब्बतो यथा "समं चुण्णं" ति। चोदको यथाधिप्पेतमत्थं अप्पटिपज्जमानो विभत्ति-अन्तस्सेव पदभावं सल्लक्खेत्वा **"ननु सुखाया"** ति आदिना चोदेति। इतरो **"अधिप्पेतप्पकारत्थगमकस्सा"** ति आदिना अत्तनो अधिप्पायं विवरति। तेन "वाक्यं इध पदं ति वुत्तं" ति दस्सेति। **हेतुपदसहेतुकपदादीही** ति आदि–सद्देन न-हेतुपद-अहेतुकपदहेतुसम्पयुत्तपदानि हेतुविप्पयुत्त-पदम्पि वा सङ्गण्हाति।

उभयेकपदवसेना ति उभयपदवसेन हेतुदुकसम्बन्धो, एकपदवसेन सहेतुकदुकसम्बन्धो।

---

1. नत्थि–सी०।

सहेतुकहेतुसम्पयुत्तदुका हि हेतुदुके हेतूहि सम्बन्धत्ता हेतुदुकसम्बन्धा[1], हेतुसहेतुकदुको हेतुदुकसहेतुकदुकसम्बन्धो उभयेकपदवसेन। तथा हेतुहेतुसम्पयुत्तदुको[2] हेतुदुकहेतुसम्पयुत्तदुकसम्बन्धो, न-हेतुसहेतुकदुको एकद्विपदवसेन हेतुदुकसहेतुकदुकसम्बन्धो ति[3]। **कण्णिका विया** ति पुप्फमयकण्णिका विय। **घटा विया** ति पुप्फहत्थकादीसु पुप्फादीनं समूहो विय। कण्णिकाघटादीसु हि पुप्फादीनि वण्टादीहि अञ्ञमञ्ञसम्बन्धानि होन्तीति तथासम्बन्धता एतेसं दुकानं वुत्ता। **दुकसामञ्ञतो** ति अञ्ञेहि हेतुदुकादीहि दुकवसेन समानभावा। **अञ्ञेही** ति सारम्मणदुकादीहि। असङ्गहितो पदेसो येसं अत्थि, ते **सप्पदेसा**। येसं पन नत्थि, ते **निप्पदेसा**।

[२८-म०] "कच्चि नु भोतो कुसलं" ति एवं पुच्छितमेवत्थं पाकटं कत्वा पुच्छितुं "कच्चि भोतो अनामयं" ति वुत्तं, तस्मा कुसलसद्दो अनामयत्थो होति। **बाहितिकसुत्ते**[4] भगवतो कायसमाचारादयो वण्णेन्तेन धम्मभण्डागारिकेन "यो खो महाराज कायसमाचारो अनवज्जो" ति कुसलो कायसमाचारो वुत्तो। न हि भगवतो सुखविपाकं कम्मं अत्थीति सब्बसावज्जरहिता कायसमाचारादयो कुसला ति वुत्ता। **कुसलेसु धम्मेसू** ति च बोधिपक्खियधम्मा "कुसला" ति वुत्ता। ते च विपस्सनामग्गफलसम्पयुत्ता, न एकन्तेन सुखविपाका येवा ति अनवज्जत्था कुसलसद्दो। **अङ्गपच्चङ्गानं**

तथा ति उभयेकपदवसेन। एत्थ च सहेतुकहेतुसम्पयुत्तदुका ति आदिना यथा हेतुगोच्छके पठमदुकसम्बन्धा दुतियततियदुका, पठमदुकदुतियदुकसम्बन्धा चतुत्थछट्ठदुका, पठमदुकततियदुकसम्बन्धो पञ्चमो दुको, एवं आसवगोच्छकादीसु पी ति नयं दस्सेति। सक्का हि इमिना व नयेन तेसु पि दुकन्तरसम्बन्धो विञ्ञातुं, केवलं पन आसवगोच्छकादीसु दुतियदुकततियदुकसम्बन्धो ओसानदुको, किलेसगोच्छके च दुतियचतुत्थदुकसम्बन्धो ति। धम्मानं सावसेसनिरवसेसभावेन तिकदुकानं सप्पदेसनिप्पदेसता वुत्ता ति येहि तिकदुका सावसेसा ति पदिस्सन्ति अपदिस्सन्ति, ते असङ्गहितधम्मापदेसो। एवं सति "असङ्गहितो" ति विसेसनं किमत्थियं ति ? एतस्सेवत्थस्स पाकटकरणत्थं दट्ठब्बं। अथवा पदिस्सति एतेन समुदायो ति पदेसो, अवयवो। "सामञ्ञजोतना विसेसे अवतिट्ठती" ति यथाधिप्पेतं विसेसं दस्सेन्तो "असङ्गहितो" ति आह।

अनवज्जत्थो अवज्जविरहत्थो। नामं सञ्ञा, किरिया करणं, पयोजनं रथरथङ्गविभावनेन तेसं पकारतो योजनं। कुसेन ञाणेन लातब्बा ति कुसला ति अयमत्थो ञाणसम्पयुत्तानं ताव होतु ञाणविप्पयुत्तानं कथं ति आह "ञाणविप्पयुत्तानम्पी" ति आदि। [२८-म०] ञाणविप्पयुत्ता पि हि

---

१. ०सम्बन्धो-सी०। २. हेतुकहेतु०-सी०।
३. हेतुकसहेतुक०-सी०। ४. म० २ : ३५९।

ति कुसलसद्दयोगेन भुम्मत्थे सामिवचनं, अङ्गपच्चङ्गानं वा नामकिरियापयोजनादीसू ति अत्थो। **नच्चगीतस्सा** ति च सामिवचनं भुम्मत्थे, नच्चगीतस्स विसेसेसू ति वा योजेतब्बं। कुसलानं धम्मानं समादानहेतु एवमिदं पुञ्ञं पवड्ढतीति पुञ्ञविपाक-निब्बत्तककम्मं "कुसलं" ति वुत्तं। **धम्मा होन्ती** ति पुञ्ञधम्मत्ता सभावमत्ता होन्तीति अत्थो। एवं **धम्मेसु धम्मानुपस्सी** ति एत्था पि सुञ्ञतत्थो धम्मसद्दो दट्ठब्बो।

सलयन्ति प... विद्धंसेन्ती ति एत्थ पुरिमस्स पुरिमस्स पच्छिमं पच्छिमं अत्थवचनं। अथ वा सलनस्स अत्थदीपनानि चलनादीनि तीणि तदङ्गप्पहानादीहि योजेतब्बानि। अप्पहीनभावेन सन्ताने सयमाना अकुसला धम्मा रागादि-असुचिसम्पयोगतो नानाविध-दुक्खहेतुतो च **कुच्छितेन आकारेन सयन्ति**। ञाणविप्पयुत्तानम्पि ञाणं उपनिस्सयपच्चयो होतीति सब्बे पि कुसला धम्मा **कुसेन ञाणेन** पवत्तेतब्बा ति **कुसला**। उप्पन्नं सानुप्पन्नं सभागेसु सङ्गहितत्ता **उभयभागगतं संकिलेसपक्खं** पहानानुप्पादनेहि[१] **लुनन्ति** सम्मप्पधानद्वयं विय।

सत्तादिगाहकानं चित्तानं गोचरा सत्तादयो विय पञ्ञाय **उपपरिक्खियमाना न** निस्सभावा, किन्तु अत्तनो सभावं धारेन्तीति **धम्मा**। न च धारियमानसभावा अञ्ञो धम्मो नाम अत्थि। न हि रुप्पनादीहि [२२-सी०] अञ्ञे रूपादयो, कक्खळादीहि[२] च अञ्ञे पथवी-आदयो[३] धम्मा विज्जन्तीति। अञ्ञथा पन अवबोधेतुं न सक्का ति नामवसेन विञ्ञाताविञ्ञाते सभावधम्मे अञ्ञे विय कत्वा "अत्तनो सभावं [२९-म०] धारेन्ती" ति वुत्तं। सप्पच्चयधम्मेसु विसेसं दस्सेन्तो **"धारीयन्ति[४] वा पच्चयेही"** ति आह। **धारीयन्ती** ति उपधारीयन्ति, लक्खीयन्तीति अत्थो।

ञाणेनेव पवत्तियन्ति हितसुखहेतुभूताय पवत्तिया पञ्ञवन्तानं पटिपत्तिभावतो। न हि अन्तरेन योनिसोमनसिकारं कुसलुप्पत्ति अत्थीति। "यदि कुसलस्स उभयभागगतं संकिलेसलवनं पाकटं सिया, कुसा विय लुनन्ती ति कुसला ति अयमत्थो युत्तो सिया" ति कोचि वदेय्या ति आसङ्काय आह "सम्मप्पधानद्वयं विया" ति।

न चा ति आदिना "सभावं धारेन्ती" ति एत्थ परमत्थतो कत्तु कम्मस्स च भेदो नत्थि, कप्पनासिद्धो एव पन भेदो ति दस्सेति। तत्थ **नामवसेन विञ्ञाताविञ्ञाते** ति येसं "धम्मा" ति इमिना परियायेन अविञ्ञाता सभावा, सभावं धारेन्ती" ति इमिना च परियायेन विञ्ञाता, तेसं वसेन एवं वुत्तं। एत्थ च पठमो अत्थो सङ्खतासङ्खतधम्मवसेन वुत्तो, दुतियो सङ्खतवसेन, ततियो सङ्खतासङ्खतपञ्ञत्तिधम्मवसेना ति दट्ठब्बं।

---

१. पहाणा०–सी०। २. कक्खलादीहि–सी०।
३. पठवी–सी०। ४. परियत्ति–सी०।

अकुसला ति कुसलपटिसेधनमत्तं कुसलाभावमत्तवचनं तदञ्ञमत्तवचनं वा एतं न होति, किन्तु तप्पटिपक्खवचनं ति दस्सेतुं **"मित्तपटिपक्खा अमित्ता विया"** ति आदि वुत्तं। तप्पटिपक्खवचनता च अब्याकततिततियरासिवचनेन विञ्ञायति। यदि हि कुसलाभावमत्त-वचनं अकुसलसद्दो, तेन न कोचि धम्मो वुत्तो ति अब्याकतवचनेनेव च ततियो रासि वुत्तो न सिया, कुसला चेव धम्मा अब्याकता चा ति दुको वायं आपज्जति, न तिको, एवञ्च सति अकुसलवचनेन न कोचि अत्थो। अथ सिया, "अनब्याकता" ति च वत्तब्बं सिया कुसलानं विय अब्याकतानञ्च अभावमत्तसम्भवा, तस्मा अभावमत्तवचने अब्याकतभावमत्तं विय कुसलाभावमत्तं अकुसलं न कोचि रासीति "अब्याकता" ति ततियो रासि न सिया। ततियरासिभावेन च अब्याकता वुत्ता ति अकुसलो च एको रासीति विञ्ञायति। तस्मा नाभाववचनता सभावधारणादि-अत्थेन धम्मसद्देन समानाधिकरणभावतो च अकुसलसद्दस्स कुसलाभावमत्तवचनता न होति, नापि तदञ्ञमत्तवचनता ततियरासिवचनतो एव[1]।

यदि हि कुसलेहि अञ्ञे अकुसला चेतसिकेहि अञ्ञे अचेतसिका विय, कुसला-कुसलवचनेहि सब्बेसं धम्मानं सङ्गहितता असङ्गहितस्स ततियरासिस्स अभावा चेत-सिकदुको विय अयञ्च दुको वत्तब्बो सिया "कुसला धम्मा अकुसला धम्मा" ति, न

कुसलपटिसेधनं कुसलाभावो एव। अभावो हि सत्तापटिसेधो ति। **धम्मो** ति सभाव-धम्मो। अकुसलवचनेन न कोचि अत्थो सभावधम्मस्स अबोधकत्ता ति अधिप्पायो। अथ सिया अकुसलवचनेन कोचि अत्थो असभावधम्मबोधकत्ते पि "पञ्ञत्तिधम्मा" ति आदीसु विय, एवं सति "अनब्याकता" ति च वत्तब्बं सिया। ततो चायं चतुक्को आपज्जति, न तिको। **तस्मा** ति यस्मा दुकचतुक्कभावो अनब्याकतवोहारो च नत्थि, सो च वुत्तनयेन अभावमत्तवचने आपज्जति, तस्मा। **सभावधारणादी** ति आदिसद्देन "धारीयन्ति पच्चयेही" ति अयमत्थो सङ्गहितो। ञेय्यपरियायेन पन धम्मसद्देनायं दोसो ति ननु अञ्ञेय्यपरियाये पि धम्मसद्दे न कोचि दोसो ति ? न, वुत्तदोसानतिवत्तनतो।

पारिसेसेना ति एत्थ ननु अयमकारो न-अत्थत्तयस्सेव जोतको, अथ खो "अहेतुका धम्मा, अभिक्खुको आवासो" ति तंयोगनिवत्तिया, "अप्पच्चया धम्मा" ति तंसम्बन्धिभावनिवत्तिया। पच्चयुप्पन्नं हि पच्चयसम्बन्धीति अप्पच्चयुप्पन्नत्ता असम्बन्धिता एत्थ जोतीयति। "अनिदस्सना धम्मा" ति तंसभावनिवत्तिया। निदस्सनं हि दट्ठब्बता। अथ चक्खुविञ्ञाणं निदस्सनं, तग्गय्ह-भावनिवत्तिया, तथा "अनासवा धम्मा" ति। "अप्पटिघा धम्मा अनारम्मणा धम्मा" ति तंकिच्च-निवत्तिया। "अरूपिनो धम्मा [२९–म०] अचेतसिका धम्मा" ति तब्भावनिवत्तिया। तदञ्ञता हि एत्थ पकासीयति। "अमनुस्सो" ति तब्भावमत्तनिवत्तिया। मनुस्सत्तमत्तं नत्थि अञ्ञं समानं ति सदिसता हेत्थ सूचियति। "असमणो समणपटिञ्ञो अपुत्तो" ति तंसम्भावनगुणनिवत्तिया।

---

१. एवं–सी०।

"अब्याकता" ति ततियो रासि वत्तब्बो, वुत्तो च सो, तस्मा न तदञ्ञमत्तवचनं अकुसल-सद्दो पारिसेसेन तप्पटिपक्खेसु अ-कारस्स पयोगदस्सनतो लोके "अमित्ता" ति सासने "अलोभो" ति इधापि तप्पटिपक्खवचनता अकुसलसद्दस्स सिद्धा।

तत्थ निरुळ्हत्ता च न इतरवचनता, तप्पटिपक्खभावो च विरुद्धसभावत्ता तप्पहेय्य-भावतो च वेदितब्बो, न कुसलविनासनतो। न हि कुसला अकुसलेहि पहातब्बा, महाबलव-ताय पन कुसला येव पयोगनिप्फादिता सदानुसयिते अकुसले तदङ्गविक्खम्भनसमुच्छेदवसेन पजहन्तीति।

[३०-म०] **न ब्याकता** ति अकथिता। कथं पनेते अकथिता होन्ति, ननु "सुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता" ति आदीहि तिकदुकपदेहि चक्खुविञ्ञाणादिवचनेहि फस्सादिवचनेहि च कथिता ति? नो न कथिता, तानि पन वचनानि इध अनधिप्पेतानि अवुत्तत्ता अननुवत्तनतो। न हि "सुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता धम्मा" ति आदिं वत्वा "अब्याकता" ति वुत्तं, तस्मा न तानि इध अनुवत्तन्तीति तब्बचनीयभावेन अकथितता

गरहा हि एत्थ ञायति। "कच्चि नु भोतो अनामया, अनुदरा कञ्ञा" ति तदप्पभावनिवत्तिया। "अनुप्पन्ना धम्मा" ति तंसदिसभावनिवत्तिया। अतीतानं हि उप्पन्नपुब्बत्ता उपादिधम्मानञ्च पच्चयेक-देसनिप्फत्तिया आरद्धुप्पादभावतो कालविनिमुत्तस्स च विज्जमानत्ता उप्पन्नानुकूलता, पगेव पच्चुप्पन्नानं ति तब्बिधुरभावो एत्थ विञ्ञायति। "असेक्खा धम्मा" ति तदपरियोसाननिवत्तिया। तंनिद्दानं हेत्थ पकासीयती ति एवमनेकेसं अत्थानं जोतको, तत्थ किं वुच्चते अत्थद्वयमेव वत्वा पारिसेसेना ति? इतरेसं एत्थ सुविदूरभावतो। न हि कुसलविप्पयुत्तादीनं धम्मानं अकुसलभावो युज्जति।

अकुसलसद्दस्स उच्चारणानन्तरं विनेय्यानं कुसलपटिपक्खभूते अत्थे पटिपत्तिभावतो तत्थ निरुळ्हता दट्ठब्बा। "**विरुद्धसभावत्ता**" ति वुत्तं किञ्चविरोधादीनम्पि तदन्तोगधत्ता। विरुद्धसभावत्ते पि विनासकविनासितब्बभावो कुसलाकुसलेसु नियतो ति दस्सेतुं "**तप्पहेय्यभावतो**" ति आह। इतरथा कुसलानम्पि अकुसलेहि पहातब्बभावे अच्चन्तं समुच्छिन्नकुसलमूलत्ता अपायपूरका एव सत्ता सियुं। यं पन "धम्मा पि वो भिक्खवे, पहातब्बा" ति[1] वुत्तं, तं "रूपं भिक्खवे, न तुम्हाकं, तं पजहथा" ति आदीसु[2] विय तदारम्मणसंकिलेसप्पहानवसेन परियायेन वुत्तं। यथाह "न हि कुसला अकुसलेहि पहातब्बा" ति।

फस्सादिवचनेहि तंनिद्देसभूतेहि। **तब्बचनीयभावेना** ति तेहि "सुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता धम्मा" ति आदिवचनेहि अभिधेय्यभावेन। यथा अनवज्जसुखविपाकादि-अत्था कुसलादिवचनेहि, एवं अविपाकत्था अब्याकतवचनेन बोधिता एवा ति आह "**अब्याकतवचनेनेव चा**" ति। **कारणं**

---

१. म० १–१८०। २. सं० २–३ : २६७।

न होति, कुसलाकुसलवचनानि पन इध वुत्तत्ता अनुवत्तन्तीति तब्बचनीयभावेन अकथितता ञायतीति **"कुसलाकुसलभावेन अकथिता ति अत्थो"** ति आह। **न[1] ब्याकता ति[1]** वा अविपाका, अब्याकतवचनेनेव च [२३-सी०] अविपाकत्था ञायन्ति। न हि भगवतो वचनं ञापकसाधनीयं, आसयानुसयचरियादिकुसलेन भगवता येसं अवबोधनत्थं धम्मा वुत्ता तेसं वचनानन्तरं तदत्थपटिवेधतो, पच्छिमेहि पन यथा तेसं अवबोधनत्थं भगवता तं तं वचनं वुत्तं, यथा च तेहि तदत्थो पटिविद्धो, तं सब्बं आचरिये पयिरुपासित्वा सुत्वा वेदितब्बं होति, तस्मा कारणं अवत्वा **"कुसलाकुसलभावेन अकथिता ति अत्थो"** ति आह। यो च वदेय्य "अकुसलविपाकभावेन अकथितत्ता, कुसला अब्याकता ति आपज्जन्ति, कुसलविपाकभावेन[2] अकथितत्ता अकुसला पी" ति सो पि "अञ्ञापकसाधनीयवचनो भगवा" ति निवारेतब्बो अनुवत्तमानवचनवचनीयभावेन अकथितस्स च अब्याकतभावतो। न हि अविपाकवचनं वुत्तं कुसलवचनञ्च अवुत्तं, यतो अविपाकवचनस्स अधिकतभावो कुसलस्स च तब्बचनीयभावेन अकथितभावो सिया, तस्मा न कुसलानं अब्याकतता, एवं अकुसलानञ्च अनब्याकतभावे योजना कातब्बा।

अथ वा **वि**-सद्दो विरोधवचनो, **आ**-सद्दो अभिमुखभावप्पकासनो, तस्मा अत्तनो पच्चयेहि अञ्ञमञ्ञविरोधाभिमुखा कता, लक्खणविरोधतो विनासकविनासितब्बतो चा ति ब्याकता, कुसलाकुसला। न ब्याकता ति **अब्याकता**। ते हि लक्खणतो कुसलाकुसला विय विरुद्धा न होन्ति। न हि अविपाकता दुक्खविपाकता विय सुखविपाकताय सुखविपाकता विय[3] च दुक्खविपाकताय सुखदुक्खविपाकताहि विरुज्झतीति नापि ते किञ्चि पजहन्ति, न च ते केनचि पहातब्बा ति अयमेत्थ अत्तनो मति।

[३१-म०] **अनवज्जसुखविपाकलक्खणा** ति एत्थ नत्थि एतेसं अवज्जं ति अनवज्जा, गरहितब्बभावरहिता निद्दोसा ति अत्थो। तेन नेसं अगरहितब्बभावं दस्सेति, न

अवत्वा ति इध वुत्तभावेन अनुवत्तमानत्ता ति कारणं अवत्वा। अञ्ञा.....प०.....निवारेतब्बो ति एतेन कुसला कुसलसद्दा विय [३०-म०] कुसलाकुसलसभावानं तदुभयविपरीतसभावानं धम्मानं अब्याकतसद्दो बोधको ति दस्सेति। नहि अविपाकवचनं वुत्तं, अकुसलवचनञ्च अवुत्तं। यतो अविपाकवचनस्स अधिकतभावो अकुसलस्स च तब्बचनीयभावेन अकथितभावो सिया, तस्मा न अकुसलानं अब्याकता ति अयं अकुसलानं अनब्याकतभावे योजना।

तं परिहरितुं ति अब्याकतनिवत्तनमाह। यदि एवं "सुखविपाकानवज्जा" ति वत्तब्बं। अनवज्जा हि ब्यभिचारिताय विसेसितब्बा ति ? न, सुखविपाकवचनस्स विसेसनभावेन अग्गहितत्ता।

१-१. अब्यकता ति–सी०। २. कुसला विपाकभावेन–सी०। ३. विय नत्थि–सी०।

गारह्यविरहमत्तं। अञ्ञे पि अत्थि निद्दोसा अब्याकता ति अनवज्जवचनमत्तेन तेसम्पि कुसलतापत्तिदोसं दिस्वा तं परिहरितुं सुखविपाकवचनं आह। अवज्जपटिपक्खा वा इध अनवज्जा ति वुत्ता, न **बाहितिकसुत्ते**[1] विय पटिप्पस्सद्धावज्जा[2] विरहितावज्जमत्ता[2] वा, तस्मा अनवज्जवचनेन अवज्जविनासनभावो दस्सितो। अब्याकतेहि पन विसिट्ठं कुसलाकुसलानं साधारणं सविपाकतालक्खणं ति तस्मिं लक्खणे विसेसदस्सनत्तं[3] सुखविपाकवचनं अवोच। सिद्धो हि पुरिमेनेव अकुसलाब्याकतेहि कुसलानं विसेसो ति। सुखो विपाको एतेसं ति सुखविपाका। तेन कुसलाकुसलानं सामञ्ञे विपाकधम्मभावे सुखविपाकविपच्चनसभावं दस्सेति, न तेसं सुखविपाकसब्भावमेव। अनवज्जा च ते सुखविपाका चा ति अनवज्जसुखविपाका। कुसला लक्खीयन्ति एतेना ति लक्खणं, अनवज्जसुखविपाकलक्खणं[4] एतेसं ति **अनवज्जसुखविपाकलक्खणा।** ननु ते एव कुसला अनवज्जसुखविपाका, कथं ते सयमेव अत्तनो लक्खणं होन्तीति? विञ्ञाताविञ्ञातसद्दत्थभावेन लक्खणलक्खितब्बभावयुत्तितो। कुसलसद्दत्थवसेन[5] हि अविञ्ञाता कुसला लक्खितब्बा होन्ति, अनवज्जसुखविपाकसद्दत्थभावेन विञ्ञाता लक्खणं ति युत्तमेतं। अथ वा लक्खीयतीति लक्खणं [२८-सी०] सभावो। अनवज्जसुखविपाका च ते लक्खणञ्चा ति **अनवज्जसुखविपाकलक्खणा**, अनवज्जसुखविपाका हुत्वा लक्खियमाना सभावा कुसला नामा ति अत्थो।

सुखविपाकवचनेन हि कुसलभावे समत्तो विञ्ञायति, अनवज्जवचनं पनेत्थ कुसलानं अगरहितब्बतासङ्खातं कञ्चि विसेसमाह। तेनेव च तस्स विसेसनभावेन वुत्तस्स पवत्तिसुखतादिदस्सनभावं सयमेव वक्खती ति। मनोसमाचारविसेसभूता फलधम्मा विसेसेन पटिप्पस्सद्धावज्जा नाम होन्तीति समाचारत्तयवसेन तस्मिं सुत्ते अनवज्जधम्मानं वुत्तत्ता च ते अनवसेसतो सङ्गहेत्वा दस्सेतुं "विरहितावज्जमत्ता" ति वुत्तं। अवज्जविनासनभावो दस्सितो कण्हसुक्कधम्मानं वज्झघातकभावस्स नियतत्ता। सविपाकता विपाकधम्मता। सुखो विपाको एतेसं ति सुखविपाका ति इमिना समासेन कुसलानं सुखविपाकवन्तता वुत्ता। सा च नेसं न तंसमङ्गीताय असहवत्तनतो ति तदुप्पादनसमत्थता ति विञ्ञायती ति वुत्तं "सुखविपाकविपच्चनसभावं दस्सेती" ति। युत्तमेतं ति परमत्थतो भेदाभावे पि यथावुत्तवचनवचनीयभावसङ्खातो भेदो तस्मिं अभिधेय्यत्थभूते वत्थुस्मिं उपचारेन होतीति युत्तमेत्थ लक्खणलक्खितब्बभावेन भेदवचनं। भवति हि सद्दत्थविसेसमत्तेन पि अभिन्ने वत्थुस्मिं भेदवचनं यथा "सिलापुत्तकस्स सरीरं" ति।

---

१. म० २ : ३५९। २-२. ०वज्जविरहिता०-सी०। ३. विसेसदस्सनत्थं०-सी०। ४. अनवज्जसुखविपाका लक्खणं-सी०। ५. कुसला सद्दत्थवसेन-सी०।

अथ वा अनवज्जवचनेन अनवज्जत्तं आह, सुखविपाकवचनेन सुखविपाकत्तं, तस्मा अनवज्जञ्च सुखविपाको च अनवज्जसुखविपाकं, तं लक्खणं एतेसं करणत्थे च कम्मत्थे च लक्खणसद्दे सभावभूतं ति **अनवज्जसुखविपाकलक्खणा**, अनवज्जसुखविपाकसभावेन लक्खियमाना तंसभाववन्तो च कुसला ति वुत्तं होति। तत्थ अनवज्जवचनेन पवत्ति-सुखतं कुसलानं दस्सेति, सुखविपाकवचनेन विपाकसुखतं। पुरिमं हि अत्तनो पवत्ति-सभाववसेन लक्खणतावचनं, पच्छिमं कालन्तरे विपाकुप्पादनसमत्थताया ति। तथा पुरिमेन कुसलानं अत्तसुद्धिं [३२-म०] दस्सेति, पच्छिमेन विसुद्धविपाकतं[1]। पुरिमेन च कुसलं अकुसलसभावतो निवत्तेति, पच्छिमेन अब्याकतसभावतो सविपाकत्तदीपकत्ता पच्छिमस्स। पुरिमेन वा वज्जपटिपक्खभावदस्सनतो किच्चट्ठेन रसेन अकुसलविद्धंसन-रसतं दीपेति, पच्छिमेन सम्पत्ति-अत्थेन इट्ठविपाकरसतं। पुरिमेन च उपट्ठानाकारट्ठेन पच्चुपट्ठानेन वोदानपच्चुपट्ठानतं दस्सेति, पच्छिमेन फलत्थेन सुखविपाकपच्चुपट्ठानतं। पुरिमेन च योनिसोमनसिकारं कुसलानं पदट्ठानं विभावेति। ततो हि ते अनवज्जा जाता ति। पच्छिमेन कुसलानं अञ्ञेसं पदट्ठानभावं दस्सेति। ते हि सुखविपाकस्स

विना पि भावाभिधायिना सद्देन भावप्पधानो निद्देसो होती ति वुत्तं "अनवज्जवचनेन अनवज्जत्तं आहा" ति। एवञ्चेत्थ पदविग्गहो गहेतब्बो—न अवज्जं अनवज्जं, अवज्जपटिपक्खताय अगरहितब्बसभावो। सुखो विपाको अस्सा ति सुखविपाकं, सुखविपाकविपच्चनसमत्थता। अनवज्जञ्च तं सुखविपाकञ्चा ति अनवज्जसुखविपाकं, तं लक्खणं एतेसं ति **अनवज्जसुखविपाक-लक्खणा**। अथ वा पुब्बे विय अनवज्जं, विपच्चनं विपाको, सुखस्स विपाको सुखविपाको, अन-वज्जञ्च [म०-३१] सुखविपाको च अवज्जसुखविपाकं एकत्तवसेन। तं लक्खणं एतेसं ति **अनवज्ज-सुखविपाकलक्खणा**। किं पनेत्थ कारणं पदद्वयपरिग्गहे, ननु एकेनेव पदेन इट्ठप्पसिद्धि। यदि पि "अवज्जरहितं अनवज्जं" ति इमस्मिं पन पक्खे अब्याकतनिवत्तनत्थं सुखविपाकग्गहणं कत्तब्बं सिया, सुखविपाकग्गहणे पन कते अनवज्जग्गहणं न कत्तब्बमेव। "अवज्जपटिपक्खा अनवज्जा" ति एतस्मिं पन पक्खे सुखविपाकग्गहणञ्चा ति चोदनं मनसिकत्वा आह "तत्थ अनवज्जवचनेना" ति आदि। तेन पवत्तिसुखसुखविपाकता-अत्तसुद्धिविसुद्धविपाकता-अकुसल-अब्याकतसभावनिबत्तिरसपच्चुपट्ठान-पदट्ठानविसेसदीपनतो एवं विपुलप्पयोजनत्थो पदद्वयपरिग्गहो ति दस्सेति। सुख-सद्दस्स इट्ठपरि-यायता विय "निब्बानं परमं सुखं[2], सुखा विरागता लोके[3], तेसं वूपसमो सुखो" ति आदीसु[4] संखारदुक्खूपसमपरियायता पि विज्जति, तं अविपाकताय पन इध सुखविपाकभावो न सक्का वत्तुं ति दस्सेन्तो आह "सञ्ञा.....प०.....नत्थी" ति। इदं वुत्तं होति—तेभूमककुसलानम्पि विवट्टसन्नि-

---

१. विसुद्धविपाकं-सी०। २. खु० १ : ३६ धम्म० २०३ का०।
३. खु० १ : ७३ सुत्त०। ४. दी० २ : १२०, १५०।

कारणं होन्तीति। एत्थ च सुखविपाकसद्दे सुखसद्दो इट्ठपरियायवचनं ति दट्ठब्बो। इट्ठचतुक्खन्धविपाका हि कुसला, न सुखवेदनाविपाका व। सङ्खारदुक्खोपसमसुखविपाकताय च सम्भवो एव नत्थि। न हि तं विपाको ति। यदि पन विपाकसद्दो फलपरियायवचनं, निस्सन्दविपाकेन इट्ठरूपेना पि सुखविपाकता योजेतब्बा।

सावज्जदुक्खविपाकलक्खणा ति एत्थ च वुत्तविधि-अनुसारेन अत्थो च योजना च यथासम्भवं वेदितब्बा। विपाकारहता कुसलाकुसलानं लक्खणभावेन वुत्ता, तब्भावेन अकथिता अब्याकता अविपाकारहसभावा होन्तीति आह **"अविपाकलक्खणा अब्याकता"** ति। यथेव हि सुखदुक्खविपाकारहा सुखदुक्खविपाका ति एवंलक्खणता कुसलाकुसलानं वुत्ता, एवमिधापि अविपाकारहा अविपाका ति एवंलक्खणता अब्याकतानं वुत्ता। तस्मा "अहोसि कम्मं नाहोसि कम्मविपाको न भविस्सति कम्मविपाको नत्थि कम्मविपाको, अत्थि कम्मं नत्थि कम्मविपाको न भविस्सति कम्मविपाको, भविस्सति कम्मं न भविस्सति कम्मविपाको" ति[1] एवं पकारानं कुसलाकुसलानं कुसलाकुसलभावानापत्ति अब्याकतभावापत्ति वा न होति। न हि ते सुखदुक्खविपाकारहा न होन्ति विपाकधम्मत्ता, अविपाकारहा वा न होन्ति अविपाकधम्मत्ताभावा ति।

स्सयभावेन पवत्तिसभावत्ता किञ्चा पि सब्बे कुसला सङ्खारदुक्खूपसमसुखनिप्फादका सम्भवन्ति, यथावुत्तसुखस्स पन अविपाकभावतो न एतेन पदेन कुसलानं सुखविपाकता सम्भवती ति। विपक्कभावमापन्नेसु अरूपधम्मेसु निरुळ्हत्ता विपाक-सद्दस्स "यदि पना" ति सासङ्कं वदति।

यथासम्भवं ति सह अवज्जेना ति सावज्जा, गरहितब्बभावयुत्ता। तेन नेसं गरहितब्बसभावं दस्सेति। अञ्ञे पि अत्थि दुक्खभावेन गरहितब्बसभावा अकुसलविपाका ति सावज्जवचनमत्तेन तेसम्पि अकुसलतापत्तिदोसं दिस्वा तं परिहरितुं दुक्खविपाकवचनमाह। अवज्जसद्दो वा रागादीसु एकन्ताकुसलेसु निरुळ्हो ति तं सहवत्तिधम्मानं एव सावज्जभावे कुसलाब्याकतेहि अकुसलानं विसेसो सावज्जवचनेनेव दस्सितो। अब्याकतेहि पन विसिट्ठं कुसलाकुसलानं साधारणं सविपाकतालक्खणं ति तस्मिं लक्खणे विसेसदस्सनत्थं दुक्खविपाकलक्खणं वुत्तं। इतो परं "दुक्खो विपाको एतेसं ति दुक्खविपाका" ति आदिना सुखविपाक-अनवज्जकुसलपदानं ठाने दुक्खविपाकसावज्ज-अकुसलपदानि ठपेत्वा यथावुत्तनयेन अत्थो [म०–३२] वेदितब्बो। योजना च सावज्जवचनेन अकुसलानं पवत्तिदुक्खतं दस्सेति, दुक्खविपाकवचनेन विपाकदुक्खतं। पुरिमं हि अत्तनो पवत्तिसभाववसेन लक्खणवचनं, पच्छिमं कालन्तरे विपाकुप्पादनसमत्थताया ति। तथा पुरिमेन अकुसलानं अविसुद्धसभावतं दस्सेति, पच्छिमेन

---

१. खु० ४ : ३२२ पटि०।

कुसला ति वा धम्मा ति वा ति आदीनी ति कुसलधम्मपदानि द्वे, अकुसल-धम्मपदानि द्वे, अब्याकतधम्मपदानि द्वे ति। **एकत्थनानत्थानी** ति[1] विसुं विसुं छिन्नं छिन्नं अञ्ञमञ्ञापेक्खं एकत्थनानत्थतं चोदेति, न छन्नं। दोसमेत्थ [२५-सी०] वत्तुकामो चोदको पुच्छतीति ञत्वा आचरियो आह **"किञ्चेत्था"** ति। [३३-म०] एत्थ एकत्थनानत्थतायं किञ्चि वत्तब्बं असमत्ता[2] ते चोदना, अवसिट्ठं ताव ब्रूहीति वुत्तं होति। यदि एकत्थानि इन्दसक्कसद्दानं विय सद्दमत्ते एव भेदो, एवं कुसलधम्मसद्दानं, न अत्थे ति यथा "इन्दो सक्को" ति वुत्ते "इन्दो इन्दो" ति वुत्तसदिसं होति, एवं "कुसला धम्मा" ति इदं वचनं "कुसला कुसला" ति वुत्तसदिसं होति। एवं इतरेसु पि "अकुसला अकुसला" ति वुत्तसदिसता "अब्याकता अब्याकता" ति वुत्तसदिसता च योजेतब्बा। अथ नान-त्थानि, इन्दकुवेरसद्दानं विय सद्दतो अत्थतो च कुसलधम्मसद्दानं भेदो, तथा अकु-सलधम्मसद्दादीनं ति छहि पदेहि चतूहि पदेहि च छ चत्तारो च अत्था भिन्ना वुत्ता ति कुसलत्तिकादीनं कुसलछक्कादिभावो, हेतुदुकादीनञ्च हेतुचतुक्कादिभावो आपज्जतीति ?

ननु तिण्णं धम्मसद्दानं तिण्णं इन्दसद्दानं विय रूपाभेदा अत्थाभेदो ति छक्क-भावो न भविस्सति, तस्मा एवमिदं वत्तब्बं सिया "तिकदुकानं चतुक्कतिकभावो आपज्जती" ति न वत्तब्बं, तिण्णं धम्मसद्दानं एकत्थानं तिण्णं इन्दसद्दानं विय

अविसुद्धविपाकतं। पुरिमेन च अकुसले कुसलसभावतो निवत्तेति, पच्छिमेन अब्याकतसभावतो सविपाकत्तदीपकत्ता पच्छिमस्स। पुरिमेन वा अवज्जवन्ततादस्सनतो किच्चट्ठेन रसेन अनत्थजनन-रसतं दस्सेति, पच्छिमेन सम्पत्ति-अत्थेन अनिट्ठविपाकरसतं। पुरिमेन च उपट्ठानाकारट्ठेन पच्चुपट्ठानेन संकिलेसपच्चुपट्ठानतं, पच्छिमेन फलट्ठेन दुक्खविपाकपच्चुपट्ठानतं। पुरिमेन च अयोनिसोमनसिकारं अकुसलानं पदट्ठानं पकासेति। ततो हि ते सावज्जा जाता ति। पच्छिमेन अकुसलानं अञ्ञेसं पदट्ठानभावं विभावेति। ते हि दुक्खविपाकस्स कारणं होती ति। एत्थ च दुक्ख-सद्दो अनिट्ठपरियायवचनं ति वेदितब्बं। अनिट्ठचतुक्खन्धविपाका हि अकुसला, न दुक्खवेदनाविपाका व। विपाक-सद्दस्स फलपरियायभावे पन निस्सन्दविपाकेन अनिट्ठरूपेन पि दुक्खविपाकता योजेतब्बा। विपाकधम्मतापटिसेधवसेन अब्याकतानं अविपाकलक्खणा ति लक्खणं वुत्तं ति तदत्थं दस्सेन्तो "अविपाकारहसभावा" ति आह। एवं पकारानं ति अभिञ्ञादिके सङ्गण्हाति।

छहि पदेहि तिकेसु, चतूहि दुकेसु यथाक्कमं छ चत्तारो अत्था वुत्ता। छक्कभावो न भविस्सती ति एतेन चतुक्कभावाभावो दस्सितनयत्ता चोदितो येवा ति दट्ठब्बं। अत्थभेदो

---

१. एकत्थनानत्थादीनि-सी०। २. असमत्था-सी०।

वचने पयोजनाभावा[1] वुत्तानं तेसं माससद्दानं विय अभिन्नरूपानञ्च अत्थभेदो उपपज्जतीति, एवमपि[2] यथा एको माससद्दो अभिन्नरूपो कालं अपरण्णविसेसं सुवण्णमासञ्च वदति, एवं धम्मसद्दो पि एको भिन्ने अत्थे वत्तुमरहतीति कालादीनं मासपदत्थताय विय तब्बचनीयभिन्नत्थानं धम्मपदत्थताय[3] अभेदो ति चतुक्कतिकभावो एव आपज्जतीति, नापज्जति एकस्स सद्दस्स जातिगुणकिरियाभिन्नानं अनभिधानतो। न हि माससद्दो एको जातिभिन्नानं कालादीनं अन्तरेन सरूपेकसेसं वाचको होति। इध च यदि सरूपेकसेसो कतो सिया, दुतियो ततियो च धम्मसद्दो न वत्तब्बो सिया, वुत्तो च सो, तस्मा कुसलादि-सद्दा विय अभिन्नकुसलादिजातीसु रूपसामञ्ञे पि मास-सद्दा विय तयो विनिवत्त-अञ्ञजातीसु वत्तमाना तयो द्वे च धम्मसद्दा आपन्ना ति तिकदुकानं छक्कचतुक्कभावो एव आपज्जतीति।

पदानञ्च असम्बन्धो ति कुसलधम्मपदानं अञ्ञमञ्ञं तथा अकुसलधम्मपदानं अब्याकतधम्मपदानञ्च असम्बन्धो आपज्जतीति अत्थो। द्विन्नं द्विन्नं हि इच्छितो सम्बन्धो, न सब्बेसं छन्नं चतुन्नं वा अञ्ञमञ्ञं ति। इदं पन कस्मा चोदेति ननु नानत्थत्ते सति अत्थन्तरदस्सनत्थं वुच्चमानेसु धम्म-सद्देसु [३४-म०] कुसलाकुसलाब्याकत-सद्दानं विय असम्बन्धो वुत्तो युत्तो एवा ति? सच्चमेतं, असम्बन्धं पन सिद्धं कत्वा पुरिमचोदना कता "तिकदुकानं छक्कचतुक्कभावो आपज्जती" ति, इध पन तं असम्बन्धं साधेतुं इदं चोदितं ति वेदितब्बं। अथ वा एवमेत्थ योजना कातब्बा—यदि पन छक्कचतुक्कभावं न इच्छसि, पदानं सम्बन्धेन भवितब्बं यथावुत्तनयेन, सो च समानविभत्तीनं द्विन्नं द्विन्नं सम्बन्धो एकत्थत्ते सति युज्जेय्य, त्वं

उपपज्जती ति **कस्मा** एवं वुत्तं, ननु तीहि धम्मसद्देहि वुच्चमानो सभावधारणादि-अत्थेन अभिन्नो एव सो अत्थो ति? न, जाति-आदिभेदेन भेदसब्भावतो। भेदका हि जाति-आदयो। **मासपदत्थताया** ति मास-सद्दाभिधेय्यभावेन। **तब्बचनीयभिन्नत्थानं** ति तेहि कालसद्दादीहि वत्तब्बानं विसिट्ठत्थानं। इदं वुत्तं होति—"यथा कालसद्दादि-अभिधेय्यानं कालादि-अत्थानं भिन्नसभावानं पि मास-सद्दाभिधेय्यभावेन अभेदो, एवं जाति-आदिभेदेन भिन्नानम्पि तेसं तिण्णं द्विन्नञ्च अत्थानं धम्म-सद्दाभिधेय्यभावेन नत्थि भेदो" ति। **विनि ॰ प० ॰॰॰माना** ति धम्म-सद्दस्स रूपाभेदे पि भेदकारणमाह। भिन्नजातियत्थवचनीयताय हि तस्सेवत्थभेदो ति।

[म०-३३] **साधेतुं** ति बोधेतुं। होतु असम्बन्धो, का नो हानीति कदाचि वदेय्या ति आसङ्काय आह "**पुब्बा ॰॰॰ प० ॰॰ नाम होन्ती**" ति। **सो चा** ति सभावधारणपच्चयधरियमा-

---

1. पयोजनभावा-सी०। 2. एवम्पि-सी०। 3. धम्मपदत्थाय-सी०।

पन नानत्थतं वदसीति पदानञ्च ते असम्बन्धो आपज्जति, नेव नापज्जतीति। नियमनत्थो **च**-सद्दो। [२६-सी०] **पुब्बापर ०प० निप्पयोजनानि नाम होन्ती** ति छक्कचतुक्कभावं अनिच्छन्तस्स, नानत्थतं पन इच्छन्तस्सा ति अधिप्पायो। अवस्सञ्च सम्बन्धो इच्छितब्बो पुब्बापरविरोधापत्तितो ति दस्सेतुं **"यापि चेसा"** ति आदिमाह। पुच्छा हि पदविप्पल्लासकरणेन धम्मा **एव** कुसला ति कुसलधम्म-सद्दानं इध उद्दिट्ठानं एकत्थतं दीपेति, तव **च** नानत्थतं वदन्तस्स नेव हि धम्मा कुसला ति कत्वा ताय पि पुच्छाय विरोधो आपज्जति, वुच्चति च तथा सा पुच्छा ति न नानत्थता युज्जति।

अपरो नयो ति "कुसला धम्मा" ति आदीनं द्विन्नं द्विन्नं एकत्थत्तमेव तिण्णं धम्मसद्दानं एकत्थनानत्थत्तेहि चोदेति। **तिण्णं धम्मानं एकत्ता** ति आदिम्हि यथा तीहि इन्द-सद्देहि वुच्चमानानं इन्दत्थानं इन्दभावेन एकत्ता ततो अनञ्ञेसं सक्क-पुरिन्दद-सहस्सक्खसद्दत्थानं एकत्तं, एवं तिण्णं धम्म-सद्दत्थानं धम्मभावेन एकत्ता ततो अनञ्ञेसं कुसलाकुसलाब्याकत-सद्दत्थानं एकत्तं आपज्जतीति अत्थो। **धम्मो नाम भावो** ति सभावधारणादिना अत्थेन धम्मो ति वुत्तो, सो च सभावस्सेव होति, नास-भावस्सा ति इमिना अधिप्पायेन वदति। होतु भावो ततो किं ति? यदि तिण्णं धम्मसद्दानं नानत्थता, तीसु धम्मेसु यो कोचि एको धम्मो भावो, ततो अनञ्ञं कुसलं अकुसलं अब्याकतं वा एकेकमेव भावो। भावभूता पन धम्मा अञ्ञे द्वे अभावा होन्तीति तेहि अनञ्ञे कुसलादीसु द्वे ये केचि अभावा। यो पि च सो एको धम्मो भावो ति गहितो, सो पि समानरूपेसु तीसु धम्मसद्देसु अयमेव भावत्थो होतीति नियमस्स अभावा अञ्ञस्स भावत्थत्ते सति अभावो होतीति ततो अनञ्ञस्स पि अभावत्तं आपन्नं ति कुसलादीनं सब्बेसम्पि अभावत्तापत्ति होति। न हि इन्दस्स अमनुस्सत्ते ततो अनञ्ञेसं सक्कादीनं मनुस्सत्तं अत्थीति।

[३५-म०] ननु[1] एवमपि[2] एकस्स भावत्तं विना अञ्ञेसं अभावत्तं[3] न सक्का वत्तुं, तत्थ च एकेनेव भावेन भवितब्बं ति नियमाभावतो तिण्णम्पि भावत्ते सिद्धे तेहि अनञ्ञेसं कुसलादीनम्पि भावत्तं[4] सिद्धं होतीति? न होति तिण्णं धम्म-सद्दानं

नतासङ्खातो अत्थो न सक्का वत्तुं ति यथावुत्तस्स अभावस्स अपेक्खावुत्तिताय वुत्तं। नहि अपेक्खावुत्तिनो अन्तरेन अपेक्खितब्बं लभन्ति। सति पि सभावधारणादि-अत्थसामञ्ञे कुसल-जाति-आदिविसिट्ठस्सेव तस्स इध अधिप्पेतत्ता एकत्थता न अनुञ्ञाता ति वुत्तं, 'वचनसिलेस-

१. नून-सी०। २. एवम्पि-सी०। ३. सभावत्तं-सी०। ४. भावत्थं-सी०।

नानत्थभावस्स अनुञ्ञातत्ता। न हि तिण्णं भावत्ते नानत्थता अत्थि, अनुञ्ञाता च सा तया ति। ननु तिण्णं धम्मानं अभावत्ते पि नानत्थता न सिया ति? मा होतु नानत्थता, तव पन नानत्थतं पटिजानन्तस्स "एसो दोसो" ति वदामि, न पन मया नानत्थता एकत्थता वा अनुञ्ञाता ति कुतो मे विरोधो सिया ति। अथ वा **अभावत्तं आपन्नेहि धम्मेहि अनञ्ञे कुसलादयो पि अभावा एव सियुं** ति इदं वचनं अनियमेन ये केचि द्वे धम्मा अभावत्तं आपन्ना, तेहि अनञ्ञेसं कुसलादीसु येसं केसञ्चि द्विन्नं कुसलादीनं अभावत्तापत्तिं सन्धाय वुत्तं एकस्स भावत्ता। यम्पि वुत्तं **"तेहि च अञ्ञो कुसलपरो पि अभावो सिया"** ति, तं अनियमदस्सनत्थं वुत्तं, न सब्बेसं अभावसाधनत्थं। अयं हि तत्थ अत्थो अकुसलपरस्स वा अब्याकतपरस्स वा धम्मस्स [२७–सी०] भावत्ते सति तेहि अञ्ञो कुसलपरो पि अभावो सिया ति।

सब्बमेतं अकारणं ति एत्थ कारणं नाम युत्ति। कुसलकुसलसद्दानं विय एकन्त-एकत्थतं, कुसलरूपचक्खुम-सद्दानं विय एकन्तनानत्थतञ्च विकप्पेत्वा यायं पुनरुत्ति

वसेन वा। **अथ वा** ति आदिना तिण्णं धम्मसद्दानं अभावत्तं असम्पटिच्छन्तो नात्थताभाव-दोसं परिहरति।

आपकहेतुभावतो उपपत्ति इध कारणं ति वुत्ता ति आह **"कारणं नाम युत्ती"** ति। **पुनरुत्ती** ति आदिना ननु "कुसलादीनम्पि एकत्तं आपज्जती" ति वुत्तत्ता एकत्तापत्ति पि वत्तब्बा ति? सच्चं वत्तब्बा, सा पन अभावापत्तियं एव अन्तोगधा नानत्ताभावचोदनासामञ्ञेन। भेदाभेदनिबन्धनत्ता विसेसनविसेसितब्बभावस्स सो अच्चन्तमभिन्नेसु नियमेन नत्थीति विसेसन-विसेसितब्बाभावेन अच्चन्ताभेदं दस्सेति, न पन अच्चन्तं अभिन्नेसु येव विसेसनविसेसितब्बाभावं। अथ वा अच्चन्तं अभिन्नेसु अविवटसद्दत्थविवरणत्थं पवत्ता। कस्मा? विसेसनविसेसितब्बाभावतो ति एवं योजना कातब्बा। अमित्तं अभिभवितुं सक्कुणाती ति सक्को, इन्दती ति इन्दो, पुरिमे ददाती ति पुरिन्ददो ति एवं किरियागुणादिपरिग्गहविसेसेन।

भेदाभेदवन्तेसू ति विसेससामञ्ञवन्तेसु। नील-सद्दो हि उप्पलसद्दसमायोगो रत्तुप्पल-सेतुप्पलादि-उप्पलजातिसामञ्ञतो विनिवत्तेत्वा नीलगुणयुत्तमेव उप्पलजातिविसेसं जोतेति। उप्पल-सद्दो पि नील-सद्दसमायुत्तो भमरङ्गारकोकिलादिगतनीलगुणसामञ्ञतो अविच्छिन्दित्वा उप्पलवत्थुगतमेव नीलगुणं पकासेती ति विसेसत्थसामञ्ञत्थयुत्तता पदद्वयस्स दट्ठब्बा। इमिना नयेन इतरत्रा पि भेदाभेदवन्तता योजेतब्बा। **ताय ताय अनुमतिया** ति तेन तेन सङ्केतेन। **ते ते वोहारा** ति अच्चन्तं अभिन्ने अत्थे परियायभावेन अच्चन्तं भिन्ने यथासकं अत्थ-विवरणभावेन भेदाभेदवन्ते विसेसनविसेसितब्बभावेन ता ता समञ्ञा पञ्ञत्तियो सिद्धा ति [म०–३४] अत्थो। **समाने** ति एकस्मिं। **कुसलादिभावं** ति कुच्छितसलनादिभावं।

छक्कचतुक्कापत्ति असम्बन्धविरोधाभावापत्ति दोसारोपनयुत्ति वुत्ता, सब्बा सा अयुत्ति, तथा एकत्थनानत्थताभावतो ति वुत्तं होति। या या अनुमति **यथानुमति** अनुमतिया अनुमतिया वोहारसिद्धितो। अनुमतिया अनुरूपं वा **यथानुमति**, यथा अनुमति पवत्ता, तथा तदनुरूपं वोहारसिद्धितो ति अत्थो। अनुमति हि विसेसनविसेसितब्बाभावतो

अभिधानत्थो पि हि अनवज्जसुखविपाकादि-अभिधेय्यत्थो विय सभावधारणादिसामञ्ञत्थं विसेसेती ति।

एत्थाह "किं पन कारणं तिका एव पठमं वुत्ता, न दुका, तिकेसु पि कुसलत्तिको व, न अञ्ञो, ति? वुच्चते—सुखग्गहणतो अप्पभेदतो च तिका एव पठमं वुत्ता। यस्मा तिकेहि बोधिते कुसलादिभेदे तब्बिभागभिन्ना हेतु-आदयो वुच्चमाना सुविञ्ञेय्या होन्ति। तथा हि "तयो कुसलहेतू" ति आदिना कुसलादिमुखेन हेतु-आदयो विभत्ता, कतिपयभेदा च तिका द्वावीसति परिमाणत्ता।

तेसु पन सब्बसङ्गह-असङ्कर-आदिकल्याणभावेन पठमं कुसलत्तिकं वुत्तं। निरवसेसा हि रूपारूपधम्मा कुसलत्तिकेन सङ्गहिता, न तथा वेदनात्तिकादीहि। ननु विपाकत्तिकादीहि पि निरवसेसा धम्मा सङ्गहिता ति? सच्चमेतं, तेसु पन अनवज्जसावज्जधम्मा न असङ्करतो वुत्ता यथा कुसलत्तिके। ननु च संकिलिट्ठसंकिलेसिकत्तिकादीसु पि ते असङ्करतो वुत्ता ति? एवमेतं, ते पन अकल्याणभूते पापधम्मे आदिं कत्वा वुत्ता, न एवमयं। अयं पन कल्याण-भूते पुञ्ञभवपरिनिब्बुतिनिप्फादके पुञ्ञधम्मे आदिं कत्वा वुत्तो। इति भगवा सण्हसुखुमं रूपारूपदेसनं आरभन्तो सब्बसङ्गह-असङ्कर-आदिकल्याणयोगतो पठमं कुसलत्तिकं देसेति, किञ्च तदञ्ञत्तिकानं सुखग्गहणतो। तथा हि कुसलत्तिकमुखेन "कामावचरकुसलतो चत्तारो सोमनस्ससहगतचित्तुप्पादा" ति आदिना वेदनात्तिकादयो विभत्ता ति।

कुसलत्तिके पि च पधानपासंस-उभयहितभावतो कुसला धम्मा पठमं वुत्ता। कुसला हि धम्मा सुखविपाकत्ता सब्बसङ्खतधम्मानं उत्तमा अवज्जविधमनतो विञ्ञुप्पसत्था इधलोकपरलोकेसु अत्था-वहा निस्सरणावहा च, तस्मा पधानादिभावेन पठमं वुत्ता, तप्पटिपक्खत्ता तदनन्तरं अकुसला, तदुभयविपविपरीतसभावा तदनन्तरं अब्याकता वुत्ता। कुसलवसेन वा अस्सादो, अकुसलवसेन आदीनवो, अब्याकतधम्मेसु निब्बानवसेन निस्सरणं ति इमिना अस्सादादिक्कमेन, कुसलेसु पतिट्ठाय पण्डिता अकुसले पजहन्ता अब्याकतधम्मभूतमग्गफलं निब्बानञ्च सच्छिकरोन्ती ति इमिना वा पटि-पत्तिक्कमेन अयमनुपुब्बी ठपिता ति वेदितब्बा।

[म०–३५] कस्मा पनेत्थ सेक्खत्तिकादीसु विय सरूपतो पुरिमपदद्वयपटिक्खेपवसेन ततियपदं न वुत्तं "नेव कुसला नाकुसला" ति? विसेसदीपनत्थं। यथा हि सेखासेक्खसभावेसु धम्मेसु कोचि

अच्चन्तमभिन्नेसु कत्थचि किरियागुणादिपरिग्गहविसेसेन[1] अविवटसद्दत्थविवरणत्थं पवत्ता यथा "सक्को इन्दो पुरिन्ददो" ति। कत्थचि अच्चन्तं[2] भिन्नेसु[2] यथा "धवो खदिरो पलासो च आनीयन्तु[3]" ति। कत्थचि विसेसनविसेसितब्बभावतो भेदाभेदवन्तेसु सेय्यथापि "नीलुप्पलं पण्डितपुरिसो" ति। ताय ताय अनुमतिया तदनुरूपञ्च ते ते वोहारा

पि धम्मो तदुभयसभावेन केनचि पि परियायेन कदाचि अब्याकरणीयो नाम नत्थीति सेक्खत्तिके पदद्वयपटिक्खेपवसेन "नेव सेक्खा-नासेक्खा" त्वेव वुत्तं, न एवं इध। इध पन कुसलसभावा एव धम्मा अग्गफलुप्पत्तिया तथा न ब्याकरणीया होन्ती ति इमस्स विसेसस्स दीपनत्थं "अब्याकता" ति वुत्तं। वचनमत्ते एव वा इदं नानाकरणं "अब्याकता नेव कुसला नाकुसला" ति ब्याकतसद्देन कुसलाकुसलानं बोधितत्ता ति।

एत्थ च अकुसलेसु तण्हाय सब्बाकुसलेहि, तेभूमककुसलाकुसलेहि वा समुदयसच्चं, तं-तं-अवसिट्ठतेभूमकधम्मेहि दुक्खसच्चं, लोकुत्तरकुसलेन मग्गसच्चं, अवसिट्ठ-अब्याकतविसेसेन निरोधसच्चं दस्सितं होति। तत्थ समुदयेन अस्सादो, दुक्खेन आदीनवो, मग्गनिरोधेहि निस्सरणं। किञ्चापि नामरूपपरिच्छेदभावतो सभावधम्मनिद्धारणपधाना अभिधम्मकथा, तेसं पन कुसलादिविसेसे निद्धारिते तस्स उपसम्पादेतब्बतादि पि अत्थतो वुत्तमेव होति। अकुसलानं धम्मानं पहानाय कुसलानं धम्मानं उपसम्पादाय "सब्बपापस्स अकरणं कुसलस्स उपसम्पदा" ति[4] एवमादिवचनतो हि कुसलादीनं उपसम्पादनादिदस्सनपरं भगवतो सासनं, तस्मा कुसलानं उपसम्पादनं अकुसलानं पहानञ्च उपायो, अब्याकतविसेसस्स सच्छिकिरियाफलं, कुसलादीनं उपसम्पादनादिअत्था देसना आणत्ती ति अयं देसनाहारो।

आरोग्यट्ठेन अनवज्जट्ठेन कोसल्लसम्भूतट्ठेन च कुसला, तप्पटिपक्खतो अकुसला, तदुभयविपरीततो अब्याकता, सभावधारणादि-अत्थेन धम्मा ति अनुपदविचिननं विचयो हारो।

पुज्जभवफलपरिनिब्बुति निप्फत्ति कुसलेही ति युज्जति सुखविपाकत्ता, अपायदुक्खसंसारदुक्खुप्पत्ति अकुसलेही ति युज्जति अनिट्ठफलत्ता, तदुभयफलानं अनुप्पत्ति अब्याकतेही ति युज्जति अविपाकधम्मत्ता ति अयं युत्तिहारो।

[म०-३६] कुसला धम्मा सुखविपाकस्स पदट्ठानं, अकुसला दुक्खविपाकस्स, अब्याकता कुसलाकुसलाब्याकतधम्मानं ति अयं पदट्ठानो हारो।

कुसलग्गहणेन ये अनवज्जसुखविपाका सुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता अदुक्खमसुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता विपाकधम्मधम्मा अनुपादिन्नुपादानिया अनुपादिन्न-अनुपादानिया....प०....अरणा धम्मा, ते

---

१. क्रिया०–सी०। २-२. अच्चन्तभिन्नेसु–सी०।
३. आदियन्तु–सी०। ४. खु० १ : ३५ धम्म० १८३ का०, दी० २ : ३९।

सिद्धा। तस्मा इहापि कुसलधम्म-सद्दानं विसेसनविसेसितब्बभावतो विसेसत्थसामञ्ञत्थ-परिग्गहेन समाने अत्थे भेदाभेदयुत्ते पवत्ति [३६–म०] अनुमता ति ताय ताय अनुमतिया तदनुरूपञ्च सिद्धो एसो वोहारो। तस्मा वुत्तं "सब्बमेतं अकारणं ति।

अत्तनो अत्तनो अत्थविसेसं तस्स दीपेन्ती ति अत्तना परिग्गहितं अत्तना वुच्चमानं अनवज्जसुखविपाकादिकुसलादिभावं धम्म-सद्दस्स दीपेन्ति तदत्थस्स तब्भावदीपन-

---

बोधिता भवन्ति कुसललक्खणेन एकलक्खणत्ता। तथा अकुसलग्गहणेन ये सावज्जदुक्खविपाका सुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता दुक्खाय वेदनाय सम्पयुत्ता अदुक्खमसुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता विपाकधम्मधम्मा अनुपादिन्नुपादानिया संकिलिट्ठसंकिलेसिका""प०"" सरणा धम्मा, ते बोधिता भवन्ति अकुसललक्खणेन एकलक्खणत्ता। तथा अब्याकतग्गहणेन ये अविपाकारहा सुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता दुक्खाय वेदनाय सम्पयुत्ता अदुक्खमसुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता विपाका धम्मा नेव-विपाक-न-विपाकधम्मधम्मा उपादिन्नुपादानिया अनुपादिन्नुपादानिया अनुपादिन्न-अनुपादानिया " प० '''अरणा धम्मा ते बोधिता भवन्ति अब्याकतलक्खणेन एकलक्खणत्ता ति अयं **लक्खणो हारो**।

"कुच्छिते पापधम्मे सलयन्ती" ति आदिना निरुत्ति वेदितब्बा, कुसलादिमुखेन रूपारूपधम्मे परिग्गहेत्वा विसुद्धिपरम्पराय "कथं नु खो सत्ता अनुपादिसेसनिब्बानभागिनो भवेय्युं" ति अयमेत्थ भगवता अधिप्पायो, निदानं असाधारणतो कुसलादिभेदेन बुज्झनकसत्ता। साधारणतो पन पाकटमेव। पठमं कुसलत्तिकस्स देसना विचारिता येवा ति अयं **चतुब्यूहो हारो**।

कुसलग्गहणेन कल्याणमित्तपरिग्गहो योनिसो-मनसिकारपरिग्गहो च। तत्थ पठमेन सकलं ब्रह्मचरियमावत्तत्ति, दुतियेन च योनिसो-मनसिकारमूलका धम्मा। अकुसलग्गहणेन वुत्तविपरियायेन योजेतब्बं। अब्याकतग्गहणेन पन सकलसंकिलेसवोदानपक्खो यथारहमावत्तती ति अयं **आवत्तो हारो**।

तत्थ कुसला भूमितो चतुधा विभत्ता, सम्पयुत्तपवत्ति-आकारादितो पन अनेकधा। अकुसला भूमितो एकधा विभत्ता, सम्पयुत्तादितो अनेकधा। अब्याकता पन विपाककिरियरूपनिब्बानवसेन चतुधा भूमिसम्पयुत्तादितो अनेकधा च विभत्ता ति अयं **विभत्ति हारो**।

[म०–३७] कुसला धम्मा अकुसलानं तदङ्गादिप्पहानाय वीतिक्कमादिप्पहानाय च संवत्तन्ति, अकुसला धम्मा कुसलानं अनुपसम्पज्जनाय, अब्याकतेसु असङ्खतधातु सब्बसङ्खतनिस्सरणाया ति अयं **परिवत्तो हारो**।

कुसला अनवज्जा पुञ्ञानी ति परियायवचनं, अकुसला सावज्जा अपुञ्ञानी ति परियायवचनं, अब्याकता अविपाकारहा नेव-आचयगामी न-अपचयगामिनो ति परियायवचनं ति अयं **वेवचनो हारो**।

वसेना ति अधिप्पायो। न हि धम्मसद्दो कुसलादिभावो होतीति। **इमिना वा** ति "धम्मसद्दो परियत्ति-आदीसु दिस्सती" ति आदिना "अत्तनो सभावं धारेन्ती" ति आदिना च नयेन। सो हि सब्बत्थ समानो, न कुसल-सद्दो आरोग्यादीसु दिस्सतीति

कुसलादयो "यस्मिं समये" ति आदिना पभवभूमिवेवचनपञ्ञत्तिवसेन यथासम्भवं परिञ्ञादिपञ्ञत्तिवसेन च पञ्ञत्ता ति अयं पञ्ञत्ति-हारो।

अकुसलानं कुच्छितानं पापधम्मानं सलनं कुसानं विय कुसानं वा रागादीनं लवनं एवंधम्मता ति अयं पटिच्चसमुप्पादमुखेन अवतरणं, तथा कुसेन ति लातबा कोसल्लसम्भूता वा ति पच्चयपटिबद्धवुत्तिताय पटिच्चसमुप्पाद""प०"" अवतरणं, पच्चयपटिबद्धवुत्तिताय वा आदि-अन्तवन्ता अनिच्चन्तिका वा ति अनिच्चतामुखेन अवतरणं, अनिच्चता एव उदयब्बयपटिपीळितताय दुक्खा ति दुक्खतामुखेन अवतरणं, निस्सत्त-निज्जीवट्ठेन धम्मा ति अब्यापारतो सुञ्ञतामुखेन अवतरणं, एवं कुसला ति चत्तारो खन्धा द्वायतनानि द्वे धातुयो ति आदिना खन्धायतन-धातादिमुखेन पि अवतरणं वेदितब्बं। इमिना नयेन अकुसलाब्याकतेसु पि अवतरणं दस्सेतब्बं ति अयं अवतरणो हारो।

कुसला ति आरम्भो, धम्मा ति पदसुद्धि, नो आरम्भसुद्धि। तथा अकुसला धम्मा अब्याकता ति धम्मा ति पन पदसुद्धि आरम्भसुद्धि वा ति अयं सोधनो हारो।

धम्मा ति सामञ्ञतो अधिट्ठानं तं अविकप्पेत्वा विसेसवचनं कुसलाकुसलाब्याकता ति। तथा कुसला धम्मा ति सामञ्ञतो अधिट्ठानं, तं अविकप्पेत्वा कामावचरं सोमनस्ससहगतं ति आदि विसेसवचनं। अकुसला धम्मा ति आदीसु पि एसेव नयो ति अयं अधिट्ठानो हारो।

कुसलानं धम्मानं नवमो खणो चत्तारि च सम्पत्तिचक्कानि योनिसो मनसिकारो एव वा हेतु, वुत्तविपरियायेन अकुसलानं धम्मानं हेतु, कुसलाकुसला धम्मा यथासम्भवं अब्याकतानं धम्मानं हेतू ति अयं परिक्खारो हारो।

[म०-३८] कुसला ति परिञ्ञेय्यग्गहणञ्चेव भावेतब्बग्गहणञ्च। अकुसला ति परिञ्ञेय्यग्गहणञ्चेव पहातब्बग्गहणञ्च। अब्याकता ति परिञ्ञेय्यग्गहणञ्चेव सच्छिकातब्बग्गहणञ्च। धम्मा ति परिञ्ञादीनं पवत्तनाकारग्गहणं। तेन परिञ्ञेय्यप्पहानभावनासच्छिकरणानि दीपितानीति तदङ्गादिवीतिक्कमादिप्पहानानि लोकियलोकुत्तरा च भावना दस्सिता ति अयं समारोपनो हारो।

कामञ्चेतं अविसेसतो सभावधम्मकथनं, विसेसवन्तो पन धम्मा विसेसतो निद्धारिता। तथा हि चित्तेनेव समथो नियमितो, तस्मा कुसलग्गहणेन विसेसतो साधिट्ठानो समथो विपस्सना च दस्सिता ति। तथा तप्पटिपक्खतो अकुसलग्गहणेन साधिट्ठाना तण्हा अविज्जा च, अब्याकतग्गहणेन सपरिवारा चेतोविमुत्ति पञ्ञाविमुत्ति चा ति अयं नन्दियावत्तस्स नयस्स भूमि।

"कुच्छिते सलयन्ती" ति आदिको[1], सो च विसेसनयो "इतो परं विसेसमत्तमेव वक्खामा" ति एतेन अपनीतो ति दट्ठब्बो। न हि कुसलादिविसेसं गहेत्वा पवत्ता सुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता ति आदयो विसेसा ति।

सुखस्स च पहाना ति[2] एत्थ सुखिन्द्रियं "सुखं" ति वुत्तं, तञ्च सुखवेदना व होतीति **"सुखवेदनायं दिस्सती"** ति वुत्तं, न पन "तिस्सो इमा भिक्खवे, वेदना सुखा वेदना" ति एवमादीसु[3] सुख-सद्दो विय सुखवेदनासद्देन[4] समानत्थत्ता। अयं हि सुखिन्द्रियत्थो सुख-सद्दो कायसुखनं कायानुग्गहं सातविसेसं गहेत्वा पवत्तो न पन सुखा[5] वेदना[5] "यं किञ्चि वेदनं वेदेति सुखं[6] वा, यो सुखं दुक्खतो" ति एवमादीसु[7] सुख-सद्दो विय सात-

---

तथा कुसलग्गहणेन मूलभावविसेसतो तीणि कुसलमूलानि, तेसु च अदोसेन सीलक्खन्धो, अलोभेन समाधिक्खन्धो, अमोहेन पञ्ञाक्खन्धो नीयति, तथा अकुसलग्गहणेन तीणि अकुसलमूलानि, तेसु च लोभेन तदेकट्ठा अकुसला धम्मा, तथा दोसमोहेहि तं-तदेकट्ठा। अब्याकतग्गहणेन अप्पणिहितानिमित्तसुञ्ञता नीयन्ती ति अयं तिपुक्खलस्स नयस्स भूमि।

तथा कुसलग्गहणेन यतो कोसल्लतो सम्भूता कुसला। तं पञ्ञिन्द्रियं। तंसहजाता तदुपनिस्सया च सद्दहनुस्सहनापिलापाविक्खेपा सद्धिन्द्रियादीनि। तेहि च सब्बे सद्धम्मा बोधिता भवन्ति। अकुसलग्गहणेन अकोसल्लपटिच्छादितादीनवेसु कायवेदनाचित्तधम्मेसु सुभसुखनिच्चअत्ताभिनिवेसभूता चत्तारो विपल्लासा। अब्याकतग्गहणेन यथावुत्त-इन्द्रियपच्चयानि यथावुत्तविपल्लासप्पहानभूतानि च चत्तारि सामञ्ञफलानि बोधितानीति अयं सीहविक्कीळितस्स नयस्स भूमी ति इमे तयो अत्थनया।

तेहि च सिद्धेहि द्वे कम्मनया पि सिद्धा होन्ती ति। अयं तिको सब्बधम्मसङ्गहितसब्बभागियो वेदितब्बो ति इदं सासनपट्ठानं।

अयं ताव वेत्तिनयेन कुसलत्तिकवण्णना।

[म०-३९] एवं वेदनात्तिकादीसु पि यथासम्भवं चतुसच्चनिद्धारणादिविधिना सोळस्स हारा पञ्च नया निद्दिसितब्बा, अतिवित्थारभयेन पन न वित्थारयाम। सक्का हि इमिना नयेन तेसु तेसु तिकदुकेसु तं-तं-हारनययोजनानुरूपधम्मनिद्धारणवसेन ते ते हारनया विञ्ञुना निद्दिसितुं ति।

२. तञ्च सुखिन्द्रियं सुखवेदना एव होति सामञ्ञस्स भेदपरियादानतो, भेदस्स च सामञ्ञपरिच्चागतो ति अधिप्पायो। यस्मा पन विसेससामञ्ञानि अवयवसमुदाया विय अञ्ञमञ्ञतो

---

१. आदितो–सी०। २. पहाणा ति–सी०। ३. सं० ३ : १८३।
४. सुखस्स वेदनासद्देन–सी०। ५-५. सुखवेदना–सी०। ६. म० १:३२७। ७. सं० ३:१८५।

सामञ्ञं गहेत्वा पवत्तो ति। यस्मिं सति सुखहेतूनं पवत्ति, तं सुखमूलं। **बुद्धुप्पादे च** कामसमतिक्कमादिके विरागे च सति सुखहेतूनं पुञ्ञपस्सद्धि-आदीनं पवत्ति होतीति तं **"सुखमूलं सुखं"** ति वुत्तं। सुखस्स च आरम्मणत्ता "रूपं सुखं" ति वुत्तं। **पुञ्ञानी** ति यदिदं वचनं, तं **सुखस्स च अधिवचनं** इट्ठविपाकस्स अधिवचनं तदत्थस्स इट्ठविपाक-विपच्चनतो[1] ति अत्थो। **सुखपच्चयानं** रूपादीनं इट्ठानं **ठानं** ओकासो सग्गा नन्दनञ्चा ति [२८-सी०] **"सुखा सग्गा सुखं नन्दनं"** ति वुत्तं। **दिट्ठधम्मे** ति इमस्मिं अत्तभावे। **सुखविहारा** ति पठमज्झानविहारादी[2]। नीवरणादिब्याबाधरहितत्ता **"अब्याबज्झा"** ति वुत्ता। सब्बसङ्खारदुक्खनिब्बापनतो तं निरोधत्ता वा "निब्बानं[3] सुखं" ति वुत्तं। आदि-सद्देन "अदुक्खमसुखं सन्तं, सुखमिच्चेव भासितं" ति अदुक्खमसुखे। "द्वेपि मया [३७-म०] आनन्द, वेदना वुत्ता परियायेन सुखा वेदना दुक्खा वेदना"[4] ति सुखो-पेक्खासु च इट्ठासू ति एवमादीसु पवत्ति सङ्गहिता।

दुक्खवत्थू ति दुक्खस्स ओकासो। अत्तनो पच्चयेहि उप्पज्जमानम्पि हि तं दुक्खं जाति-आदीसु विज्जमानेसु तब्बत्थुकं हुत्वा उप्पज्जति। **दुक्खपच्चये** ति दुक्खहेतुम्हि, दुक्खस्स जनके ति अत्थो। **दुक्खपच्चयट्ठाने** ति दुक्खजनककम्मस्स[5] सहायभूतानं अनिट्ठ-रूपादिपच्चयानं ठाने। पच्चयसद्दो हि जनके जनकसहाये च पवत्ततीति। **आदि-सद्देन**

भिन्नानि, तस्मा "न पन" प०"''समानत्थत्ता" ति वुत्तं। इदानि तमेव नेसं भिन्नतत्त्वं "अयं ही" ति आदिना विवरति। तं ति सुखहेतूनं कारणं। तेन सुखस्स कारणं सुखहेतु, सुखस्स कारणकारणं सुखमूलं ति दस्सेति। सुखहेतूनं ति एत्थ हेतु-सद्देन कारणभावसामञ्ञतो हेतुपच्चया सङ्गहिता ति आह "पुञ्ञपस्सद्धि-आदीनं" ति। एत्थ च सुखमूलसुखहेतूसु फलूपचारेन, सुखारम्मणसुखपच्चयट्ठानेसु सुखसहचरियाय, अब्यापज्जनिब्बानेसु दुक्खापगमभावेन सुखपरियायो वुत्तो ति दट्ठब्बो। इट्ठासू ति सुखुपेक्खानं विपरिणामाजाणसङ्खारदुक्खताय अनिट्ठभावो पि अत्थी ति विसेसेति। उपेक्खमेव वा अपेक्खित्वा विसेसनं कतं। सा हि अकुसलविपाकभूता अनिट्ठा पि अत्थी ति। एवमादीसू ति आदि-सद्देन "सोवग्गिकं सुखविपाकं" ति[6] एवमादिं सङ्गण्हाति। इट्ठपरियायो हि एत्थ सुख-सद्दो।

सङ्खारदुक्खादीसू ति एत्थ आदिसद्देन "ठितिसुखं विपरिणामदुक्खं, अकुसलं कायकम्मं दुक्खुद्रयं दुक्खविपाकं" ति आदिके सङ्गण्हाति। यथाक्कमं सुखवेदना दुक्ख-अनिट्ठपरियायो हि एत्थ दुक्ख-सद्दो ति। दुक्खवेदनादुक्खवत्थु-आदीसु दुक्खसद्दप्पवत्ति वुत्तनयेनेव योजेतब्बा। विपाका-

---

१. ०विपच्चनको—सी०। २. ०विहारादयो—सी०। ३. निब्बाणं—सी०।
४. सं० ३ : १९९। ५. दुक्खस्स जनक०—सी०। ६. दी० १ : ४५।

"यदनिच्चं तं दुक्खं" ति आदिना[1] सङ्खारदुक्खादीसु पवत्ति दट्ठब्बा। सम्पयुत्ते वत्थुं च करजकायं सुखयति लद्धस्सादे अनुग्गहिते करोतीति **सुखा**। सुखा ति वेदनासद्द-मपेक्खित्वा सुखभावमत्तस्स अप्पकासनेन नपुंसकलिङ्गता न कता। सभावतो सङ्कप्पतो च यं इट्ठं, तदनुभवनं इट्ठाकारानुभवनं वा **इट्ठानुभवं**।

समं ति अविसमं। समा एकीभावूपगता विय युत्ता, समं वा सह युत्ता ति योजे-तब्बं। **एकुप्पादा** ति एको समानो उप्पादो एतेसं ति **एकुप्पादा**, समानपच्चयेहि सहु-प्पत्तिका ति अत्थो। सहुप्पत्तिकानं रूपारूपानञ्च अञ्ञमञ्ञसम्पयुत्तता आपज्जेय्या ति **"एकनिरोधा"** ति वुत्तं, ये समानुप्पादा समाननिरोधा च, ते सम्पयुत्ता ति रूपारूपानं अञ्ञमञ्ञसम्पयोगो निवारितो होति। एवमपि[2] अविनिब्भोगरूपानं अञ्ञमञ्ञसम्प-युत्तता आपज्जेय्या ति **"एकवत्थुका"** ति वुत्तं, ये एकुप्पादा एकनिरोधा एकवत्थुका च, ते सम्पयुत्ता ति। एवमपि अविनिब्भोगरूपेसु एकं महाभूतं सेसमहाभूतोपादारूपानं

विपाकभेदाय सब्बाय पि सुखवेदनाय वसेन लक्खणस्स वुत्तत्ता तदुभयानुकूलमत्थं विवरन्तो "सभावतो" ति आदिमाह। तत्थ विपाका सभावतो इट्ठस्स अनुभवनलक्खणा। इतरा सभावतो सङ्कप्पतो च इट्ठस्स इट्ठाकारस्स वा अनुभवनलक्खणा ति दट्ठब्बं।

[म०-४०] असमानपच्चयेहि एकज्झं उप्पत्तितो समानपच्चयेहि एकज्झं उप्पत्ति सातिसया ति उक्कंसगतिविजाननवसेन "समानपच्चयेहि सहुप्पत्तिका ति अत्थो" ति वुत्तं। अथ वा उप्पज्जनं उप्पादो, उप्पज्जति एतस्मा ति उप्पादो ति दुविधो पि उप्पादो एकुप्पादा ति एत्थ एकसेसनयेन सङ्गहितो ति इमिना अधिप्पायेन "समा...प०....अत्थो" ति वुत्तं सिया। तेन तानि **एकवत्थुकानी** ति एतस्स च "कप्पेन्तस्सा" ति आदिना सम्बन्धो। तत्थ पुरिमविकप्पे एकं वत्थु निस्सयो एतेसं ति योजना, न एकं येव वत्थू ति। एकेकभूतस्स भूतत्तयनिस्सितत्ता चतुभूत-निस्सितत्ता च उपादारूपानं। दुतियविकप्पे पन एकं येव वत्थु एतेसु निस्सितं ति योजना। निस्सय-निस्सितत्तासङ्खात-उपकारोपकत्तब्बभावदीपनं एकवत्थुकवचनं ति दुतियविकप्पे महाभूतवसेन योजना कता। इतरथा एकं वत्थु एतेसू ति समासत्थभावेन उपादारूपानम्पि परिग्गहो वत्तब्बो सिया। **पञ्चविञ्ञाणसम्पटिच्छनानं** ति इदं निदस्सनं ति दट्ठब्बं। किरियमनोधातुचक्खुविञ्ञाणा-दयो पि हि एकारम्मणाभिन्नवत्थुका चा ति पाकटोयमत्थो ति। सन्तीरणादीनं ति आदि-सद्देन वोट्ठब्बनजवनतदारम्मणानि सङ्गण्हन्ति, एतानि च सम्पटिच्छनादीनि चुति-आसन्नानि इधाधिप्पेता-नीति दट्ठब्बं। तानि हि तदुद्धं कम्मजरूपस्स अनुप्पत्तितो एकस्मिं येव हदयवत्थुस्मिं वत्तन्ति, इतरानि पन पुरिमपुरिमचित्तक्खणुप्पन्ने हदयवत्थुस्मिं उत्तरुत्तरानि पवत्तन्ती ति। छसु वा वत्थूसु

---

१. सं० ३ : २५९, २७६, ३०९। २. एवम्पि–सी० सब्बत्थ।

निस्सयपच्चयो होतीति तेन तानि एकवत्थुकानीति, चक्खादिनिस्सयभूतानि वा भूतानि एकं वत्थु एतेसु सन्निस्सितं ति एकवत्थुकानीति कप्पेन्तस्स तेसं सम्पयुत्ततापत्ति सिया ति तन्निवारणत्थं **"एकारम्मणा"** ति वुत्तं, ये एकुप्पादा····प०····एकारम्मणा च होन्ति, ते सम्पयुत्ता ति। पटिलोमतो वा **एकारम्मणा** ति वुत्ते एकवीथियञ्च पञ्चविञ्ञाण-सम्पटिच्छनानं नानावीथियं परसन्ताने च एकस्मिं आरम्मणे उप्पज्जमानानं भिन्न-वत्थुकानं सम्पयुत्तता आपज्जेय्या ति **"एकवत्थुका"** ति वुत्तं, ये एकवत्थुका हुत्वा एका-रम्मणा, ते सम्पयुत्ता ति। एवमपि सम्पटिच्छनसन्तीरणादीनं सम्पयुत्तता आपज्जेय्या ति **"एकनिरोधा"** ति वुत्तं, ये [३८–म०] एकनिरोधा हुत्वा एकवत्थुका एकारम्मणा, ते सम्पयुत्ता ति। किं पन नानुप्पादा पि एवं तिविधलक्खणा होन्ति, अथ एकुप्पादा एवा ति विचारणाय एकुप्पादा एव एवं तिविधलक्खणा होन्तीति [२९–सी०] दस्सनत्थं **"एकुप्पादा"** ति वुत्तं।

विपक्कभावमापन्नानं अरूपधम्मानं ति यथा सालिबीजादीनं फलानि तंसदिसानि निब्बत्तानि विपक्कानि नाम होन्ति, विपाकनिरुत्तिञ्च लभन्ति, न मूलङ्कुरपत्तखन्ध-

---

एक हदयवत्थु 'येव' वत्थु एतेसं ति एवं पन अत्थे सति चुति-आसन्नतो इतरेसं सम्पटिच्छनादीनं गहणं सिया ति ञातब्बं।

एत्थाह—"कस्मा पनेत्थ कुसलत्तिकानन्तरं वेदनात्तिको व वुत्तो" ति ? किस्मिं पन वुच्चमाने अयमनुयोगो न सिया, अपि च अवयवानं अनेकभेदतादस्सनत्था तिकन्तरदेसना। सम्मासम्बुद्धेन हि कुसलत्तिकेन सब्बधम्मानं तिधा विभागं दस्सेत्वा पुन तदवयवानं कुसलादीनम्पि अनेकभेदभिन्नतं दस्सेन्तेन तेसं वेदनासम्पयोगविभागविभावनत्थं "सुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता" ति वुत्तं। कुसला हि धम्मा सिया सुखावेदनाय सम्पयुत्ता, सिया अदुक्खमसुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता। अकुसला धम्मा सिया सुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता, सिया दुक्खाय वेदनाय सम्पयुत्ता, सिया अदुक्खमसुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता, तथा अब्याकता सम्पयोगारहा ति। एवं [म०–४१] कुसलादिधम्मानं पच्चेकं वेदना-भेदेन विभागदस्सनत्थं कुसलत्तिकानन्तरं वेदनात्तिकं वत्वा इदानि सुखसम्पयुत्तादीनं पच्चेकं विपाकादिभेदभिन्नतं दस्सेतुं वेदनात्तिकानन्तरं विपाकत्तिको वुत्तो। सुखसम्पयुत्ता हि धम्मा सिया विपाका, सिया विपाकधम्मधम्मा, सिया नेवविपाकनविपाकधम्मधम्मा। तथा अदुक्खमसुखसम्पयुत्ता, दुक्खसम्पयुत्ता पन सिया विपाका, सिया विपाकधम्मधम्मा ति इमिना नयेन अवसेसत्तिकानं दुक्खानञ्च तस्स तस्स अनन्तरवचने पयोजनं विभावेतब्बं।

विपाकनिरुत्तिञ्च लभन्ती ति तेसु विपाकसद्दस्स निरुळ्हतं दस्सेति। **सुक्ककण्हादी** ति आदि-सद्देन अकण्ह-असुक्कफस्सादिभावो परिपरिग्गहितो। सति पन पाक-सद्दस्स फलपरियायभावे रूपं विय न निहीनो पक्कं विय विसिट्ठो पाको ति **विपाको** ति एवं वा एत्थ अत्थो

नाळानि, एवं कुसलाकुसलानं फलानि अरूपधम्मभावेन सारम्मणभावेन सुक्ककण्हादि-भावेन च तंसदिसानि विपक्कभावमापन्नानीति विपाकनिरुत्तिं लभन्ति, न रूपधम्मा कम्मनिब्बत्ता पि कम्मासदिसा ति[1] दस्सेतुं वुत्तं। **जातिजरासभावा** ति जायनजीरण-सभावा। **विपाकपकतिका** ति विपच्चनपकतिका। विपच्चनसभावता च अनुपच्छिन्ना-विज्जातण्हामानसन्ताने सब्यापारता।

तेन अभिञ्ञादिकुसलानं भावनाय पहातब्बादि-अकुसलानञ्च विपाकानुप्पादने पि विपाकधम्मता सिद्धा होति। **विपक्कभावं** ति चेत्थ भाव-सद्देन सभावो एव वुत्तो। तं यथावुत्तं विपक्कसभावं दुतियस्स वुत्तं विपच्चनसभावञ्च गहेत्वा **"उभयसभावपटिक्खे-पवसेना"** ति आह।

उपेतेन आदिन्ना उपादिन्ना। किं पन तं उपेतं, केन च उपेतं, कथञ्च उपेतं, के

दट्ठब्बो। **सब्यापारता** ति स-उस्साहता। **सन्ताने सब्यापारता** ति एतेन चित्तप्पयोगसङ्खातेन किरियाभावेन विपाकधम्मानं सन्तानविसेसमाह "यतो यस्मिं चित्तुप्पादे कुसलाकुसला चेतना, तंसन्ताने एव तस्सा विपाकुप्पत्ती" ति। एत्थ च "सब्यापारता" ति एतेन आवज्जनद्वयं विपाकञ्च निवत्तेति, "अनुपच्छिन्नाविज्जातण्हामाने" ति इमिना अवसिट्ठं किरियं निवत्तेति। उभयेन पि अनुसयसहाय-स-उस्साहतालक्खणा विपाकधम्मधम्मा ति दस्सेति। लोकुत्तरकुसलानम्पि हि अनुसया उपनिस्सया होन्ति, यतो "कतमे धम्मा कुसला ? यस्मिं समये लोकुत्तरं "प०…"तस्मिं समये अविज्जापच्चया सङ्खारा" ति आदिना[2] अरियमग्गचेतनाय अविज्जा-उपनिस्सयता पटिच्चसमुप्पादविभङ्गे पकासिता। निरुस्साहसन्तभावलक्खणा विपाका, उभय-विपरीतलक्खणा नेवविपाकनविपाकधम्मधम्मा ति।

अभिञ्ञादिकुसलानं ति आदि–सद्देन "अहोसि कम्मं नाहोसि कम्मविपाको[3]" ति इमिना तिकेन सङ्गहितं गति-उपधिकालपयोगाभावेन अविपाकं दिट्ठधम्मवेदनीयं उपपज्जवेदनीयञ्च सङ्गण्हाति। अपरापरियवेदनीयं पन संसारप्पवत्तियं अहोसिकम्मादिभावं न भजति। **भावनाय पहातब्बादी** ति **आदि**-सद्देन दस्सनेन पहातब्बं सङ्गण्हाति। उभयम्पि "विपाकानुप्पादने" ति वचनतो गति-उपधिकालपयोगाभावेन अनुप्पन्नविपाकमेव अधिप्पेतं भावनाय पहातब्बस्स पि [४२-म०] पवत्तिविपाकस्स अनुजाननतो। येसं पन भावनाय पहातब्बा अविपाका, तेसं मतेन आदि–सद्देन दस्सनेन पहातब्बस्स अहोसिकम्मं ति एवंपकारस्सेव परिग्गहो ति वेदितब्बं।

"कथमादिन्ना" ति अयम्पि पञ्हो लब्भति। "फलभावेना" ति हि आदानप्पकारवचनं;

---

१. कम्मसदिसा ति–सी०। २. अभि० २ : २३२ (विभंगे)।
३. खु० ४ : ३२२ (पटिसम्भिदामग्गे)।

च तेन आदिन्ना ति ? सति च लोकुत्तरानं केसञ्चि आरम्मणभावे तन्निवत्तनत्थं उपेत-सद्दसम्बधिना उपय[1]-सद्देन वुच्चमानाहि चतुब्बिधुपादानभूताहि तण्हादिट्ठीहि उपेतं तेहि च आरम्मणकरणवसेन उपेतं, न समन्नागमवसेन। सति च सब्बतेभूमकधम्मानं उपादानारम्मणत्ते येहि विपाककटत्तारूपानि अम्हेहि निब्बत्तत्ता अम्हाकं एतानि[2] फलानीति गण्हन्तेहि विय आदिन्नानि, तानि तेभूमककम्मानि कम्मभावेन एकत्तं उपनेत्वा उपेतं ति इध गहितानि। तेहि च निब्बत्तानि विपाककटत्तारूपानि उपादिन्ना धम्मा ति सब्बमेतं दस्सेतुं **"आरम्मणकरणवसेना"** ति आदि वुत्तं। अयञ्च अत्थनयो **यथासम्भवं** योजेतब्बो, **न वचनानुपुब्बेना** ति। एत्थाह—यदि आरम्मणकरणवसेन तण्हादिट्ठीहि उपेतेन आदिन्ना उपादिन्ना, सब्बतेभूमकधम्मा च तण्हादीनं आरम्मणा होन्ति, न च उपेतसद्दो कम्मे एव निरुळ्हो, तेन कम्मस्सेव गहणे कारणं नत्थि, तस्मा [३९-म०] **सब्बतेभूमकधम्मपच्चयुप्पन्नानं** अविज्जादिहेतूहि निब्बत्तानं सङ्खारादिफलानं उपादिन्नत्तं आपज्जति तेसम्पि तेहि फलभावेन गहितत्ता। **उप-सद्देन** च उपेततामत्तं जोतितं, न आरम्मणकरणं समन्नागमनिवत्तकं, **आदिन्नसद्देन** च गहिततामत्तं वुत्तं, न कम्मसमुट्ठानताविसेसो **तस्मा सब्बपच्चयुप्पन्नानं** उपादिन्नत्तं आपज्जतीति ? **नापज्जति**, बोधनेय्यज्झासयवसेन देसनापवत्तितो। येसं हि बोधनत्थं "उपादिन्ना ति एतं वुत्तं, ते तेनेव वचनेन यथावुत्तप्पकारे धम्मे बुज्झिंसु, एतरहि पन तावता बुज्झितुं असक्कोन्तेन सुत्वा तदत्थो वेदितब्बो ति एसा अत्थविभावना कता **कम्मुना"** ति।

केसञ्चि गोत्रभुपच्चवेक्खणादीनं उपेतकिरियभूतानं तं कत्तुभूतानञ्च अत्थानं उपेतब्बसम्बन्धभावतो तद-भिधायिनो पि सद्दा सम्बन्धा एवा ति **"उपेतसद्दसम्बन्धिना'** ति वुत्तं। उपेतं ति हि उपेतब्बत्थे वुच्चमाने अवस्सं उपेतकिरिया उपेता च ञायतीति। "रूपधातुया खो पन गहपति, यो छन्दो यो रागो या नन्दी या तण्हा ये उपयुपादाना, चेतसो अधिट्ठाना अभिनिवेसा अनुसया" ति आदिसु "उपयो" ति तण्हादिट्ठियो अधिप्पेता ति आह **"उपय....प०....दिट्ठीही"** ति। **यथासम्भवं** ति "आरम्मणकरणवसेना" ति आदिना अट्ठकथायं वुत्त-अत्थेसु यो यो सम्भवति योजेतुं, सो सो ति अत्थो। **न वचनानुपुब्बेना** ति "किं पन तं उपेतं" ति आदिना वुत्तवचनानुपुब्बेन न योजेतब्बो। **सब्बपच्चयुप्पन्नानं** ति सब्बतेभूमकपच्चयुप्पन्नानं। **नापज्जति** सामञ्ञजोतनाय विसेसे अवट्ठानतो विसेसत्थिना च विसेसो अनुपयुज्जती ति तं पन विसेसं वुत्तप्पकारं नियमेत्वा दस्सेतुं **"बोधनेय्या"** ति आदि वुत्तं।

---

१. उप–सी० २. एव तानि–सी०।

अयं पन अपरो अत्थो दट्ठब्बो—उपसद्दो उपेतं दीपेति। अयं हि उप-सद्दो समासे पयुज्जमानो "अतिमाला" ति आदिसु अति-सद्दो विय अतिक्कमनं ससाधनं उपगमनं [३०–सी०] ससाधनं वदति, उपगमनञ्च उपादान[1]-उपयो तेन उपगतं उपेतं। किं पन तं ति? यं असति उपादाने न होति, तं "उपादानपच्चया भवो" ति एवं वुत्तं तेभूमककम्मं पच्चयभावेन पुरिमजातुप्पन्नेन उपादानेन उपगतत्ता "उपेतं" ति वुच्चति। न हि कोचि अनुपगम्म अनिच्छन्तो कम्मं करोतीति। तेन **उपेतेन कम्मुना** पुनब्भवस्स आदानं होति। कम्मुना हि सासवेन सत्ता आदियन्ति पुनब्भवं, तस्मा आदातब्बभावेन पाकटो **पुनब्भवो**। सो च उपपत्तिभवो तेभूमकविपाककटत्तारूपसङ्गहो "भवपच्चया जाती" ति एत्थ जाति-वचने समवरुद्धो ति उपादिन्नवचनेन उपपत्तिभवो वुच्चति, उपपत्तिभवो च तेभूमकविपा-ककटत्तारूपानीति धातुकथायं पकासितमेतं। तस्मा **उपेतेन आदिन्ना** ति ते एव धम्मा वुच्चन्तीति सिद्धो अयमत्थो ति। उपादिन्न-सद्दस्स अत्थं वत्वा तं विस्सज्जेत्वा उपादा-नियसद्दस्स विसुं उपादिन्नसद्दानपेक्खं अत्थं वत्थु[2] **"आरम्मणभावं उपगन्त्वा"** ति आदिमाह। तस्मा एव अविसेसेत्वा **"उपादानस्स आरम्मणपच्चयभूतानमेतं अधिवचनं"** ति वुत्तं। तं पन उपादानियं उपादिन्नं अनुपादिन्नं ति दुविधं। तस्मा तं विसेसनेन दस्सेन्तो **"उपादिन्ना च ते उपादानिया चा"** ति आदिमाह।

उपेतं दीपेती ति यथा "पाचरियो" ति एत्थ पगतो आचरियो पाचरियो ति प-सद्दो पगतं दीपेति, एवं उप-सद्दो उपेतं दीपेति एव, न चेत्थ गतादि-अत्थानं एकन्तेन पच्चत्तवचन-योगो इच्छितो ति। **अतिसद्दो विया** ति च इदं ससाधनकिरियादीपनसामञ्ञेन वुत्तं ति दट्ठब्बं। **पच्चयभावेना** ति एतेन पुरिमनिब्बत्ति विसेसेति। तेन सहजातस्स पि उपादानस्स सङ्गहो कतो होति। सहजातो पि हि धम्मो पच्चयभूतो पुरिमनिप्फन्नो विय वोहरीयति यथा "एकं महाभूतं पटिच्च तयो महाभूता"ति, "एकं खन्धं पटिच्च तयो खन्धा,, ति[3] च। **धातुकथायं पकासितं** ति "उपपत्तिभवो पञ्चहि खन्धेहि एकादसहायतनेहि सत्तरसहि धातूहि सङ्गहितो। कतिहि असङ्गहितो? न केहिचि खन्धेहि एकेनायतनेन एकाय धातुया असङ्गहितो"ति[4] [म०–४३] एवमादिं सन्धायाह। **तस्मा एवा** ति उपादिन्नसद्दानपेक्खत्ता एव। **अविसेसेत्वा** ति उपादिन्नानुपादिन्नविसेसं अकत्वा। उपादानानं आरम्मणभावानतिवत्तनतो। उपादानेहि उपादातब्बा ति वा उपादानिया। उपादातुं वा अरहन्तीति उपादानिया। उपादाने नियुत्ता ति वा उपादानिया। क-कारस्स य-कारं कत्वा ति एव-मेत्थ अत्थो दट्ठब्बो ति।

---

१. उपादानं–सी०। २. वत्तुं–सी०।
३. पट्ठाने १ : २०। ४. अभि० ३ : १७ धातु०।

संकिलेसो ति दस किलेसवत्थूनि वुच्चन्ति। **संकिलिट्ठा** ति तेहि विबाधिता उपतापिता च। ते पन यस्मा संकिलेससम्पयुत्ता एकुप्पादादीहि निन्नानत्ता एकीभावमिव गता विसादीहि-विय सप्पि-आदयो [४०-म०] विदूसिता मलीना विबाधिता उपतापिता च नाम होन्ति, तस्मा आह **"संकिलेसेन समन्नागता संकिलिट्ठा"** ति। **संकिलेसं अरहन्ती** ति संकिलेसस्स आरम्मणभावेन तं लद्धुं अरहन्तीति अत्थो। **आरम्मणभावानतिक्कमनतो** ति[1] एतेन संकिलेसानतिक्कमनमेव दस्सेति, वत्थयुग्गिकसुङ्कसालिकसद्दानं[2] विय संकिलेसिक-सद्दस्स पवत्ति वेदितब्बा।

सह वितक्केन होन्तीति वचनसेसो योजेतब्बो अवुच्चमानस्स पि[3] भवति-अत्थस्स विञ्ञायमानत्ता। **मत्ता** ति पमाणवाचकं एकं पदं ति गहेत्वा **"विचारो व मत्ता एतेसं"** ति अत्थो वुत्तो। अञ्ञत्थ अविप्पयोगीसु वितक्कविचारेसु विचारो व एतेसं मत्ता, ततो उद्धं वितक्केन सम्पयोगं न गच्छन्तीति अत्थो। अयमपरो अत्थो—मत्तसद्दो विसेस-निवत्ति-अत्थो। सवितक्कसविचारा[4] धम्मा हि वितक्कविसिट्ठेन विचारेन सविचारा, एते पन विचारमत्तेन वितक्कसङ्खातविसेसरहितेन, तस्मा **"विचारमत्ता"** ति वुच्चन्ति, विचारमत्तवन्तो ति अत्थो। विचारमत्तवचनेन अवितक्कत्ते सिद्धे अवितक्कानं अञ्ञे-सम्पि अत्थिभावजोतनत्थं अवितक्कवचनं। अवितक्का हि विचारमत्ता च सन्ति अविचारा चा ति निवत्तेतब्बा गहेतब्बा च होन्ति, तेसु अवुच्चमानेसु निवत्तेतब्बगहे-

---

विबाधनं पीळनं किलमनं उपतापो परिळाहो अप्पस्सद्धिभावो। विदूसिता मलीना च यतो केचि अकिलेससभावा पि अनिट्ठफला गारह्या च जाता।

"सीलमत्तकं, परं विय मत्ताया ति आदीसु मत्ता-सद्दस्स पमाणवाचकता दट्ठब्बा। मरियाद-वाचको वा मत्ता-सद्दो। विचारो हेत्थ झानङ्गेसु हेट्ठिममरियादो, न पठमज्झान-उपचारज्झानेसु विय वितक्को। सा पन विचारमरियादता वितक्काभावेन एतेसं जाता ति अवितक्कग्गहणं कतं। इदं वुत्तं होति—अवितक्का हुत्वा विचारमरियादझानङ्गेसु विचारहेट्ठिमकोटिका ति। अथ वा ईसदत्थो मत्ता-सद्दो "मत्ता सुखपरिच्चागा" ति आदीसु[5] विय। अयं हेत्थ अत्थो—वितक्करहिता भावनाय अतिसुखुमभूतविचारत्ता ईसं विचारा च अवितक्कविचारमत्ता ति। नहि इतो परं विचारो अत्थी ति। यदि वितक्कविसेसरहिता विचारमत्ता, एवं सन्ते अवितक्कवचनं किमत्थियं ति आह "विचारमत्त-वचनेना" ति आदि। यदि विचारमत्ततो अञ्ञेसम्पि अवितक्कानं अत्थिभावजोतनत्थं अवितक्कवचनं, अवितक्का च विचारमत्ता अविचारा ति निवत्तेतब्बा गहेतब्बा च, एवं सति विचारमत्ता विसेसनं,

---

१. तिक्कमणतो ति-सी० सब्बत्थ। २. वत्थुयुग्गिक०-सी०। ३. ०मानस्सापि-सी०।
४. सवितक्का अविचारा-सी०। ५. खु० १ : ४४; का० २९० (धम्मपदे)।

तब्बस्स अदस्सितत्ता विचारमत्ता व अवितक्का ति आपज्जेय्या ति। विसेसनविसेसितब्बभावो पन यथाकामं होतीति सामञ्ञेन अवितक्कभावेन [३१-सी०] सह विचारमत्तताय धम्मविसेसनभावं[१] दस्सेतुं **"अवितक्कविचारमत्ता"** ति पदानुक्कमो कतो।

अथ वा सविचारा दुविधा सवितक्का अवितक्का च, तेसु अवितक्के निवत्तेतुं आदिपदं वुत्तं। अविचारा च दुविधा सवितक्का अवितक्का च, तेसु सवितक्के निवत्तेतुं ततियपदं वुत्तं। ये पन द्वीहि पि निवत्तिता अवितक्का सवितक्का च सविचारा अविचारा च, तेसु अञ्ञतरदस्सनं वा कत्तब्बं सिया उभयदस्सनं वा। उभयदस्सने करियमाने यदि "सवितक्कसविचारा" ति वुच्चेय्य, आदिपदत्थता व आपज्जति। अथ "अवितक्क-अविचारा" ति वुच्चेय्य, अन्तपदत्थता। अथ पन "अवितक्कसविचारा सवितक्क-अविचारा" ति वुच्चेय्य, अज्झत्तबहिद्धानं विय अत्थन्तराभावो वा सङ्करदोसो वा एकस्सेव सवितक्कावितक्कतासविचाराविचारताविरोधो वा आपज्जेय्य, [४१-म०] तस्मा अञ्ञतरदस्सनेन इतरम्पि पकासेतुं अवितक्कवचनेन द्विप्पकारेसु वत्तब्बेसु सवितक्क-अविचारे निवत्तेत्वा अवितक्कसविचारे दस्सेन्तो आह **"अवितक्क-विचारमत्ता"** ति। अथ वा वितक्काभावेन एते विचारमत्ता, न विचारतो अञ्ञस्स कस्सचि धम्मस्स अभावा ति दस्सेतुं अवितक्कवचनेन विचारमत्ता विसेसिता।

अवितक्का विसेसितब्बा ति विचारमत्ता वितक्का ति वत्तब्बं ति चोदनं मनसिकत्वा आह **"विसेसनविसेसितब्बभावो"** ति आदि। **यथाकामं** ति वत्तु-इच्छानुरूपं। येन येन हि पकारेन धम्मेसु निवत्तेब्ब-गहेतब्बभावा लब्भन्ति, तेन तेन पकारेन विसेसन-विसेसितब्बभावो सम्भवतीति। पदानं अनुक्कमो पदानुक्कमो।

अवितक्का सवितक्का च सविचारा अविचारा चा ति अवितक्का सविचारा सवितक्का अविचारा ति योजेतब्बं। उभयेकदेसदस्सनम्पि उभयदस्सनं ति अधिप्पायेन **"यदि सवितक्कस-विचारा"** ति आदि वुत्तं। **इतरम्पि** [४४-म०] **पकासेतुं** ति इदं यथा सवितक्कसविचारेसु चित्तुप्पादेसु वितक्को अवितक्कसविचारताय "अवितक्कविचारमत्तो" ति वुत्तो, एवं यथावुत्त-चित्तुप्पादेसु विचारो 'सवितक्क-अविचारो" ति सक्का विञ्ञातुं ति इममत्थं सन्धाय वुत्तं। **वितक्काभावेन एते विचारमत्ता** यि अयम्पि अत्थो विसेसनिवत्ति-अत्थं येव मत्ता-सद्दं गहेत्वा वुत्तो। विचारमत्ता ति हि विचारमत्तवन्तो ति विञ्ञायमानत्ता तदञ्ञविसेसविरहसामञ्ञतो निवत्तेत्वा वितक्कविसेसविरहसङ्खाते अवितक्क-सद्दो सन्निधापितो विसेसे ति दुतियज्झानधम्मे ति। यथाह **"न विचारतो"** ति आदि।

---

१. धम्मविसेसभावं-सी०।

उपेक्खती ति वेदयमाना पि[1] मज्झत्तवेदना सुखाकारे दुक्खाकारे च उदासिना[2] होतीति अत्थो। अथ वा उपेता युत्ता सुखदुक्खानं अविरुद्धा इक्खा अनुभवनं **उपेक्खा** **विसेसदस्सनवसेना** ति नानत्तदस्सनवसेन। यदि हि पीतिसहगता एव सुखसहगता सियुं, "पीतिसहगता" ति एतेनेव सिद्धत्ता "सुखसहगता" ति इदं न वत्तब्बं सिया, "सुखसहगता" ति वा वुच्चमाने "पीतिसहगता" ति न वत्तब्बं, ततो तिकं पूरेन्तेन दुक्खसहगतपदं वत्तब्बं सिया, एवञ्च सति "वेदनात्तिको एवायं" ति वुत्तवचनं आपज्जति, तस्मा "पीतिसहगता" ति वत्वा "सुखसहगता" ति वदन्तो पीतिविप्पयुत्तम्पि सुखं अत्थीति ततियज्झानकायविञ्ञाणसम्पयुत्तं सुखं सप्पीतिकसुखतो भिन्नं कत्वा दस्सेतीति अधिप्पायो।

अथ वा पीतिसुखानं दुब्बिञ्ञेय्यनानत्तानं नानत्तदस्सनत्थं अयं तिको वुत्तो। "पीतिसहगता" ति एत्थ हि सुखेकदेसो सङ्गहितो, न पीति। 'सुखसहगता', ति एत्थ पीति सङ्गहिता, न सुखं। पीतिविप्पयुत्तसुखसहगता च पुरिमेन असङ्गहिता पच्छिमेन सङ्गहिता ति सिद्धो पीतिसुखानं विसेसो ति।

वेदयमाना ति अनुभवमाना। **सुखाकारे** ति इट्ठाकारे, इट्ठानुभवनाकारे वा। **उदासिना** ति नति-अपनतिरहिता। **सुखदुक्खानं अविरुद्धा** तेसं ब्यवधायिकाभावतो। सुखदुक्खानि विय हि सुखदुक्खानं अनन्तरं पवत्तनतो ब्यवधायिकाभूता न तेहि विरुज्झति, न पन सुखदुक्खानि अनन्तरापवत्तितो। "उपपत्तितो इक्खतीति उपेक्खा" ति अयं पनत्थो इध उपेक्खा-सद्दस्स सब्बुपेक्खापरियादानतो न वुत्तो। न हि लोभसम्पयुत्तादि-उपेक्खा उपपत्तितो इक्खतीति। **तस्मा** ति यस्मा पीतिसहगता येव न सुखसहगता, सुखसहगता पि न पीतिसहगता एवा ति पीतिसहगता सुखसहगता च अञ्ञमञ्ञं भिन्ना, तस्मा। सति पि सुखसहगतानं येभुय्येन पीतिसहगतभावे येन सुखेन समन्नागता सुखसहगता एव होन्ति, न पीतिसहगता, तं सुखं निप्पीतिकसुखं ति अयं विसेसो इमिना तिकेन दस्सितो ति इममत्थं विभावेन्तो **"पीतिसहगता ति वत्वा"** ति आदिमाह।

सिद्धो ति सावसेसं निरवसेसं च सुखपीतियो सङ्गहेत्वा पवत्तेहि पठमदुतियपदेहि यो पीतिसहगतो धम्मविसेसो, तं सुखं, यो च सुखसहगतो धम्मविसेसो, सा पीतीति सति पि अञ्ञमञ्ञं संसट्ठभावे पदन्तरसङ्गहितभावदीपनतो सिद्धो ञातो विदितो ति अत्थो। "चतुत्थज्झानसुखं अतिपणीतसुखं ति ओळारिकङ्गतो नीहरित्वा तस्स पणीतभावं दस्सेतुं अयं तिको वुत्तो" ति केचि वदन्ति, तदेतं सब्बेसं सुखवेदनासम्पयुत्तधम्मानं इध "**सुखसहगता**" ति वुत्तत्ता विचारेतब्बं। तथा हि "सुखभूमियं कामावचरे" ति आदिना[3] [म०-४५] "कामावचरकुसलतो चत्तारो सोमनस्ससहगतचित्तुप्पादा" ति आदिना[4] च निद्देसो पवत्तो ति।

---

१. वेदियमाना पि–सी०। २. उदासीना–सी०।
३. अभि० १ : २८० ध० सं०। ४. अभि० १ : ३२९ ध० सं०।

निब्बानं[1] दस्सनतो ति[1] निब्बानारम्मणतं सन्धायाह। अथ वा धम्मचक्खु पुनप्पुनं निब्बत्तनेन भावनाभावं अप्पत्तं दस्सनं नाम, धम्मचक्खु च परिञ्ञादिकिच्च-करणेन चतुसच्चधम्मदस्सनं तदतिसयो, तस्मा नत्थेत्थ गोत्रभुस्स दस्सनभावापत्तीति। **उभयपटिक्खेपवसेना** ति द्वीहि पदेहि वुत्तधम्मपटिक्खेपवसेन, न पहायकपटिक्खेपवसेन। तथा हि सति दस्सनभावनाहि अञ्ञो समुच्छेदवसेन पहायको अत्थि, तेन पहातब्बा नेव दस्सनेन न भावनाय पहातब्बा ति अयमत्थो आपज्जति, न च अञ्ञो पहायको अत्थि अञ्ञेहि विक्खम्भितानञ्च पुनप्पवत्तिसब्भावा,[2] नापि पहातब्बा ततियपदेन सङ्गय्हन्ति, [म०-४२] किन्तु [सी०-३२] अप्पहातब्बा एवा ति। तस्मा पहात-ब्बपदं पच्चेकं योजेत्वा नेवदस्सनेन पहातब्बा न भावनाय पहातब्बा ति दस्सनेन भावनाय पहातब्बेहि अञ्ञे गहिता ति वेदितब्बा।

एवमत्थं अग्गहेत्वा ति अत्थायुत्तितो च सद्दायुत्तितो च अग्गहेतब्बतं दस्सेति। दस्सनभावनाहि अप्पहातब्बहेतुमत्तेसु हि गय्हमानेसु अहेतुका असङ्गहिता ति यथा-धिप्पेतस्स अत्थस्स अपरिपुण्णत्ता अत्थायुत्ति, पहातब्बसद्दस्स निच्चसापेक्खत्ते च सति

निब्बानारम्मणतं सन्धायाह न निब्बानपटिविज्झनं, इतरथा गोतभुस्स दस्सनभावापत्ति अचोदनीया सिया ति अधिप्पायो। ननु च दिस्वा कत्तब्बकिच्चकरणेन सोतापत्तिमग्गो व दस्सनं ति उक्कंसगतिविजाननेन निब्बानस्स पटिविज्झनमेव दस्सनं ति गोत्रभुस्स दस्सनभावापत्ति न चोदेतब्बा वा ति? न, दस्सनसामञ्ञस्सेव युज्जमानत्ता दस्सनकत्तब्बकिच्चकरणानञ्च भेदेन वुत्तत्ता। तत्थ यदि पि "पञ्ञाय चस्स दिस्वा आसवा परिक्खीणा होन्ती" ति आदीसु[3] विय अभिन्नकालस्स पि भिन्नकालस्स विय भेदोपचारदस्सनतो भेदवचनं युत्तं, दस्सनविसेसे पन अधिप्पेते दस्सनसामञ्ञवचनं न कत्तब्बं ति दस्सनसामञ्ञमत्तं गहेत्वा चोदना कता ति "निब्बानारम्मणतं सन्धायाहा' ति वुत्तं। दुतियततियमग्गानम्पि धम्मचक्खुपरियायसब्भावतो "भावनाभावं अप्पत्तं" ति वुत्तं। तत्थ भावना वड्ढना। सा च बहुलं उप्पत्तिया होति ति आह "पुनप्पुनं निब्बत्तनेना" ति। तथा हि सती ति "उभयपटिक्खेपवसेना" ति पदस्स दस्सनभावनापटिक्खेपवसेना ति अत्थे सति। ननु लोकियसमथविपस्सना पि यथाबलं कामच्छन्दा-दीनं पहायका, तत्र कथमिदं वुत्तं, न च अञ्ञो पहायको अत्थी ति चोदनं सन्धायाह "अञ्ञेही" ति आदि।

अप्पहातब्बहेतुमत्तेसू ति अप्पहातब्बहेतुकमत्तेसु। सब्बो कुसलाब्याकतधम्मो यथाधि-प्पेतत्थो। समासो न उपपज्जति असमत्थभावतो। येसं ति ये ततियरासिभावेन वुत्ता धम्मा,

---

१-१. निब्बाणदस्सनतो ति–सी०। २. ०सभावा–सी०। ३. म० २ : १६७–१६८।

न सम्बन्धीसद्दतो पहायकतो अञ्ञं पटिसेधं अपेक्खमानस्स हेतुसद्देन समासो उपपज्जतीति सद्दायुत्ति च वेदितब्बा। **एवमत्थो गहेतब्बो** ति[1] पहातब्ब-सद्दं पटिसेधेन अयोजेत्वा येसं अञ्ञपदत्थे समासो, तब्बिसेसनं अत्थीति इदं पटिसेधेन योजेत्वा दस्सनभावनाहि पहातब्बो हेतु एतेसं नेवत्थीति अत्थो गहेतब्बो ति वुत्तं होति। एवञ्च सति यथाधिप्पेतत्थो सब्बो सङ्गहितो ति। अत्थायुत्ति मा होतु, सद्दो पन इधापि न युत्तो। एकन्तयोगीनं अत्थि-सद्दमेव हि अपेक्खमानानं उभिन्नं पहातब्बहेतु-सद्दानं समासो युत्तो, न पटिसेधं अपेक्खमानानं ति, तस्मा गहेतब्बत्थदस्सनमत्तं एतं कतं, सद्दो पन यथा युज्जति, तथा योजेतब्बो। एवं पन युज्जति—पहातब्बो हेतु एतेसं अत्थीति पहातब्बहेतुका। केन पहातब्बो ति? दस्सनेन भावनाय च। तयिदं पहातब्बहेतुकपदं दस्सनभावनापदेहि विसुं विसुं योजेत्वा तेहि युत्तेन ये दस्सनेन पहातब्बहेतुका नेव होन्ति, भावनाय पहातब्बहेतुका च न होन्तीति पटिसेधञ्च विसुं विसुं योजेत्वा ते नेव दस्सनेन न भावनाय पहातब्बहेतुका ति वुच्चन्ति। नेव-विपाक-नविपाकधम्मधम्मवचनं विय हि[2] पुरिमपदद्वयसङ्गहितधम्मपटिसेधनेन तदञ्ञ-धम्मनिदस्सनमेतं होति, न अहेतुकपदं विय हेतुविरहप्पकासनेना ति। एवञ्च कत्वा द्वे पटिसेधा युत्ता होन्ति।

हेतु येव हि तेसं नत्थि, यो दस्सनभावनाहि पहातब्बो सिया ति पुरिमस्मिं हि अत्थे हेतूनं दस्सनभावना हि पहातब्बता पटिक्खित्ता, पटिक्खेपो च पहातब्बासङ्का-सब्भावे[3] होति, पहातब्बासङ्का च हेतुम्हि सति सिया, तेसं पन अहेतुकानं हेतु येव नत्थि, यो दस्सनभावनाहि पहातब्बो सिया, तदभावा [म०-४३] पहातब्बासङ्का नत्थीति तं निवारणत्थो पटिक्खेपो न सम्भवति, तस्मा "नेवदस्सनेन न[4] भावनाय

अत्थो तेसं। उभिन्नं ति विसुं विसुं योजेतब्बताय द्वे पहातब्बहेतुसद्दा ति कत्वा वुत्तं। एतं ति "नेवदस्सनेन न भावनाय पहातब्बो हेतु एतेसं अत्थी"ति एतं वचनं। तेहि दस्सनभावना-पदेहि युत्तेन पहातब्बहेतुकपदेन। एवञ्च कत्वा ति एवं दस्सनभावनापदेहि पहातब्बहेतुक-पदस्स विसुं विसुं योजनतो। एवं हि पुरिमपदद्वय""प०""दस्सनमेतं होती ति। एवं ति दस्सनभावनाहि न पहातब्बो हेतु एतेसं ति एवं अत्थे सति।

"हेतु""प०""[म०-४६] सिया" ति एतस्स "पुरिमस्मिं हि अत्थे" ति आदिना अहेतुकानं अग्गहितभावदस्सनवसेन अत्थं वत्वा इदानि "अथ वा" ति आदिना दुतियस्सेव अत्थस्स

---

१. गहेतब्बेति–सी०। २. एवं हि–सी०।
३. पहातब्बो सङ्कासभावो–सी०। ४. नत्थि–सी०।

पहातब्बो हेतु एतेसं" ति एवं अहेतुकानं गहनं न भवेय्या ति अत्थो। अथ वा **इतरथा हि अहेतुकानं अग्गहणं भवेय्या**[१] ति अत्थस्स पाकटत्ता न कारणसाधनीयो एसो ति गहेतब्बत्थस्सेव कारणं वदन्तो **"हेतु येव हि तेसं**[२] **नत्थी"** ति आदिमाह। तेसं हि नेवदस्सनेन न भावनाय पहातब्बहेतुकपदवचनीयानं यो दस्सनभावनाहि पहातब्बो सिया, सो एवंपकारो हेतु नत्थि। ते हि अनेकप्पकारा सहेतुका अहेतुका चा ति, तस्मा नेवदस्सनेन न भावनाय पहातब्बो हेतु एतेसं [३३-सी०] अत्थीति अयमत्थो गहेतब्बो ति अत्थो।

तं आरम्मणं कत्वा ति इदं चतुकिच्चसाधनवसेन आरम्मणकरणं सन्धाय वुत्तं ति वेदितब्बं। अञ्ञथा गोत्रभुफलपच्चवेक्खणादीनम्पि अपचयगामिता[३] आपज्जेय्या ति। अथ वा हेतुभावेन अपचयं निब्बानं[४] गच्छन्तीति **अपचयगामिनो**। निब्बानस्स हि अनिब्बत्तनियत्ते पि[५] समुदयप्पहान-समुदयनिरोधानं अधिगम-अधिगन्तब्बभावतो हेतु-हेतुफलभावो मग्गनिब्बानानं युज्जति। यथाह "दुक्खनिरोधे ञाणं अत्थपटिसम्भिदा, दुक्खनिरोधगामिनिया पटिपदाय ञाणं धम्मपटिसम्भिदा" ति[६]। अत्थो ति हि

युत्तभावं विभावेन्तो **"गहेतब्बत्थस्सेवा"** ति आदिमाह। सो हि "एवमत्थो गहेतब्बो" ति वुत्तत्ता गहेतब्बत्थो।

अञ्ञथा ति आरम्मणकरणमत्ते अधिप्पेते। कथं पनेतं जानितब्बं "आरम्मणं कत्वा ति एतेन चतुकिच्चसाधकं आरम्मणकरणं वुच्चती" ति? सामञ्ञजोतनाय विसेसे अवट्ठानतो अरियमग्ग-धम्मानं येव च अपचयगामिभावतो। "चत्तारो मग्गा अपरियापन्ना अपचयगामिनो" ति[७] हि वुत्तं। तेनेवाह "अरियमग्गानं एतं अधिवचनं" ति एतेनेव वा विसेसुपलक्खणहेतुभूतेन वचनेन यथावुत्तो आरम्मणकरणविसेसो विञ्ञायति। उक्कंसगतिविजाननेन वा अयमत्थो वेदितब्बो। **पच्चवेक्खणादीनं** ति वोदानादयो सङ्गण्हाति। **हेतुभावेना** ति सम्पापकहेतुभावेन। ञापको कारको सम्पापको ति तिविधो हि हेतु, तथा ञापेतब्बादिभावेन फलं। यथा निरयादिमनुस्सभावादिगामिपटिपदाभावतो अकुसललोकियकुसलचित्तुप्पादा "आचयगामिनो धम्मा" ति वुत्ता, न मिच्छादिट्ठि-आदि-लोकियसम्मादिट्ठि-आदिधम्मा एव, एवं निब्बानगामिपटिपदाभावतो लोकुत्तरकुसलचित्तुप्पादा "अपचयगामिनो" ति दट्ठब्बा, अरियमग्गधम्मा एवा ति इममत्थं दस्सेन्तो आह "पुरिमपच्छिमानं" ति आदि। तत्थ अरियमग्गस्सेव निब्बानगामिपटिपदाभावो

---

१. न भवे०-सी०। २. एतेसं-सी०। ३. अपचयगामितं-सी०।
४. निब्बाणं-सी० सब्बत्थ। ५. नियत्थे पि-सी०।
६. अभि० २ : ३५० विभंगे। ७. अभि० १-२३४; २९९ ध० सं०

हेतुफलं। **धम्मो** ति हेतू ति। पुरिमपच्छिमानं[1] पुरिमे ससम्पयुत्ता वुत्ता, पच्छिमे केवला[1]। पुरिमे विय पन पच्छिमे अत्थे ति अरियमग्गसीसेन सब्बलोकुत्तरकुसलचित्तुप्पादा गहेतब्बा। दुतिये अत्थविकप्पे "आचयं गामिनो" ति वत्तब्बे अनुनासिकलोपो कतो ति दट्ठब्बो। आचिनन्तीति वा आचया, आचया हुत्वा गच्छन्ति पवत्तन्तीति पि अत्थो दट्ठब्बो।

सत्त पन सेक्खा सिक्खनसीला ति[2] सेक्खा, तेसं इमेति **सेक्खा,** अञ्ञासाधारणा मग्गफलत्तयधम्मा। **सयमेव सिक्खन्ती** ति सिक्खनसीलानमेतं निदस्सनं। ये हि धम्मा सिक्खन्ति च सिक्खनसीला होन्तीति। अक्खरत्थो पन सिक्खा एतेसं सीलं ति सेक्खा ति **न सेक्खा** ति यत्थ सेक्खभावासङ्का अत्थि, तत्थायं पटिसेधो ति [४४–म०] लोकियनिब्बानेसु असेक्खभावानापत्ति दट्ठब्बा। सीलसमाधिपञ्ञासङ्खाता हि सिक्खा अत्तनो पटिपक्खकिलेसेहि विप्पमुत्ता परिसुद्धा उपक्किलेसानं आरम्मणभावम्पि अनुपगमनतो एता सिक्खा ति वत्तुं युत्ता, अट्ठसु मग्गफलेसु विज्जन्ति, तस्मा चतुमग्गहेट्ठिमफलत्तयधम्मा विय अरहत्तफलधम्मा पि तासु सिक्खासु जाता ति च, तं सिक्खासमङ्गिनो

परिब्यत्तो ति तस्सेव अपचयगामिभावो युत्तो, तदनुवत्तकत्ता पन सेसधम्मे सङ्गहेत्वा वुत्तं। अपचये दुक्खपरिजाननादिना सातिसयं गमनं येसं ते अपचयगामिनो ति "मग्गा एव अपचयगामिनो" ति वुत्तं। पुरिमपच्छिमानं ति च इमस्मिं तिके पठमपददुतियपदसङ्गहितानं अत्थानं ति अत्थो। "जयं वेरं पसवति[3], चरं वा यदि वा तिट्ठं" ति आदीसु[4] विय सानुनासिको आचय-सद्दो ति "अनुनासिकलोपो कतो" ति वुत्तं। एत्थ च "आचिनं" ति वत्तब्बे "आचयं" ति ब्यत्तयवसेन वुत्तं ति दट्ठब्बं। **आचया हुत्वा गच्छन्ती** ति एतेन अपचिनन्ती ति अपचया, अपचया हुत्वा गच्छन्ति पवत्तन्ती ति अयमत्थो नयतो दस्सितो ति दट्ठब्बं।

११. [४७-म०] लोकियेसु असेक्खभावानापत्ति दट्ठब्बा ति कस्मा एवं वुत्तं, ननु—

"सिक्खती ति खो भिक्खु, तस्मा सेक्खो ति वुच्चति। किञ्च सिक्खति? अधिसीलम्पि सिक्खति अधिचित्तम्पि सिक्खति अधिपञ्ञम्पि सिक्खति। सिक्खती ति खो भिक्खु, तस्मा सेक्खो ति वुच्चति[5]। यो पि कल्याणपुथुज्जनो अनुलोमपटिपदाय परिपूरकारी सीलसम्पन्नो इन्द्रियेसु गुत्तद्वारो भोजने मत्तञ्ञू जागरियानुयोगमनुयुत्तो पुब्बरत्तापररत्तं बोधिपक्खियानं धम्मानं भावनानुयोगमनुयुत्तो विहरति 'अज्ज वा स्वे वा अञ्ञतरं सामञ्ञफलं अधिगमिस्सामी' ति, सो पि सिक्खती ति सेक्खो" ति

१-१. सी० पोत्थके अयं पाठो न दिस्सति। २. सिक्खणसीला ति–सी० सब्बत्थ।
३. खु० १ : ३१; का० २०१ धम्मपदे; सं० १ : ८३। ४. खु० १ : २३७ इति०।
५. अं० १ : २१४।

अरहतो इतरेसं विय सेक्खत्ते सति सेक्खस्स एते ति च, सिक्खा सीलं एतेसं ति च सेक्खा ति आसङ्कितब्बा सियुं ति तदासङ्कानिवत्तनत्थं "असेक्खा" ति यथावुत्तसेक्खभावपटिसेधो कतो। अरहत्तफले हि पवत्तमाना सिक्खा परिनिट्ठितसिक्खाकिच्चत्ता न सिक्खाकिच्चं करोन्ति, केवलं सिक्खाफलभावेनेव पवत्तन्ति, तस्मा ता न सिक्खावचनं अरहन्ति, नापि तं समङ्गिनो सेक्खवचनं, न च तं-सम्पयुत्ता सिक्खनसीला ति सिक्खासु जाता ति आदि-अत्थेहि अग्गफलधम्मा सेक्खा न होन्ति, हेट्ठिमफलेसु पन सिक्खा सकदागामिमग्गविपस्सनादीनं उपनिस्सयभावतो सिक्खाकिच्चं करोन्तीति सिक्खावचनं अरहन्ति, तं समङ्गिनो च सेक्खवचनं तं-सम्पयुत्ता च सिक्खनसीलवुत्तीति तत्थ धम्मा यथावुत्तेहि अत्थेहि सेक्खा होन्ति एव।

सेक्खा ति वा अपरियोसितसिक्खा दस्सिता। अनन्तरमेव "असेक्खा" ति वचनं परियोसितसिक्खानं दस्सनं ति न लोकियनिब्बानानं असेक्खतापत्ति। बुद्धिपत्ता वा **सेक्खा** ति एतस्मिं अत्थे सेक्खधम्मेसु एव केसञ्चि बुद्धिप्पत्तानं असेक्खता आपज्जति, तेन अरहत्तमग्गधम्मा बुद्धिपत्ता च यथावुत्तेहि च अत्थेहि सेक्खा ति कत्वा असेक्खा आपन्ना ति? न, तंसदिसेसु तब्बोहारा। अरहत्तमग्गतो हि [३४-सी०] निन्नानाकरणं अरहत्तफलं ठपेत्वा परिञ्ञादिकिच्चकरणं विपाकभावञ्च, तस्मा ते एव सेक्खा धम्मा अरहत्तफलभावं आपन्ना ति सक्का वत्तुं कुसलसुखतो च विपाकसुखं सन्ततरताय पणीततरं ति बुद्धिप्पत्ता च ते धम्मा होन्तीति **असेक्खा** ति वुच्चन्तीति।

किलेसविक्खम्भनासमत्थतादीहि **परित्ता**। "किलेस...प...ताया" ति अत्थ-

---

वचनतो यथावुत्तकल्याणपुथुज्जनस्स पि सीलादिधम्मा सेक्खा ति वुच्चन्ती ति? न, परियायभावतो। निप्परियायेन हि **सेक्खासेक्खभावो** यथासम्भवं मग्गफलधम्मेसु एवा ति लोकियेसु सेक्खभावासङ्काभावतो **असेक्खभावानापत्ति** वुत्ता। तेनेवाह "**सीलसमाधी**" ति आदि। अरहत्तफलधम्मा पि सिक्खाफलभावेन पवत्तनतो हेट्ठिमफलधम्मा विय सिक्खासु जाता ति आदि अत्थेहि सेक्खा सियुं, हेट्ठिमफलधम्मा पि वा सिक्खाफलभावेन पवत्तनतो अरहत्तफलधम्मा विय असेक्खा ति चोदनं मनसिकत्वा "**परिनिट्ठितसिक्खाकिच्चत्ता**" ति वुत्तं, तथा "**हेट्ठिमफलेसु पना**" ति आदि। "तं एव सालिं भुञ्जामि, सा एव तित्तिरी, तानि एव ओसधानी" ति आदीसु तं-सदिसेसु **तब्बोहारो** दट्ठब्बो। एतेन च सेक्खसदिसा असेक्खा यथा "अमनुस्सो" ति वुत्तं होतीति अञ्ञे। अञ्ञत्थ "अरिट्ठं" ति आदीसु वुद्धि-अत्थे पि अ-कारो दिस्सती ति वुद्धिप्पत्ता सेक्खा असेक्खा ति अयम्पि अत्थो वुत्तो।

१२. **किलेसविक्खम्भनसमत्थताया** ति इदं निदस्सनमत्तं दट्ठब्बं। वितक्कादिविक्खम्भनसमत्थता पि हेत्थ लब्भती ति। अकुसलविद्धंसनरसत्ता वा कुसलानं तत्थ सातिसयकिच्चयुत्ततं

त्तयम्पि कुसलेसु युज्जति, विपाककिरियेसु दीघसन्तानता व। पमाणकरेहि वा ओळारिकेहि कामतण्हादीहि परिच्छिन्ना **परित्ता**। तेहि अपरिच्छिन्नत्ता सुखुमेहि रूपतण्हादीहि परिच्छिन्ना पमाणमहत्तं गता ति **महग्गता**। अपरिच्छिन्ना **अप्पमाणा**।

[४५–म०] **अतप्पकट्ठेना** ति दिवसम्पि पच्चवेक्खियमाना लोकुत्तरधम्मा तित्तिं न जनेन्ति समापज्जियमाना पि फलधम्मा ति।

मातुघातादीसु पवत्तमाना पि हितसुखं इच्छन्ता वा पवत्तीति ते धम्मा हितसुखावहा मे भविस्सन्तीति आसीसिता होन्ति, तथा असुभासुखानिच्चानत्तेसु सुभादिविपरियासदळ्हताय आनन्तरियकम्मनियतमिच्छादिट्ठीसु पवत्ति होतीति ते धम्मा असुभादीसु सुभादिविपरीतप्पवत्तिका होन्ति। **मिच्छासभावा** ति मुसासभावा। अनेकेसु आनन्तरियेसु कतेसु यं तत्थ बलवं तं विपच्चति, न इतरानीति एकन्तविपाकजनकताय नियतता न सक्का वत्तुं ति **"विपाकदाने सती"** ति आदिमाह। तत्थ **खन्धभेदानन्तरं** ति चुति-अनन्तरं। चुति हि **मरणनिद्देसे**[1] "खन्धानं भेदो" ति वुत्ता ति। एतेन वचनेन सति फलदाने चुति-अनन्तरो एव, न अञ्ञो एतेसं फलकालो ति फलकालनियमेनेव नियतता वुत्ता होति, न[2] फलदान-

---

परित्तधम्मेहि महग्गतानं पकासेतुं "किलेसविक्खम्भनसमत्थताया" ति वुत्तं। **विपाककिरियेसु** दीघसन्तानता व, न किलेसविक्खम्भनसमत्थता विपुलफलता [म०-४८] **चा** ति अत्थो। "विपुलं फलं विपुलफलं" ति एवं पन अत्थे गय्हमाने विपाकेसु पि विपुलफलता लब्भतेव। सो पि एकसेसनयेन अट्ठकथायं वुत्तो ति वेदितब्बो। **महन्तेहि गता पटिपन्ना** ति अयं पनत्थो तिण्णम्पि साधारणो ति। गुणतो अयं एत्तको ति सत्तानं पमाणं करोन्ता विय पवत्तन्ती ति ओळारिका किलेसा **"पमाणकरा"** ति वुत्ता। तेहि परितो खण्डिता परिच्छिन्ना ति **परित्ता**। सति पि केहिचि परिच्छिन्नत्ते महापमाणभावेन गता पवत्ता ति **महग्गता**। परिच्छेदकरानं किलेसानं सुखुमानम्पि अगोचरभावतो तेहि न कथञ्चि पि परिच्छिन्ना वीतिक्कन्ता ति **अपरिच्छिन्ना अप्पमाणा**, यतो ते **"अपरियापन्ना"** ति पि वुच्चन्ति।

१४. **तित्तिं न जनेन्ति** सन्ततरताय असेचनकभावतो। एत्थ च "पमाणकरेही" ति आदिको अत्थविकप्पो "अतप्पकत्थेना" ति आदिकाय हीनत्तिकपदवण्णनाय परतो बहूसु पोत्थकेसु लिखीयति, यथाट्ठाने एव पन आनेत्वा वत्तब्बो।

१५. लोकियसाधुजनेहि पि अतिजिगुच्छनीयेसु आनन्तरियकम्मनत्थिकवादादीसु पवत्ति विना विपल्लासबलवभावेन न होती ति **"विपरियासदळ्हताया"** ति वुत्तं। **एतेना** ति **"विपाकदाने सती"** ति आदिना सति पि कालनियमे विपाकुप्पादने सासङ्कवचनेन। **तस्मा** ति यस्मा

---

१. अभि० २ : १२६ विभंगे। २. नत्थि–सी०।

नियमेना ति नियतफलकालानं अञ्ञेसम्पि उपपज्जवेदनीयानं दिट्ठधम्मवेदनीयानम्पि नियतता आपज्जति, तस्मा विपाकधम्मधम्मानं पच्चयन्तरविकलतादीहि अविपच्चमानानं पि अत्तनो सभावेन विपाकधम्मता विय बलवता आनन्तरियेन विपाके दिन्ने अविपच्चमानानम्पि आनन्तरियानं फलदाने नियतसभावा आनन्तरियसभावा च पवत्तीति अत्तनो सभावेन फलदाननियमेनेव नियतता आनन्तरियता च वेदितब्बा। अवस्सञ्च नियतसभावा आनन्तरियसभावा च तेसं पवत्तीति सम्पटिच्छितब्बमेतं अञ्ञस्स बलवतो आनन्तरियस्स अभावे चुति-अनन्तरं **एकन्तेन** फलदानतो।

ननु एवं अञ्ञेसम्पि उपपज्जवेदनीयानं अञ्ञस्मिं विपाकदायके असति चुति-अनन्तरमेव एकन्तेन फलदानतो आनन्तरियसभावा नियतसभावा च पवत्ति आपज्जतीति? नापज्जति, असमानजातिकेन चेतोपणिधिवसेन उपघातकेन च निवत्तेतब्बविपाकत्ता अनन्तरेकन्तफलदायकत्ताभावा, न[1] पन[1] आनन्तरियकानं पठमज्झानादीनं दुतिज्झानादीनि विय असमानजातिकं फलनिवत्तकं अत्थि सब्बानन्तरियकानं अवीचिफलत्ता न च हेट्ठुपपत्तिं इच्छतो सीलवतो चेतोपणिधि विय उपरूपपत्तिजनककम्मफलं[2] आनन्तरियकफलं निवत्तेतुं [४६–म०] समत्थो चेतोपणिधि अत्थि अनिच्छन्तस्सेव अवीचिपाततो, न च आनन्तरियकोपघातकं किञ्चि कम्मं अत्थि तस्मा [३५–सी०] तेसं येव अनन्तरेकन्तविपाकजनकसभावा[3] पवत्तीति।

अनेकानि च आनन्तरियकानि कतानि एकन्ते विपाके सन्नियतत्ता उपरताविपच्चनसभावासङ्कत्ता निच्छितानि सभावतो नियतानेव। चुति-अनन्तरं पन फलं अनन्तरं नाम, तस्मिं अनन्तरे नियुत्तानि तन्निब्बत्तनेन अनन्तरकरणसीलानि अनन्तर-

---

यथावुत्तनयेन नियतताय अतिप्पसङ्गो दुन्निवारो, तस्मा। बलवता....प०....पवत्ती ति एतेन असमानजातिकेन अनिवत्तनीयविपाकतं, समानजातिकेन च विपाकानुप्पादने पि अनन्तरं विपाकुप्पादनसमत्थताय अविहन्तब्बतं आनन्तरिकानं दस्सेति। यतो तेसं विपाकधम्मता विय सभावसिद्धा नियतानन्तरियता। अञ्ञस्स...प०...दानतो ति इमिना पि असमानजातिकादीहि अनिवत्तनीयफलतं एव विभावेति।

चोदको अधिप्पायं अजानन्तो "ननू" ति आदिना अतिप्पसङ्गमेव चोदेति। इतरो "नापज्जती" ति आदिना अत्तनो अधिप्पायं विवरति।

एकन्ते ति अवस्सम्भाविनि। सन्नियतत्ता ति सम्पादने जनने नियतभावतो। उपरता अविपच्चनसभावासङ्का येसु तानि उपरताविपच्च....प०....सङ्कानि, तब्भावो उप...प०....सङ्कत्तं

१–१. तं पन–सी०। २. उपरुपत्ति०–सी०। ३. अन्तरेकन्त०–सी०।

प्पयोजनानि चा ति सभावतो आनन्तरियकानेव च होन्ति। तेसु पन समानसभावेसु एकेन विपाके दिन्ने इतरानि अत्तना कत्तब्बस्स किच्चस्स तेनेव कतत्ता न दुतियं ततियम्पि च पटिसन्धिं करोन्ति, न समत्थताविघातत्ता ति नत्थि तेसं नियतानन्तरियतानिवत्तीति। न हि समानसभावं समानसभावस्स समत्थतं विहनतीति। एकस्स पन अञ्ञानि पि उपत्थम्भकानि होन्तीति दट्ठब्बानीति। **सम्मा सभावा** ति सच्चसभावा।

परिपुण्णमग्गकिच्चत्ता चत्तारो अरियमग्गा व इध "मग्गा" ति वुत्ता। **पच्चयट्ठेना** ति मग्गपच्चयट्ठेन। निक्खेपकण्डे पि हि ये मग्गपच्चयं लभन्ति, न पन सयं मग्गपच्चयभावं गच्छन्ति, ते मग्गहेतुका ति दस्सेतुं "अरियमग्गसमङ्गिस्स मग्गङ्गानि ठपेत्वा" ति आदि वुत्तं। यो पन तत्थेव "अरियमग्गसमङ्गिस्स अलोभो अदोसो अमोहो, इमे धम्मा मग्गहेतू" ति[1] आदि नयो वुत्तो, तं दस्सेतुं **"मग्गसम्पयुत्ता वा"** ति आदि वुत्तं। "अरियमग्गसमङ्गिस्स सम्मादिट्ठि मग्गो चेव हेतु चा" ति आदिना पन वुत्तनयं दस्सेतुं **"सम्मादिट्ठि सयं"** ति आदिमाह। तत्थ पन असङ्गहितसङ्गण्हनवसेन पटिपाटिया तयो नया वुत्ता, हेतुबहुतावसेन ततियो नयो इध दुतियो वुत्तो।

अभिभवित्वा[2] **पवत्तनत्थेना** ति सहजाताधिपति पि पुब्बाभिसङ्खारवसेन जेट्ठकभावे पवत्तमानो सहजाते अत्तनो वसे अनुवत्तयमानो ते अभिभवित्वा पवत्तति, आरम्मणाधिपति पि तदारम्मणे धम्मे तथेव अत्तानं अनुवत्तयमानो ते धम्मे अभिभवित्वा आरम्मणभावेन पवत्तति, न पच्चुप्पन्नभावेन, तस्मा अधिपतिद्वयम्पि सङ्गहितं ति वेदि-

---

तस्मा। "न [म०-४९] **समत्थताविघातत्ता** ति बलवता पि आनन्तरियेन अनुपहन्तब्बतं आह। **उपत्थम्भकानि** अनुबलप्पदायकानि होन्ति उप्पत्तिया सन्तानस्स विसेसितत्ता। तेन नेसं विपाकानुप्पादने पि अमोघवुत्तितं आह।

मग्गकिच्चं परिञ्ञादि। अट्ठङ्गिकमग्गसम्मादिट्ठिमग्गसम्पयुत्तालोभादोससङ्खातेहि मग्गहेतूहि मग्गसम्पयुत्तखन्धसेसमग्गङ्गसम्मादिट्ठीनं सहेतुकभावदस्सनतो तिण्णं नयानं **असङ्गहितसङ्गण्हनवसेना** ति वुत्तं। **हेतुबहुतावसेन।** ति बहुहेतुकस्स पठमनयस्स अनन्तरं बहुहेतुकतासामञ्ञेन निक्खेपकण्डपाळियं ततियं वुत्तनयो इध अट्ठकथायं दुतियं वुत्तो।

यथासकं पच्चयेहि पवत्तमानेसु निरीहकेसु धम्मेसु केसञ्चि अनुवत्तनीयभावो न केवलं धम्मसभावतो येव, अथ खो पुरिमधम्मानं पवत्तिविसेसेन पि होती ति आह **"पुब्बाभिसङ्खारवसेना"**

---

1. अभि० १ : २३६ ध० सं०। 2. अधिभवित्वा–सी०।

तब्बं। "मग्गो अधिपति एतेसं" ति अयञ्च अत्थो निक्खेपकण्डे [४७-म०] उदाहरणवसेन आगतं अत्थनयं गहेत्वा वुत्तो। यस्मा पन पट्ठाने[1] "मग्गाधिपतिं धम्मं पटिच्च मग्गाधिपति धम्मो उप्पज्जति नाधिपतिपच्चया मग्गाधिपती खन्धे पटिच्च मग्गाधिपति अधिपती" ति वुत्तं, तस्मा मग्गो अधिपति मग्गाधिपतीति अयम्पि अत्थो पाळियं सरूपेकसेसवसेन समानसद्दत्थवसेन वा सङ्गहितो ति वेदितब्बो।

अनुप्पन्ना ति एतेन सब्बो उप्पन्नभावो पटिसिद्धो, न उप्पन्नधम्मभावो एवा ति तेन उप्पन्ना-विगता अतीता पि न सङ्गहिता ति दट्ठब्बा। यदि हि सङ्गहिता सियुं, "अनुप्पन्नो धम्मो उप्पन्नस्स धम्मस्स अनन्तरपच्चयेन पच्चयो" ति एवमादि वुच्चेय्य, न तु वुत्तं ति। अनागतानि विपाककटत्तारूपानि अतीते [३६-सी०] अनागते वा कम्मे

ति। पवत्तिविसेसो हि पुरिमपुरिमानं चित्तचेतसिकानं उत्तरुत्तरेसु विसेसाधानं भावनापुब्बाभिसङ्खारो ति। **अनुवत्तयमानो** ति गरुकारयमानो। **उदाहरणवसेना** ति निदस्सनवसेन, न निरवसेसदस्सनवसेन। **यस्मा पना** ति आदिना यथावुत्तं अत्थं पाठन्तरेन साधेति। तत्थ हि अधिपतिपच्चयस्स पच्चनीये ठितत्ता मग्गो अधिपति मग्गाधिपती ति अयमत्थो लब्भती ति। **समानसद्दत्थवसेना** ति सति पि अञ्ञपदत्थसमानाधिकरणसमासत्थभेदे मग्गाधिपतिसद्दत्थभेदाभावं सन्धाय वुत्तं।

उप्पन्न-सद्दो उप्पादादिं पटिपज्जमानो, पत्वा विगतो चा ति दुविधेसु अत्थेसु उभयेसम्पि वाचको, न पुरिमानं येवा ति तमत्थं दस्सेतुं "अनुप्पन्ना" ति आदिमाह। तत्थ **उप्पन्नभावो** उप्पादादिप्पत्तता। तेन अतीतापि सङ्गहिता होन्ति। तेनेवाह "सब्बो उप्पन्नभावो" ति। **उप्पन्नधम्मभावो** "उप्पन्ना धम्मा" ति पदेन गहितधम्मभावो, वत्तमानधम्मभावो ति अत्थो। यो वा उप्पादादिप्पत्तो अत्तनो च सभावं धारेति पच्चयेहि च धारीयति, सो उप्पन्नधम्मो ति पच्चुप्पन्नभावो उप्पन्नधम्मभावो ति एवमेत्थ अत्थो दट्ठब्बो। उप्पन्नधम्मे वत्वा "अनुप्पन्ना" ति वचनं न यथाधिगतपटिसेधनं ति कथमिदं पच्चेतब्बं ति आह "यदि ही" ति आदि। केचि पनेत्थ "उप्पन्ना ति पदेन अतीता पि सङ्गहिता। यदि न संगहिता, निब्बानं विय ते पि न वत्तब्बा ति वत्तब्बं [म०-५०] सिया, न च तथा वुत्तं" ति वदन्ति, तं पन तेसं मतिमत्तमेव। अयं पन तिको द्विन्नं अद्धानं वसेन पूरेत्वा दस्सितो ति अट्ठकथायं वक्खतीति। एवं सन्ते कस्मा अतीता न वत्तब्बा ति न वुत्ता ति? धम्मवसेन असङ्गहितत्ताभावतो। धम्मवसेन हि असङ्गहितं निब्बानं तत्थ न वत्तब्बं जातं, न च नियोगतो अतीता नाम धम्मा केचि अत्थि, ये इध असङ्गहितत्ता न वत्तब्बा सियुं ति। फलनिब्बत्तितो कारणस्स पुरेतरं निब्बत्ति

---

१. पट्ठाने २ : ४०५।

पुरिमनिप्फन्ने एव उप्पज्जिस्सन्ति, नानिप्फन्ने ति परिनिट्ठितकारणेकदेसानेव होन्ति' तस्मा तानि **"अवस्सं उप्पज्जिस्सन्तीति उप्पादिनो धम्मा"** ति वुच्चन्ति।

अत्तनो सभावं ति कक्खळफुसनादिसभावं।

एव पवत्तमाना ति एवं चक्खादिभावेन फुसनादिभावेन च एकसन्ततिपरियापन्नतावसेन पवत्तमाना। अत्तानं अधि **अज्झत्ता** ति **अधि**-सद्दो समासविसये अधिकारत्थं पवत्ति-अत्थञ्च गहेत्वा पवत्ततीति अत्तानं अधिकिच्च उद्दिस्स पवत्ता **अज्झत्ता। तेना** ति यस्स झाना वुट्ठहित्वा अज्झत्तं बहिद्धा अज्झत्तबहिद्धा च सुञ्ञतं आनेञ्जञ्च मनसिकरोतो अज्झत्तसुञ्ञतादीसु चित्तं न पक्खन्दति न पसीदति न सन्तिट्ठति नाधिमुच्चति, यो च इतिह तत्थ सम्पजानो तेन **भिक्खुना। तस्मिं येव पुरिमस्मिं समाधिनिमित्ते** ति पठमज्झानादिसमाधिनिमित्ते। **अज्झत्तमेवा** ति झानगोचरे कसिणादिम्हि। **चित्तं सण्ठ-**

इध परिनिट्ठितसद्देन वुच्चति, न तस्स हुत्वा विगतभावो ति आह "अनागते वा" ति यतो मेत्तेय्यस्स भगवतो उप्पज्जनकफलम्पि "उप्पादी" ति वुच्चति।

यस्स झाना वुट्ठहित्वा ति आदिना "तेनानन्दा" ति आदिपाळिया हेट्ठपाळिं अत्थवसेन दस्सेति। अयं हि तत्थ पाळि—"कथञ्चानन्द, भिक्खु अज्झत्तमेव चित्तं सण्ठपेति सन्निसादेति एकोदिं करोति समादहति। इधानन्द, भिक्खु विविच्चेव...प०... चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति। एवं खो...प०... समादहति। सो अज्झत्तं सुञ्ञतं मनसिकरोति, तस्स अज्झत्तं सुञ्ञतं मनसिकरोतो सुञ्ञताय चित्तं न पक्खन्दति...प०....वुच्चति। एवं सन्तमेतं आनन्द, भिक्खु एवं सम्पजानाति अज्झत्तं खो मे सुञ्ञतं मनसिकरोतो अज्झत्तं सुञ्ञताय चित्तं न पक्खन्दति...प०....मुच्चतो ति, इतिह तत्थ सम्पजानो होति। सो बहिद्धा सुञ्ञतं...प० ....अज्झत्तबहिद्धा सुञ्ञतं...प०... सो आनेञ्जं मनसिकरोति, तस्स आनेञ्जं मनसिकरोतो आनेञ्जाय चित्तं न पक्खन्दति....प०... मुच्चती ति, इतिह तत्थ सम्पजानो होति। तेनानन्द, भिक्खुना ति[1]।

तत्थ अज्झत्तसुञ्ञतादीसू ति अज्झत्तं बहिद्धा अज्झत्तबहिद्धा च सुञ्ञताय आनेञ्जे च पठमज्झानादिसमाधिनिमित्ते ति पादकभूतपठमज्झानादिसमाधिनिमित्ते। अपगुणपादकज्झानतो वुट्ठितस्स हि अज्झत्तं सुञ्ञतं मनसिकरोतो तत्थ चित्तं न पक्खन्दति। ततो "परस्स सन्ताने नु खो कथं" ति बहिद्धा मनसिकरोति, तत्थ पि न पक्खन्दति। "कालेन अत्तनो सन्ताने, कालेन परस्स सन्ताने नु खो [म०-५१] कथं ति अज्झत्तबहिद्धा मनसिकरोति, तत्थ पि न पक्खन्दति। ततो उभतोभागविमुत्तो होतुकामो "अरूपसमापत्तियं नु खो कथं"

---

१. म० ३ : १७६।

पेतब्बं ति पठमज्झानादिद्दित्तं सण्ठपेतब्बं। **अज्झत्तरतो** ति गोचरज्झत्ते निब्बाने रतो, समाधिगोचरे कम्मट्ठाने वा रतो। "समाहितो एको सन्तुसितो तमाहु भिक्खुं"[1] ति[2] गाथासेसो।

अज्झत्तं सम्पसादनं ति एत्थ झानं सकसन्ततिपरियापन्नत्ता "अज्झत्तं" ति वुत्तं ति नियकज्झत्तत्थो अज्झत्त-सद्दो होति। **अज्झत्तं** ति सकसन्ततिनियकं। अज्झत्ते भवा **अज्झत्तिका** ति नियकज्झत्तेसु पि अब्भन्तरा चक्खादयो वुच्चन्ति। एत्थ पन अज्झत्तिक-सद्दो चक्खादीसु पवत्तमानो [४८-म०] दस्सितो, न अज्झत्तसद्दो, अत्थि च अज्झत्त-अज्झत्तिकसद्दानं बहिद्धाबाहिर-सद्दानं विय विसेसो। अज्झत्तिकसद्दो हि सपरसन्तानिकेसु सब्बेसु चक्खादीसु रूपादीसु बाहिर-सद्दो विय पवत्तति, अज्झत्त-सद्दो पन सकसन्तानिकेस्वेव चक्खुरूपादीसु ततो अञ्ञेस्वेव बहिद्धा-सद्दो विय पवत्ततीति तस्मा सद्दतो अत्थतो च असमानत्ता न इदमेत्थ उदाहरणं युत्तं ति अयं पनेत्थ अधिप्पायो दट्ठब्बो—अज्झत्ते भवा अज्झत्तिका ति अयं हि वचनत्थो। यञ्च अज्झत्ते भवं तेन अज्झत्तेनेव भवितब्बं, तेन तंवाचकस्स अज्झत्त-सद्दस्स अज्झत्तिक-सद्दस्स च समानत्थता। उभिन्नम्पि सद्दानं समानत्थभावतो अज्झत्तज्झत्ते 'पवत्तमाने' अज्झत्तिक-सद्दे अज्झत्त-सद्दो तत्थ पवत्तो ति सक्का वत्तुं ति।

ति आनेञ्जं मनसिकरोति, तत्थ पि न पक्खन्दति। "इदानि मे चित्तं न पक्खन्दती" ति विस्सट्ठवीरियेन न भवितब्बं, पादकज्झानमेव पन साधुकं पुनप्पुनं मनसि कातब्बं, एवमस्स रुक्खं छिन्दतो फरसुम्हि अवहन्ते पुनप्पुनं निसितनिसितं कारेत्वा छिन्दन्तस्स छिज्जे फरसु विय कम्मट्ठाने मनसिकारो वहती ति दस्सेतुं "तस्मिं येवा" ति आदि वुत्तं ति।

अत्थतो च असमानत्ता ति इदं कस्मा वुत्तं। ननु येसु अत्थेसु अज्झत्तसद्दो वत्तति, ते सब्बे दस्सेत्वा इधाधिप्पेतत्थनिद्धारणत्थं अत्थुद्धारवसेनेतं वुत्तं। चक्खादीसु च अज्झत्तिकसद्दो अज्झत्तानं अब्भन्तरताविसेसमुपादाय पवत्तति, यतो ते अज्झत्त-अज्झत्ता ति वुच्चन्ति। अपि च "छ अज्झत्तिकानी" ति इदं अज्झत्तिक-सद्दस्स चक्खादीनं अज्झत्तभावविभावनसब्भावतो इध उदाहरणवसेन वुत्तं। तेनेव हि अट्ठकथायं अज्झत्तिकदुके "अज्झत्ता व अज्झत्तिका" ति वुत्तं। एवञ्च सति न एत्थ सद्दतो असमानता पि सिया, तस्मा येव यथावुत्तचोदनं विसोधेन्तो "अयं पनेत्था" ति आदिमाह। **तेना** ति तस्मा। **तंवाचकस्सा** ति अज्झत्तज्झत्तवाचकस्स सक्का वत्तुं तदत्थस्स अज्झत्तभावसब्भावतो।

---

१. भिक्खू-सी०। २. खु० १ : ५२ धम्मपदे।

अयं खो पनानन्द विहारो ति **विहारसुञ्ञतासुत्ते**[1] सङ्गणिकारामताय रूपादि-रतिया च आदीनवं वत्वा तप्पटिपक्खविहारदस्सनत्थं वुत्तं। **अज्झत्तं सुञ्ञतं** ति विसयभूतं इस्सरियट्ठानभूतं सुञ्ञतं, सुञ्ञताफलसमापत्ति ति अत्थो। चित्तिस्सरा हि बुद्धा भगवन्तो धम्मं देसेन्ता पि यं मुहुत्तं तुण्ही भवितब्बं होति, तं मुहुत्तं फल-समापत्तिं समापज्जन्ति, पगेव अञ्ञस्मिं काले, तस्मा सब्बत्था पि इस्सरियानं बहुलं फलसमापत्तियं इस्सरियस्स पवत्तनतो फलसमापत्ति "इस्सरियट्ठानं" ति वुत्ता। अर-हत्तफलाधिगमेन वा तथागतानं इस्सरियं निब्बत्तं [३७–सी०] तं जनकेनेव मग्गेना ति तं तेसं इस्सरियट्ठानं। विसयो च अनञ्ञत्थभावो व यथा "आकासे सकुणा उदके मच्छा" ति, बुद्धा च अञ्ञत्थ दिस्समाना पि विवेकपब्भारताय फलसमापत्ति-निन्ना व, तेन तस्सा तस्सा किरियाय अनन्तरं फलसमापत्तियं येव भवन्तीति सा तेसं विसयो, तब्बिसयता च **सच्चकसुत्तेन**[2] दीपेतब्बा।

न खो आनन्द, भिक्खु सोभति सङ्गणिकारामो सङ्गणिकारतो सङ्गणिकारामतं अनुयुत्तो" ति आदिना[3] पब्बजिता सारुप्पस्स नेक्खम्मसुखादिनिकामलाभिताय अभावस्स च दस्सनेन सङ्गणिकाराम-ताय, "नाहं आनन्द, एकं रूपम्पि समनुपस्सामि, यत्थ रत्तस्स यथाभिरतस्स रूपस्स विपरिणामञ्ञथा-भावा न उप्पज्जेय्युं, सोकपरि"' प० " यासा" ति[4] एवं रूपादिरतिया च आदीनवं वत्वा सचे कोचि दुप्पञ्ञजातिको पब्बजितो वदेय्य "सम्मासम्बुद्धो खेत्ते पविट्ठा गावियो विय अम्हे येव गणतो नीहरति, एकीभावे नियोजेति, सयं पन राजराजमहामत्तादीहि परिवुतो विहरती" ति, तस्स वचनोकासुपच्छेदनत्थं चक्कवाळपरियन्ताय परिसाय मज्झे निसिन्नो पि तथागतो एकको वा ति दस्सनत्थं "अयं खो पना" ति देसना आरद्धा ति आह **"तप्पटिपक्ख-विहारदस्सनत्थं"** ति। तत्थ **सब्बनिमित्तानं** ति रूपादीनं [म०–५२] सङ्खतनिमित्तानं। **अज्झत्तं** ति विसयज्झत्तं। **सुञ्ञतं** ति अनत्तानुपस्सनानुभावनिब्बत्तफलसमापत्ति तेनेवाह **"अज्झत्तं"** ति आदि। तत्थ दुतिये विकप्पे ठान-सद्दो कारणपरियायो दट्ठब्बो। **सच्चकसुत्तेना** ति महा-सच्चकसुत्तेन। तत्थ हि—

"अभिजानामि खो पनाहं अग्गिवेस्सन, अनेकसताय परिसाय धम्मं देसेता, अपिस्सु मं एकमेको एवं मञ्ञति 'ममेवारब्भ समणो गोतमो धम्मं देसेती' ति। न खो पनेतं अग्गि-वेस्सन, एवं दट्ठब्बं। यावदेव विञ्ञापनत्थाय तथागतो परेसं धम्मं देसेती ति। सो खो अहं अग्गिवेस्सन, तस्सा येव कथाय परियोसाने तस्मिं येव पुरिमस्मिं समाधिनिमित्ते अज्झत्तमेव चित्तं सण्ठपेमि सन्निसादेमि, एकोदिं करोमि, समादहामि 'येन सुदं निच्चकप्पं विहरामी ति[5]'—आगतं ति।

---

१. म० ३ : १७४। २. म० १ : २९१। ३. म० ३ : १७४। ४. म० ३ : १७५। ५. म० १ : ३०७।

येसं दट्ठब्बभावो अत्थि, ते **सनिदस्सना**। चक्खुविञ्ञाणगोचरभावो व दट्ठब्बभावो तस्स रूपायतना अनञ्ञत्ते पि अञ्ञेहि धम्मेहि रूपायतनं विसेसेतुं अञ्ञं विय कत्वा **"सह निदस्सनेना ति सनिदस्सना"** ति वुत्तं। धम्मसभावसामञ्ञेन हि एकीभूतेसु धम्मेसु यो नानत्तकरो सभावो, सो अञ्ञो विय कत्वा उपचरितुं [४९-म०] युत्तो। एवं हि अत्थविसेसावबोधो होतीति। सयञ्च निस्सयवसेन च सम्पत्तानं असम्पत्तानञ्च पटिमुखभावो अञ्ञमञ्ञपतनं पटिहननभावो, येन ब्यापारादिविकारपच्चयन्तरसहितेसु चक्खादीनं विसयेसु विकारुप्पत्ति।

तिकमातिकापदवण्णना निट्ठिता[1] ॥

अञ्ञेहि अनिदस्सनेहि अयं विय कत्वा यथा "सिलापुत्तकस्स सरीरं" ति। **धम्मसभावसामञ्ञेना ति** आदिना किञ्चा पि रूपायतनतो अञ्ञो निदस्सनभावो नाम नत्थि, धम्मसभावो पन अत्थि। ततो च रूपायतनस्स विसेसो निदस्सनभावेन कतो ति तदञ्ञधम्मविसेसकरो निदस्सनभावो रूपायतनतो अनञ्ञो पि अञ्ञो विय कत्वा उपचरितो ति दस्सेति। **अत्थविसेसो** सामञ्ञविसेसत्थभेदो। **सयं सम्पत्तानं** फोट्ठब्बधम्मानं, **निस्सयवसेन सम्पत्तानं** घानजिव्हाकायानं गन्धरसानञ्च, इतरेसं असम्पत्तानं। **अञ्ञमञ्ञपतनं** अञ्ञमञ्ञस्स योग्यदेसे अवट्ठानं, येन पटिहननभावेन। **ब्यापारादी ति** चित्तकिरियावायोधातुविप्फारवसेन अक्खिपटलादीनं हेट्ठा उपरि च संसीदनलङ्घनादिप्पवत्तिमाह। **विकारुप्पत्ति** विसदिसुप्पत्ति, विसयस्स इट्ठानिट्ठभावेन अनुग्गहो उपघातो चा ति अत्थो।

तिकमातिमापदवण्णना निट्ठिता।

●

---

१. तिकमातिका निट्ठिता—सी०।

दुकमातिकापदवण्णना[1]

मूलट्ठेना ति सुप्पतिट्ठितभावसाधनेन मूलभावेन, न पच्चयमत्तट्ठेन। हेतुधम्मा हेतू धम्मा ति समासासमासनिद्देसभावो द्विन्नं पाठान विसेसो। **तथेवा** ति सम्पयोगतो व। सहेतुकानं हेतुसम्पयुत्तभावतो **"सम्पयोगतो"** ति वुत्तं ति वेदितब्बं, न सहसद्दस्स सम्पयोगत्थत्ता। **सह-सद्दो** पन एकपुञ्जे उप्पादतो याव भङ्गा[2] सहेतुकानं हेतूहि समानदेसगहणानं हेतु-आदिसभावं दीपेति, **सम्पयुत्त-सद्दो** एकुप्पादादिवसेन सह हेतूहि एकीभावुपगमनं, ततो एव च द्विन्नं दुकानं नानत्तं वेदितब्बं। धम्मनानत्ताभावे पि हि पदत्थनानत्तेन दुकन्तरं वुच्चति। न हि हेतुदुकसङ्गहितेहि धम्मेहि अञ्ञे सहेतुकदुकादीहि वुच्चन्ति, ते एव पन सहेतुकाहेतुकादिभावतो सहेतुकदुकादीहि वुत्ता। एवं सहेतुकदुकसङ्गहिता एव हेतुसम्पयुत्तविप्पयुत्तभावतो हेतुसम्पयुत्तदुकेन वुत्ता। न हि धम्मानं अवुत्ततापेक्खं दुकन्तरवचनं ति नत्थि पुनरुत्तिदोसो। देसेतब्बप्पकारजाननं हि देसनाविलासो तथा देसनाञाणञ्चा ति। तेन धम्मानं तप्पकारता वुत्ता होति सकलेकदेसवसेन पठमदुकं दुतियततियेहि सद्धिं योजेत्वा चतुत्थादयो तयो दुका वुत्ता। सकलं हि पठमदुकं दुति-

---

दुकमातिकापदवण्णना

[म०–५३] १–६ **समानदेसग्गहणानं** एकस्मिं येव वत्थुस्मिं गहेतब्बानं, एकवत्थुविसयानं वा। अथ वा समानदेसानं एकवत्थुकत्ता समानगहेतब्बभावानं एकुप्पादितो ति अत्थो। ये धम्मा हेतुसहगता, ते हेतूहि सह सङ्गय्हन्ति। यो च तेसं सहेतुकभावो, सो सहजातादीहि हेतूहि कतो ति कत्वा वुत्तं **"समा···प०····सब्भावं"** ति। **आदि-सद्देन** चेत्थ सुप्पतिट्ठितभावसाधनादिहेतुब्यापारे परिग्गण्हाति। **एकीभावूपगमनं** ति एककलापभावेन पवत्तमानानं चित्तचेतसिकानं संसट्ठताय समूहघनभावेन दुविञ्ञेय्यनानाकरणतं येव सन्धाय वुत्तं। **धम्मनानत्ताभावे पी** ति सभावत्थभेदाभावे पि। **पदत्थनानत्तेना** ति नानापदाभिधेय्यताभेदेन। एतेन पकारन्तरापेक्खं दुकन्तरबचनं ति दस्सेति। अनेकप्पकारा हि धम्मा। तेनेव "सब्बे धम्मा सब्बाकारेन बुद्धस्स भगवतो ञाणमुखे आपाथं आगच्छन्ती" ति[3] वुत्तं। अयञ्च अत्थो तिकेसु पि दट्ठब्बो। येसं विनेय्यानं येहि पकारविसेसेहि धम्मानं विभावने कते पटिवेधो होति, तेसं तप्पकारभेदेहि धम्मानं विभावनं। येसं पन येन एकेनेव पकारेन विभावने पटिवेधो होति,

---

१. नत्थि-सी०। २. सङ्गा–सी०।
३. पटि० ४५६; चुल्ल० १८५।

यदुकेकदेसेन सहेतुकपदेन ततियदुकेकदेसेन हेतुसम्पुत्तपदेन च योजेत्वा यथाक्कमं चतुत्थ-पञ्चमदुका वुत्ता, तथा पठमदुकेकदेसं नहेतुपदं सकलेन दुतियदुकेन योजेत्वा छट्ठदुको वुत्तो। **इदम्पि सम्भवती** ति एतेन अवुत्तम्पि सम्भववसेन दीपितं ति दस्सेति। सम्भवो हि गहणस्स कारणं ति। यथा हेतुसहेतुका ति इदं सम्भवतीति कत्वा गहितं, एवं [३८–सी०] हेतु-अहेतुका ति इदम्पि सम्भवतीति कत्वा गहेतब्बमेवा ति एवं अञ्ञत्था पि योजेतब्बं।

[५०-म०] एवं पठमदुकं दुतियततियदुकेसु दुतियपदेहि योजेत्वा "हेतू चेव धम्मा अहेतुका च, अहेतुका चेव धम्मा न च हेतू, हेतू चेव धम्मा हेतुविप्पयुत्ता च, हेतुविप्पयुत्ता चेव धम्मा न च हेतू" ति ये द्वे दुका कातब्बा, तेसं सम्भववसेनेव सङ्गहं दस्सेत्वा **खो पन-**पदेन अपरेसम्पि दुकानं सङ्गहं दस्सेतुं **"तत्र यदेतं"** ति आदिमाह। **तत्रा** ति पाळियं[१]। **अयं अतिरेकत्थो** ति इदानि यं वक्खति, तमत्थमाह। तत्थ पन **अञ्ञे पि अञ्ञथा पी ति** एतेसं विसुं पवत्तिया द्वे दुका दस्सिता, सह पवत्तिया पन अयम्पि दुको वेदितब्बो "हेतू-

---

तेसम्पि तं वत्वा धम्मिस्सरत्ता तदञ्ञनिरवसेसप्पकारविभावनञ्च देसनाविलासो ति आह **"देसेतब्बप्पकारजाननं"** ति आदि। ननु एकेन पकारेन जानन्तस्स तदञ्ञप्पकारविभावनं अफलं होती ति? न होति पटिसम्भिदाप्पभेदस्स उपनिस्सयत्ता। ते पकारा एतेसं ति तप्पकारा, तब्भावो तप्पकारता। इमिना धम्मानं विज्जमानस्सेव पकारविसेसस्स विभावनं देसनाविलासो ति दस्सेति।

अञ्ञथा पी ति अहेतुका चेव धम्मा न च हेतू" ति आदीसु। यथा पठमदुकेकदेसे गहेत्वा दुतियततियदुकेहि सद्धिं छट्ठदुकनये योजना "हेतू धम्मा सहेतुका पि अहेतुका पी" ति आदयो तयो दुका लब्भन्ति, एवं दुतियततियदुकेकदेसे गहेत्वा पठमदुकेन सद्धिं योजनाय "सहेतुका धम्मा हेतू पि न हेतू पि, अहेतुका धम्मा हेतू पि न हेतू पि, हेतुसम्पयुत्ता धम्मा हेतू पि न हेतू पि, हेतुविप्पयुत्ता धम्मा हेतू पि न हेतू पी" ति चत्तारो [म०-५४] दुका लब्भन्ति, ते पन वुत्तनयेनेव सक्का दस्सेतुं ति न दस्सिता ति दट्ठब्बा। अथ वा पाळियं वुत्तेहि चतुत्थपञ्चमेहि अट्ठकथायं दस्सितेहि पुरिमेहि द्वीहि निन्नानाकरणतो एते न वुत्ता। सन्निवेसविसेसमत्तमेव हेत्थ विसेसो ति। तेनेव हि निन्नानत्थत्ता पाळियं आगतदुकेसु यथानिद्धारितदुकानं यथासम्भवं अवरोधनेन अवुत्ततं दस्सेतुं **"एतेसु पना"** ति आदिमाह।

अथ वा "एतेन वा गतिदस्सनेना" ति आदिना वक्खमाननयेन "हेतू चेव धम्मा अहेतुका चा" ति आदीनं सम्भवन्तानं दुकानं सङ्गहे सति एतेसम्पि सङ्गहो सिया। यतो वा दुकतो पदं निद्धारेत्वा दुकन्तरं वुच्चति, तेन सति च नानत्ते दुकन्तरं लब्भति, न

---

१. पाळियं–सी०।

चेव धम्मा हेतुसम्पयुत्ता पि हेतुविप्पयुत्ता पी" ति एतेसु पन पञ्चसु दुकेसु दुतिय-दुकेन ततियदुको विय, चतुत्थदुकेन पञ्चमदुको विय च छट्ठदुकेन निन्नानत्थत्ता "न हेतु खो पन धम्मा हेतुसम्पयुत्ता पि हेतुविप्पयुत्ता पी" ति अयं दुको न वुत्तो। दस्सित-निन्नानत्थनयो हि सो पुरिमदुकेहीति। इतरेसु चतूसु हेतू चेव अहेतुकदुकेन समा-नत्थता हेतू चेव हेतुविप्पयुत्तदुको, हेतुसहेतुकदुकेन समानत्थत्ता हेतुहेतुसम्पयुत्तदुको[1] च नहेतुहेतुसम्पयुत्तदुको विय न वत्तब्बो। तेसु पन द्वीसु पच्छिमदुके "हेतू खो पन धम्मा सहेतुका" ति पदं चतुत्थदुके पठमपदेन निन्नानाकरणत्ता न वत्तब्बं, "हेतू खो पन धम्मा अहेतुका" ति पदं "हेतू चेव धम्मा अहेतुका" ति एतेन निन्नानत्ता न वत्तब्बं अवसिट्ठे पन एकस्मिं दुके "अहेतुका चेव धम्मा न च हेतू" ति पदं छट्ठदुके दुतिय-पदेन एकत्थत्ता न वत्तब्बं। इदानि "हेतू चेव धम्मा अहेतुका चा" ति इदमेवेतं

चेत्थ कोचि विसेसो यथावुत्तदुकेही ति संवण्णनासु न दस्सितं ति दट्ठब्बं। एत्थ च यथा सहेतुकदुकतो हेतुसम्पयुत्तदुकस्स, हेतुसहेतुकदुकतो च हेतुहेतुसम्पयुत्तदुकस्स पदत्थमत्ततो नानत्तं, न सभावत्थतो। एवं सन्ते पि सहेतुकहेतुसहेतुकदुके वत्वा इतरे पि वुत्ता, एवं हेतुसम्पयुत्त-हेतुहेतुसम्पयुत्तदुकादीहि सभावत्थनानत्ताभावे पि पदत्थनानत्तसम्भवतो धम्मनानत्ताभावे पि पदत्थनानत्तेन दुकन्तरं वुच्चती ति वुत्तत्ता "हेतुसहगता धम्मा, न हेतुसहगता धम्मा, हेतु-सहजाता धम्मा, न हेतुसहजाता धम्मा। हेतुसंसट्ठा धम्मा, हेतुविसंसट्ठा धम्मा। हेतुसमुट्ठाना धम्मा, न हेतुसमुट्ठाना धम्मा। हेतुसहभुनो धम्मा, न हेतुसहभुनो धम्मा" ति आदीनं, तथा "हेतू चेव धम्मा हेहुसहगता चा" ति आदीनं, "न हेतू खो पन धम्मा हेतुसहगता पि, न हेतुसहगता पी" ति आदीनञ्च सम्भवन्तानं अनेकेसं दुकानं सङ्गहो अनुञ्ञातो विय दिस्सति। तथा हि वक्खति "एतेन वा गतिदस्सनेना" ति आदि। एवं आसवगोच्छकादीसु पि अयमत्थो यथासम्भवं वत्तब्बो। धम्मानं वा सभावकिच्चादिं बोधेतब्बाकारञ्च यथावतो जानन्तेन धम्मसामिना यत्तका दुका वुत्ता, तत्तकेसु ठातब्बं। अद्धा हि ते दुका न वत्तब्बा, ये भगवता न वुत्ता ति वेदितब्बं। न हेतुहेतुसम्पयुत्तदुको छट्ठदुकेन निन्नानत्थो ति अधि-प्पायो। तेसू ति पठमदुकततियदुकेसु। यदि दुकन्तरेहि दुकन्तरपदेहि च समानत्थत्ता एतेसं दुकानं दुकन्तरपदानञ्च [म०-५५] अवचनं, एवं सति छट्ठदुके पठमपदम्पि न वत्तब्बं चतुत्थदुके दुतियपदेन समानत्थत्ता। तथा च छट्ठदुको येव न होति ति चोदनं सन्धायाह "चतुत्थदुके" ति आदि। दुकपूरणत्थं ति इदं समानत्थतं येव सन्धाय वुत्तं, देसनाविसेसो पन विज्जति येव। अत्थन्तरताभावे पि पकारभेदहेतुकं दुकन्तरवचनं ति दस्सितो हि अयमत्थो

---

१. हेतु च हेतुसम्पयुत्तदुको—सी०।

पदं अवसिट्ठं, न च एकेन पदेन दुको होतीति तञ्च न वुत्तं ति[1]। चतुत्थदुके दुतियपदेन पन समानत्थस्स छट्ठदुके पठमपदस्स वचनं दुकपूरणत्थं, एतेन वा गतिदस्सनेन सब्बस्स सम्भवन्तस्स सङ्गहो कतो ति दट्ठब्बो। तथा हि सब्बो सम्भवदुको पठमदुके दुतियततियदुकपक्खेपेन दस्सितो, तेसु च पठमदुकपक्खेपेना ति।

समानकालेन असमानकालेन कालविमुत्तेन च पच्चयेन निप्फन्नानं पच्चयायत्तानं पच्चयभावमत्तेन तेसं पच्चयानं अत्थितं दीपेतुं **सप्पच्चयवचनं**, न सहेतुकवचनं विय समानकालानमेव, ना पि सनिदस्सनं विय तंसभावस्स अनत्थन्तरभूतस्स। **सङ्खत**-सद्दो पन [५१–म०] समेतेहि निप्फादितभावं दीपेतीति अयमेतेसं विसेसो दुकन्तरवचने कारणं। एत्थ च **अप्पच्चया असङ्खता** ति बहुवचननिद्देसो अविनिच्छितत्थपरिच्छेददस्सनवसेन[2] मातिकाठपनतो कतो ति वेदितब्बो। उद्देसेन हि कुसलादिसभावानं धम्मानं अत्थितामत्तं वुच्चति, न परिच्छेदो ति अपरिच्छेदेन बहुवचनेन उद्देसो वुत्तो ति। **रूपं** ति रूपायतनं पथवियादि[3] वा। पुरिमस्मिं अत्थविकप्पे रूपायतनस्स असङ्गहितता आपज्जतीति [३९–सी०]

ति। **एतेन गतिदस्सनेना** ति अत्थविसेसाभावे पि छट्ठदुकपूरणसङ्खातेन नयदस्सनेन। **पठमदुके…प०…दस्सितो** पाळियं वुत्तेहि चतुत्थपञ्चमेहि, अट्ठकथायं दस्सितेहि पुरिमेहि द्वीहि, इध दस्सितेहि चतूहि। **तेसू** ति दुतियततियदुकेसु। **पठमदुकपक्खेपेन दस्सितो** पाळियं छट्ठदुकेन इतरत्र च इतरदुकेही ति वेदितब्बं।

७-१३ **पच्चयभावमत्तेन…प०…अत्थितं** ति एतेन न पटिलद्धत्ततासङ्खाता ससभावता व अत्थिता, अथ खो पटिपक्खेन अनिरोधो अप्पहीनता अनिप्फादितफलता कारणासमुग्घातेन फलनिब्बत्तनारहता चा ति इममत्थं दस्सेति। यथा हि "इमस्मिं सति इदं होती" ति एत्थ "सती" ति इमिना वचनेन येन विना यं न होति, तं अतीतादि पि कारणं सङ्गहितमेवा ति। तेनेवाह "न सहेतु…प०…कालानमेवा" ति। **समे…प०…दीपेति** समेच्च सम्भूय पच्चयेहि कतं ति सङ्खतं ति। **अयमेव तेसं विसेसो** ति अयं पच्चयनिब्बत्तानं पच्चयवन्तता अनेकपच्चयनिप्फादितता च दुकद्वये पुरिमपदत्थानं भेदो, इतरेसं पन पुरिमपदसङ्गहितधम्मविधुरसभावताया ति। **अविनि…प०…ठपनतो** ति "एत्तका" ति पभेदपरिच्छेदनिद्धारणवसेन अभिधम्ममातिकायं धम्मानं अवुत्तत्ता वुत्तं। सुत्तन्तमातिकायं पन निद्धारितसरूपसङ्खाविसेसत्ता विनिच्छितत्थपरिच्छेदा येव अविज्जादयो वुत्ता ति। "**पथवी-आदि रूपं**" ति एतस्मिं अत्थविकप्पे अनेकहेतुकेसु चित्तुप्पादेसु हेतूनं सहेतुकभावो विय सब्बेसं पथवी-आदीनं

---

१. युत्तं ति–सी०। २. अविनिच्छितत्थ-अपरिच्छेद०–सी०।
३. पठवियादि–सी०।

रुप्पनलक्खणं वा रूपं ति अयं अत्थनयो वुत्तो। तत्थ **रूपं** ति रुप्पनसभावो। न लुज्जति न पलुज्जतीति यो गहितो तथा न होति, सो लोको ति तंगहणरहितानं लोकुत्तरानं नत्थि लोकता। दुक्खसच्चं वा लोको तत्थ तेनेव लोकसभावेन विदिता ति **लोकिया**[1]।

एवं सन्ते चक्खुविञ्ञाणेन विजानितब्बस्स रूपायतनस्स तेनेव न[2] विजानितब्बस्स सद्दायतनादिकस्स च नानत्ता द्विन्नम्पि पदानं अत्थनानत्ततो दुको होति। एवं पन दुके वुच्चमाने दुकबहुता आपज्जति, यत्तकानि विञ्ञाणानि, तत्तका दुका वुत्ता समत्ता ठपेत्वा सब्बधम्मारम्मणानि विञ्ञाणानि। तेसु च दुकस्स पच्छेदो आपज्जति, तथा च सति "केनची" ति पदं सब्बविञ्ञाणसङ्गाहकं न सिया, निद्देसेन च विरुद्धं इदं वचनं। यो च तत्थ "ये ते धम्मा चक्खुविञ्ञेय्या, न ते धम्मा सोतविञ्ञेय्या ति अयं दुको न होती" ति पटिसेधो कतो, सो च कथं युज्जेय्य। न हि समत्था अट्ठकथा पाळिं[3] पटिसेधेतुं ति, न च **केनचि-सद्दस्स तेनेवा** ति अयं पदत्थो सम्भवति,

---

रूपिभावो सिद्धो ति आह "पुरिम...प०....पज्जती" ति। न हि तेसु नियतो कत्थचि संसामिभावो ति। अनिच्चानुपस्सनाय वा लुज्जति छिज्जति विनस्सती ति गहेतब्बो लोको ति तंगहणरहितानं लोकुत्तरानं नत्थि लोकता। **तेनेवा** ति दुक्खसच्चभावेन परिञ्ञेय्यभावेना ति अत्थो।

दुकबहुता आपज्जती ति कस्मा वुत्तं, ननु वीसति दुका विभत्ता, "अवुत्तो पि यथालाभवसेन वेदितब्बो" ति च वक्खती ति [म०-५६] दुकबहुता इच्छिता एवा ति? सच्चमेतं, तं येव पन दुकबहुतं अनिच्छन्तो एवमाह। अपि च दुकबहुता आपज्जति, सा च खो विञ्ञाणभेदानुसारिनी, तत्रा पि कामावचरकुसलतो ञाणसम्पयुत्तानि, तथा महाकिरियतो मनोद्वारावज्जनं ति एवं पकारानं सब्बधम्मारम्मणविञ्ञाणानं अनामसनतो न ब्यापिनी ति दस्सेति "दुकबहुता" ति आदिना। अब्यापिभावे पन दोसं दस्सेन्तो "तथा च...प०...सिया" ति आह। **निद्देसेन च विरुद्धं** ति ये ते धम्मा चक्खुविञ्ञेय्या, न ते धम्मा सोतविञ्ञेय्या" ति आदिना रूपायतनादीनं पच्चेकचक्खुविञ्ञाणादिना केनचि विञ्ञेयतं, सोतविञ्ञाणादिना केनचि न विञ्ञेय्यतञ्च दस्सेन्तेन निक्खेपरासिनिद्देसेन "द्विन्नम्पि पदानं अत्थनात्थतो दुको होती" ति इदं वचनं विरुद्धं, तथा अत्थुद्धारनिद्देसेन पि अत्थतो न समेती ति अत्थो। **तत्था** ति तस्सं निक्खेपरासिसंवण्णनायं। यो च **पटिसेधो कतो** अत्थनानत्ततो दुकं दस्सेतुं ति अधिप्पायो। न हि सम...प०....सेधेतुं ति एतेन "ये ते धम्मा चक्खुविञ्ञेय्या, न

---

१. लोकिका–सी०। २. नत्थि–सी०। ३. पालि–सी०।

"**केनची**" ति एतस्स आदिपदस्स अनियमितं यं किञ्चि एकं पदत्थो तं वत्वा वुच्चमानस्स "**केनची**" ति दुतियपदस्स यं किञ्चि अपरं अनियमितं पदत्थो ति लोकसिद्धमेतं।

तथेव[1] च निद्देसो पवत्तो, न चेत्थ विञ्ञातब्बधम्मभेदेन दुकभेदो समत्तो आपज्जति यत्तका विञ्ञातब्बा तत्तका दुका ति, तस्मा नत्थि दुकबहुता। न हि एकं येव विञ्ञातब्बं केनचि विञ्ञेय्यं केनचि न विञ्ञेय्यञ्च, किन्तु अपरम्पि अपरम्पीति सब्बविञ्ञातब्बसङ्गहे दुको समत्तो होति, एवञ्च सति "केनची" ति पदं

ते धम्मा सोतविञ्ञेय्या" ति एत्तकेसु निद्देसपदेसु दुकपदद्वयप्पवत्ति पाळितो एव विञ्ञायती ति दस्सेति।

तथेवा ति उभिन्नं केचि न-सद्दानं अनियमतो चक्खुसोतादिनिस्सयवोहारेन चक्खुसोतविञ्ञाणादिको भिन्नसभावो येव धम्मो अत्थो ति दस्सनवसेन। रूपायतनमेव हि चक्खुसोतविञ्ञाणेहि विञ्ञेय्याविञ्ञेय्यभावतो "केनचि विञ्ञेय्यं केनचि न विञ्ञेय्यं" ति च वुच्चती ति। यदि एवं इमस्मिम्पि पक्खे दुकबहुता आपज्जती ति चोदनं मनसि कत्वा आह "**न चेत्था**" ति आदि। **विञ्ञातब्बभेदेना** ति विञ्ञातब्बविसेसेन विञ्ञेय्येकदेसेना ति अत्थो। **दुकभेदो** ति दुकविसेसो, केनचि विञ्ञेय्यदुको, तप्पभेदो येव वा। **समत्तो** परियत्तो परिपुण्णो ति अत्थो। **यत्तका विञ्ञातब्बा तत्तका दुका** ति दुकभेदापज्जनप्पकारदस्सनं। **एवञ्च सती** ति आदिना इमिस्सा संवण्णनाय लद्धगुणं दस्सेति। "ये ते धम्मा चक्खुविञ्ञेय्या, न ते धम्मा सोतविञ्ञेय्या" ति रूपायतनस्सेव वुत्तत्ता अत्थभेदाभावतो कथमयं दुको होती ति आह "**विञ्ञाणनानत्तेना**" ति आदि। यदि पन सब्बविञ्ञातब्बसङ्गहे दुको समत्तो होति, निक्खेपरासिनिद्देसो कथं नीयती ति आह "**एतस्स पना**" ति आदि।

[म०-५७] एत्थ पन **यथा विञ्ञाणनानत्तेन** विञ्ञातब्बं भिन्दित्वा दुके वुच्चमाने सति पि विञ्ञातब्बानं बहुभावे यत्तका विञ्ञातब्बा, तत्तका दुका ति नत्थि दुकबहुता दुकसङ्गहितधम्मेकदेसेसु दुकपदद्वयप्पवत्तिदस्सनभावतो। एवं द्विन्नम्पि पदानं अत्थनानत्तेन दुके वुच्चमाने पि यत्तकानि विञ्ञाणानि, तत्तका दुका ति नत्थि दुकबहुता दुकसङ्ग प०···· भावतो एव। न हि एकं येव विञ्ञाणं "केनचि केनची" ति वुत्तं, किन्तु अपरम्पी ति सब्बविञ्ञाणसङ्गहे दुको समत्तो होति, न च कत्थचि दुकस्स पच्छेदो अत्थि इन्द्रियविञ्ञाणानं विय मनोविञ्ञाणस्स पि विसयस्स भिन्नत्ता। नहि अतीतारम्मणं विञ्ञाणं अनागतादि-आरम्मणं होति, अनागतारम्मणं वा अतीतादि-आरम्मणं, तस्मा यथालद्धविसेसेन विसिट्ठेसु मनोविञ्ञाणभेदेसु तस्स तस्स विसयस्स आलम्बनानालम्बनवसेन दुकपदद्वयप्पत्ति न सक्का निवारेतुं।

---

१. ततो–सी०।

अनियमेन सब्बविञ्ञाणसङ्गाहकं ति सिद्धं होति, विञ्ञाणनानत्तेन च विञ्ञातब्बं भिन्दित्वा अयं दुको वुत्तो, न विञ्ञातब्बानं अत्थन्तरताया ति। एतस्स पन दुकस्स निक्खेपरासि निद्देसो। [५२-म०] दुकसङ्गहितधम्मेकदेसेसु दुकपदद्वयप्पवत्तिदस्सनवसेन पवत्तो। अत्थुद्धारनिद्देसो निरवसेसदुकसङ्गहितधम्मदस्सनवसेना ति वेदितब्बो।

चक्खुतो पि...प...मनतो पी ति चक्खुविञ्ञाणादिवीथीसु तदनुगतमनोविञ्ञाण-वीथीसु च किञ्चा पि कुसलादीनम्पि पवत्ति अत्थि, कामासवादयो एव पन वणतो

तेनेव च अट्ठकथायं "मनोविञ्ञाणेन पन केनचि विञ्ञेय्यञ्चेव अविञ्ञेय्यञ्चा ति अयमत्थो अत्थि, तस्मा सो अवुत्तो पि यथालाभवसेन वेदितब्बो" ति भूमिभेदवसेन यथालाभं दस्सेस्सति। "वत्रत्थानाभावतो" ति इदम्पि अनामट्ठविसेसं मनोविञ्ञाणसामञ्ञमेव गहेत्वा वुत्तं। पाळि पन इन्द्रियविञ्ञाणेहि नयदस्सनवसेन आगता ति दट्ठब्बं। एवं च कत्वा इमिस्सा पि अत्थवण्णनाय "केनची" ति पदं अनियमेन सब्बविञ्ञाणसङ्गाहकं ति सिद्धं होति, निद्देसेन च न कोचि विरोधो। चक्खुविञ्ञेय्यनसोतविञ्ञेय्यभावेहि दुकपदद्वयप्पत्ति दस्सिता, न पन चक्खुविञ्ञेय्याचक्खुविञ्ञेय्यभावेहि विसेसकारणाभावतो। किञ्च "ये वा पना" ति पदन्तर-सम्पिण्डनको पि "ये ते धम्मा चक्खुविञ्ञेय्या...प०...न ते धम्मा चक्खुविञ्ञेय्या" ति[1] एत्तावत्ता दुकपदद्वयप्पत्ति दस्सिता ति विञ्ञायति। पदन्तरभावदस्सनत्थो हि येवापन-सद्दो यथा "ये केचि कुसला धम्मा, सब्बे ते कुसलमूला। ये वा पन कुसलमूला, सब्बे ते धम्मा कुसला" ति आदिसु[2]। अञ्ञथा "ये ते धम्मा चक्खुविञ्ञेय्या, न ते धम्मा सोतविञ्ञेय्या। ये ते धम्मा सोतविञ्ञेय्या, न ते धम्मा चक्खुविञ्ञेय्या" ति पाळि अभवि-स्स। यं पन वदन्ति "ये ते धम्मा चक्खुविञ्ञेय्या...प०...न ते धम्मा चक्खुविञ्ञेय्या ति इमिना अत्थतो [म०-५८] द्वे दुका वुत्ता होन्ती" ति, तदपि चक्खुविञ्ञेय्याचक्खु-विञ्ञेय्यतं सोतविञ्ञेय्यासोतविञ्ञेय्यतञ्च सन्धाय वुत्तं, न पन चक्खुविञ्ञेय्यनसोतविञ्ञेय्यतं सोतविञ्ञेय्य-नचक्खुविञ्ञेय्यतञ्चा" ति दट्ठब्बं। एतेन पाळिपटिसेधनञ्च निवारितं दट्ठब्बं पटिसे-धनस्सेव अभावतो। तथा यस्स आरम्मणस्स विजाननभावेन यो अत्थो वुच्चमानो अनियम-दस्सनत्थं "केनची" ति वुत्तो, सो येव ततो अञ्ञस्स अविजाननभावेन वुच्चमानो अनियम-दस्सनत्थं पुन "केनची" ति वुत्तो ति तदत्थदस्सने तेनेवा ति अयं पदत्थो न सम्भवती ति न सक्का वत्तुं ति। एवमेत्थ यथा अट्ठकथा अवट्ठिता, तथा अत्थो युज्जती ति वेदितब्बं।

१४-१९ सन्तानस्स अजञ्ञमलीनभावकरणतो कण्हकम्मविपाकहेतुतो च अपरिसुद्धत्ता

---

१. अभि० १ : २४५ धं० सं०। २. अभि० ५ : १ (यमके)।

यूसं विय पग्घरणक-असुचिभावेन सन्दन्ति, तस्मा ते एव **"आसवा"** ति वुच्चन्ति। तत्थ हि पग्घरणक-असुचिम्हि निरुळ्हो आसवसद्दो ति। **धम्मतो याव गोत्रभुं** ति ततो परं मग्गफलेसु अप्पवत्तितो वुत्तं। एते हि आरम्मणकरणवसेन धम्मे गच्छन्ता ततो परं न गच्छन्तीति। ननु ततो परं भवङ्गादीनि पि गच्छन्तीति चे ? न, तेसम्पि पुब्बे आलम्बितेसु लोकियधम्मेसु सासवभावेन अन्तोगधत्ता ततो परताभावतो। एत्थ च गोत्रभुवचनेन गोत्रभुवोदानफलसमापत्तिपुरेचारिकपरिकम्मानि वुत्तानीति वेदितब्बानि, पठममग्गपुरेचारिकमेव वा गोत्रभु अवधिनिदस्सनभावेन गहितं, ततो परं मग्गफलसमानताय पन अञ्ञेसु मग्गेसु मग्गवीथियं फलसमापत्तिवीथियं निरोधानन्तरञ्च पवत्तमानेसु फलेसु [४०–सी०] निब्बाने च पवत्ति निवारिता आसवानं ति वेदितब्बा। **सवन्ती** ति गच्छन्ति। दुविधो हि अवधि अभिविधिविसयो अनभिविधिविसयो च। अभिविधिविसयं किरिया[1] ब्यापेत्वा पवत्तति "आभवग्गा भगवतो यसो गतो" ति, इतरं बहि कत्वा "आपाटलिपुत्ता वुट्ठो देवो" ति। अयञ्च आ-कारो अभिविधि-अत्थो इध गहितो ति **"अन्तोकरणत्थो"** ति वुत्तं।

चिरपारिवासियट्ठो चिरपरिवुत्थता पुराणभावो। **आदि**–सद्देन "पुरिमा भिक्खवे, कोटि न पञ्ञायति भवतण्हाया" ति[2] इदं सुत्तं सङ्गहितं। अविज्जासवभवासवानञ्च चिरपरिवुत्थताय दस्सिताय तब्भावभावीनं कामासव-दिट्ठासवानञ्च चिरपरिवुत्थता दस्सिता होति। अञ्ञेसु पि यथावुत्ते धम्मे ओकासञ्च आरम्मणं कत्वा पवत्तमानेसु मानादीसु विज्जमानेसु अत्तत्तनियादिग्गाहवसेन अभिब्यापनं मदकरणवसेन आसवसदिसता च एतेसं येव, नाञ्ञेसं ति एतेस्वेव आसवसद्दो निरुळ्हो दट्ठब्बो। आयतं वा[3] सवति फलन्तीति [५३–म०] **आसवा**। न हि किञ्चि संसारदुक्खं आसवेहि विना उप्पज्जमानं अत्थीति। आरम्मणभावेन ये धम्मा वणो विय आसवे पग्घरन्ति, ते असम्पयोगे अतब्भावे पि सह आसवेहीति **सासवा**, आसववन्तो ति अत्थो।

"असुचिभावेन सन्दन्ती" ति वुत्तं। तत्था ति वणे। **पग्घरणक...प०...सद्दो** ति एतेन आसवो विय आसवो ति अयम्पि अत्थो दस्सितो ति दट्ठब्बं। **गोत्रभु...प०...वुत्तानी** ति एतेन गोत्रभुग्गहणं उपलक्खणं यथा "काकेहि सप्पि रक्खितब्बं" ति दस्सेति। गोत्रभुसदिसा गोत्रभू ति पन अत्थे सति गुणप्पधानत्थानं एकेन सद्देन अवचनीयत्ता वोदानादयो व वुत्ता भवेय्युं। अथ वा गोत्रभू ति एकसेसेन सामञ्ञेन वा अयं निद्देसो ति वेदितब्बं अभिविधिविसयं अवधि ति विभत्ति परिणामेत्वा वत्तब्बं।

---

1. क्रिया—सी०। 2. अं० ४ : १९२। 3. नत्थि—सी०।

ओसानदुके "नो आसवा खो पना" ति अवत्वा "आसवविप्पयुत्ता खो पना" ति वचनं सासवानं सहेतुकानं विय सम्पयुत्तेहि तंसहितता न होतीति दस्सनत्थं। एवं सेसगोच्छकेसु पि यथासम्भवं विप्पयुत्तग्गहणे पयोजनं दट्ठब्बं। अपि च "नो आसवा खो पन धम्मा सासवा" ति इदं पदं चतुत्थदुके दुतियपदेन निन्नानं, न च एकेन दुको होति, तस्मा आसवविप्पयुत्तपदमेव गहेत्वा ओसानदुकयोजना आयागता ति कता। हेतुगोच्छके

सम्पयुत्तेहि आसवेहि तंसहितता आसवसहितता। इदं वुत्तं होति—यथा सहेतुकानं सम्पयुत्तेहि हेतूहि सहेतुकता, न एवं सासवा ति वुत्तधम्मानं सम्पयुत्तेहि आसवेहि सासवता, अथ खो विप्पयुत्तेहीति। दुकन्तरे अवुत्तपदभावो येवेत्थ दुकयोजनाय आयागतता। यदि एवं हेतुगोच्छके कथं ति आह "हेतुगोच्छके पना" ति आदि। पठमे दुके दुतियस्स पक्खेपे एको ति चतुत्थदुकमाह। पठमे दुके ततियस्स पक्खेपे द्वे ति "आसवा चेव धम्मा आसवविप्पयुत्ता च, आसवविप्पयुत्ता चेव धम्मा नो च आसवा" ति इमिना सद्धिं पञ्चमदुकमाह। पठमस्स दुतिये दुके पक्खेपे एको ति "नो आसवा धम्मा सासवा पि अनासवा पी" ति अयमेको। ततिये पठमस्स पक्खेपे द्वे ति "आसवा धम्मा [म०-५९] आसवसम्पयुत्ता पि आसवविप्पयुत्ता पि, नो आसवा धम्मा आसवसम्पयुत्ता पि आसवविप्पयुत्ता पी" ति इमे द्वे। ततिये दुतियस्स पक्खेपे एको ति "सासवा धम्मा आसवसम्पयुत्ता पि आसवविप्पयुत्ता पी" ति एको। दुतिये ततियस्स पक्खेपे एको ति छट्ठदुकमाह। तेही ति चतुत्थपञ्चमछट्ठेहि। इतरे ति तदवसिट्ठा पञ्च। ते पन पठमे ततियदुकदुतियपदपक्खेपे एको, दुतिये पठमदुकदुतियपदपक्खेपे एको, ततिये पठमस्स एकेकपदपक्खेपे द्वे, ततिये दुतियदुकपठमपदपक्खेपे एको ति एवं वेदितब्बा। "सासवा धम्मा आसवा पि नो आसवा पि। आसवसम्पयुत्ता धम्मा आसवा पि नो आसवा पि। आसवविप्पयुत्ता धम्मा आसवा पि नो आसवा पी" ति एतेसम्पि, "आसवसहगता धम्मा नो आसवसहगता धम्मा" ति एवमादीनञ्च अग्गहणे कारणं गहणनयो च पुब्बे वुत्तनयेनेव वेदितब्बं।

एस नयो ति यो एस पठमदुके दुतियदुकपक्खेपादिको उपायो इध आसवगोच्छके वुत्तो, एस नयो संयोजनगोच्छकादीसु दुकन्तरनिद्धारणे ति अत्थो। तत्थ पाळियं अनागतदुका संयोजनगोच्छके ताव "संयोजना चेव धम्मा संयोजनविप्पयुत्ता च, संयोजनविप्पयुत्ता चेव धम्मा नो च संयोजना, संयोजना धम्मा संयोजनसम्पयुत्ता पि संयोजनविप्पयुत्ता पि, नो संयोजना धम्मा संयोजनसम्पयुत्ता पि संयोजनविप्पयुत्ता पि, नो संयोजना धम्मा संयोजनिया पि असंयोजनिया पि, संयोजनिया धम्मा संयोजनसम्पयुत्ता पि संयोजनविप्पयुत्ता पी" ति पञ्च। एवं गन्थ-ओघ-योग-उपादान-गोच्छकेसु पच्चेकं पञ्च। नीवरणगोच्छके पन नीवरणानं नीवरणविप्पयुत्तभावाभावतो "नो नीवरणा धम्मा नीवरणिया पि अनीवरणिया पि, नो नीवरणा धम्मा

पन हेतुविप्पयुत्तानं सहेतुकता नत्थीति ते गहेत्वा दुकयोजनाय असक्कुणेय्यत्ता नहेतुपदं गहेत्वा ओसानदुकयोजना कता। येवा पन पठमे दुके दुतियस्स पक्खेपे एको, ततियस्स द्वे, पठमस्स दुतिये एको, ततिये द्वे, दुतियस्स ततिये एको, दुतिये च ततियस्स एको ति अट्ठ दुका लब्भन्ति, तेसु तीहि इतरे च नयतो दस्सिता ति वेदितब्बा। एस नयो सेस-गोच्छकेसु पि।

किलेसकम्मविपाकवट्टानं पच्चयभावेन तत्थ संयोजेन्ति, सति पि अञ्ञेसं तप्प-च्चयभावे न विना संयोजनानि तेसं तप्पच्चयभावो अत्थि, ओरम्भागियुद्धम्भागियसङ्ग-हितेहि च तंतंभवनिब्बत्तककम्मनियमो भवनियमो च होति, न च उपच्छिन्नसंयोजनस्स कतानि पि कम्मानि भवं निब्बत्तन्तीति। संयोजेतब्बा ति वा **संयोजनिया**। संयोजने नियुत्ता ति वा। दूरगतस्स पि आकड्ढनतो निस्सरितुं अप्पदानवसेन बन्धनं संयोजनं,

---

नीवरणसम्पयुत्ता पि नीवरणविप्पयुत्ता पि, नोवरणिया धम्मा नीवरणसम्पयुत्ता पि नीवरण-विप्पयुत्ता पी" ति तयो। तथा परामासगोच्छके "नो परामासा धम्मा परामट्ठा पि अपरामट्ठा पि, नो परामासा धम्मा परामाससम्पयुत्ता पि परामासविप्पयुत्ता पि, परामट्ठा धम्मा परा-माससम्पयुत्ता पि परामासविप्पयुत्ता पी" ति। किलेसगोच्छके "नो किलेसा धम्मा संकिलेसिका पि असंकिलेसिका पि, नो किलेसा धम्मा संकिलिट्ठा पि असंकिलिट्ठा पि, नो किलेसा धम्मा किलेससम्पयुत्ता पि किलेसविप्पयुत्ता पि, संकिलेसिका [म०–६०] धम्मा संकिलिट्ठा पि असंकिलिट्ठा पि, संकिलेसिका धम्मा किलेससम्पयुत्ता पि किलेसविप्पयुत्ता पि, असंकिलिट्ठा धम्मा संकिलेसिका पि असंकिलेसिका पी"ति छ दुका ति एवं वेदितब्बा सेसं वुत्तनयमेव।

२०-२५ **पच्चयभावेना** ति संयोजनत्थं दस्सेति। यथासकं पच्चयभावो एव हि काम-रागादीनं वट्टसंयोजनं ति। यदि एवं कथं कामरागादीनं येव संयोजनभावो ति आह **"सति पी"** ति आदि। **अञ्ञेसं** ति संयोजनेहि अञ्ञेसं किलेसाभिसङ्खारादीनं। **तप्पच्चयभावे** ति तेसं किलेसकम्मविपाकवट्टानं पच्चयभावे। ओरम्भागियुद्धंभागियभावेन सङ्गहिता परिच्छिन्ना **ओर····प०····सङ्गहिता,** तेहि कामरागादीहि विसेसपच्चयभूतेहि। कामकम्मभवादीनं कामूप-पत्तिभवादिनिप्फादने पि नियमो ति कत्वा आह "तं तं····प०····होती" ति। तेन संयोजनानं भावे यथावुत्तनियमानं कम्मूपपत्तिभवानं भावं दस्सेत्वा तदभावे अभावं दस्सेन्तो **"न चा"** ति आदिमाह। **बन्धनं** असेरिभावकरणं अनुबन्धनादयो विय। **गन्थकरणं** अविच्छिन्नताकरणं। **चक्कलकं** पादपुच्छनरज्जुमण्डलं। न **चोदेतब्बं** ति पञ्ञाचक्खुना पचुरजनस्स पस्सितुं असक्कुणे-य्यत्ता यथावुत्तविसेसस्स सद्धेय्यतं आह। तिविधो हि अत्थो कोचि पच्चक्खसिद्धो यो रूपादि-धम्मानं पच्चत्तवेदनीयो अनिद्दिसितब्बाकारो, सब्बधम्मानं सभावलक्खणं ति वुत्तं होति।

गन्थकरणं सङ्खलिकचक्कलकानं विय पटिबद्धताकरणं वा गन्थनं गन्थो संसिलिसकरणं योजनं योगो ति अयमेतेसं विसेसो ति वेदितब्बो। धम्मानं सभावकिच्चविसेसञ्ञुना पन भगवता सम्पयुत्तेसु आरम्मणेसु तप्पच्चयेसु च तेहि तेहि निप्फादियमानं तं तं किच्चविसेसं पस्सन्तेन ते ते धम्मा [४१-सी०] तथा तथा आसवसंयोजनगन्थादिवसेन वुत्ता ति "किमत्थं एते येव धम्मा एवं वुत्ता, कस्मा च वुत्ता एव पुन वुत्ता" ति न चोदेतब्बमेतं।

[म०-५४] **गन्थनिया** ति एत्थ अयमञ्ञो अत्थो "गन्थकरणं गन्थनं, गन्थने नियुत्ता ति गन्थनिया, गन्थयितुं सक्कुणेय्या, गन्थयितुं अरहन्तीति वा गन्थनिया" ति। एवं ओघनियादीसु पि दट्ठब्बं। तेनातिक्कमतीति एतं धात्वत्थं गहेत्वा **ओघनिया** ति पदसिद्धि कता।

धम्मसभावं अग्गहेत्वा परतो आमसन्तीति **परामासा**। **परतो** ति निच्चादितो। **आमसन्ती** ति सभावपटिसेधेन परिमज्जन्ति।

सभावतो विज्जमानं अविज्जमानं वा विचित्तसञ्ञाय सञ्ञितं आरम्मणं अग्गहेत्वा अप्पवत्तितो आलम्बमाना धम्मा **सारम्मणा**। चिन्तनं गहणं आरम्मणूपलद्धि। चेतसि नियुत्ता, चेतसा संसट्ठा वा **चेतसिका**। दुब्बिञ्ञेय्यनानत्तताय एकीभावमिवुपगमनं निरन्तरभावुपगमनं। येसं रूपानं चित्तं सहजातपच्चयो होति, तेसं चित्तस्स च सुविञ्ञेय्यनानत्तं ति निरन्तरभावानुपगमनं वेदितब्बं। **एकतो वत्तमाना पी** ति **अपि**-सद्दो को पन

कोचि अनुमानसिद्धो यो घटादीसु पटादीसु च पसिद्धेन पच्चयायत्तभावेन घटपट-सद्दादीनं अनिच्चतादि-आकारो। कोचि ओकप्पनसिद्धो यो पचुरजनस्स अच्चन्तमदिट्ठो, सद्धाविसयो सग्गनिब्बानादि। तत्थ यस्स सत्थुनो वचनं पच्चक्खसिद्धे अनुमानसिद्धे च अत्थे न विसंवादेति अविपरीतप्पवत्तिया, तस्स वचनेन सद्धेय्यत्थसिद्धीति तथारूपो च भगवा ति "धम्मानं सभाव प०... न चोदेतब्बं" ति वुत्तं। एस नयो इतो परेसु पि एवरूपेसु।

२६-२७ यथा सरभेहि अतिक्कमितब्बा पब्बतराजि सरभनिया, एवं ओघनिया ति सद्दसिद्धी ति आह "तेना" ति आदि।

५०-५४ विपरियेसग्गाहो परामसनं ति "परतो" ति एत्थ न धम्मसभावतो अञ्ञथामत्तं परं ति अधिप्पेतं, अथ खो तब्बिपरियायो ति आह "परतो ति निच्चादितो" ति।

५५-६६ [म०-६१] यदि सभावतो अविज्जमानं कथमारम्मणभावो ति आह "**विचित्तसञ्ञाय सञ्ञितं**" ति परिकप्पनामत्तसिद्धं ति अत्थो। दुविञ्ञेय्यनानत्तताय निरन्तरभावूपगमनं संसट्ठभावो ति "सुविञ्ञेय्यनानत्तत्ता न संसट्ठता ति वुत्तं। तेसं अरूपक्खन्धानं। इतरेहि रूपनिब्बानेहि।

वादो एकतो अवत्तमाना ति एतमत्थं दीपेति। इदमेत्थ विचारेतब्बं—अविनिब्भोगरूपानं किं अञ्ञमञ्ञं संसट्ठता, उदाहु विसंसट्ठता ति? विसुं आरम्मणभावेन सुविञ्ञेय्यनानत्तत्ता न संसट्ठता, ना पि विसंसट्ठता संसट्ठा ति अनासङ्कनीयसभावत्ता। चतुन्नं हि खन्धानं अञ्ञमञ्ञं संसट्ठसभावत्ता रूपनिब्बानेहि पि सो संसट्ठभावो अत्थि नत्थीति सिया आसङ्का, तस्मा तेसं इतरेहि, इतरेसञ्च तेहि विसंसट्ठसभावता वुच्चति, न पन रूपानं रूपेहि कत्थचि संसट्ठता अत्थी ति तदासङ्काभावतो विसंसट्ठता च रूपानं रूपेहि न वुच्चतीति। एस हि तेसं सभावो ति। **चित्तसंसट्ठसमुट्ठाना**दिपदेसु संसट्ठसमुट्ठानादिसद्दा चित्तसद्दापेक्खा ति पच्चेकं चित्तसद्दसम्बन्धत्ता चित्तसंसट्ठा च ते चित्तसमुट्ठाना चा ति पच्चेकं योजेत्वा अत्थो वुत्तो। **उपादियन्तेवा** ति भूतानि गण्हन्ति एव निस्सयन्ति एवा ति अत्थो। यथा भूतानि उपादियन्ति गय्हन्ति निस्सीयन्ति, न तथा एतानि गय्हन्ति निस्सीयन्ति, तस्मा **उपादा**। अथ वा भूतानि अमुञ्चित्वा तेसं वण्णनिभादिभावेन गहेतब्बतो **उपादा**।

संकिलिट्ठत्तिके वुत्तनयेना ति सं-सद्दं अपनेत्वा किलिसन्तीति किलेसा ति आदिना नयेन।

[५५-म०] **कामावचरा**दीसु अयमपरो अत्थो—कामतण्हा कामो, एवं रूपारूपतण्हा रूपं अरूपञ्च। आरम्मणकरणवसेन तानि यत्थ अवचरन्ति, ते **कामावचरादयो** ति।

किं पन कारण समानुप्पादनिरोधानं एककलापभूतानं अरूपधम्मानमेव अञ्ञमञ्ञं संसट्ठता वुच्चति, न पन तथाभूतानम्पि रूपधम्मानं ति आह **"एस हि तेसं सभावो"** ति। तेन यदि पि केचि अरूपधम्मा विसुं आरम्मणं होन्ति, दन्धप्पवत्तिकत्ता पन रूपधम्मानं येव सुविञ्ञेय्यनानत्तं, न अरूपधम्मानं ति तेसं संसट्ठभावो तदभावो च इतरेसं सभावसिद्धो ति दस्सेति। समूहघनताय वा दुब्बिभागकरत्ता नत्थि अरूपधम्मानं विसुं आरम्मणभावो ति दुविञ्ञेय्यनानत्तत्ता तेसं येव संसट्ठता। अमुञ्चित्वा तदधीनवुत्तिताय गहेतब्बतो बुद्धिया।

८३-१०० कामतण्हा कामो उत्तरपदलोपेन यथा रूपभवो रूपं। एवं सेसेसु पि। **आरम्मणकरणवसेना** ति एतेन कामरूपारूपतण्हानं विसयभावो यथाक्कमं कामरूपारूपावचरताय कारणं ति दस्सेति। **अवस्सञ्चे**तमेवं सम्पटिच्छितब्बं अञ्ञथा कामावचरादिभावो अपरिपुण्णविसयो सिया। यदि हि आलम्बितब्बधम्मवसेन भूमिपरिच्छेदो, एवं सति अनारम्मणानं सङ्गहो न सिया। अथ विपाकदानवसेन, एवं हि अविपाकानं सङ्गहो न सिया, तस्मा आरम्मणकरणवसेन परियापन्नानं भूमिपरिच्छेदो कातब्बो। एवं हि सति कामावचरादिभावो परिपुण्णविसयो सिया। तेनेवाह **"एवं हि सती"** ति आदि। अपरियापन्नानं पन लोकतो उत्तिण्णभावेन अनुत्तरभूमिता। **अकामावचरादिता नापज्जती** ति अब्यापितदोसं परिहरति, **कामावचरादिता नापज्जती** ति अतिब्यापित-

एवं हि सति अञ्ञभूमीसु उप्पज्जमानानं अकामावचरादिता कामावचरादिता च नापज्जतीति सिद्धं होति।

निक्खेपकण्डे पि "एत्थावचरा" ति वचनं अवीचिपरनिम्मितपरिच्छिन्नोकासाय कामतण्हाय आरम्मणभावं सन्धाय वुत्तं ति वेदितब्बं, तदोकासता च तण्हाय तन्निन्नताय वेदितब्बा। यदि परियापन्नसद्दस्स अन्तोगधा ति अयमत्थो मग्गादिधम्मानञ्च लोकुत्तरन्तोगधत्ता परियापन्नता आपज्जति। न हि "परियापन्ना" ति [४२-सी०] एत्थ तेभूमकगहणं अत्थीति? नापज्जति सब्बदा पवत्तमानस्स पच्चक्खस्स लोकस्स वसेन परियापन्ननिच्छयतो। अथ वा परिच्छेदकारिकाय तण्हाय परिच्छिन्दित्वा आपन्ना पटिपन्ना गहिता ति **परियापन्ना**।

अनीयसद्दो बहुला[1] कत्तु-अभिधायको ति वट्टचारकतो निय्यन्तीति निय्यानीया, नी-कारस्स रस्सत्तं य-कारस्स च क-कारत्तं कत्वा **"निय्यानिका"** ति वुत्तं, निय्यानकरणसीला वा **निय्यानिका**। उत्तरितब्बस्स अञ्ञस्स निद्दिट्ठस्स अभावा निद्दिसिय-

---

दोसं। ननु च इमस्मिं पक्खे कामतण्हा कतमा, कामावचरधम्मारम्मणा तण्हा, कामावचरधम्मा कतमे, कामतण्हाविसया ति इतरीतरनिस्सयता दोसो? ति न, अवीचि-आदि-एकादसोकासनिन्नताय किञ्चि तण्हं कामतण्हाभावेन गहेत्वा तंसभावाय विसयभावेन कामावचरधम्मानं उपलक्खेतब्बता।

इदानि यथावुत्तमत्थं पाठेन समत्थेन्तो "निक्खेपकण्डे पी" ति आदिमाह। तत्थ हि कामतण्हाय आलम्बितब्बत्ता कामधातुपरियापन्नधम्मा च [म०–६२] कामभवसङ्खाते कामे ओगाळ्हा हुत्वा चरन्ति, नाञ्ञथा ति एत्थावचरा ति वुत्तं ति। विसेसत्थिना विसेसो अनुपयुज्जती ति इममत्थं दस्सेन्तो आह "लोकस्स वसेन परियापन्ननिच्छयतो" ति। तेन लोकियधम्मेसु परियापन्नसद्दस्स निरुळ्हतं दस्सेति भगवतो तदुच्चारणानन्तरं विनेय्यानं तदत्थपटिपत्तितो। परिच्छेदकापेक्खा परिच्छिन्नता ति परिच्छेदकारिकाय तण्हाया" ति वुत्तं। सा हि धम्मानं कामावचरादिभावं परिच्छिन्दति। परि-सद्दो चेत्थ "उपादिन्ना" ति आदीसु उप-सद्दो विय ससाधनं किरियं दीपेती ति अयमत्थो वुत्तो ति दट्ठब्बं।

निय्यानकरणसीला निय्यानिका यथा "अपूपभक्खनसीलो आपूपिको" ति, निय्यानसीला एव वा। रागदोसमोहा व गहिता ति ञायति, इतरथा पहानेकट्ठतावचनं निप्पयोजनं सिया। "रणोहता न जोतन्ति, चन्दसूरिया सतारका" ति आदीसु रण-सद्दस्स रेणुपरियायता दट्ठब्बा। सम्पहारपरियायत्ता युद्ध-सद्दस्स सम्पहारो च पहरितब्बाधारो ति अकुसलसेना व "सरणा"

---

१. अबहुलं–सी०।

माना स-उत्तरा धम्मा व उत्तरितब्बा ति "अत्तानं" ति आह। रागादीनं ति रागादीनं दसन्नं किलेसानं सब्बनियताकुसलानं वा तेहि नानप्पकारदुक्खनिब्बत्तकेहि अभिभूता सत्ता कन्दन्ति अकन्दन्ता पि कन्दनकारणभावतो। यस्मा पन पहानेकट्ठतावसेन च **"सरणा"** ति आह, तस्मा "रागादीनं" ति वचनेन रागदोसमोहा व गहिता ति ञायति। **रण**-सद्दो वा रागादिरेणूसु निरुळ्हो दट्ठब्बो, रणं वा युद्धं "कामा ते पठमा सेना" ति[1] एवमादिका च अकुसला सेना अरियमग्गयुद्धेन जेतब्बत्ता सयुद्धत्ता **"सरणा"** ति वुच्चन्तीति। **अरणविभङ्गसुत्ते**[2] पन सदुक्खा स-उपघाता स-उपायासा सपरिळाहा मिच्छापटिपदाभूता कामसुखानुयोगादयो "सरणा" ति वुत्ता ति दुक्खादीनं रणभावो तन्निब्बत्तकसभावानं अकुसलानं सरणता च वेदितब्बा।

पिट्ठिदुका समत्ता

सुत्तन्तिकदुकमातिकापदवण्णना

[५६–म०] विज्जाभागिनो ति विज्जासभागताय तदेकदेसे विज्जाकोट्ठासे वत्तन्तीति वुत्ता। वजिरस्स यत्थ तं पतति, तत्थ अभेज्जं नाम किञ्चि मणिपासाणादि नत्थि, न च तेन गमनमग्गो विरूहति, एवमेव अरहत्तमग्गेन यत्थ सो उप्पज्जति, तस्मिं सन्ताने अभेज्जो किलेसो नाम नत्थि, न च भिन्नो पुन विरूहतीति वजिरुपमता वेदितब्बा। **तदुपचारेन बाला** यथा "मञ्चा घोसन्ती" ति। **कण्हाभिजाती** ति अपाया वुच्चन्ति मनुस्सेसु च दोभग्गियं। तपनस्स वा दुक्खस्स हिता ति **तपनिया**।

ति वुत्ता। दुक्खादीनं ति फलभूतानं दुक्खविघात-उपायासपरिळाहानं सभागभूताय च मिच्छापटिपदाय। तन्निब्बत्तकसभावानं अकुसलानं ति एतेन सब्बेसम्पि अकुसलानं सरणतं दस्सेति।

अभिधम्मदुकमातिकापदवण्णना निट्ठिता।

सुत्तन्तिकदुकमातिकापदवण्णना

विज्जासभागताय न सङ्कप्पादयो विय विज्जाय उपकारकभावतो। **"अभेज्जं"... प०... रूहती"** ति उभयम्पि अनवसेसप्पहानमेव सन्धाय वुत्तं। किञ्चा पि हि हेट्ठिममग्गेहि पि पहीयमाना किलेसा तेन तेन ओधिना अनवसेसमेव पहीयन्ति, ये पन अवसिट्ठा भिन्दितब्बा, ते लोभादिकिलेसभावसामञ्ञतो पुन विरुळ्हा विय होन्ति। अरहत्तमग्गे पन उप्पन्ने न एवं अवसिट्ठाभावतो। **तदुपचारेन** निस्सयवोहारेन। कुसलेहि तापेतब्बा ति वा तपनिया, तदङ्गादिवसेन बाधितब्बा पहातब्बा ति अत्थो।

---

१. खु० १ : ३३१ सुत्तनिपाते। २. म० ३ : ३१२।

दासादीसु पि सिरिवड्ढकादिसद्दा विय अतथत्ता वचनमत्तमेव अधिकारं कत्वा पवत्ता **अधिवचना**। यस्मा पन अधिवचननिरुत्तिपञ्ञत्तिपदानि समानत्थानि, सब्बञ्च वचनं अधिवचनादिभावं भजति, तस्मा तेसु पि वचनविसेसेसु विसेसेन पवत्तेहि अधिवचनादिसद्देहि सब्बानि वचनानि अत्थप्पकासनसामञ्ञेन वुत्तानीति एतेनाधिप्पायेन अयं अत्थयोजना कता ति वेदितब्बा। अथ वा **अधि**-सद्दो उपरिभागे, उपरिवचनं **अधिवचनं**। कस्स उपरि? पकासेतब्बस्स अत्थस्सा ति विदितोवायमत्थो। अधीनं वा वचनं **अधिवचनं**। केन अधीनं? अत्थेन तथा तं-तं-अत्थप्पकासने निच्छितं, नियतं वा वचनं **निरुत्ति**। पथवीधातुपुरिसादि-तं-तं-पकारेन ञापनतो **पञ्ञत्ती** ति एवं अधिवचनादिपदानं सब्बवचनेसु पवत्ति वेदितब्बा। अञ्ञथा सिरिवड्ढकधनवड्ढकप्पकारानमेव अभिलापानं अधिवचनता, [४३–सी०] अभिसङ्खरोन्तीति एवंपकारानमेव निद्धारणवचनानं निरुत्तिता, तक्को वितक्को ति एवंपकारानमेव एकमेवत्थं तेन तेन पकारेन ञापेन्तानं पञ्ञत्तिता च आपज्जेय्या ति।

फस्सो वेदना ति सब्बदा पि अरूपधम्मानं फस्सादिनामकत्ता पथवियादीनं केसकुम्भादिनामन्तरापत्ति विय नामन्तरानापज्जनतो च[1] सदा अत्तना व कतनामताय चतुक्खन्धनिब्बानानि **नामकरणत्थेन नामं**। **नमनं** अविनाभावतो आरम्मणाभिमुखता, नमनहेतुभूतता **नामनं**। अथ वा अधिवचनसम्फस्सो विय अधिवचनं नाममन्तरेन ये

समानत्थानि अधिवचनादीनं सङ्खादिभावतो। "सब्बेव धम्मा अधिवचनपथा" ति आदिना अधिवचनादीनं विसयभावे न कोचि धम्मो वज्जितो, वचनभावो एव [म०–६३] च अधिवचनादीनं वक्खमानेन नयेन युज्जती ति अधिप्पायेनाह "**सब्बञ्च वचनं अधिवचनादिभावं भजती**" ति।

अञ्ञं अनपेक्खित्वा सयमेव अत्तनो नामकरणसभावो नामकरणट्ठो ति, तेन अरूपधम्मानं विय ओपपातिकनामताय पथवी-आदीनम्पि नामभावो सिया ति आसङ्काय निवत्तनत्थं **नामन्तरानापज्जनतो**" ति आह। न हि विना पथवी-आदिनामेन पि रूपधम्मा विय केसादिनामेहि विना वेदनादिनामेहि अञ्ञेन नामेन अरूपधम्मा पिण्डाकारतो वोहरीयन्ती ति। यं पन परस्स नामं करोति, तस्स अञ्ञापेक्खं नामकरणं ति नामकरणसभावता नत्थीति सामञ्ञनामादिकरणानं नामभावो नापज्जति। यस्स चञ्ञेहि नामं करीयति, तस्स नामकरणसभावताय अभावो येवा ति नत्थि नामभावो। ये पन अनापन्ननामन्तरा सभावसिद्धनामा च, ते वेदनादयो व नामं नामा ति दस्सेन्तो "**अत्तना वा**" ति आदिमाह। फस्सादीनं आरम्मणाभिमुखता तं अग्गहेत्वा अप्पवत्ति येवा ति दस्सेतुं "**अविनाभावतो**" ति वुत्तं। **अधिवचनसम्फस्सो** मनोसम्फस्सो, सो नाममन्तरेन गहेतुं असक्कुणेय्यताय पाकटो ति

---

1. नत्थि–सी०।

अनुपचितबोधिसम्भारानं गहणं न गच्छन्ति, ते नामायत्तग्गहणा **नामं**। रूपं पन विना पि नामसाधनं अत्तनो रुप्पनसभावेन गहनं उपयातीति **रूपं**।

[५७-म०] इतो पुब्बे परिकम्मं पवत्तं, इतो परं भवङ्गं, मज्झे समापत्तीति एवं समापत्तीनं अप्पनापरिच्छेदपञ्ञा[1] **समापत्तिकुसलता**। **वुट्ठाने कुसलभावो** पुब्बे वुट्ठाने परिच्छेदकरणञाणं। लक्खणादिवसेन अनिच्चादिवसेन च मनसि करणं **मनसिकारो**।

सुचिसीलता **सोरच्चं**। सा हि सोभनकम्मरतता ति। सम्मोदकस्स, सम्मोदको वा मुदुभावो **सम्मोदकमुदुभावो,** सण्हवाचता। **"अगुत्तद्वारता"** ति वुत्ते केसु द्वारेसू ति न पञ्ञायतीति **"इन्द्रियेसू"** ति वुत्तं। सम्पजानातीति सम्पजानो, तस्स भावो **सम्पजञ्ञं**। तदपि ञाणं यस्मा सम्पजानाति, तस्मा **"सम्पजानातीति सम्पजञ्ञं"** ति आह। **अप्पटि-सङ्खाने** निमित्ते विसये वा। **वीरिसीसेना** ति वीरियपामोक्खेन। **उप्पन्नं बलं** ति वीरियोपत्थ-म्भेन हि कुसलभावना बलवती थिरा उप्पज्जतीति तथा उप्पन्ना बलवती कुसलभावना बलवन्तो सत्त बोज्झङ्गा ति पि वुच्चन्ति। कसिणनिमित्तं विय सञ्ञाणं विय सविग्गहं विय च सुट्ठु उपलक्खेतब्बाकारं "निमित्तं" ति वुच्चति। समथो च एवं आकारो ति "निमित्तं" ति वुत्तो। तथा हि सो पच्चवेक्खन्तेन पच्चवेक्खणतो गय्हतीति। उद्ध-च्चमिव चित्तं न विक्खिपतीति, विक्खेपपटिक्खेपो वा **अविक्खेपो**।

निदस्सनभावेन वुत्तो। **रुप्पनसभावेना** ति निदस्सनमत्तं दट्ठब्बं। पकासकपकासितब्बभावेन पि हि विना पि नामेन रूपधम्मा पाकटा होन्ती ति। अथ वा पकासकपकासितब्बभावो विसयि-विसयभावो चक्खुरूपादीनं सभावो, सो रुप्पनसभावे सामञ्ञे अन्तोगधो ति दट्ठब्बं।

इतो पुब्बे परिकम्मं ति आदिना समापत्तिवुट्ठानकुसलता विय समापत्तिकुसलता पि झानलाभीनं येव होती ति वुत्तं विय दिस्सति। "इतरेसम्पि अनुस्सववसेन समापत्तीनं अप्पनापरिच्छेदपञ्ञा लब्भती" ति वदन्ति। "एवं सीलविसोधनादिना समापत्तिं अप्पेती ति जाननकपञ्ञा सह परिकम्मेन अप्पनापरिच्छेदजाननकपञ्ञा" ति केचि। **वुट्ठाने कुसलभावो** वुट्ठानवसिता। **पुब्बे** ति समापज्जनतो पुब्बे।

सोभने रतो सुरतो, तस्स भावो सोरच्चं ति आह **"सोभनकम्मरतता"** ति। सुट्ठु वा ओरतो विरतो [म०-६४] सोरतो, तस्स भावो सोरच्चं ति। अयं पनत्थो अट्ठकथायं वुत्तो एव। **अप्पटिसङ्खानं** मोहो। **कुसलभावना** बोधिपक्खियधम्मानं वड्ढना। **सञ्ञाणं** उपलक्खणं। **सविग्गहं** सबिम्बकं। **उपलक्खेतब्बाकारं** धम्मजातं, आरम्मणं वा। **अविक्खेपो** ति चित्तविक्खेपपटिपक्खो। उजुविपच्चनीकताय हि पहानवुट्ठानेन च अविक्खेपो विक्खेपं पटिक्खिपति, पवत्तितुं न देती ति।

---

१. नत्थि–सी०। १. अप्पणा०–सी० सब्बत्थ।

सीलमेव पुनप्पुनं आसेवियमानं लोकियं लोकुत्तरम्पि सीलं परिपूरेतीति "**सीलपरिपूरणतो**" ति वुत्तं। **सीलस्स सम्पदा** ति कारणसीलम्पि फलसीलम्पि सम्पन्नसमुदायस्स एकदेसवसेन वुत्तं। अथ वा "कतमे च थपति[1] अकुसला सीला ? "अकुसलं कायकम्मं अकुसलं वचीकम्मं पापको आजीवो" ति[2] वुत्तत्ता सब्बम्पि कुसलाकुसलं "सीलं" ति गहेत्वा तत्थ कुसलसीलं निद्धारेत्वा "**सीलसम्पदा**" ति वुत्तं। एवं **दिट्ठिसम्पदा** पि वेदितब्बा।

दिट्ठिविसुद्धि खो पन यथादिट्ठिस्स च पधानं ति **कम्मस्सकतञाणादिसङ्खाता दिट्ठिविसुद्धि चेवा** ति पटिपाटिया दिट्ठिविसुद्धि दिट्ठिविसुद्धि खो पना ति च पदद्वयस्स समानत्ता पञ्ञा। **यथादिट्ठिस्सा** ति निब्बत्तितप्पकारदिट्ठिस्स निब्बत्तेतब्बपधानानुरूपदिट्ठिस्स[3] वा यथादिट्ठिपवत्तकिरियस्स वा। **संवेगो** ति सहोत्तप्पं ञाणं ओत्तप्पमेव वा। समत्तं तुस्सनं [५८–म०] तित्ति सन्तुट्ठि नत्थि, एतस्स सन्तुट्ठीति असन्तुट्ठि, असन्तुट्ठिस्स भावो **असन्तुट्ठिता**। वीरियप्पवाहे पवत्तमाने [४४–सी०] अन्तरा एव पटिगमनं निवत्तनं पटिवानं, तं अस्स अत्थीति पटिवानी, न पटिवानी अप्पटिवानी, तस्स **भावो अप्पटिवानिता**। विमुच्चनं नाम आरम्मणे अधिमुत्तता किलेसेहि सब्बसङ्खारेहि च निस्सटता च। **पटिसन्धिवसेना** ति किलेसानं तं-तं-मग्गवज्झानं उप्पन्नमग्गे खन्धसन्ताने पुन संदहनवसेन। **अनुप्पादभूते** ति तं-तं-फले। **अनुप्पादपरियोसाने** ति अनुप्पादकरो मग्गो अनुप्पादो, तस्स परियोसाने।

सुत्तन्तिकदुकमातिकापदवण्णना निट्ठिता

मातिकापदवण्णना निट्ठिता

कारणसीलं लोकियं, **फलसीलं** लोकुत्तरं तेन सिज्झती ति कत्वा, लोकियस्स पि वा सीलस्स कारणफलभावो पुब्बापरभावेन दट्ठब्बो। **सम्पन्नसमुदायस्स** परिपुण्णसमूहस्स। **अकुसला सीला** अकुसला समाचारा। **सीलसम्पदा** सीलसम्पत्ति सीलगुणा ति अत्थो।

सहोत्तप्पं ञाणं ति ओत्तप्पस्स ञाणप्पधानतं आह, न पन ञाणस्स ओत्तप्पसहितता-मत्तं। नहि ओत्तप्परहितं ञाणं अत्थी ति। **अधिमुत्तता** अभिरतिवसेन निरासङ्का पवत्ति। **निस्सटता** विसंयुत्तता। एत्थ च अधिमुत्ततानिस्सटतावचनेहि तदुभयपरियाया द्वे विमुत्तियो एकसेसनयेन इध "विमुत्ती" ति वुत्ता ति दस्सेति। तथा हि वुत्तं चित्तस्स च अधिमुत्ति निब्बानञ्चा" ति। उप्पज्जति एतेना ति उप्पादो, न उप्पादो ति अनुप्पादो, तब्भूते अनुप्पादपरियोसाने विमोक्खन्ते अनुप्पादस्स अरियमग्गस्स किलेसानं वा अनुप्पज्जनस्स परियोसाने ति ठानफलेहि अरियफलमेव उपलक्खीयती ति दट्ठब्बं।

मातिकापदवण्णना निट्ठिता।

---

१. ठपति–सी०। २. म० २ : २५०। ३. ०पट्ठाना०–सी० सब्बत्थ।

कामावचरकुसलपदभाजनीयवण्णना

"येवा पन···प····अरूपिनो धम्मा" ति इदं "फस्सो होती" ति एवमादिकं विय न विसुं "ते पि होन्ती" ति होति-सद्देन सम्बन्धं कत्वा वुत्तं, उद्दिट्ठावसेसे च पन गहेत्वा "इमे धम्मा कुसला" ति अप्पेतुं वुत्तं ति अप्पनाय अवरोधितं। एवञ्च कत्वा निद्देसे पि एतस्स पदभाजनीयं न वुत्तं ति। सरूपेन पन अदस्सितत्ता "अत्थी" ति वत्वा दुतियेन होति-सद्देन सम्बन्धो निद्देसो च न कतो, सङ्खेपेन पन उद्दिसित्वा सङ्खेपेनेव ये-वा-पन धम्मा निद्दिट्ठा ति एतस्स धम्मस्स उद्देसे अवरोधो युत्तो। धम्मनिद्देसे च निद्देसावसाने वुत्तास्सा ति।

पुच्छापरिच्छेदवचनेनेव पुच्छाभावे विञ्ञाते पुच्छाविसेसञापनत्थं आह **"अयं कथेतुकम्यतापुच्छा"** ति। **पञ्चविधा होति महानिद्देसे**[1] आगता पुच्छा दस्सेति। **लक्खणं** ति ञातुं इच्छितो यो कोचि सभावो। **अञ्ञातं** ति येन केनचि ञाणेन अञ्ञातभावं आह। **अदिट्ठं** ति दस्सनभूतेन ञाणेन पच्चक्खं विय अदिट्ठतं। **अतुलितं** ति "एत्तकं इदं" ति तुलाभूताय पञ्ञाय अतुलिततं। **अतीरितं** ति तीरणभूताय पञ्ञाय अकतञाणकिरियासमापनतं। **अविभूतं** ति ञाणस्स [५९-म०] अपाकटभावं। **अविभावितं** ति ञाणेन अपाकटीकतभावं। अदिट्ठं जोतीयति एताया ति **अदिट्ठजोतना**। अनुमतिया

कामावचरकुसलपदभाजनीयवण्णना

१. अप्पेतुं ति निगमेतुं। "पदभाजनीयं न वुत्तं" ति पदभाजनीयावचनेन अप्पनावरोधं साधेत्वा पदभाजनीयावचनस्स कारणं वदन्तो "सरूपेना" ति आदिमाह। तत्थ "फस्सो होती" ति आदीसु होति-सद्दो अत्थि-सद्देन अनानत्थो ति अधिप्पायेन वुत्तं "दुतियेन होति-सद्देना" ति। पुब्बो अट्ठकथाधिप्पायेन वत्वा यथावुत्तस्स पाळिप्पदेसस्स अप्पनावरोधो समत्थितो ति अत्तनो अधिप्पायं दस्सेन्तो "सङ्खेपेना" ति आदिमाह।

[६५-म०] ञातुं इच्छितो ति लक्खणस्स पुच्छाविसयतं दस्सेतुं वुत्तं। येन केनची ति दस्सनादिविसेसयुत्तेन, इतरेन वा। अवत्थाविसेसो हि ञाणस्स दस्सनतुलनतीरणानि। "अदिट्ठत" ति आदीसु आहा ति योजेतब्बं, सब्बत्थ च लक्खणस्सा ति। तं हेत्थ अधिकतं ति। अदिट्ठं जोतीयति एताया ति एतेन दिट्ठं संसन्दति एताया ति दिट्ठसंसन्दना। विमतिं छिन्दति

---

१. खु० ७ : २८७ (महा०); खु० ८ : ५३, ६६ चुल्ल०।

पुच्छा **अनुमतिपुच्छा**। "तं किं मञ्ञथ भिक्खवे" ति आदिपुच्छाय हि "का तुम्हाकं अनुमतो" ति अनुमति पुच्छिता होति। **कथेतुकम्यता** ति कथेतुकम्यताय।

पभेदतो धम्मानं देसनं ति मातिकादेसनं आह। तत्थ हि पुरतो कुसलादिके पभेदे वत्वा पच्छतो धम्मा वुत्ता ति **"पभेदवन्तदस्सनत्थं"** ति निद्देसं आह। इदं वुत्तं होति—मातिकाय सविसेसना धम्मा वुत्ता, ते च विसेसितब्बत्ता पधाना, पधानञ्च इतिकत्तब्बताय युज्जतीति धम्मानमेव पधानानं पुच्छितब्बता विस्सज्जितब्बता च होति, तस्मा ते पुच्छितब्बे दस्सेतुं **"कतमे धम्मा"** ति वुत्तं, ते पन विसेसवन्तो पुच्छिता ति दस्सेतुं पुन **"कुसला"** ति वुत्तं ति एवं पभेदवन्तदस्सनत्थं अयं पदानुक्कमो कतो ति। "इमे धम्मा कुसला" ति विस्सज्जने पि एवमेव योजना कातब्बा। **"पभेदतो धम्मानं देसनं दीपेत्वा"** ति एतस्स अत्थं विवरितुं **"इमस्मिं हि"** ति आदिमाह। अनेकप्पभेदा [४५-सी०] देसेतब्बा ति सम्बन्धो। **तस्मा** ति अवोहारदेसनतो धम्मानमेव देसेतब्बत्ता तेसञ्च घनविनिब्भोगपटिसम्भिदाञाणावहनतो पभेदवन्तानं देसेतब्बत्ता "कुसला... प... दीपेत्वा" ति एतेन सम्बन्धो। एवमेव हि यथा-

---

एताया ति विमतिच्छेदना ति एतासम्पि सद्दत्थो नयतो दस्सितो, अत्थतो पन सब्बा पि यथापवत्तं वचनं, तदुप्पादको वा चित्तुप्पादो ति वेदितब्बं।

अञ्ञमञ्ञतो पभिज्जती ति पभेदो, विसेसो, तेन पभेदेन। धम्मानं देसनं ति किञ्चा पि समयभूमिजाति-आरम्मणसभावादिवसेन अनवसेसप्पभेदपरिग्गहतो निद्देसदेसना व वत्तुं युत्ता, तथा पि कुसलादिमातिकापदसङ्गहितविसेसो येव इध पभेदो ति अधिप्पेतो ति वुत्तं "पभेद... प०... देसनं आहा" ति। तेनेवाह अट्ठकथायं[१] "कुसल... प०... दीपेत्वा ति फस्सो होति... प०... अविक्खेपो होती" ति। "फस्सो फुसना" ति आदिना च पभेदवन्तो व सातिसयं निद्दिट्ठा, न पन मातिकायं वुत्तप्पभेदो ति पभेदवन्तदस्सनं निद्देसो। इदं वुत्तं होती ति आदिना "पभेदे ...प० दस्सनत्थं" ति इमस्स वाक्यस्स पिण्डत्थमाह। यदि धम्मा एव पुच्छितब्बा विस्सज्जेतब्बा च कस्मा कुसला ति पभेदवचनं ति आह "ते पना" ति आदि। न हि पभेदेहि विना पभेदवन्तो अत्थी ति। "इमे धम्मा कुसला" ति एतेन "फस्सो होती" ति, "फस्सो फुसना" ति च आदिना उद्दिट्ठनिद्दिट्ठानं धम्मानं कुसलभावो विस्सज्जितो होती ति इमिना अधिप्पायेन "इमे धम्मा कुसला ति विसज्जने पी" ति आह। इमस्मिं ही ति हि-सद्दो कारणत्थो। तेन यस्मा धम्मा व देसेतब्बा, ते च कुसला... प०... भेदा देसेतब्बा, तस्मा ति एवं वा योजना। धम्मानमेवा ति अवधारणफलं दस्सेति "अवोहारदेसनातो" ति। अत्थानञ्चा ति च-सद्देन

---

१. अट्ठ० ४६।

वुत्तदीपनस्स हेतुं सकारणं पकासेतुं पुन **"धम्मा येवा"** ति आदि वुत्तं ति। **धम्मा** ति सामञ्ञमत्तवचनेन समूहादिघनवसेन एकत्तग्गहणं होतीति एकत्तविनिब्भोगकरणं घनविनिब्भोगञाणं आवहति पभेददेसना, तथा कुसलादिधम्मानं अब्याकतादि-अत्थानञ्च दीपनतो धम्मपटिसम्भिदादिञाणञ्च आवहति। **"पभेदवन्तदस्सनत्थं"** ति एतं विवरितं **"इदानि ये तेना"** ति आदिमाह।

पभेद''''प''''युज्जति इतिकत्तब्बतायुत्तस्स विसेसनत्ता। **अथ** वा उद्देसो धम्मप्पधानो पुच्छा संसयितप्पधाना, न च धम्मभावो संसयितो, कुसलादिभेदो पन संसयितो ति निच्छितसंसयितवसेनायं पदानुक्कमो कतो।

एत्था ति एतस्मिं वचने। किमत्थमाह भगवा ति तं दस्सेतुं आह **"समये निद्दिसि चित्तं"** ति। **परियोसाने** ति समये चित्तनिद्देसस्स "यस्मिं''''प''''आरब्भा" ति एतस्स परियोसाने। **तस्मिं समये** ति तस्मिं [६०–म०] चित्तुप्पादसमये। चित्तेन समयं नियमेत्वान अथ पच्छा बोधेतुं ति सम्बन्धो। विज्जमाने पि भोजनगमनादि-समयनानत्ते समवायादिनानत्ते च यथावुत्तचित्तनियमिता विसेसिता अञ्ञस्मिं समये

"फस्सो फुसना" ति एवमादिसभावनिरुत्तिं यथावुत्तधम्मादिञाणञ्च सङ्गण्हाति। "इति एवं अयं पवत्तेतब्बो निवत्तेतब्बो चा" ति तथा तथा विधेतब्बभावो इतिकत्तब्बता, ताय युत्तो इति''' प०''' [६६–म०] युत्तो, तस्स विधेतब्बस्सा ति अत्थो, **`विसेसनत्ता पभेदस्सा** ति अधिप्पायो।

इतिकत्तब्बतायुत्तस्स विसेसितब्बत्ता **उद्देसो धम्मप्पधानो**, तस्मा तत्थ धम्मस्स विसेसितब्बत्ता "कुसला धम्मा" ति अयं पदानुक्कमो कतो। **पुच्छा संसयितप्पधाना** अनिच्छितनिच्छयनाय पवत्तेतब्बत्ता। तेन सब्बधम्मेसु समुग्घाटितविचिकिच्छानुसयानम्पि पुच्छा देसेतब्बपुग्गलगतसंसयापत्तिं अत्तनि आरोपेत्वा संसयापन्नेहि विय पवत्तीयती ति दस्सेति। कामावचरादिभेदो विय कुस-लादिभावेन कुसलादिभेदो धम्मभावेन नियतो ति धम्मा ति वुत्ते निच्छयाभावतो "कुसला नु खो अकुसला नु खो" ति आदिना संसयो होती ति आह **"कुसलादिभेदो पन संसयितो"** ति। धम्मभावो पन कुसलादीसु एकन्तिकत्ता निच्छितो येवा ति वुत्तं **"न च धम्मभावो संसयितो"** ति। तेन संसयितो निच्छेतब्बभावेन पधानो एत्थ कुसलभावो, न तथा धम्मभावो ति धम्मा कुसला ति वुत्तं ति दस्सेति।

चित्तुप्पादसमये ति चित्तस्स उप्पज्जनसमये। "अथ विज्जमाने" ति एत्थ अथसद्दस्स अत्थमाह **"पच्छा"** ति। भोजनगमनादीहि समयेकदेसनानत्तं दस्सेत्वा अवसेसनानत्तं दस्सेतुं "समवायादी" ति वुत्तं। **विसेसिता** ति एतेन "नियमिता" ति पदस्स अत्थं विवरति, तस्मा

यथाधिप्पेतानं फस्सादीनं अभावा चित्तनियमिते समये फस्सादयो बोधेतुं विसेसनमेव ताव चित्तं दस्सेतुं समये चित्तं निद्दिसीति अत्थो। विसेसितब्बो पि हि समयो अत्तनो उपकारत्थं विसेसनभावं आपज्जति, विसेसनभूतञ्च चित्तं तदुपकारत्थं विसेसितब्बभावं ति। सन्ततिघनादीनं अयं विसेसो—पुरिमपच्छिमानं निरन्तरताय एकीभूतानमिव पवत्ति **सन्ततिघनता** तथा फस्सादीनं एकसमूहवसेन दुब्बिञ्ञेय्यकिच्चभेदवसेन एकारम्मणतावसेन च एकीभूतानमिव पवत्ति **समूहादिघनता** ति।

कालञ्च समयञ्चा ति युत्तकालञ्च पच्चयसामग्गिञ्च। **खणो** ति ओकासो। तथागतुप्पादादिको हि मग्गब्रह्मचरियस्स ओकासो तप्पच्चयपटिलाभहेतुत्ता। खणो एव च **समयो**। **यो** "खणो" ति च "समयो" ति च वुच्चति, सो **एको वा** ति अत्थो। **महासमयो** ति महासमूहो। **समयो पि खो** ति सिक्खापरिपूरणस्स हेतु पि। **समय-**

यथावुत्तचित्तविसेसितब्बतो समयतो ति अत्थो। **यथाधिप्पेतानं** ति कामावचरादिविसेसयुत्तानं। "तस्मिं समये" ति चित्तुप्पत्तिया विसेसितब्बो पि समयो येन चित्तेन उप्पज्जमानेन विसेसीयति, तस्सेव चित्तस्स "यस्मिं समये" ति एत्थ सयं विसेसनभावं आपज्जति। तथा "तस्मिं समये" ति एत्थ विसेसनभूतं चित्तं अत्तना विसेसितब्बसमयस्स उपकारत्थं "यस्मिं समये ... प० ... चित्तं" ति विसेसितब्बभावं आपज्जति। उपकारो ति च अञ्ञमञ्ञं अवच्छेकावच्छिन्दितब्बभावो ति दट्ठब्बं। पुरिमधम्मानं भङ्गसमकालं, भङ्गानन्तरमेव वा पच्छिमधम्मानं उप्पत्ति **पुरिमपच्छिमानं निरन्तरता** केनचि अनन्तरितता। याय भावपक्खस्स बलवभावेन पटिच्छादितो विय हुत्वा अभावपक्खो न पञ्ञायती ति तदेवेतं ति गहणवसेन पचुरजनो विपरियेसितो, [६७–म०] सोयमत्थो अलातचक्केन सुपाकटो होति। तेनेवाह **"एकीभूतानमिवा"** ति। एकसमूहवसेन एकीभूतानमिव पवत्ति **समूहघनता**, **दुब्बिञ्ञेय्यकिच्चभेदवसेन एकीभूतानमिव पवत्ति** **किच्चघनता** ति योजना। एत्थ च पच्चयपच्चयुप्पन्नभावेन पवत्तमानानं अनेकेसं धम्मानं कालसभावब्यापारारम्मणेहि दुब्बिञ्ञेय्यभेदताय एकीभूतानमिव गहेतब्बता यथाक्कमं सन्ततिघनतादयो ति दट्ठब्बं।

सहकारीकारणसन्निज्झं समेती ति **समयो**, समवेती ति अत्थो ति **समय-सद्दस्स** समवायत्थतं दस्सेन्तो **"पच्चयसामग्गिं"** ति आह। समेति समागच्छति एत्थ मग्गब्रह्मचरियं तदाधारपुग्गलेही ति **समयो**, खणो। समेन्ति एत्थ, एतेन वा, समागच्छन्ति धम्मा सहजातधम्मेहि उप्पादादीहि वा ति **समयो**, कालो। धम्मप्पवत्तिमत्तताय अत्थतो अभूतो पि हि कालो धम्मप्पवत्तिया अधिकरणं करणं विय च परिकप्पनामत्तसिद्धेन रूपेन वोहरीयती ति। समं, सह वा अवयवानं अयनं पवत्ति अवट्ठानं ति **समयो**, समूहो यथा "समुदायो" ति। अवयवसहावट्ठान-

प्पवादके ति दिट्ठिप्पवादके। तत्थ हि निसिन्ना तित्थिया अत्तनो अत्तनो समयं पवदन्तीति। **अत्थाभिसमया** ति हितपटिलाभा। अभिसमेतब्बो ति अभिसमयो, अभिसमयो अत्थो **अभिसमयट्ठो** ति पीळनादीनि अभिसमितब्बभावेन एकीभावं उपनेत्वा वुत्तानि, अभिसमयस्स वा पटिवेधस्स विसयभूतो अत्थो **अभिसमयट्ठो** ति तानेव तथा एकत्तेन वुत्तानि। तत्थ **पीळनं** दुक्खसच्चस्स तंसमङ्गिनो हिंसनं अविप्फारिकताकरणं। **सन्तापो** दुक्खदुक्खतादिभावेन सन्तापनं परिदहनं।

"इधा" ति वचनं अकुसलेसु अब्याकतेसु च केसु चि खणस्स असम्भवतो। ननु कुसलानञ्च [४६-सी०] नवमेन खणेन विना उप्पत्ति होतीति? नो न होति, न पन नवमो एव खणो, चतुचक्कानि पि खणो ति वुत्तानि। सब्बन्तिमेन परिच्छेदेन अत्तसम्मापणिधिखणमन्तरेन नत्थि कुसलस्स उप्पत्तीति खणो इध गहितो। इन्द्रियविसयमनसिकाराधीनं विञ्ञाणं ति एवमादि साधारणफलं दट्ठब्बं। **नवमो** ति अट्ठक्खणे उपादाय वुत्तं। चतुचक्कं **वत्तती** ति पुन पतिरूपदेसवासादिसम्पत्ति[१] चतुचक्कं [६१-म०] विपरिवत्ततीति अत्थो। **ओकासभूतानी** ति अत्तनो निब्बत्तिया "इदानि उप्पज्जन्तु कुसलानी" ति अनुमतिदानं विय भूतानि।

चित्तकालो ति धम्मेनेव सता कालो विसेसितो, न तस्स पवतित्थ पवत्तिस्सति पवत्ततीति एतेन अवत्थाविसेसेन, ना पि तस्स विजाननकिच्चेन, तस्मा एवंविधे

मेव हि समूहो। पच्चयन्तरसमागमे एति फलं एतस्मा उप्पज्जति पवत्तति चा ति **समयो**, हेतु यथा "समुदयो" ति। समेति सम्बन्धो एति सविसये पवत्तति, सम्बन्धा वा अयन्ति एतेना ति **समयो**, दिट्ठि। दिट्ठिसंयोजनेन हि सत्ता अतिविय बज्झन्ती ति। समयनं सङ्गति समोधानं ति **समयो**, पटिलाभो। समस्स निरोधस्स यानं, सम्मा वा यानं अपगमो अप्पवत्तीति **समयो**, पहानं। अभिमुखभावेन सम्मा एतब्बो अभिसमेतब्बो अधिगन्तब्बो ति अविपरीतो सभावो **अभिसमयो**। अभिमुखभावेन सम्मा वा एति गच्छति बुज्झती ति **अभिसमयो**, अविराधेत्वा धम्मानं अविपरीतसभावावबोधो। एत्थ च उपसग्गानं जोतकमत्तत्ता तस्स तस्स अत्थस्स वाचको समयसद्दो एवा ति स-उपसग्गो पि वुत्तो। **तानेवा** ति पीळनादीनेव। विप्फारिकता सेरिभावेन किरियासु उस्साहनपरिनिप्फन्नो।

केसुची ति अकुसलविपाकादीसु। खणस्स असम्भवो तेन विनाभावो ति आह "ननू" ति आदि। **धम्मेनेवा** ति विसेसन्तररहितेन। तंयेव हि अवधारणेन निवत्तितं विसेसं दस्सेति **"न तस्स पवत्तित्था"** ति आदिना। **यथा वा तथा वा** ति कालेन लोको पवत्तति

---

१. पटिरूप०-सी०।

धम्मे उपादाय पञ्ञत्तो ति वुत्तो। कमप्पवत्ता विसेसा एव पटिपाटीति बीजभावो च पटिपाटीति वत्तुमरहतीति इमिनाधिप्पायेन **"बीजकालो ति धम्मपटिपाटिं उपादाय पञ्ञत्तो"** ति आह। **धम्मपटिपाटिं वा** ति अट्ठकलापधम्मे सन्धायाह। सञ्चिता विय गय्हमानकाला एव **कालसञ्ञयो,** यथा वा तथा वा कालो ति एकं सभावं गहेत्वा अभिनिवेसं करोन्तस्स तदभिनिवेसनिसेधनत्थं **"सो पनेस सभावतो अविज्जमानत्ता पञ्ञत्तिमत्तको"** ति आह। ञत्वा विञ्ञेय्यो ति सम्बन्धो। **इतरो पन हेतू** ति एस समयो पच्चयो व विञ्ञेय्यो। **एत्था** ति एतस्मिं अधिकारे न हेतुहेतु साधारणहेतु चा ति अत्थो। समवायो पच्चयसामग्गी, हेतु पन एकेको पच्चयो ति अयमेतेसं विसेसो वेदितब्बो। चक्खुविञ्ञाणादीनं अनेकपच्चयदस्सनेन तं-तं-द्वारिकानं कुसलानञ्च तप्पच्चयतं दस्सेति।

परिग्गहो कतो अट्ठकथाचरियेहि। **एककारणवादो** ति पकतिकारणवादो, इस्सर-कारणवादो वा। **अञ्ञमञ्ञापेक्खो** ति अवयवानं अञ्ञमञ्ञापेक्खताय समुदायो वुत्तो। अपेक्खा च याव सहायकारणसमागमो न होति, ताव फलस्स अनिप्फादनं समागमे निप्फादनसमत्थस्स निप्फादनञ्च। समागमो च येसु युज्जमानेसु निब्यापारेसु पि फलस्स पवत्ति, तेसं सब्भावो ति।

असामग्गी··· प···पत्तितो ति चक्खुरूपालोकमनसिकारानं असमवेतानं चक्खु-विञ्ञाणस्स अहेतुभावे सति समवेतानञ्च तंसभावाविनिवत्तितो हेतुभावानापत्तितो ति अत्थो। न हि सभावन्तरं अञ्ञेन सहितं सभावन्तरं होतीति। **एकस्मिं** ति अन्धसते

निवत्तती ति वा कालो नाम भावो वत्तनलक्खणो भावानं [६८–म०] पवत्ति-ओकासदायको ति वा येन तेन पकारेन। इध उत्तमहेतुनो सम्भवो एव नत्थी ति हेतुहेतुसाधारणहेतूयेव पटिसेधेति। तप्पच्चयतं अनेकपच्चयतं।

पकतिस्सरवाद-ग्गहणं निदस्सनमत्तं दट्ठब्बं। पजापतिपुरिसकालवादादयो पि "एककारणवादो" ति। वा-सद्देन वा तेसम्पि सङ्गहो दट्ठब्बो। अवयव····प०···दायो वुत्तो अवयवधम्मेन समुदायस्स अपदिसितब्बत्ता, यथा "समं चुण्णं, अलङ्कतो देवदत्तो" ति च। अनिप्फादनं निप्फादनाभावो अहेतुकभावो। निप्फादेतुं असमत्थस्स पन पच्चयन्तरानं सहस्से पि समागते नत्थेव समत्थता ति आह "निप्फादनसमत्थस्सा" ति। एत्थ च सहकारीकारणायत्ता फलुप्पादना पच्चयधम्मानं अञ्ञमञ्ञापेक्खा ति वुत्ता ति अपेक्खा विया ति अपेक्खा दट्ठब्बा।

निब्यापारेसु अब्यावटेसु। एकेकस्मिं ति अट्ठकथायं आमेडितवचनस्स लुत्तनिद्दिट्ठतं दस्सेति। सति च आमेडिते सिद्धो बहुभावो ति। अन्धसतं पस्सतीति च पच्चत्तवचनं निद्धारणे

एकेकस्मि अन्धे ति अधिप्पायो। अञ्ञथा यथारुतवसेन अत्थे गय्हमाने एकस्स अन्धस्स दस्सनासमत्थता सब्बेसम्पि न होति, ना पि एकस्स असमत्थताय सब्बेसम्पि असमत्थता वुत्ता, किन्तु सब्बेसं विसुं असमत्थताय एवा ति उपमावचनं न युज्जेय्य ना पि उपमोपमितब्बसम्बन्धो।

[६२-म०] न हि उपमितब्बेसु चक्खादीसु एकस्स असमत्थताय सब्बेसम्पि असमत्थता वुत्ता, किन्तु सब्बेसं विसुं असमत्थताय सहितानं असमत्थता ति। **अन्धसतं पस्सती** ति च अन्धसतं सहितं पस्सतीति [४७-सी०] अधिप्पायो। अञ्ञथा वुत्तनयेन उपमितब्बासमानतापत्तितो। **साधा···प०··· ठितभावो** ति येसु विज्जमानेसु फलपवत्ति तेसं समोधाने, यथा पवत्तमानेसु तेसु फलपवत्ति, तथा पवत्तिमाह। न येसं केसञ्चि अनेकेसं समोधानमत्तं सामग्गी। न हि सद्दगन्धरसफोट्ठब्बसमोधानं चक्खुविञ्ञाणस्स, कट्ठकपालपासाणसमोधानं वा सोतविञ्ञाणस्स हेतू ति। तं ति तं दस्सनं। **असा··· प०···· सिद्धो** ति नायमत्थो साधेतब्बो विसुं अहेतूनं चक्खादीनं सहितानं हेतुभावस्स पच्चक्खसिद्धत्ता ति अत्थो। न हि पच्चक्खसिद्धे युत्तिमग्गनं युत्तं ति।

मनुस्सत्तादीनं खणावयवानं सामग्गी खणसामग्गी, तं विना सो नवमचक्कसम्पत्तिसङ्खातो खणो नत्थि। सा एव हि खणसामग्गी सो खणो ति अत्थो। **खण····प··· दीपेति** अत्तनो दुल्लभताया ति अत्थो। खणत्थो वा समयसद्दो खणसङ्खातो समयो

भुम्मवसेन परिणामेत्वा "अन्धसते" ति आह। तथा एकेकस्मि ति इमिना विसुं असमत्थता जोतिता ति अन्धसतं पस्सती ति समुदितं पस्सतीति अत्थतो अयमत्थो आपन्नो ति आह "अन्धसतं सहितं पस्सती ति अधिप्पायो" ति। अञ्ञथा ति यथारुतवसेन अत्थे गय्हमाने। यस्मा असा··· प०····सिद्धो सिविकुब्बहनादीसु, तस्मा नायमत्थो साधेतब्बो। इदानि तस्सत्थस्स सुपाकटभावेन असाधेतब्बतं दस्सेन्तो "विसुं" ति आदिमाह।

एतेनुपायेना ति योयं खणसङ्खातो समयो कुसलुप्पत्तिया दुल्लभभावं दीपेति। **अत्तनो दुल्लभताया** ति एत्थ खणत्थो वा समय-सद्दो खणसङ्खातो समयो ति अत्थो वुत्तो। एतेन उपायभूतेन नयभूतेन। **योजना कातब्बा** ति एत्थायं योजना—**समवाय····प०···वुत्तिं दीपेति** सयं पच्चयसामग्गिभावतो, समवायत्थो वा समय-सद्दो समवायसङ्खातो समयो। सो याय पच्चयसामग्गिया सतीति इमस्स अत्थस्स पकासनवसेन धम्मानं अनेकहेतुतो वुत्ति दीपेति। **काल····प० ····परित्ततं दीपेति** अत्तनो अतिपरित्तताय। **समूह····प०···सहुप्पत्तिं दीपेति** सयं धम्मानं समुदायभावतो। **हेतु··प०···वुत्तितं दीपेति** सति एव अत्तनि अत्तनो [६९-म०] फलानं सम्भवतो ति। अत्थपक्खे च सद्दपक्खे च यस्मि अतिपरित्ते काले यस्मि धम्मसमुदाये

ति वुत्तो। सो यस्मिं दुल्लभे खणे सतीति इमस्सत्थस्स विभावनवसेन तदायत्ताय कुसलुप्पत्तिया दुल्लभभावं दीपेति। एतेनुपायेन **समवाय ... प० ... वुत्ति दीपेती** ति एत्थ इतो परेसु च योजना तस्स तस्स तं-तं-दीपने कातब्बा।

तस्स पुरिसस्सा ति "सेय्यथा पि भिक्खवे, चत्तारो दळ्हधम्मा धनुग्गहा सिक्खिता कतहत्था कतुपासना चतुद्दिसा ठिता अस्सु, अथ पुरिसो आगच्छेय्य 'अहं इमेसं ... प ... कतुपासनानं कण्डे खित्ते खित्ते अप्पतिट्ठिते पथवियं गहेत्वा आहरिस्सामी' ति"[1] एवं वुत्तजवनपुरिसस्स। **ताव परित्तको** ति गमनस्सादानं देवपुत्तानं हेट्ठुपरियायेन पटिमुखं धावन्तानं सिरसि पादे च बद्धखुरधारासन्निपाततो च परित्ततरो कालो। कालसङ्खातो समयो चित्तपरिच्छिन्नो वुच्चमानो तेनेव परिच्छेदकचित्तेन "एवं परित्तो अहं" ति अत्तनो परित्ततं दीपेति। यथा चाहं, एवं सब्बो कुसलचित्तप्पवत्तिकालो ति तस्स परित्ततं दीपेति। सद्दस्स दीपना वुत्तनयानुसारेन वेदितब्बा।

[६३-म०] पकतिवादीनं महतो विय अणुवादीनं द्वि-अणुकस्स विय च एकस्सेव। **हेतु ... प ... वुत्तितं दीपेती** ति पच्चयायत्तवुत्तिदीपनतो तप्परभावा हेतुसङ्खातस्स परायत्तवुत्तिदीपनता वुत्ता। सति पन पच्चयायत्तभावे पच्चयसामग्गी-आयत्तता

यम्हि हेतुम्हि सतीति एतस्स अत्थस्स ञापनवसेन तदाधाराय तदधीनाय च कुसलधम्मप्पवत्तिया दुप्पटिविज्झतं अनेकेसं सहुप्पत्तिं पराधीनप्पत्तिञ्च दीपेती ति।

दळ्हधम्मा धनुग्गहा ति दळ्हधनुनो इस्सासा। दळ्हधनु नाम द्विसहस्सथामं वुच्चति। **द्विसहस्सथामं** ति च यस्स आरोपितस्स जियाबद्धो लोहसीसादीनं भारो दण्डे गहेत्वा याव कण्डप्पमाणा उक्खित्तस्स पथवितो मुच्चति। **सिक्खिता** ति दसद्वादसवस्सानि आचरियकुले उग्गहितसिप्पा। **कतहत्था** ति धनुस्मिं चिण्णवसीभावा। कोचि सिप्पमेव उग्गण्हाति, कतहत्थो न होति, इमे पन न तथा ति दस्सेति। **कतुपासना** ति राजकुलादीसु दस्सितसिप्पा। **चतुद्दिसा ठिता अस्सू** ति एकस्मिं येव पदेसे थम्भं वा रुक्खं वा यं किञ्चि एकं येव निस्साय चतुद्दिसाभिमुखा ठिता सियुं ति अत्थो। **एवं वुत्तजवनपुरिसस्सा** ति न एवरूपो पुरिसो कोचि भूतपुब्बो अञ्ञत्र बोधिसत्तेन। सो हि जवनहंसकाले एवरूपमकासि। सुत्ते पन अभूतपरिकप्पनवसेन उपमामत्तं आहटं।

तप्परभावा ति तप्परभावतो हेतुसङ्खातस्स समयस्स परायत्तवुत्तिदीपने एकन्तब्यावटसभावतो ति अत्थो। ये पन "तप्परभावो" ति पठन्ति तेसं पच्चयायत्तवुत्तिदीपनतो "तप्परभावो"

---

1. सं० २-३ : २२१।

समवायसङ्खातेन दीपियतीति अतप्परभावतो तस्स तंदीपनता न वुत्ता। अनेन समयेन कत्तुभूतेन, अनेन समयेन वा करणभूतेन भगवता पटिसेधितो ति अत्थो। एस नयो पुरिमासु दीपनासु।

अधिकरणवसेना ति आधारवसेन। **एत्था** ति कालसमूहसङ्खाते समये गहिते ति अत्थो। कालो पि हि चित्तपरिच्छिन्नो सभावतो अविज्जमानो पि आधारभावेनेव सञ्ञातो "अधिकरणं" ति वुत्तो तं-खणप्पवत्तानं ततो पुब्बे परतो च अभावा। **भावो** ति किरिया। किरियाय किरियन्तरलक्खणं भावेन भावलक्खणं। यथा गावीसु दुय्ह-मानासु गतो, दुद्धासु आगतो ति दोहनकिरिया गमनकिरियाय लक्खणं होति, एव-मिहापि "यस्मिं समये तस्मिं समये" ति च [४८–सी०] वुत्ते सतीति अयमत्थो विञ्ञायमानो एव होति अञ्ञकिरियासम्बन्धाभावेन पदत्थस्स सत्ताविरहाभावतो ति समयस्स सत्ताकिरियाय चित्तुप्पादकिरिया फस्सादिभवनकिरिया च लक्खीयतीति उभ-यत्थ समयसद्दे भुम्मनिद्देसो कतो लक्खणभूतभावयुत्तो ति।

उद्दानतो ति उद्देसतो सङ्खेपतो। किलेसकामो वत्थुकामभावं भजन्तो काम-नीयवसेन भजति, न कामनवसेना ति कामनवसेन किलेसकामो एव होति, न वत्थु-कामो। **दुविधो पेसो** ति वचनेन दुविधस्स पि सहितस्स अवचरणप्पदेसं सङ्गण्हाति। तेन वत्थुकामस्सेव पवत्तिदेसो रूपारूपधातुद्वयं अपनीतं होति। ननु च दुविधो पि सहितो रूपारूपधातूसु पवत्तति रूपारूपावचरधम्मानं वत्थुकामत्ता तदारम्मणानं रूपा-

---

हेतुसङ्खातस्स समयस्स, तस्मा तस्स परायत्तवुत्तिदीपनता वुत्ता ति योजना। समुदायायत्ततादीपने तप्परो, तदेकदेसायत्ततादीपने तप्परो न होती ति आह "**अतप्परभावतो**" ति।

ननु च तं तं उपादाय पञ्ञत्तो कालो वोहारमत्तको, सो कथं आधारो तत्थ वुत्तधम्मानं ति आह "**कालो पि ही**" ति आदि। यदि किरियाय किरियन्तरलक्खणं भावेन भावलक्खणं, का पनेत्थ लक्खणकिरिया ति आह "**इहापी**" ति आदि। **लक्खणभूतभावयुत्तो** ति इति-सद्दो हेतु-अत्थो। इदं वुत्तं होति–यस्मा सत्तासङ्खाताय लक्खणकिरियाय युत्तो समयो, तस्मा तत्थ भूमिनिद्देसो ति।

उद्दानतो ति यदि सङ्खेपतो ति अत्थो। ननु च अवसिट्ठकिलेसादयो विय किलेसकामो पि अस्सादेतब्बताय वत्थुकामे समवरुद्धो ञाणं विय ञेय्ये ति सङ्खेपतो एको येव [७०–म०] कामो सिया ति अनुयोगं सन्धायाह "**किलेसकामो**" ति आदि। **सहितस्सा** ति विसयविसयिभावेन अवट्ठितस्स। "उद्दानतो द्वे कामा" ति किञ्चा पि सब्बे कामा उद्दिट्ठा, "चतुन्नं अपायानं" ति आदिना पन विसयस्स विसेसितत्ता ओरम्भागियकिलेसभूतो कामरागो इध किलेसकामो ति गहितो ति "तेन।"

रूपरागानञ्च किलेसकामभावसिद्धितो ति ? तं न, बहलकिलेसस्स कामरागस्स किलेसकामभावेन इध सङ्गहितत्ता।

एवञ्च कत्वा रूपारूपधातूसु पवत्तमानेसु कामावचरधम्मेसु निकन्ति इध न सङ्गहिता सुखुमत्ता। "उद्दानतो द्वे कामा" ति सब्बकामे उद्दिसित्वा पि हि "दुविधो पेसो" ति एत्थ तदेकदेसभूता अञ्ञमञ्ञसहिततापरिच्छिन्ना कामरागतब्बत्थुकधम्मा व सङ्गहिता ति, [६४–म०] निरवसेसो वा किलेसकामो कामरागो कामतण्हा-रूपतण्हा-अरूपतण्हा-निरोधतण्हाभेदो इध पवत्ततीति अनवसेसप्पवत्तितं सन्धाय "दुविधोपेसो" ति वुत्तं, वत्थुकामो पि च अप्पको इधा पि न वत्तति रूपारूपावचरविपाकमत्तो, तथा पि परिपुण्णवत्थुकामत्ता कामावचरधम्मा व इध गहिता। एवञ्च कत्वा ससत्थावचरोपमा युत्ता होति। 'रूपूपपत्तिया मग्गं भावेती" ति[1] एत्थ रूपभवो उत्तरपदलोपं कत्वा "रूपं" ति वुत्तो, एवमिधा पि उत्तरपदलोपो दट्ठब्बो। अञ्ञथा हि चित्तं कामावचरावचरं ति वुच्चेय्या ति। **आरम्मणकरणवसेना** ति आदिके "कामो" ति सब्बं तण्हमाह, तस्मा **"कामञ्चेसा'** ति आदि वुत्तं, "कामे अवचारेतीति कामावचारं" ति वत्तब्बे **चा**-सद्दस्स रस्सत्तं कतं।

ति आदिमाह। चोदको तस्स अधिप्पायं अजानन्तो "ननु चा" ति आदिना अनुयुञ्जति। इतरो पन **"बहलकिलेसस्सा"** ति आदिना अत्तनो अधिप्पायं विवरति।

कामाचरधम्मेसु विमानकप्परुक्खादिप्पकारेसु परित्तकुसलादीसु वा। ननु च "चतुन्नं अपायानं" ति विसयस्स विसेसितत्ता रूपारूपधातुग्गहणस्स असम्भवो येवा ति ? न, "उद्दानतो द्वे कामा" ति निरवसेसतो कामानं उद्दिट्ठत्ता। उद्दिट्ठे पि हि कामसमुदाये यथा तदेकदसो व गय्हति, तं दस्सेतुं **"दुविधो"** ति आदिमाह। **कामरागो** पञ्चकामगुणिको रागो। **कामतण्हा** कामवचरधम्मविसया तण्हा। **निरोधतण्हा** उच्छेददिट्ठिसहगतो रागो। **इधा** ति एकादसविधे पदेसे। यदि अनवसेसप्पवत्ति अधिप्पेता **"दुविधो पेसो"** ति न वत्तब्बं वत्थुकामेकदेसस्स इध अप्पवत्तनतो ति अनुयोगेन येभुय्यभावतो अनवसेसो विय अनवसेसो ति वा अत्थो गहेतब्बो ति दस्सेन्तो **"वत्थुकामो पी"** ति आदिमाह। अनवसेससदिसता चेत्थ सभावभिन्नस्स कस्स चि अनवसेसतो। **एवञ्च कत्वा** ति किलेसकामवत्थुकामानं अनवसेसपरिपुण्णभावेन अभिलक्खितत्ता ति अत्थो। **चासद्दस्स रस्सत्तं कतं** ति कामावचरसद्दे हेतुकत्तु-अत्थो अन्तोनीतो ति दस्सेति।

---

1. अभि० १ : ४५, २ : ३१८।

रुळ्हिसद्देना ति ञाणसम्पयुत्तेसु रुळ्हेन[1] सद्देन, ञाणसम्पयुत्तेसु वा पवत्तित्वा अनवज्जसुखविपाकताय तंसदिसेसु ञाणविप्पयुत्तेसु रुळ्हेन सद्देन । अथ वा किञ्चि निमित्तं गहेत्वा सति पि अञ्ञस्मिं तंनिमित्तयुत्ते किस्मिञ्चिदेव विसये सम्मुतिया चिरकालतावसेन निमित्तविरहे पि पवत्ति रुळ्हि नाम यथा "महियं सेतीति महिंसो, गच्छन्तीति गावो" ति एवं कुसलसद्दस्स पि रुळ्हिभावो वेदितब्बो । पञ्ञानिद्देसे "कोसल्लं" ति अभिधम्मे[2] वुत्तं, तस्स च भावा कुसलसद्दप्पवत्तीति कोसल्लयोगा कुसलं ति अयं अभिधम्मपरियायो होति। **कुसलं** ति कुसलभावं आह ।

विपाकादीनं अवज्जपटिपक्खता नत्थीति कुसलमेव **अनवज्जलक्खणं** वुत्तं । **अनवज्जलक्खणमेवा** ति सुखविपाकसभावस्स लक्खणभावनिवारणत्थं अवधारणं कतं, तंनिवारणञ्च तस्स पच्चुपट्ठानतं वत्थुकामताय कतं सम्पत्ति-अत्थेन रसेन **वोदानभावरसं**। फलट्ठेन पच्चुपट्ठानेन [४९-सी०] **इट्ठविपाकपच्चुपट्ठानं** । **सभावो** कक्खळादिफुसनादिको[3] असाधारणो। **सामञ्ञं** साधारणो अनिच्चादिसभावो । इध च कुसललक्खणं सब्बकुसलसाधारणसभावत्ता सामञ्ञं दट्ठब्बं, अकुसलादीहि असाधारणताय **सभावो** वा। **उपट्ठानाकारो** ति गहेतब्बभावेन ञाणस्स उपट्ठहनाकारो। फलं पन अत्तनो कारणं पटिच्च तप्पटिबिम्बभावेन, पटिमुखं वा उपट्ठातीति **पच्चुपट्ठानं**।

[६५-म०] **विजानाती** ति सञ्ञापञ्ञाकिच्चविसिट्ठं विसयग्गहणं आह । सब्बचित्तसाधारणत्ता यत्थ यत्थ यथा यथा अत्थो लब्भति, तत्थ तत्थ तथा तथा गहेतब्बो ति। यं आसेवनपच्चयभावेन **चिनोति,** यञ्च कम्मुना अभिसङ्खतत्ता **चितं,** तं तथा **"चित्तं"** ति वुत्तं। यं पन तथा न होति, तं परित्तकिरियद्वयं अन्तिमजवनञ्च

विसये ति वत्थुस्मिं अभिधेय्यत्थे ति अत्थो। **निमित्तविरहे** ति एतेन रुळ्हीसु किरियाविभागकरणाय, न अत्तकिरियाया ति दस्सेति । **कुसलभावं** ति जातकबाहितिकसुत्त-अभिधम्मपरियायेन कथितं कुसलत्तं ।

तस्सा ति सुखविपाकभावस्स। **तस्स पच्चुपट्ठानतं वत्थु कामताया** ति एतेन "अनवज्जसुखविपाकलक्खणं" ति एत्थ सुखसद्दो इट्ठपरियायो वुत्तो ति दस्सेति । **सञ्ञापञ्ञाकिच्चं** सञ्जाननपटिविज्झनानि ।

तदुभयविधुरा आरम्मणूपलद्धि "विजानाती" ति इमिना वुच्चती ति आह "सञ्ञा...प०... गहणं" ति । ननु च फस्सादिकिच्चतो पि विसिट्ठकिच्चं चित्तं ति ? सच्चमेतं, सो पन विसेसो

१. रुळ्हेन-सी० सब्बत्थ । २. अभि० १ : २० । ३. कक्खला०-सी० सब्बत्थ ।

लब्भमानचिन्तनविचित्ततादिवसेन **"चित्तं"** ति वेदितब्बं। हसितुप्पादो पन अञ्ञजवनगतिको व। **चित्तानं पना** ति विचित्रानं ति अत्थो। तदन्तोगधत्ता हि समुदायवोहारेन अवयवो पि **"चित्तं"** ति वुच्चति, यथा पब्बतनदीसमुद्दादि-एकदेसेसु दिट्ठेसु पब्बतादयो दिट्ठा ति वुच्चन्तीति। **चरणं** नाम गहेत्वा चरितब्बचित्तपटो। **रूपानी** ति बिम्बानि।

अज्झत्तिकं ति इन्द्रियबद्धं वदति। **चित्तकतमेवा** ति चित्तस्स मूलकारणतं सन्धाय वुतं। कम्मस्स हेतं चित्तं कारणं ति। तं पन अत्थं विभावेतुं **"कायकम्मादिभेदं"** ति आदिमाह। **लिङ्गनानत्तं** ति सण्ठाननानत्तं, भिन्नसण्ठानङ्गपच्चङ्गवतो सरीरस्स वा नानत्तं। वोहारवसेन इत्थिपुरिसादिभावेन वोहरितब्बेसु पत्थनाविसेसा उप्पज्जन्ति, ततो कम्मविसेसा। **एवमिदं कम्मनानत्तं** वोहारनानत्ततो होति। **अपा…प…कादिता** ति एवमादीसु **आदि-सद्देहि** गतिया उपपत्तिया अत्तभावे लोकधम्मेसु च नानाकरणानि सुत्तागतानि सङ्गण्हाति।

कम्मनानत्तादिवसेना ति एत्थ कुसलाकुसलवसेन **कम्मनानत्तं** वेदितब्बं। विसदिससभावता हि नानत्तं ति। कुसलकम्मस्स दानादिवसेन कायसुचरितादिभावेन च **पुथुत्तं,** अकुसलकम्मस्स च मच्छरियादीहि कायदुच्चरितादीहि च **पुथुत्तं** वेदितब्बं। बहुप्पकारता हि पुथुत्तं ति। अन्नदानादिवसेन दानादीनं पाणातिपाता विरति-आदिवसेन कायसुचरितादीनं आवासमच्छरियादिवसेन मच्छरियादीनं पाणातिपातादिवसेन कायदुच्चरितादीनञ्च **पभेदो** वेदितब्बो। एकेकस्स हि पकारस्स भेदो पभेदो ति। नानत्तादीनं **ववत्थानं** तथा तथा ववत्थितता निच्छितता। एतेनुपायेन लिङ्गनानत्तादीनि वेदितब्बानि कम्मनानत्तादीहि निब्बत्तानि हि तानीति।

न तथा दुखबोधो, [७१-म०] यथा सञ्ञापञ्ञाविञ्ञाणानं ति सञ्ञापञ्ञाकिच्चविसिट्ठलक्खणताय विञ्ञाणलक्खणमाह। अनन्तरधम्मानं पगुणबलवभावस्स कारणभावेन पवत्तमानो सन्तानं चिनोति नाम। तथापवत्ति च आसेवनपच्चयभावो ति आह **"आसेवनपच्चयभावेन चिनोती"** ति।

चित्तकतमेवा ति अभिसङ्खारविञ्ञाणकतमेव। **नानत्तादीनं ववत्थानं** ति एत्थ ववत्थानं पच्चेकं योजेतब्बं। ववत्थानं परिच्छेदो असङ्करभावो। तेन च धम्मो निच्छितो नाम होती ति आह **"निच्छितता"** ति। **लिङ्गनानत्तादीनी** ति एत्थ इत्थिपुरिससण्ठानवसेन लिङ्गनानत्तं। देवमनुस्सतिरच्छानादिवसेन इत्थिलिङ्गस्स पुथुत्तं, तथा पुरिसलिङ्गस्स। देवादिभेदे इत्थिलिङ्गे पच्चेकं नानत्तकायतासङ्खातस्स अञ्ञमञ्ञविसदिससभावस्स देसादिभेदभिन्नस्स च विसेसस्स वसेन पभेदो वेदितब्बो। तथा पुरिसलिङ्गे। लिङ्गनिब्बत्तकस्स वा कम्मस्स यथावुत्तनानत्तादिवसेन लिङ्गस्स

पच्चुप्पन्नस्स लिङ्गस्स कम्मतो पवत्तिं तदनुक्कमेन पच्चुप्पन्नकम्मस्स निप्फत्तिञ्च दस्सेत्वा ततो अनागतलिङ्गनानत्तादिनिप्फत्तिदस्सनेन संसारं घटेन्तो **"कम्मनानाकरणं पटिच्चा"** ति आदिमाह। तत्थ पुरिमेन [६६-म०] कम्मवचनेन अविज्जासङ्खारा, लिङ्गादिवचनेन विञ्ञाणादीनि भवपरियोसानानि, गति-आदिवचनेन जातिजरामरणानि गहितानीति दट्ठब्बानि। तत्थ **गती** ति निरयादयो पञ्च गतियो [५०-सी०] वुच्चन्ति, तासं नानाकरणं अपदादिभावो। ता हि तथा भिन्ना ति। **उपपत्ती** ति गोमहिंसादि-खत्तियादि-चातुमहाराजिकादि-उपपत्तियो, तासं नानाकरणं उच्चादिता। खत्तियो एव हि एकच्चो कुलभोग-इस्सरियादीहि **उच्चो** होति, एकच्चो **नीचो**। तेहि एव हीनताय **हीनो**, पधानभावं नीतताय **पणीतो**, अड्ढताय **सुगतो**, दलिद्दताय **दुग्गतो**। कुलवसेन वा **उच्चनीचता**, इस्सरियवसेन **हीनपणीतता**, भोगवसेन **सुगतदुग्गतता** योजेतब्बा। **सुवण्णदुब्बण्णता** ति ओदात-सामादिवण्णसुद्धि-असुद्धिवसेन वुत्तं। **सुजातदुज्जातता** ति निग्रोधपरिमण्डलादि-आरोहपरिणाहेहि लक्खणेहि वा अत्तभावपरिपुण्णापरिपुण्णजातता-वसेन। **सुसण्ठितदुस्सण्ठितता** ति अङ्गपच्चङ्गानं सण्ठानवसेन।

अपरम्पि वुत्तं अज्झत्तिकचित्तस्स यथावुत्तस्स चित्तकतभावसाधकं सुत्तं **कम्मतो"** ति आदि। कम्मं हि चित्ततो निब्बत्तं ति ततो निप्फज्जमानं सब्बम्पि चित्तं चित्तकत-मेवा ति साधेति। कम्मनिब्बत्ततो लिङ्गतो पवत्तमानलिङ्गसञ्ञा मूलकारणतो कम्मतो आसन्नकारणतो लिङ्गतो च पवत्ता होतीति **"कम्मतो...प...पवत्तरे"** ति आह। अथ वा लिङ्गञ्च सञ्ञा च **लिङ्गसञ्ञा**, ता यथासंख्यं कम्मतो लिङ्गतो च पवत्तरे ति अत्थो।

नानत्तादीनि योजेतब्बानि। लिङ्गनानत्तादीसु पवत्तत्ता सञ्ञादीनं नानत्तादीनि। तेनेवाह **"कम्मनान-त्तादीहि निब्बत्तानि हि तानी"** ति। अपदादिनानाकरणदस्सनेन लिङ्गनानत्तं दस्सितं। तस्मिञ्च दस्सिते सञ्ञानानत्तादयो दस्सिता एवा ति आवत्तति भवचक्कं ति दस्सेन्तो आह—**"अनाग...प०... घटेन्तो"** ति। इत्थिलिङ्गपुरिसलिङ्गादि विञ्ञाणाधिट्ठितस्स रूपक्खन्धस्स सन्निवेसविसयो। सञ्ञा-सीसेन चत्तारो खन्धा वुत्ता। वोहारवचनेन च पञ्चन्नं खन्धानं वोहरितब्बभावेन पवत्ति दीपिता, या सा तण्हादिट्ठि-अभिनिवेसहेतू ति इममत्थं दस्सेन्तो **"लिङ्गादि...प०....योसानानी"** ति आह।

"ये केचि भिक्खवे, धम्मा अकुसला अकुसलभागिया, सब्बेते मनोपुब्बङ्गमा"[१] ति, "मनो-पुब्बङ्गमा धम्मा" ति[२] च एवमादिवचनतो चित्तहेतुकं कम्मं ति आह **"कम्मं हि चित्ततो निब्बत्तं"** ति। **यथासङ्ख्यं** ति कम्मतो लिङ्गं लिङ्गतो सञ्ञा ति अत्थो। न पुरिमविकप्पे

---

१. अं० १ = ११। २. खु० १ : १७ (धम्मपदे)।

सञ्ञातो भेदं गच्छन्ती ति ते इत्थिपुरिसादिलिङ्गसञ्ञातो इत्थिपुरिसादिवोहारभेदं धम्मा गच्छन्ति, तथा तथा वोहरितब्बा ति अत्थो। इमाय गाथाय अतीतपच्चुप्पन्नद्धपटिच्चसमुप्पादवसेन चित्तकतं दस्सितं[1]।

लोको एव पजातत्ता **पजा** ति पुरिमपादस्स विवरणं पच्छिमपादो दट्ठब्बो। यथा रथस्स आणि निबन्धना, एवं सत्तलोकरथस्स कम्मं निबन्धनं ति उपमासंसन्दनं वेदितब्बं। इमाय च गाथाय अद्धद्वयवसेन चित्तस्स कम्मविञ्ञाणकतता दस्सिता। **कित्ति** ति परम्मुखा कित्तनं पत्थटयसतं। **पसंसं** ति सम्मुखा पसंसनं थुति। **कम्मनानाकरणं** ति कम्मतो निब्बत्तनानाकरणं कम्मजेहि अनुमियमानं कम्मस्सेव वा नानाकरणं।

[६७–म०] **कम्मस्सका** ति कम्मसया। कम्मस्स दायं तेन दातब्बं आदियन्तीति **कम्मदायादा**। अण्डजादीनञ्च योनीनं कम्मतो निब्बत्तत्ता कम्ममेव योनि अत्तभावपटिलाभनिमित्तं एतेसं ति **कम्मयोनी**। बन्धनट्ठेन कम्मं बन्धु एतेसं ति **कम्मबन्धू**।

चित्तस्सा ति कम्मविञ्ञाणस्स। तस्स पन अलद्धोकासता अञ्ञेन कम्मेन पटिबाहितत्ता तदविपच्चनोकासे पुग्गलस्स निब्बत्तत्ता च वेदितब्बा। विज्जमानम्पि अपरापरियवेदनियकम्मविञ्ञाणं कालगतिपयोगादिसहकारीपच्चयविकलताय **अवसेसपच्चयवेकल्लं** दट्ठब्बं। **एकच्चचित्तं** ति चित्तेन कत्तब्बचित्रेन एकच्चभूतं तेन **कत्तब्बचित्रमाह**।

विय कम्मतो लिङ्गसञ्ञा लिङ्गतो लिङ्गसञ्ञा ति उभयतो उभयप्पवत्तिदस्सनवसेन। "**भेदं गच्छन्ति** एत्थायं पुरिसो ति वा" ति भेदस्स विसेसितत्ता इत्थादिभावेन वोहरितब्बभावो इध भेदो ति "इत्थिपुरिसादिवोहारं गच्छन्ती" ति वुत्तं। **अद्धद्वयवसेना** ति अतीतपच्चुप्पन्नद्धद्वयवसेन। [७२–म०] गुणाभिब्यापनं कित्ती ति आह "पत्थटयसतं" ति। **कम्मनानाकरणेन विना** कम्मनिब्बत्तनानाकारणाभावतो "कम्मजेहि...प०...नानाकरणं" ति वुत्तं।

अविपच्चनोकासो अट्ठानभूता, गतिकालो पि वा। कामावचरं अभिसङ्खारविञ्ञाणं रूपधातुया चक्खुविञ्ञाणादि जनेत्वा अनोकासताय तदारम्मणं अजनेन्तं एत्थ निदस्सेतब्बं। एकच्चचित्तकरणस्स अधिप्पेतत्ता चक्खादिवेकल्लेन चक्खुविञ्ञाणादीनं अजनकं कम्मविञ्ञाणं अवसेसपच्चयविकले अनोगधं दट्ठब्बं। तदपि **कालगतिपयोगादी** ति आदि-सद्देन सङ्गहितं ति। एत्थ च "सहकारीकारणविकलं विपाकस्स अच्चन्तं ओकासमेव न लभति, इतरं विपाकेकदेसस्स लद्धोकासं ति, इदमेतेसं नानत्तं" ति वदन्ति, तं विपाकस्स ओकासलाभे सति सहायकारणविकलता व नत्थी ति अधिप्पायेन वुत्तं।

---

१. चित्तं दस्सितं–सी०।

अनुभवित्वा भवित्वा च अपगतं भूतापगतं। अनुभूतभूतता हि भूततासामञ्ञेन भूतसद्देन वुत्ता। सामञ्ञमेव हि उपसग्गेन विसेसीयती ति। अनुभूतसद्दो च कम्मवचनिच्छा-भावतो [५१-सी०] अनुभवकवाचको दट्ठब्बो। विकप्पगाहवसेन रागादीहि तब्बिपक्खेहि च अकुसलं कुसलञ्च आरम्मणरसं अनुभवति, न विपाको कम्मवेगक्खित्तत्ता, ना पि किरिया अहेतुकानं अतिदुब्बलताय सहेतुकानञ्च खीणकिलेसस्स छळङ्गुपेक्खावतो उप्पज्ज-मानानं अतिसन्तवुत्तित्ता। एत्थ च पुरिमनये कुसलाकुसलमेव वत्तुं अधिप्पायवसेन "भूता-पगतं" ति वुत्तं। यं "उप्पन्नानं अकुसलानं धम्मानं पहानाय उप्पन्नानं कुसलानं धम्मानं ठितिया" ति[1] एत्थ उप्पन्नं ति गहेत्वा तंसदिसानं पहानं, वुड्ढि च वुत्ता, पच्छिमनये पन च-सद्देन कुसलाकुसलञ्च आकड्ढित्वा सब्बं सङ्खतं वुत्तं भूतापगतभावाभिधाना-धिप्पायेन।

विपच्चितुं ओकासकरणवसेन उप्पतितं अतीतकम्मञ्च ततो उप्पज्जितुं आरद्धो अनागतो विपाको च "ओकासकतुप्पन्नं" ति वुत्तो। यं उप्पन्नसद्देन विना पि विञ्ञायमानं उप्पन्नं, तं सन्धाय "नाहं भिक्खवे, सञ्चेतनिकानं" ति आदि[2] वुत्तं। तासु तासु भूमीसू ति मनुस्स-

---

भवतु ताव भवित्वा अपगतं भूतापगतं, अनुभवित्वा अपगतं पन कथं ति आह "अनुभूत-भूता" ति आदि। तेन अनुभूत-सद्देन यो अत्थो वुच्चति, तस्स भूत-सद्दो येव वाचको, न अनु-सद्दो, अनु-सद्दो पन जोतको ति दस्सेति। साखाभङ्गसदिसा हि निपातोपसग्गा ति। किरिया-विसेसकत्तञ्च उपसग्गानं अनेकत्थत्ता धातुसद्दानं तेहि वत्तब्बविसेसस्स जोतनभावेनेव अवि-च्छिन्दनं ति यत्तका धातुसद्देन अभिधातब्बा अत्थविसेसा, तेसं यं सामञ्ञं अविसेसो, तस्स विसेसे अवट्ठापनं तस्स तस्स विसेसस्स जोतनमेवा ति आह "सामञ्ञ... प०... विसेसीयती" ति। अनुभूत-सद्दो बहुलं कम्मत्थे एव दिस्सती ति तस्स इध कत्तु-अत्थवाचितं दस्सेतुं "अनु-भूतसद्दो चा" ति आदिमाह। सति पि सब्बेसं चित्तुप्पादानं सवेदयितभावतो आरम्मणानुभवने, सविपल्लासे पन सन्ताने चित्ताभिसङ्खारवसेन पवत्तितो अब्याकतेहि विसिट्ठो कुसलाकुसलानं सातिसयो विसयानुभवनाकारो ति अयमत्थो इधाधिप्पेतो ति दस्सेन्तो "वत्तुं अधिप्पायवसेना" ति आह। भूतापगतभावाभिधानाधिप्पायेना ति कुसलाकुसलस्स आकड्ढनुपायमाह।

उप्पतितकिञ्चनिप्फादनतो उप्पतितसदिसत्ता "उप्पतितं" ति वुत्तं। उप्पज्जितुं आरद्धो ति अनागतस्स पि तस्सेव उप्पन्न-सद्देन वुत्तताय कारणमाह। एत्थ च रज्जनादिवसेन आर-म्मणरसानुभवनं सातिसयं ति अकुसलञ्च कुसलञ्च उप्पज्जित्वा निरुद्धतासामञ्ञेन "सब्बसङ्खतं

---

१. सं० ४ : २११; अभि २ : २५५ विभङ्गे। २. अं० ४ : ३४०।

देवादि-अत्तभावसङ्खातेसु उपादानक्खन्धेसु । तस्मिं तस्मिं सन्ताने अनुप्पत्ति-अनापादितताय **असमूहतं**। एत्थ च लद्धभूमिकं "**भूमिलद्धं**" ति वुत्तं अग्गि-आहितो विय। ओकासकतुप्पन्नसद्दे पि च ओकासो कतो एतेना ति, ओकासो कतो एतस्सा ति च द्विधत्थे पि एवमेव कतसद्दस्स परनिपातो वेदितब्बो ।

[६८-म०] सब्बदा अवत्तमानम्पि गमियचित्तं पटिपक्खपच्चवेक्खणाय अविक्खम्भितत्ता "**उप्पन्नं**" ति वुत्तं। **अन्तरधापेती** ति विक्खम्भिका आनापानस्सति विक्खम्भेति। **अन्तरायेवा** ति भूमिलद्धे सभूमियं अब्बोच्छिन्ने विच्छिन्दित्वा ति अत्थो। अनतीतं अननागतञ्च खणत्तयेकदेसगतम्पि उप्पज्जमानं "**खणत्तयगतं**" ति वुत्तं। देसनाय पधानेन गहितो अत्थो "**सीसं**" ति वुच्चति। लोकियधम्मं हि देसेतब्बं पत्वा देसनाय चित्तं पुब्बङ्गमं होति, धम्मसभावं वा सन्धायेतं वुत्तं। **अकुसला** ति सब्बे पि अकुसला धम्मा वुत्ता। चेतना ति केचि। **अकुसलभागिया** ति रागादयो एकन्त-अकुसला। **अकुसलपक्खिका** ति फस्सादयो पि तप्पक्खिका। **मनो तेसं धम्मानं पठमं उप्पज्जती** ति सहजातो पि मनो सम्पयुत्ते सङ्गण्हित्वा अधिपतिभावेन पवत्तमानो पठमं उप्पन्नो विय होतीति एवं वुत्तो। सम्पयुत्ता पि तदनुवत्तनताय अन्वदेव अकुसला धम्मा ति वुत्ता, अनन्तरपच्चयमनं वा सन्धाय मनोपुब्बङ्गमता वुत्ता। **चित्तेन नीयती** ति अभिसङ्खारविञ्ञाणं सन्धायाह, तण्हासम्पयुत्तं वा । **पभस्सरं** ति सभावपण्डरतं सन्धायाह। **अरक्खिते** ति सतिया अनुनयपटिघादीहि अरक्खिते, रागादीहि ब्यापन्ने, तेहि

भूतापगतं" ति वुत्तं। समोहविनोदनियं पन "विपाकानुभवनवसेन तदारम्मणं। अविपक्कविपाकस्स सब्बथा अविगतत्ता भवित्वा विगततामत्तवसेन कम्मञ्च [७३-म०] भूतापगतं" ति वुत्तं। तेनेव तत्थ ओकासकतुप्पन्नं ति विपाकमेवाह। इध पन कम्मम्पी ति। आरम्मणकरणवसेन भवति एत्थ किलेसजातं ति **भूमी** ति वुत्ता उपादानक्खन्धा। **अग्गि-आहितो विया** ति भूमिलद्धं ति वत्तब्बताय उपायं दस्सेति। **एतेना** ति कम्मं। **एतस्सा** ति विपाको वुत्तो ति दट्ठब्बं।

अविक्खम्भितत्ता ति अविनोदितत्ता। **सभूमियं** ति सकभूमियं। **विच्छिन्दित्वा** ति पुन उप्पज्जितुं अदत्वा। **खणत्तयेकदेसगतं खणत्तयगतं** ति वुत्तं ति यथावुत्तस्स उदाहरणस्स उपचारभावमाह। तेन उप्पन्ना धम्मा पच्चुप्पन्ना धम्मा ति इदमेत्थ उदाहरणं युत्तं ति दस्सेति। **पधानेना** ति पधानभावेन। **देसनाय चित्तं पुब्बङ्गमं** ति लोकियधम्मे देसेतब्बे चित्तं पुब्बङ्गमं कत्वा देसना भगवता उचिता ति दस्सेति। **धम्मसभावं वा सन्धाया** ति लोकियधम्मानं अयं सभावो यदिदं ते चित्तजेट्ठका चित्तपुब्बङ्गमा पवत्तन्ती ति दस्सेति। तेन तेसं तथा देसनाय कारणमाह, सब्बे अकुसला धम्मा चित्तवज्जा ति अत्थो। **केची** ति पदकारा। **फस्सादयो पी**

एव अवस्सुते। चित्तस्स पुब्बङ्गमभावसाधने अञ्ञमञ्ञं बलदानवसेन सुत्तानुरक्खणं, इध वा उपसंहतानं आभिधम्मिकेहि विञ्ञातानं चिरकालप्पवत्तिवसेन वेदितब्बं।

कतरपञ्ञं[1] त्वं ति आदि न पाळि-आरूळ्हं, एवं भगवा पुच्छतीति अट्ठकथायमेव वुत्तं। **पञ्ञा पन किमत्थिया** ति इदम्पि [५२–सी०] एकं सुत्तं। "अभिञ्ञत्था परिञ्ञत्था पहानत्था" ति तस्स विस्सज्जनं।

सातं ति सभाववसेन वुत्तं, मधुरं ति मधुरं विया ति उपमावसेन। **पोनोब्भविका** ति पुनब्भवकरणसीला। तत्रतत्राभिनन्दनतो नन्दी, नन्दिभूतो रागो नन्दिरागो, नन्दि-रागभावेन सहगता ति **नन्दिरागसहगता** ति न एत्थ सम्पयोगवसेन सहगतभावो अत्थीति सहगतसद्दो तण्हाय नन्दिरागभावं जोतेति। **नन्दिरागभूता** ति चस्स अत्थो। **निस्सये** ति पादके। **रूपारूपारम्मणानं** ति पथवीकसिणादि-आकासादि-आरम्मणानं। **संसट्ठे** ति खीरोदकं विय समोदिते एकीभावमिव गते। **सहजाते** ति सम्पयुत्तसहजाते, न सहजातमत्ते। **इधापी** ति "इमस्मिम्पि पदे अयमेव अत्थो अधिप्पेतो" ति इमिस्सा **अट्ठ-**

ति पि-सद्देन रागादयो सम्पिण्डेति। कालभेदाभावे पि पच्चयभावेन अपेक्खितो धम्मो पुरिम-निप्फन्नो विय वोहरीयती ति आह **"पठमं उप्पन्नो विया"** ति। अनुपचरितमेवस्स पुब्बङ्गम-भावं दस्सेतुं **"अनन्तरपच्चयमनं** ति आदि वुत्तं। "खीणा भवनेत्ती" ति आदिवचनतो[2] नेत्तिभूताय तण्हाय युत्तं चित्तं नायकं ति आह **"तण्हासम्पयुत्तं वा"** ति।

"यं तस्मिं समये चेतसिकं सातं" ति निद्दिट्ठत्ता सोमनस्सवेदना सातसभावा ति आह **"सभाववसेन वुत्तं"** ति। निप्परियायेन **मधुर**-सद्दो रसविसेसपरियायो, इट्ठभावसामञ्ञेन इध उपचारेन वुत्तो ति आह **"मधुरं विया"** ति। परमत्थतो तण्हाविनिमुत्तो नन्दिरागो नन्दिराग-भावो वा नत्थी ति **"न एत्थ सम्पयोगवसेन सहगतभावो अत्थी"** ति, **'नन्दिरागसहगता"** ति च वुच्चति। तेन विञ्ञायति "सहगतसद्दो तण्हाय नन्दिरागभावं जोतेती" ति। अवत्था-विसेसवाचको [७४–म०] वा सह-सद्दो "सनिदस्सना" ति आदीसु विय, सब्बासु पि अवत्थासु नन्दिरागसभावाविजहनदीपनवसेन नन्दिरागभावं गता नन्दिरागसहगता ति तण्हा वुत्ता। गत-सद्दस्स वा "दिट्ठिगतं" ति आदीसु विय अत्थन्तराभावतो नन्दिरागसभावा तण्हा **"नन्दिराग-सहगता"** ति वुत्ता। नन्दिरागसभावा ति अत्थो। **इधापी** ति इमिस्सं अट्ठकथायं। **इमस्मिम्पि पदे** ति "सोमनस्ससहगतं" ति एतस्मिं ति पदे। **अयमेवत्थो** ति संसट्ठो एव। **यथादस्सित-**

---

१. कतरं पञ्ञं–सी०। २. दी० २ : ७३।

कथाय [६९–म०] यथादस्सितसंसट्ठसद्दो सहजाते अधिप्पेतो ति। **अरूपं रूपेना** ति पटिसन्धिक्खणे वत्थुना। **उक्कट्ठनिद्देसो** ति अनवसेससङ्गहेन कतो अतिसयनिद्देसो।

अनाभट्ठतायेवा ति "दिट्ठं सुतं" ति आदीसु दिट्ठतादयो विय अभासितब्बता अनाभट्ठता। सब्बाकारेन सदिसस्स दुतियचित्तस्स ससङ्खारिकतावचनेन इमस्स असङ्खारिकता विञ्ञायति, तस्मा अभासितब्बताय न गहितो ति अत्थो युज्जति। अधिप्पायो पन पाळियं अभासितत्ता एव तत्थ देसेतब्बभावेन न **गहितो** न सङ्गहितो न तस्सत्थस्स अभावा ति। अथ वा पाळियं अनाभट्ठताय एव अट्ठकथायं **न गहितो** न तस्सत्थो वुत्तो। **नियमेत्वा वा** ति परतो एवंविधस्सेव ससङ्खारिकभाववचनतो इध तदवचनेनेव असङ्खारिकभावं नियमेत्वा।

मनोविञ्ञाणं ति एत्थ द्वारं वत्थू ति वुत्तं, द्वारेन वा तं सहायभूतं हदयवत्थु वुत्तं। **सरसभावेना** ति सकिच्चभावेन। अविज्जा हि सङ्खारानं पच्चयभावकिच्चा, अञ्ञासाधारणो वा रसितब्बो विञ्ञातब्बो भावो सरसभावो, अविज्जासभावो सङ्खारसभावो ति एवमादिको। "सरससभावेना" ति पि पाठो, सो येव अत्थो। अविज्जापच्चया ति वा सरसेन, सङ्खारा ति सभावेन।

एकसमुट्ठानादिता रूपधम्मेसु एव योजेतब्बा तेसु तब्बोहारबाहुल्लतो। अतीतादिभावो रूपारूपधम्मेसु, चित्तचेतसिकनिब्बानानम्पि वा यथासभावं एकद्विनकुतोचिसमुट्ठानता योजेतब्बा।

संसट्ठसद्दो ति अत्थुद्धारप्पसङ्गेन पाळितो अट्ठकथाय आगतसंसट्ठसद्दो। **सहजाते** ति सहजातत्थे।

कालविसेसानपेक्खो कम्मसाधनो आभट्ठ-सद्दो भासितपरियायो ति दस्सेन्तो आह **"अभासितब्बता अनाभट्ठता"** ति। **पाळियं** ति इमिस्सा पठमचित्तुप्पादपाळियं। **अभासितत्ता एवा** ति असङ्खारिकभावस्स अवुत्तत्ता एव।

कारणपरियायत्ता वत्थुसद्दस्स पच्चयभावसामञ्ञतो द्वारभूतधम्मानम्पि सिया वत्थुपरियायो ति आह **"द्वारं वत्थू ति वुत्तं"** ति। तेन वत्थु विय वत्थू ति दस्सेति। मनोद्वारभूता धम्मा येभुय्येन हदयवत्थुना सह चरन्ती ति द्वारेन'''प०''''हदयवत्थु वुत्तं ति आह यथा "कुन्ता पचरन्तो" ति। **सकिच्चभावेना** ति अत्तनो किच्चभावेन, किच्चसहितताय वा। **अञ्ञासाधारणो** ति स-सद्दस्स अत्थमाह। सको हि रसो सरसो ति।

अनन्तरचित्तहेतुकत्ता चित्तस्स एकसमुट्ठानता वुत्ता, सहजातचित्तफस्सहेतुकत्ता चेतसिकानं द्विसमुट्ठानता। "चित्तसमुट्ठाना धम्मा, फुट्ठो भिक्खवे, वेदेति, फुट्ठो सञ्जानाति, फुट्ठो चेतेती" ति[1] हि वुत्तं।

---

1. सं० ३ : ६४।

अनापाथगता ति चक्खादीनं अगोचरगता सुखुमरजादिरूपं विय वत्थुपरित्तताय तत्तायोगुळे पतितोदकबिन्दुरूपं विय खणपरित्तताय अतिदूरताय अच्चासन्नादिताय अतीतानागतताय च । विसयो अनञ्ञत्थभावेन, गोचरो च तत्थ चरणेन वुत्तो, तब्बिसयनिच्छयेन मनो पटिसरणं। अयमत्थो सिद्धो होति अञ्ञथा तेसं धम्मारम्मण-

---

सुखुमरजादिरूपं ति अणुतज्जारिरूपमाह। परमाणुरूपे पन वत्तब्बमेव नत्थि। वत्थुपरित्तताया ति एतेन अनेककलापगतानि बहूनि येव रूपायतनानि समुदितानि संहच्चकारिताय सिविकुब्बहनञायेन चक्खुविञ्ञाणस्स आरम्मणपच्चयो, न एकं कतिपयानि वा ति दस्सेति। ननु च एवं सन्ते चक्खुविञ्ञाणं समुदायारम्मणं आपज्जती ति ? नापज्जति समुदायस्सेव अभावतो। नहि परमत्थतो समुदायो नाम कोचि अत्थि। वण्णायतनमेव हि यत्तकं योग्यदेसे अवट्ठितं, [७५-म०] सति पच्चयन्तरसमायोगे तत्तकं यथावुत्तेन ञायेन चक्खुविञ्ञाणस्स आरम्मणपच्चयो होति अविकप्पकत्ता तस्स । तदभिनिहटं पन मनोविञ्ञाणं अनेकक्खत्तुं उप्पज्जमानं पुरिमसिद्धकप्पनावसेन समूहाकारेन सण्ठानादि-आकारेन च पवत्तती ति किं चक्खुविञ्ञाणस्स एकं वण्णायतनं आरम्मणं, उदाहु अनेकानी ति न चोदेतब्बमेवं। न हि पच्चक्खविसये युत्तिमग्गना युत्ता । किञ्च भिय्यो अच्छरासङ्घातक्खणेन अनेककोटि-सङ्खाय चित्तुप्पत्तिया पवत्तनतो चित्तस्स लहुपरिवत्तिताय समाने पि घटसरावादिवण्णानं योग्यदेसावट्ठाने पुरिममनसिकारानुरूपं "घटो" ति वा "सरावो" ति वा पठमं ताव एको मनोविञ्ञाणसन्तानेन परिच्छिज्जति, पच्छा इतरो चक्खुविञ्ञाणवीथिया ब्यवहितेना ति अविसेसविदुताय पन घटसरावादिबुद्धिया अभेदापत्तिपरिकप्पना ति । ईदिसीपेत्थ चोदना अचोदना ति दट्ठब्बा। **खणपरित्तताया** ति पबन्धक्खणस्स इत्तरताय। पबन्धवसेन हि पच्चेकं रूपारूपधम्मा विरोधि-अविरोधिपच्चयसमायोगे बहुं दन्धञ्च निरुज्झनतो परित्तकाला दीघकाला च होन्ति, सभावलक्खणवसेन पन एकपरिच्छेदा एवा ति। यथा च रूपायतनं एवं इतरानि पि । सद्दादयो पि हि वत्थुपरित्ततादिभावेन लब्भन्ती ति । **अच्चासन्नादिताया** ति आदि-सद्देन अनावज्जनं केनचि पटिच्छन्नता ति एवमादिं सङ्गण्हाति। विसयिधम्मं विसेसतो सिनोति बन्धती ति विसयो ति अनञ्ञत्थभावापेक्खो विसयो ति आह **"विसयो अनञ्ञत्थभावेना"** ति । न हि चक्खुविञ्ञाणादयो रूपायतनादितो अञ्ञस्मिं आरम्मणे पवत्तन्ती ति । गावो चरन्ति एत्था ति गोचरो, गोचरो विया ति गोचरो ति सम्बहुलचारितापेक्खो गोचरो ति आह **"गोचरो तत्थ चरणेना"** ति बहुलं हि चक्खुविञ्ञाणादीहि रूपादयो गय्हन्ति, न तथा मनोविञ्ञाणेना ति । तेसं ति मनोविञ्ञाणेन गय्हमानानं रूपायतनादीनं । **"वचनस्स अनुपपत्तितो"** ति कस्मा वुत्तं, ननु पञ्चद्वारे पवत्तमनोविञ्ञाणधातुं सन्धाय तेसं गोचर-

भावेन "नेसं गोचरविसयं पच्चनुभोती" ति वचनस्स अनुपपत्तितो। दिब्बचक्खु-दिब्बसोत-इद्धिविधञाणेहि यथावुत्तनयेन अनापाथगतानि रूपादीनि आलम्बियमानानि न धम्मारम्मणं ति कत्थचि वुच्चमानानि दिट्ठानि, इतरथा च दिट्ठानि "दिब्बेन चक्खुना रूपं पस्सती" ति आदीसू ति।

[७०-म०] **आपाथमागच्छति** मनसा पञ्चविञ्ञाणेहि च गहेतब्बभावूपगमनेन। **घट्टेत्वा** ति पटिमुखभावापाथं गन्त्वा। **सरभाणकस्स** ओसारकस्स। [५३-सी०] पकतिया दिट्ठादिवसेन आपाथगमनञ्च भोजनपरिणाम-उतुभोजनविसेस-उस्साहादीहि कल्यं, रोगिनो वातादीहि च उपद्दुतं वा कायं अनुवत्तन्तस्स जागरस्स भवङ्गस्स चलनपच्चयानं कायिकसुखदुक्ख-उतुभोजनादि-उपनिस्सयानं चित्तपणिदहन-सदिसासदिससम्बन्धदस्सनादिपच्चयानं, सुत्तस्स च सुपिनदस्सने धातुक्खोभादिपच्चयानं वसेन वेदितब्बं। अदिट्ठस्स असुतस्स अनागतबुद्धरूपादिनो पसाददातुकामतावत्थुस्स तं-सदिसतासङ्खातेन दिट्ठसुतसम्बन्धेनेव। न केवलं तं-सदिसता व उभयसम्बन्धो, किन्तु तब्बिपक्खता तदेकदेसता तं-सम्पयुत्ततादिको

विसयं पच्चनुभोती ति वचनं उपपज्जति येवा ति? न, नियमाभावतो। न हि पञ्चद्वाराभिनिहटं येव मनो इध "मनो" वुत्तं ति नियमहेतु अत्थी ति, एतं येव वा चोदनं मनसिकत्वा दिब्बचक्खुञाणादिग्गहणं कतं। **एवंवण्णो** ति आदिवचनतो पुब्बेनिवास-अतीतानागतंसञाणादयो पि इध सम्भवन्ति। **इतरथा** ति रूपं सद्दं ति आदिना।

[७६-म०] **भोजन…प…उस्साहादीही** ति इदं याय कम्मञ्ञताय रूपकायस्स कल्लता होति, तस्सा पच्चयनिदस्सनं। भोजने हि सम्मापरिणते सप्पाये च उतुभोजने सम्मुपयुत्ते सम्मापयोगसङ्खाते कायिकचेतसिकवीरिये च समारद्धे लहुतादिसब्भावेन कायो कम्मक्खमो होति सब्बकिरियानुकूलो ति। अथ वा **भोजन…प…उस्साहादीही** ति इदं कायस्स कल्यताय विय उपद्दुतताय पि कारणवचनं। विसमभोजनापरिणामादितो हि कायस्स उपद्दवकरा वातादयो उप्पज्जन्ती ति। **अनुवत्तन्तस्सा** ति पदं "जयं वेरं पसवती" ति आदीसु[1] विय हेतु-अत्थवसेन वेदितब्बं। जागरणनिमित्तं हि इध अनुवत्तनं अधिप्पेतं ति। अथवा **अनुवत्तन्तस्सा** ति इदं पकतिया दिट्ठादिवसेन आपाथगमनुपनिस्सयानं कल्यतादिनिब्बत्तानं कायिकसुखादीनं सम्भवदस्सनं। कायकल्यतादिं अननुवत्तन्तस्स हि यथावुत्त-उपनिस्सयाभोगाभावेन वुत्तप्पकारं आपाथगमनं न सिया ति। यथानुभूते रूपादिविसये चित्तस्स ठपनं आवज्जनं चित्तपणिदहनं। यथाभूतेन रूपादिना सदिसं असदिसं सम्बन्धञ्च सादिसासदिससम्बन्धं, तस्स दस्सनादि सदिसासदिसम्बन्धदस्सनादि, चित्तपणिदहनञ्च सदिसासदिस…प० …दस्सनादि च चित्त…प०…दस्सनादयो ते पच्चया ति योजेतब्बं। **धातुक्खोभादी** ति आदि-

---

१. खु० १ : ३६ (धम्मपदे)

च वेदितब्बो। केनचि वुत्ते किस्मिञ्चि सुते अविचारेत्वा सद्दहनं **सद्धा,** सयमेव तं विचारेत्वा रोचनं **रुचि,** "एवं वा एवं वा भविस्सती" ति आकारविचारणं **आकार-परिवितक्को,** विचारेन्तस्स कत्थचि दिट्ठिया निज्झानक्खमनं **दिट्ठिनिज्झानक्खन्ति।**

गेरुकहरितालञ्जनादिधातूसु। **सुभनिमित्तं** सुभग्गहणस्स निमित्तं। तं सुभनिमित्तत्ता रञ्जनीयत्ता च **लोभस्स वत्थु।** नियमितस्स चित्तस्स वसेन **नियमितवसेन।** एव-मितरेसु द्वीसु। आभोगो **आभुजितं। लूखपुग्गला** दोसबहुला। अदोसबहुला **सिनिद्ध-पुग्गला। तदधिमुत्तता** ति पीतिनिन्नचित्तता। **इमेहि"'प"'वेदितब्बो** पीतिया सोमन-स्सविप्पयोगासम्भवतो ति अधिप्पायो।

जीवितवुत्तिया आयतनभावतो हत्थारोहादिसिप्पमेव **सिप्पायतनं।** कसिवाणिज्जादि-कम्ममेव **कम्मायतनं।** आयुवेदादिविज्जा **एव विज्जाट्ठानं। अब्यापज्जे** ति दोमनस्स-ब्यापादरहिते रूपभवे। **धम्मपदा** ति धम्मकोट्ठासा। **पिलवन्ती** ति उपट्ठहन्ति पदि-स्सन्ति। **योगा** ति भावनाभियोगा समाधितो। **वत्थुविसदकिरिया** ति अज्झत्तिक-बाहिरानं वत्थूनं निम्मलभावकिरिया। सद्धादीनं इन्द्रियानं अञ्ञमञ्ञानतिवत्तनं **इन्द्रिय-समत्तपटिपादनता।** गम्भीरानं ञाणेन चरितब्बानं, गम्भीरञाणेन वा चरितब्बानं सुत्तन्तानं पच्चवेक्खणा **गम्भीरञाणचरियपच्चवेक्खणा।**

वंसो ति अनुक्कमो। **तन्ती** ति सन्तति। **पवेणी** ति सम्बन्धो। **सब्बमेतं** चारित्तकिरियापबन्धस्स वचनं। चारित्तसीलत्ता **सीलमयं।** "दस्सामी" ति वचीभेदेन वत्थुस्स परिणतत्ता ततो पट्ठाय दानं आरद्धं **नाम** [७१-म०] होति, यतो तस्स अत्तनो परिणामनादीसु आपत्ति होति। विज्जमानवत्थुस्मिं चिन्तनकालतो पट्ठाय दानं आरद्धं ति तत्थ दानमयं कुसलं होतीति अधिप्पायो। न हि दानवत्थुं अविज्जमान-कम्पि सङ्करोन्तस्स कुसलं न होतीति। तं पन दानमयस्स **पुब्बभागो** ति तदेव

सद्देन देवतूपसंहारादिं सङ्गण्हाति। **तंसदिसता** दिट्ठसुतसदिसता। **तंसम्पयुत्तता** दिट्ठसुतपटि-बद्धता। **केनचि वुत्ते** ति इमिना सद्धाय अनुस्सवनिब्बत्ततं आह। **आकारविचारणं** ति **तेसं तेसं** अत्थानं उपट्ठानाकारविचारणं। **कत्थचि** अत्थे।

नियमितस्सा ति कुसलमेव मया उप्पादेतब्बं ति एवं नियमितस्स। पसादसिनेहाभावो दोसबहुलताय होती ति **लूखपुग्गला दोसबहुला** ति आह।

आयतनभावतो ति कारणभावतो।

विज्जमानवत्थुस्मिं ति एतेन "विना पि देय्यधम्मपरिच्चागेन चित्तुप्पादमत्तेनेव दानमयं

भजेय्य, वुत्तं अट्ठकथायं। **कुलवंसादिवसेना** ति उदाहरणमत्तमेवेतं। अत्तना समादिन्न-वत्तवसेन सप्पुरिसवत्तगामजनपदवत्तादिवसेन च चारित्तसीलता वेदितब्बा।

सवत्थुकं ति भेरि-आदिवत्थुसहितं कत्वा। **विज्जमानकवत्थुं** ति भेरि-आदिवत्थुं। धम्मस्सवनघोसनादीसु च सवत्थुकं कत्वा सद्दस्स दानं सद्दवत्थूनं ठानकरणानं ससद्दप्पवत्तिकरणमेवा ति तस्स चिन्तनं विज्जमानवत्थुपरिच्चागो वेदितब्बो। [५४-सी०] भाजेत्वा दस्सेसि धम्मराजा इध च रूपारम्मणादिभावं, अञ्ञत्थ च "तीणिमानि भिक्खवे, पुञ्ञकिरियवत्थूनी" ति[1] दानमयादिभावं, अपरत्थ च "कतमे धम्मा कुसला। तीणि....प....तं-समुट्ठानं कायकम्मं" ति आदिना कायकम्मादिभावञ्च वदन्तो। **अपरियापन्ना चा** ति परमत्थतो अविज्जमानत्ता अञ्ञायतनत्ता च असङ्गहिता।

परिभोगरसो परिभोगपच्चयं पीतिसोमनस्सं। अयं पन रससमानतावसेन गहणं उपादाय रसारम्मणं ति वुत्तो, न सभावतो। सभावेन पन गहणं उपादाय पीतिसोमनस्सं धम्मारम्मणमेव होतीति "सुखा वेदना धम्मारम्मणं" ति वुत्तं। **आरम्मणमेव निबद्धं** ति रूपारम्मणं...प....धम्मारम्मणं ति एवं नियमेत्वा वुत्तं। **कम्मस्स अनिबद्धत्ता** ति कम्मस्स अनियतत्ता। यथा हि रूपादीसु एकारम्मणं चित्तं अनञ्ञारम्मणं होति, न एवं कायद्वारादीसु एकद्वारिककम्मं अञ्ञस्मिं द्वारे नुप्पज्जति, तस्मा

कुसलं उपचितं होती" ति केसञ्चि अतिधावनं निवत्तितं होती ति।

[७७-म०] धम्मसवनस्स घोसनं **धम्मसवनघोसनं**। **तस्सा** ति "**सद्दानं दस्सामी**" ति सद्दवत्थूनं ठानकरणभेरि-आदीनं ससद्दप्पवत्तिकरणस्स। **चिन्तनं** तथा तथा चित्तुप्पादनं। **अञ्ञत्था** ति सुत्तेसु। **अपरत्था** ति अभिधम्मपदेसु। **अपरियापन्ना** ति पदस्स अत्थवण्णना "परिभोगरसो" ति आदिकाय अत्थवण्णनाय परतो बहूसु पोत्थकेसु लिखीयति, यथाठाने येव पन आनेत्वा वत्तब्बा। तत्थ परमत्थतो अविज्जमानत्ता लक्खणपञ्ञत्तियो अञ्ञायतनत्ता छ अज्झत्तिकायतनानि **असङ्गहिता धम्मायतनेना** ति योजेतब्बं।

"एकद्वारिककम्मं अञ्ञस्मिं द्वारे उप्पज्जती" ति कस्मा वुत्तं, ननु रूपादीसु एकारम्मणं चित्तं यथा न अञ्ञारम्मणं होति चित्तविसेसस्स अधिप्पेतत्ता, एवं कम्मविसेसे अधिप्पेते कायद्वारादीसु एकद्वारिककम्मं अञ्ञस्मिं द्वारे न उप्पज्जति तत्थेव परियोसितत्ता, अथ कम्मसामञ्ञं अधिप्पेतं, रूपादीसु एकारम्मणं ति इदं उदाहरणं न सिया ति? न, असदिसभावविभावनवसेन उदाहटत्ता, इतरथा मनोविञ्ञाणभूतं इदं चित्तं छसु पि विसयेसु पवत्तनतो अनि-

---

1. दी० ३ : १७१।

कम्मस्स द्वारनियमरहितत्ता द्वारम्पि कम्मनियमरहितं ति इध आरम्मणं विय नियमेत्वा न वुत्तं। **विना आरम्मणेन अनुप्पज्जनतो** ति एतस्स पि चत्थो "यथा कायकम्मादीसु एकं कम्मं तेन द्वारेन विना अञ्ञस्मिं द्वारे चरति, न एवं रूपादीसु एकारम्मणं चित्तं तेनारम्मणेन विना आरम्मणन्तरे उप्पज्जती" ति वेदितब्बो। न हि यथा वचीद्वारे उप्पज्जमानम्पि "कायकम्मं" ति वुच्चति, एवं सद्दारम्मणे उप्पज्जमानं "रूपारम्मणं" ति वुच्चति।

बद्धारम्मणं ति आरम्मणं सदिसूदाहरणभावेन वुच्चेय्य आरम्मणं विय द्वारम्पि अनिबद्धं ति। यस्मा पन सति पि कम्मानं द्वारन्तरचरणे येभुय्येन वुत्तिया तब्बहुलवुत्तिया च द्वारकम्मानं अञ्ञमञ्ञं ववत्थानं वक्खति, तस्मा पाणातिपातादिभावसामञ्ञेन कम्मं एकत्तनयवसेन गहेत्वा तस्स वचीद्वारादीसु पवत्तिसब्भावतो कम्मस्स अनिबद्धत्ता ति वुत्तं ति आह **"कायद्वारादीसु एकद्वारिककम्मं अञ्ञस्मिं द्वारे न नुप्पज्जती"** ति। रूपादीसु पन एकारम्मणं चित्तं तेनेवारम्मणेन परिच्छिन्नं ति विसिट्ठमेव गहितं ति आरम्मणमेव निबद्धं ति वुत्तं ति चित्तविसेसो एव गहितो, न चित्तसामञ्ञं। "ननु च रूपारम्मणं वा प०....धम्मारम्मणं वा यं यं वा पना" ति आरम्मणम्पि अनियमेनेव वुत्तं ति? सच्चमेतं, तत्थ पन यं रूपादीसु एकारम्मणं चित्तं, तं तेन विना नप्पवत्तति, कम्मं पन कायद्वारिकादिभेदं वचीद्वारादीसु न नप्पवत्तती ति इमस्स विसेसस्स जोतनत्थं पाळियं आरम्मणमेव गहितं, द्वारं न गहितं ति इममत्थं दस्सेति **"आरम्मणमेव निबद्धं"** ति आदिना। वचीद्वारे उप्पज्जमानं पि पाणातिपातादीति अत्थो।

कामावचरकुसल-
कायकम्मद्वारकथावण्णना

[७२-म०] **इमस्स पनत्थस्सा** ति कम्मद्वारानं अञ्ञमञ्ञस्मिं अनियतताय "द्वारे चरन्ति कम्मानी" ति आदिना पकासनत्थं । **पञ्चविञ्ञाणानी** ति एत्थ छट्ठस्स विञ्ञाणस्स तस्स च द्वारस्स अनुद्देसो द्वारद्वारवन्तानं सहाभावा। नियतरूपरूपवसेन चतुसमुट्ठानिककाया वुत्ता ति सद्दस्स विकाररूपादीनञ्च असङ्गहो।

पठमजवनसमुट्ठिता वायोधातु यदिपि तस्मिं खणे रूपानं देसन्तरुप्पत्तिहेतुभावेन चालेतुं न सक्कोति; तथापि विञ्ञत्तिविकारसहिता व सा वेदितब्बा। दससु हि दिसासु यं दिसं गन्तुकामो अङ्गपच्चङ्गानि वा खिपितुकामो, तंदिसाभिमुखानेव रूपानि सा सन्थम्भेति सन्धारेति चा ति तदभिमुखभावविकारवती होति, अधिप्पाय-सहभावो च विकारो विञ्ञत्तीति। एवञ्च कत्वा आवज्जनस्स पि विञ्ञत्तिसमुट्ठापक-

---

कामावचरकुसल-
कायकम्मद्वारकथावण्णना

[७८-म०] **कम्मद्वारानं** ति आदिना पकासेतब्बस्स सरूपं पकासनुपायञ्च दस्सेति । **नियतरूपरूपवसेना** ति धम्मसङ्गहे निद्दिट्ठनियतरूपरूपवसेन। अञ्ञथा कम्मसमुट्ठानिककाये हदयवत्थु पि गहेतब्बं सिया । एकसन्ततिपरियापन्नो उपादिन्नककायो इध गहितो ति चक्खायतनादीति वुत्तेसु एको भावो हदयवत्थु च गहितं ति न सक्का वत्तुं "चक्खायतनादीनि जीवितपरियन्तानी" ति सन्निवेसस्स विभावितत्ता ।

विप्फन्दमानवण्णग्गहणानन्तरं विञ्ञत्तिग्गहणस्स इच्छितत्ता चलनाकारा व वायोधातु विञ्ञत्ति-विकारसहिता ति कदाचि आसङ्केय्या ति तन्निवत्तनत्थं "पठमजवनसमुट्ठिता" ति आह। **देसन्तरुप्पत्तिहेतुभावेन चालेतुं** ति एतेन देसन्तरुप्पत्तिचलनं, तन्निमित्तं च कत्तुभावो उपचरितो ति दस्सेति, अञ्ञथा खणिकता अब्यापारता च धम्मानं न सम्भवेय्या ति । **तदभिमुखभाव-विकारवती** ति तं दिसमभिमुखो तदभिमुखो, तस्स भावो तदभिमुखभावो, सो एव विकारो, तंसमङ्गिनी वायोधातु तदभिमुखभावविकारवती। इदानि तदभिमुखभावविकारस्स विभत्ति-भावं दस्सेन्तो आह "अधिप्पायसहभावी" ति आदि। **एवञ्च कत्वा** ति आदिना इमिस्सा

भावो यथाधिप्पायविकाररूपुप्पादनेन उपपन्नो होति, यतो बात्तिस[1] चित्तानि रूपि-रियापथविञ्ञत्तिजनकानि वुत्तानीति। योजनं गतो, दसयोजनं गतो ति वत्तब्बतं आपज्जापेति अनेकसहस्सवारं उप्पन्ना।

वायोधातुया…प…पच्चयो भवितुं ति थम्भनचलनेसु वायोधातुया पच्चयो भवितुं समत्थो चित्तसमुट्ठानमहाभूतानं एको आकारविसेसो अत्थि, अयं विञ्ञत्ति नाम। तेसं हि तदाकारत्ता वायोधातु थम्भेति चालेति चा ति। **न चित्तसमुट्ठाना** ति एतेन परमत्थतो अभावं दस्सेति। न हि रूपं अप्पच्चयं अत्थि, न च निब्बानवज्जो अत्थो निच्चो अत्थीति। **विञ्ञत्तिताया** ति विञ्ञत्तिविकारताय। चित्तसमुट्ठान-भावो विय महाभूतविकारताय उपादारूपभावो च [५५-सी०] अधिप्पेतो ति वेदितब्बो।

कायिककरणं ति कायद्वारप्पवत्तं चित्तकिरियं, अधिप्पायं ति अत्थो। **कारेति मञ्ञे** ति एतेन वण्णग्गहणानुसारेन गहिताय विञ्ञत्तिया यं करणं विञ्ञातब्बं, तस्स विजाननेन विञ्ञत्तिया विञ्ञातत्तं दस्सेति। न हि विञ्ञत्तिरहितेसु रुक्ख-चलनादीसु "इदमेस कारेती" ति विजाननं होतीति। चक्खुविञ्ञाणस्स हि रूपे अभिनिपातमत्तं किच्चं, न अधिप्पायसहभुनो चलनविकारस्स गहणं। चित्तस्स पन

अत्थवण्णनाय लद्धगुणं दस्सेति। तत्थ **आवज्जनस्सा** ति मनोद्वारावज्जनस्स। **यतो बात्तिसा** ति आदिना तस्स विञ्ञत्तिसमुट्ठापकता न सक्का पटिसेधेतुं ति दस्सेति।

पच्चयो भवितुं समत्थो ति एतेन यथावुत्तवायोधातुया थम्भनचलनसङ्खातकिच्चनिप्फादने तस्स आकारविसेसस्स सहकारीकारणभावमाह। अनिदस्सनसप्पटिघतादयो विय महाभूतानं अवत्था-विसेसमत्तं सो आकारविसेसो ति परमत्थतो न किञ्चि होती ति "**परमत्थतो अभावं दस्सेती**" ति आह। परमत्थतो चित्तसमुट्ठानभावो पटिसेधितो। कम्मसमुट्ठानादिभावस्स पन सम्भवो येव नत्थीति यथावुत्तविकारस्स परमत्थतो सब्भावे न कुतो चि समुट्ठितत्ता अप्पच्चयत्तं आपन्नं। **न हि रूपं अप्पच्चयं अत्थि**, अप्पच्चयत्ते च सति निच्चभावो आपज्जति, **न च निब्बानवज्जो अत्थो** [७९-म०] सभावधम्मो **निच्चो** अत्थि। **चित्तसमुट्ठानभावो विया** ति विञ्ञत्तिया चित्तसमुट्ठान-उपादारूपभावो उपचारसिद्धो ति दस्सेति।

विञ्ञत्तिया करणभूताय। **यं करणं** ति यं चित्तकिरियं चित्तब्यापारं। **विञ्ञत्तिया विञ्ञा-तत्तं** ति इदमेस कारेतीति यदेतं अधिप्पायविभावनं, एतं विञ्ञत्तिविकाररहितेसु रुक्खचलनादीसु

---

१. बत्तिंस-सी०।

लहुपरिवत्तिताय [७३-म०] चक्खुविञ्ञाणवीथिया अनन्तरं **मनोविञ्ञाणेन विञ्ञातम्पि** चलनं चक्खुना दिट्ठं विय मञ्ञन्ति अविसेसविदुनो, तस्मा यथा नीलाभिनिपातवसप्पवत्ताय चक्खुविञ्ञाणवीथिया नीलं ति पवत्ताय मनोविञ्ञाणवीथिया च अन्तरं न विञ्ञायति, एवं अविञ्ञायमानन्तरेन मनोद्वारविञ्ञाणेन गहिते तस्मिं चित्तेन सहेव अनुपरिवत्ते कायथम्भनविकारचोपनसङ्खाते "इदमेस कारेति, अयमस्स अधिप्पायो" ति विजाननं होति।

तालपण्णादिरूपानि दिस्वा तदनन्तरप्पवत्ताय मनोद्वारवीथिया अविञ्ञायमानन्तराय तालपण्णादीनं उदकादिसहचारिप्पकारतं सञ्ञाणाकारं गहेत्वा उदकादिग्गहणं विय। **एत्थ उदकं भविस्सती** ति आदिना च उदकादिसम्बन्धनाकारेन रूपग्गहणानुसारविञ्ञाणेन यं उदकादि विञ्ञातब्बं, तस्स विजाननेन तदाकारस्स विञ्ञातता वुत्ता ति दट्ठब्बा। एतस्स पन कायिककरणग्गहणस्स उदकादिग्गहणस्स च पुरिमसिद्धसम्बन्धग्गहणं उपनिस्सयो होतीति दट्ठब्बं।

अथ पन नालम्बिता पि विञ्ञत्ति कायिककरणग्गहणस्स च पच्चयो पुरिमसिद्धसम्बन्धग्गहणोपनिस्सयवसेन साधिप्पायविकारभूतवण्णग्गहणानन्तरं पवत्तमानस्स अधि-

---

न दिट्ठं, हत्थचलनादीसु पन दिट्ठं, तस्मा विप्फन्दमानवण्णविनिमुत्तो कोचि विकारो अत्थि कायिककरणसङ्खातस्स अधिप्पायस्स ञापको ति विञ्ञायति। ञापको च हेतु ञापेतब्बमत्थं सयं ञातो येव ञापेति, न सब्भावमत्तेना ति वण्णग्गहणानन्तरं विकारग्गहणम्पि विञ्ञायति। तथा हि विसयभावमापन्नो एवसद्दो अत्थं पकासेति, नेतरो। तेनेवाह "न हि विञ्ञत्ती" ति आदि। यदि पन चित्तजरूपानं चलनाकारो विञ्ञत्ति, चक्खुविञ्ञाणस्स विप्फन्दमानवण्णारम्मणत्ता तेन पि सा गहिता सिया ति आसङ्काय निवत्तनत्थं आह "चक्खुविञ्ञाणस्सा" ति आदि।

तालपण्णादिरूपानी ति आदिना पि विञ्ञत्तिया विञ्ञातब्बतं मनोविञ्ञाणेनेव च विञ्ञातब्बतं दस्सेति। सञ्जानाति एतेना ति सञ्ञाणं, तस्स उदकादिनो सञ्ञाणं तंसञ्ञाणं, तस्स आकारो तंसञ्ञाणाकारो, उदकादिसहचारिप्पकारो च सो तंसञ्ञाणाकारो चा ति **उदका**...**प**... **कारो**, तं **गहेत्वा** जानित्वा। **तदाकारस्सा** ति उदकादिञापनाकारस्स। यदि यथावुत्तविकारग्गहणं येव कारणं अधिप्पायग्गहणस्स, अथ कस्मा अग्गहितसङ्केतस्स अधिप्पायग्गहणं न होती ति, न केवलं विकारग्गहणमेव अधिप्पायग्गहणस्स कारणं, किञ्चरही ति आह "एतस्स पना" ति आदि।

अथ पना ति आदिना विञ्ञत्तिया अनुमानेन गहेतब्बतं दस्सेति। **साधिप्पाय**...**प०**...**नन्तरं** ति अधिप्पायसहितविकारेन सहजातवण्णायतनग्गहणसङ्खातस्स चक्खुद्वारिकविञ्ञाणसन्तानस्स अनन्तरं **अधिप्पायग्गहणस्सा** ति अधिप्पायववत्थापकस्स ततियवारे जवनस्स। **अधिप्पायसहभू विकाराभावे**

प्पायग्गहणस्स अधिप्पायसहभूविकाराभावे अभावतो, एवं सति वण्णग्गहणानन्तरेन उदकादिग्गहणेनेव तालपण्णादिसञ्ञाणाकारो विय वण्णग्गहणानन्तरेन अधिप्पायग्गहणेनेव विञ्ञत्ति पाकटा होतीति "इदञ्चिदञ्च एस कारेति मञ्ञे" ति अधिप्पायविजाननेनेव विञ्ञत्तिया विञ्ञातता वुत्ता।

अयं नो पहरितुकामो ति अधिप्पायविजाननेन विञ्ञत्तिया पाकटभावं दस्सेति। न हि तदपाकटभावे अधिप्पायविजाननं होतीति। **सम्मुखो....प०....येव नाम होती** ति असम्मुखीभूतताय अनापाथगतानं रूपादीनं चक्खुविञ्ञेय्यादिभावो विय सभावभूतं तं द्विधा विञ्ञत्तिभावं साधेति। परं बोधेतुकामताय विना पि अभिक्कमनादिप्पवत्तनेन सो चित्तसहभूविकारो अधिप्पायं विञ्ञापेति, सयञ्च विञ्ञायतीति द्विधा पि विञ्ञत्ति-येवा ति वेदितब्बो। **तस्मिं द्वारे सिद्धा** ति तेन द्वारेन विञ्ञातब्बभावतो तेनेव द्वारेन नामलाभतो तस्मि द्वारे पाकटभाववसेन सिद्धा। कुसलं वा अकुसलं वा ति ठपेतब्बं। कस्मा? यस्मा परवादिनो अविपाकस्स [७४-म०] कम्मभावो न सिद्धो, इतरस्स पन सिद्धो ति विञ्ञत्तिसमुट्ठापकानं एकादसन्नं किरियचित्तानं वसेन तिकं पूरेत्वा ठपेतब्बं।

द्वारे चरन्ति कम्मानी ति एत्थ अयमधिप्पायो [५६-सी०] यदि द्वारा द्वारन्तर-चारिनो होन्ति, द्वारसम्भेदा कम्मसम्भेदो पी ति कायकम्मं कायकम्मद्वारं ति अञ्ञ-

---

अभावतो ति एतेन यथावुत्तविकारं अधिप्पायग्गहणेन अनुमिनोति। **एवं सती** ति आदिना यथानु-मितमत्थं निगमनवसेन दस्सेति। तत्थ **उदकादिग्गहणेनेव वा** ति तालपण्णादीनं वण्णग्गहणानन्तरेन पुरिमसिद्धसम्बन्धानुग्गहितेन उदकादीनं तत्थ अत्थिभावविजाननेनेव। यथा तालपण्णादीनं [८०-म०] उदकादिसहचारिप्पकारतं सञ्ञाणाकारो विञ्ञातो येव होति नानन्तरियकत्ता, एवं विप्फन्दमानवण्णग्गहणानन्तरेन पुरिमसिद्धसम्बन्धानुग्गहितेन गन्तुकामतादि-अधिप्पायविजान-नेनेव विञ्ञत्ति विञ्ञाता होति तदभावे अभावतो ति उपमायोजना।

सभावभूतं ति अन्वत्थभूतं। **द्विधा** ति विञ्ञापनतो विञ्ञेय्यतो च। कायविञ्ञत्तिया तथापवत्तमानाय चेतनासङ्खातस्स कम्मस्स कायकम्मभावो निप्फज्जति काय-उपलक्खितब्बत्ता, न पन चतुवीसतिया पच्चयेसु केनचि पच्चयभावतो ति दस्सेन्तो "तस्मिं द्वारे सिद्धा" ति आदिमाह। तेन वचीद्वारुप्पन्ना पि पाणातिपातादयो सङ्गहिता ति तेसं सङ्गहितभावं दस्सेति। अथवा कायद्वारुप्पन्नाय कायकम्मभूताय चेतनाय वसेन "तेन द्वारेन विञ्ञातब्बभावतो" ति वुत्तं, तस्सा येव द्वारन्तरुप्पनाय वसेन "तेन द्वारेन नामलाभतो" ति। मनोद्वारावज्ज-नस्स पि विञ्ञत्तिसमुट्ठापकभावो निच्छितो ति "एकादसन्नं किरियचित्तानं" ति आह।

द्वारन्तरचारिनो ति द्वारन्तरभावेन पवत्तनका। **द्वारसम्भेदा** ति द्वारानं सङ्करणतो। द्वारानं हि

मञ्ञववत्थानं न सिया, कम्मानम्पि कम्मन्तरचरणे एसेव नयो। यदि पन द्वारानम्पि द्वारभावेन कम्मन्तरचरणं कम्मानञ्च द्वारन्तरचरणं न सिया, सुट्ठुतरं कम्मद्वारववत्थानं सिया। न पन कम्मानं द्वारन्तरे अचरणं अत्थि, किन्तु द्वारे अञ्ञस्मिञ्च चरन्ति कम्मानि अञ्ञानि पि। यस्मा पन द्वारे द्वारानि न चरन्ति, तस्मा अद्वारचारीहि द्वारेहि कारणभूतेहि कम्मानि द्वारन्तरे चरन्तानि पि ववत्थितानि। न केवलं कम्मानेव, तेहि पन द्वारानि पी ति एवं कम्मद्वारानि अञ्ञमञ्ञं ववत्थितानि "येभुय्येन वुत्तिताय तब्बहुलवुत्तिताय चा" ति वुच्चमानाय ववत्थानयुत्तिया। तत्थ द्वारापेक्खत्ता कम्मानं कायकम्मादिभावस्स अद्वारचारीहि द्वारेहि ववत्थानं होति, न पन द्वारन्तरचारीहि कम्मेहि द्वारानं अववत्थानं कम्मानपेक्खकायद्वारादिभावेहि द्वारेहि ववत्थितानं कायकम्मादीनं कायकम्मद्वारादिववत्थानकरत्ता।

अथ वा द्वारन्तरे चरन्तानि पि कायादीहि उपलक्खितानेव चरन्ति पाणातिपातादीनं

द्वारन्तरभावप्पत्तिया सति कायद्वारस्स वचीद्वारादिभावो, वचीद्वारस्स च कायद्वारादिभावो आपज्जती ति तं-तं-द्वारुप्पन्नकम्मानम्पि सङ्करो सिया। तेनाह "**कम्मसम्भेदो पी**" ति। एवं सति कायकम्मं''''प०''''ववत्थानं न सिया। यदि कम्मानि कम्मन्तरचारीनि होन्ति, कायकम्मादिकस्स वचीकम्मादिकभावापत्तितो "कम्मसम्भेदा द्वारसम्भेदो पी" ति कायकम्मं कायकम्मद्वारं ति अञ्ञमञ्ञववत्थानं न सिया ति इममत्थमाह "**कम्मानम्पि कम्मन्तरचरणे एसेव नयो**" ति कम्मन्तरचरणं कम्मन्तरुपलक्खणता। तेनेवाह "**द्वारभावेना**" ति। **द्वारन्तरचरणं** द्वारन्तरुप्पत्ति। **द्वारे** ति अत्तनो द्वारे। **अञ्ञस्मिं** ति द्वारन्तरे। **कम्मानी** ति तंतंद्वारिककम्मानि। **अञ्ञानी** ति अञ्ञद्वारिककम्मानि। **द्वारे द्वारानि न चरन्ती** ति द्वारन्तरभावेन नप्पवत्तन्ति, द्वारन्तरं वा न सङ्कमन्ति। किञ्चा पि विञ्ञत्तिया चतुवीसतिया पच्चयेसु येन केन चि पच्चयेन चेतनाय पच्चयभावो नत्थि, तथा पन विञ्ञत्तिया पवत्तमानाय एव पाणातिपातादि होति, नाञ्ञथा ति सिया विञ्ञत्तिया हेतुभावो चेतनाया ति वुत्तं "**द्वारेहि कारणभूतेही**" ति। कायकम्मं वचीकम्मं ति कम्मववत्थानस्सेव [८१-म०] वा कारणभावं सन्धाय "**द्वारेहि कारणभूतेही**" ति वुत्तं। यदि पि "**द्वारेहि कम्मानी**" ति वुत्तं, "**अञ्ञमञ्ञं ववत्थिता**" ति पन वुत्तत्ता कम्मेहि पि द्वारानि ववत्थितानी ति अयमत्थो पि सिद्धो येवा ति दस्सेतुं "**न केवलं**" ति आदि वुत्तं। **अद्वारचारीही** ति द्वारानं सयं ववत्थितभावमाह, न पन अववत्थानं, ववत्थानमेवा ति अधिप्पायो। इदानि तं ववत्थानं विभावेति **कम्मानपेक्खा** ति आदिना। तत्थ समयनियमेन चित्तेन समयो विय द्वारनियमितेहि कम्मेहि द्वारानि नियमितानी ति अयं सङ्खेपो।

एवं सभावत्ता ति द्वारभूतेहि कायादीहि उपलक्खणीयसभावत्ता। **आणत्ति** प०'''**मानस्सा**

एवंसभावत्ता आणत्तिहत्थविकारादीहि वुच्चमानस्स पि कायादीहि साधेतब्बसभावावबोधतो, तस्मा न कम्मन्तरस्स अत्तनि चरन्तस्स पि द्वारन्तरं सनामं देति, नापि कम्मं द्वारस्स, तं-तं-द्वारमेव पन कम्मस्स कम्मञ्च द्वारन्तरे चरन्तम्पि अत्तनो येव द्वारस्स नामं देतीति सिद्धं अञ्ञमञ्ञववत्थानं। पुब्बे पन द्वारेसु अनिबद्धता कम्मानं द्वारन्तरचरणमेव सन्ध्याय वुत्ता, न एतं ववत्थानं ति।

तत्था ति तेसु द्वारकम्मेसु **कायकम्मस्स** उप्पज्जनट्ठानं ति तंसहजाता विञ्ञत्ति येव वुच्चति। किञ्चा पि हि सा **तस्स** केनचि पकारेन पच्चयो न होति, तथापि कम्मस्स विसेसिका विञ्ञत्ति तं-सहजाता होतीति तस्स उप्पत्तिट्ठानभावेन वुत्ता यथावुत्तनियमेन अञ्ञविसेसनस्स कम्मस्स विसेसनन्तरे उप्पत्ति-अभावा। **कायेन पन कतत्ता** ति कायविञ्ञत्तिं जनेत्वा ताय जीवितिन्द्रियुपच्छेदादिनिप्फादनतो अत्तनो निप्फत्तिवसेन "कायेन कतं कम्मं" ति वुत्तं। कारणभूतो हि पनेत्थ कायो ति।

[७५–म०] **अञ्ञमञ्ञं ववत्थिता** ति एत्थ कम्मुना कायो कायकम्मद्वारं ति एवं ववत्थितो, न कायो इच्चेव। यथा सूचिकम्मुना सूचिकम्मकरणं ति ववत्थिता, न सूचि इच्चेव, तथा इदम्पि दट्ठब्बं। **अञ्ञमञ्ञं ववत्थिता** ति च अञ्ञमञ्ञं विसेसिता ति अत्थो। **एवं सन्ते** ति यथावुत्तं ववत्थानियमं अग्गहेत्वा "द्वारे चरन्ति कम्मानी" ति आदिवचनमेव गहेत्वा चोदेति। तत्थ **एवं सन्ते** ति कम्मानं द्वारचरणे अञ्ञमञ्ञेन च ववत्थाने नामलाभे विसेसने सतीति अत्थो।

कायकम्मद्वारकथावण्णना निट्ठिता॥

ति कायवचीकम्मानं वचीकायविञ्ञत्तीहि पकासेतब्बतं आह। **कायादीही** ति कायवचीविञ्ञत्तीहि। **तस्मा** ति यस्मा द्वारन्तरे चरन्तानि पि कम्मानि सकेन द्वारेन उपलक्खितानेव चरन्ति, तस्मा। **ना पि कम्मं द्वारस्सा** ति यस्मिं द्वारन्तरे कम्मं चरति, तस्स द्वारस्स अनत्तनियस्स। **तंतंद्वारमेवा** ति सकद्वारमेव। **कम्मस्सा** ति सकसककम्मस्स। यदि कम्मेहि द्वारानि ववत्थितानि, "कम्मस्स अनिबद्धत्ता" ति इदं कथं नियती ति आह "पुब्बे पना" ति आदि।

सा ति विञ्ञत्ति। **तस्सा** ति कम्मस्स। **केनचि पकारेना** ति चतुवीसतिया पच्चयप्पकारेसु केनचि पकारेन। **तंसहजाता** ति एतेन कायविञ्ञत्तिया सब्भावे येव कायकम्मस्स सब्भावो, नाञ्ञथा ति परियायेन विञ्ञत्तिया कम्मस्स कारणभावं विभावेति। तेनेवाह "उप्पत्तिट्ठानभावेन वुत्ता" ति। **यथावुत्तनियमेना** ति आदिना कम्मस्स उप्पत्तिट्ठानभावे ब्यभिचाराभावमाह। तत्थ **यथावुत्तनियमेना** ति अट्ठकथायं वुत्तप्पकारेन ववत्थानयुत्तिसङ्खातेन नियमेन।

द्वारचरणे ति अञ्ञद्वारचरणे।

कायकम्मद्वारकथावण्णना निट्ठिता।

वचीकम्मद्वारकथावण्णना

[५७-सी०] **चतूहि भिक्खवे, अङ्गेहि समन्नागता** ति एत्थ सुभासितभासनसङ्खाता अपिसुणवाचा, धम्मभासनसङ्खातो असम्फप्पलापो; पियभासनसङ्खाता अफरुसवाचा, सच्चभासनसङ्खातो अमुसावादो चा ति एता वाचा तथापवत्ता चेतना दट्ठब्बा। **सहसद्दा पना** ति तस्स विकारस्स सद्देन सह सम्भूतत्ता वुत्तं। चित्तानुपरिवत्तिताय पन सो न याव सद्दभावीति दट्ठब्बो, वितक्कविप्फारसद्दो न सोतविञ्ञेय्यो ति पवत्तेन महा-अट्ठकथावादेन चित्तसमुट्ठानसद्दो विना पि विञ्ञत्तिघट्टनेन उप्पज्जतीति आपज्जति। "या ताय वाचाय विञ्ञत्ती" ति[१] हि वचनतो असोतविञ्ञेय्यसद्देन सह विञ्ञत्तिया उप्पत्ति नत्थीति विञ्ञायतीति।

चित्तसमुट्ठानं सद्दायतनं ति एत्थ च न को चि चित्तसमुट्ठानो सद्दो असङ्गहितो नाम अत्थीति अधिप्पायेन महा-अट्ठकथावादं पटिसेधेति। छब्बिधेन रूपसङ्गहादीसु हि "सोतविञ्ञेय्यं" ति "दिट्ठं सुतं" ति एत्थ "सुतं" ति च न कोचि सद्दो न सङ्गय्हतीति। महा-अट्ठकथायं पन विञ्ञत्तिसहजमेव जिव्हाताळुचलनादिकरवितक्कसमुट्ठितं सुखुमसद्दं

वचीकम्मद्वारकथावण्णना

चतूहि अङ्गेही ति एत्थ "सुभासितं येव भासति, नो दुब्भासितं। धम्मं येव, पियं येव, सच्चं येव भासति, नो अलिकं" ति[२] यानि अङ्गानि [म०-८२] सुत्ते वुत्तानि, तेसं चेतनासभावं दस्सेतुं **"सुभासितभासना"** ति आदि वुत्तं। **तथापवत्ता** ति सुभासितभासनादिभावेन पवत्ता। **सह सम्भूतत्ता** ति सहेव उप्पन्नत्ता। न हि वचीविञ्ञत्ति सद्दरहिता अत्थि। तथा हि "या ताय वाचाय विञ्ञत्ती" ति[१] वुत्तं। "वाचा गिरा ब्यप्पथो" ति आदिना[१] नातिसुखुमं येव सद्दवाचं वत्वा "या ताय वाचाय विञ्ञत्ती" ति, ताय सद्धिं योजेत्वा वचीविञ्ञत्तिया वुत्तत्ता रूपायतनं विय वत्थुपरित्ततादिना सद्दायतनम्पि अनिन्द्रियगोचरो अत्थो ति च अधिप्पायेन "या ताय...प०...विञ्ञायती" ति आह।

इदानि अविसेसेन चित्तसमुट्ठान-सद्दस्स सोतविञ्ञाणारम्मणता पाळियं वुत्ता ति वितक्कविप्फारसद्दो न सोतविञ्ञेय्यो ति महा-अट्ठकथावादस्स पाळिया विरोधं दस्सेतुं **"चित्तसमुट्ठानं"** ति आदि वुत्तं। एवं सङ्गहकारस्स अधिप्पाये ठत्वा महा-अट्ठकथावादस्स पटिसेधेतब्बतं दस्सेत्वा इदानि अत्तनो अधिप्पाये ठत्वा तं परिहरितुं **"महा-अट्ठकथायं पना"** ति आदि

---

१. अभि० १ : १७३ धम्मसङ्गणियं।
२. सं० १ : १८८, खु० १ : ३३३ सुत्तनिपाते।

"दिब्बसोतेन सुत्वा आदिसती" ति **सुत्ते**[1] **पट्ठाने**[2] च ओळारिकसद्दं सन्धाय 'सोतविञ्ञाणस्स आरम्मणपच्चयेन पच्चयो" ति वुत्तं ति इमिना अधिप्पायेन असोतविञ्ञेय्यता वुत्ता सिया। [७६-म०] सद्दो च असोतविञ्ञेय्यो चा ति विरुद्धमेतं ति पन पटिक्खेपो वेदितब्बो। विञ्ञत्तिपच्चया घट्टना **विञ्ञत्तिघट्टना** विञ्ञत्ति एव वा। घट्टनाकारप्पवत्तभूतविकारो हि "घट्टना" ति वुत्तो। सङ्घट्टनेन सहेव सद्दो उप्पज्जति, न पुब्बापरभावेन। **पथवीधातुया** ति इदं वायोधातुया विय चालनं पथवीधातुया सङ्घट्टनं किच्चं अधिकं ति कत्वा वुत्तं, विकारस्स च तप्पच्चयभावो वुत्तनयेनेव वेदितब्बो। तब्बिकारानं हि भूतानं अञ्ञमञ्ञस्स पच्चयभावो ति। अञ्ञम्पि सब्बं विधानं कायविञ्ञत्तियं विय वेदितब्बं।

तिसमुट्ठानिककायं···प···न लब्भति। न हि चालनं उपादिन्नघट्टनं ति। चालनं हि देसन्तरुप्पादनपरम्परता, घट्टनं पच्चयविसेसेन भूतकलापानं आसन्नतरुप्पादो ति। **उपत्थम्भनकिच्चम्पि नत्थी** ति उपत्थम्भनेन विना पठमचित्तसमुट्ठाना पि घट्टनाकारेन पवत्त-

---

माह। सङ्घट्टनाकारेन पवत्तानं भूतानं सद्दस्स निस्सयभावतो सङ्घट्टनेन सहेव सद्दो उप्पज्जति। तप्पच्चयभावो ति उपादिन्नकघट्टनस्स पच्चयभावो। चित्तजपथवीधातुया उपादिन्नकघट्टने पच्चयो भवितुं समत्थो चित्तसमुट्ठानमहाभूतानं एको आकारविसेसो अत्थि। तदाकारत्ता हि तेसं पथवीधातु उपादिन्नकं घट्टेती ति इममत्थं वुत्तानुसारेन वेदितब्बत्ता "वुत्तनयेनेव वेदितब्बो" ति वत्वा तमेव वुत्तनयं "तब्बिकारानं" ति आदिना विभावेति। तत्थ अञ्ञमञ्ञस्स पच्चयभावो तप्पच्चयभावो वुत्तो ति अत्थो। **अञ्ञम्पि सब्बं विधानं** ति "न चित्तसमुट्ठाना ति एतेन परमत्थतो अभावं दस्सेती" ति आदिना अत्तना वुत्तविधानं। अट्ठकथायं पन वुत्तविधानं "हेट्ठा वुत्तनयेनेव वेदितब्बं" ति अट्ठकथायं वुत्तमेवा ति।

अत्तनो अत्तनो पच्चयुप्पन्नस्स देसन्तरे पारम्परियेन उप्पादनं **देसन्तरुप्पादनपरम्परता**। **लद्धासेवनेना** ति लद्धपुब्बाभिसङ्खारेन। **चित्तेनेवा** ति पठमचित्तेनेव। "सत्त जवनानि सत्त अक्खरानि निब्बत्तेन्तीति पादं पटिक्खिपित्वा एकजवनवारपरियापन्नानि चित्तानि एकमक्खरं निब्बत्तेन्ती" ति वदन्ति। किञ्चा पि पठमचित्तेन पि घट्टना निप्फज्जति, एकस्सेव पन बहुसो [८३-म०] पवत्तनेन अत्थि कोचि विसेसो ति पुरिमजवनसमुट्ठिताहि घट्टनाहि पटिलद्धासेवनेन सत्तमजवनेन समुट्ठिता घट्टना परिब्यत्तमक्खरं निब्बत्तेती ति उपत्थम्भनं नत्थी ति न सक्का वत्तुं। लद्धाभिसङ्खारेन पन पठमचित्तेन पि घट्टना बलवती होतीति अट्ठकथायं "उपत्थम्भनकिच्चं नत्थी"

---

१. खु० ९ : ४९१ पटि०। २. अभि० ८ : ३ पट्ठाने।

तीति घट्टनत्थं उपत्थम्भनेन पयोजनं नत्थि, लद्धासेवनेन चित्तेनेव घट्टनस्स बलवभावतो चा ति अधिप्पायो। उपत्थम्भनं नत्थि अत्थीति विचारेत्वा गहेतब्बं।

वचीकम्मद्वारकथावण्णना निट्ठिता ॥

मनोकम्मद्वारकथावण्णना

अयं नाम चेतना कम्मं न होती ति न वत्तब्बा ति इदं यस्स द्वारं मनो तं-दस्सनत्थं वुत्तं। **कप्पेती** ति "त्वं फुसनं करोहि, त्वं वेदयितं" ति एवं कप्पेन्तं विय पवत्ततीति अत्थो। **पकप्पनञ्च** तदेव। **किं पिण्डं करोती** ति आयूहनत्थवसेन [५८–सी०] पुच्छति। फस्सादिधम्मेहि अविप्पकिण्णे कत्वा सकिच्चेसु पवत्तनं **आयूहनं,** तत्थेव ब्यापारणं **चेतयनं,** तथाकरणं **अभिसङ्खरणं** ति। तेभूमकस्सेव गहणं लोकुत्तरकम्मस्स कम्मक्खयकरत्ता।

मनोकम्मद्वारकथावण्णना निट्ठिता ॥

ति वुत्तं सिया, सब्बमेतं वीमंसित्वा गहेतब्बं।

वचीकम्मद्वारकथावण्णना निट्ठिता।

मनोकम्मद्वारकथावण्णना

"सब्बाय पि कायवचीविञ्ञत्तिया कायवचीद्वारभावो विय सब्बस्स पि चित्तस्स मनोद्वारभावो सम्भवती" ति दस्सनत्थं अट्ठकथायं "अयं नाम मनो मनोद्वारं न होती ति न वत्तब्बो" ति वत्वा तंद्वारवन्तधम्मदेसनत्थं "अयं नाम चेतना" ति आदि वुत्तं ति आह "**यस्स द्वारं मनो, तं दस्सनत्थं वुत्तं**" ति। यथा पन तिविधचतुब्बिधकायवचीकम्मानं द्वारभावतो कायकम्मद्वारवचीकम्मद्वारानि वुत्तानि, एवं मनोकम्मं ति वुत्त-अभिज्झादीनं द्वारभावतो वट्टहेतुभूतलोकियकुसलाकुसलसम्पयुत्तमनो एव मनोकम्मद्वारं ति सन्निट्ठानं कतं ति दट्ठब्बं। **चेतनाय** अत्तनो किच्चं आरद्धाय सम्पयुत्ता पि तं तं सकिच्चं आरभन्ती ति सा ने सकिच्चे पवत्तेति नाम, तथा पवत्तेन्ती च सम्पयुत्ते एकस्मिं आरम्मणे अविप्पकिण्णे करोति ब्यापारेति चा ति वुच्चति" तथा सम्पयुत्तानं यथावुत्तं अविप्पकिण्णकरणं सम्पिण्डनं आयूहनं ब्यापारापादनं ब्यापारणं चेतयनं ति आयूहनचेतयनानं नानत्तं दस्सेन्तो "**फस्सादिधम्मेही**" ति आदिमाह। **तथाकरणं** ति यथा फस्सादयो सकसककिच्चे पसुता भवन्ति, तथा करणं। तेनेव यथावुत्तेन अविप्पकिण्णब्यापारणाकारेन सम्पयुत्तानं करणं पवत्तनं ति दट्ठब्बं। **कम्मक्खयकरत्ता** ति कम्मक्खयकरमनस्स कम्मद्वारभावो न युज्जती ति अधिप्पायो। यतो "कम्मपथकथा लोकिया एवा" ति वदन्ति।

मनोकम्मद्वारकथावण्णना निट्ठिता।

कम्मकथावण्णना

[७७-म०] **चेतयित्वा कम्मं करोती** ति एत्थ यस्मा पुरिमचेतनाय चेतयित्वा सन्निट्ठानकम्मं करोति, तस्मा चेतनापुब्बकं कम्मं तं-चेतनासभावमेवा ति चेतनं अहं कम्मं वदामीति अत्थो। अथ वा समानकालत्ते पि कारणकिरिया पुब्बकाला विय वत्तुं युत्ता, फलकिरिया च अपरकाला विय । यस्मा च चेतनाय चेतयित्वा काय-वाचाहि चोपनकिरियं मनसा च अभिज्झादिकिरियं करोति, तस्मा तस्सा किरियाय कारिकं चेतनं अहं कम्मं वदामीति अत्थो। **काये वा** ति कायविञ्ञत्तिसङ्खाते काये वा। **सती** ति धरमाने, अनिरोधिते वा। कायसमुट्ठापिका चेतना **कायसञ्चेतना**। एत्थ च सुखदुक्खुप्पादकेन कम्मेन भवितब्बं, चेतना च सुखदुक्खुप्पादिका वुत्ता ति तस्सा कम्मभावो सिद्धो होति । **सञ्चेतनियं** ति सञ्चेतनसभाववन्तं। **समिद्धित्थेरेन** "सञ्चेतनियं आवुसो.....प.....मनसा सुखं सो वेदयती" ति[१] अविभजित्वा ब्याकतो। **सुखवेदनीयं** ति आदिना पन विभजित्वा ब्याकातब्बो सो पञ्हो, तस्मा सम्मा ब्याकतो नाम न होति । इतरद्वये पि एसेव नयो । यथा पन सुत्तानि ठितानि, तथा चोपनकिरियानिस्सयभूता कायवाचा अभिज्झादिकिरियानिस्सयो च मनोद्वारानि, याय

कम्मकथावण्णना

[८४-म०] समानाकाला पि कारणफलकिरिया पुब्बापरकाला विय वत्तुं युत्ता येव । **सेय्यथा पि** पटिच्चसमुप्पादे "चक्खुञ्च पटिच्च रूपे च उप्पज्जति चक्खुविञ्ञाणं" ति दस्सेतुं **"अथ वा"** ति आदिमाह । चोपनकिरियं ति विञ्ञत्तिद्वयं आह । तस्सा हि चित्तसमुट्ठानकायसद्दवाचाहि कायवचीविञ्ञत्तीहि एव वा पुरिमपुरिमाहि पवत्तेतब्बत्ता "कायवाचाहि चोपनकिरियं करोती" ति वुत्तं तब्बिकारानं भूतानं तथा पवत्तनतो। अथ वा **कायवाचाही** ति कायवचीविञ्ञत्तीहि। **चोपनकिरियं** ति रूपकायस्स थम्भनचलनकिरियं उपादिन्नकघट्टनकिरियञ्च। एसा हि किरिया "रूपकायं थम्भेतुं चालेतुं पच्चयो भवितुं समत्थो" ति, "उपादिन्नकघट्टनस्स पच्चयभूतो" ति च वुत्तत्ता कायवचीविञ्ञत्तीहि निप्फज्जतीति । एवञ्च कत्वा "चोपनकिरियानिस्सयभूता कायवाचा" ति, "कायादीहि करणभूतेहि चोपनाभिज्झादिकिरियं करोन्ति वासि-आदीहि विय छेदनादिं ति च इदम्पि वचनं समत्थितं भवति । न केवलं धरमानता व सब्भावो, अथ खो मग्गेन असमुच्छिन्नता पी ति दस्सेन्तो **अनिरोधिते वा**" ति आह । असमुच्छिन्नता च कायादीनं तदुपनिस्सयकिलेसासमुच्छेदेनेवा ति दट्ठब्बं । "कायादीहि करणभूतेहि चोपना-भिज्झादिकिरियं करोन्ती" ति एतेन चोपनाभिज्झादिकिरियानिब्बत्तिद्वारेन चेतनानिब्बत्ति येव

---

१. म० ३ : २८९, कथा० ३४६ ।

पन चेतनाय तेहि कायादीहि करणभूतेहि चोपनाभिज्झादिकिरियं करोन्ति वासि-आदीहि विय छेदनादिं, सा चेतना कम्मं ति द्वारप्पवत्तियम्पि कम्मद्वाराभेदनञ्च कम्मद्वारववत्थानञ्च दिस्सति, एवञ्च सति "कायेन चे कतं कम्मं" ति आदिगाथायो[1] अतिविय युज्जन्ति।

"लोकुत्तरमग्गो" इध लोकियकम्मकथायं अनधिप्पेतो पि भजापियमानो तीणि कम्मानि भजति। **मनेन दुस्सील्यं** ति कायिकवाचसिकवीतिक्कमवज्जं सब्बं अकुसलं सङ्गण्हाति, मिच्छादिट्ठिसङ्कप्पवायामसतिसमाधिं वा। तम्पि चेतं "मनसा संवरो साधू ति[2] वुत्तस्स संवरस्स पटिपक्खवसेन वुत्तं, न सीलविपत्तिवसेन। न हि सा मानसिका अत्थीति मग्गस्सेव भजापनं महाविसयत्ता। बोज्झङ्गा हि मनोकम्ममेव भजेय्युं, न च न सक्का मग्गभजापनेनेव तेसं भजापनं विञ्ञातुं ति।

[७८-म०] कम्मपथं अप्पत्तानम्पि तं-तं-द्वारे संसन्दनं अवरोधनं द्वारन्तरे कम्मन्तरुप्पत्तियम्पि कम्मद्वाराभेदनञ्च **द्वारसंसन्दनं** नाम। "तिविधा भिक्खवे, कायसञ्चेतना अकुसलं कायकम्मं" ति अदिना[3] कम्मपथप्पत्ता व सन्निट्ठापकचेतना कम्मं

वुत्ता ति इमिना अधिप्पायेन "एवं च...प....युज्जन्ती" ति आह। एवञ्च कत्वा **काये सति वाचाय सती** ति आदिवचनं अनुलोमितं होति। कायचेतनाया ति करणनिद्देसो पन कायादीनं चोपनाभिज्झाकिरियाय च चेतनाहेतुकत्तदस्सनत्थं वुत्तो ति।

सभावतो उपकारकतो मग्गे सति सब्भावतो च बोज्झङ्गा मग्गे अन्तोगधा ति आह "न च न सक्का" ति आदि।

कम्मपथं अप्पत्तानम्पि तंतंद्वारे संसन्दनं ति यथा कम्मपथं पत्तानं, एवं कम्मपथं अप्पत्तानम्पि सति पि द्वारन्तरुप्पत्तियं यथासकं द्वारेहेव नामग्गहणं ति वदन्ति, एवं सति अट्ठकथाय विरोधो। दुतियत्थस्स च अभावो सिया, तस्मा **तंतंद्वारे संसन्दनं** ति यस्मिं यस्मिं द्वारे कम्मपथं अप्पत्ता अकुसलचेतनादयो पवत्ता, तासं तेन तेनेव द्वारेन नामग्गहणं। तं पन तंतंद्वारपक्खिकभावकरणतो तत्थ [८५-म०] **अवरोधनं** ति वुत्तं। यथा हि कम्मपथं पत्ता कायकम्मादिसङ्खाता चेतना द्वारन्तरे उप्पन्ना पि कायकम्मादिनाममेव लभन्ति, न एवं कम्मपथं अप्पत्ता। ता पन यत्थ यत्थ द्वारे उप्पज्जन्ति, तेन तेनेव द्वारेन कायदुच्चरितं वचीदुच्चरितं ति आदि नामं लभन्ति। एवं नामग्गहणमेव हि तेसं तं-तंद्वारपक्खिककरणं वुत्तं। तेनेव हि

१. अट्ठ०-७०। २. सं० १ : ७२, खु० १ : ५१ धम्मपदे।
३. कथा० ३४५।

ति वुत्ता ति पुरिमचेतना सब्बा कायकम्मं न होतीति वुत्तं। **आणापेत्वा ... प... अलभन्तस्सा** ति [५९-सी०] आणत्तेहि अमारितभावं सन्धाय वुत्तं, वचीदुच्चरितं नाम होति अकम्मपथभावतो ति अधिप्पायो। "इमे सत्ता हञ्ञन्तू" ति पवत्तब्यापादवसेन **चेतनापक्खिका वा भवन्ति** कायकम्मवोहारलाभा। **अब्बोहारिका वा** मनोकम्मवोहारविरहा। ससम्भारपथवी-आदीसु आपादयो एत्थ निदस्सनं।

कुलुम्बस्सा ति गब्भस्स, कुलस्सेव वा। तिस्सो पि सङ्गीतियो आरुळ्हताय अननुजाननतो **"तव सुत्तस्सा"** ति वुत्तं। **दसविधा इद्धि** पटिसम्भिदामग्गे इद्धिकथाय गहेतब्बा। **भावनामयं** ति अधिट्ठानिद्धिं सन्धाय वदति। घटभेदो विय परूपघातो, उदकविनासो विय इद्धिविनासो च होतीति उपमा संसन्दति। **तव पञ्हो** ति भावनायमाय परूपघातो होतीति वुत्तो ञापेतुं इच्छितो अत्थो। **आथब्बणिद्धि** विज्जामयिद्धि होति। **सत्तमे पदे** ति मण्डलादितो सत्तमे पदे।

वचनन्तरेन गमेतब्बत्थं **नेय्यत्थं,** सयमेव गमितब्बत्थं **नीतत्थं**। **किरियतो समुट्ठाति, उदाहु अकिरियतो** ति तेनाधिप्पेतं सम्पजानमुसावादं सन्धाय पुच्छति, न

अट्ठकथायं "किञ्चा पि वचीद्वारे चोपनप्पत्तं कम्मपथं, अप्पत्तताय पन कायकम्मं न होति, केवलं वचीदुच्चरितं नाम होती" ति वुत्तं।

सति पि पाणातिपातादिचेतनाय वचीद्वारादीसु पवत्तियं यथावुत्तयेभुय्यतब्बहुलवुत्तिया कायकम्मादिभाववavत्थापनं कायादिकस्स तंतंद्वारभाववavत्थापनञ्च **कम्मद्वाराभेदनं**। तं हि कम्मद्वारानं असंकिण्णभावेन पतिट्ठापनं। यं सन्धाय "आणत्तिसमुट्ठितेसू" ति **अट्ठकथायं** वक्खति। केचि पन "एकेकस्मिं द्वारे अनेकेसं कम्मानं पवत्तिदस्सनम्पि द्वारसंसन्दनं ति वदन्ति। यथा पवत्तो ब्यापादो कम्मपथो होति, तं दस्सेतुं "इमे सत्ता हञ्ञन्तू" ति पवत्ति ब्यापादस्स दस्सिता। कायद्वारिकचेतनाय सहकारीकारणभावतो **कायकम्मवोहारलाभा,** अभिज्झादीनं परसन्तकस्स अत्तनो परिणामनवसेन "इमे सत्ता हञ्ञन्तू" ति आदिना च अप्पवत्तत्ता **मनोकम्मवोहारविरहा,** अचेतनासभावतो वा पाणातिपातादिवसेन **अब्बोहारिका,** पाणातिपातादिभावेन न वत्तब्बा ति अत्थो। **एत्था** ति अब्बोहारिकभावे।

दसविधा इद्धि.....प०.....तब्बा वित्थारेना ति अधिप्पायो।

तेनाधिप्पेतं ति "अकुसलं वचीकम्मं मनोद्वारे समुट्ठाती" ति वदन्तेन अधिप्पेतं। "न उपोसथक्खन्धके वुत्तं" ति कस्मा वुत्तं, ननु तेन उपोसथक्खन्धकतो सुत्तं आहटं ति? किञ्चा

उपोसथक्खन्धके वुत्तं। तत्थ अवुत्तमेव हि सो अनरियवोहारं वुत्तं ति गहेत्वा वोहरतीति। **वाचागिरं** ति वाचासङ्खातं गिरं, वाचानुच्चारणं वा।

खन्दसिवादयो सेट्ठा ति **खन्दा** ति कुमारा। **सिवा** ति महेस्सरा, मिच्छादिट्ठिया निदस्सनत्थमिदं वुत्तं ति दट्ठब्बं। नत्थिकदिट्ठादयो एव हि कम्मपथप्पत्ता कम्मं ति। **चेतना पनेत्थ अब्बोहारिका** ति कायद्वारे वचीद्वारे च समुट्ठिता पि कायकम्मं वचीकम्मं ति च वोहारं न लभति अभिज्झादिप्पधानत्ता। "तिविधा भिक्खवे, मनोसञ्चेतना अकुसलं मनोकम्मं" ति[1] पन वचनतो सभावेनेव सा मनोकम्मं न अभिज्झादिपक्खिकत्ता ति "अभिज्झादिपक्खिका वा" ति न वुत्तं। इमस्मिं पन

पि आहटं, तत्थ अवुत्तो येव पन सो तेन वुत्तो ति गहितो ति दस्सेन्तो "तत्थ अवुत्तमेवा" ति आदिमाह।

"सुगतिदुग्गतीसु उपपज्जनं सुकतदुक्कटकम्मतो न होति, खन्धसिवादीहि पन होती ति गहेत्वा 'नत्थि दिन्नं' ति आदिना परामसन्तस्स वसेन 'मिच्छादिट्ठि'''प०'' परिमण्डादीनि करोती' ति वुत्तं" ति वदन्ति। **अभिज्झादिपधानत्ता** ति एतेन विज्जमानेसु पि ब्यापादादीसु यदा कायवचीद्वारेसु चेतना बलवती होति, न तथा इतरे, तदा पधानभावतो चेतना कायकम्मं वचीकम्मं ति च वोहारं लभति। सो खो पनस्सा पधानभावो पाणातिपातादिसिद्धिया विञ्ञायति। यदा पन तेसु येव द्वारेसु अभिज्झादयो बलवन्तो होन्ति, न तथा चेतना, तदा तत्थ विज्जमाना पि चेतना अपधानभावतो कायकम्मं वचीकम्मं ति च वोहारं न लभति। अभिज्झादयो पन पधानभावतो सति पि कायङ्गवाचङ्गचोपने सकेन ववत्थानेन मनोकम्मन्त्वेव वुच्चन्ती ति दस्सेति। ये पन "तीसु पि द्वारेसु कम्मपथभावेन अप्पत्तिया द्वारत्तये पि कम्मपथप्पत्तमनोकम्मेन सह पवत्तिया च चेतना एत्थ कम्मं ति न वुच्चती" ति वदन्ति, तेहि अभिज्झादीनं पधानसभावं येव सन्धाय वुत्तं सिया। अथ वा चेतनाय निप्परियायकम्मभावतो परियायकम्मे अनवरोधेतब्बत्ता "अब्बोहारिका" ति वुत्तं। अत्तनो सभावेनेव पन सा एत्था पि कम्मं ति वुच्चति। यथाह "चेतनाहं भिक्खवे, कम्मं वदामी"[2] ति आदि। अट्ठकथायञ्च "तस्मिं द्वारे सिद्धा चेतना" ति आदिना चेतना येव पधानं कत्वा वुत्तं। तेनेवाह "सभावेनेव सा मनोकम्मं" ति आदि। अथ वा कम्मपथप्पत्त-अभिज्झादीहि कायवचीद्वारे सहजाता चेतना कायवचीकम्मवसेन अब्बोहारिका चेतनासङ्खातमनोकम्मत्ता ति। यदि अभिज्झादयो पधाना, न चेतना, एवं सति अभिज्झादयो चेत्थ कम्मं, न चेतना,

---

१. अभि० ४ : कथा० ३४५। २. म० ३ : २५१, अभि० ४ : कथा० ३४५।

ठाने कायङ्गवाचङ्गानि अचोपेत्वा चिन्तनकाले चेतना पि चेतनासम्पयुत्तधम्मा पि [७९-म०] मनोद्वारे एव समुट्ठहन्ति, तस्मा चेतनाय अब्बोहारिकभावो कथञ्चि नत्थीति अधिप्पायो ।

"तिविधा भिक्खवे, कायसञ्चेतना कुसलं कायकम्मं" ति[१] आदिवचनतो पाणातिपातादिपटिपक्खभूता तब्बिरतिविसिट्ठा चेतना व पाणातिपातविरति-आदिका होन्तीति "चेतनापटिपक्खा वा" ति वुत्तं, न "विरतिपक्खिका" ति। **रक्खती** ति अविनासेत्वा कथेति । **भिन्दती** ति विनासेत्वा कथेति ।

कम्मकथावण्णना निट्ठिता ।

चक्खुविञ्ञाणद्वारं ति चक्खुविञ्ञाणस्स द्वारं। चक्खु च तं विञ्ञाणद्वारञ्चा ति वा **चक्खुविञ्ञाणद्वारं**। चक्खुविञ्ञाणद्वारं ति वा असमासनिद्देसो। तं पन चक्खुमेव। एस नयो सेसेसु पि। "चक्खुना संवरो साधू" ति आदिकाय[२] गाथाय पसादकायचोपनकायसंवरे एकज्झं कत्वा कायेन संवरो वुत्तो, तं इध भिन्दित्वा अट्ठ संवरा,

---

अभिज्झादिपक्खिका वा सा सिया ति अनुयोगं मनसिकत्वा आह "तिविधा भिक्खवे" ति आदि। "चेतना पि...प०... मनोद्वारे एव समुट्ठहन्ती" ति इदं, मनोद्वारे चेतनाय अभिज्झादीहि मनोकम्मभावे निब्बिसेसभावदस्सनं ति कत्वा "चेतना...प०...अधिप्पायो" ति आह। चेतना चेतनाकम्मं, अभिज्झादयो चेतनासम्पयुत्तकम्मं ति एत्तकमेव हि एत्थ विसेसो ति। एत्थ च चेतनाय कायवचीकम्मभावो सिया ति आसङ्काय अभावतो मनोद्वारे अकुसलकायवचीकम्मानं अनुप्पत्तितो च अब्बोहारिका ति न वुत्तं ति दट्ठब्बं ।

विरतिविसिट्ठा ति विरतितो चेतनाय पधानभावमाह। तत्थ "तिविधा भिक्खवे, कायसञ्चेतना" ति आदिना[१] आगमम्हि "**पाणातिपातादिपटिपक्खभूता**" ति युत्तिं दस्सेति। यस्मा च पट्ठाने चेतना व [८७-म०] "कम्मपच्चयो" ति वुत्ता, न विरति, अभिज्झादयो वा, तस्मा निप्परियायेन कम्मं "चेतना" ति अनभिज्झादयो "चेतनापक्खिका वा" ति वुत्ता ति वेदितब्बं। असङ्करतो कम्मद्वारानि ववत्थपेन्तो "रक्खती" ति, विपरियायेन "भिन्दती" ति वुत्तो ति रक्खणभिन्दनानि अनासेत्वा नासेत्वा च कथनं ति वुत्तानी ति।

कम्मकथावण्णना निट्ठिता

ततियो विकप्पो पठमचतुत्थविञ्ञाणद्वारेसु येव लब्भति, न इतरत्थ "सोतं घानं, ति आदिना अवुत्तत्ता, इतरथा पि वा अविभत्तिके निद्देसे लब्भति। यतो संवरवसेन पातिमोक्खसीलं पवत्तति, तं दुस्सील्यं आह "दुस्सील्यं पाणातिपातादिचेतना" ति। इतरा संवर-

---

१. अभि० ४ : ३४५ कथा० । २. खु० १ : ५१ (धम्मपदे) ।

तप्पटिपक्खभावेन असंवरा अट्ठ कथिता। सीलसंवरादयो पि पञ्चेव [६०–सी०] संवरा सब्बद्वारेसु उप्पज्जमाना पि, तप्पटिपक्खभावेन दुस्सील्यादीनि असंवरा ति वुत्तानि। तत्थ दुस्सील्यं पाणातिपातादिचेतना। **मुट्ठस्सच्चं** सतिपटिपक्खा अकुसला धम्मा; पमादं ति केचि। सीतादीसु पटिघो **अक्खन्ति** थिनमिद्धं[1] **कोसज्जं**।

विना वचीद्वारेन सुद्धं कायद्वारसङ्खातं ति इदं वचीद्वारसल्लक्खितस्स मुसावादादिनो पि कायद्वारे पवत्तिसब्भावा असुद्धता अत्थीति तंनिवारणत्थं वुत्तं। न हि तं कायकम्मं होति। सुद्धवचीद्वारोपलक्खितं पन वचीकम्ममेव होतीति। **एत्थ असंवरो** ति एतेन सुद्धकायद्वारेन उपलक्खितो असंवरो द्वारन्तरे उप्पज्जमानो पि वुत्तो। द्वारन्तरानुपलक्खितं सब्बं तंद्वारिकाकुसलञ्चे ति वेदितब्बं। एवञ्च कत्वा कम्मपथसंसन्दने "चोपनकाय-असंवरद्वारवसेन उप्पज्जमानो असंवरो अकुसलं कायकम्ममेव होती" ति आदि "अकुसलं कायकम्मं चोपनकाय-असंवरद्वारवसेन वची-असंवरवसेन च उप्पज्जती" ति आदिना सह अविरुद्धं होति। असंवरो हि [८०–म०] द्वारन्तरे उप्पज्जमानो पि सद्वारे[2] एवा ति वुच्चति, सद्वारवसेन उप्पन्नो ति च, कम्मं अञ्ञद्वारे अञ्ञद्वारवसेन चा ति एवं अविरुद्धं।

विनिमुत्ता अभिज्झादोमनस्सयुत्ता तप्पधाना वा अकुसलधम्मा **सतिपटिपक्खा अकुसला धम्मा**। आरम्मणे चित्तवोस्सग्गवसेन पवत्तो अकुसलचित्तुप्पादो **पमादो**। वीरियपनोदनभावतो **थिनमिद्धं "कोसज्जं"** ति वुत्तं, थिनमिद्धप्पधानो वा चित्तुप्पादो।

असुद्धता ति अकेवलता अञ्ञेन सम्मिस्सता। द्वारं हि द्वारन्तरिककम्मस्स द्वारं होन्तं तेन मिस्सितं विय होति। तेनेवाह "**मुसावादादिनो पि कायद्वारे पवत्तिसब्भावा**" ति। के चि पन "अविञ्ञेय्यमानन्तरानं द्वारन्तरचित्तानं अन्तरन्तरा अप्पवत्तितो सुद्धं ति वुत्तं" ति वदन्ति, तं अनेकस्स पि जवनवारस्स कायकम्मादिभावेन पबन्धनवसेन पवत्ति अत्थी ति कत्वा वुत्तं। **अविरुद्धं होती** ति अकुसलताय कम्मादिभावेन अवधारेत्वा असंवरं वत्वा पुन तस्सेव वाचा-असंवरद्वारादीसु उप्पत्तिवचनं कायद्वारुपलक्खितो असंवरो द्वारन्तरे पवत्तो पि कायद्वारिको **एवा** ति एवं संवण्णनाय सति न विरुज्झती ति अत्थो। इदानि तं अविरुज्झनाकारं '**असंवरो ही**" ति आदिना विभावेति। **सद्वारे** ति अत्तनो द्वारे। **असंवरो द्वारन्तरे उप्पज्जमानो पि सद्वारवसेन उप्पन्नो** ति वुच्चती ति एतेन वाचा-असंवरद्वारे उप्पन्नो पि कायिको असंवरो चोपनकाय-असंवरद्वारवसेन उप्पन्नो त्वेव वुत्तो ति दट्ठब्बं। एस नयो **इतरत्था** पि। **कम्मं अञ्ञद्वारे** ति कम्मस्स द्वारन्तरचरणं पाकटं ति कत्वा वुत्तं।

---

१. थीनमिद्धं–सी०। २. तद्वारे–सी० सब्बत्थ।

अथ वा **एत्था** ति सुद्धं असुद्धं ति एतं अविचारेत्वा एतस्मिं चोपने ति वुत्तं होति। एवं सति द्वारन्तरोपलक्खितं कम्मपथभावप्पत्तताय वचीमनोकम्मं चोपनकाय-असंवरद्वारे उप्पन्नं, सेसं सब्बं तं-द्वारुप्पन्नाकुसलं[1] विय "चोपनकाय-असंवरो" ति वुच्चति। कम्मपथभावप्पत्तिया द्वारन्तरुप्पन्नं कायकम्मञ्च तथा न वुच्चतीति कम्म-पथसंसन्दनविरोधो सिया, तदविरोधं तत्थेव वक्खाम। सीलसंवरादयो पञ्च निक्खेप-कण्डे आविभविस्सन्ति। तत्थ ञाणसंवरे पच्चयसन्निस्सितसीलस्स, वीरियसंवरे च आजीवपारिसुद्धिया अन्तोगधता दट्ठब्बा।

अकुसलकम्मपथकथावण्णना

सरसेनेव च पतनसभावस्स पाणस्स अन्तरा एव अतीव पातनं **अतिपातो**, सणिकं पतितुं अदत्वा व सीघं पातनं ति अत्थो। अतिक्कम्म वा सत्थादीहि अभिभवित्वा पातनं **अतिपातो**। पयोगवत्थुमहन्ततादीहि **महासावज्जता** तेहि पच्चयेहि

[८८-म०] **एवं सती** ति चोपनसङ्खाते काय-असंवरद्वारे असंवरो ति एत्तके एव गहिते। कम्मपथभावप्पत्तस्सेव कम्मभावो अट्ठकथायं वुत्तो ति आह "**कम्मपथभावप्पत्तताय वचीमनोकम्मं**" ति। **सेसं** ति द्वारन्तरानुपलक्खितं। **तथा न वुच्चती** ति कायकम्मं ति न वुच्चती ति अत्थो। **तत्थेव वक्खामा** ति कम्मपथसंसन्दने वक्खाम। "सो हि कायद्वारे चोपनप्पत्तो अकुसलं कायकम्मं होती" ति आदिना[2] "चोपनकाय-असंवरद्वारवसेन उप्पन्नो अकुसलं कायकम्ममेव होती" ति आदिना[2] च वचीकम्मादीनञ्च कम्मपथप्पत्तानं असंवरभूतानं कायकम्मादिभावे आपन्ने "चतुब्बिधं वचीदुच्चरितं अकुसलं वचीकम्ममेव होती" ति आदिना अपवादेन निवत्ति दट्ठब्बा ति एवं वक्खमानतं सन्धायाह। **अन्तोगधता दट्ठब्बा** पच्चय-सन्निस्सित-आजीवपारिसुद्धिसीलानं ञाणवीरियेहि साधेतब्बत्ता ति अधिप्पायो।

अकुसलकम्मपथकथावण्णना

सरसेन अत्तनो सभावेन। याय चेतनाय पवत्तमानस्स जीवितिन्द्रियस्स पच्चयभूतेसु महाभूतेसु उपक्कमकरणहेतु तं महाभूतपच्चया उप्पज्जनकमहाभूता नुप्पज्जिस्सन्ति, सा तादिस-पयोगसमुट्ठापिका चेतना पाणातिपातो नाम। लद्धुपक्कमानि हि भूतानि न पुरिमभूतानि विय विसदानी ति समानजातियानं भूतानं करणं न होन्ती ति। एकस्स पि पयोगस्स सहसा निप्फादनवसेन किच्चसाधिकाय बहुक्खत्तुं पवत्तजवनेहि लद्धासेवनाय च सन्निट्ठापक-चेतनाय वसेन पयोगस्स महन्तभावो। सति पि कदाचि खुद्दके चेव महन्ते च पाणे पयोगस्स

---

[1] तंद्वारुप्पन्नं कुसलं–सी०। [2] अट्ठ० ८६।

उप्पज्जमानाय चेतनाय बलवभावतो। यथावुत्तपच्चयविपरियाये पि तं-तं-पच्चयेहि उप्पज्जमानाय चेतनाय बलवाबलववसेनेव अप्पसावज्जमहासावज्जता वेदितब्बा। **इद्धिमयो** कम्मविपाकजिद्धिमयो दाठाकोटिकादीनं विय।

गोत्तरक्खिता सगोत्तेहि रक्खिता। **धम्मरक्खिता** सहधम्मिकेहि रक्खिता। ससामिका **सारक्खा**। यस्सा गमने रञ्ञा दण्डो ठपितो, सा **सपरिदण्डा**। **अत्थभञ्जको** ति कम्मपथप्पत्तं वुत्तं। कम्मपथकथा हेसा ति। **अत्तनो सन्तकं अदातुकामताया** ति आदि मुसावादसामञ्ञतो वुत्तं। हस्साधिप्पायेन[1] विसंवादनपुरेक्खारस्सेव मुसावादो।

समभावे महन्तं हनन्तस्स चेतना तिब्बतरा उप्पज्जती ति वत्थुस्स महन्तभावो ति तदुभयं चेतनाय बलवभावेनेव होती ति आह "पयोग....प०....भावतो" ति। **यथावुत्तपच्चयविपरियाये** पी ति पयोगवत्थु-आदिपच्चयानं अमहन्ते पि। **तं-तं-पच्चयेही** ति गुणवन्ततादिपच्चयेहि। एत्थ च हन्तब्बस्स गुणवन्तताय महासावज्जता वत्थुमहन्तताय विय दट्ठब्बा। किलेसानं उपक्कमानं द्विन्नञ्च मुदुताय तिब्बताय च अप्पसावज्जता महासावज्जता च योजेतब्बा। पाणो पाणसञ्ञिता वधकचित्तञ्च पुब्बभागसम्भारा, [८९-म०] उपक्कमो वधकचेतनासमुट्ठापितो, पञ्चसम्भारवती पाणातिपातचेतना ति सा पञ्चसम्भारविनिमुत्ता दट्ठब्बा। एस नयो अदिन्नादानादीसु पि।

मन्तपरिजप्पनेन परस्स सन्तकहरणं विज्जामयो, विना मन्तेन परसन्तकस्स कायवचीपयोगेहि आकड्ढनं तादिस-इद्धियोगेन इद्धिमयो पयोगो ति आदिन्नादानस्स पि छ पयोगा साहत्थिकादयो वेदितब्बा।

अभिभवित्वा वीतिक्कमने मिच्छाचारो महासावज्जो, न तथा उभिन्नं समानच्छन्दभावे। "चत्तारो सम्भारा ति वुत्तत्ता अभिभवित्वा वीतिक्कमने सति पि मग्गेन मग्गपटिपत्ति-अधिवासने पुरिमुप्पन्नसेवनाभिसन्धिपयोगाभावतो मिच्छाचारो न होति अभिभुय्यमानस्सा" ति वदन्ति। सेवनचित्ते सति पयोगाभावो न पमाणं इत्थिया सेवनप्पयोगस्स येभुय्येन अभावतो। पुरिसस्सेव हि येभुय्येन सेवनप्पयोगो होती ति इत्थिया पुरेतरं सेवनचित्तं उपट्ठापेत्वा निपन्नाय पि मिच्छाचारो न सिया ति आपज्जति, तस्मा पुरिसस्स वसेन उक्कंसतो चत्तारो सम्भारा वुत्ता ति दट्ठब्बं। अञ्ञथा इत्थिया पुरिसकिच्चकरणकाले पुरिसस्स पि सेवनप्पयोगाभावतो मिच्छाचारो न सिया ति। केचि पन "अत्तनो रुचिया पवत्तितस्स तीणि अङ्गानि, बलक्कारेन पवत्तितस्स तीणी ति सब्बानि अग्गहितग्गहणेन चत्तारी" ति वदन्ति वीमंसित्वा गहेतब्बं।

---

१. हसाधिप्पायेन–म०।

सुञ्ञभावं ति पीतिविरहितताय रित्तं। अत्थविपन्नताय **न हदयङ्गमा। अग्गण्हन्ते** ति असद्दहन्ते कम्मपथभेदो न होति। यो कोचि पन सम्फप्पलापो द्वीहि सम्भारेहि [६१-सो०] सिज्झतीति । अत्तनो परिणामनं चित्तेनेवा ति वेदितब्बं । **मिच्छा पस्सती** ति वितथं पस्सति।

[८१-म०] **कोट्ठासतो** ति फस्सपञ्चमकादीसु चित्तङ्गकोट्ठासेसु ये कोट्ठासा होन्ति, ततो ति अत्थो। ननु च चेतना कम्मपथेसु न वुत्ता ति पटिपाटिया सत्तन्नं कम्मपथभावो न युत्तो ति ? न, अवचनस्स अञ्ञहेतुत्ता। न हि चेतनाय अकम्मपथत्ता कम्मपथरासिम्हि अवचनं, कदाचि पन कम्मपथो होति, न सब्बदा ति कम्मपथभावस्स अनियतत्ता अवचनं। यदा पन कम्मपथो होति, तदा कम्मपथरासिसङ्गहो

दुट्ठचित्तस्स अमरणाधिप्पायस्स फरुसकायवचीपयोगसमुट्ठापिका फरुसचेतना **फरुसवाचा।** मरणाधिप्पाये पन सति अत्थसिद्धितदभावेसु पाणातिपाता ब्यापादा च होन्ती ति। यं पति फरुसवाचा पयुज्जति, तस्स सम्मुखा व सोसं एति। ''परम्मुखे पि फरुसवाचा होती ति वदन्ति।

यदि चेतनाय सब्बदा कम्मपथभावाभावतो अनियतो कम्मपथभावो ति कम्मपथरासिम्हि अवचनं, ननु अभिज्झादीनम्पि कम्मपथं अप्पत्तानं अत्थिताय अनियतो कम्मपथभावो ति तेसम्पि कम्मपथरासियं अवचनं आपज्जती ति? नापज्जति, कम्मपथतातंसभागताहि तेसं तत्थ वुत्तत्ता। यदि एवं चेतना पि तत्थ वत्तब्बा सिया ति? सच्चमेतं, सा पन पाणतिपातादिका ति पाकटो [९०-म०] तस्सा कम्मपथभावो ति न वुत्तं सिया। चेतनाय हि "चेतनाहं भिक्खवे, कम्मं वदामि", "तिविधा भिक्खवे, कायसञ्चेतना अकुसलं कायकम्मं" ति आदिवचनेहि कम्मभावो दीपितो। कम्मं येव च सुगतिदुग्गतीनं तदुप्पज्जनसुखदुक्खानञ्च पथभावेन पवत्तं कम्मपथो ति वुच्चतीति पाकटो तस्सा कम्मपथभावो। अभिज्झादीनं पन चेतनासमीहनभावेन सुचरितदुच्चरितभावो, चेतनाजनिततंबन्धतिभावेन सुगतिदुग्गतितदुप्पज्जनसुखदुक्खानं पथभावो चा ति न तथा पाकटो कम्मपथभावो ति ते एव कम्मपथरासिभावेन वुत्ता। अतथाजातियत्ता वा चेतना तेहि सद्धिं न वुत्ता सिया। विचारेत्वा गहेतब्बं।

पाणतिपातादीनं आरम्मणानेव तब्बिरतिआरम्मणानी ति **पञ्चसिक्खापदा परित्तारम्मणा एवा** ति वचनेन अदिन्नादानादीनं सत्तारम्मणतावचनस्स विरोधं चोदेति। तथा हि **वक्खति** "वीतिक्कमितब्बतो येव हि वेरमणी नाम होती" ति। **सयमेव परिहरिस्सती** ति **सिक्खापदविभङ्गे** पञ्हपुच्छकवण्णनं सन्धाय वदति। तत्थ हि "यस्मा सत्तो ति संख्यं गते सङ्खारे येव आरम्मणं करोति, तस्मा परित्तारम्मणा ति वुच्चन्ती" ति वुत्तं।

न निवारितो ति। "पञ्च सिक्खापदा परित्तारम्मणा एवा" ति एतेन अदिन्नादानादीनं सत्तारम्मणभावविरोधं "सत्तसङ्खाते सङ्खारे एव आरब्भ पवत्तितो" ति सयमेव परिहरिस्सति। "नत्थि सत्ता ओपपातिका" ति पवत्तमाना दिट्ठि तेभूमकधम्मविसया वा ति सङ्खारारम्मणता वुत्ता। विपाकनिस्सन्दफलानि यथाक्कमं निरयादिविपाकदुग्गततादीनि।

अकुसलकम्मपथकथावण्णना निट्ठिता।

कुसलकम्मपथकथा वण्णना

पाणातिपातादीहि पन विरतियो ति एतं याहि विरतीहि सम्पयुत्ता चेतना "कायवचीकम्मानी" ति वुच्चन्ति, तासञ्च कम्मपथभावो युत्तो ति कत्वा वुत्तं। तथा हि वक्खति "पटिपाटिया सत्त चेतना पि वट्टन्ति विरतियो पी" ति। **अल्लससमंसं**[1] ति जीवमानकससमंसं। वोरोपेता हुत्वा नाभिजानामि। दुस्सील्यादारम्मणा[2] तदारम्मणा। जीवितिन्द्रियादि-आरम्मणा कथं[2] दुस्सोल्यादीनि पजहन्तीति तं दस्सेतुं "**यथा पना**" ति आदि वुत्तं। **अनभिज्झा**... प०... **विरमन्तस्सा** ति अभिज्झं पजहन्तस्सा ति अत्थो। न हि मनोदुच्चरिता विरति अत्थि अनभिज्झादीहेव तप्पहानतो।

कम्मपथसंसन्दनकथा वण्णना

कम्मपथप्पत्तानं दुस्सील्यादीनं असंवरानं तथा दुच्चरितानञ्च अकुसलकम्मपथेहि कम्मपथप्पत्तानमेव च सुसील्यादीनं संवरानं तथा सुचरितानञ्च कुसलकम्मपथेहि अत्थतो

दुग्गततादीनी ति आदि-सद्देन "अलद्धालाभो लद्धविनासो इच्छितानं भोगानं किच्छपटिलाभो राजादीहि साधारणभोगता दुक्खविहारो सासङ्कविहारो" ति एवमादयो सङ्गहिता। केचि पन "दिट्ठेव धम्मे भोगजानि-आदयो निस्सन्दफलं" वदन्ति।

कुसलकम्मपथकथावण्णना

तासञ्च विरतीनं चेतनासम्पयुत्तत्ता चेतनाद्वारेन सुगतिदुग्गतितदुप्पज्जनसुखदुक्खानं पथभावो युत्तो ति अधिप्पायो।

कम्मपथसंसन्दनकथावण्णना

तथा ति कम्मपथप्पत्तानं। केची ति धम्मसिरित्थेरं सन्धायाह। सो हि कम्मपथप्पत्तानमेव दुस्सील्यादीनं सुसील्यादीनञ्च कम्मपथेहि अत्थतो नानत्ताभावदस्सनं, तेसं वा फस्सद्वारा-

---

१. अल्लससक–सी० सब्बत्थ। २–२. नत्थि–सी०।

नानत्ताभावदस्सनं। अथ वा तेसं फस्सद्वारादीहि अविरोधभावेन दीपनं कम्मपथसंसन्दनं ति केचि [८२-म०] वदन्ति, तदेतं विचारेतब्बं। न हि पञ्चफस्सद्वारपञ्च-असंवरद्वार-पञ्चसंवरद्वारेसु उप्पन्नानं असंवरानं संवरानञ्च कम्मपथता अत्थि पाणातिपातादीनं पर-सन्तकवत्थुलोभपरसत्तारम्मणब्यापाद-अहेतुकदिट्ठि-आदीनञ्च तेसु द्वारेसु अनुप्पत्तितो। तिविध-कायदुच्चरितादीनि च कम्मपथा ति पाकटा एवा ति किं तेसं कम्मपथेहि नानत्ताभाव-दस्सनेन, न च दुच्चरितानं सुचरितानञ्च फस्सद्वारादिवसेन उप्पत्ति दीपिता, नापि असंवरानं संवरानञ्च यतो तेसं फस्फद्वारादीहि अविरोधभावेन दीपना सिया, केवलं पन फस्सद्वारादिवसेन उप्पन्नानं असंवरानं संवरानञ्च कायकम्मादिता दीपिता। यदि च एत्तकं कम्मपथसंसन्दनं, "अकुसलं कायकम्मं पञ्चफस्सद्वारवसेन नुप्पज्जती" ति आदि कम्मपथसंसन्दनं न सिया। एसा पि छफस्सद्वारादीहि अविरोधदीपना ति चे, वुत्तमेव पकारन्तरेन दस्सेतुं "अथ वा" ति न वत्तब्बं। समुच्चयत्थे च अथ वा-सद्दे कम्मपथप्पत्तानेव दुस्सील्यादीनि कायकम्मादिनामेहि वदन्तेहि मनोकम्मस्स छफस्सद्वार-वसेन उप्पत्ति न वत्तब्बा। न हि तं चक्खुद्वारादिवसेन [६२-सी०] उप्पज्जतीति। यदि च कम्मपथप्पत्ता एव असंवरादयो गहिता, दुच्चरितेहि अञ्ञेसं असंवरानं अभावा तेसञ्च तं-तं-कम्मभावस्स वुत्तत्ता "चोपनकाय-असंवरद्वारवसेन उप्पन्नो असंवरो अकुसलं कायकम्ममेव होती" ति आदि न वत्तब्बं सिया। वुच्चमाने हि तस्मिं सङ्करो सिया, वचीमनोकम्मानि पि हि कायद्वारे उप्पज्जन्ति, तथा सेसद्वारेसु पि कम्म-न्तरानीति।

दीहि अविरोधभावेन दीपनं कम्मपथसंसन्दनं ति वदति। कम्मपथता नत्थी ति एतेन यथा-वुत्तानं [९१-म०] असंवरसंवरानं तेसं वादे कम्मपथसंसन्दने असङ्गहिततं दस्सेति। ये पन सङ्गहं लभन्ति, तेसं गहणे पयोजनाभावं दस्सेतुं "तिविध....प०.." दस्सनेना" ति वुत्तं। एवं पुरिमपक्खे सङ्खेपतो दोसं वत्वा दुतियपक्खे पि वत्तुं "न च दुच्चरितानं" ति आदिमाह। तेन ये दुच्चरितसुचरित-असंवरसंवरा अनुचरीयन्ति, तेसं कायकम्मादिता विधीयती ति दस्सेति। "पञ्चफस्सद्वारवसेन उप्पन्नो असंवरो अकुसलं मनोकम्ममेव होती" ति अदिना हि वुत्तं ति। यदि चा ति आदिना अनवसेसपरियादानाभावमाह। उप्पत्ति न वत्तब्बा ति कम्मपथ....प०.... वदन्तेहि "मनोकम्मं छफस्सद्वारवसेन उप्पज्जती" ति न वत्तब्बं ति अत्थो। अथवा यदि कम्मपथप्पत्तानेव दुस्सील्यादीनि कायकम्मादिनामेहि अट्ठकथायं वुत्तानीति एवं वदन्तेहि अट्ठकथा-चरियेहि मनोकम्मस्स छफस्सद्वारवसेन उप्पत्ति न वत्तब्बा ति अत्थो। तं-तं-कम्मभावस्स वुत्तत्ता ति "तिविधं कायदुच्चरितं अकुसलं कायकम्ममेव होती" ति आदिं[1] सन्धायाह।

---

१. अट्ठ० ८६।

अथ पन द्वारन्तरे उप्पज्जमानं कम्मन्तरम्पि तंद्वारिककम्ममेव सिया, "तिविधं कायदुच्चरितं अकुसलं कायकम्ममेवा" ति आदि, "अकुसलं कायकम्मं चोपनकाय-असंवरद्वारवसेन च वाचा-असंवरद्वारवसेन च उप्पज्जती" ति आदि च विरुज्झेय्य। दुच्चरितानं हि अञ्ञद्वारचरणं अत्थि, न चस्स द्वारन्तरुप्पन्नं कम्मन्तरं होतीति। तस्मा हेट्ठा कम्मपथप्पत्तानं एव कायकम्मादिभावस्स वुत्तत्ता सेसानञ्च तं-तं-द्वारुप्पन्नानं कुसलाकुसलानं द्वारसंसन्दने तं-तं-द्वारपक्खिकभावस्स कतत्ता इध कम्मपथं अप्पत्तानञ्च चेतनाभावतो अकम्मानञ्च असंवरानं संवरानञ्च भजापियमानानं कम्मपथानं विय काय-कम्मादितादीपनं, कम्मपथप्पत्तानं तिविधकायदुच्चरितादीनं तिविधकायसुचरितादीनञ्च द्वारन्तरचरणे पि कायकम्मादिभावाविजहनदीपनं, यथापकासितानञ्च कम्मपथभावं [८३–म०] पत्तानं अपत्तानञ्च अकुसलकायकम्मादीनञ्च कुसलकायकम्मादीनञ्च फस्स-द्वारादीहि उप्पत्तिपकासनञ्च कम्मपथसंसन्दनं नाम। कस्मा? अकम्मपथानं कम्मपथेसु कम्मपथानञ्च अकम्मपथेसु समाननामतावसेन, कम्मपथानं कम्मपथेसु सामञ्ञनामा-विजहनवसेन, उभयेसञ्च उप्पत्तिवसेन द्वारेसु एत्थ संसन्दितत्ता।

तत्थ तिविधकम्मद्वारवसेन उप्पन्नानं कम्मानं ञातकम्मभावताय तं-तं-कम्मभावस्स अवचनीयत्ता कम्मद्वारेसु तेसं उप्पत्तिया च वुत्तत्ता पञ्चविञ्ञाणद्वारवसेन असंवरा-दीनं उप्पत्तिपरियायवचनाभावतो च कम्मद्वारविञ्ञाणद्वारानि विरज्झित्वा "**पञ्चफस्स-द्वारवसेन हि उप्पन्नो**" ति आदि वुत्तं। "यम्पिदं चक्खुसम्फस्सपच्चया उप्पज्जति सुखं वा'; ति आदिना[1] "चक्खुसम्फस्सपच्चया वेदनाक्खन्धो अत्थि कुसलो" ति आदिना च पञ्चफस्सद्वारवसेन असंवरादीनं उप्पत्तिपरियायो वुत्तो, न च "यमिदं चक्खुविञ्ञाणपच्चया" ति आदिवचनं अत्थीति। वुत्तम्पि चेतं "चक्खुविञ्ञाणसह-जातो हि फस्सो चक्खुसम्फस्सो" ति आदि[2]। तेन हि असंवरानं संवरानञ्च चक्खुसम्फस्सा-दीहि असहजातत्ता मनोसम्फस्ससहजातानञ्च चक्खुसम्फस्सद्वारादिवसेन उप्पत्ति दीपिता

कम्मन्तरम्पि तं द्वारिककम्ममेव सिया ति पाणातिपातादिकस्स वचीकम्मादिभावमासङ्कति। **तस्मा** ति यस्मा केसञ्चि असंवरानं संवरानं च कम्मपथता नत्थि, कायदुच्चरितादीनञ्च कम्मपथेहि नानत्ताभावदस्सनेन पयोजनं नत्थि, न च दुच्चरितादीनं फस्सद्वारानं वसेन उप्पत्ति दीपिता, न चायं विधि निरवसेससङ्गाहिका, कम्मानञ्च सङ्करो आपज्जति, अट्ठकथायञ्च पुब्बापर-विरोधो, तस्मा ति अत्थो। **समाननामता** कायकम्मादिता। **सामञ्ञनामाविजहनं** कायकम्मा-दिभावाविजहनं। **उभयेसं** ति कम्मपथाकम्मपथानं। **उप्पत्तिपरियायवचनाभावतो** ति एतेन फस्सद्वार-असंवरद्वारादीनं तंद्वारिककम्मानञ्च अत्थतो नानत्ताभावे पि तथा तथा पवत्तदेसना-

१. अट्ठ० ८७। २. अट्ठ० ७९।

ति। "सो हि कायद्वारे चोपनं पत्तो अकुसलं कायकम्मं होती" ति आदिना "चोपनकाय-असंवरद्वारवसेन उप्पन्नो अकुसलं कायकम्ममेव होती" ति आदिना च वचीकम्मादीनञ्च कम्मपथप्पत्तानं असंवरभूतानं कायकम्मादिभावे आपन्ने "चतुब्बिधं वचीदुच्चरितं अकुसलं वचीकम्ममेव होती" ति आदिना अपवादेन निवत्ति दट्ठब्बा। [६३-सी०] एवञ्च कत्वा पुब्बे दस्सितेसु असंवरविनिच्छयेसु दुतियविनिच्छयेसु च न को चि विरोधो। न हि वचीकम्मादिभूतो चोपनकाय-असंवरो कायकम्मादि होतीति।

अकुसलं मनोकम्मं पन छफस्सद्वारवसेन **उप्पज्जति, तं कायवचीद्वारेसु चोपनं पत्तं अकुसलं कायवचीकम्मं होतीति** एत्थ किं तं अकुसलं मनोकम्मं नाम, हेट्ठा दस्सितनयेन च कायवचीद्वारेसु उप्पन्नं तिविधं मनोदुच्चरितं चोपनं अप्पत्तं सब्बाकुसलञ्च। यदि एवं तस्स कायवचीकम्मभावो नत्थीति "चोपनप्पत्तं कायवचीकम्मं होती" ति न [८४-म०] युज्जतीति? नो न युज्जति चोपनप्पत्तं काये वाचाय च अकुसलं कम्मं होतीति अत्थसिद्धितो। कम्मं पन होन्तं किं कम्मं होतीति? मनोकम्ममेव होतीति। इदं वुत्तं होति–चोपनप्पत्तं अकुसलं कायद्वारे वचीद्वारे च मनोकम्मं होतीति। अथ वा तं-सद्दस्स मनोकम्मेन सम्बन्धं अकत्वा छफस्सद्वारवसेन यं उप्पज्जति, तं ति यथावुत्त-उप्पादमत्तपरिच्छिन्नेन सम्बन्धो कातब्बो। किं पन तं ति? कम्मकथाय पवत्तमानत्ता कम्मं ति विञ्ञायति तञ्च मनोसम्फस्सद्वारे उप्पज्जमानम्पि तिविधं कम्मं होतीति। यथा तं होति, तं दस्सेतुं "**कायवचीद्वारेसु चोपनं पत्तं**" ति आदिमाह। तत्थ नियमस्स अकतत्ता चोपनप्पत्ति उपलक्खणभावेन कायवचीकम्मनामसाधिका व, न पन सब्बम्पि चोपनप्पत्तं कायवचीकम्ममेव, ना पि कुसलपक्खे चोपनं अप्पत्तं कायवचीकम्मं न होतीति अयमत्थो सिद्धो व होतीति।

वसेन ते विचारिता ति दस्सेति। "अकुसलं कायकम्मं पञ्चफस्सद्वारवसेन न उप्पज्जती" ति आदिको दुतियविनिच्छयो।

काये वाचाय च....प०....सिद्धितो ति एतेन चोपनप्पत्तं अकुसलं मनोकम्मं चोपनं अप्पत्ततो विसेसेत्वा दस्सेतुं "कायवचीकम्मं" ति वुत्तं, न पन कायवचीकम्मभावतो ति दस्सेति। तेन कायवचीगहणं यथावुत्तचोपनप्पत्तं एव विभावेती ति दट्ठब्बं। तेनेवाह "चोपनप्पत्तं अकुसलं कायद्वारे वचीद्वारे च मनोकम्मं होती" ति। [९२–म०] तं–सद्दे वुत्ते यं–सद्दो अब्यभिचारितसम्बन्धताय वुत्तो येव होतीति कत्वा "यं उप्पज्जती" ति वुत्तं। **उप्पादमत्तपरिच्छिन्नेना** ति छफस्सद्वारिककम्मेना ति अत्थो। **मत्त–सद्देन** विसेसनिवत्ति-अत्थेन मनोकम्मताविसेसं निवत्तेति। **नियमस्स एव-सद्दस्स अकतत्ता** कायवचीकम्ममेव होती" ति अवुत्तत्ता। इदानि नियमाकरणेन लद्धगुणं दस्सेन्तो "न पन सब्बम्पी" ति आदिमाह।

अथ वा तं ति तं छफस्सद्वारवसेन उप्पज्जमानं मनोकम्मं ति सब्बं मनसा पि निप्फज्जमानं कम्मं मनोकम्मं ति चोदकाधिप्पायेन गहेत्वा वदति, न पुब्बे दस्सित-मनोकम्मं ति। यो हि परस्स अधिप्पायो "मनसा निप्फत्तितो सब्बेन मनोकम्मेनेव भवितब्बं, न कायवचीकम्मेना" ति, तं निवत्तेत्वा कम्मत्तयनियमं दस्सेतुं इदमारद्धं **"तं कायवचीद्वारेसु चोपनं पत्तं"** ति आदि। एत्थ च सङ्कराभावो पुरिमनयेनेव वेदितब्बो। अथ वा कम्मं ति अविसेसेन कम्मसद्दमत्तेन सम्बन्धं कत्वा यथावुत्तो कम्मप्पभेदो यथा होति; तं पकारं दस्सेति। असङ्करो च वुत्तनयो व। यं पन वदन्ति "कायवचीकम्मसहजाता अभिज्झादयो यदा चेतनापक्खिका होन्ति, तदा तानि मनोकम्मानि कायवचीकम्मानि होन्ती" ति, तञ्च न, चेतनापक्खिकानं मनो-कम्मत्ताभावा। अब्बोहारिकत्ते च मनोकम्मता सुट्ठुतरं नत्थि। वुत्तम्पि चेतं "अब्बो-हारिका वा" ति। तस्मा मनोकम्मस्स कायवचीकम्मता न वत्तब्बा। अभिज्झादि-किरियाकारिकाय एव चेतनाय सम्पयुत्ता अभिज्झादयो मनोकम्मं, न पाणातिपाता-दिकायवचीकिरियाकारिकाया ति भिय्यो पि तेसं मनोकम्मता ति न तेसं मनो-कम्मानं सतं कायवचीकम्मता वत्तब्बा ति। एवं कम्मानं द्वारेसु द्वारानं च कम्मेसु अनियतत्ता द्वारनिबन्धनं न कतं। इदानि अकते पि च द्वारनिबन्धने येसं द्वारानं वसेन इदं चित्तं उप्पज्जति, तेसं तं-तं-द्वारकम्मपथानञ्च वसेन उप्पत्तिया यथा-भट्ठपाळिया [८५-म०] वुत्ताय च [६४-सी०] दीपनत्थं **"तत्थ कामावचरं"** ति आदिमाह। **चित्तं तिविधकम्मद्वारवसेन उप्पज्जती** ति इदं मनोकम्मद्वारभूतस्स तेन सभावेन उप्पत्तिं गहेत्वा वुत्तं। यथा वा चित्तं चित्ताधिपतेय्यं ति सम्पयुत्तवसेन वुच्चति, एवमिधा पी ति

"नियमस्स अकतत्ता" ति आदि पुरिमनयो ति अधिप्पेतो। वत्तु-अधिप्पायानुरोधिनी सद्दप्पवत्ती ति समासपदे एकदेसो पि आकड्ढीयति अधिकारवसेना ति अधिप्पायेन **"कम्म-सद्दमत्तेन सम्बन्धं कत्वा"** ति वुत्तं। **यं पन वदन्ती** ति आदिना एत्थ पदकारमतस्स अयुत्ततं दस्सेति। तत्थ **चेतनापक्खिकानं** ति कायवचीकम्मभूतचेतनापक्खिकानं। **सतं** ति समानानं। **तंतंद्वार-कम्मपथानञ्चा** ति इदं इमस्स चित्तस्स कम्मपथभावेन पवत्तं कालं सन्धाय वुत्तं, न सब्बदा, कम्मपथभावेनेव पवत्तनतो। च-सद्देन वा अकम्मपथसङ्गहो दट्ठब्बो। अथ वा तंतंद्वारा च तंतंद्वारकम्मपथा च तंतंद्वारकम्मपथा ति "तं-तं-द्वारा" ति पदेन अकम्मपथानं संवरानं सङ्गहो दट्ठब्बो। तेन **सभावेना** ति मनोकम्मस्स द्वारभावेन, न अत्तनो ति अधिप्पायो। **एवमिधा पी** ति **चित्तजनितो** चित्तसम्पयुत्तस्स कम्मस्स द्वारभावो चित्ते पि उपचरितो ति अत्थो।

वेदितब्बं। चोपनद्वयरहितस्स मनोपबन्धस्स मनोकम्मद्वारभावे पन वत्तब्बमेव नत्थि।

कम्मपथसंसन्दनकथावण्णना निट्ठिता।

द्वारकथावण्णना निट्ठिता।

अयं योजना ति "रूपारम्मणं वा ....प... धम्मारम्मणं वा" ति एतेन सह "यं यं वा पना" ति एतस्स अयं सम्बन्धो ति अत्थो। को पनायं सम्बन्धो ति? येन वचनानि अञ्ञमञ्ञं सम्बज्झन्ति, तं पुब्बापरवचने पयोजनं सम्बन्धो। इध च सब्बारम्मणतादिदस्सनं "रूपारम्मणं वा ....प.... धम्मारम्मणं वा" ति एतस्स अनन्तरं "यं यं वा पना" ति एतस्स वचने पयोजनं योजना दट्ठब्बं[1]। तत्थ **"रूपारम्मणं वा ...प... धम्मारम्मणं वा आरब्भा"** ति एत्तकेन आपन्नं दोसं दस्सेत्वा तन्निवत्तनवसेन "यं यं वा पना" ति एतस्स पयोजनं दस्सेतुं **"हेट्ठा"** ति आदिमाह। दुतिये अत्थविकप्पे "यं यं वा पना" ति एतेन अप्पधानम्पि रूपादिं आकड्ढति। न हि पधानस्स चित्तस्स अत्तनो येव आरम्मणभावो अत्थीति। **हेट्ठा वुत्तनयेना** ति सब्बारम्मणतादिनयेन। "हेट्ठा गहितमेव गहितं ति वत्वा तस्स वचने पयोजनं दस्सेतुं 'रूपं वा ....प.... इदं वा इदं वा आरब्भा' ति कथेतुं इदं वुत्तं" ति वुत्तं। तत्थ **इदं वा इदं वा** ति एतं सब्बारम्मणतादिं सन्धाय कथितं ति वेदितब्बं।

धम्मुद्देसवारकथा फस्सपञ्चमकरासिवण्णना

आचरियानं ति रेवताचरियस्स। **न पनेतं सारतो दट्ठब्बं**। न हि फस्सादीनं कामावचरादिभावदस्सनत्थं इदमारद्धं, किन्तु तस्मिं समये फस्सादिसभावदस्सनत्थं ति।

वत्तब्बमेव नत्थि अनन्तरपच्चयभूतमनोरहितस्स चित्तस्स अभावतो ति।

द्वारकथावण्णना निट्ठिता।

कमाभावनियमाभावे सब्बारम्मणतादी ति आदि-सद्देन सङ्गण्हाति। **न हि...प०....अत्थी** ति पधाने असम्भवतो अप्पधानं अधिकरीयती ति दस्सेति।

धम्मुद्देसवारकथा फस्सपञ्चमकरासिवण्णना।

"तस्मिं समये फस्सो होती" ति आदिकाय पाळिया फस्सादीनं कामावचरतादिदस्सने न तप्परभावो, सभावदस्सने एव पन तप्परभावो ति दस्सेति **"न हि फस्सादीनं"** ति आदिना।

---

१. दट्ठब्बा–सी०।

चित्तस्स पठमाभिनिपातत्ता ति सब्बे चेतसिका चित्तायत्ता चित्तकिरियाभावेन वुच्चन्तीति फस्सो "चित्तस्स पठमाभिनिपातो" ति वुत्तो। [८६–म०] कामं उप्पन्नफस्सो पुग्गलो चित्तचेतसिकरासि वा आरम्मणेन फुट्ठो फस्ससहजाताय वेदनाय तंसमकालमेव वेदेति, फस्सो पन ओभासस्स पदीपो विय वेदनादीनं पच्चयविसेसो होतीति पुरिमकालो विय वुत्तो। गोपानसीनं उपरितिरियं ठपितकट्ठं **पक्खपासो।** कट्ठद्वयादि विय एकदेसेन एकपस्सेन अनल्लीयमानो पि रूपेन सह फस्सस्स सामञ्ञं अनल्लीयमानं सङ्घट्टनमेव, न विसयभावो, सङ्घट्टनञ्च फस्सस्स चित्तारम्मणानं सन्निपतनभावो एव। वत्थारम्मणसन्निपातेन सम्पज्जतीति सङ्घट्टनसम्पत्तिको फस्सो। पाणिद्वयस्स सन्निपातो विय चित्तारम्मणसन्निपातो फस्सो चित्तस्स आरम्मणे सन्निपतितप्पवत्तिया पच्चयो होतीति **किच्चट्ठेनेव रसेन सङ्घट्टनरसो।** तथा पच्चयभावो हि तस्स फस्सस्स सङ्घट्टनकिच्चं ति। यथा हि पाणिया पाणिम्हि सङ्घट्टनं तब्बिसेसभूता [६५–सी०] रूपधम्मा एवं चित्तस्स आरम्मणे सङ्घट्टनं तब्बिसेसभूतो एको चेतसिकधम्मो दट्ठब्बो। **चित्ते येवा** ति एतेन चेतसिकसभावतं वत्थारम्मणेहि असंसट्ठं सङ्घट्टनं वेदनाय दस्सेति, न पन वत्थुनिस्सयतं पटिक्खिपति। तस्स फस्सस्स कारणभूतो तदनुरूपो समन्नाहारो तज्जासमन्नाहारो। इन्द्रियस्स तदभिमुखभावो आवज्जनाय च आरम्मणकरणं विसयस्स परिक्खतता अभिसङ्खतता विञ्ञाणस्स विसयभावकरणं ति अत्थो।

[९३-म०] **चित्तकिरियाभावेना** ति चित्तब्यापारभावेन। फस्सस्स सम्पज्जनमुप्पज्जनमेव। **सन्निपतितप्पवत्तिया पच्चयो होती** ति एतेन चित्तारम्मणसन्निपातकारणं फस्सो चित्तारम्मणसन्निपातो ति वुत्तो ति दस्सेति। फस्सो हि चित्तस्स आरम्मणे फुसनाकारेनेव पवत्तितो तस्स आरम्मणे सन्निपतितप्पवत्तिया पच्चयो ति च वुच्चति। सा चस्स फुसनाकारप्पवत्ति साखग्गे ठितं दिस्वा भूमिसण्ठितस्स अवीरकपुरिसस्स जङ्घचलनं, अम्बिल-अम्बपक्कादिं खादन्तं दिस्वा मुखे खेळुप्पत्ति, दयालुकस्स परं हञ्ञमानं दिस्वा सरीरकम्पनं ति एवमादीसु परिब्यत्ता होति। **तब्बिसेसभूता रूपधम्मा** ति यथा पटिहननवसेन अञ्ञमञ्ञं आसन्नतरं उप्पज्जमानेसु रूपधम्मविसेसेसु सङ्घट्टनपरियायो, एवं चित्तारम्मणानं विसयकरणविसयभावप्पत्ति पटिहननाकारेन होति। सो च चित्तनिस्सितो धम्मविसेसो सङ्घट्टनपरियायेन वुत्तो, यदाह "एवं" ति आदि। केचि पन "सङ्घट्टनरसो फस्सो पञ्चद्वारिको व, न इतरो वत्थारम्मणससङ्घट्टनाभावतो" ति वदन्ति, तं न युज्जति उपचारसिद्धत्ता सङ्घट्टनस्स। इतरथा पञ्चद्वारिकस्स पि तं न सम्भवेय्या ति। इन्द्रियमनसिकारेसु यथापवत्तमानेसु तं-तं-आरम्मणे विञ्ञाणं उप्पज्जति, तेसं तथापवत्ति येव **विञ्ञाणस्स विसयभावकरणं।**

सुखवेदनायमेव लब्भति अस्सादभावतो ति अधिप्पायो । **विस्सविताया** ति अरहताय। अनेकत्थत्ता हि धातूनं अरहत्थो विपुब्बो सुसद्दो । विस्सवं वा सजनं वसिता कामकारिता **विस्सविता। आरम्मणरसेकदेसमेव अनुभवन्ती** ति इदं फुसनादिकिच्चं एकदेसानुभवनमिव होतीति कत्वा वुत्तं। वेदयितसभावो एव हि अनुभवनं ति। फुसनादिभावेन वा आरम्मणग्गहणं एकदेसानुभवनं, वेदयितभावेन गहणं यथाकामं सब्बानुभवनं। एवं सभावानेव तानि गहणानीति न वेदनाय विय फस्सादीनम्पि यथासककिच्चकरणेन सामिभावानुभवनं चोदेतब्बं। **अयं इधा** ति एतेन पञ्चसु वेदनासु इमस्मिं चित्ते अधिप्पेतं सोमनस्सवेदनं वदति, तस्मा असोमनस्सवेदनं अपनेत्वा गहिताय सोमनस्सवेदनाय समाना इट्ठाकारसम्भोगरसता वुत्ता ति वेदितब्बा।

[८७–म०] निमित्तेन पुनसञ्जाननकिच्चा **पच्चाभिञ्ञाणरसा**। पुनसञ्जाननस्स पच्चयो पुनसञ्जाननपच्चयो, तदेव निमित्तं पुन....प....निमित्तं, तस्स करणं **पुन....प....करणं**। पुनसञ्जाननपच्चयभूतं वा निमित्तकरणं **पुन....प....करणं**। तदस्सा किच्चं ति अत्थो। पुनसञ्जाननपच्चयनिमित्तकरणं निमित्तकारिकाय निमित्तेन सञ्जानन्तिया च सब्बाय सञ्ञाय समानं वेदितब्बं। **ञाणमेव अनुवत्तति,** तस्मा अभिनिवेसकारिका विपरीतग्गाहिका च न होतीति अधिप्पायो। एतेनुपायेन समाधिसम्पयुत्ताय अचिरट्ठानता च न होतीति दट्ठब्बा।

अभिसन्दहती ति पबन्धति पवत्तेति। **चेतनाभावो** ब्यापारभावो। **दिगुणुस्साहा** ति न दिगुणं वीरिययोगं सन्धाय वुत्तं, अत्तनो एव पन ब्यापारकिच्चस्स महन्तभावं दीपेति । **उस्साहनभावेना** ति आदरभावेन । सा हि सयं आदरभूता सम्पयुत्ते आदरयतीति।

"यं खो भिक्खवे, इमे पञ्च कामगुणे पटिच्च उप्पज्जति सुखं सोमनस्सं, अयं वुच्चति कामानं अस्सादो" ति आदिवचनतो[१] सुखवेदना व अस्सादो ति आह "अस्सादभावतो" ति । **फुसनादिभावेन आरम्मणग्गहणं एकदेसानुभवनं** ति अनुपचरितमेव फस्सादीनं अनुभवनकिच्चमाह ।

निमित्तेना ति नीलादिना दीघादिना च निमित्तेन। **एतेनुपायेना** ति यथा ञाणप्पधाने चित्तुप्पादे सञ्ञा ञाणमनुवत्तति, एवं समाधिप्पधाने समाधिं ति दस्सेति ।

पबन्धती ति पट्ठपेति सम्पयुत्तधम्मे सकसककिच्चे पट्ठपेति। तेनेव हि तदत्थं विवरन्तो **"पवत्तेती"** ति आह ।

---

१. तु० अं० ४ : ५४।

विजाननं आरम्मणस्स उपलद्धि। **सन्दहनं** चित्तन्तरस्स अनुप्पबन्धनं। **चक्खुना हि दिट्ठं** ति चक्खुना दट्ठब्बं। यथा "दिट्ठं सुतं मुतं विञ्ञातं" ति दट्ठब्बादि वुच्चति एवमिधा पि वेदितब्बं। **चक्खुना ही**[1] ति आदीसु चक्खुना ‥ प०‥‥मनसा द्वारेना ति अत्थो। नगरगुत्तिकस्स विय चित्तस्स आरम्मणविभावनमत्तं उपधारणमत्तं उपलद्धिमत्तं किच्चं, आरम्मणपटिवेधनपच्चाभिञ्ञाणादि पन किच्चं पञ्ञासञ्ञादीनं ति वेदितब्बं। **पुरिमनिद्दिट्ठं** ति समयववत्थाने निद्दिट्ठं। भावेन्तो विय न न उप्पज्जति, किन्तु उप्पज्जतीति दस्सेतुं [६६–सी०] **"चित्तं होती"** ति वुत्तं ति एतं होति-सद्दस्स उप्पज्जति-सद्दस्स च समानत्थत्ते सति युज्जेय्य, तदत्थत्ते च तत्थ उप्पन्नं होतीति न वुच्चेय्य। न हि युत्तं उप्पन्नं उप्पज्जतीति वत्तुं। चित्तस्स च उप्पन्नता समयववत्थाने वुत्ता एवा ति किं तस्स पुन उप्पत्तिदस्सनेन। येन च समयववत्थानं कतं, तस्स निद्देसो न न सक्का कातुं ति किं तं निद्देसत्थं उद्देसेन दुतियेन, निद्देसेनेव च फस्सादीहि च अञ्ञत्तं चित्तस्स सिज्झतीति किं तदत्थेन पुनवचनेन, अञ्ञप्पयोजनत्ता पन पुरिमस्स चित्तवचनस्स पच्छिमं वुत्तं। पुरिमं हि समयववत्थानत्थमेव वुत्तं, न ववत्थितसमये

विज्जमानतावाची होति-सद्दो विज्जमानता च सङ्खतधम्मानं उप्पज्जनेन विना नत्थी ति" चित्तं न तथा अत्थतो नुप्पज्जती" ति वुत्तं। तेन यस्मा [९४–म०] चित्तं न नुप्पज्जति उप्पज्जति एव, तस्मा चित्तं होती ति वुत्तं ति अयमेत्थ अट्ठकथाय अत्थो। एवमवट्ठिते होति-उप्पज्जति-सद्दानं समानत्थत्तेन न किञ्चि पयोजनं दिस्सति। अथवा भवनं नाम सत्ता, सत्ता च उप्पादादिना समङ्गिता ति फस्सादीनं खणत्तयपरियापन्नता "फस्सो होती" ति आदीसु होतिसद्देन वुत्ता। तत्थ यो भावो उप्पादसमङ्गी, न सो न होति नाम, तस्मा उप्पज्जति-सद्देन वुच्चमानस्स अत्थस्स होति-सद्दवचनीयता न न सम्भवति। उप्पन्नं होती ति एत्थ पन किञ्चा पि उप्पन्नसद्देनेव उप्पादादिसमङ्गिता वुच्चति, तब्भावानतिवत्ति पन होति-सद्देन वुत्ता खणत्तयवीतिवत्ते पि उप्पन्नसद्दस्स वत्तनतो, तस्मा न एत्थ उप्पज्जति-सद्देन समानत्थतासब्भावदस्सनं विय उप्पज्जतिदस्सनम्पि विरुज्झति पाकटकरणभावतो। इतरथा "चित्तं उप्पन्नं होती" ति इमिना व चित्तस्स विज्जमानभावो दस्सितो ति किं पुन विज्जमानभावदस्सनेना ति न न सक्का वत्तुं, समयववत्थानवसेन सविसेसं वुत्तम्पि चित्तं फस्सादीहि सहुप्पत्तिया सुट्ठुतरं निब्बिसेसं ति दस्सेतुं चित्तस्स पुन वचनं। उद्दिट्ठधम्मानं येव चेत्थ निद्देसवारे विभजनं, न विभङ्गे विय पाळिया आरुळ्हसब्बपदानं ति "उद्देसवारे सङ्गण्हनत्थं निद्देसवारे विभजनत्थं" ति अयम्पि अत्थो निच्चलो। तथा हि "यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेती" ति आदीसु मग्गादयो न विभत्ता। अपि च

---

१. नत्थि–सी०।

विज्जमानधम्मदस्सनत्थं, इतरञ्च तस्मिं समये विज्जमानधम्मदस्सनत्थं वुत्तं, न समयववत्थानत्थं, न च अञ्ञदत्थं वचनं अञ्ञदत्थं वदति, न च लेसेन वुत्तो ति कत्वा महाकारुणिको अत्थं पाकटं न करोतीति।

फस्सपञ्चमकरासिवण्णना निट्ठिता।

झानङ्गरासिवण्णना

[८८-म०] **वितक्केती** ति धम्मतो अञ्ञस्स कत्तुनिवत्तनत्थं धम्ममेव कत्तारं निद्दिसति। तस्स पन वसवत्तिभावनिवारणत्थं **"वितक्कनं वा"** ति भावनिद्देसो। रूपं रूपं ति पथवी पथवीति वा आकोटेन्तो विय होतीति **आकोटनलक्खणो।** आदितो, अभिमुखं वा हननं **आहननं,** परितो, परिवत्तेत्वा वा आहननं **परियाहननं।** विचारतो ओळारिकट्ठेन विचारस्सेव पुब्बङ्गमट्ठेन अनुरवतो ओळारिको तस्स च पुब्बङ्गमो **घण्टाभिघातो विय** होति **वितक्को।** सो यथा घण्टाभिघातो पठमाभिनिपातो होति, एवं आरम्मणाभिमुखनिरोपनट्ठेन पठमाभिनिपातो होति। **विप्फारवा** ति विचलनयुत्तो। **अनुप्पबन्धेन पवत्तियं** ति उपचारे वा अप्पनायं वा सन्तानेन पवत्तियं। तत्थ हि वितक्को निच्चलो हुत्वा आरम्मणं अनुपविसित्वा पवत्तति। **मण्डलं** ति खलमण्डलं।

अधिपतिभावेन इन्द्रियेसु विय फस्सवेदनासञ्ञाचेतनाहि सह सब्बचित्तुप्पादसाधारणरासियं गहेतब्बत्ता समयववत्थाने वुत्तम्पि चित्तं फस्सपञ्चमके वुत्तं ति दट्ठब्बं।

फस्समपञ्चमकरासिवण्णना निट्ठिता।

झानङ्गरासिवण्णना

वितक्कनं ति वितक्कनकिरिया, सा च वितक्कस्स अत्तनो पच्चयेहि पवत्तिमत्तमेवा ति भावनिद्देसो वसवत्तिभावनिवारणाय होति। यस्मिं आरम्मणे चित्तं अभिनिरोपेति, तं तस्स गहणयोग्यं करोन्तो वितक्को आकोटेन्तो विय परिवत्तेन्तो विय च होतीति तस्स आकोटनलक्खणता परियाहननरसता च वुत्ता। इदञ्च लक्खणं किच्चसन्निस्सितं कत्वा वुत्तं। धम्मानं हि सभावविनिमुत्ता काचि किरिया नाम नत्थि, तथा गहेतब्बाकारो। बोधनेय्यजनानुरोधेन पन परमत्थतो एकसभावो पि सभावधम्मो परियायवचनेहि विय समारोपितरूपेहि बहूहि पकारेहि पकासीयति। एवं हि सो सुट्ठु पकासितो होती ति। [९५-म०] विप्फारो नाम वितक्कस्स थिनमिद्धपटिपक्खो आरम्मणे अनोलीनता असङ्कोचो, सो पन अभिनिरोपनभावतो चलनं विय होती ति अधिप्पायेन "विप्फारवा ति विचलनयुत्तो" ति वुत्तं। **उपचारप्पनासु सन्तानेन पवत्तियं** ति एतेन यथा अपुब्बारम्मणे पठमाभिनिपातभूतो वितक्को विप्फारवा होति, न तथा एकस्मिं येव आरम्मणे निरन्तरं अनुप्पबन्धवसेन पवत्तियं, नातिविप्फारवा पन तत्थ होति सन्निसिन्नभावतो ति दस्सेति। तेनेवाह **"निच्चलो हुत्वा"** ति आदि।

पीणयती ति तप्पेति, वड्ढेति वा। **फरणरसा** ति पणीतरूपेहि कायस्स ब्यापनरसा। उदग्गभावो **ओदग्यं**। **खुद्दिका** लहुं लोमहंसनमत्तं कत्वा भिन्ना न पुन उप्पज्जति। **खणिका** बहुलं उप्पज्जति। उब्बेगतो **फरणा** निच्चलत्ता चिरट्ठितिकत्ता च पणीततरा। पस्सद्धिया निमित्तभावेन गब्भं गण्हन्ती। अप्पनासम्पयुत्ता व पीति **अप्पनासमाधिपूरिका** ति कत्वा सा ठपिता। **इतरा द्वे** खणिकोपचारसमाधिपूरिका पी ति।

समाधिचित्तेना ति समाधिसहितचित्तेन। **अविसारो** अत्तनो एव अविसरणसभावो। **अविक्खेपो** सम्पयुत्तानं अविक्खित्तता। येन सम्पयुत्ता अविक्खित्ता होन्ति, सो धम्मो अविक्खेपो ति। **विसेसतो** ति येभुय्येन। सुखविरहितो पि हि अत्थि समाधीति। पदीपनिदस्सनेन सन्तानट्ठितिभावं समाधिस्स दस्सेति।

झानङ्गरासिवण्णना निट्ठिता।

इन्द्रियरासिवण्णना

सद्दहन्ति एताया ति सद्दहनकिरियाय पवत्तमानानं धम्मानं तत्थ अधिपच्चभावेन सद्धाय पच्चयतं दस्सेति। तस्सा हि धम्मानं [८९-म०] तथापच्चयभावे सति "पुग्गलो सद्दहती" ति वोहारो होति। पसादनीयट्ठानेसु पसादस्स पटिपक्खभूतं अकुसलं अस्सद्धियं मिच्छाधिमोक्खो च। पसादभूतो निच्छयो वत्थुगतो अधिमोक्ख-

---

"पीतिसुखेन अभिसन्देती" ति आदिवचनतो[1] पीतिया फरणं कायविसयं ति यथा तं होति, तं दस्सेतुं "पणीतरूपेहो" ति वुत्तं।

विसारस्स ब्यग्गभावस्स पटिपक्खो सभावो अविसारो, न विसाराभावमत्तं। अविसाराविक्खेपानं समाधानभावतो अत्थतो विसेसाभावे पि समुखेन सम्पयुत्तमुखेन च उभयं वुत्तं ति दस्सेतुं "अविसा...प....विक्खेपो" ति वुत्तं। विसेसतो ति अतिसयेना ति वा अत्थो गहेतब्बो। सुखं हि समाधिस्स विसेसकारणं "सुखिनो चित्तं समाधियती" ति वचनतो[2]।

इन्द्रियरासिवण्णना

तत्था ति सद्दहनसङ्खाते अधिमोक्खलक्खणे। **पुग्गलो सद्दहती** ति इमिना पि सद्धाय आहितविसेसानं तंसम्पयुत्तधम्मानं सद्दहनकिरियाय कत्तुभावमेव विभावेति। अवयवब्यापारो हि समुदाये वोहरीयती ति। न केवलं पसादनीयवत्थुस्मि अप्पसादनाकारप्पवत्तमेव अकुसलं

---

१. दी० १ : ६५; म० १ : ३३९।

२. दी० ३ : २३३; अं० १ : २२५; अं० ३ : ८; अं० ३ : ३७६।

लक्खणं, न येवापनकाधिमोक्खो ति। [६७-सी०] **इन्दट्ठं कारेती** ति "मं अन्तरेन तुम्हाकं अधिमुच्चनं नत्थि, मया सद्दहथा" ति विय अत्तानं अनुवत्तेति सम्पयुत्त-धम्मे। एवं सेसेसु पि। **पक्खन्दनं** ति संसीदनं। **पङ्को** कद्दमतो घनीभूतो होति। **पणकं** पिच्छिलं उदकमलं। पीतं उदकं। **ओकप्पनलक्खणा** ति अनुपविसित्वा एवमेतं ति कप्पनलक्खणा। अकलुसभावो **अकालुस्सियं**, अनाविलभावो ति अत्थो। बुद्धादि-वत्थूनि **सद्धेय्यानि**। सप्पुरिसूपसेवन-सद्धम्मसवन-योनिसोमनसिकार-धम्मानुधम्मपटिपत्तियो **सोतापत्तियङ्गानि**। कुसलधम्मानं आदाने **हत्थो** विय, सब्बसम्पत्तिनिप्फादने **वित्तं** विय, अमतकसिफलफलने **बीजं** विय दट्ठब्बा।

वीरभावो ति येन वीरो नाम होति, सो धम्मो ति अत्थो। अनुबलप्पदानं **पग्गहो**। मग्गो गन्तब्बो होति, मग्गो गतो, कम्मं कत्तब्बं, कम्मं कतं, अप्पमत्तको आबाधो उप्पन्नो, गिलाना वुट्ठितो होति अचिरवुट्ठितो गेलञ्ञा, गामं वा निगमं वा पिण्डाय चरन्तो न लभति लूखस्स वा पणीतस्स वा भोजनस्स यावदत्थं पारिपूरिं,

---

अस्सद्धियं, अथ खो अप्पसादनीयवत्थुस्मिं पसादनाकारप्पवत्तम्पी ति दस्सेतुं "**मिच्छाधिमोक्खो**" वुत्तं। तेन पूरणादीसु पसादस्स अस्सद्धियतमाह। **पसादभूतो** ति एतेन अप्पसादभूतं अस्सद्धियं निवत्तेति। **वत्थुगतो** ति इमिना मिच्छाधिमोक्खं। "पसादभूतो निच्छयो" ति इमिना पन विभावितमेवत्थं पाकटं करोन्तो "**न येवा पनकाधिमोक्खो**" ति आह। अकालुस्सियं पसादो, तं पन असङ्खोभभावतो "**अनाविलभावो**" ति वुत्तं। तं हि सम्पयुत्तेसु विदहन्ती सद्धा अकालुस्सियपच्चुपट्ठाना। **एवमेतं** ति अधिमुच्चनाकारेन पन [९६-म०] गहेतब्बत्ता अधि-मुत्तिपच्चुपट्ठाना। **बुद्धादिवत्थूनी** ति एत्थ इधलोकपरलोककम्मफलसम्बन्धा पि सङ्गहिता ति दट्ठब्बं। "सद्धाहत्थो महानाम, अरियसावको" ति, "सद्धीध वित्तं पुरिसस्स सेट्ठं" ति[1], "सद्धा बीजं तपो वुट्ठी" ति[2] एवमादिवचनतो कुसलधम्मानं आदानादीसु हत्थादयो विय सद्धा दट्ठब्बा।

"इध भिक्खुना कम्मं कत्तब्बं होति। तस्स एवं होति 'कम्मं खो मे कत्तब्बं भविस्सति, कम्मं खो पन मे करोन्तस्स न सुकरं बुद्धानं सासनं मनसिकातुं, हन्दाहं वीरियं आरभामि अप्पत्तस्स पत्तिया अनधिगतस्स अधिगमाय असच्छिकतस्स सच्छिकिरियाया" ति[3]—

आदिका अनुरूपपच्चवेक्खणा।

---

१. सं० १ : २१६; खु० १ : २९६ सुत्तनिपाते।
२. सं० १ : १७२; खु० १ : २८१ सुत्तनिपाते। ३. दी० ३ : १९७।

लभति""प""पारिपूरिं ति एतानि अनुरूपपच्चवेक्खणासहितानि अट्ठ वीरियारम्भवत्थूनि तंमूलकानि वा पच्चवेक्खणानि।

चिरकतादि-आरम्मणं उपगन्त्वा ठानं, अनिस्सज्जनं वा आरम्मणस्स **उपट्ठानं**। उदके अलाबु विय आरम्मणं पिलवित्वा गन्तुं अप्पदानं पासाणस्स विय निच्चलस्स आरम्मणस्स ठपनं सारणं असम्मुट्ठताकरणं **अपिलापनं**। अपिलापे करोति **अपिलापेति**। **गतियो** ति निप्फत्तियो सम्भवतो फलतो च। **अपरो नयो** ति रसादिदस्सनत्थं आरद्धं। सम्मोसपच्चनीकं किच्चं **असम्मोसो,** न सम्मोसाभावमत्तं। सतिया वत्थुभूता कायादयो **कायादिसतिपट्ठाना,** सतियो येव वा पुरिमा पच्छिमानं पदट्ठानं।

विक्खेपस्स उद्धच्चस्स। **पञ्ञापेती** ति पकारेहि जानापेति। **एकालोका होती** ति विपस्सनुपक्किलेसोभासं सन्धायाह। मनते विजानाति एतेना ति वा **मनो,** एवञ्च कत्वा "मनञ्च पटिच्च धम्मे चा" ति[1] [९०-म०] कारणभावेन मनो वुत्तो। सब्बो हि मनो अत्तनो अनन्तरस्स विञ्ञाणस्स कारणं ति। **विजानाती** ति परिच्छिन्नोपलद्धिवसेन जानाति, न सञ्ञापञ्ञा विय सञ्जाननपटिविज्झनवसेन।

तंमूलकानी ति गन्तब्बमग्गादिमूलकानि। एत्थ च **मग्गो गन्तब्बो होती** ति आदयो अट्ठकथायं दस्सनवसेनेव वुत्ता, न पाळियं आगतानुक्कमेना ति दट्ठब्बं।

करणादिकाले विय चिरकतादि-आरम्मणं विभूतं कत्वा पवत्तन्ति सति तं उपगन्त्वा तिट्ठन्ती अनिस्सज्जन्ती च होति। यं आरम्मणं सम्मुट्ठं, तं पिलवित्वा गतं विय चलितं विय च होति, तप्पटिपक्खभावेन पन असम्मुट्ठं ति इममत्थं दस्सेन्तो "उदके अलाबु विया" ति आदिमाह। तत्थ **सारणं** ति एतेन "सरन्ति ताया" ति इममेवत्थं विभावेति। सरणकिरियाय हि पवत्तमानानं धम्मानं तत्थ आधिपच्चभावेन सति पच्चयो। तस्सा हि तथापच्चयभावे सति ते धम्मा सारिता असम्मुट्ठकता अपिलाविता होन्ती ति। "इमेहि नाम हेतूहि पच्चयेहि च एते धम्मा सम्भवन्ती" ति **सम्भवतो**। "इमं नाम फलं निब्बत्तेन्ती" ति **फलतो**, धम्मा उप्पज्जनेन विपच्चनेन च निप्फन्ना नाम होन्ती ति। **वत्थुभूता** ति आरम्मणभूता।

सति पि सब्बेसं आरम्मणधम्मानं आरम्मणग्गहणे न चित्तं विय परे परिच्छिज्जगाहिनो ति "परिच्छिन्नोपलद्धिवसेन जानाती" ति चित्तं वुत्तं। चेतसिकेसु हि केचि विसयं परिच्छिज्ज गहेतुं न सक्कोन्ति केचि पन [९७–म०] परिच्छेदमत्ते येव तिट्ठन्ति, न विञ्ञाणं विय विसयं गण्हन्ती ति ये आसङ्कितब्बा, तेसु तदभावं दस्सेन्तो "न सञ्ञा""प०""विज्झनवसेना" ति आह।

---

1. म० १ : १५९, ३१८, म० ३ : ३८१, ३८६।

पीतिसोमनस्ससम्पयोगतो ति वुत्ते येन योगा सुमनो होति, तं सोमनस्सं ति वुच्चतीति पीतिया च सोमनस्सभावो आपज्जति, तस्मा विना पि कायेन वत्थुना सातवेदनासम्पयोगतो ति योजेतब्बं। एवञ्च निप्पीतिकं सोमनस्सञ्च सङ्गहितं होति, पीति-उपलक्खितं वा सोमनस्सं सप्पीतिकं निप्पीतिकञ्च सोमनस्सं ति अत्थो दट्ठब्बो।

पवत्तसन्तताधिपतेय्यं ति पवत्तसङ्खाताय सन्ततिया अधिपतिभूतं। जीवितिन्द्रियस्स हि अत्तनो विज्जमानक्खणे अनुपालेन्तस्स अनन्तरञ्च सानुपालनानं उप्पत्तिया हेतूभूतस्स वसेन पवत्तं चिरट्ठितिकं होति, तं-तं-कम्मविसेसेन विसेसयुत्तं याव चुति अविसेसेन वा याव [६८-सी०] परिनिब्बानं अविच्छिन्नं पवत्तति जीवमानताविसेसयुत्तञ्चा ति रूपारूपजीवितिन्द्रियानं समानलक्खणादिं वत्तुं **"अत्तना अविनिभुत्तधम्मानं"** ति आह। अनुपालेतब्बानं **अत्थिक्खणे येव**। असति हि अनुपालेतब्बे उप्पलादिम्हि किं उदकं अनुपालेय्या ति। **तस्स तस्सा** ति अनुपालनादिकस्स। **साधनतो** ति साधनेन। तं साधनञ्च जीवमानविसेसपच्चयभावतो।

इन्द्रियरासिवण्णना निट्ठिता।

पीतिया च **सोमनस्सभावो** आपज्जती ति इदं पीति च सोमनस्सञ्च पीतिसोमनस्सं ति पीतिसोमनस्सानं तुल्ययोगं सन्धाय वुत्तं। सोमनस्सस्सेव पन "आजञ्ञरथो" ति विय पीतियुत्तं सोमनस्सं पीतिसोमनस्सं ति पधानभावो इच्छितो ति न पीतिया सोमनस्सभावप्पत्ति। नहि पधाने विज्जमाने अप्पधानं उपयुज्जति, पीतिग्गहणञ्चेत्थ पीतियुत्तस्स सोमनस्सस्स येभुय्येन भावतो परिब्यत्तकिच्चतो च कतं, न च निप्पीतिकसोमनस्सस्स असङ्गहो। रुळ्हीसद्देसु किरियाय अनच्चन्तिकभावतो। पीतिया पन उपलक्खणभावेन अयमत्थो सुट्ठु युज्जती ति दस्सेन्तो आह। **'पीति-उपलक्खितं वा'** ति आदि।

पवत्तं उपादिन्नक्खन्धं। चिरट्ठितिकं होति ति एतेन न केवलं अनुपालेतब्बधम्मानं खणट्ठितिया येव अथ खो पबन्धानुपच्छेदस्स पि जीवितं कारणं ति दस्सेति। अञ्ञथा हि आयुक्खयमरणं न युज्जेय्या ति। **अविसेसेना** ति कारणविसेसानपेक्खेन जीवितिन्द्रियतासामञ्ञेन। यदि पि अरूपासञ्ञभवेसु रूपारूपधम्मा नप्पवत्तन्ति, तेहि पन पुरिमपच्छिमभवेसु चरिमपठमधम्मा समानजातियेन अब्यवहितताय निरन्तरायेव नाम होन्ती ति **"याव परिनिब्बानं अविच्छिन्नं पवत्तती"** ति वुत्तं। **अनुपालनादिकस्सा** ति अनुपालनपवत्तनट्ठपनानि येव वदति। **जीवमानविसेसप्पच्चयभावतो** ति सहजातानं जीवमानताविसेसस्स पच्चयभावतो। इन्द्रियबद्धस्स हि मतरूपतो कम्मजस्स च उतुजादितो विसेसो जीवितिन्द्रियकतो ति।

मग्गङ्गरासिवण्णना

सम्मा ति अविपरीतनिय्यानिकभावेन। **पसत्थता** च एवमेव दट्ठब्बा।

बलरासिवण्णना

अस्सद्धिये ति असद्धियकारणा। **उभयपदवसेना** ति सद्धापदं बलपदं ति एवमादि-पदद्वयवसेन। नियकज्झत्तं जाति-आदिसमुट्ठानं एतिस्सा ति **अज्झत्तसमुट्ठाना**। गरुना किस्मिञ्चि वुत्ते गारववसेन पतिस्सवनं[1] पतिस्सवो[2], सह पतिस्सवेन **सप्पतिस्सवं**, पतिस्सवभूतं तंसभागञ्च [९१-म०] यं किञ्चि गारवं ति अत्थो। **जाति-आदिमहत्त-पच्चवेक्खणेन** उप्पज्जमाना च हिरी तत्थ गारववसेन पवत्ततीति **"सप्पतिस्सवलक्खणा"** ति वुच्चति। वज्जं भायति तञ्च भयतो पस्सतीति **वज्जभीरुकभयदस्सावी**। एवंसभावं ओत्तप्पं। हिरी पापधम्मे गूथं विय पस्सति, ओत्तप्पं उण्हं विय। **दायज्जं** नवलोकुत्तर-धम्मादि। अज्झत्तसमुट्ठानादिता च हिरी-ओत्तप्पानं तत्थ तत्थ पाकटभावेन वुत्ता, न पन तेसं कदाचि अञ्ञमञ्ञं विप्पयोगा। न हि लज्जनं निब्भयं पापभयं वा अलज्जनं होतीति।

मग्गङ्गरासिवण्णना

अविपरीतनिय्यानिकभावेना ति इदं सम्मा-सद्दस्स दिट्ठि-आदिसद्दानञ्च समानाधिकरणतावसेन दिट्ठि-आदीनं अविसेसभूतस्स निय्यानिकभावस्स सम्मा-सद्देन विसेसितब्बत्ता वुत्तं। अविपरी-तत्थो हि सम्मा-सद्दो, न निय्यानिकत्थो ति। अविपरीतनिय्यानिकत्थो एव वा सम्मा-सद्दो। अनेकत्था हि निपाता ति। **एवमेवा** ति अविपरीतनिय्यानिकभावेन।

बलरासिवण्णना

[९८-म०] पतिस्सवो वचनसम्पटिग्गहो ति अधिप्पायेन "सप्पतिस्सवं **पतिस्सवभूतं तं-समागञ्च यं किञ्चि गारवं**" ति आह। **तत्थ तत्थ पाकटभावेना** ति अज्झत्तभूतेसु जातिया-दीसु बहिद्धाभूतेसु भिक्खु-आदीसु हिरोत्तप्पानं अनुरूपपच्चवेक्खणवसेन ससम्भारपथवी-आदीसु पथवीधातु-आदीनं विय विभूतकिच्चभावेना ति अत्थो।

---

१. पटिस्सवणं—सी०।
२. पटिस्सवो—सी०।

मूलरासिवण्णना

अगेधो अनभिज्झनं अनभिकङ्खनं। अनल्लीनो भावो अधिप्पायो एतस्सा ति **अनल्लीनभावो**, एवं हि उपमाय समेति। **अनुकूलमित्तो** अनुवत्तको। **विनयरसो** ति विनयनरसो। **अदोसो दुस्सील्यमलस्सा** ति इदं दुसील्यस्स दोससमुट्ठानतं दोसूपनिस्सयतञ्च सन्धाय वुत्तं।

अभावनाया ति "तत्थ जातानं धम्मानं अनतिवत्तनट्ठेन भावना इन्द्रियानं एकरसट्ठेन भावना तदुपगवीरियवाहनट्ठेन भावना आसेवनट्ठेन भावना" ति एवं वुत्ताय पञ्ञासाधनाय भावनाय अप्पवत्ति, तप्पटिपक्खभूता वा अकुसला **अभावना**। निग्गुणे पि

मूलरासिवण्णना

एवं हि उपमाय समेती ति यथा असुचिम्हि पतितपुरिसस्स सति पि कायेन अल्लीयने भावो अनल्लीनो, एवं अलोभो पि आरम्मणकरणवसेन गहिते पि आरम्मणे अलग्गभावेन अनल्लीनभावो अनल्लीनाकारो एव पवत्तति। एवंसभावो हि सो धम्मो ति। किञ्चि दुस्सील्यं दोससमुट्ठानं सब्बम्पि दुस्सील्यं दोसूपनिस्सयं ति "दोससमुट्ठानतं दोसूपनिस्सयतञ्च" ति वुत्तं। तेन अदोसो दोसस्सेव उजुविपच्चनीको, तंमुखेन दुस्सील्यस्सा ति दस्सेति।

तत्थ जातानं धम्मानं अनतिवत्तनट्ठेन पे०...**आसेवनट्ठेन भावना** ति यो सो एकत्तुपगतो पठमज्झानादि-अप्पनाचित्तुप्पादो आसन्नूपचारा हितविसेसो नीवरणादिपरिपन्थविसुद्धिया विसुद्धो, तदावरणविसयविरहेन च समप्पवत्त-अप्पनासमाधिसङ्खातं मज्झिमं समथनिमित्तं पटिपन्नो, एवं पटिपन्नत्ता एव तत्थुपगमनेन तत्थ च पक्खन्दो, विसोधेतब्बस्स विक्खेपस्स किलेससंसग्गस्स च अभावतो विसोधनसमाधान-एकत्तुपट्ठानब्यापारविरहेन विसुद्धिसमथपटिपत्ति-एकत्तुपट्ठानाकारे अज्झुपेक्खन्तो अभिब्यत्तरूपाय सहजाततत्रमज्झत्तुपेक्खाय किच्चवसेन उपेक्खानुब्रूहितो, तस्मिं येव जाता समाधिपञ्ञासङ्खाता युगनद्धधम्मा। ते यथा अञ्ञं अनतिवत्तमाना हुत्वा पवत्तन्ति, एवं भावना ब्रूहना। तथा यानि तत्थ सद्धादीनि इन्द्रियानि नानाकिलेसेहि विमुत्तत्ता विमुत्तिरसेन एकरसानि हुत्वा पवत्तानि। यञ्च तत्थ तदुपगं, तेसं अनतिवत्तन-एकरसभावानं अनुच्छविकं वीरियं वाहीयति पवत्तीयति, या चस्स तस्मिं खणे पवत्ता पगुणबलवभावापत्तिसङ्खाता आसेवना। सब्बेसं एतेसं आकारानं भावना उप्पादना वड्ढना, अयं तत्थ जातानं...पे०...**आसेवनट्ठेन भावना** नाम। [९९-म०] यस्मा पनायं भावनाकारो "पठमस्स झानस्स पटिपदाविसुद्धि आदी" ति आदिना पि पाळियं[1] आगतो एव, ञाणेन च संकिलेसवोदानेसु तं तं आदीनवं आनि-

---

१. खु० ९ : १९५ (पटिसम्भिदामग्गो)।

गुणग्गहणं **अधिकग्गहणं**। विज्जमानम्पि गुणं विद्धंसेत्वा गहणं **ऊनग्गहणं**। चतु-विप्पल्लासग्गहणं **विपरीतग्गहणं**।

याथावसभावे ति "एत्तको एतस्स गुणो, एत्तको दोसो" ति गुणदोसानं सभावे "जरा धम्मो जीरति तं, कुतेत्थ लब्भा मा जीरी" ति एवमादिपच्चवेक्खणसम्भवतो। **अलोभेन च गहट्ठानं** खेत्तवत्थादीसु विवादाभावतो। **अमोहेन पब्बजितानं** दिट्ठिगत-विवादाभावतो। कामरागाभिनिवेसविनिबन्धा हि गहट्ठा गहट्ठेहि विवदन्ति, दिट्ठि-रागाभिनिवेसविनिबन्धा समणा समणेहीति। रागवसेन मित्तसन्थवो दोसवसेन **विरोधो** च तब्बिसेसेन **उपगमापगमा**, आरम्मणे वा रूपादिम्हि अनुरोधविरोधा। **अमज्झत्त-भावस्स** पटिघानुनयसङ्खातस्स मोहेन पवत्ति। सुखविपरिणामे दुक्खसमायोगे च पटिघ-पवत्तियं वेदनापरिग्गहो न सिज्झतीति अदोसानुभावेन वेदनासतिपट्ठानं सिज्झति। **दिब्बविहारस्सा** ति चतुन्नं झानानं। **अरियविहारो** [६९–सी०] फलसमापत्ति। मोहेन अविचारेन्तो उदासीनपक्खेसु पि सत्तसङ्खारेसु [९२–म०] सब्बेसु अभिसङ्गं करोतीति अमूळ्हस्स तदभावो वेदितब्बो। दुक्खदस्सनस्स आसन्नपटिपक्खत्ता दोसस्स तप्पटि-पक्खेन अदोसेन दुक्खदस्सनं होति।

संसञ्च दिस्वा तथा तथा निप्फादेतब्बो, तस्मा "एवं वुत्ताय पञ्ञासाधनाय भावनाय" ति वुत्तं। **अप्पवत्ती** ति यस्मिं धम्मे सति यथावुत्ता भावना नप्पवत्तति, सो धम्मो पटिपक्ख-भावनापरामसनेन अभावना ति वुत्तो ति अधिप्पायो। न हि अभावमत्तस्स अमोहो पटिपक्खो ति युज्जती ति। **तप्पटिपक्खभूता अकुसला** कामच्छन्दादयो दट्ठब्बा। **पमादविसेसो वा अभावना**। सो हि "कुसलानं वा धम्मानं अनासेवना अभावना अबहुलीकम्मं" आदिना निद्दिट्ठो ति।

एकन्तेन अलब्भनेय्यदस्सनत्थं **"जराधम्मो"** ति वुत्तं। तथा हि पाळियं "जातिधम्मानं भिक्खवे, सत्तानं एवं इच्छा उप्पज्जती" ति आदिना[1] इच्छितालाभो विभत्तो। अलोभानुभावेन कायानुपस्सनाय, अमोहानुभावेन चित्तधम्मानुपस्सनाय सिद्धि पाकटा येवा ति अपाकटं अदोसानुभावेन वेदनानुपस्सनासिद्धिं विभावेन्तो **"सुखविपरिणामे"** ति आदिमाह। अयञ्च योजना अलोभादीनं विसेसपच्चयतं सन्धाय कता, अविसेसेन पन सब्बे सब्बेसं पच्चया। सभावतो सङ्कप्पतो च उप्पन्नस्स दुक्खस्स असहनवसेनेव उप्पज्जती ति दोसो तंदस्सनस्स **आसन्नपटिपक्खो**, न रागो विय दूरपटिपक्खो।

---

1. म० ३ : ३३६।

कम्मपथरासिवण्णना

सुखादीनि अत्तनो **न ब्यापादेति** न विनासेति परस्स वा ति दट्ठब्बं। कम्मपथता तं-सभागताहि **कम्मपथवसेन**।

पस्सद्धादियुगलवण्णना

दरथो सारम्भो, दुक्खदोमनस्सपच्चयानं उद्धच्चादिकानं किलेसानं चतुन्नं वा खन्धानं एतं अधिवचनं। उद्धच्चप्पधाना किलेसा उद्धच्चादिकिलेसा, उद्धच्चं वा आदिं कत्वा सब्बकिलेसे सङ्गण्हाति। **सुवण्णविसुद्धि विया** ति यथा सुवण्णविसुद्धि अलङ्कारविकतिविनियोगक्खमा, एवं अयम्पि हितकिरियाविनियोगक्खमा।

समं, समन्ततो वा पकारेहि जाननं **सम्पजञ्ञं**। चेतियवन्दनादि-अत्थं अभिक्कमादीसु अत्थानत्थपरिग्गण्हनं **सात्थकसम्पजञ्ञं**। सति च अत्थे सप्पायासप्पायरूपादिपरिग्गण्हनं **सप्पायसम्पजञ्ञं**। गोचरगामाभिक्कमनादीसु कम्मट्ठानाविजहनं **गोचरसम्पजञ्ञं**। अभिक्कमनादीनं धातु-आदिवसेन पविचयो **असम्मोहसम्पजञ्ञं**। सब्बकम्मट्ठानभावनानुयुत्तानं सब्बयोगीनं सब्बदा उपकारका इमे द्वे धम्मा पारिपन्थकहरणतो भावनावड्ढनतो च। यथाह—"द्वे धम्मा बहुकारा सति च सम्पजञ्ञञ्चा" ति[1]।

कम्मपथरासिण्णना

अभिज्झादयो विय अनभिज्झादयो पि न एकन्तं कम्मपथभूता येवा ति आह **"कम्मपथता तंसभागताही"** ति। मनोकम्मपथभावेन पवत्तनकम्मभावतो हि एतेसं कम्मपथरासिभावेन सङ्गहो, न सब्बदा कम्मपथा येवा ति। तेन यो अञ्ञो पि धम्मो अनियतो कम्मपथभावेन पाकटो च, तस्स पि कम्मपथतावचनं न विरुज्झती ति दस्सेति।

पस्सद्धादियुगलवण्णना

[१००–म०] **समं** ति सम्मा। **चेतियवन्दनादि-अत्थं** ति चेतियवन्दनादिहेतु। समथचतुसच्चकम्मट्ठानवसेन तब्भेदवसेन च सब्बकम्मट्ठानभावनाभियुत्तानं मुदुमज्झिमतिक्खिन्द्रियतादिभेदवसेन सब्बयोगीनं चित्तस्स लीनुद्धच्चादिकालवसेन सब्बदा हिताहितधम्मूपलक्खणभावतो यथासभावं पटिवेधभावतो च सतिसम्पजञ्ञानं पारिबन्धकहरणभावनावड्ढनानि अविसेसतो दट्ठब्बानि। यथा अप्पनाकोसल्लेन विना समथो समथमन्तरेन यथाभूतावबोधो च नत्थीति नानाक्खणिका समाधिपञ्ञा अञ्ञमञ्ञस्स विसेसकारणं, एवं पटिवेधे एकक्खणिका पी ति दस्सेन्तो आह "अञ्ञमञ्ञं

---

१. दी० ३ : २११।

युगे नद्धा विया ति **युगनद्धा,** अञ्ञमञ्ञं निमित्तभावेन समं पवत्ता ति अत्थो। "पुन च परं आवुसो, भिक्खु समथविपस्सनं युगनद्धं भावेति" ति[1] हि सुत्ते एतेसं युगनद्धता वुत्ता। सब्बकुसलधम्मेसु लीनुद्धच्चाभावो एतेहि द्वीहि समं युत्तेहीति "वीरिससमाधियोजनत्थाया" ति आह योगवचनत्थाया ति अत्थो।

येवापनकवण्णना

रूपाभावेना ति रुप्पनाभावेन। **धम्मा** ति एतस्स अत्थो सभावतो उपलब्भमाना ति। **मेत्तापुब्बभागो** ति अप्पनाप्पत्ताय मेत्ताय [९३-म०] पुब्बभागो, परिकम्ममेत्ता एतस्मिं चित्ते अत्थीति अत्थो। **विरतिवसेना** ति वचीपवत्तिया न पूरेति, किन्तु विरतियोगेना ति अत्थो। **अपण्णकङ्गानी** ति अविरद्धङ्गानि। यथा तथा वा आरम्मणे विनिच्छयनं **अधिमुच्चनं**। न हि अनधिमुच्चन्तो पाणातिपातादीसु दानादीसु वा पवत्तति, सद्धा पन पसादनीयेसु पसादाधिमोक्खो ति अयमेतेसं विसेसो। दारकस्स विय इतो चितो च संसप्पनस्स करिस्सामि न करिस्सामीति अविनिच्छयस्स पटिपक्खकिरिया **असंसप्पनं। पुरिममनतो** ति भवङ्गतो। **विसदिसं** वीथिजवनं **मनं करोती** ति मनसिकारसामञ्ञेन वीथिजवनपटिपादके दस्सेति। **तेसु धम्मेसू** ति चित्तचेतसिकधम्मेसु।

निमित्तभावेना" ति। पञ्ञाय हि सातिसयं अवभासियमाने विसये समाधि एकत्तवसेन अप्पेतुं सक्कोति, समाधिम्हि च मज्झिमं समथनिमित्तं पटिपन्ने पञ्ञा आरम्मणेसु विसदा वहतीति। **समं पवत्ता** ति अञ्ञमञ्ञानतिवत्तनेन समं अविसमं एकरसभावेन पवत्ता। अञ्ञमञ्ञसहायभावूपगमनेन योगिनो मनोरथधुराकड्ढने रथधुराकड्ढने विय आजानेय्ययुगो युगलको हुत्वा अञ्ञमञ्ञानतिवत्तमानेन नद्धा बद्धा विया ति वा **युगनद्धा**। अधिचित्तमनुयुत्तेहि वीरियसमाधयो समं योजेतब्बा ति इमस्स विसेसस्स दस्सनत्थं पुब्बे गहिता पि ते पुन गहिता ति दस्सेतुं वीरियसमाधियोजनत्थाया ति अट्ठकथायं वुत्तं तं पन समाधिवीरिययोगस्स विभावनं होति ति **"योगवचनत्थाया ति अत्थो"** ति आह।

येवापनकवण्णना

यथा तथा वा ति सम्मा मिच्छा वा। **अनधिमुच्चन्तो** ति "इदं करिस्सामि, एतं करिस्सामी" ति एवं पवत्तपुब्बभागसन्निट्ठानहेतुकेन पयोगकालसन्निट्ठानेन अनिच्छिनन्तो। यत्थ हि अनिच्छयो, तत्थ अप्पटिपत्ति एवा ति। **संसप्पनं** संसयो। सो हि "आसप्पना परिसप्पना" ति वुत्तो। असति पि ब्यापारे तत्रमज्झत्तताय सति तंसम्पयुत्तधम्मा सकसककिच्चवसेन

---

१. अं २ : १६१; खु० ९ : ३३८ पटिसम्भिदामग्गो।

अतदारम्मणत्ते पि हि तेसु समप्पवत्तेसु उदासीनभावतो **तत्रमज्झत्तता** ति वुच्चति। अलीनानुद्धतप्पवत्तिपच्चयत्ता **ऊनाधिकनिवारणरसा**¹। **कायदुच्चरितादिवत्थूनं** ति पाणादीनं। **अमद्दना** मद्दनपटिपक्खभावो व।

तं-तं-रासिकिच्चवसेन विभागरहिता **अविभत्तिका**। **एत्था** ति एतेसु सविभत्तिकेसु दुतियट्ठानादीसु पि भाजियमानेसु अपुब्बं नत्थीति अत्थो। **पदं पूरितं** ति झानादिपदं पञ्चकादिवसेन पूरितं। पञ्च हि अङ्गानि [७०-सी०] झानपदस्स अत्थो, तेसु एकस्मिञ्च ऊने झानपदं ऊनं होतीति। पदसमूहो पदकोट्ठासो वा तं तमेव वा पदं, अवुत्तं हापितं नाम होतीति वुत्तं "पूरितं" ति। वुत्तस्मिञ्ञेव वुच्चमाने अनेकेसं पुरिससद्दानं विय कोचि सम्बन्धो नत्थीति मञ्ञमानो आह "अननुसन्धिका कथा" ति। अन्तरन्तरा वुत्तस्मिञ्ञेव वुच्चमाने अनुक्कमेन धम्मा कथिता न होन्तीति आह "उप्पटिपाटिया" ति। फस्सपञ्चमकरासि सब्बचित्तुप्पादसाधारणवसेन चतुक्खन्धतप्पच्चयसङ्गहवसेन च वुत्तो। यथावुत्तेसु पन रासीसु एकरासिकिच्चस्स पि अभावा छन्दादयो येवापनकवसेन वुत्ता। वुत्तानम्पि च धम्मानं यथा वेदनादीनं झानङ्गादिभावो वुत्तो, न एवं सोवचस्सताकल्याणमित्ततादिविसेसो वुत्तो ति तस्स सङ्गण्हनत्थं केचि धम्मे विसुं ठपेत्वा ते च तञ्च विसेसं **"येवापना"** ति आह। वेनेय्यज्झासयवसेन वा सावसेसे धम्मे वत्वा **"ये वा पना"** ति वुत्तं।

येवापनकवण्णनानिट्ठिता।

धम्मुद्देसवारकथावण्णनानिट्ठिता।

अनूनानधिकताय अलीन-अनुद्धतताय च संवत्तन्तीति सा तेसं तथापवत्तिया पच्चयभूता ऊनाधिकभावं निवारेति विया ति **ऊनाधिकनिवारणरसा** वुत्ता। तथा पवत्तिपच्चयत्ता येव तेसु धम्मेसु मज्झत्तता ति च वुत्ता।

[१०१] **झानपदस्सा** ति झान-सद्दस्स। **तेसू** ति पञ्चसु। **पञ्च हि अङ्गानि झानपदस्स अत्थो** ति इदं संवण्णियमानत्ता येव इमं चित्तुप्पादं सन्धाय वुत्तं। नहि सब्बस्मिं चित्तुप्पादे पञ्चेव झानङ्गानि। **पदसमूहो** वाक्यं, **पदकोट्ठासो** वा फस्सपञ्चमकादि धम्मरासि। **वुत्तं पूरितं** ति छपण्णासादिताय पूरणवसेन। फस्सपच्चया वेदना "फुट्ठो वेदेति, फुट्ठो सञ्जानाती" ति आदिवचनतो¹ फस्सो वेदनादीनं पच्चयो। यदि पि छन्दादयो यथावुत्तरासिकिच्चाभावतो तेसु न वत्तब्बा, विसुं रासि-अन्तरभावेन पन सरूपतो वत्तब्बा ति चोदनं मनसि कत्वा **"वुत्तानम्पी"** ति आदिमाह।

धम्मुद्देसवारकथावण्णना निट्ठिता।

---

१. सं० ३ : ६४।

कामावचरकुसलनिद्देसवारकथावण्णना

[९४-म०] **फुसनकवसेना** ति सन्ते असन्ते पि विसये आपाथगते चित्तस्स सन्निपतनवसेन "चित्तं मनो" ति आदीसु[1] विय किच्चविसेसं, "मानसं" ति आदीसु[1] विय समाने अत्थे सद्दविसेसं, "पण्डरं" ति आदीसु[1] विय गुणविसेसं, "चेतसिकं सातं" ति आदीसु[1] विय निस्सयविसेसं, "चित्तस्स ठिती" ति आदीसु[2] विय अञ्ञस्स अवत्थाभावविसेसं, "अलुब्भना" ति आदीसु[3] विय अञ्ञस्स किरियाभावविसेसं, "अलुब्भितत्तं" ति आदीसु[3] विय अञ्ञस्स किरियाभावभूतताविसेसं ति आदिकं अनपेक्खित्वा धम्ममत्तदीपनं सभावपदं। फुसन्तस्स हि चित्तस्स फुसनकिरिया **फुसनाकारो। सम्फुसना** ति आरम्मणसमागमफुसना, न पटिलाभसम्फुसना। सम्फुसितस्स

कामावचरकुसल-निद्देसवारकथावण्णना

२. सन्ते ति सभावतो विज्जमाने। फस्सस्स विसयविसयीनं सन्निपतनाकारेन गहेतब्बत्ता फुसनं विसये चित्तस्स सन्निपतनं वुत्तं। "चिन्तनट्ठेन चित्तं, मननट्ठेन मनो" ति आदिना चित्तादिसद्दा चिन्तनादिब्यापारमुखेन अत्तनो अत्थं विभावेन्तीति आह "चित्तं मनो ति आदीसु विय किच्चविसेसं अनपेक्खित्वा" ति। यथा लोके विकतमेव वेकतं, विसयो एव वेसयं ति वुच्चति एवं मनो येव मानसं ति सद्दमत्तविसेसो। नीलादिसद्दा विय वत्थादीसु चित्तेसु परिसुद्धभावनिबन्धना पण्डर-सद्दस्स पवत्ती ति तस्स गुणविसेसा-पेक्खता वुत्ता। यथा कायिकं सातं ति एत्थ कायप्पसादनिस्सितं ति अत्थो, एवं चेतसिकं सातं ति एत्थ चेतोनिस्सितं सातं ति निस्सयविसेसा-पेक्खता वुत्ता। एकक्खणिका नानाक्खणिका च चित्तस्स ठिति नाम, तस्स अवत्थाविसेसो ति अवत्थाविसेसा-पेक्खो चित्तस्स ठिती ति एवंपकारो निद्देसो। "न लुब्भती" ति वुत्तस्स चित्तस्स, पुग्गलस्स वा पवत्ति-आकारभावेन अलुब्भना ति अलोभो वुत्तो ति अञ्ञस्स किरियाभावविसेसा-पेक्खो अलुब्भना ति निद्देसो। वुत्तनयेनेव अलुब्भितस्स भावो अलुब्भितत्तं ति अयं निद्देसो अञ्ञस्स भावभूतताविसेसा-पेक्खो वुत्तो। कत्तुकरणभावादयो सभावधम्मानं अज्झारोपनवसेनेव [१०२-म०] सिज्झन्ति, भावनिद्देसो पन अज्झारोपनानपेक्खो, ततो येव च विसेसन्तरविनिमुत्तो विनिवत्तो विसेसतो निज्जीवभावविभावतो सभावनिद्देसो नाम होती ति फस्सो ति इदं फुसनट्ठेन "धम्ममत्तदीपनं सभावपदं" ति वुत्तं। आरम्मणं फुसन्तस्स चित्तस्स पवत्ति-आकारो फुसनब्यापारो होती ति "फुसनकिरिया फुसनाकारो" ति वुत्तं। सम्फुसना ति सं-सद्दो "समुदयो" ति आदीसु विय समागमत्थ-दीपको ति आह "समागमफुसना" ति। "फुसामि नेक्खम्मसुखं ति आदीसु[4] पटिलाभो पि

---

1. अभि० १ : १९-२१। 2. अभि० १ : २०-२२।
3. अभि० १ : २४। 4. खु० १ : ४२ (धम्मपदे)।

आरम्मणेन समागतस्स चित्तस्स भावो **सम्फुसितत्तं**। यस्मिं सति चित्तं सम्फुसितं ति वुच्चति, सो तस्स भावो। एवं अञ्ञेसु पि भावनिद्देसेसु दट्ठब्बं।

अपरस्स वेवचनस्स, अपरेन वा पुरिमत्थस्स दीपना **अपरदीपना**। 'पण्डिच्चं कोसल्लं" ति एवमादयो पञ्ञाविसेसा नानाकाले लब्भमाना पि एकस्मिं चित्ते लब्भन्ति। एकस्मिञ्च विसेसे इतरे पि अनुगता होन्तीति दस्सेतुं तथा विभत्ति अत्थतो विभत्ति होति अत्थनानत्तेन कतत्ता। अथ वा यथा "कोधो कुज्झना कुज्झितत्तं" ति[1] सभावाकारभावनिद्देसेहि कोधो ति एवमाकारो व अत्थो वुत्तो, न एवमिध, इध पन पण्डितादिभावाकारभिन्नो अत्थो वुत्तो ति इदं विभत्तिगमनं अत्थवसेन होति। **सम्फुसितत्तं** ति एत्था पि न "फस्सो" ति एवमाकारो व अत्थो वुत्तो। **सम्फस्सो** ति एवमाकारो पन वुत्तो ति अत्थतो विभत्तिगमनं ति वुत्तं।

दोसो ब्यापादो ति उद्देसे पि नामनानत्तेन नानाभूतो उद्दिट्ठो। निद्देसे पि तेनेव [७१–सी०] नानत्तेन निद्दिट्ठो। **एको व खन्धो होती** ति एकेन खन्धसद्देन वत्तब्बतं सन्धायाह। **चेतना** ति सङ्खारक्खन्धं दस्सेति तप्पमुखत्ता। **असद्धम्मा** ति असतं, असन्तो वा धम्मा, न वा सद्धम्मा ति असद्धम्मा ति असद्धम्मवचनीयभावेन एकी-

---

फुसना सम्फुसना ति च वुच्चती ति आह "न पटिलाभसम्फुसना" ति।

अपरेन वेवचनेन। बहुस्सुतभावसम्पादिताय पञ्ञाय **पण्डिच्च**-परियायो। सिप्पायतनादीसु दक्खताभूताय **कोसल्ल**-परियायो, यत्थ कत्थचि तिक्खसुखुमाय **नेपुञ्ञ**-परियायो, सम्मा धम्मे पञ्ञपेन्तिया **वेभब्या**-परियायो ति एवमादिना तेसु तेसु पञ्ञाविसेसेसु ते ते परियायविसेसा विसेसेन पवत्ता ति तेसं पञ्ञाविसेसानं नानाकाले लब्भमानता वुत्ता, **इतरे पि अनुगता होन्ति** येभुय्येना ति अधिप्पायो। **अत्थनानत्तेन** पञ्ञादि-अत्थविसेसेन। **कोधो कुज्झना कुज्झितत्तं** ति एवंपकारा निद्देसा सभावाकारभावदीपनवसेन ब्यञ्जनवसेनेव विभागवचनं। पण्डिच्चं ति आदयो पञ्ञाविसेसनिबन्धनत्ता अत्थवसेन विभागवचनं ति इममत्थमाह "**अथवा**" ति आदिना। **एवमाकारो पना** ति पुरिमाकारतो विसेसो अत्थतो विभत्तिगमनस्स कारणं वुत्तं।

पटिक्खिपनं पटिसेधनं पटिक्खेपो, तस्स नानत्तं विसेसो पटिक्खेपनानत्तं, सद्धम्मगरुताय पटिक्खेपो सद्धम्मगरुतापटिक्खेपो, तेन सद्धम्मगरुतापटिक्खेपेन नानत्तं **सद्धम्मगरुतापटिक्खेपनानत्तं**। तं सद्धम्मगरुतापटिक्खेपनानत्तं पन कोधगरुतादिभेदभिन्नं ति "**कोधगरुतादिविसिट्ठेना**" ति वुत्तं। कोधादीहि विसिट्ठो भिन्नो सद्धम्मगरुताय पटिक्खेपो पटिसेधनं कोधादिविसिट्ठपटिक्खेपो।

---

१. अभि० १ : २४१।

भूतो पि असद्धम्मो कोधगरुतादिविसिट्ठेन सद्धम्मगरुतापटिक्खेपनानत्तेन नानत्तं गतो ति [९५–म०] "**चत्तारो**" ति वुत्तं। न सद्धम्मगरुता ति वुच्चमाना वा असद्धम्मगरुता असद्धम्मगरुताभावेन एकीभूता पि कोधादिविसिट्ठपटिक्खेपनानत्तेन नानत्तं गता। पटिपक्खो वा पटिक्खिपीयति तेन, सयं वा पटिक्खिपतीति पटिक्खेपो ति वुच्चतीति सद्धम्मगरुतापटिक्खेपनानत्तेन असद्धम्मगरुता असद्धम्मा वा नानत्तं गता। **अलोभो** ति आदीनं[1] फस्सादीहि नानत्तं लोभादिविसिट्ठेन पटिक्खेपेन लोभादिपटिपक्खेन वा वेदितब्बं। अलोभादोसामोहानं अञ्ञमञ्ञनानत्तं यथावुत्तेन पटिक्खेपनानत्तेन योजेतब्बं। पदत्थस्स पदन्तरेन विभावनं **पदत्थुति**। तेन हि तं पदं महत्थं ति दीपितं होति

कोधगरुतादि येव, तस्स नानत्तेन **सद्धम्मगरुतापटिपक्खनानत्तेना** ति कोधगरुता सद्धम्मगरुताय पटिपक्खो; मक्खलाभसक्कारगरुता सद्धम्मगरुताय पटिपक्खो ति सद्धम्मगरुताय पटिपक्खभावविसेसेन [१०३–म०] असद्धम्मगरुतातब्भावेन एकीभूता पि नानत्तं गता। यस्मा पन कोधो अत्थतो दोसो येव। मक्खो दोसप्पधाना परगुणविद्धंसनाकारप्पवत्ता अकुसला खन्धा। तग्गरुता च तेसं सादर-अभिसङ्खरणवसेन पवत्तनमेव। लाभगरुता चतुन्नं पच्चयानं सक्कारगरुता, तेसं येव सुसङ्खतानं लद्धकामता। तदुभयेसु च आदरकिरिया तथापवत्ता इच्छा येव, तस्मा "सद्धम्मगरुतापटिपक्खनानत्तेन असद्धम्मा नानत्तं गता" ति वुत्तं। तथा हि चत्तारो असद्धम्मा इच्चेव उद्दिट्ठा। **असद्धम्मगरुता** ति एत्थ च पुरिमस्मिं विकप्पे "न सद्धम्मगरुता" ति सद्धम्मगरुता न होती ति अत्थो। दुतियस्मिं सद्धम्मगरुताय पटिपक्खो ति सद्धम्मगरुता एव वा पटिपक्खो, तस्स नानत्तेन **सद्धम्मगरुतापटिपक्खनानत्तेना** ति एवमेत्थ अत्थो दट्ठब्बो। कोधमक्खगरुतानं हि सद्धम्मविसया पवत्तिभेदभिन्ना मेत्ता पटिपक्खो। लाभसक्कारगरुतानं अप्पिच्छता सन्तोसा। तेन कोधगरुता न सद्धम्मगरुता ति कोधगरुता कायचि सद्धम्मगरुताय पटिपक्खो ति अयमत्थो वुत्तो होति। तथा मक्खगरुतादीसु पि। एवञ्च कत्वा "चत्तारो सद्धम्मा सद्धम्मगरुता न कोधगरुता....प०....सद्धम्मगरुता न सक्कारगरुता" ति[2] आगततन्ति पि समत्थिता भवति। लोभो न होती ति **अलोभो** लुब्भना न होती ति **अलुब्भना** ति एवमादिको अलोभो ति आदीनं लोभादिविसिट्ठो पटिक्खेपो "फस्सो फुसना" ति आदिकेहि विसदिसभावतो "**फस्सादीहि नानत्तं**" ति वुत्तो। **फस्सादीही** ति चेत्थ अलुब्भनादयो पि आदि-सद्देन सङ्गहिता ति दट्ठब्बं। **लोभादिपटिपक्खेना** ति "लोभपटिपक्खो अलोभो" ति आदिना योजेतब्बं। सेसं पुरिमसदिसमेव। अलोभादोसामोहानं विधुरताय पटिपक्खभावेन च लब्भमानो अञ्ञमञ्ञविसदिसो लोभादिविसिट्ठपटिक्खेपभावेन लोभादिपटिपक्खभावेन च विञ्ञाय-

---

१. आदीनि—सी०। २. अं० २ : ४९।

अलङ्कतञ्चा ति । अत्थविसेसाभावे पि आभरणवसेन च आदरवसेन च पुन वचनं **दळ्हीकम्मं** ।

तज्जं ति तस्स फलस्स अनुच्छविकं । न केवलं निद्दिसियमानं सातमेव अधिकतं, अथ खो यथानिद्दिट्ठानि आरम्मणानि पी ति **"तेहि वा"** ति आदि वुत्तं । तस्स वा जाता कारणभावेन फस्सत्तं पवत्ता ति **तज्जा** । तं-समङ्गीपुग्गलं, सम्पयुत्तधम्मे **वा** अत्तनि सादयतीति **सातं** द-कारस्स त-कारं कत्वा सुट्ठु खादति, खणति वा **दुक्खं** ति **सुखं** ।

पासो ति रागपासो । सो हि निरावरणत्ता **अन्तलिक्खचरो** । अकुसलम्पि **पण्डरं** ति वुत्तं, को पन वादो कुसलं ति अधिप्पायो । तं हि पण्डरतो निक्खन्तं सयञ्च पण्डरं ति । अथ वा सब्बम्पि चित्तं सभावतो पण्डरमेव, आगन्तुकोपक्किलेसवोदानेहि पन सावज्जानवज्जानं उपक्किलिट्ठविसुद्धतरता होन्तीति । दारुप्पमाणेसु सिलादोसु खन्धपञ्ञत्तिया अभावा किञ्चि निमित्तं अनपेक्खित्वा दारुम्हि पवत्ता खन्धपञ्ञत्तीति **"पण्णत्तिमत्तट्ठेना"** ति वुत्तं । तं-सद्देन मनोविञ्ञाणधातु येव वुच्चेय्य निद्दिसितब्बत्ता ति न तस्सा तज्जता । तेहि आरम्मणेहि जाता **तज्जा** ति च वुच्चमाने सम्फस्सजता न वत्तब्बा । न हि सो आरम्मणं, ना पि विसेसपच्चयो । "तिण्णं सङ्गति फस्सो" ति विञ्ञाणमेव फस्सस्स विसेसपच्चयो ति वुत्तो ति तस्मा न विञ्ञाणं विसेसपच्चयभूतं सम्फस्सजताय तज्जामनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजापञ्ञत्ति लभति, न च तदेव तस्स कारणभावेन फलभावेन च वुच्चमानं सुविञ्ञेय्यं होतीति ।

तीति आह **"अलोभा····प०····योजेतब्बं"** ति । बहूहि पकारेहि दीपेतब्बत्थता **महत्थता** । **आदरवसेन** सोतूनं ।

३. यदि पि एकस्मिं खणे एकं येव आरम्मणं होति, छसु पि पन आरम्मणेसु उप्पत्तिरहत्ता **"तेहि वा"** ति आदि वुत्तं । **तस्सा** ति सातस्स सुखस्स । **जाता** ति एतस्स अत्थं दस्सेतुं **"कारणभावेन फस्सत्थं पवत्ता"** ति वुत्तं । इदं वुत्तं होति-यथा चेतसिकसातमुञ्जाता [१०४-म०] सोमनस्सवेदना सहेव उप्पज्जति, एवं तदनुरूपफस्ससहिता हुत्वा पवत्ता तज्जा ति वुत्ता । **सादयती** ति अधिगमासीसाय अनञ्ञनिन्नं करोति ।

५. **न तस्सा तज्जता** ति तस्सा मनोविञ्ञाण-धातुया तस्सारुप्पा "तस्स जाता" ति वा उभयथा पि तज्जता न युज्जति । यदि पि फस्सो विञ्ञाणस्स विसेसपच्चयो न होति, तथा पि सो तस्स पच्चयो होति येवा ति तस्स तज्जामनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजता वत्तब्बा ति चोदनं सन्धायाह **"न च तदेवा"** ति आदि । **तेहि आरम्मणेहि जाता तज्जा** ति इमिना पि अत्थेन तज्जामनो-

किं वा एतेन, यथा भगवता वुत्ता तंसभावा येव ते धम्मा ति न एवंविधेसु कारणं मग्गितब्बं।

[९६–म०] **एवं तक्कनवसेन** लोकसिद्धेना ति अधिप्पायो। एवञ्चेवञ्च भवितब्बं ति विविधं तक्कनं कूपे विय उदकस्स आरम्मणस्स आकड्ढनं वितक्कनं।

समन्ततो चरणं **विचरणं**।

अत्तमनता ति एत्थ अत्त-सद्देन न चित्तं वुत्तं। न हि चित्तस्स मनो अत्थीति। अत्तमनस्स पन [७२–सी०] पुग्गलस्स भावो अत्तमनता ति वत्वा पुन पुग्गलदिट्ठि-निसेधनत्थं **"चित्तस्सा"** ति वुत्तं।

न बलवती, कस्मा अवट्ठिति वुत्ता ति ? एकग्गचित्तेन पाणवधादिकरणे तथा अवट्ठानमत्तभावतो। विरूपं, विविधं वा संहरणं विकिरणं **विसाहारो** संहरणं वा सम्पिण्डनं, तदभावो **विसाहारो**।

अञ्ञस्मिं परियाये ति अञ्ञस्मिं कारणे। **समानधिकरणभावो** द्विन्नं बहूनं वा पदानं एकस्मिं अत्थे पवत्ति।

आरम्भति चा ति आपज्जति च। उद्धं यमनं **उय्यामो**। धुरं ति निप्फादेतुं आरद्धं कुसलं, पटिञ्ञं वा।

तिण्णं ति बुद्धादीनं। चित्ते आरम्मणस्स उपट्ठानं जोतनञ्च सति येवा ति तस्सा एतं लक्खणं।

विञ्ञाणधातुसम्फस्सजा ति वत्तुं न सक्का। विञ्ञाणस्स पन तज्जतापञ्ञत्ति लब्भतेव। तथा हि किं वा एतेना" ति आदिना फस्सादीनं तथा देसेतब्बतं आह।

७. चित्तस्स आरम्मणे आनयनाकारप्पवत्तो वितक्को अत्थतो आरम्मणं तत्थ आकड्ढन्तो विय होती ति "आरम्मणस्स आकड्ढनं वितक्कनं" ति वुत्तं।

८. आरम्मणस्स अनुमज्जनाकारप्पवत्तो विचारो तत्थ परिब्भमन्तो विय समन्ततो चरन्तो विय च होती ति "समन्ततो चरणं विचरणं" ति वुत्तं।

११. तथा अवट्ठानमत्तभावतो ति पाणवधादिसाधन-अवट्ठानमत्तभावतो, न बलवभावतो ति अधिप्पायो।

१४. येन धम्मेन चित्ते आरम्मणं उपतिट्ठति जोतति च, सो धम्मो उपट्ठानं जोतनं ति वुत्तो ति आह "उपट्ठानं जोतनञ्च सति येवा" ति।

पासाणसक्खरवालिकादिरहिता भूमि सण्हा ति **"सण्हट्ठेना"** ति वुत्तं।

अयन्ती ति एककम्मनिब्बत्तमनुस्सादिसन्तति-अविच्छेदवसेन पयत्तन्ति। कुसलाकुसलेसु पि हि जीवितं इन्द्रियपच्चयभावेन सम्पयुत्ते पवत्तयमानमेव तदविच्छेदस्स पच्चयो होति।

यं हिरीयती ति हिरीयति-सद्देन वुत्तो भावो यं-सद्देन वुच्चती ति **यं** ति भावनपुंसकं वा एतं दट्ठब्बं। **हिरियितब्बेना** ति च हेतु-अत्थे करणवचनं युज्जति।

[९७-म०] **अलुब्भनकवसेना** ति एत्थ अलुब्भनमेव अलुब्भनकं ति भावनिद्देसो दट्ठब्बो।

अब्यापज्जो ति ब्यापादेन दुक्खेन दोमनस्ससङ्खातेन दोसेन विय न ब्यापादेतब्बो ति पि अत्थो युज्जति।

थिनमिद्धादिपटिपक्खभावेन कुसलधम्मे अनिच्चादिमनसिकारे च सीघं सीघं परिवत्तन-समत्थता **लहुपरिणामता,** अविज्जानीवरणानं हि तण्हासंयोजनानं सत्तानं अकुसलप्पवत्ति पकतिभूता ति न तत्थ लहुपरिणामताय अत्थो। तेसञ्च भावो गरुता येवा ति तब्बि-धुरसभावानं **लहुता** दट्ठब्बा। सा हि पवत्तमाना सीघं भवङ्गवुट्ठानस्स पच्चयो होति।

ये च धम्मा मोहसम्पयुत्ता विय अविपन्नलहुता, तेसञ्च कुसलकरणे अप्पटिघातो मुदुता। अप्पटिघातेन मुदुतादिरूपसदिसताय अरूपधम्मानम्पि मुदुता मद्दवतादि आदि वुत्तं।

सिनेहवसेन किलिन्नं अतिमुदुकं चित्तं अकम्मञ्ञं होति विलीनं विय सुवण्णं, मानादिवसेन अतिथद्धञ्च अतापितं विय सुवण्णं, यं पनानुरूपमुदुतायुत्तं, तं कम्मञ्ञं होति युत्तमद्दवं विय सुवण्णं। तस्सेव मुदुकस्स यो कम्मञ्ञाकारो, सा **कम्मञ्ञता** ति मुदुताविसिट्ठा कम्मञ्ञता वेदितब्बा।

---

१६. **सण्हट्ठेना** ति सुखुमट्ठेन।

३०. **भावो** ति हिरियनं वदति।

३३. **न ब्यापादेतब्बो** ति अब्यापज्ज-सद्दस्स कम्मत्थतं आह।

४२-४३. यदि अनवज्जधम्मानं सीघसीघपरिवत्तनसमत्थता लहुता, आवज्जधम्मानं कथं ति आह **"आविज्जानीवरणानं"** ति आदि। तेसं [१०५-म०] **भावो गरुता** ति एतेन सति पि सब्बेसं अरूपधम्मानं समानखणत्ते मोहसम्पयुत्तानं सातिसयो दन्धो पवत्ति-आकारो ति दस्सेति। सो पन तेसं दन्धाकारो सन्ताने पाकटो होति।

४४-४५. **अप्पटिघातो** अविलोमनं।

४६-४७. **किलिन्नं** ति अवस्सुतं।

पच्चोसक्कनभावेन पवत्तं अकुसलमेव **पच्चोसक्कनं**। **एकवसति अनेसना** नाम वेज्जकम्मं करोति, दूतकम्मं करोति, पहिणकम्मं करोति, गण्डं फालेति, अरुमक्खनं देति, उद्धं विरेचनं देति, अधोविरेचनं देति, नत्थुतेलं पचति, चक्खुतेलं पचति, वेळुदानं देति, पण्णदानं देति, पुप्फदानं देति, फलदानं देति, सिनानदानं देति, दन्तकट्ठदानं देति, मुखोदकदानं देति, चुण्णदानं देति, मत्तिकादानं देति, चाटुककम्मं करोति, मुग्गसूपियं, पारिभटयं, जङ्घपेसनियं द्वावीसतिमं दूतकम्मेन सदिसं, तस्मा एकवीसति। **छ अगोचरा** वेसियागोचरो, [७३–सी०] विधवा-थुल्लकुमारी-पण्डक-पानागार-भिक्खुनी-अगोचरो ति। **सङ्खेपतो** ति सरूपेन अनुद्दिट्ठत्ता "तत्थ कतमो छन्दो" ति आदि [९८-म०] न सक्का वत्तुं ति "यो छन्दो छन्दिकता" ति आदि निद्देसं सङ्खिपित्वा **"ये वा पना"** ति निद्देसो कतो ति अत्थो।

निद्देसवारकथावण्णना निट्ठिता।

कोट्ठासवारवण्णना

निद्देसवारे पुच्छादीनं पच्चेकं अनेकत्ते पि पुच्छादिभावेन एकत्तं उपनेत्वा **चतुपरिच्छेदता वुत्ता**। चत्तारो द्वे ति एवमादिकं सङ्खिपित्वा सह वा गहणं **सङ्गहो**। **ठपेत्वा येवापनके** ति सङ्गहेतब्बे सन्धाय वुत्तं। ते हि विसुं विसुं उद्दिट्ठत्ता निद्दिट्ठत्ता च विप्पकिण्णा ति सङ्गहेतब्बा होन्ति, न येवापनका सङ्गहगमनेनेव तथा अविप्पकिण्णत्ता।

पच्चोसक्कनं माया या अच्चसरा ति पि वुच्चति। **अरुमक्खनं** वणालेपनं। वेळु एव दातब्बभावेन परिग्गहितो **वेळुदानं** नाम।

निद्देसवारकथावण्णना निट्ठिता।

कोट्ठासवारकथावण्णना

ते ति फस्सपञ्चमकादयो। **सङ्गहगमनेनेवा** ति साधारणतादिना केनचि सदिसतालेसेन, न फस्सादयो विय विसुं धम्मभावेनेवा ति अत्थो। **तथा अविप्पकिण्णत्ता** ति फस्सादयो विय सरूपेन विसुं विसुं अवुत्तत्ता। यदि पि छन्दादयो सङ्गहसुञ्ञतवारेसु पि सरूपेन न वुत्ता, खन्धायतनधातुरासीसु पन सङ्गहिता येवा ति दस्सेतुं **"यस्मा पना"** ति आदिमाह। **तंनिद्देसो** ति सङ्खारक्खन्धनिद्देसे। खन्धानं धातायतनभावे ब्यभिचाराभावतो अखन्धभावनिवारणेन अनायतनाधातुभावनिवारणम्पि दट्ठब्बं। **न येवापनका ठपेतब्बा** ति खन्धादिरासि-अन्तोगधतं सन्धाय वुत्तं। उद्देसादीसु पन "येवापनात्वेव वुत्तानं तेसं तथा येव सङ्गहो युत्तो" ति अट्ठकथायं "ठपेत्वा येवापनके" ति वुत्तं। सरूपेन अवुत्तानम्पि चित्तुप्पादपरियापन्नानं खन्धादिभावो

यस्मा पन सङ्खारक्खन्धपरियापन्ना होन्ति, तस्मा तं-निद्देसे अखन्धभावनिवारणत्थं येवापनात्वेव वुत्ता ति न येवापनका ठपेतब्बा ति।

पच्चयसङ्खातेना ति आहारपच्चयसङ्खातेना ति वुत्तं होति। अथ वा "हेतु पच्चयो" ति एतेसु द्वीसु जनको हेतु उपत्थम्भको पच्चयो ति एवं विसेसवन्तेसु **पच्चयसङ्खातेन**। यथा हि कबळीकाराहारो[1] ओजट्ठमकरूपाहरणेन रूपकायं उपत्थम्भेति एवमिमे पि वेदनादि-आहरणेन नामकायं ति। **तथा च होन्ती** ति साधारणे सहजातादिपच्चये सन्धायाह। **अञ्ञथा चा** ति अञ्ञेन च एकेनाकारेन पच्चया होन्ति येवा ति आहारा ति वुच्चन्तीति अत्थो। तस्मा आहरणकिच्चरहितानं हेतु-अधिपति-आदीनं नत्थि आहारभावप्पसङ्गो। **तिस्सो च वेदना आहरती** ति आदि यथासम्भव-वसेन वुत्तं, न इमस्मिं येव चित्ते फस्सादिवसेन। **तयो च भवे** ति कामादिभवभूतं विञ्ञाणं विसेसेन, अविसेसेन च पञ्चुपादानक्खन्धे।

आरम्मणं उपगन्त्वा निज्झायनं चिन्तनं **उपनिज्झायनं**। **हेत्वट्ठेना** ति उपायत्थेन, न मूलत्थेन। पुब्बभागे गतो पटिपन्नो नानाक्खणिको अट्ठङ्गिको मग्गो लोकुत्तरक्खणे व सह पवत्तो **यथागतमग्गो** ति वुत्तो। विपस्सनाक्खणतो पुब्बे व कायकम्मादीनं सुपरिसुद्धताय अट्ठङ्गिकमग्गुपनिस्सयस्स "अरियो अट्ठङ्गिको मग्गो भावनापारिपूरिं[2]

न वारेतब्बो ति न येवापनका ठपेतब्बा ति वुत्तं ति उभयेसम्पि अधिप्पायो वेदितब्बो।

आहारपच्चयसङ्खातेना ति उपत्थम्भकपच्चयसङ्खातेन। सो च आहारानं उपत्थम्भकभावो पाकटो ति कत्वा वुत्तो, न जनकत्ताभावतो। ओजट्ठमकरूपस्स हि वेदनादीनञ्च आहारणतो तेसं जनकत्तं लब्भतीति। यदि उपत्थम्भको इध पच्चयो ति अधिप्पेतो, कबळीकाराहारस्स ताव होतु, इतरेसं कथं ति आह "यथा [१०६-म०] ही" ति आदि। **सहजातादिपच्चये** ति सहजात-अञ्ञमञ्ञनिस्सयसम्पयुत्त-अत्थि-अविगतपच्चये वदति, महाचतुक्कं वा, **एकेनाकारेना** ति रूपारूपानं उपत्थम्भकत्तेन उपकारकभावमाह। सो एव च नेसं आहरणकिच्चं। "सङ्खारपच्चया विञ्ञाणं" ति वचनतो चेतनाय विञ्ञाणस्स पच्चयभावो सातिसयो ति आह 'विञ्ञाणं **विसेसेना**" ति।

यथागतमग्गो ति वुत्तो कारणफलानं अभेदूपचारेना ति दट्ठब्बं, नानाक्खणिको अट्ठङ्गिकमग्गो उपनिस्सयो एतस्सा ति अट्ठङ्गिकमग्गूपनिस्सयो। अरियमग्गस्स यथागतमग्गपरियायो वुच्चमानो तस्स या पुरिमकालभूता अभेदोपचारसिद्धा आगमनावत्था ततो नातिविलक्खणा ति इममत्थं विभावेती ति आह "पुब्बभाग...प०...दीपिता" ति। विञ्ञाणस्स चित्तविचित्तता विजानन-

---

१. कबळिङ्काराहारो–सी०। २. पारिपूरिं–सी०।

[९९-म०] गच्छती' ति[1] एवं वुत्तेन परियायेन पुब्बभागमग्गस्स अट्ठङ्गिकता तथागतवचनेन[2] दीपिता, न एकक्खणे अट्ठन्नं अङ्गानं सब्भावा ति एवमस्स पि परियायदेसनता वेदितब्बा। विजाननमेव चित्तविचित्तता ति "**चित्तविचित्तट्ठेन एको व धम्मो विञ्ञाणक्खन्धो**" ति आह। **चत्तारो खन्धा होन्तीति** आदीसु वेदनाक्खन्धादीनं सङ्गहे कते पि पुन "एको वेदनाक्खन्धो होती" ति आदिवचनं न अनेके वेदनाक्खन्धादयो जातिनिद्देसेन इध वुत्ता ति दस्सनत्थं। इन्द्रियेसु च एकस्स जातिनिद्देसभावे [७४-सी०] पटिक्खित्ते अञ्ञेसं इन्द्रियानं आहारादीनञ्च तप्पटिक्खेपो कतो होतीति पुब्बङ्गमस्स मनिन्द्रियस्सेव कतो ति दट्ठब्बो।

कोट्ठासवारवण्णना निट्ठिता।

सुञ्ञतवारवण्णना

एत्था ति एतस्मिं यथावुत्ते समये, एतेसु वा धम्मेसु। **भावो** ति सत्तो, यो कोचि वा अत्थो।

दुतियचित्तादिवण्णना

सप्पयोगेना ति लीनस्स चित्तस्स उस्साहनपयोगसहितेन। **स-उपायेना** ति कुसलस्स करणाकरणेसु आदीनवानिसंसपच्चवेक्खणं परेहि उस्साहनं ति एवमादि-उपायसहितेन।

भावविसेसा एवा ति आह "**विजाननमेव चित्तविचित्तता**" ति। **वेदनाक्खन्धादीनं** ति आदिसद्देन "द्वायतनानि होन्ती" ति आदीसु वुत्तमनायतनादयो पि सङ्गण्हाति। **तप्पटिक्खेपो** ति तस्स जातिनिद्देसभावस्स पटिक्खेपो। **कतो होती** ति एतेन आहारिन्द्रियझानमग्गफलहेतुयो यत्तका इमस्मिं चित्ते लब्भन्ति, ते सब्बे पि "एको विञ्ञाणाहारो होती" ति आदिना अवुत्ता पि अत्थतो वुत्ता येवा ति दस्सेति। एस नयो अञ्ञत्था पि।

कोट्ठासवारकथावण्णना निट्ठिता।

सुञ्ञतवारादिवण्णना

यथावुत्ते समये ति वुत्तप्पकारसमूहे।

दुतियचित्तादिकथावण्णना

उस्साहनं पेसनं नियोजनं।

---

१. म० ३ : ३९१।
२. यथागत०-म०।

महा-अट्ठकथायं अनुञ्ञाता नातिसमाहिताय भावनाया ति येवापनकेहि पि निब्बिसेसतं दस्सेति।

पुञ्ञकिरियवत्थादिकथावण्णना

अपचिति एव **अपचितिसहगतं** पुञ्ञकिरियावत्थु यथा "नन्दिरागसहगता" ति। अपचिति वा चेतनासम्पयुत्तकधम्मा कायवचीकिरिया वा, तंसहिता चेतना **अपचितिसहगतं**। **हितफरणेना** ति देसके मेत्ताफरणेन, "एवं मे हितं भविस्सती" ति पवत्तेन हितचित्तेन वा। [१००-म०] कम्मस्सकताञाणं **दिट्ठिजुकम्मं**। **नियमलक्खणं** ति महप्फलतानियमस्स लक्खणं। **सीलमये सङ्गहं गच्छन्ति** चारित्तवसेन। अनवज्जवत्थुं परिच्चजन्तो विय अब्भनुमोदमानो पि परस्स सम्पत्तिया मोदतीति **अब्भनुमोदना दानमये सङ्गहिता। भावेन्तो पी** ति असमत्तभावनं सन्धायाह। समत्ता हि अप्पना होतीति। **अट्ठेव कोट्ठासे कत्वा** ति एकस्स सत्तस्स एकस्मिं खणे उप्पन्नमेकं पठमचित्तं दस्सेत्वा अञ्ञानि तादिसानि अदस्सेन्तेन सब्बानि तानि सरिक्खट्ठेन एकीकतानि होन्ति, तथा सेसानि पी ति एवं अट्ठ कत्वा।

कामवचरकुसलवण्णना निट्ठिता॥

नातिसमाहिताया ति नानावज्जनूपचारं सन्धाय वदति। **येवापनकेहि पि निब्बिसेसतं दस्सेति** करुणामुदितानम्पि उप्पज्जनतो।

पुञ्ञकिरियवत्थादिकथावण्णना

कायवचीकिरिया कायवचोपवत्ति, विञ्ञत्ति एव वा। **असमत्तभावनं** ति पुब्बभागभावनमाह।

कामावचरकुसलवण्णना निट्ठिता।

रुपावचरकुसलं चतुक्कनयपठमज्झानकथावण्णना

उत्तरपदलोपं कत्वा **रूपभवो** रूपं ति वुत्तो। झानस्स अमग्गभावे पि सति मग्ग-वचनं अञ्ञमग्गभावनिवारणत्थं ति इमस्मिं अत्थे मग्गग्गहणस्स पयोजनं वुत्तं, न सब्बस्स कुसलज्झानस्स मग्गभावो ति। तत्थ मग्गस्स भावनाय समयववत्थानस्स कतत्ता अमग्गभावनासमये पवत्तानं फस्सादीनं कुसलभावो न दस्सितो सिया, तस्मा सब्बस्स मग्गभावो दस्सेतब्बो ति।

इतो अञ्ञो मग्गो नत्थी ति एवं अञ्ञभूमिकविधुरो सति पच्चयन्तरे रूपूपपत्ति-जनकसभावो विपाकधम्मसभावो विय विपाकधम्मवसेन सब्बसमानो मग्गसद्देन वुत्तो ति दस्सेतोति वेदितब्बं। **कुसलं दानं** ति अलोभो दट्ठब्बो। अथ वा चेतना दानं, तं वज्जेत्वा इतरे द्वे चेतनासम्पयुत्तका ति वुत्ता। **वट्टन्ती** ति मग्गभावतो झानवचनेन

रूपावचरकुसलं चतुक्कनयपठमज्झानकथावण्णना

[१०७-म०] उत्तरपदलोपं कत्वा "**रूपभवो रूपं**" ति वुत्तो, "रूपी रूपानि पस्सति,[1] रूपरागो" ति आदीसु[2] विया ति दट्ठब्बं। पयोगसम्पादितस्स **रूपज्झानस्स रूप-भवातिक्कमस्स पि** उपायभावतो यथा रूपूपपत्तिया एव मग्गो ति अयं नियमो न युज्जति, एवं पच्चयन्तरविकलतादीहि रूपूपपत्तिया अनभिनिप्फादकस्स पि अत्थिभावतो रूपूपपत्तिया मग्गो एवा ति अयम्पि नियमो न युज्जति। एवञ्च सति यदेव रूपूपपत्तिया निप्फादकं, तस्सेव सम्पयुत्तस्स रूपावचरकुसलभावो, न अनभिनिप्फादकस्सा ति अयमत्थो आपन्नो ति चोदनं समुट्ठापेति, न सब्बस्स कुसलज्झानस्सा ति आदिना। तत्थ सामञ्ञसद्दो पि अधिकारवसेन विसेसनिद्दिट्ठो होती ति "**कुसलज्झानस्स मग्गभावो**" ति वुत्तं।

रूपूपपत्तिजनकसभावो रूपभवविपच्चनसभावो ति तस्स पि विपाकधम्मभावे सति पि सब्बकुसलाकुसलसाधारणं विपाकधम्मभावसामञ्ञं "विपाकधम्मभावो विया" ति उदाहरण-भावेन वुत्तं। सामञ्ञम्पि हि विसेसतो भिन्नं कत्वा वोहरीयती ति। **सब्बसमानो** ति रूपूपपत्तिया निप्फादकस्स पच्चयन्तरविकलतादीहि अनिप्फादकस्स च सब्बस्स यथाधिगतस्स झानस्स साधारणो। एतेन उत्तरपदावधारणस्स परिग्गहिततं दस्सेति। "इतो अञ्ञो मग्गो

---

1. म० २ : २३६; म० ३ : ३०३; अभि० १ : ६७ ध०; खु० ९ : २७३ पटिसम्भिदामग्गे।
2. अभि० १ : ९१ धम्मसंगणियं।

सङ्गहेत्वा मग्गो ति वत्तुं वट्टन्तीति अत्थो । **ओकप्पना** ति सद्दहना । अञ्ञत्थ दिट्ठं अत्थं परिच्चजित्वा "जनेति वड्ढेती" ति अयमत्थो कस्मा वुत्तो ति निरुपसग्गस्स अञ्ञत्थ एवमत्थस्सेव दिट्ठत्ता ति इममत्थं विभावेतुं "पुन च परं उदायी" ति[1] सुत्तमाहटं । केसञ्चि अरियानं अरियमग्गेन सिद्धानि ।

अञ्ञानि च झानानि भावनासभावानेवा ति[2] तेसु पि [७५-सी०] भावेन्तेन समयववत्थानं इज्झतीति ।

[१०१-म०] निस्सरन्ति निग्गच्छन्ति एतेन, एत्थ वा ति **निस्सरणं** । के निग्गच्छन्ति ? कामा । तेसं कामानं निस्सरणं पहानं[3] ति अत्थो । एवं हि "कामानं" ति कत्तरि सामिवचनं युज्जति । **वत्थुकामेहि पी** ति वत्थुकामेहि विविच्चेवा ति पि अत्थो युज्जतीति एवं युज्जमानत्थन्तरसमुच्चयत्थो **पि**-सद्दो, न किलेसकामसमुच्चयत्थो । कस्मा ?

नाम नत्थी" ति इमिना पि सजातिया साधारणो अञ्ञजातिविनिवत्तिया अनञ्ञसाधारणो इमाय झानस्स रूपूपपत्तिया उपायभावो वुत्तो ति दट्ठब्बं । **इतरे द्वे** सद्धा हिरि च । यदि पटिपदाय साधेतब्बतो पुग्गलपुब्बङ्गमाय देसनाय भावेन्तेन समयववत्थानं कतं । पटिपदारहितेसु कथं ति आह "केसञ्चि" ति आदि । तत्थ **केसञ्चि** ति समथभावनाय कताधिकारानं । तेसं हि मग्गाधिगमनतो पुब्बे अनधिगतज्झानानं पटिसम्भिदादयो विय **मग्गाधिगमेनेव** तानि समिज्झन्ति ।

अञ्ञानी ति अरियमग्गसिद्धितो अञ्ञानि । **तेसु पी** ति अरियमग्गेन सिद्धत्ता पटिपदारहितेसु पि । ननु च अरियमग्गसिद्धस्स पि आगमनवसेन पटिपदा उपलब्भति येव । इतरथा "न कामावचरं विय विना पटिपदाय [१०८-म०] उप्पज्जती" ति, "बहुतरं लोकियज्झानम्पि न विना पटिपदाय इज्झती" ति च वचनं विरुज्झेय्या ति ? न, येभुय्येन गहणतो पुग्गलविसेसापेक्खत्ता च । अरियमग्गसमिज्झनकं हि झानं कस्सचिदेव होति, तस्मा इतरं **बहुतरं** लोकियज्झानं पुथुज्जनस्स अरियस्स च अकताधिकारस्स न विना पटिपदाय सिज्झती ति तेसं वसेन वुत्तं । अरियमग्गसिद्धस्स पि झानस्स विपाकानं विय कुसलेन अरियमग्गेन सदिसत्ताभावतो अतब्बिपाकत्ता च न मग्गागमनवसेन पटिपदा युज्जति, एवमस्स पटिपदाविरहो सिद्धो, एवञ्च कत्वा सुद्धिकनवकदेसना पि सुट्ठु नीता होति । तथा च वक्खति लोकुत्तरकथायं "लोकियज्झानम्पी" ति आदि ।

वट्टासयस्स विसेसपच्चयभूताय तण्हाय तनुकरणवसेन विवट्टासयस्स वड्ढनं ति आह "तण्हा संकिलेससोधनेन आसयपोसनं" ति । आसयपोसनं ति च झानभावनाय पच्चयभूता पुब्ब-

---

१. म० २ : २३३ । २. ०दस्सेतुं-सी० । ३. पहाणं-सी० ।

इमस्मिं अत्थे किलेसकामानं दुतियपदेन विवेकस्स वुत्तत्ता। अकुसलसद्देन यदि पि किलेसकामा, अथा पि सब्बाकुसला गहिता, सब्बथा पन किलेसकामेहि विवेको वुत्तो ति आह **"दुतियेन किलेसकामेहि विवेकवचनतो"** ति। कामगुणाधिगमहेतु पि पाणातिपातादि-असुद्धप्पयोगो होतीति तब्बिवेकेन पयोगसुद्धि विभाविता। तण्हासंकिलेससोधनेन **आसयपोसनं**।

अञ्ञेसम्पि चा ति दिट्ठिमानादीनं फस्सादीनञ्च। उपरि वुच्चमानानि झानङ्गानि **उपरिज्झानङ्गानि**, तेसं अत्तनो विपच्चनीकानं पटिपक्खभावदस्सनत्थं तप्पच्चनीकनीवरणवचनं। ब्यापादविवेकवचनेन "अनत्थं मे अचरी" ति आदि आघातवत्थुभेदविसयस्स दोसस्स मोहाधिकानं थिनमिद्धादीनं विवेकवचनेन पटिच्छादनवसेन दुक्खादिपुब्बन्तादिभेदविसयस्स मोहस्स विक्खम्भनविवेको वुत्तो। कामरागब्यापादतदेकट्ठथिनमिद्धादिविक्खम्भनकञ्चेदं सब्बाकुसलपटिपक्खसभावत्ता सब्बकुसलानं तेन सभावेन सब्बाकुसलानं होन्तम्पि कामरागादिविक्खम्भनसभावमेवा ति तंसभावत्ता अविसेसेत्वा नीवरणाकुसलमूलादीनं विक्खम्भनविवेको वुत्तो होतीति आह।

वितक्कस्स किच्चविसेसेन थिरभावप्पत्ते पठमज्झानसमाधिम्हि पच्चनीकदूरीभावकतेन **थिरभावेन** तंसदिसेसु वितक्करहितेसु दुतियज्झानादिसमाधीसु च अप्पना ति अट्ठकथावोहारो ति वितक्कस्स अप्पनायोगो वुत्तो, अञ्ञथा वितक्को व अप्पना ति तस्स तंसम्पयोगो न सिया ति। **अत्थो····प···दट्ठब्बो** झानसमङ्गिनो वितक्कविचारसमङ्गितादस्सनेन झानस्सेव सवितक्कसविचारभावस्स वुत्तत्ता।

विवेकजं पीतिसुखं ति एत्थ पुरिमस्मिं अत्थे **विवेकजं** ति झानं। पीतिसुखसद्दतो च अत्थि अत्थविसेसवतो अस्स, अस्मिं वा ति एत्थ अ-कारो वुत्तो। दुतिये पीतिसुखमेव विवेकजं। **विवेकजं पीतिसुखं** ति च अञ्ञपदत्थे समासो पच्चत्तनिद्देसस्स च अलोपो कतो, लोपे [१०२–म०] वा सति "विवेकजपीतिसुखं" ति पाठो ति अयं विसेसो। **गणनानुपुब्बता** ति गणनानुपुब्बताय, गणनानुपुब्बतामत्तं वा पठमं ति वचनं

योगादिवसेन सिद्धा अज्झासयसम्पदा। सा पन तण्हुपतापविगमेन होती ति आह **"तण्हासंकिलेससोधनेना"** ति।

थिनमिद्धादीनं ति थिनमिद्ध-उद्धच्चकुक्कुच्चविचिकिच्छानं। **पहानं** ति पहायकं। **तंसदिसेसू** ति महग्गतभावादिना पठमज्झानसमाधिसदिसेसु।

पीतिसुखवन्तं झानं पीतिसुखं ति वुत्तं यथा अरिससो ति दस्सेन्तो **"पीतिसुख···प०···अकारो**

ति अत्थो निच्चादिविप्पल्लासप्पहानेन मग्गो असम्मोहतो अनिच्चादिलक्खणानि पटि-विज्झतीति **लक्खणूपनिज्झानं**। असम्मोसधम्मं निब्बानं[1] अविपरीतलक्खणत्ता अनञ्ञथा-भावतो **तथलक्खणं**।

दुतियज्झानकथावण्णना

वितक्कविचारानं वूपसमा ति एतेन येहि वितक्कविचारेहि पठमज्झानस्स ओळारिकता, तेसं समतिक्कमा दुतियज्झानस्स समधिगमो, न सभावतो [७६–सी०] अनोळारिकानं फस्सादीनं समतिक्कमा ति अयमत्थो दीपितो होति। एवं "पीतिया च विरागा" ति आदीसु नयो। तस्मा वितक्कविचारपीतिसुखसमतिक्कमवचनानि ओळारिकोळारिकङ्गसमतिक्कमा दुतियादि-अधिगमपरिदीपकानीति तेसं एकदेसभूतं वितक्कविचारसमतिक्कमवचनं तंदीपकं ति वुत्तं। अथ वा वितक्कविचारवूपसमवचनेनेव तंसमतिक्कमा दुतियाधिगमदीपकेन पीतिविरागादिवचनानं पीतियादिसमतिक्कमा ततियादि-अधिगमदीपकता होतीति तस्स तंदीपकता वुत्ता।

नीलवण्णयोगतो नीलवत्थं विया ति नीलयोगतो वत्थं नीलं विया ति अधिप्पायो।

वुत्तो" ति आह। मग्गस्स पि वा निब्बानारम्मणतो तथलक्खणूपनिज्झानता योजेतब्बा। असम्मोसधम्मं ति अविनासभावं।

दुतियज्झानकथावण्णना

दिट्ठादीनवस्स तंतंझानक्खणे अनुप्पज्जनधम्मतापादनं वूपसमनं विरज्जनं पहानञ्चा ति इधाधिप्पेतवितक्कादयो येव झानङ्गभूता तथा करीयन्ति, न तंसम्पयुत्तफस्सादयो ति वितक्कादीनं येव वूपसमादिवचनं आयागतं। यस्मा पन वितक्कादयो विय तंसम्पयुत्तधम्मा पि एतेन एतं ओळारिकं ति दिट्ठादीनवा एव, तस्मा अविसेसेन वितक्कादीनं तंसहजातानञ्च वूपसमादिके वत्तब्बे वितक्कविचारादीनं येव वूपसमादिकं वुच्चमानं "अधिकवचनमञ्ञमत्थं बोधेती" ति किञ्चि विसेसं दीपेतीति तं दस्सेन्तो "येहि वितक्कविचारेही" ति आदिमाह। [१०९-म०] विसुं विसुं ठितानि पि वितक्कविचारसमतिक्कमवचनादीनि पहेय्यङ्गनिद्देसतासामञ्ञेन चित्तेन समूहतो गहेत्वा अवयवेन समुदायोपलक्खणं कतं ति दस्सेन्तो तेसं"'प०"'तं दीपकं ति वुत्तं" ति आह। इदानि अवयवेन समुदायोपलक्खणं विना वितक्कविचारवूपसमवचनेन पीतिविरागादिवचनानं सविसये समानब्यापारतं दस्सेन्तो "अथ वा" ति आदिमाह।

तस्मिं दस्सिते ति "या सद्धा सद्दहना" ति आदिना झानविभङ्गे सम्पसादने दस्सिते।

---

१. निब्बाणं–सी०।

येन सम्पसादनेन योगा झानं सम्पसादनं तस्मिं दस्सिते "सम्पसादनं झानं" ति समानाधिकरणनिद्देसेनेव तंयोगा झाने तं-सद्दप्पवत्ति दस्सिता ति अविरोधो युत्तो। एकोदिभावे कथं ति एकोदिम्हि दस्सिते "एकोदिभावं झानं" ति समानाधिकरणनिद्देसेनेव झानस्स एकोदिवड्ढनता वुत्ता होतीति। **एकोदिभावं** ति पनिदं उद्धरित्वा एकोदिस्स निद्देसो न कत्तब्बो सिया ति एकोदिभावसद्दो एव समाधिम्हि पवत्तो सम्पसादनसद्दो विय झानम्हि पवत्ततीति युत्तं।

अप्पिता ति गमिता विनासं। दुतियज्झानादि-अधिगमुपायदीपकेन अज्झत्तसम्पसादनताय चेतसो एकोदिभावताय च हेतुदीपकेन अवितक्काविचारभावहेतुदीपकेन च वितक्कविचारवूपसमवचनेनेव वितक्कविचाराभावो दीपितो ति किं पुन अवितक्क-अविचारवचनेन कतेना ति? न, अदीपितत्ता। न हि वितक्कविचारवूपसमवचनेन वितक्कविचारानं अप्पवत्ति वुत्ता होति। वितक्कविचारेसु हि तण्हापहानञ्च [१०३–म०] एतेसं वूपसमनं। ये च सङ्खारेसु तण्हापहानं करोन्ति, तेसु मग्गेसु पहीनतण्हेसु फलेसु च सङ्खारप्पवत्ति होति एवमिधा पि विक्खम्भितवितक्कविचारतण्हस्स दुतियज्झानस्स वितक्कविचारसम्पयोगो पुरिमेन न निवारितो सिया ति तं निवारणत्थं आवज्जितुकामतादि-अतिक्कमो व तेसं वूपसमो ति दस्सनत्थञ्च "**अवितक्कं अविचारं**" ति[1] वुत्तं।

ततियज्झानकथावण्णना

परिसुद्धपकति खीणासवपकति निक्किलेसता। **उपेक्खानिमित्तं** ति एत्थ लीनुद्धच्चपक्खपातरहितं मज्झत्तं वीरयं "उपेक्खा" ति वुत्तं, तदेव तं आकारं गहेत्वा पवत्ते-

---

समानाधिकरणनिद्देसेनेवा ति तत्थेव विभङ्गे उद्देसपदुद्धारादीसु सद्धाझानानं "सम्पसादनं" तिम एकाधिकरणतावचनेनेव।

ओळारिकङ्गमुखेन "तदनुधम्मता सती" ति[2] वुत्ताय तंतंझाननिकन्तिया विक्खम्भनं वितक्कविचारवूपसमवचनादीहि पकासितं ति आह "**तण्हाप्पहानं एतेसं वूपसमनं**" ति। यतो वितक्कविचारेसु विरत्तभावदीपकं वितक्कविचारवूपसमवचनं ति तदुभयाभावदीपनं पुन कतं ति दस्सेतुं "**ये चा**" ति आदि वुत्तं।

ततियज्झानकथावण्णना

वीरियं उपेक्खा ति वुत्तं "पग्गहनिग्गहेसु ब्यापाराकरणेन उपेक्खीयती" ति। गहणे मज्झत्तभावेन सङ्खारे उपेक्खतीति सङ्खारुपेक्खा, तथापवत्ता विपस्सना पञ्ञा। तस्सा पन

---

१. अवितक्क-अविचारं ति–सी०। २. अभि० २ : ३९२ विभंगे।

तब्बस्स तादिसस्स वीरियस्स निमित्तभावतो उपेक्खानिमित्तं। पठमज्झानप्पटिलाभत्थाय नीवरणे····प०····नेवसञ्ञानासञ्ञायतनसमापत्तिपटिलाभत्थाय आकिञ्चञ्ञायतनसञ्ञं पटिसङ्खासन्तिट्ठना पञ्ञा सङ्खारुपेक्खासु ञाणं ति इमा अट्ठ समापत्तिवसेन उप्पज्जन्ति। सोतापत्तिमग्गपटिलाभत्थाय उप्पादं पवत्तं निमित्तं आयूहनं पटिसन्धिं गतिं निब्बत्तिं उपपत्तिं जातिं जरामरणसोकपरिदेवदुक्खदोमनस्स-उपायासे। सोतापत्तिफलसमापत्तत्थाय उप्पादं···प०····उपायासे····प०····अरहत्तमग्गपटिलाभत्थाय उप्पादं····प०····उपायासे। अरहत्तफलसमापत्तत्थाय····प····सुञ्ञतविहारसमापत्तत्थाय····प···· [७७-सी०] अनिमित्तविहारसमात्तत्थाय उप्पादं पवत्तं आयूहनं पटिसन्धिं····प····पटिसङ्खासन्तिट्ठना पञ्ञा सङ्खारुपेक्खासु ञाणं ति इमा दस निपस्सनावसेन उप्पज्जन्ति।

यदत्थि यं भूतं ति खन्धपञ्चकं, तं मुञ्चितुकम्यताञाणेन पजहति। दिट्ठसोवत्थिकत्तयस्स सप्पलक्खणविचिनने विय दिट्ठलक्खणत्तयस्स भूतस्स सङ्खारलक्खणविचिनने उपेक्खं पटिलभति। **अनाभोगरसा** ति पणीतसुखे पि तस्मिं अवनति पटिपक्खकिच्चाति अत्थो। नामकायेन चेतसिकसुखं कायिकसुखहेतु रूपसमुट्ठापनेन कायिकसुखञ्च झानसमङ्गी पटिसंवेदेतीति वुच्चति। **फुटत्ता** ब्यापितत्ता। यथा हि उदकेन फुटसरीरस्स तादिसे नातिपच्चनीके वातादिके फोट्ठब्बे फुट्ठे सुखं उप्पज्जति, एवं एतेहि फुटसरीरस्स पि।

विसयतो पभेदो "अट्ठ सङ्खारुपेक्खा" ति आदिना यस्सं पाळियं[1] वुत्तो, तं पाळिसेसं दस्सेन्तो "**पठमज्झानं**" ति आदिमाह। तत्थ **उप्पादं** ति पुरिमकम्मपच्चया इध उप्पत्ति। **पवत्तं** ति तथा उप्पन्नस्स पवत्ति। **निमित्तं** ति सब्बम्पि सङ्खारगतं निमित्तभावेन उपट्ठानतो। **आयूहनं** ति आयतिं पटिसन्धिहेतुभूतं कम्मं। **पटिसन्धि** ति आयतिं उपपत्ति। **गतिं** ति याय गतिया सा पटिसन्धि होति। **निब्बत्तिं** ति खन्धानं निब्बत्तनं। **उपपत्तिं** ति "समापन्नस्स वा उपपन्नस्स वा" ति एवं वुत्तं विपाकप्पवत्ति। **जातिं** ति जरादीनं पच्चयभूतं भवपच्चया जाति। **जरामरणादयो** पाकटा एव। एत्थ च उप्पादादयो पञ्चेव सङ्खारुपेक्खाञाणस्स विसयवसेन वुत्ता, सेसा तेसं वेवचनवसेन। [११०-म०] "निब्बत्ति जाती" ति इदं हि द्वयं उप्पादस्स चेव पटिसन्धिया च वेवचनं। "गति उपपत्ति चा" ति इदं द्वयं पवत्तस्स। जरादयो निमित्तस्सा ति।

भूतस्सा ति खन्धपञ्चकस्स। **एतेही** ति झानचित्तसमुट्ठितरूपेहि।

चतुक्कनयवण्णना निट्ठिता।

---

१. खु० ९ : ७१ पटिसम्भिदामग्गो।

चतुत्थज्झानकथावण्णना

[१०४-म०] **अविभूतपच्चुपट्ठाना** ति सुखदुक्खानि विय अविभूताकारा पिट्ठिपासाणगतमिगमग्गो विय तदनुमातब्बाविभूताकारोपट्ठाना ।

चतुक्कनयवण्णना निट्ठिता ।

पञ्चकनयवण्णना

यस्सा पन धम्मधातुया ति सब्बञ्ञुतञ्ञाणस्स । तेन हि धम्मानं आकारभेदं ञत्वा तदनुरूपं देसनं नियामेतीति । एत्थ च पञ्चकनये दुतियज्झानं चतुक्कनये दुतियज्झानपक्खिकं कत्वा विभत्तं "यस्मिं.....प.....मग्गं भावेति अवितक्कं विचारमत्तं समाधिजं पीतिसुखं दुतियज्झानं उपसम्पज्ज विहरती" ति । कस्मा ? एकत्तकायनानत्त-

---

पञ्चकनयवण्णना

आकारभेदं ति आकारविसेसं । अनेकाकारा हि धम्मा, ते च निरवसेसं याथावतो भगवता अभिसम्बुद्धा । यथाह—"सब्बे धम्मा सब्बाकारेन बुद्धस्स भगवतो ञाणमुखे आपाथं आगच्छन्ती" ति[1] । दुतियज्झानपक्खिकं न पठमज्झानपक्खिकं ति अधिप्पायो । तेनेवाह "**पठमज्झानमेव ही**" ति आदि । अत्थतो हि चतुक्कपञ्चकनया अञ्ञमञ्ञानुप्पवेसिनो । पञ्चकनये दुतियज्झानं किं सविचारताय पठमज्झानपक्खिकं उदाहु अवितक्कताय दुतियज्झानपक्खिकं ति सिया आसङ्का ति तदासङ्कानिवत्तनत्थमिदं वुत्तं । तस्मा ति आदिना तत्थ कारणमाह । सुत्तन्तदेसनासु च दुतियज्झानमेव भजन्ती ति सम्बन्धो । च-सद्देन न केवलं इधेव, अथ खो सुत्तन्तदेसनासु पी ति देसनन्तरे पि यथावुत्तज्झानस्स पठमज्झानपक्खिकत्ताभावं दस्सेति । इदानि भजनम्पि दस्सेतुं "**वितक्कवूपसमा**" ति आदि वुत्तं । तेन सुत्तन्ते पि पञ्चकनयस्स लब्भमानतं दस्सेति ।

ननु च सुत्तन्ते चत्तारि येव झानानि विभत्तानी ति पञ्चकनयो नत्थि येवा ति ? न, "सवितक्कसविचारो समाधी" ति आदिना समाधित्तयापदेसेन पञ्चकनयस्स लब्भमानत्ता । चतुक्कनयनिस्सितो पन कत्वा पञ्चकनयो विभत्तो ति तत्था पि पञ्चकनयो निद्धारेतब्बो । वितक्कविचारानं वूपसमा ति हि वितक्कस्स विचारस्स वितक्कविचारानञ्च वितक्कविचारानं ति सक्का वत्तुं । तथा अवितक्क-अविचारानं ति च विना सह च विचारेन वितक्कप्पहानेन अवितक्कं सह विना च वितक्केन विचारप्पहानेन अविचारं ति अवितक्कं अविचारं अवितक्क-अविचारं चा ति वा तिविधम्पि सक्का सङ्गण्हितुं ।

---

१. खु० ७ : ३०३ महानिद्देसे; खु० ८ : १८५ चुल्लनिद्देसे; खु० ९ : ४५१ पटि० ।

सञ्ञीसत्तावासफलताय दुतियज्झानेन समानफलत्ता पठमज्झानसमाधितो जातत्ता च। पठमज्झानमेव हि कामेहि अकुसलेहि च विवित्तं ति तदभावा न इध "विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेही" ति सक्का वत्तुं, नापि "विवेकजं" ति। सुत्तन्तदेसनासु च पञ्चकनये दुतियततियज्झानानि दुतियज्झानमेव भजन्ति वितक्कवूपसमा विचारवूपसमा अवितक्कत्ता अविचारत्ता चा ति।

पटिपदाचतुक्कवण्णना

तस्स तस्स झानस्स उपचारं ति नीवरणवितक्कविचारनिकन्तियादीनं वूपसमा थिरभूतो कामावचरसमाधि तदनुधम्मता ति तदनुरूपताभूता, सा पन तदस्सादसङ्खाता तदस्सादसम्पयुत्तक्खन्धसङ्खाता वा मिच्छासतीति वदन्ति। अविगतनिकन्तिका तं-तंपरिहरणसतीति पि वत्तुं वट्टतीति एवञ्च कत्वा **"सतिया वा निकन्तिया वा"** ति विकप्पो कतो। **आगमनवसेना पि च पटिपदा होन्ति येवा** ति इदं कदाचि दुतियादीनं पठमादि-आगमनकतपटिपदतं सन्धाय वुत्तं। **अपि-सद्दो** हि अनेकन्तिकतं

[१११-म०] **दुतियं** ति च वितक्करहिते वितक्कविचारद्वयरहिते च आयागता देसना। दुतियं अधिगन्तब्बत्ता विचारमत्तरहिते पि द्वयप्पहानाधिगतसमानधम्मत्ता। एवञ्च कत्वा पञ्चकनयनिद्देसे दुतिये वूपसन्तो पि वितक्को तंसहायविचारावूपसमेन न सम्मावूपसन्तो ति वितक्कविचारद्वयरहिते विय विचारवूपसमेनेव तदुपसमं सेसधम्मसमानतञ्च दस्सेन्तेन "वितक्कविचारानं वूपसमा अज्झत्तं सम्पसादनं चेतसो एकोदिभावं अवितक्कं अविचारं समाधिजं पीतिसुखं ततियं झानं उपसम्पज्ज विहरती" ति ततियं चतुक्कनये दुतियेन निब्बिसेसं विभत्तं। दुविधस्स पि सहायविरहेन अञ्ञथा च वितक्कप्पहानेन अवितक्कत्तं समाधिजं पीतिसुखत्तञ्च समानं ति समानधम्मत्ता पि **दुतियं** ति निद्देसो। विचारमत्तम्पि हि वितक्कविचारद्वयरहितं विय "यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अवितक्कविचारमत्तं समाधिजं पीतिसुखं दुतियं झानं उपसम्पज्ज विहरती" ति अवितक्कं समाधिजं पीतिसुखं ति विभत्तं। पठमज्झाने वा सहचारीसु वितक्कविचारेसु एकं अतिक्कमित्वा दुतियम्पि तत्रट्ठमेव दोसतो दिस्वा उभयम्पि सहातिक्कमन्तस्स पञ्चकनये ततियं वुत्तं ततियं अधिगन्तब्बत्ता। पठमतो अनन्तरभावेन पनस्स दुतियभावो च उप्पज्जति। कस्मा पनेत्थ सरूपतो पञ्चकनयो न विभत्तो ति? विनेयज्झासयतो। यथानुलोमदेसना हि सुत्तन्तदेसना ति।

पटिपदाचतुक्कादिवण्णना

तदनुरूपता ति तस्स पठमादिज्झानस्स अनुरूपसभावा। यथालद्धज्झानं सन्ततो पणीततो दिस्वा अस्सादयमाना निकन्ति तंसम्पयुत्ता खन्धा वा तदारक्खभूता सति येव वा

दीपेति, एतस्स अनेकन्तिकत्ता एव च पाळियं एकेकस्मिं झाने चतस्सो पटिपदा चत्तारि आरम्मणानि सोळसक्खत्तुकञ्च विसुं विसुं योजितं। अञ्ञथा एकेकस्मिं पटिपदादिम्हि नव नव झानानि योजेतब्बानि सियुं ति।

आरम्मणचतुक्कवण्णना

[१०५-म०] **अप्पगुणं** ति पञ्चहि वसिताहि अवसीकतं।

आरम्मणपटिपदामिस्सकवण्णना

हेट्ठा ति सोळसक्खत्तुकतो पुब्बे। **ये केचि झानं उप्पादेन्ति नामा** ति वचनेन ये कताधिकारा सेक्खा मग्गेनेव [७८-सी०] उप्पादितज्झाना, तेसं झानानि मग्गपटिबद्धताय सुद्धिकनवकसङ्गहितानीति वेदितब्बानि। न हि ते उप्पादेन्ति नामा ति।

कसिणकथावण्णना

निरोधपादकतावचनेन आरुप्पपादकता च दस्सिता। खिप्पदस्सनं खिप्पाभिञ्ञता **खिप्पनिसन्तिभावो**।

अभिभायतनकथावण्णना

अञ्ञम्पी ति केवलं कसिणायतनसङ्खातमेव अहुत्वा अभिभायतनसङ्खातम्पि

तस्स झानस्स अनुच्छविकताय "तदनुधम्मता सती" ति वुत्ता ति। कदाचो ति यदा पठमं अधिगन्त्वा यथानिसिन्नो येव विना पयोगन्तरं दुतियादीनि अधिगच्छति, ईदिसे काले ति अत्थो।

कुसलज्झानस्स अधिगतत्ता "सेक्खा" ति वुत्तं। न हि ते **उप्पादेन्ति नामा** ति अरियमग्गक्खणे रूपावचरज्झानानं अनुप्पज्जमानतं सन्धायाह।

कसिणकथावण्णना

[११२–म०] आरुप्पपादकता च दस्सिता विना अभावतो। न हि तेसं आरुप्पपादकताय विना निरोधपादकता अत्थीति। निम्मिनितुं इच्छितस्स वत्थुनो निम्मानवसेन खिप्पं निसन्ति निसामनं आलोचनं अधिगमो एतस्सा ति खिप्पनिसन्ति। तब्भावो "खिप्पनिसन्तिभावो" ति आह "खिप्पदस्सनं खिप्पाभिञ्ञता" ति।

कसिणकथावण्णना निट्ठिता।

अभिभायतनकथावण्णना

पटिभागनिमित्तभूतं कसिणारम्मणसङ्खातं आयतनं कारणं एतस्सा ति कसिणायतनं,

पवत्ततीति सति पि **अभिभायतनानं** कसिणायतनत्ते कसिणायतनभावतो अञ्ञो अभिभायतनभावो कसिणनिमित्ताभिभवनकभावनानिमित्तनानत्ततो ति दस्सेति।

तत्थ अभिभवतीति अभिभु, परिकम्मं, ञाणं वा। अभिभु आयतनं एतस्सा ति **अभिभायतनं,** झानं। अभिभवितब्बं वा आरम्मणसङ्खातं आयतनं एतस्सा ति **अभिभायतनं,** झानं। आरम्मणाभिभवनतो अभिभु च तं आयतनञ्च योगिनो सुखविसेसानं अधिट्ठानभावतो मनायतनधम्मायतनभावतो चा ति पि सम्पयुत्तं झानं **अभिभायतनं।** मग्गपटिबद्धताय तदा समापत्तितो वुट्ठितस्स आभोगो पुब्बभागभावनावसेन झानक्खणे पवत्तं अभिभवनाकारं गहेत्वा पवत्तो वुत्तो ति दट्ठब्बो। आगमेसु पन

झानं। अथ वा आरम्मणस्स अनवसेसफरणट्ठेन कसिणञ्च तं आयतनञ्च योगिनो सुखविसेसानं अधिट्ठानभावतो मनायतनधम्मायतनभावतो चा ति ससम्पयुत्तं झानं कसिणायतनं। तेनेवाह "सति पि अभिभायतनानं कसिणायतनत्ते" ति। भावनाय निमित्तं भावनानिमित्तं, आरम्मणस्स परित्तप्पमाणता सुविसुद्धनीलादिता च, तदेव नानत्तं। भावना एव वा पुब्बभागभूता भावनानिमित्तं, तस्स नानत्तं भावनानिमित्तनानत्तं। पुब्बभागभावना हि यथावुत्तविसेसे आरम्मणे पवत्ति-आकारविसेसतो नानासभावा ति। कसिणनिमित्तस्स अभिभवनकभावनानिमित्तनानत्तं कसिण ...प०... नानत्तं, ततो ति योजेतब्बं।

एत्थ च पुरिमानि चत्तारि अभिभायतनानि भूतकसिणारम्मणानि, भूतकसिणेसु च यं सुवण्णं दुब्बण्णं ति च न सक्का वत्तुं। तत्थ पवत्तितानि सब्बत्थ वा वण्णाभोगरहितेन पवत्तितानि पठमततियाभिभायतनानीति दुतियचतुत्थानि वण्णकसिणारम्मणानि। यदि एवं दुतियचतुत्थेहि पञ्चमादीनं को विसेसो ति "पञ्चमादीनि वण्णतो रमणीयतरानि, न तथा इतरानी" ति वदन्ति। पुरिमानि पि चत्तारि अट्ठ कसिणारम्मणानेव, तस्मा तं नेसं मतिमत्तं "अट्ठसु कसिणेसू" ति वुत्तत्ता। विमोक्खेसु च पठमदुतियविमोक्खा अट्ठ कसिणारम्मणा। ततियो वण्णकसिणारम्मणो। पठमदुतिया पि वा वण्णकसिणारम्मणा एव "बहिद्धा [११३ म०] नीलकसिणादिरूपानि झानचक्खुना पस्सती" ति वुत्तत्ता। आरम्मणमनुञ्ञताय हि तत्थ अनिग्गहितभावेन तेसं पवत्तीति। एवं सन्ते ततियस्स इतरेहि को विसेसो ति? सुभाकाराभोगो। ततियो एव हि सुभं ति आभुजनवसेन पवत्तति, न इतरे ति।

ञाणं अप्पनापञ्ञा। **विज्जमाने पी ति** अपि-सद्देन अविज्जमाने पी ति दस्सेति। **परित्तप्पमाणता** अभिभवनस्स कारणं इमेसु चतूसु अभिभायतनेसू ति अधिप्पायो। ननु च सब्बत्थ "सुवण्णदुब्बण्णानी" ति वचनतो वण्णाभोगसहितानि येव गहितानीति? न गहितानीति दस्सेन्तो "तत्थ चा" ति आदिमाह। **तत्था ति** आगमेसु। तथा **अप्पमाणानी ति** वण्णाभोग-

"अज्झत्तं रूपसञ्ञी एको बहिद्धा रूपानि पस्सति परित्तानि सुवण्णदुब्बण्णानि। अप्पमाणानि सुवण्णदुब्बण्णानि। अज्झत्तं अरूपसञ्ञी एको...प...परित्तानि सुवण्ण-दुब्बण्णानि। अप्पमाणानि सुवण्णदुब्बण्णानी" ति[1] इमेसं चतुन्नं अभिभायतनानं आगतत्ता [१०६·म०] आगमट्ठकथासु[2] "वण्णवसेन आभोगे विज्जमाने पि परित्त-अप्पमाणवसेनेव इमानि अभिभायतनानि देसितानी" ति वुत्तं। परित्त-अप्पमाणता हि अभिभवनस्स कारणं वण्णाभोगे सति पि असति पि। तत्थ च वण्णाभोगरहितानि सहितानि च सब्बानि परित्तानि "सुवण्णदुब्बण्णानी" ति वुत्तानि, तथा अप्पमाणानीति दट्ठब्बानि। अत्थि हि एसो परियायो परित्तानि अभिभुय्य तानि चे कदाचि वण्णवसेन आभुजितानि होन्ति सुवण्णदुब्बण्णानि अभिभुय्या ति। इध पन निप्परियायदेसनत्ता वण्णाभोगरहितानि विसुं वुत्तानि सहितानि च। अत्थि हि उभयत्थ अभिभवनविसेसो ति।

तत्थ च परियायदेसनत्ता विमोक्खानम्पि अभिभवनपरियायो अत्थीति "अज्झत्तं रूपसञ्ञो" ति अभिभायतनद्वयं वुत्तं, ततियचतुत्थ-अभिभायतनेसु दुतियविमोक्खो वण्णा-भिभायतनेसु ततियविमोक्खो च अभिभवनप्पवत्तितो सङ्गहितो, इध पन निप्परियाय-देसनत्ता विमोक्खाभिभायतनानि असङ्करतो दस्सेतुं विमोक्खे वज्जेत्वा अभिभाय-

रहितानि च सब्बानि अप्पमाणानि सुवण्णदुब्बण्णानी ति अत्थो। यदि एवं कथं विसिट्ठानं वण्णाभोगेन रहितानं सहितानञ्च एकज्झं मनसिकरोति? न एकज्झं, विसुं येव पन तेसु मन-सिकारो। यदि विसुं कथमेकं ति? परित्तभावसामञ्ञतो। यदि एवं "सुवण्णदुब्बण्णग्गहणं अतिरिच्छती" ति? नातिरिच्छती ति दस्सेन्तो "अत्थि हि एसो परियायो" ति आदिमाह। तत्थ यदिदं वण्णाभोगजनितं विसेसं अग्गहेत्वा परित्तसामञ्ञेन एकत्तं नेत्वा "परित्तानि अभि-भुय्या" ति वत्वा पुन तदन्तोगधधम्मप्पभेदं विनेय्यवसेन दस्सेतुं "तानि चे कदाचि वण्णवसेन आभुजितानि होन्ति सुवण्णदुब्बण्णानि अभिभुय्या" ति वत्तब्बताय वण्णाभोगरहितानि सहितानि च विसुं मनसि कत्वा उभयत्था पि वण्णाभोगरहितपरित्ताभिभवने तंसहितपरित्ताभिभवने च परित्ताभिभवनस्स सामञ्ञं गहेत्वा एकं ति वचनं, एसो परियायो विज्जतीति अयमधिप्पायो।

एवं सुत्तन्ताभिधम्मपाठविसेसतो अट्ठकथाय विरोधाभावं दस्सेत्वा इदानि सुत्तन्ताभिधम्मपाठानं अविरोधं अधिप्पायविभावनेन दस्सेतुं "तत्थ चा" ति आदिमाह। एवं अभिधम्मे वण्णाभोग-रहितानि सहितानि च विसुं वुत्तानि। सुत्तन्ते पन "उभयानि एकज्झं" ति वुत्तं, तं कथं विञ्ञायतीति आह "तदेतं" ति आदि। तत्थ आगतस्सा ति सुत्तन्ते आगतस्स। तत्थ हि

१. दी० २ : ८६; म० २ : २३६; अं० ३ : ३९३।

२. दी० अट्ठ० २ : १५२, म० अट्ठ० ३ : १७९, अं०–अट्ठ० ३ : २४२।

तनानि कथितानि। सब्बानि च विमोक्खकिच्चानि विमोक्खदेसनाय वुत्तानि, तदेतं "**अज्झत्तं रूपसञ्ञी**" ति आगतस्स अभिभायतनद्वयस्स अभिभायतनेसु अवचनतो "रूपी रूपानि पस्सती" ति आदीनञ्च सब्बविमोक्खकिच्चासाधारण [७९-सी०]-वचनभावतो ववत्थानं कतं ति विञ्ञायति।

अज्झत्तरूपानं अभिभवनीयतो ति इदं कत्थचि पि "अज्झत्तं रूपानि पस्सती" ति अवत्वा सब्बत्थ यं वुत्तं "बहिद्धा रूपानि पस्सती" ति, तस्स कारणवचनं। तेन यं अञ्ञहेतुकं, तं तेन हेतुना वुत्तं। यं पन देसनाविलासहेतुकं अज्झत्तं अरूपसञ्ञिताय एव इध वचनं, न तस्स अञ्ञं कारणं मग्गितब्बं ति दस्सेति। अज्झत्तरूपानं अनभिभवनीयता च बहिद्धा-रूपानं विय अविभूतत्ता, देसनाविलासो च यथावुत्तववत्थानवसेन वेदितब्बो। **सुवण्ण-दुब्बण्णानी** ति एतेनेव सिद्धत्ता नीलादि-अभिभायतनानि न वत्तब्बानीति चे? न, नीलादीसु कताधिकारानं नीलादिभावस्सेव अभिभवनकारणत्ता। न हि तेसं परिसु-

---

"अज्झत्तं रूपसञ्ञी" ति आगतं। **अवचनतो** ति अभिधम्मे अवचनतो। यदि पि विमोक्खा विसुं देसिता, कसिणायतनभावो विय पन अभिभायतनानं विमोक्खकिच्चता पि अत्थी ति अभिभायतन-विमोक्खानं इधा पि सङ्करो दुन्निवारो ति चोदनं मनसि कत्वा [११४-म०] आह **सब्ब-विमोक्खकिच्चसाधारणवचनभावतो** ति। तेन यथा अभिभायतनदेसनायं अभिभायतनकिच्चानि निरवसेसतो वुत्तानि, एवं विमोक्खदेसनायं विमोक्खकिच्चानीति इध तेसं असङ्करो येवा ति दस्सेति।

ये च यथावुत्तं ववत्थानं न सम्पटिच्छन्ति, तेहि सुत्तन्ताभिधम्मपाठभेदे अञ्ञं कारणं वत्तब्बं सिया। किमेत्थ वत्तब्बं, ननु अट्ठकथायं "कस्मा पन यथा सुत्तन्ते" ति आदिं वत्वा "अज्झत्तरूपानं अनभिभवनीयतो" ति कारणं वुत्तं ति। न तं तस्स कारणवचनं ति दस्सेन्तो "**अज्झत्तरूपानं**" ति आदिमाह। तत्थ यं ति इध सुत्तन्ते च "बहिद्धा रूपानि पस्सती" ति[1] वुत्तवचनं सन्धायाह। बहिद्धा रूपानि येव हि अभिभवनीयानीति। **अञ्ञहेतुकं** ति देसनाविलासतो अञ्ञं अभिभवनीयहेतु एतस्सा ति अञ्ञहेतुकं। अज्झत्त-अरूपसञ्ञिताय एव, न सुत्तन्ते विय अज्झत्तरूपसञ्ञिताय चा ति अत्थो। **अविभूतत्ता** ति इदं ञाणुत्तरानं सह निमित्तुप्पादनेन अप्पनानिब्बत्तनं आरम्मणस्स अभिभवो न सुट्ठु विभूतभावमन्तरेन सम्भवतीति कत्वा वुत्तं। ननु च अट्ठकथायं पाठद्वयविसेसस्स देसनाविलासो कारणभावेन वुत्तो ति आह "**देसनाविलासो च यथावुत्तववत्थानवसेन वेदितब्बो**" ति। देसनाविलासो हि नाम विनेय्यज्झा-सयानुरूपं विज्जमानस्सेव परियायस्स विभावनं न यस्स कस्सची ति। तत्थ च "परियाय-

---

१. अं० ३ : ३९३-३९४।

द्धापरिसुद्धवण्णपरित्तता तदप्पमाणता वा अभिभवनकारणं, अथ खो नीलादिभावो एवा ति।

अभिभायतनकथावण्णना निट्ठिता ॥

विमोक्खकथावण्णना

[१०७-म०] **रूपी** ति येनायं ससन्ततिपरियापन्नेन रूपेन समन्नागतो, तं यस्स झानस्स हेतुभावेन विसिट्ठं रूपं होति। येन विसिट्ठेन रूपीति वुच्चेय्य, तदेव ससन्ततिपरियापन्न-रूपनिमित्तं झानमिव परमत्थतो रूपीभावसाधकं ति दट्ठब्बं। कसिणदेसना झानानमेव कसिणभावेन पवत्ता अभिधम्मे, सुत्ते पन आरम्मणानं ति "**अभिधम्मवसेना**" ति वुत्तं।

विमोक्खकथावण्णना निट्ठिता ॥

ब्रम्हविहारकथावण्णना

सोमनस्सदोमनस्सरहितं अञ्ञाणमेव **अञ्ञाणुपेक्खा**। किलेसोधीनं मग्गोघीहि

देसनत्ता" ति आदिना वुत्तप्पकारववत्थानं देसनाविलासनिबन्धनमाह। तथा चेव हि पुरतो देसनाविलासो विभावितो।

अभिभायतनकथावण्णना निट्ठिता।

विमोक्खकथावण्णना

तं ति "ससन्ततिपरियापन्नरूपं" ति वुत्तकेसादिवण्णमाह। तं पन यस्मा खलमण्डलादि विय परम्पराय झानस्स कारणं तस्मा "**झानस्स हेतुभावेना**" ति आह। **येना** ति यथावुत्तरूपविसेसेन **विसिट्ठेना** ति अतिसयप्पत्तेन "रूपूपत्तिया" ति आदीसु[1] विय [११५-म०] उत्तरपदलोपेन "रूपं" ति वुत्तेन रूपझानेन। "विसिट्ठेना" ति इमिना हि अतिसयरूपयुत्तो रूपी ति वुत्तो ति दस्सेति। "पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति पथवीकसिणं" ति आदिना[2] झानानमेव कसिणभावेन पवत्ता। सुत्ते आरम्मणानं कसिणभावेन पवत्ता "पथवीकसिणमेको सञ्जानाती" ति आदिना[3]।

विमोक्खकथावण्णना निट्ठिता

ब्रह्मविहारकथावण्णना

अञ्ञाणसम्पयुत्ता पि वा उपेक्खावेदना अञ्ञाणुपेक्खा, उपेक्खा ति अञ्ञाणसम्पयुत्ता उपेक्खावेदना, अञ्ञाणुपेक्खा ति पि एतासं येव नामं ति[4] हि **सम्मोहविनोदनियं** वक्खती ति।

---

१. अभि० १ : ४५-४७ धम्मसंगणियं; अभि० २ : ३१८ विभंगे।

२. अभि० १ : ११८ ध० सं०। ३. दी० ३ : २३७; अं० ३ : १३५।

४. अभि० ट्ठ० २ : ५१५ सं० विनोदनियं।

अजितत्ता **अनोधिजिनस्स**। सत्तमभवादितो उद्धं पवत्तविपाकस्स अजितत्ता **अविपाक-जिनस्स**। **निद्दोसभावेना** ति निप्पटिघभावेन। एकस्स पि सत्तस्स अप्पटिभाग-निमित्तत्ता परिच्छेदग्गहणं नत्थि, न च सम्मुतिसच्चवसेन पवत्तं सत्तग्गहणं परिच्छिन्न-रूपादिग्गहणं होतीति अप्पनाप्पत्तिया पि अपरामाससत्तग्गहणमुद्धभूतानं मेत्तादीनं एक-सत्तारम्मणानम्पि अप्पमाणगोचरता वुत्ता ति वेदितब्बा।

ब्रम्हविहारकथावण्णना निट्ठिता॥

असुभकथावण्णना

उद्धं धुमातत्ता **उद्धुमातं**। सेतरत्तेहि परिभिन्नं विमिस्सितं नीलं **विनीलं**, पुरिमवण्णविपरिणामभूतं वा नीलं **विनीलं**। **सङ्घाटो** अङ्गानं सुसम्बद्धता। **आरम्म-णस्स दुब्बलता** पटिपक्खभावेन चित्तं ठपेतुं असमत्थता। अत्तनि आनिसंसदस्सननीवरण-रोगवूपसमानं यथाक्कमं पुप्फछड्डकवमनविरेचन-उपमा योजेतब्बा। [८०—सी०] पटि-कूलमनसिकारसामञ्ञेन[1] असुभेहि केसादीहि पटिकूलज्झानस्स गहणं सिवथिकावण्णज्झान-स्स च। तम्पि हि पटिकूलमनसिकारवसेनेव उप्पज्जतीति, सिवथिकप्पकारानि वा सिवथिकावण्णानि।

रूपावचरकुसलकथावण्णना निट्ठिता॥

अप्पटिभागनिमित्तो पि एवं कतिपये वा सत्ते ओदिस्स पवत्ता परिच्छिन्नरूपादि-उपादानविसये पवत्तत्ता कथमप्पमाणगोचरा ति आह "**न च सम्मुतिसच्चवसेना** ति आदि। एवम्पि यथा नत्थि सत्ता ओपपातिका ति सत्तवसेन पवत्ताय पि मिच्छादिट्ठिया सङ्खारारम्मणता वुच्चति उपादान-वसेन, एवं सत्तवसेन पवत्तानम्पि मेत्तादीनं सङ्खारारम्मणता पि सिया ति चे? न, अपरामसनवसेन पवत्तानं मेत्तादीनं स-उपादानग्गहणासम्भवतो ति दस्सेन्तो आह "**अपरामासा**" ति ति आदि।

ब्रह्मविहारकथावण्णना निट्ठिता।

असुभकथावण्णना

"एकाहमतं वा द्वीहमतं वा" ति आदिना[2] वुत्तासु नवसु सिवथिकासु वण्णवसेन पवत्तज्झानं **सिवथिकावण्णज्झानं**। ननु चेतस्स वण्णकसिणेहि गहणं युत्तं, न असुभेहीति? न, सिवथिकावण्णं उपमं कत्वा अत्तनो काये पटिकूलत्तं अमुञ्चित्वा व वण्णवसेन [११६ म०] पवत्तनतो। तेनेवाह "**पटिकूलमनसिकारसामञ्ञेना**" ति। अयमत्थो **सिवथिकावण्णज्झानस्सा** ति एत्था पि योजेतब्बो ति विभावेन्तो "**तम्पी**" ति आदिमाह।

रूपावचरकुसलवण्णना निट्ठिता

---

१. पटिक्कूल०—सी० सब्बत्थ। २. दी० २ : २२०; म० १ : ८०।

अरूपावचरकुसलकथावण्णना

[१०८-म०] **सब्बाकारेना** ति एवं रूपनिमित्तं दण्डादानसम्भवदस्सनादिना सब्बेन रूपरूपनिमित्तेसु तदारम्मणज्झानेसु दोसदस्सनाकारेन, रूपादीसु निकन्तिप्पहान-अनावज्जितुकामतादिना वा। **विरागा** ति जिगुच्छना। आनेञ्जाभिसङ्खारवचनादीहि आनेञ्जता "सन्ता इमे चुन्द, अरियस्स विनये विमोक्खा" ति आदिना सन्तविमोक्खता च वुत्ता। दोसदस्सनपटिपक्खभावनावसेन पटिघसञ्ञानं सुप्पहीनता महता पि सद्देन अरूपसमापत्तितो न वुट्ठाति। तथा पन न सुप्पहीनत्ता सब्बरूपसमापत्तितो वुट्ठानं सिया, पठमज्झानं पन अप्पकम्पि सद्दं न सहतीति तंसमापन्नस्स सद्दो कण्टको ति वुत्तं।

आरुप्पभावनाय अभावे चुतितो उद्धं उप्पत्तिरहानं रूपसञ्ञापटिघसञ्ञानं याव अत्तनो विपाकप्पवत्ति, ताव अनुप्पत्तिधम्मतापादनेन समतिक्कमो अत्थङ्गमो च वुत्तो। नानत्तसञ्ञासु पन या तस्मिं भवे न उप्पज्जन्ति, ता अनोकासताय न उप्पज्जन्ति, न आरुप्पभावनाय निवारितत्ता। अनिवारितत्ता च काचि उप्पज्जन्ति। तस्मा तासं अमनसिकारो अनापज्जनं अपच्चवेक्खणं, जवनपटिपादकेन वा भवङ्गमनस्स अन्तरे अकरणं अप्पवेसनं वुत्तं, तेन च नानत्तसञ्ञामनसिकारहेतूनं रूपानं समतिक्कमा समाधिस्स थिरभावं दस्सेति। रूपसमतिक्कमाभावेनेव हि रूपसमापत्तीसु "नानत्त-सञ्ञानं अमनसिकारा" ति एतस्स अवचनं ति। को आनिसंसो, न हि सब्बस्साद-वत्थुरहिते आकासे पवत्तितसञ्ञाय आनिसंसो दिस्सतीति वुत्तं होति। रूपसञ्ञासम-

---

अरूपावचरकुसलकथावण्णना

रूपनिमित्तं ति रूपहेतु रूपाधिकरणं। **रूपारूपनिमित्तेसू** ति रूपधम्मेसु च पथवी-कसिणादिनिमित्तेसु च। **तदारम्मणज्झानेसू** ति एत्थ तं-सद्देन रूपनिमित्तं पच्चामसति रूपम्पि वा रूपधम्मारम्मणानम्पि रूपावचरज्झानानं सम्भवतो। **रूपादीसू** ति रूपारूपनिमित्ततदारम्म-णज्झानेसु रूपपटिबद्धधम्मेसु च। **अनावज्जितुकामतादिना** ति आदि-सद्देन असमापज्जितु-कामतादिं संगण्हाति।

चुतितो उद्धं उप्पत्तिरहानं.....प०.....**अनुप्पत्तिधम्मतापादनेन समतिक्कमो** ति एतेन सम-तिक्कमितब्बत्तेन रूपावचरकुसलानं रूपावचरविपाककिरियेहि विसेसाभावं दस्सेति अनधिगत-भावतो। येसं हि रूपसञ्ञादीनं अरूपभावनाय समतिक्कमादिको लब्भति, ते दस्सेतुं "अरूप-भावनाय अभावे चुतितो उद्धं उप्पत्तिरहानं" ति वुत्तं ति। **या** ति एकन्तरूपनिस्सिता अव-सिट्ठपरित्तविपाकसञ्ञादयो।

तिक्कमनादिकं वचनं आनिसंसस्स पकासनं, न अत्थो।

अञ्ञथा ति सुत्तेसु। तत्थ हि परित्तकसिणुग्घाटने पि रूपविवेकमत्तग्गहणेन परिच्छेदस्स अग्गहणतो अनन्तफरणता च वुत्ता, इध पन अनन्तफरणतासब्भावे पि उग्घाटितकसिणवसेन परित्तानन्तता होतीति दस्सनत्थं "अनन्तो आकासो" ति न वुत्तं ति अधिप्पायो। समयववत्थापनञानविसेसनेनेवेत्थ अत्थो, न पटिपत्तिया ति तदवचनं।

[१०९-म०] पठमारुप्पविञ्ञाणं अत्तनो फरणाकारेनेव अनन्तं ति मनसिकातब्बत्ता **"अनन्तं"** ति वुत्तं। उग्घाटभावो **उग्घाटिमं**।

आकिञ्चनं ति[1] विञ्ञाणस्स किञ्चि पकारं अग्गहेत्वा सब्बेन सब्बं विभावनं आह।

याया ति सङ्खारावसेससञ्ञाय। तं ताव पटिपत्ति। **आवज्जिस्सामी** ति आदिना तन्निन्नावज्जनादिपवत्तिया अभावं दस्सेति, न तदतिक्कमनत्थाय आवज्जनभावनापवत्तिया। **नासञ्ञा** ति सञ्ञाभावो च एतिस्सा अत्थीति [८१-सी०] अत्थो। समूहगहणवसेन पवत्तं **कलापसम्मसनं**। फस्सादि-एकेकधम्मगहणवसेन पवत्ता **अनुपदधम्मविपस्सना**।

आकासे पवत्तितविञ्ञाणातिक्कमतो ततिया। तदतिक्कमतो हि तस्सेव विभावनं होति। दुतियारुप्पविञ्ञाणविभावने हि तदेव अतिक्कन्तं सिया, न तस्स आरम्मणं, न चारम्मणे दोसं दिस्वा अनारम्मणस्स विभावनातिक्कमो युज्जति। पाळियञ्च

आनेञ्जसन्तसमापत्तिसुखानुभवनभवविसेसूपपज्जनादयो आरुप्पसमापत्तीनं अत्था ति आह **"रूपसञ्ञा....प०....न अत्थो"** ति।

इध उग्घाटितकसिणवसेन परित्तानन्तता होति निप्परियायदेसनत्ता ति अधिप्पायो। यदि एवं परित्तकसिणुग्घाटिते कथमाकासानञ्चायतनवचनं ति? तत्था पि अनन्तफरणसब्भावतो। तेनेवाह **"अनन्तफरणतासब्भावे"** ति। यदि सब्बत्थ अनन्तफरणता अत्थि, अथ कस्मा "अनन्तो आकासो" ति न वुत्तं ति आह **"समयववत्थापना"** ति आदि। तत्थ **पटिपत्ती** ति झानभावनाकारमाह।

उग्घाटभावो **उग्घाटिमं**। यथा पाकिमं।

आकासे [११७-म०] पवत्तितविञ्ञाणातिक्कमतो ततिया ति पदुद्धारं कत्वा युत्तितो आगमतो च तदत्थं विभावेतुं **"तदतिक्कमतो हि"** ति आदिमाह। आरुप्पसमापत्तीन

---

1. अकिञ्चनं-सी०।

"विञ्ञाणञ्चायतनसमापत्ति सतो समापज्जित्वा ततो वुट्ठहित्वा तञ्ञेव विञ्ञाणं अभावेती" ति[1] वुत्तं, न वुत्तं "तञ्ञेव विञ्ञाणञ्चायतनं अभावेती" ति, "तञ्ञेव अभावेती" ति वा "अनन्तं विञ्ञाणं ति विञ्ञाणञ्चायतनं उपसम्पज्जा" ति[2] एत्थ पन द्वयं वुत्तं आरम्मणञ्च विञ्ञाणं विञ्ञाणञ्चायतनञ्च। तस्मिं द्वये येन केनचि यतो वा वुट्ठितो, तेनेव पट्ठाननिद्दिट्ठेन तंसद्दस्स सम्बन्धे आपन्ने विञ्ञाणञ्चायतनस्स निवत्तनत्थं विञ्ञाणवचनं, तस्मा पठमारुप्पविञ्ञाणस्सेव अभावनातिक्कमो वुत्तो। **तन्निस्सितं** ति तेन निस्सितं। तं मण्डपलग्गं अनिस्साय तेन विनाभूते विवित्ते बहि ओकासे ठानं विय आकासलग्गविञ्ञाणस्स विवेके तदपगमे ततियारुप्पस्स ठानं।

अरूपावचरकुसलकथावण्णना निट्ठिता।

तेभूमककुसलवण्णना

[११०-म०] **इमे ताव छन्दाधिपतेय्ये पञ्च नया** ति छन्दाधिपतेय्यनये अन्ते पुरिमनयानं तं-नयाभिमुखप्पवत्ति सन्धाय वुत्तं, अयं पन पकारो न पाळि-अनुगतो। न हि पाळियं सुद्धिकनयादयो वत्वा वीरियाधिपतेय्यादिनया वुत्ता ति। महापकरणे सत्तहि महावारेहि अनुलोमादिनयविचित्तेहि हीनत्तिको विभत्तो। तत्थ च मज्झिमधम्मेकदेसभूता इमे वीसति लोकियमहानया ति कत्वा "तत्थ विभत्ता" ति वुत्तं, न, एतेन कमेन इमेसं नयानं तत्थ आगतत्ता।

एवमेतेसं विभत्तट्ठानं दस्सेत्वा इदानि एतस्मिं तेभूमककुसलकथावसानट्ठाने अट्ठा-

---

आरम्मणातिक्कमेन पत्तब्बत्ता विसेसतो आरम्मणे दोसदस्सनं तदेव अतिक्कमितब्बं ति अयं युत्ति, आरम्मणे पन अतिक्कन्ते तदारम्मणं झानम्पि अतिक्कन्तमेव होति। भावनाय आरम्मणस्स विगमनं अपनयनं विभावना। पाळियं ति विभङ्गे। ननु च पाळियं "तञ्ञेव विञ्ञाणं" ति अविसेसेन वुत्तं "न आकासानञ्चायतनविञ्ञाणं" ति। "न तञ्ञेव विञ्ञाणं ति विसेसवचनेन अयमत्थो सिद्धो" ति दस्सेन्तो "विञ्ञाणञ्चायतनं" ति आदिमाह।

अरूपावचरकुसलकथावण्णना निट्ठिता।

तेभूमककुसलवण्णना

सत्तहि महावारेही ति पटिच्चसहजातपच्चयनिस्सयसंसट्ठसम्पयुत्तपञ्हावारेहि अनुलोम-पच्चनीय-अनुलोमपच्चनीय-पच्चनीयानुलोमादिनया अनुलोमादिनया।

भारद्वाजगोतमादयो अट्ठचत्तालीस लोके गोत्तानि मूलभूतानि, तथा कट्ठकालापादयो अट्ठचत्ता-

---

1. खु० ८ : ११० चुल्ल०। 2. अभि० २ : २९५ विभंगे।

रसकम्मद्वारदस्सनत्थं **"इमस्मिं पन ठाने"** ति आदिमाह। अथ वा हीनपणीतेहि विनिवत्तेत्वा[1] मज्झिमरासि-अन्तोगधभावं दस्सेन्तेन एतेसं तेभूमककुसलनयानं हीनत्तिके विभागो कतो। "इमस्मिं पन ठाने" ति आदिकस्स यथावुत्तो व सम्बन्धो। हीनत्तिके मज्झिमरासिम्हि ये[2] सविपाका[2] वट्टनिस्सितेनेव दानादिवसेन पवत्तिता ते हीना ति कातब्बा। ये विवट्टनिस्सितेन दानादिवसेन पवत्तिता, ते पणीता ति कातब्बा। अविपाका मज्झिमा ति कातब्बा। अविपाकत्ता च तेसु मज्झिमरासिं ठपेत्वा इतरे द्वे एकन्तवट्टनिस्सिता नव, विवट्टुपनिस्सयभूता च नवा ति अट्ठारस कम्मद्वारानि, कम्मानि च तानि तस्स तस्स फलस्स कारणभावेन द्वारानि चा ति **कम्मद्वारानि**। तत्थ तत्थ वा चित्तानि कम्मद्वारानीति आह। तं-तं-द्वारानि वा कायादीनि। अट्ठारस खत्तिया च अभब्बा हीन-हीनत्तयादयो नव, भब्बा च पणीत-पणीतत्तयादयो नवा ति कम्मानुरूपेनेव वेदितब्बा। एवं ब्राम्हणादयो देवा च योजेतब्बा। अट्ठचत्तालीस गोत्तचरणानि तेसञ्ञेव खत्तियादीनं भेदा। 'कामावचरं कुसलं चित्तं [८२-सी०] उप्पन्नं होति ... प ... चित्ताधिपतेय्यं" ति[3] एवं वुत्तो चित्तस्स चित्ताधिपतेय्यभावो चित्तचेतसिकसमुदाये समयववत्थापको चित्तसद्दो पवत्तो ति **"सम्पयुत्तधम्मानं वसेन वुत्तो"** ति आह।

तेभूमककुसलवण्णना निट्ठिता।

लीसेव चरणानीति आह "अट्ठचत्तालीसं" ति आदि। तत्थ तेसं ति भब्बाभब्बानं। द्वारसीसेन द्वारवन्तानि गय्हन्तीति अधिप्पायेनाह **"तंतंद्वारानि वा कायादीनी"** ति। अचित्तीकारेन वा कतं हीनं, अज्झुपेक्खनेन कतं मज्झिमं, सक्कच्चकतं पणीतं। आमिसकिञ्चक्खादिहेतु वा कतं हीनं, पुञ्ञफलकामताय कतं मज्झिमं, कत्तब्बमिच्चेव अरियभावे ठितेन कतं पणीतं। भवसम्पत्तिलोभेन वा पवत्तितं हीनं, अलोभज्झासयेन पवत्तितं मज्झिमं, परहिताय पवत्तितं पणीतं। परित्तकतं वा हीनं, मत्तसो कतं मज्झिमं, अधिमत्तसो कतं पणीतं। महग्गतेसु पन पटिलद्धमत्तं हीनं, नातिसुभावितं मज्झिमं, सुभावितं वसिप्पत्तं पणीतं। इमेसु पि एकेकस्स हीनादिकस्स आयूहननानत्तादिवसेन हीनादिभेदो लब्भति येवा ति दट्ठब्बं। **सम्पयुत्तधम्मानं वसेना** ति यो चित्तप्पभावितो चित्तसम्पयुत्तानं चित्ताधिपतेय्यभावो, सो तंनिमित्तो चित्ते उपचरितो ति एवं वा एत्थ अत्थो।

तेभूमककुसलवण्णना निट्ठिता।

---

१. पि निवत्तेत्वा-सी०। २-२. येसं विपाका-सी०।
३. अभि० १ : ७०-७१ प० संगणियं।

लोकुत्तरकुसलवण्णना

[१११–म०] **लोकं तरती** ति एतेन लोकसमतिक्कमपटिपत्तिमाह । **उत्तरती** ति एतेन लोकस्सन्तगमनं फले पतिट्ठानं फलं। **समतिक्कम्मा** ति आदिना निब्बानं[1] । **समतिक्कम्मा** ति हि निस्सरित्वा। **अभिभुय्या** ति विसंयुत्तं हुत्वा ति अत्थो। तिविधो पि चत्थो मग्गादीसु एकेकस्मिं योजेतब्बो, मग्गे येव वा इध तस्स अधिप्पेतत्ता। **एकचित्तक्खणिकं** ति एकमग्गस्स द्वे वारे अनुप्पत्तिं सन्धायाह। अञ्ञमञ्ञं धम्मानं अनतिवत्तनादिसाधिकाय पञ्ञाय वड्ढेति। "निय्यातीति निय्यानीयं" ति वत्तब्बे ई-कारस्स रस्सत्तं य-कारस्स च क-कारं कत्वा **"निय्यानिकं"** ति वुत्तं। निय्याति एतेना ति निय्यानं, निय्यानमेव **निय्यानिकं** वेनयिको विय । एत्थ "नेय्यानिकं" ति वत्तब्बे इ-कारस्स ए-कारत्तं अकत्वा वुत्तं।

फलं ति चित्तचेतसिकरासि वुच्चति, तं अञ्ञमञ्ञं सम्पयुत्तानं धम्मानं अत्तनो अवयवभूतानं निस्सयो होति। फलञाणं वा **फलं**, सम्मादिट्ठि-आदयो अङ्गानि वा। **लोकुत्तरभावे** ति लोकं उत्तिण्णभावे। तेन फलनिब्बानानि सङ्गण्हाति। तेसु यं भवति फलं, तं **"भूमी"** ति वुच्चति । यथा वा कम्मनिब्बत्ता कामभवादयो तंसमङ्गिनो निस्सयभावेन "भूमी" ति वुच्चन्ति, एवं मग्गेन निब्बत्तं फलं अरिय-

---

लोकुत्तरकुसलवण्णना

[११८-म०] "केनट्ठेन लोकुत्तरं" ति आदि पटिसम्भिदावचनं[2] अट्ठकथाय आभतं, तस्मा तत्थ "तिविधो पि अनुत्तरधम्मो लोकं तरता" ति आदिना सङ्गहितो ति तं तीहि पदेहि योजेत्वा दस्सेतुं **"लोकं तरतीति एतेना"** ति आदिमाह। एकेकस्मिं योजेतब्बो लोकस्स अन्तगमनादिताय मग्गादीसु पि लब्भमानत्ता। मग्गे येव वा तिविधो पि अत्थो योजेतब्बो ति सम्बन्धो। **अनतिवत्तनादी** ति आदि-सद्देन इन्द्रियानं एकरसता तदुपवीरियवाहनं आसेवना ति इमे तयो भावनाविसेसे संगण्हाति। यस्मा चेते भावनाविसेसा संकिलेसवोदानेसु वट्टविवट्टेसु च तंतं-आदीनवानिसंसदस्सनभूताय पुब्बभागपञ्ञाय सम्पादितेन ञाणविसेसेन निप्फज्जन्ति, तस्मा वुत्तं **अञ्ञमञ्ञं**...प०... **वड्ढेती** ति।

निस्सयो होती ति रुक्खो विय साखाय आधारभावेन वोहरीयतीति अत्थो। फलञाणफलङ्गानं निस्सयवचनं निस्सयपच्चयत्ता। ततो येव निस्सयभावतो पतिट्ठाभावतो। अरियफलसन्निस्सयेन हि अरिया कतकिच्चा सुट्ठु निब्बिन्नसब्बभवा पि चिरतरं लोके परहिताय तिट्ठन्ति। किलेसानं ओधिसो पजहनका पि अरियमग्गा अविसेसेन सब्बाकुसलानं सब्बकुसलपटिपक्खताय

---

१. निब्बाणं–सी० । २. खु० ९ : ४२३ पटि० ।

सावकस्स कालेन कालं समापज्जितब्बताय निस्सयभावतो "भूमी" ति वुच्चति, ततो येव अरिया चिरतरं तिट्ठन्ति। **समुच्छेदविवेकवसेना** ति एत्थ अपायगमनीयानं अच्चन्तसमुच्छेदो इतरेसञ्च विज्जुतोभासेन विय तमस्स समुच्छेदो दट्ठब्बो। लोकियज्झानम्पि पुथुज्जनस्स अरियस्स च अकताधिकारस्स न विना पटिपदाय इज्झति, कताधिकारस्स पन अरियस्स मग्गेनेव समिज्झनतो विपाकानं विय कुसलेन तथा समिद्धस्स अरियमग्गेन सदिसताय अभावतो अतब्बिपाकत्ता च न मग्गपटिपदा तस्स झानस्स पटिपदा ति सक्का वत्तुं ति तत्थ तथा गरुं कत्वा पटिपदाहि एव देसना न कता, यथा वुत्तज्झानसङ्गहत्थं सुद्धिकदेसना पि कता।

इध पन कस्सचि विना पटिपदाय असिद्धितो गरुं कत्वा दस्सेतुं **"दुक्खपटिपदं"** ति आदि वुत्तं। **यो कोचि वारो** ति सकिं द्विक्खत्तुं तिक्खत्तुं चतुक्खत्तुं अनेकक्खत्तुं ति एवमादीसु

अञ्ञमग्गप्पहातब्बेसु पि केनचि पहानाकारेन पवत्तन्तीति तं पहानाकारं दस्सेन्तो "**इतरेसं विज्जुतोभासेन विय तमस्सा**" ति आह। येन **पाळियं**[1] हेट्ठिममग्गञाणानं विज्जूपमता दस्सिता। यदि एवं उपरिमग्गवज्झा किलेसा इतरे ति इधाधिप्पेता। न तेसं समुच्छेदवचनं युत्तं। न हि भावनाय पहातब्बे दस्सनमग्गो समुच्छिन्दितुं सक्कोति। तथा च सति दस्सनेन पहातब्बा येव ते सियुं। अथ तदङ्गप्पहानं अधिप्पेतं, येन "विज्जुतोभासेन विय तमस्सा" ति वुत्तं, तं पुब्बभागविपस्सनाय येव सिद्धं न च युत्तं लोकुत्तरमग्गो तदङ्गवसेन किलेसे पजहती ति। विक्खम्भने पि एसेव नयो, अनुलोमञाणेनेव तस्स सातिसयं साधितत्ता। अथ पन पठममग्गवज्झा एव किलेसा इतरे ति अधिप्पेता, एवं सन्ते तेसं इतरभावो व न सिया, न च [११९-म०] अनपायगमनीया नाम किलेसा दस्सनेन पहातब्बा अत्थि, ना पि पठममग्गवज्झा किलेसा तेन विज्जुतोभासेन विय तमो समुच्छिन्दितब्बा ति वत्तुं युत्तं ति उपपरिक्खितब्बोयं "इतरेसं....प०....समुच्छेदो" ति। लोकियज्झानम्पि न **विना पटिपदाय** इज्झती ति इदं अधिप्पायवसेन नेतब्बं नेय्यत्थत्ता ति. तं अधिप्पायं विभावेन्तो "**अकताधिकारस्सा**" ति आह। तेन यथावुत्तवचनस्स च सप्पदेसतं दस्सेति। ननु च कताधिकारस्स अरियस्स मग्गेन समिज्झमानम्पि झानं मग्गपटिपदावसेन पटिपदासहितमेवा ति। न विना पटिपदाय इज्झतीति सक्का वत्तुं, तेनेतं वचनं निप्पदेसमेवा ति अनुयोगं सन्धायाह "**कताधिकारस्स पना** ति आदि। इदानि तस्स वचनस्स अधिप्पायवसेन गहेतब्बत्थता पाळितो पि विञ्ञायतीति दस्सेन्तो आह "**यथावुत्त ...प...कता**" ति।

यो कोची ति अविसेसवचनं" ति तस्स अपवादं दस्सेन्तो "**सकिं द्विक्खत्तुं**" ति आदिमाह।

---

1. अभि० १ : २८३ ष० संगणियं।

विक्खम्भनवारेसु यो कोचि। सकिं द्विक्खत्तुञ्च विक्खम्भनवारा सुखा पटिपदा एव, न च ततो उद्धं सुखा [११२-म०] पटिपदा होतीति तिक्खत्तुं विक्खम्भनवारं दुक्खा पटिपदा ति रोचेसुं अट्ठकथाचरिया। तस्मिं तथारोचिते ततो परेसु चतुक्खत्तुं विक्खम्भनवारादीसु वत्तब्बमेव नत्थीति। रूपारूपानं लक्खणादीहि [८३-सी०] परिच्छिन्दित्वा गहणं रूपारूपपरिग्गहो, नामरूपमत्तमेतं, न अञ्ञो को चि सत्तादिको ति ववत्थापनं नामरूपववत्थापनं। परिग्गहितरूपारूपस्स मग्गपातुभावदन्धता च नामरूपववत्थापनादीनं किच्छसिद्धितो सिया ति न रूपारूपपरिग्गहकिच्छताय एव दुक्खपटिपदता वत्तब्बा ति चे ? तं न, नामरूपववत्थापनादीनं पच्चनीककिलेसमन्दताय सुखसिद्धियम्पि तथासिद्धविपस्सनासहगतानं इन्द्रियानं मन्दताय मग्गपातुभावदन्धभावतो।

रूपारूपं परिग्गहेत्वा ति अकिच्छेन पि परिग्गहेत्वा। किच्छेन परिग्गहिते वत्तब्बमेव नत्थि। एवं सेसेसु पि। **इमं वारं रोचेसुं** ति कलापसम्मसनावसाने उदयब्बयानुपस्सनाय वत्तमानाय उप्पन्नस्स विपस्सनुपक्किलेसस्स तिक्खत्तुं विक्खम्भनेन किच्छतावारं दुक्खा पटिपदा ति रोचेसुं एतदन्तत्ता पटिपदाय। एतस्स अकिच्छत्ते पि पुरिमानं किच्छत्ते दुक्खपटिपदता वुत्तनया वा ति न पटिसिद्धा ति दट्ठब्बं। यथावुत्तं वा सब्बं रूपारूपपरिग्गहादिकिच्छतं तिक्खत्तुं विक्खम्भनवारतावसेन "**इमं वारं**" ति आह। यस्स पन सब्बत्थ अकिच्छता, तस्स सुखा पटिपदा वेदितब्बा।

मुसावादादीनं विसंवादनादिकिच्चताय लूखानं अपरिग्गाहकानं पटिक्खभावतो

परिच्छिन्दित्वा गहणं परिजाननं। **नामरूपववत्थापनादीनं** ति नामरूपववत्थापनपच्चयपरिग्गहलक्खणपटिवेधनिकन्तिपरियादानानं। **किच्छसिद्धितो** ति नामरूपववत्थापनादीनं केसञ्चि सब्बेसम्पि वा किच्छसिद्धितो। एस नयो दुतियवारादीसु पि यथासम्भवं। **सुखसिद्धियम्पी** ति नामरूपववत्थापनादीनं किच्छसिद्धि मग्गपातुभावदन्धभावस्स कारणभावे अनेकन्तिका। विपस्सनासहगतिन्द्रियानं पन मन्दता तस्स एकान्तकारणं ति दस्सेति।

एतदन्तत्ता पटिपदाया ति एतेन निप्परियायतो पटिपदाञाणदस्सनविसुद्धिसङ्खाताय विपस्सनापञ्ञाय चिराचिरप्पवत्तिवसेन मग्गस्स खिप्पदन्धाभिञ्ञता वुत्ता ति दस्सेति। **पुरिमानं** ति पुरिमवारानं, लक्खणपटिवेधादीनं येव वा। हेट्ठिमकोटिया तिक्खत्तुं किलेसविक्खम्भने सति दुक्खापटिपदाभावो, न ततो हेट्ठा ति निच्छितत्ता आह "**तिक्खत्तुं विक्खम्भनवारतावसेना**" ति। तस्स सुखापटिपदा वेदितब्बा उक्कंसवसेना ति अधिप्पायो।

यस्मिं पुग्गले विसंवादनभेदनानिट्ठानत्थनियोजनानं पवत्ति, तत्थ सिनेहविरहेनेव तेसं पवत्ति,

परिग्गाहकसभावा सम्मावाचा। सा सिनिद्धभावतो सम्पयुत्तधम्मे परिग्गण्हाति सम्मावाचापच्चयसुभासितसोतारञ्च जनं। कायिककिरियाकिच्चं कत्तब्बं समुट्ठापेति, सयञ्च समुट्ठहनं घटनं होतीति सम्माकम्मन्तसङ्खाता विरति पि समुट्ठानसभावा ति वुत्ता। सम्पयुत्तधम्मानं वा उक्खिपनं समुट्ठहनं कायिककिरियाय भारुक्खिपनं विय, जीवमानस्स सत्तस्स, सम्पयुत्तधम्मानं वा सुद्धि वोदानं आजीवस्सेव वा जीवितिन्द्रियवुत्तिया। **मग्गसन्निस्सितं** ति परमत्थमग्गसभावत्ता मग्गावयवभावेन समुदायसन्निस्सितं ति अत्थो।

पतिट्ठानं किलेसवसेन, **आयूहनं** अभिसङ्खारवसेन। तण्हावसेन वा **पतिट्ठानं**, दिट्ठिवसेन **आयूहनं**। **बोधी** ति या अयं धम्मसामग्गी वुच्चतीति योजेतब्बा। **सेनङ्गरथङ्गादयो विया** ति [११३-म०] एतेन पुग्गलपञ्ञत्तिया अविज्जमानपञ्ञत्तिभावं दस्सेति। अङ्गसद्दो कारणत्थो पि होतीति चतुसच्च**बोधाय संवत्तन्तीति बोज्झङ्गा**। बुज्झन्तीति बोधियो, बोधियो एव अङ्गा ति **"अनुबुज्झन्तीति बोज्झङ्गा"** ति वुत्तं। विपस्सनादीनं कारणानं बुज्झितब्बानञ्च सच्चानं अनुरूपं पच्चक्खभावेन पटिमुखं अविपरीतताय सम्मा च बुज्झन्तीति एवमत्थविसेसदीपकेहि उपसग्गेहि **"अनुबुज्झन्ती"** ति आदि वुत्तं। बोधिसद्दो हि सब्बविसेसयुत्तं बुज्झनं सामञ्ञेन सङ्गण्हातीति।

सो च पुग्गलो असङ्गहितो होती ति मुसावादादीनं विसंवादनादिकिच्चताय लूखता च अपरिग्गहता च वुत्ता। तप्पटिपक्खविरुद्धसभावत्ता सम्मावाचाय सिनिद्धभावता [१२०-म०] परिग्गाहकसभावता। सद्धाविसेसयोगतो वा तस्सा सिनिद्धभावो दट्ठब्बो। समुट्ठापेती ति पवत्तेति। जीवमानो वा सत्तो, सम्पयुत्तधम्मा वा वोदायन्ति एतेन सयं वा वोदायती ति वोदानं।

तण्हादिट्ठीहि पतिट्ठानं। अवसेसकिलेसाभिसंखारेहि आयूहना। सस्सतदिट्ठिया पतिट्ठानं। उच्छेददिट्ठिया आयूहना। लीनवसेन पतिट्ठानं। उद्धच्चवसेन आयूहना। कामसुखानुयोगवसेन पतिट्ठानं। अत्तकिलमथानुयोगवसेन आयूहना। सब्बाकुसलाभिसङ्खारवसेन पतिट्ठानं। सब्बलोकियकुसलाभिसङ्खारवसेन आयूहना ति ओघतरणसुत्तवण्णनायं वुत्तेसु पकारन्तरेसु इध अवुत्तानं वसेन पि पतिट्ठानायूहना वेदितब्बा।

अथ वा किलेसग्गहणेन तण्हासस्सतदिट्ठिसब्बाकुसलाभिसङ्खारा गहिता तंसभावगताय तदेकट्ठताय च। तथा अभिसङ्खारग्गहणेन अवसेसकिलेस-उच्छेददिट्ठिसब्बलोकियकुसलाभिसङ्खारा। लीनुद्धच्चकामसुखत्तकिलमथानुयोगानं विसुं वुत्तत्ता तेहि न योजेतब्बं ति किलेसाभिसङ्खारवसेन पतिट्ठानायूहने वत्वा तण्हादिट्ठीनं तत्थ विसेसपच्चयतं दीपेतुं तदुभयवसेन पि योजना कता। नयदस्सनं वा एतं तत्थ दट्ठब्बं। एवमितरे पि पकारा योजेतब्बा ति। "चतूहि भिक्खवे अङ्गेहि समन्नागतो पुग्गलो" ति आदीसु[1] अङ्ग-सद्दस्स कारणत्थता दट्ठब्बा।

---

१. अं० २ : ११९-१२२।

तिण्णं ति रागादीनं। **करोति नाम** किं दुच्चरितानि अनुवत्तमानानि।

पाणातिपातादिनिप्फादितपच्चयानं निच्चसेवनं **धुवपटिसेवनं**। **सकिच्चको** ति विसुं अत्तनो किच्चवा। **न होति** ति अत्थन्तरभावं पटिक्खिपति। पच्चयपटिसेवन-सामन्तजप्पन-इरियापथप्पवत्तनानि पापिच्छतानिब्बत्तानि **तीणि कुहनवत्थूनी** ति।

वुट्ठानगामिनीविपस्सना सङ्खारुपेक्खा सानुलोमा, सा सुञ्ञतो पस्सन्ती "सुञ्ञता" ति वुच्चति, दुक्खतो [८४-सी०] पस्सन्ती तण्हापणिधिसोसनतो "अप्पणिहितं" ति। सा आगमनीयट्ठाने मग्गाधिगमत्थं आगमनपटिपदाठाने ठत्वा सुञ्ञताप्पणिहितं ति नामं देति। आगमनतो नामे लद्धे सगुणतो आरम्मणतो च नामं सिद्धमेव होति, न पन सगुणा-रम्मणेहि नामलाभे सब्बत्थ आगमनतो नामं सिद्धं होतीति परिपुण्णनामसिद्धिहेतुत्ता सगुणारम्मणेहि सब्बेसम्पि नामत्तययोगो न आगमनतो ति ववत्थानकरत्ता च निप्परि-यायदेसनाय आगमनतो व इध नामं लभति, न इतरेहीति वुत्तं।

अनिमित्तविपस्सनं ति अनिच्चानुपस्सनं। **निमित्तधम्मेसू** ति समूहादिघनवसेन च सकिच्चपरिच्छेदताय च सपरिग्गहेसु खन्धेसु। **अनिमित्तविमोक्खो** ति अनिच्चानुपस्स-

---

मुसावादादीनि भासमानो करोति नाम किं वक्खमानं किरियं, का पन सा ति? मुसावादादिकिरिया ति विदितोवायमत्थो। एवं वा एत्थ योजना दट्ठब्बा।

निप्फादितपच्चयानं ति चीवरादिपच्चयानं। **कुहनवत्थूनी** ति पापिच्छतं निस्साय लूखचीवरादिसेवनवसेन "यो ते विहारे वसति, सो अरहा" ति आदिना अत्तानं अरियगुण-सामन्तं कत्वा भणनवसेन विसेसलाभिनो विय अत्तनो परिहरणवसेन च पवत्ता अकुसलचित्तु-प्पादा परेसं विम्हापनकारणानि कुहनवत्थूनि।

[१२१-म०] सति पि सगुणारम्मणेहि मग्गस्स अनिमित्तनामलाभे न निप्परियायेन विपस्सना अनिमित्तनामिका ति आगमनतो मग्गो अनिमित्तनामं न लभतीति आह **"न पन सगुणारम्मणेहि····प०····सिद्धं होती"** ति। यस्मा पन आगमनतो सुञ्ञतं अप्पणिहितं ति **लद्धनामस्स** मग्गस्स सगुणतो आरम्मणतो च तंनामाभावो न कदा चि पि अत्थि, तस्मा नामत्तयपारिपूरिहेतु-आगमनतो नामलाभो ति अधिप्पायेनाह **"परिपुण्णनामसिद्धिहेतुत्ता"** ति। **सब्बेसं** ति सब्बविमोक्खमुखागतानम्पि मग्गानं। **नामत्तययोगो** ति सुञ्ञतापणिहितानिमित्त-नामयोगो। **ववत्थानं** असङ्करो।

निमित्तधम्मा सङ्खारा तेहि सनिमित्ता सविग्गहा विय उपट्ठहन्तीति तेसं अभावितभावनस्स भावितभावनस्स च उपट्ठहनाकारं दस्सेन्तो **"समूहादी"** ति आदिमाह। तेन च **"विमोक्खेन**

नमाह। एवं सम्पदमिदं ति कथमिध उपमासंसन्दनं होति। न हि छन्दचित्तानं मग्ग-सङ्खात-अधिपतिभावाभावो विय सद्धिन्द्रियाधिकस्स अनिमित्तविमोक्खस्स अनिमित्तभावाभावो अत्थि, न च अमग्गाधिपतीनं मग्गाधिपतिनामदानाभावो विय अनिमित्तस्स अनिमित्तनामदानाभावो ति सक्का वत्तुं अनिमित्तविमोक्खस्स अननिमित्तताय [११४-म०] अभावतो। मग्गो अधिपति एतेसं ति च मग्गाधिपतिनो ति युत्तो तत्थ छन्दचित्तेहि तं-सम्पयुत्तानं मग्गाधिपतिभावाभावो। इध पन मग्गो अनिमित्तं एतस्सा ति मग्गानिमित्तो ति अयमत्थो न सम्भवतीति न तेन अमग्गेन मग्गस्स अनिमित्तभावो न युज्जति, किं वा एत्थ सामञ्ञं अधिप्पेतं ति। अमग्गङ्गमग्गनामाभावो। यथा सति पि अधिपति-भावे छन्दचित्तानं न मग्गाधिपतीति मग्गनामं, न च तेहि मग्गस्स तेसं अमग्गङ्गत्ता, तथा सति पि सद्धाय आगमनभावेन तस्सा अनिमित्तं ति मग्गनामं, न च ताय मग्गस्स तस्सा अमग्गङ्गत्ता। एवं अनिमित्तविपस्सनाय पि अनिमित्तभावो निप्परियायेन नत्थीति दीपितो होति।

ननु च इध ञानं सुञ्ञतादिनामेन वुत्तं, न मग्गो ति चे? न, मग्गसम्पयोगतो ञानस्स सुञ्ञतादिनामकत्ता। सुत्तन्तपरियायेन सगुणारम्मणेहि इध अभिधम्मे पि नामं

सद्धिन्द्रियं अधिमत्तं होती"[१] ति वुत्तं, न "तस्मिं विमोक्खे ति, तस्मा अनिमित्तविमोक्खो ति अनिच्चानुपस्सनं आहा" ति वुत्तं। इतरत्था पि एसेव नयो। अनिमित्तस्स अनिमित्तभावाभावो नत्थीति कस्मा वुत्तं, ननु च अनिच्चानुपस्सनाय अनिमित्तविमोक्खभावो परियायेना ति निप्परियायदेसनाय तस्सा अनिमित्तभावाभावो अत्थि एव, एवञ्च सति "अनिमित्तस्स अनिमित्तनामदानाभावो" ति च न न सक्का वत्तुं ति उपमासंसन्दनं सुट्ठुतरं युज्जति, तथा अनिमित्तेन मग्गस्स अनिमित्तभावो न युज्जति एव। तेनाह 'परमत्थतो नामं दातुं न सक्कोती" ति? सच्चमेतं, परियायसिद्धं येव पन अनिच्चानुपस्सनाय अनिमित्तभावं गहेत्वा मग्गसोधन-वसेनायमनुयोगो कतो "अनिमित्तविमोक्खस्स अनिमित्तभावाभावो नत्थीति विरुद्धं विय होती" ति। एवञ्च कत्वा "अनिमित्तं.....प०.....दीपितो होती, ति सयमेव वक्खती ति। सामञ्ञं ति उपमोपमितब्बानं सम्बन्धमाह। न मग्गाधिपती ति मग्गो अधिपति मग्गाधिपतीति छन्दचित्तानं अयं समञ्ञा नत्थी ति अत्थो। न च तेहि मग्गस्सा ति छन्दचित्तेहि मग्गो अधिपति एतस्सा ति मग्गाधिपतीति अयं समञ्ञामग्गस्स नत्थि। कस्मा? तेसं छन्दचित्तानं अमग्गङ्गत्ता।

ञानस्स सुञ्ञतादिनामकत्ता ति एतेन इन्द्रियबलादीनम्पि मग्गसम्पयोगतो सुञ्ञतादि-नामकता दस्सिता ति दट्ठब्बं। सति पि [१२२-म०] पच्चनीकामसवे न तस्स मग्गस्स तं परिब्यत्तं

---

१. अट्ठ० १८२।

लभतीति आहंसु। तस्मा पटिक्खित्ता **"न पन लभन्ती"** ति। **किं कारणा?** अभिधम्मे सरसं अनामसित्वा पच्चनीकतो व नामलाभा ति अधिप्पायो। यो हि सगुणारम्मणेहि नामलाभो, सो सरसप्पधानो होति। सरसेनेव च नामलाभे सब्बमग्गानं सुञ्ञतादिभावो ति ववत्थानं न सिया। तस्मा अभिधम्मे सति पि द्वीहि नामलाभे पच्चनीकतो नामववत्थानकरं गहितं ति सगुणारम्मणेहि सुञ्ञताप्पणिहितमग्गा नामं न लभन्तीति आह। अथ वा **न पन लभन्ती** ति अञ्ञनिरपेक्खेहि सगुणारम्मणेहि न लभन्ति। **किं कारणा?** अभिधम्मे सरसपच्चनीकेहि सहितेहि नामलाभा ति अत्थो। पच्चनीकं हि ववत्थानकरं अनपेक्खित्वा केवलस्स सरसस्स नामहेतुभावो अभिधम्मे नत्थि अववत्थानापत्तितो। तस्मा अत्ताभिनिवेसपणिधिपटिपक्खविपस्सनानुलोमा मग्गा सति पि सरसन्तरे पच्चनीकसहितेन सरसेन नामं लभन्ति। अनिमित्तमग्गस्स पन [८५–सी०] विपस्सना निमित्तपटिपक्खा न होति सयं निमित्तग्गहणतो निमित्तग्गहणानिवारणा ति तदनुलोममग्गो पि न निमित्तस्स पटिपक्खो। यदि सिया, निमित्तगतविपस्सनाय पि पटिपक्खो सिया ति। तस्मा विज्जमानो पि सरसो ववत्थानकरपच्चनीकाभावा अभिधम्मे अनिमित्तं ति नामदायको न गहितो। अनिच्चानुपस्सनानुलोमो पन मग्गो सुद्धिकपटिपदानये येव सङ्गहितो ति दट्ठब्बो। तस्मा एव च सो नयो वुत्तो ति। **एवं** ति [११५–म०] यं वक्खति "अनिच्चतो वुट्ठहन्तस्स मग्गो अनिमित्तो होती" ति[1], एवं आहरित्वा अट्ठकथाचरियेहि सो अनिमित्तमग्गो दीपितो ति अत्थो।

यथासरसता ति आह "सरसप्पधानो" ति। **द्वीही** ति सरसपच्चनीकेहि। **अञ्ञनिरपेक्खेही** ति आगमननिरपेक्खेहि। **तस्मा** ति यस्मा सरसतो व नामलाभे अववत्थानापत्ति सब्बस्स मग्गस्स सब्बनामभावापत्ति होति, तस्मा। **अत्ताभि…प०…मग्गा** ति तेन आगमनतो नामलाभस्स पच्चनीकतो नामलाभभावं दस्सेति। **सरसन्तरे** ति अनिमित्तभावादिके। **पच्चनीकसहितेन सरसेना** ति सुञ्ञताप्पणिहितभावेहि तदागमनेहि। **निमित्तग्गहणानिवारणा** ति सङ्खारनिमित्तग्गाहस्स अनिसेधनतो। सुञ्ञताप्पणिहितस्सेव मग्गस्स वुत्तत्ता अनिच्चतो वुट्ठहन्तस्स मग्गो इध असङ्गहितो सिया ति आसङ्कित्वा आह "अनिच्चानुपस्सना" ति आदि। सङ्खारेहि वुट्ठानं न सिया, लक्खणेहि एव वुट्ठानं सिया ति अधिप्पायो, लक्खणपटिवेधो न सिया अतदारम्मणत्ता ति अत्थो। सङ्खारानं हि हुत्वा अभाव-उदयब्बयपटिपीळनावसवत्तनाकारेसु अनिच्चतादिलक्खणवोहारो।

---

1. अट्ठ०–१८३।

वुट्ठान…**प**…**किमारम्मणा** ति अनिच्चादितो वुट्ठहन्तस्स वुट्ठानगामिनिया लक्खणारम्मणत्ते सति सङ्खारेहि वुट्ठानं न सिया, सङ्खारारम्मणत्ते च लक्खणपटिवेधो ति मञ्ञमानो पुच्छति। "अनिच्चं" ति आदिना सङ्खारेसु पवत्तमानेन ञाणेन लक्खणानि पि पटिविद्धानि होन्ति तदाकारसङ्खारगहणतो ति आह "**लक्खणारम्मणा**" ति। सङ्खारारम्मणा एव यथावुत्ताधिप्पायेन "लक्खणारम्मणा" ति वुत्ता ति दस्सेन्तो "**लक्खणं नामा**" ति आदिमाह। अनिच्चता दुक्खता अनत्तता ति हि विसुं गय्हमानं लक्खणं **पञ्ञत्तिगतिकं** परमत्थतो अविज्जमानं, अविज्जमानत्ता एव परित्तादिवसेन **नवत्तब्बधम्मभूतं**। तस्मा विसुं गहेतब्बस्स लक्खणस्स परमत्थतो अभावा "अनिच्चं दुक्खमनत्ता" ति सङ्खारे सभावतो सल्लक्खेन्तो व लक्खणानि सल्लक्खेति नामा ति आह "**यो पन अनिच्चं दुक्खमनत्ता ति तीणि लक्खणानि सल्लक्खेती**" ति। यस्मा च **अनिच्चं** ति आदिना सङ्खारा व दिस्समाना, तस्मा ते कण्ठे बद्धकुणपं विय पटिनिस्सज्जनीया होन्ति।

लोकुत्तरकुसल-पकिण्णककथावण्णना

तत्रा ति लोकुत्तरज्झाने। **अज्झत्तञ्चा** ति उपड्ढगाथाय अभिनिविसितब्बं वुट्ठातब्बं विपस्सनाभूमिं पञ्चधा उद्दिसति। सत्त-अट्ठादीनि अङ्गानि **सत्तट्ठङ्गानी** ति आदिसद्दस्स लोपो दट्ठब्बो। **निमित्तं** ति यतो वुट्ठानं, तानि निमित्तपवत्तानि निमित्तवचनेनेव उद्दिसति। **सङ्खारुपेक्खाञाणमेव अरियमग्गस्स बोज्झङ्गादिविसेसं नियमेति**। कस्मा?

आकारवन्तेसु गहितेसु तदाकारो पि गहितो येव होती ति आह "**लक्खणानि पि पटिविद्धानि होन्ति तदाकारसङ्खारगहणतो**" ति यथावुत्ताधिप्पायेना ति "अनिच्चं" ति आदिना सङ्खारेसु" ति आदिना व वुत्तप्पकाराधिप्पायेन। विसुं ति सङ्खारेहि विनिवत्तेत्वा।

लोकुत्तरकुसलपकिण्णककथावण्णना

पञ्चधा उद्दिसति पञ्चुपादानक्खन्धे अज्झत्तदुकवसेन रूपदुकवसेन च भिन्दित्वा अभिन्दित्वा च निमित्तवचनेनेव उद्दिसति पवत्तस्स पि सङ्खारनिमित्तभावानतिवत्तनतो वुट्ठातब्बतासामञ्ञतो च। तेनेव उप्पादिन्नानुपादिन्नवसेन पवत्तं द्विधा कत्वा निद्दिसित्वा पि "अयं ताव निमित्ते विनिच्छयो" ति निमित्तवसेनेव निगमेति। एत्थ च निमित्तं अज्झत्तबहिद्धा, पवत्तं पन अज्झत्तमेवा ति **अयमेतेसं विसेसो**। **बोज्झङ्गादिविसेसं** ति बोज्झङ्गझानङ्गमग्गङ्गानं असदिसतं। **असमापज्जितुकामतासङ्खाता** वितक्कादिविरागभावना **असमापज्जितुकामता विरागभावना**। **इतरस्सा** ति पादकज्झानादिकस्स। **अतब्भावतो** यथावुत्तविरागभावनाभावस्स अभावतो। **इदं वुत्तं होति**—यथा मग्गासन्नाय विपस्सनाय सोमनस्ससहगतत्ते मग्गस्स पठमादिज्झानिकता च

ततो ततो दुतियादिपादकज्झानतो उप्पन्नस्स ससङ्खारुपेक्खाञाणस्स पादकज्झानातिक्कन्तानं अङ्गानं असमापज्जितुकामताविरागभावनाभावतो इतरस्स च अतब्भावतो।

तेसम्पि वादेसु....प०.."**विपस्सना व नियमेतीति** वेदितब्बा । कस्मा ? विपस्सनानियमेनेव हि पठमत्थेरवादे पि अपादकपठमज्झानपादकमग्गा पठमज्झानिका व होन्ति, इतरे च पादकज्झानविपस्सनानियमेहि तं-तं-झानिका । एवं सेसवादेसु पि विपस्सनानियमो यथासम्भवं योजेतब्बो ।

[११६–म०] **पकिण्णकसङ्खारे** ति पादकज्झानतो अञ्ञसङ्खारे। तेन पादकज्झानसङ्खारेसु सम्मसितेसु वत्तब्बमेव नत्थीति दस्सेति। **तत्रापी** ति दुतियत्थेरवादे पि। तं-तं-झानिकता तं-तं-सम्मसितसङ्खारविपस्सनानियमेहि होति। तत्रा पि हि विपस्सना तं-तं-विरागाविरागभावनाभावेन सोमनस्ससहगता उपेक्खासहगता च हुत्वा झानङ्गादिनियमं मग्गस्स करोतीति **एवं विपस्सनानियमो वुत्तनयेनेव वेदितब्बो**।

तं ति तं-तं-झानसदिसभवनं। **स्वायमत्थो** [८६–सी०] पादकज्झानसम्मसितज्झानुपनिस्सयेहि विना अज्झासयमत्तेन असिज्झना उपनिस्सयेन विना सङ्कप्पमत्तेन सकदा-

---

[१२३-म०] उपेक्खासहगतत्ते पंचमज्झानिकता एव च तब्बसेन च बोज्झङ्गादीनं विसेसो ति तेसं नियमे आसन्नकारणं पधानकारणञ्च वुट्ठानगामिनिविपस्सना, न एवं पादकज्झानादयो ति।

इदानि अपादकपठमज्झानपादकानं पकिण्णकसङ्खारपठमज्झानानि सम्मसित्वा निब्बत्तितानञ्च मग्गानं एकन्तेन पठमज्झानिकभावतो विपस्सनानियमो येवेत्थ एकन्तिको पधानञ्चा ति इममत्थं विभावेन्तो **विपस्सनानियमेनेवा** ति आदिमाह। तत्थ **इतरे** ति दुतियज्झानिकादिमग्गा। पादकज्झानातिक्कन्तानं अङ्गानं असमापज्जितुकामताविरागभावनाभूता वुट्ठानगामिनिविपस्सना अधिट्ठानभूतेन पादकज्झानेन आहितविसेसा मग्गस्स झानङ्गादिविसेसनियामिका होती ति "**पादकज्झानविपस्सनानियमेही** ति वुत्तं। यथा च अधिट्ठानभूतेन पादकज्झानेन, एवं आरम्मणभूतेन सम्मसितज्झानेन उभयसब्भावे अज्झासयवसेन आहितविसेसा विपस्सना नियमेती ति आह "एवं सेसवादेसु पि....प०....योजेतब्बो" ति।

पादकज्झानसङ्खारेसू ति पठमज्झानसङ्खारेसु। "पठमज्झानं पादकं कत्वा" ति[१] हि वुत्तं। **तंतंविरागाविरागभावनाभावेना** ति वितक्कादीनं विरज्जनाविरज्जनभावनाभावेन। तेन आरम्मणज्झानस्स पि विपस्सनाय विसेसाधानं उपनिस्सयतमाह।

पादकज्झान-सम्मसितज्झानानि येव बोज्झङ्गादिविसेसानं उपनिस्सयो कारणं ति **पादकज्झान-**

---

१. अट्ठ० १८६।

गामिफलादीनं असिज्झनदीपकेन **नन्दकोवादेन**[1] दीपेतब्बो। तत्थ हि सोतापन्नाय पि परिपुण्णसङ्कप्पभावं वदन्तेन भगवता यस्स यस्स उपनिस्सयो अत्थि, तस्स तस्सेव अज्झासयो नियामको, नाञ्ञस्सा ति तेन तेन परिपुण्णसङ्कप्पता होति, न ततो परं सङ्कप्पसब्भावे पि असिज्झनतो ति अयमत्थो दीपितो होति। एवमिधा पि यस्स यस्स दुतियादिझानिकस्स मग्गस्स यथावुत्तो उपनिस्सयो अत्थि, तस्स तस्सेव अज्झासयो नियामको, नाञ्ञस्स सति पि तस्मिं असिज्झनतो। इमस्मिं पन वादे पादकसम्मसितज्झानुपनिस्सयसब्भावे अज्झासयो एकन्तेन होति, तं-तं-फलूपनिस्सयसब्भावे तं-तं-सङ्कप्पो विया ति तदभावाभावतो अज्झासयो नियमेतीति वुत्तं।

यस्मिं पन पादकज्झानं नत्थी ति चतुत्थज्झानिकवज्जानं पादकानि लोकियज्झानानि सन्धाय वुत्तं। अप्पनाप्पत्ति च ओळारिकङ्गातिक्कमनुपनिस्सयाभावे पञ्चहि अङ्गेहि विना न होतीति **"सोमनस्ससहगतमग्गो होती"** ति आह। **उपेक्खासहगतमग्गो** ति एतेन चतुत्थज्झानिकता पि समाना अनुसयसमुग्घाटनसमत्थस्स न सङ्खारावसेसता ति दस्सेति। **ते च वादा न विरुज्झन्ति** अज्झासयवसेन पञ्चमज्झानिकताय पठमादिज्झानिकताय च सम्भवतो ति अधिप्पायो। अज्झासयो च सात्थको होति, अञ्ञथा पादकसम्मसितज्झानेहेव नियमस्स सिद्धत्ता अज्झासयो नियामको वुच्चमानो निरत्थको सिया ति। **इध पन** अट्ठसालिनिया नियामने एकन्तिकं विपस्सनासङ्खातं **अत्थमेव** उद्धरित्वा "तेसम्पि वादेसु अयं ... प ... विपस्सना व नियमेती" ति [११७–म०] वदन्तेन तयोपेते वादे विपस्सना व नियमेतीति दस्सितं। तं-तं-वादानं हि विपस्सनासहितानमेव सिद्धि, नाञ्ञथा ति दस्सितं ति।

पवेधती ति गोत्रभुस्स पच्चयो भवितुं न सक्कोतीति अत्थो। यदि पञ्चमचित्तक्खणे जवनं पतितं नाम होति, कथं तदा गोत्रभु तदनन्तरञ्च मग्गो जवनस्स पतित-

सम्मसितज्झानुपनिस्सयो, तस्स सब्भावे। **तदभावाभावतो** ति तस्स अज्झासयस्स अभावाभावतो।

चतुत्थज्झानिकस्स मग्गस्स आरुप्पे अरूपज्झानमेव पादकं सिया ति आह **"चतुत्थज्झानिकवज्जानं"** ति। अरियमग्गस्स ओळारिकङ्गातिक्कमनूपनिस्सया विपस्सनाय अधिट्ठानारम्मणभूता दुतियज्झानादयो। पञ्चहि **अङ्गेही** ति पञ्चहि झानङ्गेहि। "तंतंवादेहि पञ्ञापियमानानि पादकज्झानादीनि वादसहचारिताय 'वादा' ति वुच्चन्ती" ति अधिप्पायेन **"तयो पेते वादे"** ति आह। वदन्ति एतेही ति वा वादकरणभूतानि पादकज्झानादीनि वादा।

[१२४–म०] विपाकसन्तानस्स ... प० ... **सुसङ्खतत्ता** ति एतेन यस्मिं सन्ताने कम्मं उप्प-

1. म० ३ : ३६१।

क्खणे उप्पज्जतीति ? अपुब्बस्स जवनन्तरस्स पतितताभावतो। तदेव हि जवनं अनेकक्खत्तुं पवत्तमानं पतितं सिया ति, गोत्रभु पन आरम्मणन्तरे उप्पन्नं अपुब्बं जवनं, तथा मग्गो भूमन्तरतो चा ति। ननु च सत्तमजवनचेतनाय बलवताय उपपज्ज-वेदनीयभावो होति आनन्तरियता पी ति, तत्थायं अधिप्पायो सिया "पटिसन्धिया अनन्तर-पच्चयभाविनो विपाकसन्तानस्स अनन्तरपच्चयभावेन अन्तिमजवनचेतनाय सुसङ्खतत्ता सा सत्तमजवनचेतना उपपज्जवेदनीया आनन्तरिका च होति, न अपतितजवनचेतना विय बलवताया" ति।

पुन **अनुलोमं[1] तं[1] अनुबन्धेय्या** ति गोत्रभुस्स हि सङ्खारारम्मणत्ते सति तदपि अनुलोममेवा ति पुरिम-अनुलोमं विय तं तदपि अञ्ञं अनुलोमं अनुबन्धेय्य, न मग्गो ति मग्गवुट्ठानमेव च न भवेय्य अत्तनो सदिसालम्बनस्स आवज्जनट्ठानियस्स पच्चयस्स [८७-सी०] अलाभा। अप्पहीनभावेन[2] पञ्चसु उपादानक्खन्धेसु अनुसयिता किलेसा सा भूमि एतेहि लद्धा ति कत्वा **भूमिलद्धा**। वट्टं सिनोन्ति बन्धन्तीति कत्वा **वट्टसेतू** च, तेसं **समुग्घातकरणं** ति पि एतदेवस्स लोभक्खन्धादिपदालनं वुच्चति। **तं** ति पवत्तं। **एकं भवं** ति अनागामिनो अनेकक्खत्तुञ्च तत्थेव उपपज्जन्तस्स हेट्ठा अनागमनवसेन एको भवो ति गहेत्वा वुत्तं।

इमस्स पनत्थस्सा ति यथावुत्तस्स उपादिन्नकपवत्ततो वुट्ठानस्स। अपायेसु सत्तमभवतो उद्धं सुगतियञ्च विपाकदायकस्स अभिसङ्खारविञ्ञाणस्स पच्चयघातो सोतापत्तिमग्ग-ञाणेन अभिसङ्खारविञ्ञाणस्स निरोधो दट्ठब्बो। **द्वीसु भवेसू** ति अनागामिमग्गे अभाविते

ज्जति, तत्थ उप्पज्जमानमेव किञ्चि विसेसाधानं करोती ति दीपेति। यतो तस्मिं येव सन्ताने तस्स विपाको, नाञ्ञत्थ।

पुरिमानुलोमं विय तं ति यथा गोत्रभुट्ठाने उप्पन्नानुलोमतो पुरिम-अनुलोमञाणं तं गोत्रभुट्ठाने उप्पन्नानुलोमं अनुबन्धति, एवं। **तदपी** ति गोत्रभुट्ठाने उप्पन्नानुलोमञाणम्पि अञ्ञं अनुलोम-ञाणमेव अनुबन्धेय्य, तस्स अनन्तरं उप्पज्जेय्य। **सा भूमी** ति सा पञ्चुपादानक्खन्धसङ्खाता किलेसानं उप्पत्तिट्ठानताय भूमि। **एको भवो** ति **गहेत्वा वुत्तं** ति एतेन सत्त भवे द्वे भवे ति इदम्पि अधिप्पायवसेन नेतब्बत्थं, न यथारुतवसेना ति दस्सेति।

तत्थायं अधिप्पायो—एकवारं कामावचरदेवेसु एकवारं मनुस्सेसू ति एवम्पि मिस्सितुप-पत्तिवसेन तेसु एकिस्सा एव उपपत्तिया अयं परिच्छेदो। यं पन "न ते भवं अट्ठममादि-

---

१-१. अनुलोमतं—सी०।
२. अप्पहीण०—सी०।

सकदागामिस्स कामधातुयं ये द्वे भवा उप्पज्जेय्युं, तेसू ति अत्थो। **चलती** ति एतेन चलनसभावमेव दस्सेति, न अचलनाभावं, तस्मा अचलनं दस्सेत्वा पुन चलनं दस्सेतुं **"तथागतस्स ही"** ति आदिमाह। ये पि वा कत्थचि चत्तारो पि मग्गे समानपटिपदे दिस्वा सभावतो [११८–म०] अचलनमेव गण्हेय्युं, तेसं तं गहणनिवारणत्थं "चलती" ति वुत्तं, न चलनावधारणत्थं ति युत्तं उभयदस्सनं। अथ वा यदि पि केसञ्चि चत्तारो पि मग्गा समानपटिपदा, तथा पि किलेसिन्द्रियेहि सिज्झमाना पटिपदा तेसं वसेन चलनपकतिका एवा ति "चलति" च्चेव वुत्तं, न "न चलती" ति।

लोकुत्तरकुसलपकिण्णककथावण्णना निट्ठिता॥

पठममग्गवीसतिमहानयवण्णना

यस्स पुब्बभागे "मग्गं भावेमी" ति अज्झासयो पवत्तो, सो मग्गं भावेति। एवं सब्बत्थ अज्झासयविसेसेन तं-तं-भावनाविसेसो दट्ठब्बो।

छन्दाधिपतेय्यं ति आदीसु एकचित्तक्खणे वत्तमानेसु धम्मेसु कथं छन्दस्स तंसह-जातस्स अधिपतिभावो वीरियादीनञ्चा ति? उपनिस्सयवसेन। यस्स हि सचे छन्दवतो

यन्ती" ति[१] वुत्तं, तम्पि कामावचरभवं येव सन्धायाह। महग्गतभवानं परिच्छेदो नत्थीति वदन्ति। तथा "ठपेत्वा द्वे भवे" ति एत्था पि कामावचरदेवमनुस्सभवानं मिस्सकवसेनेव, तस्मा **कामधातुयं ये द्वे भवा** ति कामावचरदेवमनुस्सवसेन ये द्वे भवा ति अत्थो। पुरिमविकप्पेसु पुग्गलभेदेन पटिपदा भिन्दित्वा कस्स चि चलतीति, कस्सचि न चलतीति कत्वा "चलति एवा" ति अवधारणमन्तरेन अत्थो वुत्तो। यस्मा पन **अट्ठकथायं**[२] **"यथा च पटिपदा, एवं अधिपति पि चलति एवा"** ति वुत्तं, तस्मा सब्बेसम्पि पटिपदासु अभेदेन गहितासु एकन्तेन चलनं सम्भवतीति "चलतिच्चेव वुत्तं, न न चलती" ति ततियविकप्पो चलनावधारणो वुत्तो।

लोकुत्तरकुसलपकिण्णककथावण्णना निट्ठिता।

पठममग्गवीसतिमहानयवण्णना

झानमग्गादिपरियायेहि कथिते बोज्झनका ति अधिप्पेता, विसेसतो पुब्बभागे "झानं भावेमि मग्गं भावेमी" ति पवत्तज्झासया होन्तीति अधिप्पायेन **"यस्स पुब्बभागे"** ति आदिमाह।

[१२५–म०] **उपनिस्सयवसेना** ति तथा चित्तप्पवत्तिसङ्खातेन पुब्बभागाभिसङ्खारेन।

---

१. खु० १ : ३०२, सुत्तनिपाते। २. अट्ठ० १९२।

कुसलं निप्फज्जति, "अहं निप्फादेस्सामी" ति पवत्तमानस्स कुसलं निप्फन्नं तस्स तंसहजातो छन्दो तेन पुरिमुपनिस्सयेन विसिट्ठो सहजातधम्मे अत्तनो वसे वत्तेति। तस्मिं च पवत्तमाने ते पवत्तन्ति, निवत्तमाने निवत्तन्ति, तदनुरूपबला च होन्ति राजपुरिसा विया ति। एवं वीरियादीसु। सेसधम्मानं पन कत्थचि वुत्तप्पकारप्पवत्तिसब्भावे ति अतंसभावत्ता अधिपतिभावो नत्थीति दट्ठब्बो।

दुतिमग्गवण्णना

आ-कारस्स रस्सत्तं कत्वा अञ्ञिन्द्रियं वुत्तं आ-कारो च धम्ममरियादत्थो।

ततियचतुत्थमग्गवण्णना

मग्गङ्गानि न पूरेन्ति अकिच्चकत्ता सम्मादिट्ठिया ति अधिप्पायो। मारेन्तो गच्छतीति हि मग्गो, न चेताय मारेतब्बं अत्थीति।

मानस्स [११९–म०] दिट्ठिसदिसा पवत्ति अहमस्मीति पवत्तमानस्स दिट्ठिट्ठाने ठानं। **आलोकस्सेव पवत्तिकालो विया** ति चिरप्पवत्तिं सन्धायाह। एकदेससामञ्ञेन हि यथाधिप्पेतेन उपमा होतीति। **खारे वा** ति कट्ठादीनं खारच्छारिकायं। **सम्मद्दित्वा** ति किलेदेत्वा। **छन्दो** ति तण्हा। **अनुसयो** ति तण्हा मानानुसयो च। एतस्मिञ्च

तेनेवाह "यस्स ही" ति आदि। **तदनुरूपबला** ति अधिपतिपच्चयलाभेन सत्तिविसेसयोगमाह। यदि पुब्बभागाभिसङ्खारवसेन छन्दादीनं अधिपतिभावो, किमत्थमेते येव एवं वुत्ता, ननु सद्धादीनम्पि पुब्बभागाभिसङ्खारो लब्भती ति आह "सेसधम्मानं" ति आदि। **अतंसभावत्ता** ति सम्पयुत्तेहि सातिसयमनुवत्तितब्बभावरहितत्ता। किञ्चापि हि सद्धादयो पि इन्द्रियपच्चयताय सम्पयुत्तेहि अनुवत्तयन्ति, एकस्मिं पन चित्तुप्पादे समधुरेन अञ्ञेन विना सम्पयुत्तेहि अनुवत्तनीयभावो न तेसं यथा छन्दादीनं ति ते येव अधिपतिभावेन वुत्ता। एवञ्च कत्वा इन्द्रिय-सहजाताधिपतिपच्चयानं विसेसो परिब्यत्तो होति।

चतुमग्गनयसहस्सवण्णना

मानस्स दिट्ठिसदिसा पवत्ति। तथा हि सो अधिपति विय अञ्ञाधिपतिना दिट्ठिया सह नप्पवत्तती ति। **एकदेस**....प०....**उपमा होति**, न सब्बसामञ्ञेन, इतरथा सूरियत्थङ्गमने अन्धकारावत्थरणं विय अग्गमग्गतिरोधाने सच्चपटिच्छादकतमप्पवत्ति आपज्जेय्या ति अधिप्पायो। **अञ्ञमञ्ञं** ति अञ्ञे अञ्ञे। "आनीतं इदं सुत्तं" ति विभत्ति परिणामेतब्बा। **यथावुत्तनयेना** ति इमिस्सा अट्ठकथायं वुत्तनयेन। **न उपमाय वुत्तत्ता** ति इमस्मिं

सुत्ते असमूहतस्स गन्धस्स समुग्घाटनं[१] विय असमूहतमानादिसमुग्घातं दस्सेन्तेन अञ्ञ-मञ्ञे किलेसे पजहतीति दस्सितं ति आनीतं, न यथावुत्तनयेन उपमाय वुत्तत्ता ति दट्ठब्बं। [८८-सी०] निरन्तरं पवत्तमाने चित्ते तस्स संकिलेस-वोदानकरा सावज्जानवज्जा चेतसिका उप्पज्जमाना तस्सङ्गभूता अवयवा विय होन्तीति **"चित्तङ्गवसेना"** ति वुत्तं।

लोकुत्तरकुसलवण्णना निट्ठिता।

कुसलकथावण्णना निट्ठिता।

अकुसलपद-धम्मुद्देसवारो पठमचित्तकथावण्णना

कुसले[२] वुत्तनयं अनुगन्त्वा यथानुरूपं वेदितब्बताय **"वुत्तनयेना"** ति आह। गन्तब्बा-**भावतो** ति बुज्झितब्बाभावतो।

दिट्ठिया गतमत्तं ति दिट्ठिया गतिमत्तं गहणमत्तं। आसन्नकारणत्ता अयोनिसो-

---

सुत्ते न उपमाय वुत्तभावतो। **यथावुत्तनयेना** ति वा एतस्मिं सुत्ते वुत्तप्पकारेन नयेन इमिस्सा अट्ठकथायं उपमाय न वुत्तत्ता। **अवयवा विय होन्ति** येन ते चेतसि नियुत्ता, चित्तस्स एते ति च चेतसिका ति आदिना वुच्चन्ति, न पन "फस्सिका" ति आदिना ति दट्ठब्बं।

कुसलकथावण्णना निट्ठिता।

अकुसलपद-धम्मुद्देसवारो पठमचित्तवण्णना

खणत्तयस्स अकुसलेसु असम्भवतो समवायकालहेतुसमूहत्थो **समय**-सद्दो। लोभाभि-भूताय एव इट्ठारम्मणस्मिं [१२६-म०] इतरत्र च इट्ठाकारग्गहणवसेन सोमनस्ससहगतभावो ति एवमादिं सन्धाय **"यथानुरूपं"** ति वुत्तं। "किलेसातुरताय अनारोग्यट्ठेन किलेसवज्ज-सब्भावतो सावज्जट्ठेन अविज्जासम्भूतताय अकोसल्लसम्भूतट्ठेन अकुसलं" ति च "सावज्ज-दुक्खविपाकलक्खणं, अनत्थजननरसं, संकिलेसपच्चुपट्ठानं अयोनिसोमनसिकारपदट्ठानं, गारय्हभावतो वा सावज्जलक्खणं, संकिलेसभावरसं, अनिट्ठविपाकपच्चुपट्ठानं यथावुत्तपदट्ठानमेवा" ति च एवमादिना वुत्तनयेन अनुगन्तब्बताय वुत्तं **"वुत्तनयं अनुगन्त्वा"** ति।

गतं गमनं पवत्ती ति कत्वा वुत्तं **"गतमत्तं गतिमत्तं गहणमत्तं"** ति। दिट्ठिया हि गति पवत्ति एवा ति **आसन्नकारणत्ता** ति पदट्ठानताय। योनिसोमनसिकारो विय हि कुसलस्स अयोनिसोमनसिकारो अकुसलस्स अच्चासन्नहेतु। तथा हि सति पि असद्धम्मसवनादिकारणे अयोनिसो अनावज्जिते अववत्थापिते च नत्थि अकुसलप्पवत्ति। तथा च वक्खति अट्ठकथायं "अयोनिसो अकुसलं" ति। एतेन एकन्तकारणता च वुत्तत्था होति। पटिसङ्खा सीतादिखमनं

---

१. समुत्थानं-सी०। २. कुसलेसु-सी०।

मनसिकारस्स विसुं गहणं एकन्तकारणत्ता च। **सतिसंवरो** ति इध सीतादीहि फुट्ठस्स अप्पमज्जनं खमनं दट्ठब्बं। **पहानसंवरो** ति वीरियसंवरो।

अस्साददस्सनं ति अस्साददिट्ठि। फलट्ठेन पच्चुपट्ठानेन **असम्मापटिपत्तिपच्चुपट्ठानो मोहो**, सम्मापटिपत्तिपटिपक्खभावग्गहणाकारो वा। सब्बस्स लोभस्स अभिज्झाभावे सति पि विसेसयुत्ताय अभिज्झाय कम्मपथप्पत्ताय इधुप्पज्जमानाय लक्खणादिं दस्सेतुं **"सा परसम्पत्तीनं"** ति आदिमाह। अत्तनो परिणामनस्स पुरेचारिका तण्हाभिरति **अभिरति**।

[१२०-म०] **अनुपपरिक्खा** मोहो। मोहवसेन हि दिट्ठिवसेन वा अवत्थुस्मिं सानुनयो अधिमोक्खो उप्पज्जतीति। **असतियचित्ते** ति[1] अहिरिकादीहि आरक्खरहितचित्ते। **सतिरहितत्ता सतिपटिपक्खत्ता वा** ति एतेन सतिरहिता सतिपटिपक्खा च अकुसला खन्धा एव मिच्छासतीति दस्सेति। ते पन उपनाहादिप्पवत्तियं चिरकतादिसल्लक्खणे पटुसञ्ञासम्पयुत्ता दट्ठब्बा। **सदरथादिभावो** अविसेसेन किलेससम्पयोगतो वुत्तो लहुतादि-एकन्तपटिपक्खानं थिनमिद्धादीनं केसञ्चि इध अभावा। **अवूपसमो** ति असन्निसिन्नसभावमाह। **अनवट्ठानरसं** ति चलनकिच्चं। **चेतसो अवूपसमे** ति निप्फादेतब्बे

अप्पमादविहारो ति वुत्तं **"अप्पमज्जनं खमनं"** ति तेन सतिसंवरो ति इध खन्तिसंवरो वुत्तो ति अधिप्पायो इन्द्रियसंवरस्स वुत्तत्ता। **पहानसंवरो** ति **वीरियसंवरो**। सो हि "उप्पन्नं कामवितक्कं नाधिवासेति पजहती" ति आदिना[2] वुत्तो ति।

सम्मापटिपत्तिया पटिपक्खभावेन गहेतब्बताकारो मोहो **सम्मापटिपत्तिपटिपक्खभावग्गहणाकारो**। तेन हि निवुता न सम्मा पटिपज्जन्ति। **अभिज्झाय** विसेसयोगो **कम्मपथप्पत्ति**।

अनुपपरिक्खा मोहो। सो चेत्थ दिट्ठिरहितो वेदितब्बो। दिट्ठिसहितस्स पन दिट्ठिया अनुविधायकत्ता तग्गहणेनेव गहणं ति।

अवत्थुस्मिं ति असद्दहनीये वत्थुस्मिं। **सानुनयो अधिमोक्खो** ति मोहदिट्ठीनं सद्धापतिरूपतमाह। अहिरिकानोत्तप्पमोहादीहि पमज्जनतो **अहिरिकादीहि** कारणेहि। **आरक्खरहितचित्ते** ति चित्तस्स सतिविरहतं येव दस्सेति। आरक्खपच्चुपट्ठाना हि सतीति। एतेन "अस्सद्धियचित्ते अन्धबालचित्ते" ति पदद्वयं वुत्तत्थं होति। **उपनाहादी** ति [१२७-म०] आदिसद्देन रागादयो सङ्गय्हन्ति। रागादीनं परियुट्ठानादिसभावताय **"अविसेसेना'** ति वुत्तं विसेसस्स एकच्चस्स असम्भवतो। **इधा** ति, इमस्मिं चित्ते। **निप्फादेतब्बे पयोजने** भुम्मं

---

1. असति चित्ते ति–सी०।

2. म० १ : १६, अं० २ : १८।

पयोजने भुम्मं, अवूपसमपच्चयभूतं आरम्मणं वा "अवूपसमो" ति वुत्तं।

धम्मुद्देसवारकथावण्णना निट्ठिता।

निद्देसवारकथावण्णना

सहजातधम्मेसु अकम्पनं न कोसज्जेसु अकम्पनं विय तप्पटिपक्खभावतो दट्ठब्बं, तं-तं-पापकिरियाय[1] उस्साहनवसेन पन थिरता तत्थ अकम्पनं।

दिट्ठिया विरूपं फन्दितं ति तथा तथा सस्सतादिवसेन पवत्ता दिट्ठि एव वुच्चति। **तरन्ती** ति तित्थे विय पिलवन्ति। **विपरियेसतो** ति वत्थुस्स विपरीततो।

सभावपटिच्छादनवसेन पकति-अत्तादि-असन्तगहणस्स अनिच्चादीनं निच्चादिविसमगहणस्स च सञ्ञादिविपरियेसस्स निस्सयत्ता **"असन्तं असमञ्च बुज्झती"** ति वुत्तं।

दुतियचित्तवण्णना

किञ्चा पि....प....परामसन्तस्स उप्पज्जती ति पुरिमचित्तेन अविसेसं दस्सेति। अनुस्साहनावसीदनभावेन संहतभावो **थिनं**।

ततियचित्तवण्णना

इध मानेन सद्धिं पञ्च अपण्णकङ्गानी ति अविरज्झनकङ्गानि उपत्ति-अरहङ्गानि होन्तीति अत्थो दट्ठब्बो। मानस्स अनियतत्ता न [१२१-म०] नियतयेवापनका ति। **पट्ठाने**[2] हि

"चम्मस्मिं दीपिनं हन्ती" ति[3] विय **आरम्मणं वा अवूपसमो** फलूपचारेन "सेम्हो गुळहो" विय।

धम्मुद्देसवारकथावण्णना निट्ठिता।

निद्देसवारकथावण्णना

सभावपटिच्छादवसेन **पकत्ति-अत्तादि-असन्तग्गहणस्स** निस्सयत्ता निमित्तत्ता **असन्तं बुज्झति**, निच्चादिविसमग्गहणस्स सञ्ञादिविपरियेसस्स निस्सयत्ता **असमं बुज्झती** ति मोहो वुत्तो निमित्तस्स कत्तुभावेन उपचारितत्ता, अयञ्च अत्थो दिट्ठिसहितमोहवसेन दट्ठब्बो। एत्थ च **पकती** ति कापिलानं पधानं।

ततियचित्तवण्णना

अपण्णकपदं विय अविरज्झनकपदम्पि कदाचि नियतभावं दीपेय्या ति अनियततं दीपेतुं "उप्पत्ति-अरहङ्गानी" ति वुत्तं मानस्स अनियतत्ता। यदि हि मानो नियतो सिया,

---

१. ०क्रियाय–सी०। २. अभि० २०९ पट्ठाने ततियभागे। ३. वजिर टी० ५७।

"संयोजनं धम्मं पटिच्च संयोजनो धम्मो उप्पज्जति हेतुपच्चया" ति एत्थ "चतुक्खत्तुं कामरागेन तिक्खत्तुं पटिघेन च मानो विचिकिच्छा भवरागो तयोपेते सकदागामिनो संयोजनानं संयोजनेहि दसविधा योजना" ति [८९–सी०] दस्सिताय दसविधाय योजनाय "कामरागसंयोजनं पटिच्च मानसंयोजनं अविज्जासंयोजनं' ति वत्वा "कामरागसंयोजनं पटिच्च अविज्जासंयोजनं" ति "मानसंयोजनं पटिच्च भवरागसंयोजनं अविज्जासंयोजनं" ति च वत्वा "भवरागसंयोजनं पटिच्च अविज्जासंयोजनं" ति वुत्ताहि योजनाहि मानस्स अनियतभावो पकासितो, तथा किलेसदुके पि।

इध च वक्खति "दसविधा संयोजनानं योजना, तथा दसविधा किलेसानं" ति

कामरागस्स मानरहिता पवत्ति न सिया, तथा भवरागस्स। एवं सति पट्ठाने चतुक्खत्तुं कामरागेन योजना न सिया, तिक्खत्तुं येव सिया, भवरागमूलिका च न सिया, एवञ्च संयोजनानं संयोजनेहि अट्ठविधेन योजना सिया, न दसविधा दस्सिता ति यथावुत्ताहि योजनाहि मानस्स अनियतभावो पकासितो। अथ वा मानेन सद्धिं पञ्च होन्ति यथावुत्तानि अपण्णकङ्गानि, किं पन होन्ती ति अपेक्खायं येवापनका ति विदितोवायमत्थो। येवापनकानं हि पञ्चभावो इध विधीयति, न अपण्णकङ्गानं ति सो यथा होति, तथा योजेतब्बं। किलेसदुके पटिच्चवारादीसु "किलेसं धम्मं पटिच्च किलेसो धम्मो उप्पज्जति हेतुपच्चया" ति आदीसु[1] "लोभं पटिच्च मोहो मानो थिनं उद्धच्चं अहिरिकं अनोत्तप्पं। लोभं पटिच्च मोहो मानो [१२८–म०] उद्धच्चं अहिरिकं अनोत्तप्पं। लोभं पटिच्च मोहो थिनं उद्धच्चं अहिरिकं अनोत्तप्पं। लोभं पटिच्च मोहो उद्धच्चं अहिरिकं अनोत्तप्पं" ति[2] विभत्तत्ता "तथा किलेसदुके पी" ति वुत्तं। दिट्ठिविप्पयुत्तससङ्खारिका सङ्खारिकचित्तवसेन हि अयं पाठभेदो ति।

"कामरागो चतुधा एकतो उप्पज्जति, पटिघो तिधा, मानो एकधा, तथा विचिकिच्छा भवरागो ति उद्दिसित्वा कामरागो मानसंयोजन-अविज्जासंयोजनेहि चेव अविज्जासंयोजनमत्तेनेव च सद्धिं मानो भवरागाविज्जासंयोजनेहि सद्धिं भवरागो अविज्जासंयोजनेन सद्धिं" ति अट्ठकथाकण्डवण्णनायं[3] वक्खमानत्ता "इध च वक्खती" ति आदि वुत्तं। तत्थेव "लोभो छधा एकतो उप्पज्जति, पटिघो द्वेधा, तथा मोहो" ति[4] उद्दिसित्वा लोभो असङ्खारिको दिट्ठिविप्पयुत्तो मोह-उद्धच्च-अहिरिकानोत्तप्पेहि, ससङ्खारिको मोहथिन-उद्धच्च-अहिरिकानोत्तप्पेहि, असङ्खारिको एव मोहमान-उद्धच्च-अहिरिक-अनोत्तप्पेहि ससङ्खारिको येव च मोहमानथिन-उद्धच्च-

---

१. अभि० २५४ पिट्ठे चतुत्थे भागे पट्ठाने। २. अभि० २५४ पिट्ठे पट्ठाने चतुत्थे भागे।
३. अट्ठ० ३३५। ४. अट्ठ० ३३६।

च। उन्नमनवसेनेव **सम्पग्गहरसो,** न वीरियं विय तं-तं-किच्चसाधने अब्भुस्साहनवसेन। ओमानस्स पि अत्तानं अवंकत्वा गहणं सम्पग्गहो ति दट्ठब्बो।

चतुत्थचित्तवण्णना

परिहरणत्थं विक्खित्ता हुत्वा उस्साहं जनेन्ता **"परिहरणत्थं स-उस्साहा"** ति वुत्ता, तेसं।

नवमचित्तवण्णना

विसप्पन-अनिट्ठरूपसमुट्ठानवसेन[1] अत्तनो पवत्ति-आकारवसेन च **विसप्पनरसो।** दोसो उपयोगफलेसु अनिट्ठत्ता विससंसट्ठपूतिमुत्तं विय दट्ठब्बो। **अनभिरतिरसा** ति एवं-पकारेसु पटिक्खेपेन रसवचनेसु तं-तं-पटिपक्खकिच्चगहणं दट्ठब्बं। कटुकाकारगति **कटुकञ्चुकता, अत्तसम्पत्ति** आवासादि, परायत्तताय **दासब्यं विय दट्ठब्बं।** यथा हि दासब्ये सति दासो परायत्तो होति, एवं कुक्कुच्चे सति तंसमङ्गी। न हि सो अत्तनो धम्मताय पवत्तितुं सक्कोति कुसले ति। अथ वा कताकताकुसलकुसलानुसोचने आयत्त-ताय तदुभयवसेन कुक्कुच्चेन तंसमङ्गी होतीति दासब्यं विय तं होति।

[१२२–म०] **विरुद्धाकारो** ति विरुद्धस्स पुग्गलस्स, चित्तस्स वा आकारो विरुद्धभावो। तेन विरुज्झनं विरोधो ति दस्सेति। **वचनं** ति एतं निदस्सनमत्तं दट्ठब्बं। सब्बमेव हि किच्चं एतेन करियमानं सुरोपितं सुजनितं न होतीति। रोपसद्दवचनत्थमेव केचि वण्णेन्ति। **तं अप्प-**

अहिरिक-अनोत्तप्पेही" ति[2] वक्खमानत्ता **"तथा दसविधा किलेसानं"** ति वुत्तं। **"अहं"** ति गहणताय अवंकत्वा गहणम्पि **"सम्पग्गहो"** ति वुत्तं।

चतुत्थचित्तवण्णना

उस्साहं जनेन्ता ति एत्थ चित्तपयोगसङ्खातो सङ्खारो एव उस्साहो, न विरियुस्साहो।

नवमचित्तवण्णना

विसप्पनानिट्ठरूपसमुट्ठानं येन कुपितस्स सकलसरीरं कम्पति, कुपिताकारो पञ्ञा-यति। एतेन सम्पत्ति-अत्थो रसो दस्सितो होति, **पवत्ति-आकारवसेन वा विसप्पनरसो।** तथा हि यस्स कुप्पति, तस्स अमित्तस्स सम्पत्ति येभुय्येन पटिघुप्पत्तिहेतु होतीति। एतेन किच्चट्ठो रसो वुत्तो होतीति।

वचनत्थमेव वचनपरियायमेव।

---

1. विसप्पना०—सी०। 2. अट्ठ०—३३६।

माणं ति कोधस्स तथापवत्तनसभावाभाव। अञ्ञेन केनचि कारणेन परिपुण्णता सिया ति सन्धाय वुत्तं।

एकादसमचित्तवण्णना

विगता चिकिच्छा ति चिकिच्छितुं दुक्करताय वुत्तं, न सब्बथा चिकिच्छाभावा विचिकिच्छाया ति तदत्थं दस्सेति।

निच्छयाभावा असण्ठहनतो चेतसो पवत्तिपच्चयमत्तताय **"पवत्तिट्ठितिमत्तं"** ति वुत्तं।

एकं आकारं गन्तुं असमत्थताय अत्तनो आमुखं सप्पनतो **ओसक्कति**।

द्वादसमचित्तवण्णना

उद्धच्चं अत्तनो गहिताकारे एव ठत्वा भमतीति **एकारम्मणस्मिं येव विप्फन्दनं** होति। विचिकिच्छा पन यदि पि रूपादीसु एकस्मिञ्ञेवारम्मणे उप्पज्जति, तथा पि "एवं नु खो, इदं नु खो" ति उप्पज्जमाना "ननु खो, अञ्ञं नु खो" ति अञ्ञं गहेतब्बाकारं अपेक्खतीति **नानारम्मणे** चलनं होति।

"**एवंसम्पदमिदं वेदितब्बं**" ति एत्तावता इमस्मिं चित्तद्वये वुत्तपकिण्णकं दस्सेत्वा द्वादससु दस्सेतुं **"सब्बेसु पी"** ति आदिमाह। [९०–सी०] कुसलेसु पि आरम्मणाधिपतिं अनुद्धरित्वा सहजाताधिपतिनो एव उद्धटत्ता इधा पि सो एव उद्धरितब्बो सिया ति **"सहजाताधिपति लब्भमानो पि न उद्धटो"** ति वुत्तं नारम्मणाधिपतिनो अलब्भमानत्ता। सो पि हि अट्ठसु लोभसहगतेसु लब्भतीति। **सेसो पी** ति वीमंसतो अञ्ञो पि सहजाताधिपति नत्थि, यो उद्धरितब्बो सिया। आरम्मणाधिपतिम्हि वत्तब्बमेव नत्थि। **कञ्चि धम्मं** ति छन्दादीसु एकम्पि सहजातं। कुसलत्तिके ताव पटिच्चवारादीसु "न हेतुपच्चया अधिपतिपच्चया" ति एकस्स पि [१२३–म०] पञ्हस्स अनुद्धटत्ता

एकादसमचित्तवण्णना

[१२९–म०] **निच्छयाभावा** ति अधिमोक्खाभावा। **असण्ठहनतो** ति सन्तानवसेन एकस्मिं आरम्मणे अनवट्ठानतो।

द्वादसमचित्तवण्णना

सहजाताधिपति नत्थि "छन्दवतो चे विचिकिच्छा उप्पज्जति, सा मय्हं उप्पज्जेय्या"

पट्ठाने पटिसिद्धता वेदितब्बा। अञ्ञथा हि "अकुसलं धम्मं पटिच्च अकुसलो धम्मो उप्पज्जति न हेतुपच्चया अधिपतिपच्चया" ति[1] एतस्स वसेन "एकं" ति वत्तब्बं सिया।

दस्सनेन पहातब्बाभावतो ति दस्सनेन पहातब्बस्स अभावतो, दस्सनेन पहातब्बेसु वा अभावतो। एतेन पटिसन्धि-अनाकड्ढनतो दस्सनेन पहातब्बेसु अनागमनं ति तत्थ अनागमनेन पटिसन्धि-अनाकड्ढनं साधेति। अनाकड्ढनतो अनागमनं पन साधेतुं **"तेसु ही"** ति आदिमाह। एत्थेव पटिसन्धिदानं भवेय्य।

तथा च सति दस्सनेन पहातब्बं सिया अपायगमनीयस्स दस्सनेन पहातब्बभावतो।

ति आदिप्पवत्तिया अभावा। **अनुद्धटत्ता पटिसिद्धता,** यथाधम्मसासने अवचनम्पि अभावं दीपेति।

अवचनतो ति अ-कारस्स तदञ्ञवचनतं दस्सेति। एतेन च दस्सनेन पहातब्बेसु अभाव-वचनेन कारणसिद्धिया फलसिद्धीति तत्थ अभावस्स कारणमेव ताव दस्सेतुं **"पटिसन्धि-अनाकड्ढनतो"** ति वुत्तं। तेन तंसभावता तस्स चित्तुप्पादस्स वुत्ता होति। ततो च **"बलवं पटिसन्धिं आकड्ढति, दुब्बलं नाकड्ढती"** ति इदं पटिसन्धिदानसभावेसु। यस्स पन पटिसन्धिदानसभावो एव नत्थि, न तस्स बलवभावो पटिसन्धि-आकड्ढने कारणं ति अयमत्थो दस्सितो होति। अनाकड्ढनं साधेति "यदि हि आकड्ढेय्या" ति आदिना। तस्मा च नागतं, तस्मा नाकड्ढतीति अधिप्पायो। "यस्मा पन तं पटिसन्धिदानं नत्थि, तस्मा नागतं" ति वुत्तत्ता **"अनाकड्ढनतो अनागमनं साधेतुं"** ति वुत्तं।

अपायगमनीयस्सा ति अपायं गमेती ति अपायगमनीयं, तंसभावं ति अत्थो। पटि-सन्धि-आकड्ढने सति उद्धच्चसहगतं एकन्तेन अपायगमनीयं सिया। तेन वुत्तं अट्ठकथायं[2] **"इतरस्सा पि एत्थेव पटिसन्धिदानं भवेय्या"** ति न हि अकुसलपटिसन्धि सुगतियं सम्भवतीति। "चतूहि अपायेहि च विप्पमुत्तो[3] अविनिपातधम्मो" ति[4] वचनतो अपायगमनीयञ्च दस्सनेन पहातब्बं। तेनाह "अपायगमनीयस्स दस्सनेन पहातब्बत्ता" ति। न चेतं दस्सनेन पहातब्बं, न सो तस्स अपायगमनीयो रागो दोसो मोहो तदेकट्ठा च किलेसा ति एतेन सङ्गहो ति सक्का वत्तुं नियोगतो भावनाय पहातब्बभावेन वुत्तत्ता। वुत्तं हेतं "कतमे धम्मा भावनाय पहातब्बा, उद्धच्चसहगतो चित्तुप्पादो" ति[5]।

---

१. अभि० ३२ पट्ठाने पठमभागे। २. अट्ठ० २११।
३. खु० १ : ३०३ सुत्तनिपाते। ४. सं० २-३ : ५८ सं० ४ : २९२,३०४।
५. अभि० १ : २९८ ध० संगणियं।

न चेतं दस्सनेन पहातब्बं सिया, तस्मा दस्सनेन पहातब्बविभङ्गे नागतं ति अधिप्पायो।

कथं पनेतं ञायति "पटिसन्धि-अनाकड्ढनतो दस्सनेन पहातब्बेसु अनागमनं" ति? दस्सनेन पहातब्बानञ्ञेव नानाक्खणिककम्मपच्चयभावस्स वुत्तता। दुविधा हि अकुसला दस्सनेन पहातब्बा भावनाय पहातब्बा ति तत्थ भावनाय पहातब्बचेतनानं नानाक्खणिककम्मपच्चयभावो न वुत्तो, इतरासञ्ञेव वुत्तो। "भावनाय पहातब्बो धम्मो नेव दस्सनेन न भावनाय पहातब्बस्स धम्मस्स कम्मपच्चयेन पच्चयो" ति[1] एत्थ हि सहजातमेव विभत्तं, न नानाक्खणिकं ति। तथा पच्चनीये पि "भावनाय पहातब्बो धम्मो नेव दस्सनेन न भावनाय पहातब्बस्स धम्मस्स आरम्मणपच्चयेन पच्चयो। सहजातपच्च-उपनिस्सयपच्च-पच्छाजातपच्चयेन[2] पच्चयो" ति[3] एत्तकमेव वुत्तं, न वुत्तं "कम्मपच्चयेन पच्चयो" ति इतरत्थ च वुत्तं। उद्धच्चसहगता च चेतना भावनाय पहातब्बेसु एव आगता ति नानाक्खणिककम्मपच्चयो न सिया

[१३०-म०] "कुसलाकुसलं कम्मं विपाकानं खन्धानं कटत्ता च रूपानं कम्मपच्चयेन पच्चयो" ति[4] वुत्तकम्मपच्चयभावो नानाक्खणिककम्मपच्चयभावो। सो च यदि उद्धच्चसहगतं पटिसन्धिं आकड्ढेय्य, तस्सा पि सिया। तथा च सति उद्धच्चसहगतं दस्सनेन पहातब्बं सिया दस्सनेन पहातब्बानं येव नानाक्खणिककम्मपच्चयभावस्स वुत्तत्ता। न चेतं दस्सनेन पहातब्बं ति सब्बं पुब्बे विय आवत्तति।

सहजातमेव विभत्तं ति यथा दस्सनेन पहातब्बविभङ्गे "दस्सनेन पहातब्बो धम्मो नेव दस्सनेन न भावनाय पहातब्बस्स धम्मस्स कम्मपच्चयेन पच्चयो" ति[5] सहजातं नानाक्खणिकं ति उद्दिसित्वा "सहजाता दस्सनेन पहातब्बा चेतना चित्तसमुट्ठानानं रूपानं कम्मपच्चयेन पच्चयो, नानाक्खणिका दस्सनेन पहातब्बा चेतना विपाकानं खन्धानं कटत्ता च रूपानं कम्मपच्चयेन पच्चयो" ति[5] विभत्तं एवं अविभाजित्वा "भावनाय पहातब्बा चेतना चित्तसमुट्ठानानं रूपानं कम्मपच्चयेन पच्चयो" ति[6] एत्तकमेव वुत्तं, न वुत्तं "नानाक्खणिका चेतना विपाकानं खन्धानं कटत्ता च रूपानं कम्मपच्चयेन पच्चयो" ति। तेन न भावनाय पहातब्बस्स नानाक्खणिककम्मपच्चयभावो ति विञ्ञायति। पच्चनीये पि यथासम्भवं सङ्गाहकपच्चयानं वसेन पच्चयुद्धारे करियमाने। इतरत्थ चा ति दस्सनेन पहातब्बपदे।

---

१. पट्ठाने २ : २४०। २. सहजातपच्चय-उपनिस्सयपच्चय-पच्छाजात-पच्चयेन—सी०।
३. पट्ठाने २ : २२७। ४. पट्ठाने १ : १५४।
५. पट्ठाने २ : १८३। ६. पट्ठाने २ : १८४।

ति। यदि सिया, भावनाय पहातब्बचेतनाय च नानाक्खणिककम्मपच्चयभावो वुच्चेय्य, न तु वुत्तो।

तस्मा उद्धच्चसहगता नानाक्खणिककम्मपच्चयभावे सति दस्सनेन पहातब्बेसु वत्तब्बा सिया, तदभावा न वुत्ता ति। पटिसन्धि-अनाकड्ढनतो तत्थ अनागता ति अयमेत्थाधिप्पायो। नानाक्खणिककम्मपच्चयावचनेन[1] पन भावनाय पहातब्बानं पवत्ति-विपाकता पटिक्खित्ता। पवत्तिविपाकस्स पि हि नानाक्खणिककम्मपच्चयता न सक्का निवारेतुं।

[१२४-म०] वुत्तञ्च "सुखाय वेदनाय सम्पयुत्तो धम्मो दुक्खाय वेदनाय सम्प-युत्तस्स धम्मस्स कम्मपच्चयेन पच्चयो, नानाक्खणिका" ति आदि[2]। यदि भावनाय पहातब्बानं विपाकदानं नत्थि, कथं ते विपाकधम्मधम्मा होन्तीति? अभिञ्ञाचित्ता-दीनं [९१-सी०] विय विपाकारहसभावत्ता। यं पन वुत्तं "यस्मिं समये अकुसलं चित्तं उप्पन्नं होति उपेक्खासहगतं उद्धच्चसम्पयुत्तं...प...अविक्खेपो होति, इमेसु धम्मेसु ञाणं धम्मपटिसम्भिदा, तेसं विपाके ञाणं अत्थपटिसम्भिदा" ति[3] इदम्पि

तत्थ हि "दस्सनेन पहातब्बो धम्मो नेव दस्सनेन न भावनाय पहातब्बस्स धम्मस्स आरम्मण-पच्चयेन पच्चयो, सहजात-उपनिस्सय-पच्छाजात-कम्मपच्चयेन पच्चयो" ति[4] कम्मपच्चयो पि वुत्तो ति।

तदभावा ति नानाक्खणिककम्मपच्चयत्ताभावा। न च नानाक्खणिककम्मपच्चयं विना पटिसन्धि-आकड्ढनं अत्थी ति "**पटिसन्धि-अनाकड्ढनतो तत्थ अनागता**" ति वुत्तं। एत्था ति ठपेत्वा उद्धच्चसहगतं सेसानि एकादसेव पटिसन्धिं आकड्ढन्ती" ति एत्थ। **पवत्ति-विपाकस्सा** ति पवत्तियं विपाको पवत्ति-एकदेसताय पवत्तिभूतो वा विपाको एतस्सा ति पवत्तिविपाकं, कम्मं, तस्स। अथ वा पवत्तियं विपाको पवत्तिविपाको। इमस्मिं पन अत्थे नानाक्खणिककम्मपच्चयो एतस्सा ति नाना...प०...यो, तब्भावो...प०...ता ति एवं पदच्छेदो दट्ठब्बो। न सक्का निवारेतुं नानाक्खणिककम्मपच्चयं विना विपाकस्स अनुप्पज्जनतो।

[१३१-म०] इदानि पवत्तिविपाकानं नानाक्खणिककम्मपच्चयलाभिताय आहच्चभासिततं दस्सेतुं "**वुत्तञ्चा**" ति आदिमाह। विपाकदानं पटिसन्धिविपाकधम्मता ति मञ्ञमानो "**यदि भावना**" ति आदिमाह। इतरो विपाकदानाभावे पि सिद्धो विपाकधम्मभावो तादिसानं अञ्ञेसम्पि लब्भमानत्ता ति आह "**अभिञ्ञाचित्तादीनं**" ति। आदि-सद्देन अत्तनो कालमतिक्कन्तं दिट्ठधम्मवेदनीयं

---

१. ०पच्चयवचनेन-सी०। २. पट्ठाने १ : २९६।
३. अभि० २ : ३५४-३५५ विभंगे। ४. पट्ठाने २ : १७१।

तेसं विपाकरहतञ्ञेव सन्धाय वुत्तं सिया। इदं पन ठानं सुट्ठु विचारेतब्बं। अत्थि हि एत्थ वचनोकासो। न हि विपाके ति वचनं विपाकधम्मवचनं विय विपाकारहतं वदतीति।

अकुसलपदवण्णना निट्ठिता।

अब्याकतपद-अहेतुककुसलविपाकवण्णना

तेसु विपाकाब्याकतं ति आदीनं "भाजेत्वा दस्सेतुं कतमे धम्मा अब्याकता ति आदि आरद्धं" ति एतेन सम्बन्धो। **तस्सा पी** ति एतस्स "उप्पत्तिं दीपेतुं कामा... प... आदि वुत्तं" ति एतेन सम्बन्धो। **उपचितत्ता** ति यथा अञ्ञस्स विपाकं पटिबाहित्वा

उपपज्जवेदनीयञ्च सङ्गण्हाति। वुत्तं सिया ति इदं सहायपच्चयलाभतो पुथुज्जनसन्तानवुत्तिनो उद्धच्चसहगतस्स विपाकुप्पादनं, तदभावा सेक्खसन्ततियं तस्स विपाकानुप्पादनञ्च युत्तं सिया ति वुत्तं। तेनेवाह "इदं पन ठानं सुट्ठु विचारेतब्बं" ति आदि। तथा च वक्खति "पुथुज्जनेसु उप्पज्जमानानं सकभण्डे छन्दरागादीनं उद्धच्चसहगतचित्तुप्पादस्स च संयोजनत्तयतदेकट्ठकिलेसानं अनुपच्छिन्नताय अपरिक्खीणसहायानं विपाकुप्पादनं न सक्का पटिक्खिपितुं ति उद्धच्चसहगतधम्मानं विपाको विभङ्गे वुत्तो" ति। तस्स तादिसस्सेव सति सहाये विपाकुप्पादनवचनं, असति विपाकानुप्पादनवचनं, विरुज्झतीति च पवत्तिविपाकदायिकं वा उद्धच्चसहगतस्स मनसि कत्वा "वुत्तं सिया" ति वुत्तं। "पवत्तिविपाकं हि सन्धाय 'तेसं विपाके ञाणं' ति पटिसम्भिदाविभङ्गे[1] वुत्तं" ति एके वण्णयन्ति। एवं उद्धच्चचेतना पि न होति, सा पि विञ्ञाणपच्चयभावे अपनेतब्बा ति इदम्पि पटिसन्धिविञ्ञाणमेव सन्धाय वुत्तं ति।

अकुसलपदवण्णनानिट्ठिता

अब्याकतपद-अहेतुककुसलविपाकवण्णना

कामावचर "प०" आदि वुत्तं ति एत्थ आदि-सद्देन "उपचितत्ता" ति पदं सङ्गण्हाति "असाधारणकम्मपच्चयवसेना" ति वुत्तत्ता। "उपचितत्ता ति लद्धासेवनत्ता" ति केचि वदन्ति, तं पठमजवनस्स न युज्जति अनासेवनत्ता। तथा च सति तस्स विपाकदानमेव न सिया ति ततो अञ्ञथा अत्थं दस्सेन्तो "यथा" ति आदिमाह। तत्थ **विपाकाभिमुखं** ति विपाकदानाभिमुखं कतोकासं। कतोकासता च अनादिम्हि संसारे अनेकेसं कम्मानं कतानं अत्थिताय परस्स पटिबाहनेन होती ति "अञ्ञस्स विपाकं पटिबाहित्वा" ति आदि वुत्तं। [१३२-म०]

---

१. अभि० २ : ३५२ विभंगे।

अत्तनो विपाकाभिमुखं होति तथा वड्ढितत्ता। रूपादीनं पच्चयानं अञ्ञविञ्ञाण-साधारणत्ता असाधारणेन वत्थुना चक्खुविञ्ञाणं सोतविञ्ञाणं ति नामं उद्धटं। चक्खादीनं तिक्खमन्दभावे विञ्ञाणानं तिक्खमन्दभावा विसेसपच्चयत्ता च।

चक्खुसन्निस्सितञ्च तं रूपविजाननञ्चा ति **चक्खुसन्निस्सितरूपविजाननं**। एवंलक्खणं चक्खुविञ्ञाणं। तत्थ चक्खुसन्निस्सितवचनेन रूपारम्मणं अञ्ञविञ्ञाणं पटिक्खिपति। रूपविजाननवचनेन चक्खुनिस्सये फस्सादयो निवत्तेति। चक्खुरूपवचनेहि च निस्सयतो आरम्मणतो च विजाननं विभावेति। रूपमत्तस्स आरम्मणस्स गहणं किच्चमेतस्सा ति **रूपमत्तारम्मणरसं**। **झानङ्गवसेना** ति इदं द्विपञ्चविञ्ञाणवज्जेसु विज्जमानानं उपेक्खासुखदुक्खेकग्गतानं झानङ्गिकत्ता इधा पि तं-सदिसानं [१२५-म०] तदुपचारं कत्वा वुत्तं। न हि झानपच्चयत्ताभावे झानङ्गता अत्थि। वुत्तं हि "झानङ्गानि झान-सम्पयुत्त प०...रूपानं झानपच्चयेन पच्चयो" ति[१]। एतेसञ्च झानपच्चयभावो पटि-क्खितो। यथाह "अब्याकतं धम्मं पटिच्च अब्याकतो धम्मो उप्पज्जति, न झान-पच्चया। पञ्चविञ्ञाणसहगतं एकं खन्धं पटिच्च तयो खन्धा" ति आदि[२]। झान-पच्चयत्ताभावे पि वेदनाचित्तट्ठितीनं उपेक्खादिभावतो तथाभूतानं वचने अञ्ञट्ठाना-भावतो च दुतियरासिनिद्देसो।

वड्ढितत्ता च सकम्मस्स बलदानसमत्थतावसेन अत्तनो कारणेहि अभिसङ्खतता। **असाधारणेन नाम उद्धटं** "मेरीसद्दो यवङ्कुरो" ति यथा। **विञ्ञाणानं** ति चक्खुविञ्ञाणादीनं। **विसेस-पच्चयत्ता** ति अधिपच्चयत्ता।

चक्खुसन्निस्सितञ्च तं रूपविजाननञ्चा ति एतेन समानाधिकरणतं समासस्स दस्सेन्तो तत्थ च "चक्खुसन्निस्सितं" ति आदिपदद्वयस्स नीलुप्पलसद्दादीनं विय अञ्ञमञ्ञविसेसनविसे-सितब्बभावमाह। **अञ्ञविञ्ञाणं** ति रूपारम्मणं मनोविञ्ञाणं। **रूपं** येवारम्मणं ति पन अत्थे दिब्बचक्खुविञ्ञाणं दट्ठब्बं तंसदिसानं तदुपचारं कत्वा यथा "सा एव तित्तिरी तानि एव ओसधानी" ति। **झानपच्चयत्ताभावे न झानङ्गता नत्थी** ति पञ्चविञ्ञाणेसु उपेक्खादीनं उपचरितझानङ्गतं साधेति। नहि झानङ्गानं झानपच्चयतं वत्वा तेसं झानपच्चयभावो पटिक्खित्तो ति। यदि एवं पञ्चविञ्ञाणेसु उपेक्खादयो झानरासिट्ठाने न वत्तब्बा सियुं ति आह **"झानपच्च-यत्ताभावे"** ति आदि। **उपेक्खादिभावतो** ति उपेक्खासुखदुक्खेकग्गताभावतो। **अञ्ञट्ठानाभावतो** ति चित्तट्ठितिं एव सन्धाय वुत्तं।

---

१. पट्ठाने १ : ३५३।
२. पट्ठाने १ : ३८।

वत्थुपण्डरत्ता ति[1] सयं कण्हधम्मानं अप्पटिपक्खत्ता सभावपरिसुद्धानं पसादहदय-वत्थुनिस्सयानं वसेन पण्डरसभावं जातं ति अधिप्पायो। अयं पन नयो चतुवोकारे न लब्भतीति तत्थ भवङ्गस्स ततो निक्खन्ताकुसलस्स च पण्डरता न सिया, तस्मा तत्थ पण्डरताय कारणं वत्तब्बं। सभावो वायं चित्तस्स पण्डरता ति।

इदम्पी ति **पि**-सद्दो ठितिमत्तसहितं पुब्बे वुत्तं विचिकिच्छासहगतं अपेक्खित्वा वुत्तो। **पकतिया** ति [९२-सी०] अनतिक्कमनेन। सो पि विसेसो। **कायप्पसादं घट्टेत्वा पसादपच्चयेसु महाभूतेसु पटिहञ्ञती** ति आपाथं गन्त्वा पटिहञ्ञतीति अत्थो। यथा च "रूपं आरब्भ उप्पन्नं" ति वुत्ते न आरम्मणुप्पादानं पुब्बापरकालता होति, एवमिधा पि घट्टनपटिहननेसु दट्ठब्बं। उपमा पि उभयघट्टनदस्सनत्थं वुत्ता, न निस्सितनिस्सयघट्टनानं पुब्बापरतादस्सनत्थं। एत्थ च **बहिद्धा** ति एतं निदस्सन-मत्तं। अज्झत्तम्पि हि आरम्मणं होतीति। विञ्ञाणधातुनिस्सयभूतेहि वा अञ्ञं "बहिद्धा" ति वुत्तं। पटिघट्टनानिघंसो बलवा होति, ततो एव इट्ठानिट्ठफोट्ठब्ब-समायोगे सुखदुक्खपच्चया धातु-अनुग्गहधातुक्खोभा[2] चिरं अनुवत्तन्ति।

अकुसलं भवङ्गनिस्सन्देन "पण्डरं" ति वुच्चति, भवङ्गे अपण्डरे तंमूलिका कुतो अकुसलस्स पण्डरता ति "अकुसलस्स चा" ति वुत्तं। पण्डरताय कारणं वत्तब्बं, यदि अञ्ञकारणा पण्डरता, सभावो वायं ति चित्तस्स अकिलेससभावताय वुत्तं, न चेत्थ फस्सा-दीनम्पि पण्डरतापत्ति। यतो धम्मानं सभावकिच्चविसेसञ्ञुना भगवता विञ्ञाणं येव तथा निद्दिट्ठं ति।

अनतिक्कमनेन भावनाय। पसादघट्टनं विसयस्स योग्यदेसे अवट्ठानं ति "पसादं घट्टेत्वा आपाथं गन्त्वा" ति वुत्तं। महाभूतेसु पटिहञ्ञती ति एत्थ न सयं किञ्चि पटिहञ्ञति, ना पि केनचि पटिहञ्ञीयति अफोट्ठब्बसभावत्ता। विसयविसयीभूतं पन अभिमुखभावप्पत्तिया विञ्ञाणुप्पत्तिया हेतुताय विसिट्ठभावप्पत्तं पटिहतपटिघातकभावेन वोहरीयति, तस्मा तेसु सप्पटिघवोहारो। "उपादारूपं घट्टेती ति एवमादि च उपचारवसेनेव वेदितब्बं। महाभूता-रम्मणेन [१३३-म०] पन कायप्पसादनिस्सयभूतेसु महाभूतेसु घट्टियमानेसु पसादो पि घट्टितो एव नाम होती ति वत्वा वीमंसितब्बं" ति वदन्ति। यथाधिप्पेतेन एकदेससामञ्ञेन उपमा-वचनतो निस्सितनिस्सयघट्टनानं सति पि पुब्बापरभावे उपमत्ते उपमाभावेन गहेतब्बभावं दस्सेन्तो "उभयघट्टनदस्सनत्थं" ति आह।

---

१. वत्थुपण्डरताया ति–सी०।
२. धातु-अनुग्गहा धातुक्खोभा–सी०।

अञ्ञेसं चित्तानं सभावसुञ्ञतसब्भावा मनोधातुभावो आपज्जतीति चे ? न विसेससब्भावा। चक्खुविञ्ञाणादीनं हि चक्खादिनिस्सितता चक्खादीनं सविसयेसु दस्सनादिप्पवत्तिभावता च विसेसो। मनोविञ्ञाणस्स पन अनञ्ञनिस्सयमनोपुब्बङ्गमताय अञ्ञनिस्सयविञ्ञाणस्स अनन्तरपच्चयत्ताभावेन मनोद्वारनिग्गमनमुखभावाभावतो[1] च सातिसयविजाननकिच्चता विसेसो। तब्बिसेसविरहा मनोमत्ता [१२६–म०] धातु मनोधातू ति तिविधा मनोधातु एव वुच्चति, न विसेसमनो। तस्मा एत्थ **मनो एव धातु मनोधातू** ति एव-सद्दो मत्तसद्दत्थो दट्ठब्बो। विसेसनिवत्तनत्थो हि सो विञ्ञाणस्सा ति। मनोद्वारनिग्गमनपवेसमुखभावतो पन मनोधातुया विजाननविसेसविरहो दट्ठब्बो, ततो एव मनोविञ्ञाणं ति पि न वुच्चति। न हि तं विञ्ञाणं मनतो पवत्तं मनसो पच्चयो, ना पि मनसो पच्चयभूतं मनतो पवत्तं, दस्सनादीनं पन पच्चयो, तेहि च पवत्तं तेसं पुरेचरं अनुचरञ्चा ति। सम्मासङ्कप्पो ति **अवचनं** महाविपाकानं विय जनकसदिसत्ताभावतो।

तत्थ हि तिहेतुकतो दुहेतुकम्पि उप्पज्जमानं सम्मासङ्कप्पतादीहि सदिसं सहेतुक-

---

दस्सनादिप्पवत्तिभावतो ति मनोधातुमनोविञ्ञाणधातूनं अदस्सनादिताय सा एतेसं एव विसेसो। अनञ्ञनिस्सयमनोपुब्बङ्गमताया ति अञ्ञनिस्सयमनोपुब्बङ्गमत्ताभावतो। अञ्ञनिस्सयविञ्ञाणस्स अनन्तरपच्चयत्ताभावेना ति इमिना किरियामनोधातुतो पि विसेसस्स वुत्तत्ता "मनोद्वारनिग्गमनमुखभावाभावतो" ति वुत्तं, न वुत्तं "निग्गमनपवेसमुखभावाभावतो" ति। तिविधेन पि हि मनोधातुविञ्ञाणधातूहि मनोविञ्ञाणधातुया विसेसो दस्सितो ति। ततो **एव** विजाननविसेसविरहतो येव। यदि मनोधातु "मनोविञ्ञाणं" ति न वुच्चति, छविञ्ञाणकाया ति कथं मनोधातुया तत्थ सङ्गहो होती ति ? सङ्गहो एव परियायदेसनत्ता। अत्थि हि एस परियायो "मननमत्तं विञ्ञाणं मनोविञ्ञाणं ति यथा "मननमत्ता धातु मनोधातू" ति। अपि च वत्थुकिच्चेहि मनोविञ्ञाणसभागत्ता तस्स उपरमुप्पादभावतो अन्तादिभावतो च मनोविञ्ञाणकायसङ्गहिता मनोधातु, न सेसविञ्ञाणकायसङ्गहिता अतंसभागत्ता, इध पन निप्परियायकतत्ता मनसो सम्भूय विसिट्ठमनोकिच्चयुत्तं मनोविञ्ञाणं ति तदभावतो "मनोविञ्ञाणं ति पि न वुच्चती" ति इममेवत्थं साधेतुं "न हि तं विञ्ञाणं मनतो" ति आदि वुत्तं। तेन मनोधातुया निप्परियायतो मनोविञ्ञाणकिच्चविरहं येव दस्सेति। **दस्सनादीनं पना** ति आदिना अञ्ञविञ्ञाणविधुरं मनोधातुया च सभावं दस्सेति।

यदि जनकसदिसता नाम महाविपाकेसु वितक्कादीनं सम्मासङ्कप्पादिता, तिहेतुकतो

---

१. ०मुखभावतो–सी०।

ताया ति। **पञ्चविञ्ञाणसोते** ति एत्थ यथा पगुणं गन्थं सज्झायन्तो सज्झायसोते पतितं कञ्चि[1] कञ्चि[1] वाचनामग्गं न सल्लक्खेति, एवं तथागतस्स असल्लक्खणा नाम नत्थि, न च पञ्चविञ्ञाणसोते झानङ्गभावो इध अवचनस्स कारणं। यदि तदनन्तरं निद्देसो तंसोतपतितता, इतो परेसं द्विन्नं मनोविञ्ञाणधातूनं तंसोतपतितता न सिया। तस्मा पञ्चविञ्ञाणानं विय अहेतुकताय मग्गपच्चयविरहा च विज्जमानेसु पि वितक्कविचारेसु झानङ्गधम्मानं दुब्बलत्ता पञ्चविञ्ञाणेसु विय अगणनुपगभावा[2] च पञ्चविञ्ञाणसोतपतितता। ततो एव हि अहेतुककिरियत्तये पि झानङ्गानि बलानि च सङ्गहवारे न उद्धटानि, झानपच्चयकिच्चमत्ततो पन पट्ठाने दुब्बलानं एत्थ वितक्कादीनं झानपच्चयता वुत्ता।

समानवत्थुकं अनन्तरपच्चयं लभित्वा उप्पज्जमानं सन्तीरणं मनोधातुतो बलवतरं होतीति तं यथारम्मणं आरम्मणरसं अनुभवन्तं इट्ठे सोमनस्ससहगतं होति, [९३-सी०] इट्ठमज्झत्ते उपेक्खासहगतं सातिसयानुभवत्ता, तस्मा **"अयं हि इट्ठारम्मणस्मिं येवा"** ति आदि वुत्तं। वोट्ठब्बनं पन सति पि बलवभावे विपाकप्पवत्तिं निवत्तेत्वा विसदिसं मनं

निब्बत्तानं तिहेतुकानं, दुहेतुकतो निब्बत्तानं दुहेतुकानञ्च भवतु सम्मासङ्कप्पादिता, तिहेतुकतो पन निब्बत्तदुहेतुकानं कथं ति आह "तत्थ ही" ति आदि। तंसोतपतितता न सिया तस्सा अनानन्तरत्ता। ततो एव ही ति आदिना वुत्तसोतपतितं एवानन्तरेन वचनेन समत्थयति। यदि [१३४-म०] विज्जमानानम्पि मनोधातु-आदीसु वितक्कादीनं पञ्चविञ्ञाणेसु विय अगणनूपगभावो, एवं सन्ते पट्ठाने कथं तेसं झानपच्चयतावचनं। "अब्याकतो धम्मो अब्याकतस्स धम्मस्स झानपच्चयेन पच्चयो" ति[3], "विपाकाब्याकतानि किरियाब्याकतानि झानङ्गानि सम्पयुत्तकानं खन्धानं चित्तसमुट्ठानानञ्च रूपानं झानपच्चयेन पच्चयो" ति[3] हि वुत्तं। पच्चनीये पि "अब्याकतं धम्मं पटिच्च अब्याकतो धम्मो उप्पज्जति न झानपच्चया, पञ्च-विञ्ञाणसहितं एकं खन्धं पटिच्च तयो खन्धा" ति आदिना[4] पञ्चविञ्ञाणानि एव उद्धटानि, न मनोधातु-आदीनीति आह **"झानपच्चयकिच्चमत्ततो"** ति आदि। न हेत्थ झानङ्गानं बलव-दुब्बलभावो अधिकतो, अथ खो झानपच्चयभावमत्तं ति अधिप्पायो।

समानवत्थुकं अनन्तरपच्चयं लभित्वा ति दस्सनादितो मनोधातुया च बलवभावे कारणवचनं। **यथारम्मणं** ति आरम्मणानुरूपं। यदि समाननिस्सयताय मनोधातुतो बलवतरत्तं विपाकमनोविञ्ञाणधातुया सोमनस्ससहगताय, वोट्ठब्बनं कथं मज्झत्तवेदनं ति अनुयोगं मनसि

१-१. किञ्चि किञ्चि-सी०। २. ०भावो-सी०।

३. अभि० १ : १४८ पट्ठाने। ४. अभि० १ : ३८ पट्ठाने।

करोन्तं मनसिकारकिच्चन्तरयोगतो विपाको विय अनुभवनमेव न होतीति सब्बत्थ उपेक्खासहगतमेव होति, तथा पञ्चद्वारावज्जनं मनोद्वारावज्जनञ्च किच्चवसेन अपुब्बत्ता।

अहेतुककुसलविपाकवण्णना निट्ठिता॥

अट्ठमहाविपाकचित्तवण्णना

[१२७-म०] **अलोभो अब्याकतमूलं** ति आदीसु कुसलपक्खे ताव अलोभादोसानं निद्देसेसु "यो तस्मिं समये अलोभो अलुब्भना....प....अलोभो कुसलमूलं" ति[1] "यो तस्मिं समये अदोसो अदुस्सना....प...अदोसो कुसलमूलं" ति[1] च वुत्तत्ता इधा पि तंनिद्देसेसु "अलोभो अब्याकतमूलं" ति "अदोसो अब्याकतमूलं" ति वचनं युज्जेय्य। पञ्ञिन्द्रियादिनिद्देसेसु पन "पञ्ञायतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठी" ति[2] एवं तत्थ पि वुत्तं, न वुत्तं "अमोहो कुसलमूलं" ति। तस्मा इधा पि "अमोहो अब्याकतमूलं" ति पाठेन न भवितब्बं सिया। अलोभादोसानं विय अमोहस्स पि अब्याकतमूलदस्सनत्थं पनेतं वुत्तं ति वेदितब्बं। **अविञ्ञत्तिजनकतो** ति कायवचीकम्मद्वारनिवारणं करोति। **अविपाकधम्मतो** ति मनोकम्मद्वारनिवारणञ्च। विपाकधम्मानं हि कम्मद्वारं वुत्तं ति। **तथा अप्पवत्तितो** ति दानादिपुञ्ञकिरियभावेन अप्पवत्तितो। एतेन पुञ्ञकिरियवत्थुभेदमेव निवारेति।

बलवपच्चयेही ति पयोगेन विना निप्फन्नेहि आरम्मणादिपच्चयेहि। असङ्खारिकादीसु हि येन केनचि चित्तेन कम्मे आयूहिते असङ्खारेन अप्पयोगेन कम्मकम्मनिमित्त-गतिनिमित्तपच्चुपट्ठाने पटिसन्धि उप्पज्जमाना असङ्खारिका होति, ससङ्खारेन सप्पयोगेन कम्मादिपच्चुपट्ठाने ससङ्खारिका। भवङ्गचुतियो पन पटिसन्धिसदिसा व। तदारम्मणञ्च

कत्वा तस्स बलवभावं सम्पटिच्छित्वा सन्तति-परिणामनब्यापारविसेसा न सोमनस्सवेदनं ति परिहारं वदन्तो "वोट्ठब्बनं" ति आदिमाह। विपाको विय अनुभवनमेव न होती ति सति समत्थताय विपाकानं एकन्तेन आरम्मणरसानुभवनताय वुत्तं।

अहेतुककुसलविपाकवण्णना निट्ठिता।

अट्ठमहाविपाकचित्तवण्णना

विपाकधम्मानं कम्मद्वारं वुत्तं द्वारकथायं तेभूमककुसलाकुसलो एकूनतिसविधो मनो" ति[3]। **पयोगेना** ति अत्तना परेहि वा कतेन उस्साहनपयोगेन। **कुसलाकुसलानि विय** येसं तं तदारम्मणं अनुबन्धभूतं। पठमपञ्चमचित्तानं अञ्ञमञ्ञबलवदुब्बलभावविचारेन दुतियछट्ठादीनम्पि

---

१. अभि० १ : २३ ध० संगणियं। २. अभि० १ : २४ ध० संगणियं। ३. अट्ठ० ७२।

कुसलाकुसलानि विय असङ्खारिकं ससङ्खारिकञ्च दट्ठब्बं ति। एतेसु बलवं दुब्बलञ्च विचारेतुं **तत्थ सब्बे पि सब्बञ्ञुबोधिसत्ता"** ति आदिमाह। **कालवसेन पन परिणमतो** ति अप्पायुकसंवत्तनिककम्मबहुले काले तंकम्मसहितसन्तानजनितसुक्कसोणितपच्चयानं तंमूलकानं चन्दसूरियविसमपरिवत्तादिजनित-उताहारादिविसमपच्चयानञ्च वसेन परिणमति।

विपाकुद्धारकथावण्णना

यतो यत्तको च विपाको होति, यस्मिं च ठाने विपच्चति, तं दस्सेतुं विपाकुद्धारकथा आरद्धा। **एत्थेवा** ति एकाय चेतनाय कम्मे आयूहिते येव दुहेतुकपटिसन्धिवसेन द्वादसकमग्गो पि [१२८-म०] होति, द्वादसकप्पकारो पी ति अत्थो। अहेतुकपटिसन्धिवसेन अहेतुकट्ठकम्पि। असङ्खारिकससङ्खारिकानं ससङ्खारिक-असङ्खारिकविपाकसङ्करं अनिच्छन्तो दुतियत्थेरो **"द्वादसा"** ति आदिमाह। पुरिमस्स हि पच्चयतो ससङ्खारिक-असङ्खारिकभावो, इतरेसं कम्मतो। ततियो तिहेतुकतो दुहेतुकम्पि [९४-सी०] अनिच्छन्तो **"दसा"** ति आदिमाह।

सो विचारितो होतीति "एतेसु बलवं दुब्बलञ्च विचारेतुं" ति वुत्तं। यथा सालि-आदीनं थद्धमुदुभूमिवसेन [१२५-म०] तिणादीनं अनोहरणनीहरणवसेन उतु-आदि-अवसेसपच्चयानं विपत्तिसम्पत्तिवसेन च फलविसेसयोगो, एवं कम्मस्स सुगतिदुग्गतिवसेन अविसुद्धविसुद्धपयोगवसेन उपपत्तिया विपत्तिसम्पत्तिवसेन च विसिट्ठफलताय परिणमनं, एवमेव गिम्हवस्सकालादीसु बीजानं फलविसेसयोगो विय तंतंकालविसेसेन कम्मस्स फलविसेसयोगो होती ति आह **"कालवसेन परिणमती"** ति। **सुक्कसोणितपच्चयानं** ति कम्मविसेसपरिभावितसन्तानुप्पन्नताय सुक्कसोणितानं आयुविसेसहेतुभावमाह सुक्कसोणितवसेन पि वण्णादिविसेसदस्सनतो, येन "पितूनं आकारं पुत्तो अनुविदहती" ति वुच्चति। **तंमूलकानं** ति अप्पायुकसंवत्तनियकम्ममूलकानं। **आहारादी** ति आदिसद्देन विसमूपक्कमादयो परिग्गण्हाति।

विपाकुद्धारकथावण्णना

यतो तिहेतुकादिकम्मतो। **यस्मिञ्च ठाने** ति पटिसन्धि-आदिट्ठाने, सुगतिदुग्गतियं वा। **तिहेतुकतो दुहेतुकं अनिच्छन्तो** पटिसन्धिं ति अधिप्पायो। पवत्तिविपाकं पन तिहेतुकतो दुहेतुकम्पि इच्छति एव। तथा हि वक्खति अट्ठकथायं[1] "यं पुरिमाय हेतुकित्तनलद्धिया न युज्जती" ति।

---

१. अट्ठ० २२३।

इमस्मिं विपाकुद्धारट्ठाने कम्मपटिन्धिववत्थानत्थं **साकेतपञ्हं गण्हिसु।** कम्मवसेन विपाकस्स तं-तं-गुणदोसुस्सदनिमित्ततं दस्सेतुं **उस्सदकित्तनं गण्हिसु।** हेतुकित्तनं इध पठमत्थेरस्स अधिप्पायेन वुत्तं। दुतियत्थेरवादादीसु विसेसं तत्थ तत्थेव वक्खामि। ञाणस्स जच्चन्धादिविपत्तिनिमित्तपटिपक्खभावतो तिहेतुकं अतिदुब्बलम्पि समानं पटिसन्धिं आकङ्खन्तं दुहेतुकं आकड्ढेय्या ति **"अहेतुका न होती"** ति आह। यं पन **पटिसम्भिदामग्गे** सुगतियं जच्चन्धबधिरादिविपत्तिया अहेतुक-उपपत्ति वज्जेत्वा गतिसम्पत्तिया सहेतुकोपपत्ति दस्सेन्तेन "गतिसम्पत्तिया ञाणसम्पयुत्ते कतमेसं अट्ठन्नं हेतूनं पच्चया उपपत्ति होति?" च्चेव[1] वुत्तं। तेन ञाणविप्पयुत्तेन कम्मुना ञाणसम्पयुत्तपटिसन्धि न होतीति दीपितं होति। अञ्ञथा "सत्तन्नं हेतूनं पच्चया उपपत्ति होती" ति इदम्पि वुच्चेय्य। तथा हि "गतिसम्पत्तिया ञाणसम्पयुत्ते कतमेसं अट्ठन्नं हेतूनं पच्चया उपपत्ति होति? कुसलस्स कम्मस्स जवनक्खणे तयो हेतू कुसला तस्मिं खणे जातचेतनाय सहजातपच्चया होन्ति। तेन वुच्चति कुसलमूलपच्चया पि सङ्खारा। निकन्तिक्खणे द्वे हेतू

ये तस्सेव कम्मस्स विपाकावसेसेना" ति।

"एकपुप्फं यजित्वान, असीति-कप्पकोटियो।
दुग्गतिं नाभिजानामी"

ति[2] च एवमादिवचनस्स अधिप्पायं अजानन्ता "किं नु खो एतेन पि कम्मेन अनेका पटिसन्धि होती" ति "दिस्वा कुमारं सतपुञ्ञलक्खणं" ति आदिवचनस्स[3] अत्थं असल्लक्खेत्वा "किन्नु खो नानाकम्मेहि एका पटिसन्धि होती" संसयपक्खन्दा, तेसं बीजङ्कुरोपमाय "एकस्मा एका, अनेकस्मा च अनेकापटिसन्धि होती" ति विनिच्छितत्ता कम्मपटिसन्धिववत्थानतो साकेतपञ्हे विपाकुद्धारकथाय उस्सदकित्तनगहणस्स सम्बन्धं आह" **कम्मवसेन···प···** दस्सेतुं" ति। पटिसन्धिजनककम्मवसेन पटिसन्धिविपाको एव अलोभलोभादिगुणदोसातिरेकभावहेतू ति अत्थो दट्ठब्बो। तथा हि वुत्तं "सो तेन कम्मेन दिन्नपटिसन्धिवसेन निब्बत्तो लुद्धो होती" ति आदि। एत्थ च लोभवसेन दोस- [१३६-म०] मोह-लोभदोस-लोभमोह-दोसमोह-लोभदोसमोहवसेना ति तयो एकका, तयो द्विका, एको तिको ति लोभादिदस्सनवसेन अकुसलपक्खे येव सत्त वारा। तथा कुसलपक्खे अलोभादिदस्सनवसेना ति चुद्दस वारा लब्भन्ति।

तत्थ अलोभदोसामोहा, अलोभादोसमोहा, अलोभदोसामोहा बलवन्तो" ति आगतेहि कुसलपक्खे ततियदुतियपठमवारेहि दोसुस्सदमोहुस्सददोसमोहुस्सदवारा गहिता। तथा अकुसलपक्खे

---

१. खु० ९ : ३१६ पटिसम्भिदामग्गे।
२. खु० २५६ थेरगाथायं; ३६ थेरापदाने (पाठो परिवत्तितो)। ३. दी० ३ : ११५।

अकुसला तस्मिं खणे जातचेतनाय सहजातपच्चया होन्ति। तेन वुच्चति अकुसल-मूलपच्चया पि सङ्खारा। पटिसन्धिक्खणे तयो हेतू अब्याकता तस्मिं खणे जातचेतनाय सहजातपच्चया होन्ति। तेन वुच्चति नामरूपपच्चया पि विञ्ञाणं, विञ्ञाणपच्चया पि नामरूपं" ति[1] विस्सज्जितं ञाणसम्पयुत्तोपपत्तियं।

एवं ञाणविप्पयुत्ततो ञाणसम्पयुत्तुपपत्तिया च विज्जमानाय "गतिसम्पत्तिया ञाण-सम्पयुत्ते कतमेसं सत्तन्नं हेतूनं पच्चया उपपत्ति होति? कुसलस्स कम्मस्स जवनक्खणे द्वे हेतू कुसला" ति वत्वा अञ्ञत्थ च पुब्बे वुत्तनयेनेव सक्का विस्सज्जनं कातुं ति। [१२९-म०] यथा पन "ञाणसम्पयुत्ते सत्तन्नं हेतूनं पच्चया" ति अवचनतो ञाण-विप्पयुत्ततो ञाणसम्पयुत्ता पटिसन्धि न होति, एवं "गतिसम्पत्तिया ञाणविप्पयुत्ते छन्नं

"लोभादोसमोहा, लोभदोसामोहा लोभादोसामोहा बलवन्तो" ति आगतेहि ततियदुतियपठमवारेहि अदोसुस्सद-अमोहुस्सद-अदोसामोहुस्सदवारा गहिता येवा ति अकुसलकुसलपक्खे तयो तयो वारे अन्तोगधे कत्वा अट्ठेव वारा दस्सिता। ये पन उभयेसं वोमिस्सतावसेनेव लोभालोभुस्सदवारादयो अपरे एकूनपञ्ञास वारा दस्सेतब्बा, ते असम्भवतो एव न दस्सिता। नहि एकस्मिं सन्ताने अन्तरेन अवत्थन्तरं लोभो बलवा अलोभो चा ति युज्जति। पटिपक्खतो येव हि एतेसं बलवदुब्बलभावो, सहजातधम्मतो वा। तेसु लोभस्स ताव पटिपक्खतो अलोभेन अनभिभूतताय बलवभावो, तथा दोसमोहानं अदोसामोहेहि। अलोभादीनं पन लोभादि-अभिभवनतो सब्बेसञ्च समानजातियं समतिभूय पवत्तिवसेनेव सहजातधम्मतो बलवभावो। तेन वुत्तं अट्ठकथायं "लोभो बलवा, अलोभो मन्दो, अदोसामोहा बलवन्तो, दोसमोहा मन्दा" ति। सो च तेसं मन्दबलव-भावो पुरिमूपनिस्सयतो आसयस्स परिभावितताय वेदितब्बो। एत्थ च पठमदुतियेहि, सत्तम-पठमेहि वा वारेहि तिहेतुककम्मतो पटिसन्धिपवत्तिवसेन तिहेतुकविपाको, इतरेहि तिहेतुकदुहे-तुककम्मतो यथासम्भवं पटिसन्धिपवत्तिवसेन दुहेतुकाहेतुकविपाका दस्सिता ति अयम्पि विसेसो वेदितब्बो।

इधा ति विपाकुद्धारमातिकायं। तेन हेतुकित्तनं विसेसेति। जच्चन्धादिविपत्तिनिमित्तं मोहो, सब्बाकुसलं वा। यं पन वुत्तं ति सम्बन्धो। तेन पटिसम्भिदामग्गवचनेन। गतिसम्पत्तिया सति ञाणसम्पयुत्ते [१३७-म०] पटिसन्धिम्हि निप्फादेतब्बे। अञ्ञथा ति निकन्तिपटि-सन्धिक्खणेसु।

कम्मसरिक्खको ति इध सातिसयो सरिक्खभावो अधिप्पेतो ति दट्ठब्बो। इतरथा तिहेतुकदुहेतुका पि अञ्ञमञ्ञं सरिक्खा येवा ति दस्सितमेतं ति। चक्खुविञ्ञाणादीनं ति एत्थ

---

१. खु० ९ : ३१६ पटि०।

हेतूनं पच्चया उपपत्ति होति" च्चेव[1] वत्वा "सत्तन्नं हेतूनं पच्चया" ति अवचनतो ञाणसम्पयुत्ततो ञाणविप्पयुत्ता पि पटिसन्धि न होतीति आपन्नं। एत्था पि हि न न सक्का कम्मनिकन्तिक्खणेसु तयो च द्वे च हेतू योजेत्वा पटिसन्धिक्खणे द्वे योजेतुं ति। इमस्स पन थेरस्स अयमधिप्पायो सिया "कम्मसरिक्खकविपाकदस्सनवसेन इध पाठो सावसेसो कथितो" ति। "ञाणसम्पयुत्ते अट्ठन्नं हेतूनं पच्चया" ति एत्था पि पाठस्स सावसेसतापत्तीति चे? न, दुब्बलस्स दुहेतुककम्मस्स ञाणसम्पयुत्तविपाकदाने असमत्थत्ता। तिहेतुकस्स पन अहेतुकविपच्चने विय दुहेतुकविपच्चने पि नत्थि समत्थता-विघातो ति। **आरम्मणेन वेदना परिवत्तेतब्बा** ति सन्तीरणतदारम्मणे सन्धाय वुत्तं। विभागग्गहणसमत्थताभावतो हि चक्खुविञ्ञाणादीनि इट्ठ-इट्ठमज्झत्तेसु उपेक्खासहगतानेव होन्ति, [९५-सी०] कायविञ्ञाणञ्च सुखसहगतमेव पटिघट्टनाविसेसेना ति।

विसेसवता कालेन तदारम्मणपच्चयसब्बजवनवता विपाकप्पवत्ति दस्सेतुं "**संवरा-संवरे प... उपगतस्सा**" ति वुत्तं अञ्ञकाले पञ्चविञ्ञाणादिपरिपुण्णविपाकप्पवत्ति-अभावा। **कक्कटक ... प ... भवङ्गोतरणं** ति एतेन इदं दस्सेति—केदारे पूरेत्वा नदीपवे-सनमग्गभूतं मातिकं अप्पविसित्वा कक्कटकमग्गादिना अमग्गेन नदी-ओतरणं विय चित्तस्स जवित्वा भवङ्गप्पवेसनमग्गभूते तदारम्मणे अनुप्पन्ने मग्गेन विना भवङ्गोतरणं ति।

एतेसु तीसु मोघवारेसु दुतियो उपपरिक्खित्वा गहेतब्बो। यदि हि अनुलोमे वेद-नात्तिके पटिच्चवारादीसु "आसेवनपच्चया न मग्गे द्वे" ति "न मग्गपच्चया आसेवने

पञ्चविञ्ञाणानि विय अपुब्बमिस्सयपवत्तिनी विजाननविसेसरहिता च मनोधातु इट्ठादिभागग्गहणे न समत्था ति "पाकटा येवा" ति न वुत्ता, आदि-सद्देन वा सङ्गहिता।

तदारम्मणपच्चयसब्बजवनवता ति तदारम्मणस्स पच्चयभूतसकलजवनप्पवत्तिसहितेन। यं सन्धाय "इध परिपक्कत्ता आयतनानं" ति वुत्तं। **अञ्ञकाले** ति अबुद्धिपवत्तिकाले।

अनुलोमे ति धम्मानुलोमे। **आसेवनपच्चया** ति आसेवनभूता पच्चया। **न मग्गे** अमग्ग-पच्चये। **सो पि मोघवारो** लब्भेय्या ति यदि वोट्ठब्बनम्पि आसेवनपच्चयो सिया, यथा "सुखाय वेदनाय सम्पयुत्तं धम्मं पटिच्च सुखाय वेदनाय सम्पयुत्तो धम्मो उप्पज्जति आसेवन-पच्चया[2] न मग्गपच्चया" ति[3] अनुलोमपच्चनीये, पच्चनीयानुलोमे च "सुखा... प०... न मग्गपच्चया आसेवनपच्चया" ति च वुत्तं हसितुप्पादचित्तवसेन। एवं वोट्ठब्बनवसेन "अदुक्खमसुखाय वेदनाय सम्पयुत्तं धम्मं पटिच्चा" ति आदिना पुब्बे वुत्तनयेन पाठो सिया,

---

१. खु० ९ : ३२० पटिसम्भिदामग्गे। २. अभि० १ : २७२ पट्ठाने।
३. अभि० १ : २७५ पट्ठाने।

द्वे" ति च वुत्तं सिया, सो पि मोघवारो लब्भेय्य।

यदि पन वोट्ठब्बनम्पि आसेवनपच्चयो सिया, कुसलाकुसलानम्पि सिया। न हि आसेवनपच्चयं लद्धुं युत्तस्स आसेवनपच्चयभावी धम्मो आसेवनपच्चयो ति अवुत्तो अत्थि। वोट्ठब्बनस्स पन कुसलाकुसलानं आसेवनपच्चयभावो अवुत्तो। [१३०-म०] "कुसलं धम्मं पटिच्च कुसलो धम्मो उप्पज्जति नासेवनपच्चया। अकुसलं धम्मं....प.... नासेवनपच्चया" ति[1] वचनतो पटिक्खित्तो व। अथा पि सिया "असमानवेदनानं वसेन एवं वुत्तं" ति, एवमपि यथा "आवज्जना कुसलानं खन्धानं अकुसलानं खन्धानं अनन्तरपच्चयेन पच्चयो" ति[2] वुत्तं, एवं "आसेवनपच्चयेन पच्चयो ति" पि वत्तब्बं सिया, जातिभेदा न वुत्तं ति चे? भूमिभिन्नस्स कामावचरस्स रूपावचरादीनं आसेवनपच्चयभावो विय जातिभिन्नस्स पि भवेय्या ति वत्तब्बो एव सिया। अभिन्नजातिकस्स च वसेन यथा "आवज्जना सहेतुकानं खन्धानं अनन्तरपच्चयेन पच्चयो" ति वुत्तं, एवं "आसेवनपच्चयेन पच्चयो" ति पि वत्तब्बं सिया, न तु वुत्तं। तस्मा वेदनात्तिके पि सङ्खित्ताय गणनाय "आसेवनपच्चया न मग्गे एकं, न मग्गपच्चया आसे-

---

तथा च सति वारद्वयवसेन गणनायं "आसेवनपच्चया न मग्गे द्वे। न मग्गपच्चया आसेवने द्वे" ति च वत्तब्बं सिया, न पन वुत्तं, तस्मा न लब्भेय्यायं मोघवारो ति अधिप्पायो।

वोट्ठब्बनं पि यदि आसेवनपच्चयो सिया, दुतियमोघवारे अत्तनो विय ततियचतुत्थवारेसु पि सिया, तथा सति अत्तना पि कुसलाकुसलानं सिया, नहि...प०....अवुत्तो अत्थि "पुरिमा पुरिमा कुसला धम्मा" ति आदिना अनवसेसतो वुत्तत्ता। वोट्ठब्बनस्स...प०....अवुत्तो "अब्याकतो धम्मो कुसलस्स धम्मस्स आसेवनपच्चयेन पच्चयो। अकुसलस्स....प०....पच्चयो" ति वचनाभावतो। न केवलं अवुत्तो, अथ खो कुसलं...प०...पटिक्खित्तो व। अथा पि सिया ति आदि मग्गसोधनत्थमेव वुच्चति। समानवेदनानं एव आसेवनपच्चयभावस्स दस्सनतो "असमानवेदनानं वसेना" ति वुत्तं। एवं [१३८-म०] आसेवनपच्चयेन पच्चयो" ति पि वत्तब्बं सिया, समानवेदनावसेना ति अधिप्पायो। अभिन्नजातिकस्स चा ति च-सद्दो अभिन्नवेदनस्स चा ति सम्पिण्डनत्थो। वेदनात्तिके पि वोट्ठब्बनस्स आसेवनपच्चयत्तस्स अभावा ति योजना। कुसलत्तिकादीसु यथादस्सितपाळिप्पदेसेसु पी ति सम्पिण्डनत्थो पि-सद्दो। गणनाय कारणभूताय गणनाय निद्धारियमानाय सति गणनाय वा अब्भन्तरे। दुतियो मोघवारो वीमंसितब्बो ति आसेवनपच्चयत्ताभावा जवनट्ठाने ठातुं न युज्जति। न हि बिना आसेवनं जवनप्पवत्ति अत्थीति अधिप्पायो।

---

1. अभि० १ : ३६-३७ पट्ठाने। 2. अभि० १ : १२९ पट्ठाने।

वने एकं" ति एवं गणनाय निद्धारियमानाय वोट्ठब्बनस्स आसेवनपच्चयत्तस्स अभावा यथावुत्तप्पकारो दुतियो मोघवारो वीमंसितब्बो।

वोट्ठब्बनं पन वीथिविपाकसन्ततिया आवट्टनतो आवज्जना, ततो विसदिसस्स जवनस्स कारणतो[1] मनसिकारो च। एवञ्च कत्वा पट्ठाने "वोट्ठब्बनं कुसलानं खन्धानं अनन्तरपच्चयेन पच्चयो" ति आदि न वुत्तं, "आवज्जना" इच्चेव वुत्तं। तस्मा वोट्ठब्बनतो चतुन्नं वा पञ्चन्नं वा जवनानं आरम्मणपुरेजातं भवितुं असक्कोन्तं रूपादिआवज्जनादीनं पच्चयो भवितुं न सक्कोति, अयमेतस्स सभावो ति जवनापारिपूरिया[2] दुतियो मोघवारो दस्सेतुं युत्तो सिया, अयम्पि अट्ठकथायं अनागतत्ता सुट्ठु विचारेतब्बो। भवङ्गस्स जवनानुबन्धनभूतत्ता **"तदारम्मणं भवङ्गं"** ति वुत्तं पट्ठाने[3] च वुत्तं

अपि चेत्थ "यं जवनभावप्पत्तं, तं छिन्नमूलकरुक्खपुप्फं विया" ति[4] वक्खमानत्ता अनुपच्छिन्नभवमूलानं पवत्तमानस्स वोट्ठब्बनस्स किरियभावो न सिया, वुत्तो च "यस्मिं समये मनोविञ्ञाणधातु उप्पन्ना होति किरिया नेव कुसला नाकुसला न च कम्मविपाका उपेक्खासहगता" ति[5], तस्मा "जवनट्ठाने ठत्वा ति जवनस्स उप्पज्जनट्ठाने द्विक्खत्तुं पवत्तित्वा, न जवनभावेना" ति, "आसेवनं लभित्वा ति च आसेवनं विय आसेवनं" ति वुच्चमाने न कोचि विरोधो, विप्फारिकस्स पन सतो द्विक्खत्तुं पवत्ति येवेत्थ आसेवनसदिसता। विप्फारिकताय हि विञ्ञत्तिसमुट्ठापकत्तञ्चस्स वुच्चति। विप्फारिकम्पि जवनं विय अनेकक्खत्तुं अप्पवत्तिया दुब्बलत्ता न निप्परियायतो आसेवनपच्चयभावेन पवत्तेय्या ति न इमस्स पाठे आसेवनत्थं वुत्तं, अट्ठकथायं पन परियायतो वुत्तं यथा "फलचित्तेसु मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं" ति। अयमेत्थ अत्तनो मति। अयम्पि पोराणकेहि असंवण्णितत्ता साधुकं उपपरिक्खितब्बो।

एवञ्च कत्वा ति वोट्ठब्बनावज्जनानं अनत्थन्तरभावतो "आवज्जना" इच्चेव वुत्तं, वोट्ठब्बनट्ठाने पी ति अधिप्पायो। **तस्मा** ति यस्मा वोट्ठब्बनं आवज्जना येव अत्थतो उपेक्खासहगताहेतुककिरियमनोविञ्ञाणधातुभावतो, तस्मा। तं आवज्जना विय सति उप्पत्तियं कामावचरकुसलाकुसलकिरियजवनानं एकन्ततो अनन्तरपच्चयभावेनेव वत्तेय्य, नो अञ्ञथा ति अधिप्पायेन **"वोट्ठब्बनतो"** ति आदिमाह। **चतुन्नं** ति मुच्छामरणासन्नवेलादीसु मन्दीभूतवेगताय चत्तारि पि जवनानि उप्पज्जेय्युं ति अधिप्पायेन वुत्तं। **अयमेतस्स** [१३९-म०] **सभावो** ति आरम्मणमुखेन पि चित्तनियामं येव दस्सेति। यदि पि **"जवनापारिपूरिया···प०···युत्तो"** ति वुत्तं, **"आवज्जनादीनं पच्चयो भवितुं न सक्कोती"** ति पन वुत्तत्ता चित्तप्पवत्तिवसेन पठममोघ-

---

१. करणतो–सी०। २. जवनपारि०–सी०। ३. अभि० ३ : ४४ पट्ठाने।
४. अट्ठ० २३७। ५. अभि० १ : १४४ ध० संगणियं।

"सहेतुकं भवङ्गं अहेतुकस्स भवङ्गस्स अनन्तरपच्चयेन पच्चयो" ति, "अहेतुकं भवङ्गं सहेतुकस्स भवङ्गस्स [९६-सी०] अनन्तरपच्चयेन पच्चयो" ति च। कुसलाकुसलानं सुखदुक्खविपाकमत्तो विपाको न इट्ठानिट्ठानं विभागं करोति, जवनं पन रज्जनविरज्जनादिवसेन इट्ठानिट्ठविभागं करोतीति **"आरम्मणरसं जवनमेव अनुभवती"** ति वुत्तं।

अविज्जमाने कारके कथं आवज्जनादिभावेन पवत्ति होतीति तं दस्सेतुं **पञ्चविधं नियामं नाम गण्हिस्सु**। नियामो च धम्मानं सभावकिच्चपच्चयभावविसेसो व। **तं तं-सदिसफलदानं** ति तस्स तस्स अत्तनो [१३१-म०] अनुरूपफलस्स दानं। **सदिसविपाकदानं** ति च अनुरूपविपाकदानं ति अत्थो। **इदं वत्थुं** ति एकवचननिद्देसो एकगाथावत्थुभावेन कतो। **जगतिप्पदेसो** ति यथावुत्ततो अञ्ञो पि लोकप्पदेसो। कालगतिउपधिपयोगपटिबाळ्हं हि पापं न विपच्चेय्य, न पदेसपटिबाळ्हं ति। सब्बञ्ञुतञ्ञाणपदट्ठानपटिसन्धियादिधम्मानं नियामो दससहस्सिकम्पनपच्चयभावो **धम्मनियामो**। **अयं इध अधिप्पेतो** ति एतेन नियामवसेन आवज्जनादिभावो, न कारकवसेना ति एतमत्थं दस्सेति।

इमस्मिं ठाने ति सोळसविपाककथाठाने। द्वादसहि वाहेतब्बा नाळियन्तोपमा न द्वादसन्नं चित्तानं एकस्मिं द्वारे एकारम्मणे सह किच्चकरणवसेन वुत्ता, अथ खो द्वादसन्नं एकस्मिं द्वारे सकिच्चकरणमत्तवसेन। अहेतुकपटिसन्धिजनकसदिसजवनानन्तरं अहेतुकतदारम्मणं दस्सेन्तो **"चतुन्नं पन दुहेतुककुसलचित्तानं अञ्ञतरजवनस्स···प···पतिट्ठाती"** ति आह। अहेतुकपटिसन्धिकस्स पन तिहेतुकजवने जविते पटिसन्धिदायकेन कम्मेन अहेतुकस्स तदारम्मणस्स निब्बत्ति न पटिसेधिता। एवं दुहेतुक-

---

वारतो एतस्स न कोचि विसेसो। तेनेवाह "अयम्पि···प०···रेतब्बो" ति। पटिसन्धिचित्ते येव पवत्तियं "भवङ्गं" ति वुच्चमाने न तस्स हेतुवसेन भेदो ति "सहेतुकं भवङ्गं अहेतुकस्स भवङ्गस्स अनन्तरपच्चयेन पच्चयो" ति[1] न सक्का वत्तुं, वुत्तञ्च तस्मा "सहेतुकं भवङ्गं" ति तदारम्मणं वुत्तं ति विञ्ञायति।

सभावकिच्चेहि अत्तनो फलस्स पच्चयभावो, सभावकिच्चानं वा फलभूतानं पच्चयभावो सभावकिच्चपच्चयभावो।

अप्पटिसिद्धं दट्ठब्बं ति "दुहेतुकसोमनस्ससहगत-असङ्खारिकजवनावसाने एवा" ति इमस्स अत्थस्स अनधिप्पेतत्ता। यथा च अहेतुकदुहेतुकपटिसन्धिकानं तिहेतुकजवनावसाने अहेतुकदुहेतुकतदारम्मणं अप्पटिसिद्धं, एवं तिहेतुकपटिसन्धिकस्स तिहेतुकजवनानन्तरं दुहेतुकतदारम्मणं, दुहेतुक-

1. अभि० ३ : ४४ पट्ठाने।

पटिसन्धिकस्स पि तिहेतुकानन्तरं दुहेतुकतदारम्मणं अप्पटिसिद्धं दट्ठब्बं। परिपुण्णविपाकस्स च पटिसन्धिजनककम्मस्स वसेनायं विपाकविभावना तस्सा मुखनिदस्सनमत्तमेवा ति पवत्तिविपाकस्स च एकस्स तिहेतुकादिकम्मस्स सोळसविपाकचित्तादीनि वुत्तनयेन योजेतब्बानि। तस्मा येन केनचि कम्मुना एकेन अनेकं तदारम्मणं पवत्तमानं कम्मविसेसाभावा येसं तं अनुबन्धभूतं, तेसं जवनसङ्खातानं पच्चयानं विसेसेन विसिट्ठं होतीति जवनेनायं तदारम्मणनियामो वुत्तो, न नानाकम्मुना **निब्बत्तमानस्स वसेन**।

एवञ्च कत्वा पट्ठाने[1] "सहेतुके खन्धे अनिच्चतो दुक्खतो अनत्ततो विपस्सति। कुसलाकुसले निरुद्धे अहेतुको विपाको तदारम्मणता उप्पज्जती" ति ञाणानन्तरं अहेतुकतदारम्मणं, "कुसलाकुसले निरुद्धे सहेतुको विपाको तदारम्मणता उप्पज्जती" ति अकुसलानन्तरञ्च सहेतुकतदारम्मणं वुत्तं, न च "तं एतेन थेरेन अदस्सितं" ति कत्वा तस्स पटिसेधो कतो होतीति।

[१३२-म०] **यं पन जवनेन**...**प**...**तं कुसलं सन्धाय वुत्तं** ति इदं कुसलस्स विय अकुसलस्स सदिसो विपाको नत्थीति कत्वा वुत्तं। ससङ्खारिकासङ्खारिकनियमनं पन सन्धाय तस्मिं वुत्ते अकुसले पि न तं न युज्जतीति। **अट्ठानमेतं** ति इदं नियमितादिवसेन योनिसो अयोनिसो वा आवट्टिते अयोनिसो [९७-सी०] योनिसो वा ववत्थापनस्स अभावं सन्धाय वुत्तं।

पटिसन्धिकस्स च दुहेतुकानन्तरं अहेतुकतदारम्मणं अप्पटिसिद्धं दट्ठब्बं। "तिहेतुककम्मं तिहेतुकम्पि दुहेतुकम्पि अहेतुकम्पि विपाकं देती" ति[2] हि वुत्तं। **परिपुण्णविपाकस्सा** ति इमिना पि तिहेतुकजवनतो यथावुत्ततदारम्मणस्स अप्पटिसिद्धं येव साधेति। न हि पच्चयन्तरसामग्गिया असति तदारम्मणं सब्बं अविपच्चन्तं कम्मं परिपुण्णविपाकं होतीति। **मुखनिदस्सनमत्तमेव** यथावुत्ततदारम्मणप्पवत्तिया अविभावितत्ता। तिहेतुकादिकम्मस्स हि उक्कट्ठस्स तिहेतुककम्मस्स सोळस, इतरस्स द्वादस उक्कट्ठस्सेव दुहेतुककम्मस्स द्वादस, इतरस्स अट्ठा ति एवं सोळसविपाकचित्तादीनि योजेतब्बानि। **तस्मा** ति यस्मा परिपुण्णविपाकस्स पटिसन्धिजनककम्मस्स वसेन विपाकविभावनाय मुखनिदस्सनमत्तमेवेतं, तस्मा।

एवञ्च कत्वा ति नानाकम्मतो तदारम्मणुप्पत्तियं इतो अञ्ञथा पि सम्भवतो ति अत्थो। "उपेक्खा...प०...उप्पज्जती" ति एत्थ केन किच्चेन उप्पज्जती ति? तदारम्मणकिच्चं ताव न होति जवनारम्मणस्स अनालम्बणतो, नापि सन्तीरणकिच्चं तथा अप्पवत्तनतो, पटिसन्धिचुतीसु [१४०-म०] वत्तब्बमेव नत्थि, पारिसेसतो भवङ्गकिच्चं ति युत्तं सिया। न हि पटिसन्धिभूतं येव चित्तं "भवङ्गं" ति वुच्चती ति।

---

१. अभि० ३ : ४१ पट्ठाने। २. अट्ठ० २३१।

पटिसिद्धं ति अवचनमेव पटिसेधो ति कत्वा वुत्तं। कामतण्हानिब्बत्तेन कम्मुना महग्गतलोकुत्तरानुभवनविपाको न होतीति तत्थ तदारम्मणाभावो वेदितब्बो। आपाथगते विसये तन्निन्नं भवङ्गं आवज्जनं उप्पादेतीति आवज्जनं विसये **निन्नत्ता** उप्पज्जति। भवङ्गं पन सब्बदा सविसये निन्नमेवा ति विसयन्तरविञ्ञाणस्स पच्चयो हुत्वा पि तदभावा विना आवज्जनेन सविसये निन्नत्ता व उप्पज्जति। **चिण्णत्ता** ति आवज्जनेन विना बहुलं उप्पन्नपुब्बत्ता। **समुदाचारत्ता** ति आपाथगते विसये पटिसन्धिविसये च बहुलं उप्पादितपुब्बत्ता। **चिण्णत्ता** ति वा पुग्गलेन आसेवितभावो वुत्तो। **समुदाचारत्ता** ति सयं बहुलं पवत्तभावो। **निरोधस्स अनन्तरपच्चयं नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं** ति इदं तदनन्तरमेव निरोधफुसनं सन्धाय वुत्तं, न अरूपक्खन्धानं विय निरोधस्स अनन्तरपच्चयभावं। नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं पन किञ्चि परिकम्मेन विना उप्पज्जमानं नत्थि। परिकम्मावज्जनमेव तस्स आवज्जनं ति अञ्ञस्स विय एतस्स पि सावज्जनताय भवितब्बं।

अयं पनेत्थाधिप्पायो दट्ठब्बो—नेवसञ्ञानासञ्ञायतनस्स न निरोधस्स अनन्तरपच्चयभावे निन्नादिता अञ्ञत्थ दिट्ठा अतदत्थपरिकम्मभावे च उप्पत्तिया, अथ च तं तस्स अनन्तरपच्चयो होति, तथा च उप्पज्जति। एवं यथा वुत्ता मनोविञ्ञाणधातु असति पि निरावज्जनुप्पत्तियं निन्नादिभावे निरावज्जना उप्पज्जतीति। एवञ्च कत्वा **"अरियमग्गचित्तं मग्गानन्तरानि फलचित्तानी"** ति इदं वुत्तं। यदि हि निब्बाणारम्मणावज्जनाभावं[1] सन्धायेतं वुत्तं सिया, गोत्रभुवोदानानि निदस्सनानि सियुं तेहेव एतेसं निरावज्जनतासिद्धितो। फलसमापत्तिकाले च "परित्तारम्मणं महग्गतारम्मणं अनुलोमं [१३३-म०] फलसमापत्तिया अनन्तरपच्चयेन पच्चयो" ति[2] वचनतो समानारम्मणावज्जनरहितत्ता "मग्गानन्तरानि फलचित्तानी" ति एवं फलसमापत्तिचित्तानि न वज्जेतब्बानि सियुं, गोत्रभुवोदानानि पन यदि पि निब्बाने चिण्णानि समुदाचारानि च न होन्ति, आरम्मणन्तरे चिण्णसमुदाचारानेव। फलसमापत्तिचित्तानि च मग्गवीथितो उद्धं तदत्थपरिकम्मसब्भावा ति तेसं गहणं न कतं, अनुलोमानन्तरञ्च फलसमापत्तिचित्तं चिण्णं समुदाचारं, न नेवसञ्ञानासञ्ञायतनानन्तरं मग्गानन्तरस्स विय

तन्निन्नं ति आपाथगतविसयनिन्नं आवज्जनं ति सम्बन्धो। **अञ्ञस्स विय** पठमज्झानादिकस्स विय। एतस्स पि सावज्जनताय भवितब्बं ति अधिप्पायो।

अतदत्था ति एत्थ तं-सद्देन निरोधं पच्चामसति। **उप्पत्तिया** ति उप्पत्तितो। **तं** ति नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं। **तस्स** निरोधस्स। **तथा च उप्पज्जती** ति "अनन्तरपच्चयो होती"

---

1. वज्जनभावं–सी०। 2. अभि० २ : ३६७-३६८ पट्ठाने।

तदत्थपरिकम्माभावा ति "निरोधा वुट्ठहन्तस्सा" ति तञ्च निदस्सनं। **आरम्मणेन पन विना नुप्पज्जती** ति इदं एतस्स महग्गतारम्मणत्ताभावा पुच्छं कारेत्वा आरम्मणनिद्धारणत्थं वुत्तं।

तत्था ति विपाककथायं। जच्चन्ध-पीठसप्पि-उपमानिदस्सनं विपाकस्स निस्सयेन विना अप्पवत्तिदस्सनत्थं। **विसयग्गाहो** ति इदं चक्खादीनं सविसयग्गहणेन [९८-सी०] चक्खुविञ्ञाणादिविपाकस्स दस्सनत्थं वुत्तं। उपनिस्सयतो चक्खादीनं दस्सनादि-अत्थतो च तस्सेव विपाकस्स दस्सनत्थं **"उपनिस्सयमत्थसो"** ति वुत्तं। **हदयवत्थुमेवा** ति यथा पुरिमचित्तानि हदयवत्थुनिस्सितानि च पसादवत्थु-अनुगतानि च अञ्ञारम्मणानि होन्ति, न एवं भवङ्गं, तं पनेतं वत्थारम्मणन्तररहितं केवलं हदयवत्थुमेव निस्साय पवत्ततीति वुत्तं होति। **हदयरूपवत्थुकं** ति इधा पि अञ्ञवत्थानुगतं ति अधिप्पायो वेदितब्बो। मक्कटकस्स हि सुत्तारोहणं विय पसादवत्थुकं चित्तं, सुत्तेन गमनादीनि विय तदनुगतानि सेसचित्तानीति। सुत्तघट्टनमक्कटकचलनानि विय पसादघट्टनभवङ्ग-चलनानि सह होन्तीति दीपनतो **"एकेकं ··· प ·· आगच्छती"** ति पि दीपेति।

भवङ्गस्स आवट्टितकालो ति इदं दोवारिकसदिसानं चक्खुविञ्ञाणादीनं पादपरि-मज्जकसदिसस्स आवज्जनस्स सञ्ञादानसदिसो अनन्तरपच्चयभावो एव भवङ्गावट्टनं ति कत्वा वुत्तं। विपाकमनोधातु-आदीनं अदिस्वा व सम्पटिच्छनादिकरणं गाळ्ह-ग्गहणमत्तपुथुलचतुरस्सभावविजाननमत्तकहापणभावविजाननमत्तकम्मोपनयनमत्तसामञ्ञवसेन वुत्तं, न गाळ्हग्गाहकादीनं कहापणदस्सनस्स अभावो तंसमानभावो च सम्पटिच्छ-नादीनं अधिप्पेतो ति वेदितब्बो।

[१३४-म०] **पण्डरं एतं** ति पण्डररूपदस्सनसामञ्ञतो चक्खुविञ्ञाणमेव दस्सन-किच्चं साधेतीति दीपनं वेदितब्बं। एवं सोतद्वारादीसु पि योजेतब्बं सवनादिवसेन। सन्तापनवसेन गुळसीलो गुळप्पयोजनो वा **गोळियको**। **उपनिस्सयतो** ति न उपनिस्सयपच्चयं सन्धाय वुत्तं। यस्मिं पन असति यो न होति, सो इध "उपनिस्सयो" ति अधिप्पेतो। **आलोकसन्निस्सितं** ति इदम्पि आलोके सति सब्भावं सन्धाय वुत्तं, न उपनिस्सयपच्चयतं। **मन्दथामगतं** नाम किरियचित्तस्स पच्चयभावं अनुपगन्त्वा सयमेव पवत्तमानं।

ति पदस्स अत्थं विवरति। यथावुत्ता वुत्तप्पकारा। वोदानं दुतियमग्गादीनं पुरेचारिकञाणं। **एतेसं** ति अरियमग्गचित्तामग्गानन्तरफलचित्तानं। **एतस्सा** ति यथावुत्तविपाकचित्तस्स।

उपनिस्सयतो तस्सेव चक्खुविञ्ञाणादिविपाकस्स दस्सनत्थं चक्खादीनं दस्सनादि-अत्थतो दस्सनादिफलतो, दस्सनादिप्पयोजनतो वा। **पुरिमचित्तानि** आवज्जनादीनि। **वत्थन्तररहितत्ते** दस्सेतब्बे वत्थन्तरे विय आरम्मणन्तरे पि न वत्ततीति **"वत्थारम्मणन्तररहितं"** ति वुत्तं।

असङ्खारिकससङ्खारिकेसु दोसं दिस्वा ति न कम्मस्स विरुद्धसभावेन विपाकेन भवितब्बं ति असङ्खारिककम्मस्स ससङ्खारिकविपाकेसु, ससङ्खारिककम्मस्स च असङ्खारिकविपाकेसु दोसं दिस्वा। अहेतुकानं पन रूपादीसु अभिनिपातमत्तादिकिच्चानं न ससङ्खारिकविरुद्धो सभावो ति असङ्खारिकता नत्थि, असङ्खारिकविरुद्धसभावाभावा ना पि ससङ्खारिकता ति उभयाविरोधा उभयेन पि तेसं निब्बत्तिं अनुजानाति। **चित्तनियामं** ति तदारम्मणनियामं। **किरियतो पञ्चा** ति **इमेसं…प…पतिट्ठाती** ति किरियजवनानन्तरञ्च तदारम्मणं वुत्तं। पट्ठाने[1] पन "कुसलाकुसले निरुद्धे विपाको तदारम्मणता उप्पज्जती" ति विपाकधम्मधम्मानमेव अनन्तरा तदारम्मणं वुत्तं। कुसलत्तिके च "सेक्खा वा पुथुज्जना वा कुसलं अनिच्चतो" ति आदिना[2] कुसलाकुसलजवनमेव वत्वा तदनन्तरं तदारम्मणं वुत्तं, न अब्याकतानन्तरं, न च कत्थचि किरियानन्तरं तदारम्मणस्स वुत्तट्ठानं दिस्सति। विज्जमाने च तस्मिं अवचने कारणं

यदि विपाकेन कम्मसरिक्खेनेव भवितब्बं, एवं सति इमस्मिं वारे अहेतुकविपाकानं असम्भवो एव सिया तेसं अकम्मसरिक्खकत्ता ति इममत्थं मनसि कत्वा आह **"अहेतुकानं पना** ति। अभिनिपातमत्तं पञ्चन्नं विञ्ञाणानं किच्चमाह। ते हि आपाथगतेसु रूपादीसु अभिनिपातनमत्तेनेव वत्तन्ति। आदि-सद्देन सम्पटिच्छनादीनि सङ्गण्हाति। कुसलेसु कुसलाकुसलकिरियेसु पि वा विज्जमाना ससङ्खारिकासङ्खारिकता अञ्ञमञ्ञं असरिक्खत्ता पहानावट्ठानतो च विरुद्धा विया ति विपाकेसु सा तदनुकूला सिया, सा पन मूलाभावेन न सुप्पतिट्ठितानं सविसयाभिनिपतनमत्तादिवुत्तीनं नत्थीति वुत्तं "न ससङ्खारिकविरुद्धो" ति आदि। **उभयेन पि तेसं निब्बत्तिं अनुजानाति** यथा "कटत्तारूपानं" ति अधिप्पायो। "विपाकधम्मधम्मो विपाकस्स धम्मस्स आरम्मणपच्चयेन पच्चयो। विपाकधम्मधम्मे खन्धे अनिच्चतो दुक्खतो अनत्ततो विपस्सति, अस्सादेति, अभिनन्दति, तं आरब्भ रागो उप्पज्जति, दोमनस्सं उप्पज्जति, कुसलाकुसले निरुद्धे" ति आदिना[3] विपाकत्तिके विय सिया कुसलत्तिके पि पाळीति कत्वा "**कुसलत्तिके च**" आदि वुत्तं। तत्थ हि "कुसलो धम्मो अब्याकतस्स धम्मस्स आरम्मणपच्चयेन पच्चयो" ति उद्दिसित्वा "सेक्खा वा पुथुज्जना वा कुसलं [१४१–म०] अनिच्चतो दुक्खतो अनत्ततो विपस्सन्ति, कुसले निरुद्धे विपाको तदारम्मणता उप्पज्जति, कुसलं अस्सादेति अभिनन्दति, तं आरब्भ रागो उप्पज्जति, दिट्ठि, विचिकिच्छा, उद्धच्चं दोमनस्सं उप्पज्जति, अकुसले निरुद्धे विपाको तदारम्मणता उप्पज्जति" ति[4] वुत्तं। अविज्जमानत्ता एव अवचनं ति अधिप्पायेन तत्थ युत्तिं दस्सेति "विप्फारिकं ही" ति आदिना।

---

१. अभि० १ : ३४० पट्ठाने।   २. अभि० १ : १२३ पट्ठाने।
३. अभि० १ : ३३९ पट्ठाने।   ४. अभि० १ : १२४ पट्ठाने।

नत्थि, [९९-सी०] तस्मा उपपरिक्खितब्बो एसो थेरवादो। विप्फारिकं हि जवनं नावं विय नदीसोतो भवङ्गं अनुबन्धतीति युत्तं, न पन छळङ्गुपेक्खवतो सन्तवुत्ति किरियजवनं पण्णपुटं विय नदीसोतो ति।

पिण्डजवनं जवती ति कुसलाकुसलकिरियजवनानि पिण्डेत्वा कथितानीति तथा कथितानि जवनानि पिण्डितानि विय वुत्तानि, एकस्मिं वा तदारम्मणे पिण्डेत्वा दस्सितानि हुत्वा जवितानेव वुत्तानि। इमञ्च पन पिण्डजवनं वदन्तेन अकुसलतो चत्तारि येव उपेक्खासहगतानि गहेत्वा द्वादसुपेक्खासहगतजवनानि पिण्डितानि विय वुत्तानि। पट्ठाने पन "कुसलं अस्सादेति अभिनन्दति तं आरब्भ रागो उप्पज्जति, दिट्ठि, [१३५-म०] विचिकिच्छा, उद्धच्चं, दोमनस्सं उप्पज्जति। अकुसले निरुद्धे विपाको तदारम्मणता उप्पज्जती" ति वुत्तता इतरानि द्वे इट्ठारम्मणे पवत्तविचिकिच्छुद्धच्चसहगतानि पि कुसलविपाके तदारम्मणे पिण्डेतब्बानि सियुं। तेसं पन अनन्तरं अहेतुकविपाकेनेव तदारम्मणेन भवितब्बं, सो च सन्तीरणभावेनेव गहितो ति अपुब्बं गहेतब्बं नत्थि। अहेतुके च पिण्डेतब्बं नारहन्तीति अधिप्पायेन न पिण्डेतीति।

एत्थ केचि "छळङ्गुपेक्खावतो पि किरियमयचित्तताय किरियजवनस्स विप्फारिककिरियभावो न सक्का निसेधेतुं ति निदस्सनभावेन पण्णपुटमुपनीतं असमानं। किरियजवनानन्तरं तदारम्मणाभावस्स पाळियं अवचनम्पि अकारणं लब्भमानस्स पि कत्थचि केनचि अधिप्पायेन अवचनतो। तथा हि धम्मसङ्गहे अकुसलनिद्देसे लब्भमानो पि अधिपति न वुत्तो, तस्मा किरियजवनानन्तरं तदारम्मणाभावो वीमंसितब्बो" ति वदन्ति। सति पि किरियमयत्ते सब्बत्थ तादिभावप्पत्तानं खीणासवानं जवनचित्तं न इतरेसं विय विप्फारिकं सन्तसभावताय पन सन्निसिन्नरसं सिया ति तस्स पण्णपुटं दस्सितं। धम्मसङ्गहे अकुसलनिद्देसे अधिपतिनो विय पट्ठाने किरियजवनानन्तरं तदारम्मणस्स लब्भमानस्स अवचने न किञ्चि कारणं दिस्सति। तथा हि वुत्तं तत्थ अट्ठकथायं "हेट्ठा दस्सितनयत्ता" ति[1] न चेत्थ दस्सितनयत्ता ति सक्का वत्तुं विपाकधम्मधम्मेहि कुसलाकुसलेहि अतंसभावानं नयदस्सनस्स अयुज्जमानकत्ता। अपि च तत्थ वीमंसाय केसुचि सब्बेसञ्च अधिपतीनं अभावतो एकरसं देसनं दस्सेतुं "उद्धटो" ति च सक्का वत्तुं, इध पन न तादिसं अवचने कारणं लब्भतीति" अवचने कारणं नत्थी" ति वुत्तं।

अधिप्पायेना ति अकुसलानन्तरं सहेतुकतदारम्मणं नत्थीति तस्स थेरस्स मतिमत्तं ति दस्सेति। "कुसलाकुसले निरुद्धे सहेतुको विपाको तदारम्मणता उप्पज्जती" ति[2] वचनतो पन अकुसलानन्तरं सहेतुकतदारम्मणम्पि विज्जति येवा ति उप्पत्तिं वदन्तस्स युत्तग्गहणवसेना ति अधिप्पायो।

---

१. अट्ठ०-२११। २. अभि०-३ : ४१ पट्ठाने।

ति तुकजवनावसाने पनेत्था ति एतस्मिं दुतियवादे तिहेतुकजवनावसाने तिहेतुकतदारम्मणं युत्तं ति दस्सेतुं युत्तं वदति जवनसमानत्ता, नालब्भमानत्ता अञ्ञस्स। पठमत्थेरेन अकुसलानन्तरं वुत्तस्स अहेतुकतदारम्मणस्स, कुसलानन्तरं वुत्तस्स च सहेतुकतदारम्मणस्स अकुसलानन्तरं उप्पत्तिं वदन्तस्स हि पटिसन्धिजनकं तिहेतुककम्मं दुहेतुकाहेतुकं विपाकं जनयन्तम्पि तिहेतुकजवनानन्तरं न जनेतीति न एत्थ कारणं दिस्सतीति एवं युत्तं गहेतब्बं अवुत्तम्पीति अधिप्पायो। अथ वा तस्मिं तस्मिं थेरवादे येन अधिप्पायेन ससङ्खारासङ्खारविधानादि वुत्तं, तं तेनेव अधिप्पायेन युत्तं गहेतब्बं, न अधिप्पायन्तरं अधिप्पायन्तरेन आलोळेतब्बं ति अत्थो। **हेतुसदिसमेवा** ति जनककम्महेतुसदिसमेव **महापकरणे आवि भविस्सती** ति महापकरणे आगतपाळिया पाकटं उप्पत्तिविधानं आवि भविस्सतीति अधिप्पायेन वदति।

कामावचरकुसलविपाककथावण्णना निट्ठिता।

रूपावचरारूपावचरविपाककथावण्णना

अनन्तरायेना ति परिहानिपच्चयविरहेन। **पटिपदादिभेदो** ति पटिपदारम्मणभेदो।

न एत्थ कारणं दिस्सती ति एतेन तिहेतुकजवनानन्तरं तिविधम्पि तदारम्मणं युत्तं ति दस्सेति। **येन अधिप्पायेना** ति पठमथेरेन ताव [१४२–म०] एतेन कम्मुना अनेकतदारम्मणं निब्बत्तमानं कम्मविसेसाभावा तंतंजवनसङ्खातपच्चयविसेसेन विसिट्ठं होतीति इमिना अधिप्पायेन जवनवसेन तदारम्मणस्स ससङ्खारादिविधानं वुत्तं, विपाकेन नाम कम्मसरिक्खेन भवितब्बं, न कम्मविरुद्धसभावेन। अञ्ञथा अनिट्ठप्पसङ्गो सिया ति एवमधिप्पायेन दुतियत्थेरो कम्मवसेनेव तदारम्मणविसेसं आह। ञाणस्स जच्चन्धादिदुग्गतिविपत्तिनिमित्तपटिपक्खता विय सुगतिविपत्तिनिमित्तपटिपक्खता पि सिया ति मञ्ञमानो ततियत्थेरो "तिहेतुककम्मतो दुहेतुकपटिसन्धिम्पि नानुजानाती" ति इमिना नयेन तेसु वादेसु अधिप्पायाविरोधवसेन युत्तं गहेतब्बं। **महापकरणे आगतपाळिया** ति "सहेतुको धम्मो अहेतुकस्स धम्मस्स अनन्तरपच्चयेन पच्चयो" ति[१] इमस्स विभङ्गे "सहेतुकं भवङ्गं अहेतुकस्स भवङ्गस्स अनन्तरपच्चयेन पच्चयो, सहेतुका खन्धा वुट्ठानस्स अनन्तरपच्चयेन पच्चयो" ति[१] एवमादिना पट्ठाने सहेतुकदुकादीसु आगतपाळिया ति अत्थो।

कामावचरकुसलविपाकवण्णना निट्ठिता।

रूपावचरारूपावचरविपाककथावण्णना

यस्मिं खणे विज्जमानानं छन्दादीनं ति एतेन विपाकज्झाने दुक्खापटिपदादिभावस्स

---

१. अभि० ३ : ४४ पट्ठाने।

तथा हि दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं झानं उप्पादेत्वा पुनप्पुनं समापज्जन्तस्स तं झानं तंपटिपदमेव होति। एतस्मिं अपरिहीने तस्स विपाको निब्बत्तमानो तप्पटिपदो व भवितुं अरहतीति। छन्दाधिपतेय्यादिभावो पन तस्मिं खणे विज्जमानानं छन्दादीनं अधिपतिपच्चयभावेन होति, न [१००-सी०] आगमनवसेन। तथा हि [१३६-म०] एकमेव झानं नानाक्खणेसु नानाधिपतेय्यं होति। चतुत्थज्झानस्सेव हि चतुरिद्धिपाद-भावेन भावना होति, तस्मा विपाकस्स आगमनवसेन छन्दाधिपतेय्यादिता न वुत्ता।

रूपावचरारूपावचरविपाककथावण्णना निट्ठिता।

लोकुत्तरविपाककथावण्णना

यथा वट्टं आचिनति, तथा तण्हादीहि अभिसङ्खतं लोकियकम्मं **उपचितं** ति वुच्चति। लोकुत्तरं पन एवं न होतीति तथा न वुत्तं। **सुद्धागमनवसेना** ति अनि-मित्ताप्पणिहितनामदायकेहि सगुणारम्मणेहि विज्जमानेहि पि फलस्स सुञ्ञतनामदान-दीपने अग्गहितभावेनेव अवोमिस्सेना ति अत्थो। आगमनतो सुञ्ञताप्पणिहितनामवतो मग्गस्स आगमनीयट्ठाने ठत्वा अत्तनो फलस्स नामत्तयदानं योजितं, इतरस्स पि पन तथेव योजेतब्बं। नयमत्तदस्सनं हेतं। सगुणारम्मणेहि पन नामत्तयवतो अनिच्चा-

---

अविज्जमानतं दस्सेति। न हि कुसलज्झानं विय विपाकज्झानं परिकम्मवसेन निब्बत्ततीति। न चेत्थ पटिपदाभेदो कुसलानुरूपो विपाकस्स आरम्मणभेदो पि न परमत्थिको सिया ति सक्का वत्तुं एकन्तेन सारम्मणत्ता अरूपधम्मानं विपाकस्स च कम्मनिमित्तारम्मणताय अञ्ञत्रा पि विज्जमानत्ता। **नानाक्खणेसु नानाधिपतेय्यं** ति "यस्मिं खणं यं झानं यदधिपतिकं, ततो **अञ्ञस्मिं खणे तं झानं एकन्तेन तदधिपतिकं न होती"** ति कत्वा वुत्तं। **चतुत्थझानस्सेवा** ति च पटिपदा विय अधिपतयो न एकन्तिका ति इममेवत्थं दस्सेति।

रूपावचरारूपावचरविपाककथावण्णना निट्ठिता।

लोकुत्तरविपाककथावण्णना

[१४३-म०] तण्हाविज्जादीहि आहितविसेसं लोकियकम्मं विपाकुप्पादनसमत्थं होति, न अञ्ञथा ति वुत्तं **"तण्हादीहि अभिसङ्खतं"** ति। **इतरस्सा** ति सुञ्ञताप्पणिहितनामरहितस्स। यो सुद्धिकपटिपदाय विभावितो, यो च सुत्तन्तपरियायेन अनिमित्तो ति वुच्चति। तेनेवाह **"अनिच्चानुपस्सनानन्तरस्स पि मग्गस्सा"** ति आदि। **वळञ्जन···प०···भेदो होति मग्गा-गमनवसेना** ति अधिप्पायो। **"मग्गानन्तरफलचित्तस्मिं येवा"** ति वचनं अपेक्खित्वा **"सुञ्ञता-दिनामलाभे सती"** ति सासङ्कं आह। अनिमित्तनामञ्च लभति मग्गागमनतो फलस्स

नुपस्सनानन्तरस्स पि मग्गस्स आगमनीयट्ठाने ठत्वा अत्तनो फलस्स नामत्तयदानं न निवारितं ति। वळञ्जनकफलसमापत्तिया[1] च विपस्सनागमनवसेन नामलाभे मग्गस्स विय अनिमित्तनामलाभो न सिया। यथा पन मग्गानन्तरस्स विय वळञ्जनकफलसमापत्तिया पि ञानपटिपदाभेदो होति, एवं सुञ्ञतादिनामलाभे सति अनिमित्तनामञ्च लभतीति। **अवूपसन्ताया** ति इदं केनचि अञ्ञेन अनन्तरितत्ता तादिसाय एव सद्धाय····प···पञ्ञाय च अनन्तरपच्चयभावं सन्धाय वुत्तं। तेन छन्दादयो पि अत्तनो अनन्तरसदिसानं छन्दादीनं उप्पादका अधिपतिभूता अधिपतिभूते एव उप्पादेन्तीति इममत्थं दीपेति।

किलेससमुच्छेदकस्स मग्गस्स सम्मादिट्ठि-आदिकस्स निय्यानिकसभावस्स फलेन पि पटिप्पस्सद्धकिलेसेन निय्यानसभावेनेव भवितब्बं, तस्मा फले पि **"मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं"** ति वुत्तं। एवञ्च कत्वा मग्गविभङ्गे फलेसु च अट्ठङ्गिको पञ्चङ्गिको च मग्गो उद्धटो। एवं बोज्झङ्गापी ति। **मग्गं उपादाया** ति मग्गसदिसताय मग्गो ति इममत्थं सन्धायाह।

लोकुत्तरविपाककथावण्णना निट्ठिता।

अकुसलविपाककथा वण्णना

[१३७-म०] इट्ठ-इट्ठमज्झत्तेसु विय न अनिट्ठ-अनिट्ठमज्झत्तेसु सन्तीरणविसेसो अत्थि, अनिट्ठारम्मणमेव पन अधिमत्तं मन्दञ्च एवं द्विधा वुत्तं।

अकुसलविपाककथावण्णना निट्ठिता।

नामलाभे विसेसाभावतो ति अधिप्पायो। तादिसाय एवा ति यादिसा मग्गे सद्धा, तादिसाय एव फले सद्धाय।

"कतमे धम्मा निय्यानिका ? चत्तारो मग्गा" ति वचनतो[2] अनिय्यानिकपदनिद्देसे च "चतूसु भूमीसु विपाको" ति[3] वुत्तत्ता न निप्परियायेन फलं निय्यानसभावं, निय्यानसभावस्स पन विपाको किलेसानं पटिप्पस्सद्धिप्पहानवसेन पवत्तमानो परियायतो तथा वुच्चतीति आह "निय्यानिकसभावस्सा" ति आदि। पञ्चङ्गिको चा ति एतेन मग्गविभङ्गे सब्बवारेसु पि फलस्स मग्गपरियायो आगतो ति दस्सेति। तत्थ हि अरियमग्गक्खणे विज्जमानासु पि विरतीसु तदवसिट्ठानं पञ्चन्नं कारापकङ्गानं अतिरेककिच्चतादस्सनत्थं पाळियं पञ्चङ्गिको पि

---

1. वळञ्जनक०—सी०। 2. अभि० १ : २८२, ३३१ धम्मसंगणियं।
3. अभि० १ : ३३१ ध० सं०।

किरियाब्याकतमनोधातुचित्तवण्णना

वातपुप्फं ति मोघपुप्फं। तं अच्छिन्ने पि रुक्खे न फलति, छिन्नरुक्खपुप्फं पन अच्छिन्ने फलेय्य। एवं अच्छिन्नभवमूलस्स पि पवत्तमानं यं न फलति, तं वातपुप्फसदिसं। इतरस्सेव पन पवत्तमानं छिन्नरुक्खपुप्फसदिसं। [१०१-सी०] तं हि अच्छिन्ने भवमूले फलेय्या ति।

किरियमनोविञ्ञाणधातुचित्तवण्णना

लोलुप्पतण्हा पहीना ति इमस्स चित्तस्स पच्चयभूता पुरिमा पवत्ति दस्सिता। इदं पन चित्तं विचारणपञ्ञारहितं ति केवलं सोमनस्समत्तं उप्पादेन्तस्स होतीति। एवं चेतियपूजादीसु पि दट्ठब्बं। **वत्तं करोन्तो** ति इदं वत्तं करोन्तस्स फोट्ठब्बारम्मणे कायद्वारचित्तप्पवत्तिं सन्धाय वुत्तं। पञ्चद्वारानुगतं हुत्वा लब्भमानं सन्धाय पञ्चद्वारे एव वा लोलुप्पतण्हापहाणादिपच्चवेक्खणहेतुभूतं इदमेव पवत्तिं सन्धाय तत्थ तत्थ **"इमिना चित्तेन सोमनस्सितो होती"** ति वुत्तं ति **"एवं ताव पञ्चद्वारे लब्भती"** ति आह। अतीतंसादीसु अप्पटिहतं ञाणं वत्वा "इमेहि तीहि धम्मेहि समन्नागतस्स बुद्धस्स

मग्गो उद्धटो ति। "एवं बोज्झङ्गा पी" ति यथा मग्गो, एवं मग्गबोज्झङ्गविभङ्गेसु फलेसु च बोज्झङ्गा उद्धटा ति अत्थो।

लोकुत्तरविपाककथावण्णना निट्ठिता।

किरियाब्याकतकथावण्णना

पुरिमा पवत्ती ति महाकिरियचित्तप्पवत्तिं आह। ताय हि खीणासवो एवं पच्चवेक्खति। तेनेवाह "इदं पन चित्तं विचारणपञ्ञारहितं" ति। एवं ति यथा सोतद्वारे, एवं घानद्वारादीसु पि महाकिरियचित्तेहि तस्मिं तस्मिं विसये इदमत्थिकताय परिच्छिन्नाय इदं चित्तं [१४४-म०] वत्ततीति दस्सेति। पञ्चद्वारानुगतं हुत्वा लब्भमानं ति पञ्चद्वारे पवत्तमहाकिरियचित्तानं पिट्ठिवट्टकभावेन इमस्स चित्तस्स पवत्तिं सन्धाय वुत्तं, पञ्चद्वारे एव वा इदमेव पवत्तं ति सम्बन्धो। "लोलुप्प····प०····भूतं" ति वुत्तत्ता पञ्चद्वारे पठमं इमिना चित्तेन सोमनस्सितो हुत्वा पच्छा महाकिरियचित्तेहि तं तं अत्थं विचिनोती ति अयमत्थो वुत्तो विय दिस्सति। पुब्बे येव पन मनोद्वारिकचित्तेन पधानसारुप्पट्ठानादिं परिच्छिन्दन्तस्स पच्चद्वारे तादिसस्सेव तादिसेसु रूपादीसु इदं चित्तं पवत्ती ति वदन्ति। अयम्पि अत्थो पञ्चद्वारे एव पवत्तं लोलुप्पतण्हापहानादिपच्चवेक्खणाहेतुयथावुत्तकारणभूतं जातं ति एवं योजेत्वा सक्का वत्तुं। एवञ्च सति इमस्स चित्तस्स पच्चयभूता पुरिमा पवत्तीति इदम्पि वचनं समत्थितं होति।

भगवतो सब्बं कायकम्मं ञाणानुपरिवत्ती" ति आदिवचनतो[1] "भगवतो इदं उप्पज्जती;' ति वुत्तवचनं विचारेब्बं। अहेतुकस्स मूलभावेन सुप्पतिट्ठितता नत्थीति बलभावो अपरिपुण्णो, तस्मा उद्देसवारे "समाधिबलं होति वीरियबलं होती" ति न वुत्तं।

ततो एव हि अहेतुकानं सङ्गहवारे झानङ्गानि च न उद्धटानि। तेनेव इमस्मिम्पि अहेतुकद्वये बलानि अनुद्देसासङ्गहितानि। यस्मा पन वीरियस्स विज्जमानत्ता [१३८-म०] सेसाहेतुकेहि बलवं, यस्मा च एत्थ वितक्कादीनं झानपच्चयमत्तता विय समाधिवीरियानं बलमत्तता अत्थि, तस्मा निद्देसवारे "समाधिबलं वीरियबलं" ति वत्वा ठपितं। यस्मा पन नेव कुसलं नाकुसलं, तस्मा सम्मासमाधि मिच्छासमाधीति, सम्मावायामो मिच्छावायामो ति च न वुत्तं ति अधिप्पायो। एवं सति महाकिरियचित्तेसु च एतं न वत्तब्बं सिया, वुत्तञ्च, तस्मा सम्मा, मिच्छा वा निय्यानिकसभावाभावतो मग्गपच्चयभावं अप्पत्ता समाधिवायामा इध तथा न वुत्ता ति दट्ठब्बा।

एत्थ च पञ्चद्वारे इमिना चित्तेन सोमनस्सुपादनमत्तं दट्ठब्बं, न हासुप्पादनं पञ्चद्वारिकचित्तानं अविञ्ञत्तिजनकत्ता, मनोद्वारे पन हासुप्पादनं होति। तेनेव हि अट्ठकथायं पञ्चद्वारे "सोमनस्सितो होती" ति एत्तकमेव वुत्तं, मनोद्वारे च "हासयमानं" ति। इमिना हसितुप्पादचित्तेन पवत्तियमानम्पि भगवतो सितकरणं पुब्बेनिवास-अनागतंस-सब्बञ्ञुतञाणानं अनुवत्तकत्ता ञाणानुपरिवत्ति येवा ति। एवं पन ञाणानुपरिवत्तिभावे सति न कोचि पाळि-अट्ठकथानं विरोधो, एवञ्च कत्वा अट्ठकथायं "तेसं ञाणानं चिण्णपरियन्ते इदं चित्तं उप्पज्जती" ति वुत्तं। अवस्सञ्च एतं एवं इच्छितब्बं, अञ्ञथा आवज्जनचित्तस्स पि भगवतो पवत्ति न युज्जेय्य। तस्स पि हि विञ्ञत्तिसमुट्ठापकभावस्स निच्छितत्ता, न च विञ्ञत्तिसमुट्ठापकत्ते तंसमुट्ठिताय विञ्ञत्तिया कायकम्मादिभावं आवज्जनभावो विबन्धतीति।

ततो एवा ति मूलाभावेन न सुप्पतिट्ठितत्ता एव। "अहेतुकानं झानङ्गानि बलानि चा" ति सम्पिण्डनत्थो झानङ्गानि चा ति च-सद्दो। यदि अपरिपुण्णत्ता बलभावस्स इमस्मिं अहेतुकद्वये बलानि अनुद्दिट्ठानि असङ्गहितानि च, अथ कस्मा निद्दिट्ठानीति आह "यस्मा पना" ति आदि। सम्मानिय्यानिकसभावानं कुसलानं पटिभागभूतो विपाको पि फलं विय तंसभावो सिया ति सहेतुकविपाकचित्तानि अग्गहेत्वा किरियचित्तकतत्ता वा "महाकिरियचित्तेसू" ति वुत्तं। अथ वा महाकिरियचित्तेसु चा ति च-सद्देन सहेतुकविपाकचित्तानि पि गहितानीति वेदितब्बानि।

---

1. खु० ७ : १०४ म० निद्देसे; खु० ९ : ४५६ पटि०।

इन्द्रियपरोपरियत्त-आसयानुसयसब्बञ्ञुतानावरणञाणानि इमस्सानन्तरं, उप्पज्जमानानि यमकपाटिहारियमहाकरुणासमापत्तिञाणानि च इमस्स अनन्तरं उप्पन्नपरिकम्मानन्तरानि इमिना आवज्जितारम्मणे येव पवत्तन्तीति "छ...प...गण्हन्ती" ति। महाविसयत्ता महागजो विय महन्तं ति महागजं।

रूपावचरारूपावचरकिरियचित्तवण्णना

इदानि यानि किरियानि जातानि, तानि वेदितब्बानीति एवं योजना कातब्बा। अत्तभावो ति पञ्चक्खन्धा वुच्चन्ति।

चित्तुप्पादकण्डवण्णना निट्ठिता॥

[१४५-म०] "इन्द्रिय...प०...इमस्सानन्तरं उप्पज्जमानानी" ति वुत्तं तेसं ञाणानं कामावचरत्ता। इतरेसं महग्गतत्ता "परिकम्मानन्तरानी" ति वुत्तं।

रूपावचरारूपावचरकिरियचित्तवण्णना

आहितो अहं मानो एत्था ति अत्ता, सो एव भवति उप्पज्जति, न परपरिकप्पितो विय निच्चो ति अत्तभावो। अत्ता ति वा दिट्ठिगतिकेहि गहेतब्बाकारेन भवति पवत्तती ति अत्तभावो।

किरियाब्याकतकथावण्णना निट्ठिता।

चित्तुप्पादकण्डवण्णना निट्ठिता।

२–रूपकण्डं उद्देसवण्णना

[१३९-म०] इदानि रूपमब्याकतं भाजेतब्बं, तञ्च केनचि समयववत्थानं कत्वा न सक्का भाजेतुं। न हि रूपस्स चित्तुप्पादेन समयववत्थानं सक्का कातुं अचित्तसमुट्ठानसब्भावतो ? चित्तसमुट्ठानस्स च अनेकचित्तसमुट्ठानताय रूपसमुट्ठापक [१०२-सी०]–चित्तानञ्च केसञ्चि कत्थचि असमुट्ठापनताय ववत्थानाभावतो, विञ्ञत्तिद्वयवज्जितस्स रूपस्स अचित्तसहभुभावतो च, न च रूपानं उपसम्पज्ज विहरणेन समयववत्थानं युज्जति महग्गतप्पमाणानं झानानं विय रूपानं उपसम्पज्ज विहातब्बताभावा उपादारूपेहि च न युज्जति तेसं सहजातादिपच्चयभावेन अप्पवत्तनतो, नापि महाभूतेहि युज्जति केसञ्चि महाभूतानं केहिचि उपादारूपेहि विना पवत्तितो असमानकालानञ्च सब्भावतो। न हि "यस्मिं समये पथवीधातु[1] उप्पन्ना होति, तस्मिं समये चक्खायतनं होती" ति सक्का

२–रूपकण्डं उद्देसवण्णना

[१४६–म०] **केनची** ति रूपेन वा अरूपेन वा। चित्तुप्पादेन ताव रूपस्स समयववत्थानं न सक्का कातुं अब्यापिताय अनेकन्तिकताय चा ति इममत्थं दस्सेन्तो "**अचित्तसमुट्ठानसब्भावतो**" ति आदिमाह। तत्थ अचित्तसमुट्ठानं रूपं चित्तस्स तीसु खणेसु उप्पज्जतीति इमस्मिं ताव वादे चित्तुप्पत्तिसमयेन रूपूपपत्तिसमयस्स ववत्थानं मा होतु, चित्तस्स उप्पादक्खणे येव सब्बम्मि रूपं उप्पज्जतीति इमस्मिं पन वादे कथं ति ? एत्था पि अचित्तसमुट्ठानं रूपं चित्तेन सहुप्पादे पि अनिन्द्रियबद्धरूपं विय अचित्तपटिबन्धुप्पादताय न चित्तेन ववत्थापेतब्बसमयं ति वुत्तं "**अचित्तसमुट्ठानसब्भावतो**" ति। तेन चित्तुप्पादेन रूपस्स समयववत्थानं न ब्यापीति दस्सेति। **अनेकचित्तसमुट्ठानताय ववत्थानाभावतो** ति सम्बन्धो। नियते हि समुट्ठापकचित्ते चित्तसमुट्ठानरूपस्स सिया ववत्थानं ति।

केसञ्ची ति कामावचरकुसलादीनं। **कत्थची** ति आरुप्पे। **केसञ्ची** ति वा केसञ्चि पञ्चवोकारविपाकानं। **कत्थची** ति पटिसन्धिक्खणे चरिमक्खणे च। तस्मिं समये फस्सो होती" ति आदिना[2] चित्तसहभाविनं एव चित्तेन समयववत्थानं कतं ति वुत्तं "**अचित्तसहभुभावतो**" ति। **तेसं** ति उपादारूपानं। यो यस्स सहभावेन उपकारको सो एव तस्स समयववत्थापकभावेन वुत्तो ति आह "**सहजात**...प०...**त्तनतो**" ति। **ना पि महाभूतेही**

---

१. पठवी०-सी० सब्बत्थ।   २. अभि० १ : १८ धम्मसंगणियं।

वत्तुं सोतादिनिस्सयभूताय पथविया चित्तादिसमुट्ठानाय च सह चक्खायतनस्स अभावा। एवं सोतायतनादीसु पि योजेतब्बं।

महाभूतेहि असमानकालानि विञ्ञत्ति-उपचयादीनि पि तस्मिं समये होन्तीति न सक्का वत्तुं ति। एकस्मिञ्च काले अनेकानि कलापसहस्सानि उप्पज्जन्ति पवत्तन्ति च न अरूपधम्मानं विय रूपानं कलापद्वयसहाभावो अत्थि। एकस्मिञ्च कलापे वत्तमाने एव अञ्ञस्स निरोधो, अञ्ञस्स चुप्पत्ति होतीति सब्बथा रूपाब्याकतं समयववत्थानं कत्वा न सक्का विभजितुं। एककादीहि पन नयेहि न हेतु-आदिना सभावेन विभजितुं सक्का ति तथा विभजनत्थं चित्तुप्पादकण्डे ताव अविभत्तं अब्याकतं अत्थीति दस्सेतुं समयववत्थानेन विना अब्याकतस्स सभावतो येव निद्देसे एकदेसं निद्दिसित्वा निगमनकरणस्स अनुपपत्तितो च विभत्तञ्च अविभत्तञ्च सब्बं सङ्गण्हन्तो आह "कतमे धम्मा अब्याकता? कुसला...प०... असङ्खता च धातु। इमे धम्मा अब्याकता" ति। अविभत्ते हि विभजितब्बे दस्सिते विभजनं युत्तं ञातुं इच्छाय उप्पादितायाति। एत्थ पन विपाककिरियाब्याकतं [१४०-म०] विभत्तत्ता न विभजितब्बं असङ्खता च धातु भेदाभावतो। यं पनेत्थ भेदयुत्तत्ता अविभत्तत्ता च विभजितब्बं, तं विभजन्तो आह "तत्थ कतमं सब्बं रूपं" ति आदि। अयमेत्थ पाळियोजना[1]।

नयं दस्सेत्वा ति एत्थ हेट्ठा गहणमेव नयदस्सनं। तं विपाकेसु कत्वा विञ्ञातत्ता

ति आदिना ववत्थानाभावमेव दस्सेति। **केसञ्ची** ति अकम्मजादीनं। **केहिची** ति कम्मजादीहि। **पवत्तितो** ति पवत्तनतो। **सहा** ति एकस्मिं काले। **अभावा** ति नियोगतो अभावा।

विञ्ञत्ति...प०...न सक्का वत्तुं महाभूतेहि समयववत्थाने करियमाने तेहि अयावभाविततायाति अधिप्पायो। **एकस्मिं काले** ति आदिना पि महाभूतेहि समयनियमने ववत्थानाभावमेव विभावेति। "तथा विभजनत्थं" ति, "अविभत्तं अब्याकतं अत्थीति दस्सेतुं" ति च इमेसं पदानं "विभत्तं अविभत्तञ्च सब्बं सङ्गण्हन्तो आहा" ति इमिना सम्बन्धो। समयववत्थानं कत्वा निद्दिसियमानस्स निप्पदेसताय [१४७-म०] असम्भवतो एकदेसं निद्दिसित्वा सामञ्ञेन निगमनं युत्तं, अकत्वा पन समयववत्थानं सरूपतो निद्दिसनेन तथा ति इममत्थं आह **"समयववत्थानेना"** ति आदिना। **अविभत्ते** ति विपाककिरियाब्याकतं विय न पुब्बे विभत्ते। **विभजितब्बे** ति भेदवन्तताय विभजनारहे। **दस्सिते** ति उद्दिसनवसेन दस्सिते। वुत्तमेवत्थं वित्थारतरेन दस्सेतुं **'एत्थ पना"** ति आदिमाह।

विपाकादिधम्मानं नयनं नयो, सो व दस्सनं ति नयदस्सनं। "देसना" ति **वुत्तं हेट्ठा**

---

1. पाळि०—सी०।

किरियाब्याकतेसु निस्सट्ठं। कामावचरादिभावेन वत्तब्बस्स किरियाब्याकतस्स वा दस्सनं, तं कत्वा कामावचरा ति आदिकं गहेत्वा वुत्तत्ता निस्सट्ठं। **पञ्चवीसति रूपानी** ति पाळियं वुत्तानि दसायतनानि पञ्चदस च सुखुमरूपानि, उपचयसन्ततियो वा एकं ति कत्वा ति हदयवत्थुञ्च।

छन्नुवुतीति चक्खादिदसका सत्त उतुसमुट्ठानादयो तयो अट्ठका उतुचित्तजा द्वे सद्दा च कलापभावेन पवत्तरूपरूपानि "रूपकोट्ठासा" ति वुत्तानि रूपकलापकोट्ठासभावतो **कोट्ठासा** ति च अंसा, अवयवा ति अत्थो। **कोट्ठं** ति वा सरीरं, तस्स अंसा केसादयो कोट्ठासा ति अञ्ञे पि अवयवा कोट्ठासा विय **कोट्ठासा**। **निब्बानं निप्पदेसतो गहितं** ति सोपादिसेसनिरुपादिसेसरागक्खयादि-[१०३–सी०] असङ्खतादिवचनीयभावेन भिन्नं निप्पदेसतो गहितं। अत्थतो हि एका व असङ्खता धातू ति।

गहणमेव नयदस्सनं ति। दुतियविकप्पे पन कामावचरादिभावेन नीयतीति नयो, किरिया-ब्याकतं। तस्स दस्सनं नयदस्सनं ति योजेतब्बं। दुकादीसु निद्देसवारे च हदयवत्थुनो अनागतत्ता तं अग्गहेत्वा पठमविकप्पो वुत्तो, एकके पन वत्थु पि गहितं ति "हदयवत्थुञ्चा" ति दुतियविकप्पे वुत्तं। किं पन कारणं दुकादीसु निद्देसवारे च हदयवत्थु न गहितं ति? इतरवत्थूहि असमानगतिकत्ता देसनाभेदतो च। यथा हि चक्खुविञ्ञाणादीनि एकन्ततो चक्खादिनिस्सयानि, न एव मनोविञ्ञाणं एकन्ततो हदयवत्थुनिस्सयं, निस्सितमुखेन च वत्थु-दुकादिदेसना पवत्ता। यम्पि एकन्ततो हदयवत्थुनिस्सयं, तस्स वसेन "अत्थि रूपं मनोविञ्ञा-णस्स वत्थू" ति आदिना दुकादीसु वुच्चमानेसु पि तदनुकूल-आरम्मणादयो न सम्भवन्ति। न हि "अत्थि रूपं मनोविञ्ञाणस्स आरम्मणं, अत्थि रूपं न मनोविञ्ञाणस्स आरम्मणं" ति आदिना सक्का वत्तुं ति वत्थारम्मणदुकदेसना भिन्नगतिका सियुं, समानगतिका च ता देसेतुं भगवतो अज्झासयो। एसा हि भगवतो देसना पकति। तेनेव हि निक्खेपककण्डे चित्तुप्पादविभागेन अवुच्चमानता अवितक्कविचारपदविस्सज्जने विचारो ति वत्तुं न सक्का ति अवितक्कविचारमत्तपदविस्सज्जने लब्भमानो पि वितक्को न उद्धटो, अञ्ञथा वितक्को चा ति वत्तब्बं सिया ति। एवं इतरवत्थूहि असमानगतिकत्ता देसनाभेदतो च दुकादीसु उद्देसे न गहितं। उद्दिट्ठस्सेव हि निद्दिसनतो निद्देसे पि न गहितं हदयवत्थू ति वदन्ति।

चक्खादिदसका सत्ता ति चक्खुसोतघानजिव्हाकाय-इत्थिभावपुरिसभावदसका सत्त, एक-सन्तानवसेन वा चक्खुसोतघानजिव्हाकायभाववत्थुदसका सत्त। निब्बानस्स असति पि परमत्थतो भेदे [१४८-म०] परिकप्पितभेदो पि भेदो येव वोहारविसये ति कत्वा सोपादिसेसादि-भेदो वुत्तो।

सब्बं ति सकलं चक्कवाळं। **परिमण्डलं** परिमण्डलसण्ठानं, **परिक्खेपतो** छत्तिंस सतसहस्सानि दस चेव सहस्सानि अड्ढचतुत्थानि च योजनसतानि होन्तीति अत्थो। एत्थ च वट्टं "परिमण्डलं" ति वुत्तं। **चत्तारि नहुतानी** ति चत्तालीससहस्सानि। **नगव्हया** ति नगा ति अव्हातब्बा नगसद्दनामा ति अत्थो।

देवदानवादीनं तिगावुतादिसरीरवसेन महन्तानि पातुभूतानि। तत्थायं वचनत्थो—भूतानि जातानि निब्बत्तानि महन्तानि **महाभूतानी** ति। अनेकच्छरियदस्सनेन अनेकाभूतविसेसदस्सनवसेन च मायाकारो महन्तो भूतो ति **महाभूतो**। यक्खादयो जातिवसेनेन महन्ता भूता ति **महाभूता**। निरुळ्हो वा अयं महाभूतसद्दो तेसु दट्ठब्बो। पथवियादयो पन महाभूता विय **महाभूता**। भूतसद्दस्स उभयलिङ्गत्ता नपुंसकता कता। **महापरिहारतो** ति एत्थ वचनत्थं वदन्तो आह **"महन्तेहि भूतानि,** [१४१-म०] **महापरिहारानि वा भूतानी"** ति। तत्थ पच्छिमत्थे पुरिमपदे उत्तरपदस्स परिहार-सद्दस्स लोपं कत्वा **"महाभूतानी"** ति वुच्चन्ति।

अच्चिमतो ति अग्गिस्स। कोटिसतसहस्सं एकं **कोटिसतसहस्सेकं**। **चक्कवाळं** ति तं सब्बं आणाक्खेत्तवसेन एकं कत्वा वोहरन्ति। **विलीयति** खारोदकेन। **विकीरती** ति विद्धंसति। उपादिन्नकेसु विकारं दस्सेन्तो **"पत्थद्धो"** ति आदिमाह। **कट्ठमुखेन वा** ति **वा**-सद्दो उपमत्थो। यथा कट्ठमुखसप्पेन दट्ठो पत्थद्धो होति, एवं पथवीधातु-प्पकोपेन सो कायो कट्ठमुखेव होति, कट्ठमुखमुखगतो विय पत्थद्धो होतीति अत्थो। अथ वा **वा**-सद्दो एवसद्दस्सत्थे। "पथवीधातुप्पकोपेना" ति एतस्स च परतो आहु-

---

किञ्चा पि अञ्ञत्थ कुक्कुटण्डसण्ठाने परिमण्डल-सद्दो दिस्सति, चक्कसण्ठानता पन वट्टसण्ठाने चक्कवाळे वुच्चमानो परिमण्डल-सद्दो वट्टपरियायो सिया। अनेकत्था हि सद्दा ति अधिप्पायेनाह "वट्टं परिमण्डलं" ति। एत्थ च सिनेरुयुगन्धरादीनं समुद्दतो उपरि-अधोभागानं वसेन उब्बेधो वुत्तो, आयामवित्थारेहि पि सिनेरु चतुरासीतियोजनसहस्सपरिमाणो व। यथाह 'सिनेरु भिक्खवे, पब्बतराजा चतुरासीति योजनसहस्सानि आयामेन, चतुरासीति योजन-सहस्सानि वित्थारेना" ति[1]। सिनेरुं पाकारपरिक्खेपवसेन परिक्खिपित्वा ठिता युगन्धरादयो, सिनेरुयुगन्धरादीनं अन्तरे पि सीतसमुद्दा नाम। "ते विसालतो यथाक्कमं सिनेरु-आदीनं अब्भुग्गमनसमानपरिमाणा ति वदन्ति।

कोटिसतसहस्सचक्कवाळस्सेव आणाखेत्तभावो दससहस्सचक्कवाळस्स जातिखेत्तभावो विय धम्मतावसेनेव वेदितब्बो। विकप्पसमानसमुच्चयविभावनेसु विय अवधारणे अनियमे च वा-सद्दो

---

१. अं० ३ : २३० ।

रित्वा वेदितब्बो। तत्रायमत्थो—"कट्ठमुखेन दट्ठो पि कायो पथवीधातुप्पकोपेनेव पत्थद्धो होति, तस्मा पथवीधातुया अवियुत्तो सो कायो सब्बदा कट्ठमुखमुखगतो विय होती" ति। अथ वा अनियमत्थो **वा**-सद्दो। तत्रायमत्थो—"कट्ठमुखेन दट्ठो कायो पत्थद्धो होति वा न वा होति मन्तागदवसेन, पथवीधातुप्पकोपेन पन मन्तागदरहितो सो कायो कट्ठमुखमुखगतो विय होति एकन्तपत्थद्धो" ति। **पूतियो** ति कुथितो। **महाविकारानि भूतानी** ति महाविकारानि जातानि, विज्जमानानीति वा अत्थो। एत्थ च पुरिमपदे उत्तरपदस्स विकारसद्दस्स लोपं कत्वा **"महाभूतानी"** ति वुत्तानि।

पथवीति आदिना सब्बलोकस्स पाकटानि पि विप्पल्लासं मुञ्चित्वा यथासभावतो परिग्गह्यमानानि महन्तेन वायामेन विना न परिग्गह्यन्तीति पाकटानि पि दुविञ्ञेय्य-सभावत्ता **"महन्तानी"** ति वुच्चन्ति। तानि हि सुविञ्ञेय्यानि अमहन्तानीति गहेत्वा ठितो तेसं दुप्परिग्गहिततं दिस्वा "अहो महन्तानि एतानी" ति पजानाति। **उपादाया** ति एतेन विञ्ञायमाना पच्छिमकालकिरिया पवत्तीति कत्वा **"पवत्तरूपं"** ति वुत्तं। एवं हि "उपादाया" ति एतेन पटिच्चसमुप्पन्नता वुत्ता होतीति। अथ वा उपादायति निस्सयतीति [१०४-सी०] उपादायं, उपादायमेव रूपं **उपादायरूपं**, अञ्ञनिस्स-यस्स एकन्तनिस्सितस्स रूपस्सेतं अधिवचनं। तं पन न सत्तस्स, ना पि वेदनादिनो तदभावे पि भावतो ति दस्सेतुं **"चतुन्नं महाभूतानं"** ति आदिमाह। भवति हि निस्सयरूपानं सामिभावो ति।

तिविधरूपसङ्गहवण्णना

[१४२-म०] पकिण्णकदुकेसु अज्झत्तिकदुकं मुञ्चित्वा अञ्ञो सब्बदुकेहि तिक-

---

वत्ततीति तथा योजना कता। अनेकत्था हि निपाता ति। तत्थ अनेकन्तिकत्थो **अनियमत्थो**।

सीलादिविसुद्धिसम्पादनेन, चतुधातुववत्थानवसेनेव वा महाकिच्चताय **महन्तेन वायामेन**। सति पि लक्खणादिभेदे एकस्मिं एव काले एकस्मिं सन्ताने अनेकसतसहस्सकलापवुत्तितो महन्तानि बहूनि भूतानि, परमत्थतो विज्जमानानीति वा **महाभूतानि** यथा "महाजनो" ति एवं "उपादाय पवत्तं" ति अत्थे सति **पटिच्चसमुप्पन्नता वुत्ता होति** पच्चयसम्भूततादीपनतो। **उपादायती** ति उपादायति एवा ति अधिप्पायो। तेनेवाह **"एकन्तनिस्सितस्सा"** ति। **भवति हि "निस्सयरूपानं सामिभावो"** ति आधाराधेय्यसम्बन्धवचनिच्छाय अभावे आधारभूतो पि अत्थो संसामिसम्बन्धवचनिच्छाय सामिभावेन वुच्चति यथा **"रुक्खस्स साखा"** ति अधिप्पायो।

तिविधरूपसङ्गहवण्णना

[१४९-म०] **विञ्ञत्तिदुको चा** ति च-सद्देन चित्तसहभुचित्तानुपरिवत्तिदुका पि

वसेन योजनं गच्छन्तो नत्थि, विञ्ञत्तिदुको च योजनं न गच्छतीति सब्बदुकयोगीसु आदिभूतं अज्झत्तिकदुकमेव गहेत्वा सेसेहि सब्बदुकेहि योजेत्वा तिका वुत्ता। सक्का हि एतेन नयेन अञ्ञेसम्पि दुकानं दुकन्तरेहि लब्भमाना तिकयोजना विञ्ञातुं ति।

चतुब्बिधादिरूपसङ्गहवण्णना

चतुक्केसु एकन्तचित्तसमुट्ठानस्स विञ्ञत्तिद्वयभावतो विञ्ञत्तिदुकादीहि समानगतिको चित्तसमुट्ठानदुको ति तेन सह उपादादुकस्स योजनाय लब्भमानो पि चतुक्को न वुत्तो, तथा सनिदस्सनदुकादीनं तेन तस्स च ओळारिकदूरदुकेहि योजनाय लब्भमाना

सङ्गहिता ति वेदितब्बा। सक्का हि एतेन नयेन.....प०.....विञ्ञातुं ति एत्थ पञ्चवीसाय ताव वत्थुदुकेसु पठमदुकपञ्चकादयो चुद्दसहि पि पकिण्णकदुकेहि अवसिट्ठेहि वत्थुदुकेहि पञ्चवीसाय आरम्मणदुकेहि पञ्चहि बाहिरायतनदुकेहि रूपधातुदुकादीहि पञ्चहि धातुदुकेहि पच्छिमकेहि तीहि इन्द्रियदुकेहि द्वादसहि पि सुखुमरूपदुकेहि पठमादिवज्जेहि अवसिट्ठेहि आयतनधातु-इन्द्रियदुकेहि च योजनं गच्छन्ति। पञ्चवीसाय पन आरम्मणदुकेसु पुरिमको दुकपञ्चको उपादिन्न-उपादिन्नुपादानिय-सनिदस्सनचित्तसमुट्ठानचित्तसहभुचित्तानुपरिवत्तिदुकवज्जेहि पाकिण्णकदुकेहि सब्बेहि पि वत्थुदुकेहि रूपायतनरूपधातुदुकवज्जेहि आयतनधातुदुकेहि सब्बेहि पि इन्द्रियदुकसुखुमरूपदुकेहि योजनं गच्छति। दुतियदुकपञ्चकादीसु यथाक्कमं सद्दायतनसद्दधातुदुकादयो योजनं न गच्छन्ति, रूपायतनरूपधातुदुकादयो गच्छन्ति। पकिण्णकदुकेसु सनिदस्सनदुकं चा ति अयमेव विसेसो। यथा च वत्थुदुकेसु, एवं चक्खायतनचक्खुधातुचक्खुन्द्रियादिदुकपञ्चकेसु। यथा च आरम्मणदुकेसु एवं रूपायतन-आदिदुकपञ्चकेसु तिकयोजना। इत्थिन्द्रियपुरिसिन्द्रियजीवितिन्द्रियदुका सुखुमरूपदुका च सब्बेहि पि दुकेहि योजनं गच्छन्तीति एवं ताव तिकयोजना वेदितब्बा। ननु चायम्पि योजना भगवता न देसिता ति न कातब्बा ति? नायिदं एकन्तिकं। कस्मा? भगवता दिन्ननयेन योजना पि भगवतो येव देसना। तथा हि वुत्तं मातिकावण्णनायं[1] "हेतू चेव धम्मा अहेतुका चा ति इदम्पि सम्भवती" ति आदि। सम्भवो हि गहणस्स कारणं ति च।

तिविधरूपसङ्गहवण्णना निट्ठिता।

चतुब्बिधादिरूपसङ्गहवण्णना

चित्ततो एव समुट्ठाती ति चित्तसमुट्ठानं ति इममेव अत्थं गहेत्वा "विञ्ञत्तिदुकादीहि समानगतिको चित्तसमुट्ठानदुको" ति [१५०-म०] वुत्तं। विनिवत्तिते हि सामञ्ञे यं रूपं जनकपच्चयेसु चित्ततो समुट्ठाति, तं चित्ततो एव समुट्ठाती ति। विञ्ञत्तिदुकादीही ति

---

१. अट्ठ० ४०।

नं वुत्ता, धम्मानं वा सभावकिच्चानि बोधेतब्बाकारञ्च याथावतो जानन्तेन भगवता तेन अञ्ञेसं तस्स च अञ्ञेहि योजना न कता ति किं एत्थ कारणपरियेसनाय, अद्धा सा योजना न कातब्बा, यतो भगवता न कता ति वेदितब्बा। अञ्ञे पन पकिण्णकदुका अञ्ञेहि पकिण्णकदुकेहि योजेतुं युत्ता, तेहि योजिता एव। वत्थुदुकादीसु पन सोतसम्फस्सारम्मणदुकादयो वज्जेत्वा अञ्ञेहि आरम्मणबाहिरायतनादिलब्भमानदुकेहि उपादिन्नकदुकस्स उपादिन्नुपादानियदुकस्स च योजनाय चतुक्का लब्भन्ति, चित्तसमुट्ठानदुकस्स च सब्बारम्मणबाहिरायतनादिलब्भमानदुकेहि। अवसेसेहि पन तेसं अञ्ञेसञ्च सब्बवत्थुदुकादीहि योजनाय न लब्भन्तीति वेदितब्बा।

उद्देसवण्णना निट्ठिता॥

रूपविभत्ति-एककनिद्देसवण्णना

अविज्जमानविभागस्स विभागाभावदस्सनमेव निद्देसो निच्छयकरणतो, तस्मा "सब्बं

आदि-सद्देन चित्तसहभुचित्तानुपरिवत्तिदुके सङ्गण्हाति। **लब्भमानो** ति यं तं रूपं उपादा, तं अत्थि चित्तसमुट्ठानं, अत्थि न चित्तसमुट्ठानं। यं तं रूपं नुपादा, तं अत्थि चित्तसमुट्ठानं, अत्थि न चित्तसमुट्ठानं ति एवं लब्भमानो। **सनिदस्सनदुकादीनं** ति आदि-सद्देन सप्पटिघमहाभूतदुकादयो सङ्गण्हाति। **तेना** ति चित्तसमुट्ठानदुकेन। **तस्सा** ति चित्तसमुट्ठानदुकस्सेव। **अञ्ञे पना** ति विञ्ञत्तिचित्तसमुट्ठानचित्तसहभुचित्तानुपरिवत्तिदुकेहि अञ्ञे पि पकिण्णकदुका।

सद्दायतनस्स एकन्ततो अनुपादिन्नत्ता "**सोतसम्फस्सारम्मणदुकादयो वज्जेत्वा** ति वुत्तं। **चतुक्का लब्भन्ती** ति यं तं रूपं उपादिन्नं, तं अत्थि चक्खुसम्फस्सस्स आरम्मणं, अत्थि चक्खुसम्फस्सस्स नारम्मणं। यं तं रूपं अनुपादिन्नं, तं अत्थि चक्खुसम्फस्सस्स आरम्मणं, अत्थि चक्खुसम्फस्सस्स नारम्मणं ति एवमादयो सब्बारम्मणबाहिरायतनादिलब्भमानदुकेहि योजनायं चतुक्का लब्भन्तीति सम्बन्धो। **अवसेसेही** ति आरम्मणबाहिरायतनरूपधातुदुकादितो लब्भमानदुकेहीति वुत्तदुकरासितो अवसेसेहि। **तेसं** ति उपादिन्न-उपादिन्नुपादानियचित्तसमुट्ठानदुकानं। **अञ्ञेसं** ति उपादिन्नदुकादितो अञ्ञेसं उपादादुकादीनं। **वत्थुदुकादीही** ति आदिसद्देन चक्खायतनदुकादयो सङ्गण्हाति। एत्था पि अवसेसेहि तेसं अञ्ञेसञ्च योजनाय चतुक्का न लब्भन्ती ति सम्बन्धो।

चतुब्बिधादिरूपसङ्गहवण्णना निट्ठिता।

उद्देसवण्णना निट्ठिता

रूपविभत्ति-एककनिद्देसवण्णना

पथवी-आदीनं धम्मानं रुप्पनसभावो विय न हेतु-आदिभावो पि साधारणो ति न हेतूसु

रूपं न हेतुमेवा" ति आदिना [१४३-म०] विभागाभावावधारणेन एव-सद्देन निद्देसं करोति।

हेतुहेतू ति मूलहेतु, हेतुपच्चयहेतू ति वा अयमत्थो। **महाभूता** हेतू ति अयमेवत्थो महाभूता **पच्चयो** ति एतेन पि वुत्तो ति। हेतुपच्चयसद्दानं समानत्थत्ता पच्चयो एव हेतु **पच्चयहेतु**। यो च रूपक्खन्धस्स हेतु, सो एव तस्स पञ्ञापनाय हेतू ति वुत्तो तदभावे अभावतो।

अतीतानागतपच्चुप्पन्नानं कम्मसमादानानं ठानसो हेतुसो विपाकं ति एत्थ विज्जमानेसु पि अञ्ञेसु पच्चयेसु इट्ठानिट्ठविपाकनियामकत्ता उत्तमं पधानं कुसलाकुसलं गति-उपधिकालपयोगसम्पत्तिविप्पत्तिट्ठाननिप्फादितं इट्ठानिट्ठारम्मणञ्च कम्ममिव पधानत्ता "हेतू" ति वुत्तं ति इमिना अधिप्पायेन कम्मारम्मणानि **"उत्तमहेतू"** ति

विभजितब्बो ति वुत्तं **"अविज्जमानविभागस्सा"** ति। तस्स पन विभागाभावदस्सनसरूपदस्सनमेव निद्देसो। एवञ्च कत्वा निब्बानस्स पि विभागरहितत्ता **"असङ्खता धातू"** ति एत्तकमेव निद्देसवसेन वुत्तं।

[१५१–म०] यदि पि हिनोति एतेन पतिट्ठाति कुसलादिको धम्मो ति अलोभादयो केवलं हेतुपदवचनीया, कारणभावसामञ्ञतो पन महाभूतादयो पि हेतु-सद्दाभिधेय्या ति मूलट्ठवाचिना दुतियेन हेतु-सद्देन विसेसेत्वा आह "हेतुहेतू" ति। सुप्पतिट्ठितभावसाधनतो कुसलादिधम्मानं मूलत्थेन उपकारकधम्मा "तयो कुसलहेतू" ति आदिना[1] पट्ठाने च ते येव "हेतुपच्चयो" ति वुत्ता ति आह "मूलहेतु पच्चयहेतू ति वा अयमत्थो" ति। हिनोति एतेन, एतस्मा वा फलं पवत्ततीति हेतु, पटिच्च एतस्मा एति पवत्ततीति पच्चयो ति एवं हेतुपच्चय-सद्दानं अनानत्थतं सन्धाय हेतुसद्दपरियायभावेन पच्चय-सद्दो वुत्तो ति आह "हेतुपच्चयसद्दानं समानत्थत्ता" ति। भूतत्तयनिस्सितानि च महाभूतानि चतुमहाभूतनिस्सितं उपादारूपं ति सब्बम्पि रूपं सब्बदा सब्बत्थ सब्बाकारं चतुमहाभूतहेतुकं महाभूतानि च अनामट्ठभेदानि सामञ्ञतो गहितानीति वुत्तं **"रूपक्खन्धस्स हेतू"** ति।

कम्मसमादानानं ति समादानानं कम्मानं, समादियित्वा कतकम्मानं वा। **अञ्ञेसुपच्चयेसु** विपाकस्स तण्हाविज्जादीसु।

"अट्ठानमेतं भिक्खवे, अनवकासो, यं कायदुच्चरितस्स इट्ठो कन्तो मनापो विपाको निब्बत्तेय्य, नेतं ठानं विज्जति। ठानञ्च खो एतं भिक्खवे, विज्जति, यं कायदुच्चरितस्स अनिट्ठो अकन्तो अमनापो विपाको निब्बत्तेय्य। ठानमेतं विज्जति। वची.....प०.....मनो

---

१. अभि० १ : २३९ धम्मसंगणियं।

वुत्तानि। वक्खति च "गति-उपधिकालपयोगा विपाकस्स ठानं, कम्मं हेतू" ति। इध पन कम्ममिव उत्तमत्ता आरम्मणम्पि हेतुवचनं अरहतीति **"उत्तमहेतू"** ति वुत्तं। **सङ्खारानं** ति पुञ्ञाभिसङ्खारादीनं अविज्जा-[१०५-सी०] साधारणपच्चयत्ता "हेतू ति वुत्ता। **फरती** ति गच्छति पापुणाति। **पटिक्खेपनिद्देसो** ति इदं मातिकाय आगतपटिक्खेपवसेन वुत्तं। इध पन मातिकाय न हेतुपदादिसङ्गहितता च रूपस्स वुत्ता तं-तं-सभावत्ता, अवधारितता च अनञ्ञसभावतो।

रूपीदुके रूपीपदमेव इध "रूपं" ति वुत्तं। तेन रूपीरूपपदानं एकत्थता सिद्धा होति रुप्पनलक्खणयुत्तस्सेव रूपीरूपभावतो। **उप्पन्नं छहि विञ्ञाणेहि विञ्ञेय्यं** ति अरूपतो विधुरं रूपस्स सभावं दस्सेति। न हि अरूपं उप्पन्नं छहि विञ्ञाणेहि विञ्ञेय्यं यथा रूपं, तेन रूपं उप्पन्नं छहि विञ्ञाणेहि विञ्ञेय्यं, न अरूपं ति अरूपतो निवत्तेत्वा रूपे एव एतं सभावं नियमेति, न रूपं एतस्मिं सभावे। अत्थि हि रूपं अतीतानागतं यं उप्पन्नं छहि विञ्ञाणेहि विञ्ञेय्यसभावं न होतीति। एतमेव च नियमं पुन एवसद्देन नियमेति "यथावुत्तो नियमो रूपे अत्थि एव अरूपे विय न

प०…विभजति…प…अट्ठानमेतं भिक्खवे, अनवकासो, यं कायसुचरितस्स अनिट्ठो अकन्तो अमनापो विपाको निब्बत्तेय्या" ति[1]।

"कम्मं सत्ते विभजति यदिदं हीनपणीतताया" ति[2] च

एवमादिवचनतो कम्मं विपाकस्स इट्ठानिट्ठतं नियमेतीति आह **"इट्ठानिट्ठविपाकनियामकत्ता"** ति। **गति-उपधिकालपयोगसम्पत्तिविपत्तियो येव ठानं** विपाकस्स ओकासभावतो। न हि तेहि विना कोचि विपाको निब्बत्ततीति। यथावुत्तट्ठाने सति अधिगन्तब्बं, इट्ठानिट्ठारम्मणं **"गति…** **प०…निप्फादितं"** ति **वुत्तं**। विपाकस्स आरम्मणेन विना अभावतो [१५२—म०] **आरम्मणम्पि** तस्स पधानं कारणं। **अनञ्ञसभावतो** ति हेतु-आदिसभावाभावतो।

रूप्पनं रूपं। तं अस्स अत्थीति एत्थ "अस्सा" ति वुच्चमानो पथवी-आदि-अत्थो येव रुप्पतीति पि वुच्चतीति आह "**रूप्पनलक्खणयुत्तस्सेव रूपीरूपभावतो**" ति। **एतं सभावं** ति एतं उप्पन्नभावे सति छहि विञ्ञाणेहि विञ्ञेय्यसभावं रूपे नियमेति रूपस्सेव तंसभावत्ता। **न रूपं एतस्मिं** ति कालभेदवसेन अतंसभावस्स पि रूपस्स अत्थिताय न रूपं तत्थ नियन्तब्बं ति दस्सेति। **अत्थि ही** ति आदिना तत्थ रूपस्सेव नियन्तब्बताभावं यव विवरति। **एतमेवा** ति आदिना उद्देसेन निद्देसं संसन्देति। एत्थ एतमेव रूपे यथावुत्तसभावं नियमेतब्बं निद्देसे एव-सद्देन नियमेति अवधारेतीति अत्थो। **यथावुत्तो नियमो** ति उप्पन्नभावे

---

1. म० ३ : १२९; अभि० २ : ३९९—४०० विभंगे। 2. म० ३ : २८०।

नत्थी" ति। अथ वा **सब्बं रूपं** ति भूतुपादायरूपं कालभेदं अनामसित्वा "सब्बं" ति वुत्तं, तं सब्बं अरूपेहि समानविञ्ञेय्यसभावं अतीतानागतं निवत्तेतुं उप्पन्नं ति एतेन विसेसेति, तं उप्पन्नं सब्बं रूपं छहि विञ्ञाणेहि विञ्ञेय्यमेवा ति अत्थो।

ननु एवं रूपायतनस्स पि सोतविञ्ञाणादीहि विञ्ञेय्यता आपज्जतीति ? नापज्जति, रूपं सब्बं सम्पिण्डेत्वा एकन्तलक्खणदस्सनवसेन [१४४–म०] एकीभावेन गहेत्वा अरूपतो विधुरस्स छहि विञ्ञाणेहि विञ्ञेय्यसभावस्स दस्सनतो। पच्चुप्पन्नरूपमेव छहि विञ्ञाणेहि विञ्ञेय्यं ति एतस्मि पन नियमे "सब्बं रूपं" ति एत्थायं विञ्ञेय्यभावनियमो न वुत्तो, अथ खो पच्चुप्पन्नं ति सब्बरूपस्स एकन्तलक्खणनियमो

सति छहि विञ्ञाणेहि विञ्ञेय्यभावो नियन्तब्बताय "नियमो" ति वुत्तो, सो रूपे अत्थि एत्र रूपस्सेव तंसभावत्ता। विसिट्ठकालस्स वुत्तप्पकारं अवधारणं येव वा यथावुत्तो नियमो, सो रूपे अत्थि येव सम्भवति येव, न अरूपे विय न सम्भवतीति अत्थो दट्ठब्बो। **कालभेदं** ति कालविसेसं। **अनामसित्वा** ति अग्गहेत्वा। **तं सब्बं** ति अनामट्ठकालभेदं ततो येव अरूपेहि समानविञ्ञेय्यसभावं सब्बं रूपं। **उप्पन्नं** ति एतेन कालभेदामसनेन विसेसेति "**उप्पन्नं** ··· प० ···**मेवा**" ति।

वत्तमानकालिकं सब्बं रूपं दिट्ठसुतमुतविञ्ञातसभावं, तं यथासकं छहि विञ्ञाणेहि विञ्ञेय्यसभावमेव, न तेहि अविञ्ञेय्यं। नापि उप्पन्नमेव छहि विञ्ञाणेहि विञ्ञेय्यसभावं एकन्तलक्खणनियमाभावापत्तितो ति एवं अविपरीते अत्थे विभाविते पि चोदको अधिप्पायं अजानन्तो "**ननु एवं**" ति आदिना सब्बस्स सब्बारम्मणतापत्तिं चोदेति। इतरो "**रूपं सब्बं सम्पिण्डेत्वा**" ति आदिना अत्तनो अधिप्पायं विभावेति। एत्थ **एकीभावेन गहेत्वा** ति इदं "सम्पिण्डेत्वा" ति एतस्स अत्थवचनं। एकन्तलक्खणं छहि विञ्ञाणेहि विञ्ञेय्यसभावो येव। इदं वुत्तं होति—किञ्चा पि पञ्चन्नं विञ्ञाणानं विसयन्तरे अप्पवत्तनतो न सब्बस्स सब्बारम्मणता, सब्बस्स पि पन रूपस्स छविञ्ञाणारम्मणभावतो यथासकं छहि विञ्ञाणेहि विञ्ञेय्यताप छहि विञ्ञाणेहि विञ्ञेय्यता व अत्थि, तं एकतो सङ्गहणवसेन गहेत्वा "उप्पन्नं सब्बं रूपं छहि विञ्ञाणेहि [१५३–म०] विञ्ञेय्यं ति वुत्तं यथा "अभिञ्ञाप्पत्तं पञ्चमज्झानं छळारम्मणं होती" ति। यथा हि दिब्बचक्खुदिब्बसोतादि-अभिञ्ञाप्पत्तस्स पञ्चमज्झानस्स विसुं असब्बारम्मणत्ते पि एकन्तलक्खणवसेन एकीभावेन गहेत्वा आरम्मणवसेन पठमज्झानादितो विसेस दस्सेतुं "अभिञ्ञाप्पत्तं पठमज्झानं छळारम्मणं होती" ति वुच्चति, एवं अरूपतो रूपस्स विसयवसेन विसेसं दस्सेतुं "**उप्प** · प० ···**विञ्ञेय्यं**" वुत्तं ति। छहि विञ्ञाणेहि विञ्ञेय्यभावो रूपे नियमेतब्बो, न पन रूपं तस्मि नियमेतब्बं, अनियतदेसो च

दस्सितो न सिया। पाळियञ्च **विञ्ञेय्यमेवा** ति एव-कारो वुत्तो, न उप्पन्नमेवा ति। तस्मा उप्पन्नस्सेव मनोविञ्ञेय्यनियमापत्ति नत्थीति किं सोतपतितत्तेन, तस्मा वुत्तनयेनत्थो योजेतब्बो।

कथंविधं ति गुणेहि कथं सण्ठितं। ञाणमेव **ञाणवत्थु** समानजातिकानं सङ्गहो, समानजातिया वा सङ्गहो **सजातिसङ्गहो**। सञ्जायन्ति एत्था ति सञ्जाति, सञ्जातिया सङ्गहो **सञ्जातिसङ्गहो**, सञ्जातिदेसेन सङ्गहो ति अत्थो। अञ्ञमञ्ञोपकारवसेन अविप्पयोगेन च समाधिदेसे जाता सम्मासति-आदयो समाधिक्खन्धे सङ्गहिता। यत्थ च सति-आदिसहायवतो समाधिस्स अत्तनो किच्चकरणं, सो चित्तुप्पादो समाधिदेसो। सम्मासङ्कप्पस्स च अप्पनाभावतो पटिवेधसदिसं किच्चं ति समानेन पटिवेधकिच्चेन

एव-सद्दो अट्ठकथायं[1] पच्चुप्पन्नरूपमेव चक्खुविञ्ञाणादीहि छहि वेदितब्बं" ति वुत्तं। "पच्चुप्पन्नरूपमेवा" ति आदिना तत्थ दोसमाह। तस्मा ति यस्मा पाळियं विञ्ञेय्यमेवा ति एव-सद्दो वुत्तो, न, च तस्स अट्ठानयोजनेन काचि इट्ठसिद्धि, अथ खो अनिट्ठसिद्धि येव सब्बरूपस्स एकन्तलक्खणनियमादस्सनतो, तस्मा। यथारुतवसेनेव नियमे गय्हमाने उप्प....प०.... पत्ति नत्थि, ततो च सोतपतितताय पि पयोजनं नत्थीति। वुत्तनयेना ति "अरूपतो विधुरं" ति आदिना वुत्तनयेन।

ञाणस्स वा उत्तरस्स पुरिमञाणं वत्थुकारणं ति ञाणवत्थु। "सजाती" ति एत्थ सकारो समानसद्दत्थो ति दस्सेतुं "समानजातिकानं" ति वुत्तं। समानजातिता च सम्मावाचादीनं सीलनत्थो एव। एतेन समानसभावता सजातिसङ्गहो ति वेदितब्बो। आरम्मणे चेतसो अविक्खेपप्पवत्तिया उपट्ठानुस्साहनानि विय तेसं अविक्खेपो पि अतिसयेन उपकारको ति "अञ्ञमञ्ञोपकारवसेना" ति वुत्तं। तेनेव विज्जमानेसु पि अञ्ञेसु सहजातधम्मेसु एकंसं येव समाधिक्खन्धसङ्गहो दस्सितो। यं पन सच्चविभङ्गवण्णनायं[2] विसुद्धिमग्गादीसु[3] च "वायामसतियो किरियतो सङ्गहिता" ति वुत्तं, तं असमाधिसभावत्तं तेसं समाधिस्स उपकारकत्तञ्च सन्धाय वुत्तं। तेनेव च तत्थ "समाधियेवेत्थ सहजातितो समाधिक्खन्धेन सङ्गहितो" ति[4] वुत्तं। इध पन सजाति-सङ्गहो ति समाधितदुपकारकधम्मानं उप्पत्तिदेसवसेन सङ्गहो वुत्तो ति। अविराधेत्वा विसयसभावावग्गहणं पटिवेधो, अप्पना च आरम्मणे दळ्हनिपातो तदवगाहो येवा ति "पटिवेधसदिसं किच्चं" ति वुत्तं। अथ वा आरम्मणपटिवेधस्स [१५४-म०]

---

१. अट्ठ० २४६। २. विभङ्ग-अट्ठ० ९२ सं० विनोदनियं।
३. विसुद्धि० २ : १४६। ४. विसुद्धि० २ : १४६; विभ०-अट्ठ० ९२ सं० विनोद०।

दिट्ठिसङ्कप्पा पञ्ञक्खन्धे सङ्गहिता।

रूपविभत्ति-एककनिद्देसवण्णना निट्ठिता।

दुकनिद्देसो उपादाभाजनीयकथावण्णना

अप्परजक्खादिसत्तसमूहदस्सनं **बुद्धचक्खु**, छसु असाधारणञाणेसु इन्द्रियपरोपरियत्तञाणं दट्ठब्बं। सब्बसङ्खतासङ्खतदस्सनं **समन्तचक्खु**। "दुक्खं परिञ्ञेय्यं परिञ्ञातं" ति[1] एवमादिना आकारेन [१०६-सी०] पवत्तं ञाणदस्सनं **ञाणचक्खु**, तम्पि पुरिमद्वयमिव कामावचरं।

चतुसच्चधम्मदस्सनं **धम्मचक्खु**। उपत्थम्भभूता चतुसमुट्ठानिकरूपसन्ततियो सम्भारा। सह सम्भारेहि **ससम्भारं**, सम्भारवन्तं। **सम्भवो** ति आपोधातुमेव सम्भवसम्भूतमाह। **सण्ठानं** ति वण्णायतनमेव परिमण्डलादिसण्ठानभूतं। तेसं पन विसुं वचनं तथाभूतानं अतथाभूतानञ्च [१४५-म०] आपोधातुवण्णायतनानं यथावुत्ते मंस-

---

तदाहनपरियाहननमनुगुणताय समानं ति पञ्ञावितक्कानं किच्चसरिक्खता वुत्ता।

एककनिद्देसवण्णना निट्ठिता।

दुकनिद्देसो उपादाभाजनीयवण्णना

समन्ततो सब्बसो दस्सनट्ठेन चक्खु समन्तचक्खू ति इममत्थं दस्सेतुं "**सब्बसङ्खतासङ्खतदस्सनं**" ति वुत्तं। **एवमादिना** ति एत्थ आदिसद्दो "दुक्खं परिञ्ञेय्यं परिञ्ञातं" ति तीसु पि पदेसु पच्चेकं योजेतब्बो। "इदं दुक्खं ति मे भिक्खवे, पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु चक्खुं उदपादि, ञाणं उदपादी" ति आदिना[2] हि पाळि पवत्ता ति। **आकारेना** ति द्वादसविधेन आकारेन। **तम्पि कामावचरं** विपस्सनापच्चयेक्खणञाणभावतो। "ञाणचक्खु सह-अरियमग्गं विपस्सनाञाणं ति पि युज्जती" ति वदन्ति। अग्गमग्गेन पन सह विपस्सना पच्चवेक्खणञाणं ति वुत्तं विय दिस्सति।

यथावुत्ते मंसपिण्डे ससम्भारे चक्खुवोहारो सन्तानवसेन पवत्तमाने चतु-समुट्ठानिकरूपधम्मे उपादाय पवत्तो ति "**चतु**....प०....**सम्भारा**" ति वुत्तं। **सण्ठानं** ति **वण्णायतनमेवा** ति तेन तेन आकारेन सन्निविट्ठेसु महाभूतेसु तंतंसण्ठानवसेन वण्णायतनस्स विञ्ञायमानत्ता वुत्तं, न वण्णायतनस्सेव सण्ठानपञ्ञत्तिया उपादानत्ता। तथा हि अन्धकारे फुसित्वा पि सण्ठानं विञ्ञायतीति। तथा च वक्खति "दीघादीनि फुसित्वा पि सक्का जानितुं" ति,[3] "दीघादि-

---

१. सं० ४ : ३६१। २. सं० ४ : ३६१; खु० ९ : ३९९ पटि०।

३. अट्ठ० २५६।

पिण्डे विज्जमानत्ता। चुद्दससम्भारो हि मंसपिण्डो। सम्भवस्स चतुधातुनिस्सितेहि सह वुत्तस्स धातुत्तयनिस्सितता योजेतब्बा। आपोधातुवण्णायतनानमेव वा सम्भवसण्ठानाभावा विसुं वुत्ता ति चतुधातुनिस्सितता च न विरुज्झति। यं मंसपिण्डं सेतादिना सञ्जानन्तो न पसादचक्खुं सञ्जानाति, पत्थिण्णतादिविसेसं वत्तुकामो "पथवी पि अत्थी" ति आदि वुत्तम्पि वदति।

सरीरसण्ठानुप्पत्तिदेसभूते ति एतेन अवसेसं कण्हमण्डलं पटिक्खपति स्नेहमिव सत्तक्खिपटलानि ब्यापेत्वा ठिताहेव अत्तनो निस्सयभूताहि चतूहि धातूहि कतूपकारं तंनिस्सितेहि एव आयुवण्णादीहि अनुपालितपरिपारितं तिसन्ततिरूपसमुट्ठापकेहि उतुचित्ताहारेहि उपत्थम्भियमानं तिट्ठति। सत्तक्खिपटलानं ब्यापनवचनेन च अनेककलापगतभावं चक्खुस्स दस्सेति। **पमाणतो ऊकासिरमत्तं** ति ऊकासिरमत्ते पदेसे पवत्तनतो वुत्तं। **रूपानि मनुपस्सती** ति म-कारो पदसन्धिकरो। अथ वा **मनू** ति मच्चो। उपकारभूतेहि **सङ्गहितो**। **परियायेना** ति चतुन्नं पसादो तेसु एकस्स द्विन्नञ्चा ति पि वत्तुं युत्तो समानधनानं धनं विया ति एतेन परियायेन। **सरीरं** रूपक्खन्धो एव। पटिघट्टनमेव निघंसो **पटिघट्टनानिघंसो**। रूपाभिमुखभावेन चक्खुविञ्ञाणस्स निस्सयभावापत्तिसङ्खातो पटिघट्टनतो जातो वा निघंसो **पटिघट्टनानिघंसो**।

सन्निवेसं भूतसमुदायं निस्साया" ति[1] च। **तेसं** सम्भवसण्ठानानं आपोधातुवण्णायतनेहि अनत्थन्तरभावे पि तेहि **विसुं वचनं** तथाभूतानं सम्भवभूतानं सण्ठानभूतानञ्च। एतेन आपोधातुवण्णायतनानं वसेन वत्तमान-अवत्थाविसेसो सम्भवो सण्ठानञ्चा ति अयमत्थो दस्सितो होति। तत्थ सम्भवो चतुसमुट्ठानिको सोळसवस्सकाले उप्पज्जति। तस्स रागवसेन ठाना चवनं होतीति वदन्ति। [१५५–म०] अतथाभूतानं ततो अञ्ञथाभूतानं। **यथावुत्ते सम्भारवत्थुसङ्खाते**। **विज्जमानत्ता** ति भिय्योवुत्तिवसेन वुत्तं। तथा हि खीणासवानं ब्रह्मानञ्च सम्भवो नत्थीति। आपोधातुविसेसत्ता सम्भवो आपोधातुसम्बन्धी आपोधातुतन्निस्सयनिस्सितो पि होतीति तस्स चतुधातुनिस्सितताय **अविरोधो** वुत्तो।

उतुचित्ताहारेहि उपत्थम्भियमानं ति एत्थ "कलापन्तरगता उतु-आहारा अधिप्पेता" ति वदन्ति। **अनेककलापगतभावं चक्खुस्स दस्सेति** यतो उपद्दुतपटले निराकरणे पि चक्खु विज्जतीति। **पटिघट्टनं** विसयाभिमुखभावो निघंसपच्चयत्ता। **निघंसो** निस्सयभावापत्ति। यतो चक्खादिनिस्सिता सञ्ञा "पटिघसञ्ञा" ति वुच्चति।

---

१. मूलटीका २५८ पिट्ठे।

परिकप्पवचनं "सचे आपाथं आगच्छेय्या" ति हेतुकिरियं, "पस्सेय्या" ति फलकिरियञ्च परिकप्पेत्वा तेन परिकप्पेन वचनं। एत्थ च हेतुकिरिया अनेकत्ता अवुत्ता पि विञ्ञायतीति दट्ठब्बा। "पस्से वा" ति इमिना वचनेन तीसु पि कालेसु चक्खुविञ्ञाणस्स निस्सयभावं अनुपगच्छन्तं चक्खुं सङ्गण्हाति। दस्सने परिणायकभावो **दस्सनपरिणायकट्ठो**। यथा हि इस्सरो "इदञ्चिदञ्च करोथा" ति वदन्तो तस्मिं तस्मिं किच्चे सपुरिसे परिणायति पवत्तयति, एवमिदम्पि चक्खुसम्फस्सादीनं निस्सयभावेन ते धम्मे दस्सनकिच्चे आणापेन्तं विय परिणायतीति चक्खू ति वुच्चति। चक्खतीति हि **चक्खु**, यथावुत्तेन नयेन आचिक्खति परिणायतीति अत्थो। अथ वा समविसमानि रूपानि चक्खति आचिक्खति, पकासेतीति वा **चक्खु**। सञ्जायन्ति एत्था ति **सञ्जाति**। के सञ्जायन्ति ? [१४६-म०] फस्सादीनि। तथा **समोसरणं** चक्खुसम्फस्सादीनं अत्तनो तिक्खमन्दभावानुपवत्तनेन **इन्दट्ठं कारेती** ति। निच्चं धुवं अत्ता ति गहितस्स पि **लुज्जनपलुज्जनट्ठेन**। वळञ्जन्ति पविसन्ति एतेना ति **वळञ्जनं**, तंद्वारिकानं फस्सादीनं **वळञ्जनट्ठेन**।

पुब्बे [१०७-सी०] वुत्तो परिकप्पो एव **विकप्पनत्थो**। **घट्टयमानमेवा** ति पसादस्स अभिमुखभावविसेसं गच्छन्तमेव।

रूपं आरब्भ चक्खुसम्फस्सादीनं उप्पत्तिवचनेनेव तेसं तंद्वारिकानं अञ्ञेसञ्च रूपं

अनेकत्ता ति इदं अवचनस्स कारणं, न हेतुकिरियाय विञ्ञायमानभावस्स। सो पन अपेक्खासिद्धितो एव वेदितब्बो। हेतुकिरियापेक्खा हि फलकिरिया ति। **चक्खुं सङ्गण्हाती** ति चक्खुविञ्ञाणस्स निस्सयभावानुपगमने पि तंसभावानतिवत्तनतो तस्सा समञ्ञाय तत्थ निरुळ्हभावं दस्सेति। दस्सनपरिणायकट्ठो चक्खुस्स इन्दट्ठो येवा ति "यथा हि इस्सरो" ति आदिना इस्सरोपमा वुत्ता। चक्खुविञ्ञाणं दस्सनकिच्चे परिणायन्तं चक्खु तंसहजाते चक्खुसम्फस्सादयो पि तत्थ परिणायत्ती ति वुच्चती ति "ते धम्मे···प०···परिणायती" ति वुत्तं, न पन चक्खु सम्फस्सादीनं दस्सनकिच्चत्ता। अथ वा चक्खुसम्फस्सादीनं इन्द्रियपच्चयभावेन उपकारकं चक्खुविञ्ञाणं दस्सनकिच्चे परिणायन्तं चक्खु तत्थ चक्खुसम्फस्सादयो पि तदनुवत्तके परिणायतीति अत्थायं परियायो ति दस्सेन्तो आह "ते धम्मे···प०···णायती" ति। अनेकत्थत्ता धातूनं **चक्खती** ति इमस्स "परिणायति पकासेती" ति च अत्था वुत्ता। सण्ठानम्पि रूपायतनमेवा ति "समविसमानि रूपानि चक्खतीति चक्खू" ति वुत्तं। तंद्वारिकानं फस्सादीनं उपनिस्सयपच्चयभावो एव वळञ्जनत्थो।

तंद्वारिका···प०·· उप्पत्ति वुत्ता ति चक्खुविञ्ञाणे उप्पन्ने सम्पटिच्छनादीनि बलवारम्मणे

आरब्भ उप्पत्ति वुत्ता होति। यथा च तेसं रूपं पच्चयो होति, तेन पच्चयेन उप्पत्ति वुत्ता होतीति अधिप्पायेन **"इमिना"** ति आदिमाह। तत्थ **चक्खुपसादवत्थुकानं फस्सादीनं** ति इमिना वचनेन तदालम्बनरूपारम्मणताय तंसदिसानं मनोधातु-आदीनञ्च पुरेजातपच्चयेन उप्पत्ति दस्सिता ति दट्ठब्बा। यत्थ पन विसेसो अत्थि, तं दस्सेतुं **"चक्खुद्वारजवनवीथिपरियापन्नानं"** ति आदिमाह। तानि हि रूपं गरुं कत्वा पवत्तमानस्सादनाभिनन्दनभूतानि तं-सम्पयुत्तानि च आरम्मणाधिपति-आरम्मणूपनिस्सयेहि उप्पज्जन्ति, अञ्ञानि आरम्मणपुरेजातेनेवा ति एवं "आरब्भा" ति वचनं आरम्मण-पच्चयतो अञ्ञपच्चयभावस्स पि दीपकं, आरम्मणवचनं आरम्मणपच्चयभावस्सेवा ति अयमेतेसं विसेसो।

जवनं एकन्तेन उप्पज्जतीति कत्वा वुत्तं। तथा चेव हि अन्तरा चक्खुविञ्ञाणे वा सम्पटिच्छने वा सन्तीरणे वा ठत्वा निवत्तिस्सतीति नेतं ठानं विज्जतीति निच्छितं। **तेन पच्चयेना** ति तंपकारेन पच्चयेन। **तंसदिसानं** ति गरुं कत्वा अस्सादनादिप्पवत्तिविसेस-रहितताय दस्सनसदिसानं मनोधातुसन्तीरणवोट्ठब्बनानं। [१५६-म०] पञ्चद्वारिकजवनानं अस्सादनादितो अञ्ञथा गरुं कत्वा पवत्ति नत्थि रूपधम्मविसयत्ता ति **"अस्सादनाभिनन्दनभूतानी"** ति एत्तकमेव वुत्तं। मनोद्वारिकजवनपिट्ठिवट्टकानम्पि हि पञ्चद्वारिकजवनानं अस्सादनाभिनन्दन-भावेन रूपं गरुं कत्वा पवत्ति नत्थी ति न सक्का वत्तुं ति। रूपं आरम्मणाधिपति अकुसलस्सेव होति। तथा हि पट्ठाने "अब्याकतो धम्मो अकुसलस्स धम्मस्स अधिपतिपच्चयेन पच्चयो। आरम्मणाधिपति चक्खुं गरुं कत्वा अस्सादेति अभिनन्दती" ति आदिना[1] रूप-धम्मो पि आरम्मणाधिपति विभत्तो। "अब्याकतो धम्मो अब्याकतस्स धम्मस्स अब्याकतो धम्मो कुसलस्सा" ति[1] एत्थ पन फलनिब्बानानेव आरम्मणाधिपतिभावेन विभत्तानीति। गणनाय च "आरम्मण-आरम्मणाधिपति-उपनिस्सय-पुरेजात-अत्थि-अविगतं ति एकं" ति[2] वुत्तं। यदि कुसलस्स पि सिया, द्वेति वत्तब्बं सिया ति। **तानी** ति यथावुत्तजवनानि पटिनिद्दिट्ठानि। **तंसम्पयुत्तानि चा** ति जवनसम्पयुत्तानि। **अञ्ञानि** चक्खुसम्फस्सादीनि। यदि रूपस्स आरम्मणपच्चयभावमत्तं अधिप्पेतं, "तं रूपारम्मणे ति एतेनेव सिज्झेय्या" ति एत्तकमेव वदेय्य। यस्मा पन रूपं तंद्वारिकजवनानं पच्चयविसेसो पि होति, तस्मा तस्स विसेस्स दीपनत्थं "आरब्भा" ति वचनं वुत्तं सिया आह **"आरम्मणपच्चयतो अञ्ञपच्चयभावस्स पि दीपकं"** ति।

---

१. अभि० १ : १२८ पट्ठाने।

२. अभि० १ : १५६ पट्ठाने।

सुणाती ति सोतविञ्ञाणस्स निस्सयभावेन सुणाति। जिव्हासद्देन विञ्ञायमाना किरिया सायनं ति कत्वा **"सायनट्ठेना"** ति आह। कुच्छितानं दुक्खसम्पयुत्तफस्सादीनं आयो ति **कायो,** दुक्खदुक्खविपरिणामदुक्खानं वा। कायायतनस्स ब्यापिताय चक्खुपसादे कायपसादभावो पि अत्थि, तेन चक्खुपसादस्स अनुविद्धत्ता नो ब्यापिता च न सिया, वुत्ता च सा। तस्मा चक्खुपसादस्स फोट्ठब्बावभासनं कायपसादस्स च रूपावभासनं आपन्नं ति लक्खणसम्मिस्सतं चोदेति। चक्खुकायानं अञ्ञनिस्सयत्ता कलापन्तरगतताय **"अञ्ञस्स अञ्ञत्थ अभावतो"** ति आह। रूपरसादिनिदस्सनं समाननिस्सयानञ्च अञ्ञमञ्ञसभावानुपगमेन अञ्ञमञ्ञस्मिं अभावो, को पन वादो असमाननिस्सयानं ति दस्सेतुं वुत्तं।

[१४७–म०] रूपाभिघातारहो च सो भूतप्पसादो चा ति **रूपाभिघातारहभूतप्प-**

सोतविञ्ञाणप्पवत्तियं सवनकिरियावोहारो ति सोतस्स सवनकिरियाय कत्तुभावो सोतविञ्ञाणस्स पच्चयभावेना ति वुत्तं **"सोतविञ्ञाणस्स निस्सयभावेन सुणाती"** ति। जीवितनिमित्तमाहाररसो जीवितं, तस्मिं निन्नताय तं अव्हायतीति जिव्हा ति एवं सिद्धेन जिव्हासद्देन पकासियमाना रसाव्हायनसङ्खाता सायनकिरिया लब्भतीति कत्वा वुत्तं **"जिव्हासद्देन विञ्ञायमाना किरिया सायनं"** ति। तथा च वक्खति "जीवितमव्हायतीति जिव्हा ति"[1]। आयो ति उप्पत्तिदेसो। पसादकायस्स कायिकानं दुक्खसुखानं निस्सयभावतो इतरेसं उपनिस्सयभावतो **"दुक्खदुक्खविपरिणामदुक्खानं आयो"** ति वुत्तं। **ब्यापिताया** ति ब्यापिभावे, ब्यापिभावेन वा। **कायप्पसादभावो** ति कायप्पसादसभावो। **अनुविद्धत्ता** ति अयुत्तभावतो, संसट्ठभावतो ति अत्थो। **तस्मा** ति यस्मा यावता [१५७–म०] इमस्मिं काये उपादिन्नकपवत्तं नाम अत्थि, सब्बत्थ कायायतनं कप्पासपटले स्नेहो विया ति वुत्तं, तस्मा। पण्डरसभावा पसादा आपाथगतं विसयं विञ्ञाणुप्पत्ति-हेतुभावेन पकासेन्ता विय होन्तीति तेसं विसयावभासनकिच्चता वुत्ता। **समाननिस्सयानं** ति एकनिस्सयानं। अविनिब्भुतेसु हि रूपरसादीसु यं निस्सयं रूपं, तंनिस्सयो एव रसादीति। **अञ्ञमञ्ञसभावानुपगमेना** ति लक्खणसङ्कराभावमाह।

यस्मा पच्चयन्तरसहितो येव चक्खुप्पसादो रूपाभिहननवसेन पवत्तति, न पच्चयन्तररहितो, तस्मा रूपाभिघातो होतु वा मा वा होतु, एवंसभावो सो रूपधम्मो ति दस्सेतुं **"रूपाभिघातारहो"** ति वुत्तं यथा "विपाकारहसभावा कुसलाकुसला" ति। विसयविसयीनं **अञ्ञमञ्ञं** अभिमुखभावो अभिघातो विया ति अभिघातो, सो रूपे चक्खुस्स, चक्खुम्हि वा रूपस्स होती

---

1. विभ०–अट्ठ० ४६ सं विनो०।

सादो। एवंलक्खणं चक्खु। **रूपाभिघातो** ति च रूपे, रूपस्स वा अभिघातो ति अत्थो।

परिपुण्णापरिपुण्णायतनत्तभावनिब्बत्तकस्स कम्मस्स निदानभूता कामतण्हा रूपतण्हा च तदायतनिकभवपत्थनाभावतो दट्ठुकामतादिवोहारं अरहतीति दुतियो नयो सब्बत्थ वुत्तो। तत्थ दट्ठुकामतानिदानं कम्मं समुट्ठानमेतेसं ति **दट्ठुकामतानिदानकम्मसमुट्ठानानि**, एवंविधानं भूतानं पसादलक्खणं चक्खु, एवंविधो वा भूतप्पसादो **दट्ठुकाम-**

ति वुत्तं "रूपे, रूपस्स वा अभिघातो" ति। तेनेवाह "यम्हि चक्खुम्हि अनिदस्सनम्हि सप्पटिघम्हि रूपं सनिदस्सनं सप्पटिघं पटिहञ्ञि वा" ति[1], "चक्खु अनिदस्सनं सप्पटिघं रूपम्हि सनिदस्सनम्हि सपटिघम्हि पटिहञ्ञि वा" ति[1] च आदि। एत्थ च तं-तं-भवपत्थनावसेन चक्खादीसु अविगतरागस्स अत्तभावनिप्फादकसाधारणकम्मवसेन पुरिमं चक्खुलक्खणं वुत्तं सुदूरसुखुमादिभेदस्स पि रूपस्स गहणसमत्थमेव चक्खु होतू ति एवं निब्बत्तित-आवेणिककम्मवसेन दुतियं। एस नयो सेसेसु पि। अथ वा सति पि पञ्चन्नं पसादभावसामञ्ञे सविसयावभासनसङ्खातस्स पसादब्यापारस्स दस्सनवसेन पुरिमं वुत्तं, पसादकारणस्स सति पि कम्मभावसामञ्ञे अत्तनो कारणभेदेन भेददस्सनवसेन दुतियं।

कामतण्हा ति कामभवे तण्हा। तथा रूपतण्हा दट्ठब्बा। तस्स तस्स भवस्स मूलकारणभूता तण्हा तस्मिं तस्मिं भवे उप्पज्जनारहायतनविसया पि नाम होतीति **कामतण्हादीनं दट्ठुकामतादिवोहाराहरता** वुत्ता। दट्ठुकामता ति हि दट्ठुमिच्छा रूपतण्हा ति अत्थो। तथा सेसासु पी ति। एत्थ च दट्ठुकामतादीनं तं-तं-अत्तभावनिब्बत्तककम्मायूहनक्खणतो सति पुरिमनिब्बत्तियं वत्तब्बं नत्थि। असति पि तस्स मग्गेन असमुग्घातितभावेनेव कारणं ति दट्ठब्बं। [१५८-म०] यतो मग्गेन असमुच्छिन्नं कारणलाभे सति उप्पज्जित्वा अत्तनो फलस्स कारणभावूपगमनतो विज्जमानमेवा ति उप्पन्न-अत्थितापरियायेहि वुच्चति "अरियं अट्ठङ्गिकं मग्गं भावेन्तो अरियं अट्ठङ्गिकं मग्गं बहुलीकरोन्तो उप्पन्नुप्पन्ने पापके अकुसले धम्मे अन्तरा येव अन्तरधापेती" ति[2], "सन्तं वा अज्झत्तं कामच्छन्दं अत्थि मे अज्झत्तं कामच्छन्दो ति पजानाती" ति[3] च एवमादीसु।

एत्थाह—चक्खादीनं इन्द्रियानं किं एककम्मुना उप्पत्ति, उदाहु नानाकम्मुना ति? उभयथा पी ति पोराणा। तत्थ नानाकम्मुना ताव उप्पत्तियं चक्खादीनं विसेसे वत्तब्बं नत्थि कारणस्स भिन्नत्ता। एककम्मुना पन उप्पत्तियं तेसं कथं विसेसो ति? कारणस्स भिन्नत्ता येव। तं-तं-भवपत्थनाभूता हि तण्हा तं-तं-भवपरियापन्नायतनाभिलासताय सयं विचित्तरूपा

---

१. अभि० १ : १६० भ० सं०। २. सं० ४ : ४९।
३. दी० २ : २२३, म० १ : ८३।

तानि ···प··· पसादो। एवंलक्खणं चक्खु। रूपेसु पुग्गलस्स वा विञ्ञाणस्स वा आविञ्छनरसं।

कायो सब्बेसं ति को एत्थ विसेसो, ननु तेजादि-अधिकानं च भूतानं पसादा सब्बेसं येवा ति? सच्चमेतं, इदं पन "सब्बेसं" ति वचनं "समानानं" ति इममत्थं दीपेति अनुवत्तमानस्स एकदेसाधिकभावस्स निवारणवसेन वुत्तत्ता।

उपनिस्सयभावेन तंतंभवनिब्बत्तककम्मस्स विचित्तभेदतं विदहति। यतो तदाहितविसेसं तं तथारूपसमत्थतायोगेन अनेकरूपापन्नं विय अनेकं विसिट्ठसभावं फलं निब्बत्तेति। तथा च वक्खति "कम्ममेव नेसं विसेसकारणं" ति। न चेत्थ समत्थताभावतो अञ्ञं वेदितब्बं कारणविसेसेनाहितविसेसस्स विसिट्ठफलनिप्फादनयोग्यताभावतो। तथा हि सति एकस्स पि कम्मस्स अनेकिन्द्रियहेतुताविसेसयोगं एकम्पि कम्मं ति आदिना युत्तितो आगमतो पि परतो सयमेव वक्खति। तथा एकस्सेव कुसलचित्तस्स सोळसादिविपाकचित्तनिब्बत्तिहेतुभावो वुच्चति। लोके पि एकस्सेव सालिबीजस्स परिपुण्णापरिपुण्णतण्डुकफलनिब्बत्तिहेतुता दिस्सति। किं वा एताय युत्तिचिन्ताय, न चिन्तितब्बमेवेतं। यतो कम्मविपाको चक्खादीनि कम्मविपाको च सब्बाकारतो बुद्धानं येव कम्मविपाकञाणफलयुत्तानं विसयो, न अञ्ञेसं अतक्कावचरताय। तेनेव च च भगवता "कम्मविपाको अचिन्तेय्यो न चिन्तेतब्बो, यो चिन्तेय्य उम्मादस्स विघातस्स भागी अस्सा" ति[1] आदीनवं दस्सेत्वा पटिक्खित्तं। **आविञ्छनं** पुग्गलस्स विञ्ञाणस्स वा तंनिन्नभावप्पत्तिया हेतुभावो।

सब्बेसं ति पदस्स पकरणतो पारिसेसतो वा लब्भमानं अत्थविसेसं अजानन्तो यथारुत-वसेनेव अत्थं गहेत्वा "को एत्थ [१५९–म०] विसेसो" ति आदिना चोदेति। इतरो तेजादीनं पच्चेकं अधिकभावे विय द्विन्नं तिण्णं वा अधिकभावे पि यथावुत्ताधिकभावेनेव एककादिवसेन लब्भमानाय ओमत्ताय पि कायप्पसादो न होतीति विञ्ञायमानत्ता पकरणतो पारिसेसतो वा चतुन्नम्पि भूतानं समभावेन कायो होतीति अयत्थो सिद्धो ति सब्ब-सद्दो इध समभावदीपको ति दस्सेतुं "**इदं पना**" ति आदिमाह। **इममत्थं दीपेती** ति च यथावुत्तेन नायेन "सब्बेसं" ति वचनतो अयमत्थो लब्भति, न तस्स वाचकत्ता ति दस्सेति। तेनेवाह **अनुवत्त** ··· **प०** ··· **वसेन वुत्तत्ता**" ति। एकदेसाधिकभावनिवारणेनेव हि एकदेसोमत्ततानिवारणम्पि विञ्ञायतीति। **एकदेसो** अवयवो। चतुधातुसमुदायनिस्सयस्स हि पसादस्स तदेकधातु-अधिकता अवयवाधिकता होतीति।

---

1. अं० २ : ८४।

तेजादीनं ति पदीपसङ्खातस्स तेजस्स [१०८-सी०] ओभासेन वायुस्स सद्देन पथविया गन्धेन खेळसङ्खातस्स उदकस्स रसेना ति पुरिमवादे पच्छिमवादे च यथा-योगं तं-तं-भूतगुणेहि अनुग्गय्हभावतो[1] रूपादिग्गहणे उपकरितब्बतो ति अत्थो। **रूपा-दीनं अधिकभावदस्सनतो** ति अग्गिम्हि रूपस्स पभस्सरस्स वायुम्हि सद्दस्स सभावेन सुय्यमानस्स पथविया सुरभि-आदिनो गन्धस्स आपे च रसस्स मधुरस्स विसेसयुत्तानं दस्सनतो **"रूपादयो तेसं गुणा"** ति पठमवादी चाह। तस्सेव च **"इच्छेय्यामा"** ति आदिना उत्तरमाह । इमिनावुपायेन दुतियवादिस्स पि निग्गहो होतीति।

अथ वा रूपादिविसेसगुणेहि तेज-आकास-पथवी-आप वायूहि चक्खादीनि कतानीति वदन्तस्स कणादस्स वादं ततियं उद्धरित्वा तं निग्गहेतुं **"अथा पि वदेय्युं"** ति आदि वुत्तं ति दट्ठब्बं। आसवे उपलब्भमानो पि गन्धो पथविया आपोसंयुत्ताय कप्पा-सतो विसदिसाया ति न कप्पासगन्धस्स अधिकभावापत्तीति चे ? न, अनभिभूतत्ता।

"पुरिमा **चेत्थ द्वे पि वादिनो निकायन्तरिया**" ति वदन्ति। आलोकादिसहकारीकारण-सहितानं येव चक्खादीनं रूपादि-अवभासनसमत्थता विवरस्स च सोतविञ्ञाणुपनिस्सयभावो गुणो ति तेसं लद्धीति अधिप्पायेन "तंतंभूतगुणेहीति" ति आदि वुत्तं। तेजादीनं विय विवरस्स भूतभावाभावतो "यथायोगं" ति वुत्तं। अथ वा रूपादयो विय विवरम्पि भूतगुणो ति पराधि-प्पायं दस्सेन्तो "तंतंभूतगुणेही" ति आह। तेजस्स पन आलोकरूपेन, आकाससङ्खातस्स विव-रस्स सद्देन, वायुस्स गन्धेन, उदकस्स रसेन, पथविया फोट्ठब्बेना ति इममत्थं सन्धाय "यथा-योगं तंतंभूतगुणेही" ति वुत्तं सिया। **रूपादिग्गहणे** ति रूपादिविसये चक्खुविञ्ञाणादिके निप्फादेतब्बे ति अत्थो। **उपकरितब्बतो** ति सहकारीकारणभूतेहि यथावुत्तभूतगुणेहि चक्खादीनं सकिच्चकरणे उपकरितब्बतो। **सभावेन सुय्यमानस्सा** ति केनचि अनुच्चारियमानस्सेव लब्भ-मानत्ता वुत्तं। घट्टनं पन विना वायुसद्दो पि नत्थीति। अथ वा वायुम्हि सद्दो सभावेन सुय्यतीति आपे रसो मधुरो ति च तस्स लद्धि येवा ति दट्ठब्बं। दुतियवादिस्स पि निग्गहो होति तस्स पि तेजादिगुणा रूपादयो ति एवंलद्धिकत्ता।

रूपादिविसेसगुणेही ति रूपादिविसेसगुणयुत्तेहि। **तेज....प०....वायूही** ति सहाकासेहि तेजादिपरमाणूहि। **कप्पासतो** [१६०-म०] **विसदिसाया** कप्पासपथवितो विसेसयुत्ताय ततो अधिकसामत्थिययुत्ताया ति अधिप्पायो। **तस्सा येवा** ति कप्पासपथविया येव। यस्मा सा विज्ज-मानानि पि अविसेसभूतानि अत्थीति गहेतु असक्कुणेय्यभावेन अभिभवित्वा ठिता, तस्मा तस्सा येव गन्धो अधिकतरो भवेय्या ति अत्थो। अयञ्च सब्बो उत्तरो "तस्स तस्स भूतस्स अधिक-

---

1. अनुप्पग्गय्ह-सी०।

आसवेहि उदकसंयुत्ता पथवी उदकेन अभिभूता, न कप्पासपथवीति तस्सा येव अधिकेन गन्धेन भवितब्बं ति। उण्होदकसञ्ञुत्तो च अग्गि उपलब्भनीयो महन्तो ति कत्वा तस्स फस्सो विय वण्णो पि पभस्सरो उपलब्भितब्बो ति उण्होदकवण्णतो अग्गिना अनभिसम्बन्धस्स सीतुदकस्स वण्णो परिहायेथ। **तस्मा** ति एतस्सुभयस्स अभावा। तदभावेन [१४८-म०] हि रूपादीनं तेजादिविसेसगुणता निवत्तिता, तंनिवत्तनेन "तेजादीनं गुणेहि रूपादीहि अनुग्गह्यभावतो" ति इदं कारणं निवत्तितं ति। एवं परम्पराय उभयाभावो विसेसकप्पनप्पहानस्स कारणं होतीति आह **"तस्मा पहायेथेतं"** ति आदि। एककलापे पि रूपरसादयो विसदिसा, को पन वादो नानाकलापे चक्खादयो भूतविसेसाभावे पी ति दस्सेतुं **रूपरसादिनिदस्सनं** वुत्तं।

यदि भूतविसेसो नत्थि, किं पन चक्खादिविसेसस्स कारणं ति तं दस्सेतुं **"यं अञ्ञमञ्ञस्सा"** ति आदिमाह। एकम्पि कम्मं पञ्चायतनिकत्तभावपत्थनानिप्फन्नं चक्खादीनं विसेसहेतुत्ता "अञ्ञमञ्ञस्स असाधारणं" ति च[1] "कम्मविसेसो" ति च

ताया" ति आदिना अट्ठकथायं[2] वुत्तत्ता तथागतानं वादं सम्पटिच्छित्वा वदन्तस्स कणादस्स वसेन वुत्तो। "अत्तनो पन मतेन कणादकपिलादयो केवलं पथवादिद्रव्यमेवा ति आदि लद्धि। कणादसासनाय अधिमुत्तानं सासने अनवगाळ्हानं केसञ्चि अयं वादो" ति च वदन्ति। **एतस्सुभयस्सा** ति आसवगन्धतो कप्पासगन्धो अधिको सीतुदकवण्णतो उण्होदकवण्णो च अधिको ति एतस्स उभयस्स। तेजादि-अधिकेसु च सम्भारेसु रूपादीनं विसेसस्स अदस्सनतो न रूपादयो तेजादीनं विसेसगुणो ति सिद्धं ति आह "तदभा....प०....त्तिता" ति। तेन न रूपं तेजस्स विसेसगुणो एकन्ततो तेजादिके सम्भारे विसेसेन अदस्सनतो, यो यस्स विसेसगुणो, न सो तदधिके सम्भारे एकन्ततो विसेसेन दिस्सति यथा पथवी-अधिके सम्भारे आपो धातू ति दस्सेति। एवं सेसेसु पि यथायोगं योजेतब्बं। को पन वादो नानाकलापे ति सभावतो नानत्ताभावे पि मूलकारणनानत्तवसेन अत्थि कोचि विसेसो असङ्ख्याते ति दस्सेति, यतो परमरणादिकिरियासमत्थता नेसं केसञ्चियेव दिस्सतीति।

एकम्पी ति पि-सद्देन अनेकस्मिं वत्तब्बमेव नत्थीति दस्सेति। पञ्चायतनिकत्तभावे पत्थना या दट्ठुकामतादिभावेन वुत्ता, ताय निप्फन्नं। एतेन कारणविसेसेन फलविसेसमाह। **न ही** ति आदिना वुत्तमेवत्थं समत्थयति। **तं** ति कम्मं। **विसेसेना** ति अत्तनो कारणेन आहितातिसयेन। तेनेव सोतस्स न होति पच्चयो, कतो अञ्ञेनेव पन होतीति अधिप्पायो। तेन अनेकसभावेन कारणेन आहितविसेसं एकम्पि कम्मं अनेकसभावं फलं निप्फादेतुं समत्थं होतीति

१. नत्थि-सी०। २. अट्ठ० २५२।

वुत्तं ति दट्ठब्बं। न हि तं येन विसेसेन चक्खुस्स पच्चयो, तेनेव सोतस्स होति इन्द्रियन्तराभावप्पत्तितो।

"पटिसन्धिक्खणे महग्गता एका चेतना कटत्तारूपानं कम्मपच्चयेन पच्चयो" ति[1] वचनेन पटिसन्धिक्खणे विज्जमानानं सब्बेसं कटत्तारूपानं एका चेतना कम्मपच्चयो होतीति विञ्ञायति। नानाचेतनाय हि तदा इन्द्रियुप्पत्तियं सति परित्तेन च महग्गतेन च कम्मुना निब्बत्तितं कटत्तारूपं आपज्जेय्या ति न चेका पटिसन्धि अनेककम्मनिब्बत्ता होतीति सिद्धमेकेन कम्मेन अनेकिन्द्रियुप्पत्ति होतीति।

अनल्लीनो निस्सयो एतस्सा ति **अनल्लीननिस्सयो**, रूपसद्दसङ्खातो विसयो। गन्धरसानं निस्सया घानजिव्हानिस्सये अल्लीयन्तीति ते [१०९-सी०] निस्सयवसेन अल्लीना, फोट्ठब्बं सयं कायनिस्सय-अल्लीनं भूतत्तयत्ता। **दूरे···प···सम्पत्तो एव नाम** पटिघट्टन-

---

दस्सेति। इदानि कम्मस्स [१६१–म०] वुत्तप्पकारविसेसाभावे दोसमाह **"इन्द्रियन्तराभावप्पत्तितो"** ति। तस्सत्थो—कारणविसेसाभावे फलविसेसस्स असम्भवतो यं विसेसयुत्तं कम्मं चक्खुस्स कारणं, तस्स ततो अञ्ञविसेसाभावे तदञ्ञिन्द्रियुप्पादकता पि न सिया ति सोतिन्द्रियादीनं ततो अनुप्पत्ति एव सिया। एवमितरत्था पि। विसेसो ति चेत्थ कम्मस्स तं-तं-इन्द्रियुप्पादनसमत्थता अधिप्पेता, सा च पुब्बे दस्सितसभावो व।

अनेकाहि महग्गतचेतनाहि एकाय वा परित्तचेतनासहिताय पटिसन्धिक्खणे कटत्तारूपानं निब्बत्तीति न सक्का विञ्ञातुं ति **"सब्बेसं···प०···विञ्ञायती"** ति वुत्तं। इदानि तमेव असक्कुणेय्यतं वित्थारतो दस्सेतुं **"नानाचेतनाया"** ति आदि वुत्तं। तस्सायं सङ्खेपत्थो— **"पटिस···प०···पच्चयो"** ति एत्थ यदि नानाकम्मवसेन इन्द्रियानं उप्पत्ति अधिप्पेता, एवं सति महग्गतकम्मेन च कामावचरकम्मेन च तंतंपटिसन्धिक्खणे कटत्तारूपं उप्पन्नं सिया, न चेतं युत्तं "महग्गतचेतना कम्मपच्चयो"[2] ति वुत्तत्ता। नापि तंतंभवनियतरूपिन्द्रियेहि विकलिन्द्रियता गतिसम्पत्तिया ओपपातिकयोनियं पटिसन्धिक्खणे युत्ता। अथ महग्गताहि एव नानाचेतनाहि निब्बत्तं, न चेका पटिसन्धि अनेककम्मनिब्बत्ता होति। निच्छितं हेतं साकेतपञ्हेना ति। एवं एकेन महग्गतकम्मुना चक्खुन्द्रियसोतिन्द्रियहदयवत्थूनं उप्पत्तिञापकेन इमिना वचनेन परित्तकम्मुना पि एकेन यथारहं अनेकेसं इन्द्रियानं उप्पत्ति सिद्धा वा ति वुत्तं **"सिद्धमेकेन कम्मेन अनेकिन्द्रियुप्पत्ति होती"** ति।

सम्पत्तो येव नाम सम्पत्तिकिच्चकरणतो ति इममत्थं दस्सेतुं **"पटि···प०···न कतो"** ति वुत्तं। अतिसुखुमभावतो मंसचक्खु-अगोचरेन रूपायतनेन समन्तागतसङ्खातवुत्तिताय च **"वायु**

---

१. अभि० २ : ३५१ पट्ठाने। २. अभि० २ : ३५१ पट्ठाने।

निघंसजनकतो ति अधिप्पायो। सद्दो पन **धातुपरम्पराय** वायु विय **आगन्त्वा** निस्सयवसेन सोतनिस्सये अल्लीयित्वा **सोतं घट्टेत्वा** ववत्थानं गच्छन्तो **सणिकं ववत्थानं गच्छती** ति वुत्तो। एवं पन सति चित्तसमुट्ठानं सद्दायतनं सोतविञ्ञाणस्स कदाचि पि आरम्मणपच्चयो न सिया। न हि बहिद्धा चित्तसमुट्ठानुप्पत्ति उपपज्जतीति।

चिरेन सुय्येय्या ति कस्मा एतं वुत्तं, ननु दूरे ठितेहि रजकादिसद्दा चिरेन सुय्यन्तीति? न, दूरासन्नानं यथापाकटे सद्दे गहणविसेसतो। यथा हि दूरासन्नानं वचनसद्दे यथा पाकटीभूते गहणविसेतो आकारविसेसानं अग्गहणं गहणञ्च होति, एवं रजकादिसद्दे पि आसन्नस्स आदितो पभुति **यावावसाना** कमेन [१४९-म०] पाकटीभूते दूरस्स चावसाने मज्झे वा पिण्डवसेन पवत्तिपाकटीभूते निच्छयगहणानं सोतविञ्ञाणवीथिया परतो पवत्तानं विसेसतो लहुकं सुतो चिरेन सुतो ति अभिमानो होति। सो पन सद्दो यत्थ उप्पन्नो, तंनिस्सितो व अत्तनो विज्जमानक्खणे सोतस्स आपाथमागच्छति। दूरे ठितो पन सद्दो अञ्ञत्थ पटिघोसुप्पत्तिया भाजनादिचलनस्स च अयोकन्तो विय अयोचलनस्स पच्चयो होतीति दट्ठब्बो। यथा वा घण्टाभिघाटानुजानि भूतानि अनुरवस्स निस्सयभूतानि घट्टनसभावानि, एवं घट्टनानुजानि याव सोतप्पसादा उप्पत्तिवसेन आगतानि भूतानि घट्टनसभावानेवा ति तंनिस्सतो सद्दो निस्सयवसेन धातुपरम्पराय घट्टेत्वा सणिकं ववत्थानं गच्छतीति वुत्तो। **असुकदिसाय नामा** ति न **पञ्ञायेय्य**। कस्मा?

विया'' ति वुत्तं। चित्तसमुट्टानं सद्दायतनं सोतविञ्ञाणस्स कदाचि पि आरम्मणपच्चयो न सिया धातुपरम्पराय घट्टेन्तस्स उतुसमुट्ठानत्ता। तेनाह **''न हि''''प०'''पज्जती''** ति। पट्ठाने[1] च ''सद्दायतनं सोतविञ्ञाणस्स आरम्मणपच्चयेन पच्चयो'' ति अविसेसेन वुत्तं।

ननु चिरेन सुय्यन्ती ति दूरे ठितानं लहुकं सवनं नत्थि, तेसम्पि वा लहुकं सवनेन दूरासन्नभावानं विसेसो न सिया ति अधिप्पायो। [१६२–म०] **न, दु''''प०''''तो** ति न दूरे ठितेहि रजकादिसद्दा चिरेन सोतविञ्ञाणेन सुय्यन्ति, सचे सवनूपचारे सो सद्दो दूरे आसन्ने च ठितानं यथाभूते आपाथगते सद्दे मनोविञ्ञाणसङ्खाततो गहणविसेसतो चिरेन सुतो सीघं सुतो ति अभिमानो ति अत्थो। एतमत्थं वित्थारतो दस्सेन्तो **''यथा ही''** ति आदिमाह। **निच्छय''''प०'''अभिमानो होति**, सोतविञ्ञाणप्पवत्ति पन उभयत्था पि समाना, यस्मा **सो पन सद्दो'''प०'''आगच्छती** ति। यदि धातुपरम्पराय सद्दो नप्पवत्तति, कथं पटिघोसादीनं उप्पत्ती ति आह **''दूरे''प०'''पच्चयो होती''** ति। **उप्पत्तिवसेन आगतानी** ति एतेन रूपधम्मा पि यत्थ उप्पज्जन्ति, तत्थेव भिज्जन्ति, न देसन्तरं सङ्कमन्तीति दस्सेति। **घट्टनसभावानेवा** ति

---

१. अभि० १ : १ पट्ठाने।

सोतप्पदेसस्सेव सद्दस्स गहणतो।

विसमे अज्झासयो एतस्सा ति विसमज्झासयो, अज्झासयरहितम्पि चक्खु विसमनिन्नत्ता विसमज्झासयं विय होतीति **"विसमज्झासयं"** ति वुत्तं। चक्खुमतो वा पुग्गलस्स अज्झासयवसेन चक्खु **"विसमज्झासयं"** ति वुत्तं।

कण्णकूपच्छिद्दे येव पवत्तनतो आरम्मणग्गहणहेतुतो च तत्थेव **"अज्झासयं करोती"** ति वुत्तं। तस्स सोतस्स सोतविञ्ञाणनिस्सयभावेन सद्दसवने। **अजटाकासो पि वट्टती** ति एतस्स अट्ठकथाधिप्पायेन अत्थं वदन्तो "अन्तोलेणस्मिं" ति आदिमाह। अत्तनो अधिप्पायेन वदन्तो **"किं एताय धम्मताया"** ति आदिमवोच।

वातूपनिस्सयो गन्धो गोचरो एतस्सा ति **वातूपनिस्सयगन्धगोचरं**। एत्थ च गन्धग्गहणस्स वातो उपनिस्सयो, तब्बोहारेन पन गन्धो "वातूपनिस्सयो" ति वुत्तो। अथ वा वातो एव उपनिस्सयो वातूपनिस्सयो। कस्सा ति ? घानविञ्ञाणस्स[1]। सो सहकारीपच्चयन्तरभूतो एतस्स अत्थीति **वातूपनिस्सयो,** गन्धो पच्चयो।

आपो च सहकारीपच्चयन्तरभूतो खेळादिको। तथा पथवी। गहेतब्बस्स हि फोट्ठब्बस्स उप्पीळियमानस्स [११०-सी०] आधारभूता पथवी कायस्स च फोट्ठब्बेन उप्पीळियमानस्स निस्सयभूतानं आधारभूता [१५०-म०] सब्बदा फोट्ठब्बगहणस्स

तेसं भूतानं सद्दसमुप्पत्तिहेतुभावमाह। **सोतपदेसस्सा** ति सोतदेसस्स, सोतदेसे ठितस्सा ति अत्थो।

चक्खुमतो पुग्गलस्स अज्झासयवसेना ति चित्रविचित्ररूपायतने येभुय्येन सत्तानं चक्खुद्वारिकजवनस्स अनुकड्ढनवसेन पवत्तिं सन्धाय वुत्तं।

कण्णकूपच्छिद्दे येव पवत्तनतो ति एतेन अधिट्ठानतो बहिद्धा इन्द्रियं पवत्ती ति वादं पटिसेधेति। अधिट्ठानदेसे एव हि इन्द्रियं वत्तति तत्थ किच्चादिप्पयोगदस्सनतो। सति पि पनस्स बहिद्धा वुत्तियं न विसयग्गहणे समत्थता, अञ्ञथा अधिट्ठानपिदहने पि विसयग्गहणं भवेय्या ति। **आरम्मणग्गहणहेतुतो चा** ति कण्णकूपच्छिद्दे येव ठत्वा आरम्मणकरणस्स विञ्ञाणस्स वा हेतुभावतो।

तब्बोहारेना ति गन्धगन्धब्बग्गहणस्स सहचरिताय गन्धो पि तथा वुत्तो ति अधिप्पायो। **गन्धो पच्चयो** ति गन्धो सहकारीपच्चयो ति अत्थो।

खेळादिको पच्चयो ति योजेतब्बं। **तथा पथवी** ति सहकारीपच्चयन्तरभूता अज्झत्तिकबाहिरा पथवी आरम्मणग्गहणे पच्चयो ति अत्थो। **आधारभूता** ति तेजोवायोधातूनं आधार-

---

1. घाण०—सी०।

उपनिस्सयो ति। उप्पीळनेन पन विना फोट्ठब्बगहणे कायायतनस्स निस्सयभूता पथवी उपनिस्सयो ति दट्ठब्बा। सब्बदा पि च तस्सा उपनिस्सयभावो युत्तो एव।

पञ्चवण्णानं ति वचनं तदाधारानं सुत्तानं नानत्तदस्सनत्थं। पञ्चपकारा पञ्चवण्णा। **एकन्ततो** ति इदं सब्बदा उप्पीळनेन विनिब्भुज्जितुं असक्कुणेय्यानं कलापन्तररूपानं सब्भावा तेसं निवत्तनत्थं वुत्तं। न हि तानि एकन्तेन अविनिभुत्तानि कलापन्तरगतत्ता ति।

वण्णनिभा ति रूपायतनमेव निद्दिट्ठं ति तदेव अपेक्खित्वा "**सनिदस्सनं**" ति नपुंसकनिद्देसो कतो। **तस्मा** ति निप्परियायरूपानं नीलादीनं फुसित्वा अजानितब्बतो दीघादीनञ्च फुसित्वा जानितब्बतो **न निप्परियायेन दीघं रूपायतनं**। **तं तं निस्सया** ति दीघादिसन्निवेसं भूतसमुदायं निस्साय। **तथा तथा ठितं** ति दीघादिसन्निवेसेन ठितं वण्णसमुदायभूतं रूपायतनमेव दीघादिवोहारेन भासितं। **अञ्ञमञ्ञपरिच्छिन्नं** एकस्मिं इतरस्स अभावा। विसयगोचरानं विसेसो अनञ्ञत्थभावो तब्बहुलचारिता च चक्खुविञ्ञाणस्स।

भूता। **निस्सयभूतानं** ति निस्सयमहाभूतानं आपोतेजोवायोधातूनं। **सब्बदा** ति उप्पीळनकाले च अनुप्पीळनकाले च।

तत्था ति चतुरासीतिपभेदे उपरिमकायसङ्खाते रूपसमूहे। **विनिब्भुज्जितुं असक्कुणेय्यानं** ति इदं चक्खुदसकं इदं कायदसकं इदं भावदसकं ति एवं कलापतो पि विनिब्भुजितुं असक्कुणेय्यानं।

[१६३–म०] **दीघादीनं फुसित्वा जानितब्बतो** ति इदं दीघादीनं न कायविञ्ञाणगोचरत्ता वुत्तं, दीघादिवोहाररूपादीनं पन फोट्ठब्बं फुसित्वा कायविञ्ञाणवीथिया परतो पवत्तेन मनोविञ्ञाणेन पि जानितब्बत्ता वुत्तं। **दीघादिसन्निवेसं** ति दीघादिसन्निवेसवन्तं। **एकस्मिं इतरस्स अभावा** ति छायातपानं आलोकन्धकारानञ्च असहट्ठायितं आह। कथं पन आलोको अन्धकारं विधमतीति? "आलोकप्पवत्तिसमानकालं अन्धकारसभावेन पवत्तमानं वण्णायतनं भिज्जति। अन्धकारस्स निस्सयो हुत्वा पवत्तमानानि भूतानि कमेन तथारूपस्स वण्णायतनस्स निस्सयभावं गच्छन्ती" ति केचि। सह अन्धकारेन तन्निस्सयभूतानं निरोधसमनन्तरं तंसन्ततियं तादिसे पच्चयसन्निपाते आलोकनिस्सयभूतानं उप्पत्तीति वेदितब्बं। नहि निस्सयमहाभूतेहि विना आलोकप्पवत्ति अत्थि, नापि अन्धकारसङ्खातं वण्णायतनमेव निरुज्झति तंनिस्सयेहि पयुज्जमानक-एककलापभूतोपादारूपानं सहेव निरुज्झनतो। पदीपसिखामणिरंसियो विय पथवीपाकाररुक्खादीनि मुञ्चित्वा पि अन्धकारो पवत्तती ति वदन्ति। मन्दं पन पाकारादिआधाररहितं न सुट्ठु पञ्ञायति, बहलं आधारं निस्साय पवत्तती ति युत्तं ति च वदन्ति।

भेरिसद्दादीनञ्च वादितसद्दत्ता "वुत्तावसेसानं" ति आह। अमनुस्सवचनेन न मनुस्सेहि अञ्ञे पाणिनो एव गहिता, अथ खो कट्ठादयो पी ति अधिप्पायेन **"सेसो सब्बो पी"** ति आह। एवं सन्ते पि वत्थुविसेसकित्तनवसेन पाळियं अनागतो तथा कित्तेतब्बो **ये वा पना** ति वुत्तो ति अधिप्पायो।

विस्सगन्धो ति विरूपो मंसादिगन्धो। **लम्बिलं** ति मधुरम्बिलं।

सञ्जानन्ति एतेना ति **सञ्जाननं**, उपलक्खणं। सकेन सकेन कम्मचित्तादिना पच्चयेन समुट्ठितानि पि इत्थिलिङ्गादीनि इन्द्रियसहिते सरीरे उप्पज्जमानानि तं तदाकारानि हुत्वा उप्पज्जन्तीति **"इत्थिन्द्रियं पटिच्च समुट्ठहन्ती"** ति वुत्तानि। इत्थिलिङ्गादीसु एव च अधिपतिभावा एतस्स इन्द्रियता वुत्ता, इन्द्रियसहिते सन्ताने इत्थिलिङ्गादि-आकाररूपपच्चयानं अञ्ञथा अनुप्पादनतो इत्थिग्गहणस्स च तेसं रूपानं पच्चयभावतो। यस्मा पन भावदसके पि रूपानं इत्थिन्द्रियं न जनकं, ना पि अनुपालकं उपत्थम्भकं वा, न च अञ्ञकलापरूपानं, तस्मा तं जीवितिन्द्रियं विय सकलापरूपानं [१५१-म०] आहारो विय वा कलापन्तररूपानञ्च इन्द्रिय-अत्थि-अविगतपच्चयो ति न वुत्तं। एस नयो पुरिसिन्द्रिये पि। लिङ्गादि-आकारेसु रूपेसु रूपायतनस्स चक्खुविञ्ञेय्यत्ता लिङ्गादीनं चक्खुविञ्ञेय्यता वुत्ता।

उभयम्पि ...प... कुसलेन पतिट्ठाती ति सुगतिं सन्धाय वुत्तं ति वेदितब्बं। दुग्गतियं हि पटिसन्धि अकुसलेनेवा ति तदा उप्पज्जमानो भावो पि अकुसलेनेव भवेय्य, पाटिसन्धियं

"अमनुस्ससद्दो" ति एत्थ अ-कारो न मनुस्सतामत्तनिवत्ति-अत्थो सदिसभावदीपनताय अनधिप्पेतत्ता, मनुस्सतो पन अनञ्ञतानिवत्ति-अत्थो ति दस्सेतुं **"अमनुस्स...प०... ट्ठादयो पी"** ति आह। तथा **कित्तेतब्बो** ति वंसफालनसद्दो" ति आदिना वत्थुवसेन कित्तेतब्बो।

कम्मचित्तादिना ति आदि-सद्देन उतु-आहारे संगण्हाति। **तंतदाकारानी** ति इत्थिलिङ्गादि-आकारानि। **इत्थिन्द्रियं पटिच्च समुट्ठहन्ती** ति अञ्ञमञ्ञपच्चयानि पि इत्थिलिङ्गादीनि येभुय्येन इत्थिन्द्रियसहिते एव सन्ताने सब्भावा इतरत्थ च अभावा इन्द्रियहेतुकानि वुत्तानि। **अञ्ञथा** ति इत्थिलिङ्गादि-आकारतो अञ्ञथा, इत्थिन्द्रियाभावे वा। **इत्थिग्गहणस्स चा** ति इत्थी ति चित्तप्पवत्तिया। **तेसं रूपानं** ति इत्थिलिङ्गादि-आकाररूपानं। यदि इत्थिन्द्रियं इत्थिलिङ्गादि-आकाररूपानं सहकारीकारणं, अथ कस्मा तस्स इन्द्रियादिपच्चयभावो तेसं न वुत्तो ति? नेव तं सहकारीकारणं, अथ खो तेसं तब्भावभावितामत्तेन तं कारणं ति वुच्चती ति दस्सेतुं आह **"यस्मा पना"** ति आदि।

[१६४-म०] लिङ्गं परिवत्तमानं पुरिमलिङ्गाधारजाति-अनुरूपमेव हुत्वा परिवत्ततीति **कत्वा**

विय पवत्ते पी ति। तयिदं द्वयं यस्मा सन्ताने सह न पवत्तति "यस्स इत्थिन्द्रियं [१११-सी०] उप्पज्जति, तस्स पुरिसिन्द्रियं उप्पज्जतीति ? नो" ति आदिवचनतो,[1] तस्मा उभतो ब्यञ्जनकस्स पि **एकमेविन्द्रियं होती** ति वुत्तं।

एकन्तं कायविञ्ञत्तियं कायवोहारस्स पवत्तिदस्सनत्थं "**कायेन संवरो साधु**" ति[2] साधकसुत्तं आहटं। भावस्स गमनं पकासनं **चोपनं**। **थम्भना** ति वायोधातु-अधिकानं भूतानं थम्भनाकारो विञ्ञत्तीति अत्थो। उद्धङ्गमवातादयो विय हि यो वाताधिको कलापो, तत्थ भूतानं विञ्ञत्ति-आकारता होतीति। तेनेव "**कायं थम्भेत्वा थद्धं करोती ति थम्भना**" ति वायोधातुकिच्चवसेन विञ्ञत्ति वुत्ता। ततो एव च "वायोधातुया आकारो कायविञ्ञत्ती" ति च वत्तुं वट्टति, तथा "पथवीधातुया वचीविञ्ञत्ती" ति पथवीधातु-अधिकभूतविकारतो।

पभेदगता वाचा एवा ति तिस्स फुस्सा ति पभेदगता। अथ वा वचीसङ्खारेहि वितक्कविचारेहि परिग्गहिता सवनविसयभावं अनुपनीतताय अभिन्ना तब्भावं नीयमाना वाचा "**वचीभेदो**" ति वुच्चति। **इरियापथम्पि उपत्थम्भेन्ती** ति यथापवत्तं इरियापथं उपत्थम्भेन्ति। यथा हि अब्बोकिण्णे भवङ्गे वत्तमाने अङ्गानि ओसीदन्ति पविट्ठानि विय होन्ति, न एवं "द्वत्तिस छब्बीसा" ति वुत्तेसु जागरणचित्तेसु वत्तमानेसु।

वुत्तं "**पटिसन्धियं विय पवत्ते पी**" ति। **यस्स…प…नो** ति आदिवचनतो ति आदिसद्देन "यस्स वा पुरिसिन्द्रियं उप्पज्जति, तस्स इत्थिन्द्रियं उप्पज्जतीति नो" ति[3] सङ्गण्हाति।

द्वारभावेन कुच्छितानं आसवधम्मानं पवत्तिट्ठानताय पसादविसेसे विय विञ्ञत्तिविसेसे पि कायवोहारप्पवत्ति दट्ठब्बा। वित्थम्भनसभावताय वायोधातुया **थम्भनं वायोधातुकिच्चं**" ति वुत्तं किच्चम्पि धम्मानं सभावो येवा ति। पथवीधातुया आकारो वचीविञ्ञत्ती ति वत्तुं वट्टती ति योजना।

वितक्क…प०…हिता ति यथाधिप्पेतत्थाभिब्यञ्जिकाय वाचाय समुट्ठानाधिप्पायप्पवत्तिं सन्धाय वुत्तं। तदा हि सा तेहि परिग्गहिता नाम होती ति। एकस्स पि अक्खरस्स अनेकेहि जवनेहि निब्बत्तेतब्बत्ता तथा निब्बत्तियमानताय असमत्थसभावत्ता न विञ्ञातविसेसा न भिन्ना एवा ति आह "सव…प०…भिन्ना" ति। अब्बोकिण्णे ति अन्तरन्तरा उप्पज्जमानेहि असंसट्ठे। "पच्छिमचित्तं" ति अविसेसेन चुतिचित्तं वुत्तं ति अधिप्पायेन "**अञ्ञेसम्पि चुतिचित्तं…प०…आयती**" ति वुत्तं।

---

१. अभि० ३ : १८५ यमके। २. खु० १ : ३६१ का० धम्मपदे; सं० १ : ७२।
३. अभि० ३ : १८६ यमके।

तेसु पन वत्तमानेसु अङ्गानि उपत्थद्धानि यथापवत्तिरियापथभावेनेव पवत्तन्तीति। **खीणासवानं चुतिचित्तं** ति विसेसेत्वा वुत्तं, "कामावचरानं पच्छिमचित्तस्स उप्पादक्खणे यस्स चित्तस्स अनन्तरा कामावचरानं पच्छिमचित्तं उप्पज्जिस्सति, रूपावचरे अरूपावचरे पच्छिमभविकानं, ये च रूपावचरं अरूपावचरं उपपज्जित्वा परिनिब्बायिस्सन्ति, तेसं [१५२-म०] चवन्तानं तेसं वचीसङ्खारो निरुज्झिस्सति, नो च तेसं कायसङ्खारो निरुज्झिस्सती" ति[१] पन वचनतो अञ्ञेसम्पि चुतिचित्तं रूपं न समुट्ठापेतीति विञ्ञायति। न हि रूपसमुट्ठापकचित्तस्स गब्भगमनादिविनिबद्धाभावेन कायसङ्खारा-

---

अथ वा "ये च रूपावचरं अरूपावचरं उपपज्जित्वा परिनिब्बायिस्सन्ति, तेसं चवन्तानं तेसं वचीसङ्खारो निरुज्झिस्सति, नो च तेसं कायसङ्खारो निरुज्झिस्सती" ति[२] रूपारूपभवूपपज्जनकानं कामावचरचुतिचित्तस्स पि कायसङ्खारासमुट्ठापनवचनेन खीणासवेहि अञ्ञेसम्पि··· प०···ञायती" ति वुत्तं। यस्मा च

"यस्स कायसङ्खारो निरुज्झति, तस्स वचीसङ्खारो निरुज्झिस्सती ति? आमन्ता" ति[३] "यस्स कायसङ्खारो निरुज्झति, तस्स चित्तसङ्खारो निरुज्झिस्सती ति? आमन्ता[४] ति" च,

"पच्छिमचित्तस्स भङ्गक्खणे तेसं कायसङ्खारो च न निरुज्झति चित्तसङ्खारो च न निरुज्झिस्सती" ति[५]

[१६५-म०] आदिवचनतो च पच्छिमचित्तस्स पुरतो सोळसमेन चित्तेन ततो ओरिमेन वा सद्धिं अस्सासपस्सासा न उप्पज्जन्तीति सिद्धं। यदि उप्पज्जेय्युं, "पच्छिमचित्तस्स भङ्गक्खणे तेसं कायसङ्खारो न निरुज्झती" ति न वदेय्य, वुत्तञ्चेतं, तस्मा हेट्ठिमकोटिया चुतितो पुरिमेन सत्तरसमेन उप्पन्ना अस्सासपस्सासा चुतिया हेट्ठा दुतियेन चित्तेन सद्धिं निरुज्झन्ति। तेन "यस्स चित्तस्स अनन्तरा कामावचरानं पच्छिमचित्तं उप्पज्जिस्सती" ति चुतिचित्तस्सानन्तरपच्चयभूतस्स पि चित्तस्स कायसङ्खारासमुट्ठापनता वुत्ता।

अथ वा यस्स चित्तस्सा ति येन चित्तेन सब्बपच्छिमो कायसङ्खारो उप्पज्जति। तं चित्तं वुत्तं ति गहेतब्बं, न पच्छिमचित्तस्स अनन्तरपच्चयभूतं। अनन्तरा ति कायसङ्खारुप्पादनं अनन्तरं विना, यतो पच्छा कायसङ्खारुप्पादनेन अनन्तरितं हुत्वा पच्छिमचित्तं उप्पज्जिस्सतीति अत्थो। कस्मा? "इतरेसं वचीसङ्खारो च निरुज्झिस्सति कायसङ्खारो च निरुज्झिस्सती" ति[६] वुत्तत्ता। अञ्ञथा पच्छिमचित्ततो पुरिमततियचित्तसमङ्गीनं कायसङ्खारो उप्पज्जतीति आपज्जती ति। एवं सब्बेसम्पि चुतिचित्तस्स रूपजनकताभावे आगमं दस्सेत्वा इदानि युत्तिं

---

१. अभि० २ : ४३ यमके। २. अभि० २ : ४३ यमके। ३. अभि० २ : ५३ यमके।
४. अभि० २ : ५३ यमके। ५. अभि० २ : ५६ यमके। ६. अभि० २ : ४३ यमके।

समुट्ठापनं अत्थि, न च युत्तं "चुतो च चित्तसमुट्ठानञ्चस्स पवत्तती" ति नापि "चुतिचित्तं रूपं समुट्ठापेती" ति पाळि अत्थीति।

न कस्सती ति न विलेखियति। **गतं** ति विञ्ञातं। **असम्फुट्ठं चतूहि महाभूतेही** ति यस्मिं कलापे भूतानं परिच्छेदो, तेहेव असम्फुट्ठं। विज्जमाने पि हि कलापन्तर-भूतानं कलापन्तरभूतसम्फुट्ठभावे तं-तं-भूतविवित्तता रूपपरियन्तो आकासो ति येसं यो परिच्छेदो, तेहि सो असम्फुट्ठो व, अञ्ञथा परिच्छिन्नभावो न सिया तेसं भूतानं ब्यापितभावापत्तितो। अब्यापिता हि असम्फुट्ठता ति।

लहुतादीनं अञ्ञमञ्ञाविजहनेन दुब्बिञ्ञेय्यनानत्तता वुत्ता ति तं-तं-विकाराधिक-रूपेहि तं-तं-नानत्तप्पकासनत्थं **"एवं सन्ते पी"** ति आदिमाह। यथावुत्ता च पच्चया तं-तं-विकारस्स विसेसपच्चयभावतो वुत्ता, अविसेसेन पन सब्बे सब्बेसं पच्चया ति।

आदितो चयो **आचयो**, पठमुप्पत्ति। उपरि चयो **उपचयो**। पबन्धो [११२–सी०] **सन्तति**। तत्थ उद्देसे अवुत्ता पि आचयो उपचयसद्देनेव विञ्ञायतीति **"यो आय-**

दस्सेतुं "न हो" ति आदिमाह। तत्थ **गब्भगमनादी** ति आदिसद्देन उदकनिमुग्ग-असञ्ञी-भूतकालकतचतुत्थज्झानसमापन्नरूपारूपभवसमङ्गीनिरोधसमापन्नभावे सङ्गण्हाति।

अनेकेसं कलपानं एकतो हुत्वा एकघनपिण्डभावेन पवत्तनतो कलापन्तरभूतानं कलापन्तर-भूतेहि सम्फुट्ठभावो वुत्तो। यतो तेसं दुविञ्ञेय्यनानत्तं, न पन अविनिब्भुत्ताभावतो। **तं-तंभूत-विवित्तता** ति तेसं तेसं भूतानं विभत्तभावो कलापन्तरभूतेहि **विभत्तसभावता** असंकिण्णता ति अत्थो। यस्मा पन यथावुत्ता विवित्तता रूपानं ओसानं होति, तस्मा **"रूपपरियन्तो"** ति वुत्तं। अथवा तंतंभूतसुञ्ञता। येसं हि परिच्छेदो आकासो, तेसं परियन्तताय तेहि **सुञ्ञभावो** ति लक्खितब्बो। ततो येव च सो भूतन्तरेहि विय तेहि **असम्फुट्ठो** ति वुच्चती ति। **अञ्ञथा** ति परिच्छिन्दितब्बेहि असम्फुट्ठ भावाभावे।

[१६६-म०] **तंतंविकाराधिकरूपेही** ति एत्थ कथं चम्मसुवण्णेसु मुदुताकम्मञ्ञता लब्भन्ति, ननु लहुतादिविकारा एकन्ततो इन्द्रियबद्धरूपे एव पवत्तनतो अनिन्द्रियबद्धे न लब्भन्ती ति? सच्चमेतं, इध पन तंसदिसेसु तब्बोहारवसेन वुत्तं। तथा हि तूलपिचु-आदीसु गरुभावादिहेतूनं भूतानं अधिकभावाभावतो लहु-आदिवोहारो। निद्दिसितब्बधम्मनिस्सयरूपे एव वा सन्धाय **"तंतं-विकाराधिकरूपेही"** ति वुत्तं ति दट्ठब्बं। **सब्बे सब्बेसं पच्चया** लहुतादीनं अञ्ञमञ्ञावि-जहनतो ति अधिप्पायो।

आचयसद्देन वा ति निद्देसे वुत्त-आचयसद्देनेव। यो आयतनानं आदिचयत्ता आचयो पुनप्पुनं निब्बत्तमानानं, सो व रूपस्स उपरिचयत्ता उपचयो ति अधिप्पेतं अत्थं पाळियं

तनानं आचयो पुनप्पुनं निब्बत्तमानानं, सो व रूपस्स उपचयो" ति आह। पाळियं पन **उप**-सद्दो पठमत्थो उपरि-अत्थो च होतीति "आदिचयो उपचयो, उपरिचयो सन्तती" ति अयमत्थो विञ्ञायतीति। अञ्ञथा हि आचयसङ्खातस्स पठमुप्पादस्स अवुत्तता आपज्जेय्य।

एवं ति "यो आयतनानं आचयो" ति आदिनिद्देसेन किं कथितं होति? आयतनेन आचयो कथितो। आचयूपचयसन्ततियो हि निब्बत्तिभावेन आचयो एवा ति आयतनेहि आचयादीनं पकासितत्ता तेहि आचयो कथितो। आयतनानं आचयादिवचनेनेव आचयसभावानि उप्पादधम्मानि आयतनानीति आचयेन [१५३-म०] तंपकतिकानि आयतनानि कथितानि। लक्खणं हि उप्पादो, न रूपरूपं ति। तेनेवाधिप्पायेनाह "**आयतनमेव कथितं**" ति। आचयं हि लक्खणं कथयन्तेन तंलक्खणानि आयतनानेव कथितानि होन्तीति। **एवम्पि किं कथितं होती** ति आयतनाचयेहि आचयायतनेहि आचयमेव आयतनमेव कथेन्तेन उद्देसे निद्देसे च आचयो ति इदमेव अवत्वा उपचयसन्ततियो उद्दिसित्वा तेसं विभजनवसेन आयतनेन आचयकथनादिना किं कथितं होतीति अधिप्पायो। **आचयो** ति उपचयमाह, **उपचयो** ति च सन्ततिं। तदेवुभयं यथाक्कमं विवरन्तो "**निब्बत्ति वड्ढि कथिता**" ति आह। उपचयसन्ततियो हि अत्थतो एकत्ता आचयो वा ति तदुद्देसविभजनवसेन आयतनेन आचयकथनादिना निब्बत्ति-वड्ढि-आकारनानत्तं आचयस्स कथितं ति अत्थो। इममेवत्थं विभावेतुं "**अत्थतो ही**" ति आदिमाह। यस्मा च उभयम्पि एतं जातिरूपस्सेवाधिवचनं, तस्मा जातिरूपस्स लक्खणादिविसेसेसु आचयादीसु पवत्ति-आदीसु च आचयादिलक्खणादिको उपचयो। पवत्ति-आदिलक्खणादिका सन्ततीति वेदितब्बा ति अत्थो।

पकतिनिद्देसा ति फलविपच्चनपकतिया निद्देसा, जराय पापुणितब्बं फलमेव वा पकति। **न च खण्डिच्चादीनेव जरा** ति कललकालतो पभुति पुरिमरूपानं जरापत्तक्खणे उप्पज्जमानानि पच्छिमरूपानि परिपक्करूपानुरूपानि परिणतपरिणतानि उप्पज्जन्तीति अनुक्कमेन सुपरिणतरूपपरिपाककाले उप्पज्जमानानि खण्डिच्चादिसभावानि

योजेत्वा दस्सेतुं "पाळियं पना" ति आदि वुत्तं। उप-सद्दो पठमत्थो "दानं भिक्खवे, पण्डितुपञ्ञत्तं" ति आदीसु[1] विय। उपरि-अत्थो च "सम्मट्ठे उपसित्ते च, ते निसीदिंसु मण्डपे" ति आदीसु विय। अञ्ञथा ति उप-सद्दस्स उपरि-अत्थस्सेव गहणे।

फलविपच्चनपकतिया ति फलविपच्चनसभावेन। फलमेव वा पकती ति आयु-

---

१. अं० १ : १२९।

उप्पज्जन्ति। तानि उदकादिमग्गेसु तिणरुक्खसंभग्गतादयो विय परिपाकगतमग्गसङ्खा-तेसु परिपक्करूपेसु उप्पन्नानि जराय गतमग्गो इच्चेव वुत्तानि, न जरा ति। अविञ्ञा-यमानन्तरजरा **अवीचिजरा**। मरणे **उपनयनरसा**।

तं पत्वा ति तं अत्तनो एव खयवयसङ्खातं सभावं पत्वा रूपं खीयति वेति भिज्जति। पोथेत्वा पातितस्स दुब्बलता पराधीनता सयनपरायणता च होति, तथा जराभिभूतस्सा ति पोथकसदिसी जरा।

कत्तब्बतो ति कत्तब्बसभावतो। विसाणादीनं तरच्छखेळतेमितानं पासाणानं विय थद्धभावाभावतो अहिविच्छिकानं [१५४-म०] विय सविसत्ताभावतो च सुखुमता वुत्ता। **ओजालक्खणो** ति एत्थ अङ्गमङ्गानुसारिनो रसस्स सारो उपत्थम्भबलकारो भूतनिस्सतो एको विसेसो ओजा ति।

उपादाभाजनीयकथावण्णना निट्ठिता॥

नो-उपादाभाजनीयकथावण्णना

न उपादियते वा ति न निस्सयति एव, किन्तु निस्सयति च निस्सीयति चा ति अत्थो।

संहानादिना फलसभावेन जरानिद्देसो ति अत्थो। तथा हि "फलूपचारेन वुत्ता" ति वुत्तं। सुपरिणतरूपपरिपाककाले हानिदसकादीसु।

कत्तब्बसभावतो ति मूलफलादीनं इधाधिप्पेत-आहारवत्थूनं मुखेन असनादिकत्तब्ब-सभावतो। विसभूते सङ्खाते ओजा मन्दा होतीति **सविसत्ताभावतो** सुखुमता वुत्ता। अङ्गमङ्गानुसारिनो रसस्स सारो ति रसहरणीधमनिजालानुसारेन सरीरावयवे अनुप्पविट्ठस्स आहाररसस्स अब्भन्तराहारपच्चयो स्नेहो, यो लोके रसधातू ति वुच्चति।

उपादाभाजनीयकथावण्णना निट्ठिता।

नो-उपादाभाजनीयकथावण्णना

[१६७-म०] "एकं महाभूतं पटिच्च तयो महाभूता तयो महाभूते पटिच्च एकं महाभूतं" ति आदि-वचनतो[1] एकं महाभूतं अवसेसमहाभूते निस्सयति, तेहि उपादारूपेन च निस्सीयतीति आह "निस्सयति च निस्सीयति चा" ति।

---

1. अभि० १ : २१ पट्ठाने।

[११३-सी०] **पुरिमा पना** ति पञ्चविधसङ्गहे पथवीधातु-आपोधातुतेजोधातुवायोधातूनं पुरिमुद्देसवसेन वुत्तं। फोट्ठब्बायतननिद्देसे वा वुत्तानं पथवीधातु-आदीनं पुरिमा उद्देसे वुत्ता आपोधातू ति अधिप्पायो, वुत्तस्स वा फोट्ठब्बायतनस्स अतीतताय पच्छिमता, अनागतताय च आपोधातुया पुरिमता वुत्ता ति दट्ठब्बा । **आयू** ति जीवितिन्द्रियं। कम्मजतेजं **उस्मा । यं किञ्चि धातुं"' प"'' एकप्पहारेन नुप्पज्जती** ति एकस्मिं खणे अनेकासु पथवीसु आपाथगतासु तासु तासु सह नुप्पज्जति, तथा तेजवायूसु चा ति अत्थो। अनेकेसु आरम्मणेसु सन्निपतितेसु आभुजितवसेन आरम्मणपसादाधिमत्ततावसेन च पठमं कत्थचि उप्पत्ति दस्सिता, अञ्ञत्थ च पन उप्पत्ति अत्थि एव। सायं आरम्मणतो आरम्मणन्तरसङ्कन्ति येन उपायेन होति, तस्स विजाननत्थं पुच्छति **"कथं पन चित्तस्स आरम्मणतो सङ्कन्ति होती"** ति।

अयपिण्डि-आदीसु पथवीधातु तादिसाय आपोधातुया अनाबद्धा सन्ती विसरेय्य, तस्मा **"तानि आपोधातु आबन्धित्वा बद्धानि करोती"** ति वुत्तं। **यथा** हि युत्तप्पमाणं उदकं पंसुचुण्णानि आबन्धित्वा मत्तिकापिण्डं कत्वा ठपेति, एवं अयोपिण्डि-आदीसु पि तदनुरूपपच्चयेहि तत्थेव उप्पन्ना आपोधातु तथा **आबन्धित्वा** ठपेतीति दट्ठब्बा।

महाभूतानं अञ्ञमञ्ञाविजहनतो एकस्मिम्पि कलापे अनेकं फोट्ठब्बं अत्थी ति फोट्ठब्बसभावेसु येव अनेकेसु पि आरम्मणेसु आपाथगतेसु आभोगादिवसेन एकं येव विञ्ञाणुप्पत्तिहेतु होतीति अयं विचारो दस्सितो। इतरेसु पि पन यथायोगं दस्सेतब्बो। तत्थ रसारम्मणं ताव इन्द्रियनिस्सयं अल्लीयित्वा विञ्ञाणुप्पत्तिहेतुभावतो सति पि अनेकेसं रसानं आपाथगमने एकस्मिं खणे एकप्पकारं येव यथावुत्तनयेन जिव्हाविञ्ञाणुप्पत्तिहेतु होति, तथा गन्धारम्मणं। रूपसद्दारम्मणानि पन इन्द्रियनिस्सयं असम्पत्वा व विञ्ञाणुप्पत्तिहेतुभावतो योग्यदेसे अवट्ठितानि यत्तकानि सहकारीपच्चयन्तरगतं उपकारं लभन्ति, तत्तकानि एकस्मिं खणे एकज्झं आरम्मणं न होन्तीति न वत्तब्बानि। तथा हि सद्दो निग्घोसादिको अनेककलापगतो तथा वण्णो पि सिविकुब्बहननियामेन एकज्झं आरम्मणं होती ति। एत्था पि च आभुजितवसेन आरम्मणाधिमत्ततावसेन अनेककलापसन्निपाते पि कत्थचि विञ्ञाणुप्पत्ति होति येव। पसादाधिमत्तता पित्तादिविबन्धाभावेन पसादस्स तिक्खता। **कथं पन चित्तस्सा** ति चित्तसामञ्ञतो एकत्तनयवसेन वुच्चति।

तादिसाया ति या पचुरजनस्स अत्थीति पि न गहिता। **सन्ती** समाना। **एवं** ति यथा ससम्भारुदकं ससम्भारपथविया आबन्धकं, एवं परमत्थुदकं परमत्थपथविया ति दस्सेति। **तदनुरूपपच्चयेही** ति अत्तनो आबन्धनानुगुणेहि आबन्धियमानेहि सन्धारणादिकिच्चेहि **पुरिमेहि** च पथवी-आदीहि।

अफुसित्वा पतिट्ठा होती ति आपोधातुया अफोट्ठब्बभावतो वुत्तं, तथा "**अफुसित्वा व आबन्धती**" ति। न हि यथा फोट्ठब्बधातूनं [१५५-म०] फोट्ठब्बभावेन अञ्ञमञ्ञनिस्सयता, एवं फोट्ठब्बाफोट्ठब्बधातूनं होतीति अधिप्पायो वेदितब्बो। अविनिब्भोगवुत्तीसु हि भूतेसु अञ्ञमञ्ञनिस्सयता अञ्ञमञ्ञपच्चयभूतेसु न सक्का निवारेतुं ना पि सहजातेसु अविनिब्भोगताय एकीभूतेसु फुसनाफुसनानि विचारेतुं युत्तानीति।

न उण्हा हुत्वा झायती ति तेजोसभावतं येव पटिक्खिपति, न सीतत्तं अनुजानाति, तेजोसभावपटिक्खेपेनेव च सीतत्तञ्च पटिक्खित्तं होति। तेजो एव हि सीतं हिमपातसमयादीसु सीतस्स परिपाचकतादस्सनतो, सीतुण्हानञ्च अञ्ञमञ्ञपटिपक्खभावतो उण्हेन सह न सीतं भूतन्तरं पवत्ततीति युज्जति। उण्हकलापे पन सीतस्स अप्पवत्ति सीतकलापे च उण्हस्स द्विन्नं अञ्ञमञ्ञपटिपक्खत्ता तेजोविसेसभावे युज्जतीति।

अफुसित्वा पतिट्ठा होति, अफुसित्वा आबन्धती ति इमिना फुसितब्बफुसनकभावो आपोधातुयं नत्थीति फोट्ठब्बवसेन उभयधम्मतं आह। अञ्ञमञ्ञं निस्सयता **अञ्ञमञ्ञनिस्सयता**। अथ [१६८–म०] वा अञ्ञमञ्ञता च निस्सयता च **अञ्ञमञ्ञनिस्सयता**। यदि फोट्ठब्बाफोट्ठब्बधातूनं फोट्ठब्बभावेन विना अञ्ञमञ्ञनिस्सयता, पथवी-आदीनं कक्खळादिसभावो एव फोट्ठब्बभावो ति तब्बिरहितेन कथं तेसं आपोधातुया निस्सयादिभावो ति आह "**अविनिब्भोगवुत्तीसू**" ति आदि। **अञ्ञमञ्ञपच्चयभूतेसू** ति एतेन उपादारूपं निवत्तेति। अथ वा पुब्बे अट्ठकथाधिप्पाये ठत्वा फोट्ठब्बाफोट्ठब्बधातूनं विसिट्ठं अञ्ञमञ्ञनिस्सयतं वत्वा इदानि अत्तनो अधिप्पाये ठत्वा अविसेसेन तं दस्सेन्तो आह "**अविनिब्भोगवुत्तीसू**" ति आदि। तं येव अविसिट्ठं अञ्ञमञ्ञनिस्सयतं दळ्हं कत्वा दस्सेन्तो "**ना पि सहजातेसू**" ति आदिमाह। तत्थ अफुसनं ताव एककलापगतत्ता न विचारेतब्बं, फुसनं पन कथं ति? एककलापगतत्ता एव। विसुं सिद्धानं येव हि विसयमहाभूतानं कायप्पसादनिस्सयभूतेसु फुसनं दिस्सति।

झायती ति परिपच्चति। **न उण्हा हुत्वा** ति एतस्स उण्हसभावा हुत्वा ति अयमत्थो ति कत्वा "**तेजोसभावतं येव पटिक्खिपती**" ति वुत्तं। उण्हपटिपक्खत्ता सीतस्स उण्हताय पटिक्खेपे सीततासङ्का सिया ति आह "**न सीतत्तं अनुजानाती**" ति। तेजोसभागतं येव वा सीतताय पि दस्सेतुं "**न सीतत्तं अनुजानाती**" ति वुत्तं। तेनेवाह "**तेजो एव हि सीतं**" ति। मन्दे हि उण्हभावे सीतबुद्धीति तेजो एव हि सीतं। कथं पनेतं विञ्ञायती ति? सीतबुद्धिया अववत्थितभावतो पारापारं विय। तथा हि आतपे ठत्वा छायं पविट्ठानं सीतबुद्धि होति, तत्थेव पथवीगब्भतो निग्गतानं उण्हबुद्धीति। यदि तेजो येव सीतं, उण्हभावेन सद्धिं सीतभावो पि एकस्मिं कलापे उपलब्भेय्या ति आह "**सीतुण्हानञ्चा**" ति आदि। उण्हसीतकलापेसु सीतुण्हानं अप्पवत्ति। **द्विन्नं**…प०…**युज्जति** न आपोधातुवायोधातूनं सीतभावे

भावञ्ञथत्तं ति खरानं गुळादीनं दवता मुदुता रसादीनञ्च दवानं खरता पच्चयविसेसेहि ओमत्ताधिमत्तपथवीधातु-आदिकानं उप्पत्ति। **लक्खणञ्ञथत्तं** कक्खळादिलक्खणविजहनं, तं एतेसं न होति, ओमत्ताधिमत्तताससङ्खातं भावञ्ञथत्तं येव होतीति अत्थो।

अनुपादिन्नादीनं येवा ति एकन्त-अनुपादिन्न-एकन्त-न-चित्तसमुट्ठानादीनं निद्देसेसु गहणेसु गहिता ति अत्थो। **यं वा पनञ्ञम्पी** ति पन वचनेन पुरिमानम्पि न-कम्मस्सकतत्ताभावादिकं दीपेति। ता हि अनुपादिन्नादि-न-कम्मस्सकतत्तादिवचनानं समानत्थत्ता एकेन अवत्तब्बत्ते [११४-सी०] इतरेन पि अवत्तब्बा सियुं, वत्तब्बत्ते वा वत्तब्बा। तस्मा एकन्ताकम्मजादीस्वेव गहेतब्बत्ता ता अनेकन्तेसु न गहिता ति दट्ठब्बा।

एकन्त···प···पञ्ञायति तेसं विकारत्ता, अनिप्फन्नत्ता पन तस्सा उप्पादो न केनचि सक्का वत्तुं ति अधिप्पायो।

दुकनिद्देसवण्णना निट्ठिता ॥

चतुक्कनिद्देसवण्णना

पच्छिन्नपदस्सा ति विञ्ञातपदस्स। सब्बमेव हि रूपं विञ्ञातं ति तस्स अभिन्दि-

---

ति अधिप्पायो। आपोधातुया हि वायोधातुया सीतभावे उण्हभावेन सद्धिं एकस्मिं कलापे सीतभावो लब्भेय्य, न पन लब्भति। न चेत्थ आपोधातु-अधिके वायोधातु-अधिके वा कलापे सीतभावो ति सक्का विञ्ञातुं तादिसे पि कत्थचि कलापे अलब्भमानत्ता सीतभावस्सा ति। खरतादिसभावाधिकस्स भूतसङ्घातस्स दवतादिसभावाधिकतापत्ति भावञ्ञथत्तं। तं पन यथा होति, तं दस्सेतुं "पच्च··· प०···पत्ता" ति आह।

[१६९-म०] **एकन्त-न-चित्तसमुट्ठानादी** ति आदि-सद्देन एकन्त-अनुपादिन्नुप्पादानियादि सङ्गण्हाति। **पुरिमानम्पी** ति "यं वा पनञ्ञम्पी" ति एतस्मा वचनतो पुरिमानं अनुपादिन्नानं सद्दायतनकायविञ्ञत्ति-आदीनं न-चित्तसमुट्ठानानञ्च चक्खायतनसोतायतनादीनं। **न-कम्मस्सकतत्ताभावादिकं** ति न कम्मस्सकतत्ताभावं न चित्तसमुट्ठानभावं ति एवमादिकं। **एकन्ताकम्मजादीसू** ति आदि-सद्देन एकन्ताचित्तजं गय्हति। ता जरता अनिच्चता। **अनेकन्तेसु न गहिता** ति एकन्ततो अकम्मजेसु सद्दायतनादीसु अचित्तजेसु च चक्खायतनादीसु गहेत्वा चतुसमुट्ठानिकत्ता अनेकन्तेसु रूपायतनादीसु न गहिता ति अत्थो।

अनिप्फन्नत्ता ति अञ्ञं अनपेक्खित्वा सभावतो असिद्धत्तं। **तस्सा** ति विञ्ञत्तिद्वयस्स।

नो-उपादाभाजनीयकथावण्णना निट्ठिता।

दुकनिद्देसवण्णना निट्ठिता।

चतुक्कनिद्देसवण्णना

"सब्बं रूपं मनसा विञ्ञातं" ति वचनतो यदि विञ्ञाततो अञ्ञं दिट्ठादि न होतीति

तब्बत्ता विञ्ञाततो अञ्ञं दिट्ठं सुतं मुतञ्च न होतीति पुच्छं अकत्वा व विस्सज्जितं। न हि सक्का विञ्ञाततो अञ्ञं "कतमं रूपं [१५६-म०] दिट्ठं" ति पुच्छितुं ति अधिप्पायो। यथा हि द्वीसु उद्दिट्ठेसु नोपादतो अञ्ञत्तं सन्धाय "कतमं तं रूपं उपादा" ति पुच्छितं, एवं दिट्ठादीसु चतूसु उद्दिट्ठेसु सुतादीहि तीहि पि अञ्ञत्तं सन्धाय "कतमं तं रूपं दिट्ठं" ति पुच्छितं सिया, तदभावो न पुच्छितं, एवं सुतादीसु पी ति। दस्सनादिग्गहणविसेसतो पन दिट्ठादीहि अञ्ञस्स विञ्ञातस्स सब्भावतो च चतुक्को वुत्तो।

पञ्चकनिद्देसवण्णना

तेजोभावं गतं ति सभावेनेव तेजोभावं[1] पत्तं ति अत्थो। वुत्तस्स पि **अञ्ञेन** पकारेन सङ्गहारहस्स सङ्गण्हनं नयकरणं इध दट्ठब्बं, तयिदं "विञ्ञातं" ति चतुक्कपदे पि योजेतब्बं। फोट्ठब्बस्स भेदसब्भावो अट्ठके नयो।

पकिण्णककथावण्णना

नत्थि नीवरणा ति वचनेन मिद्धस्स पि नीवरणस्स पहानं वुत्तं, न च रूपं पहातब्बं,

---

"कतमं तं रूपं दिट्ठं" ति आदिना पुच्छा न कता, एवं सन्ते चतुक्कभावो कथं ति अनुयोगं मनसि कत्वा आह "दस्सनादिग्गहणविसेसतो" ति। दस्सनं सवनं मिनित्वा जाननं विजाननञ्चा ति एतस्मा दस्सनादिग्गहणविसेसतो। एतेन गाहकभेदेन गहेतब्बभेदो ति दस्सेति। इदानि समुखेन पि गहेतब्बभेदो लब्भतीति दस्सेतुं "दिट्ठा…प०…भावतो" ति वुत्तं।

पञ्चकनिद्देसवण्णना

तदिदं नयकरणं छब्बिधादीसु तीसु सङ्गहेसु योजितं।

पकिण्णककथावण्णना

एकन्ततो नीवरणत्ता मिद्धस्स "नत्थि नीवरणा" ति वचनेन गहणं ति दस्सेतुं "मिद्धस्स पि नीवरणस्सा" ति वुत्तं। न च रूपं पहातब्बं [१७०-म०] निप्परियायप्पहानस्स इध अधिप्पेतत्ता। एत्थ केचि "नामकायरूपकायगेलञ्ञसभावतो दुविधं मिद्धं। तत्थ पुरिमं 'नीवरणा' ति वचनेन वुत्तं, इतरं रूपसभावं" ति वदन्ति। तत्थ यं तं अरूपतो अञ्ञं मिद्धं परिकप्पितं, तम्पि नीवरणं मिद्धसभावतो इतरं मिद्धं विया ति परिकप्पितमिद्धस्स पि न सक्का नीवरणभावं निवत्तेतुं ति तेसं वचनस्स नीवरणप्पहानवचनेन विरोधं दस्सेन्तो "न च रूपकायं" ति आदिमाह। अथ वा खीणासवानं सोप्पनसभावतो सोप्पस्स च

---

1. तेजभावं—सी०।

न च रूपकायगेलञ्ञं मुनिनो नत्थीति सक्का वत्तुं "पिट्ठि मे आगिलायति, **तमहं आयमिस्सामी" ति**[1] **वचनतो**।

सविञ्ञाणकसद्दो ति विञ्ञाणेन पवत्तितो वचीघोसादिसद्दो। **न हि एतानि जायन्ती** ति परिपच्चमानस्स रूपस्स परिपच्चनं जरा, खीयमानस्स खयो अनिच्चता ति रूपभावमत्तानि एतानि, न सयं सभाववन्तानी ति सन्धाय वुत्तं। तथा जायमानस्स जननं जाति, सा च रूपभावो व, न सयं सभाववतीति **"न पन परमत्थो जाति जायती"** ति वुत्तं।

तेसं पच्चयो एतिस्सा ति तप्पच्चया, तप्पच्चयाय भावो तप्पच्चयभावो, तप्पच्चयभावेन पवत्तो वोहारो **तप्पच्चयभाववोहारो**, तं लभति। **अभिनिब्बत्तितधम्मक्खणस्मिं** ति अभिनिब्बत्तियमानधम्मक्खणस्मिं ति अधिप्पायो। न हि तदा ते धम्मा न जायन्तीति जायमानभावो व जातीति युत्ता तस्सा कम्मादिसमुट्ठानता तंनिब्बत्तता च, न पन तदा ते धम्मा जीयन्ति खीयन्ति च, तस्मा न तेसं ते जीरणभिज्जनभावा चित्तादिसमुट्ठाना तंनिब्बत्ता चा ति वचनं अरहन्ति। एवमपि उपादिन्नसद्दो उपेतेन कम्मुना आदिन्नतं वदति, न निब्बत्तिं ति उपादिन्नपाकभेदानं उपादिन्नता तेसं वत्तब्बा ति चे? न, आदिन्न-सद्दस्स निब्बत्तिवाचकत्ता। [१५७-म०] उपेतेन निब्बत्तं हि उपादिन्नं ति पच्चयानुभावक्खणञ्च निब्बत्तिञ्च गहेत्वा व पवत्तो अयं वोहारो तदा अभावा जरा-

---

मिद्धहेतुकत्ता अत्थि मिद्धरूपं ति वादं सन्धाय उत्तरमाह **"न च रूपकायगेलञ्ञं"** ति आदिना। तत्थ मिद्धमेव सोप्पहेतू ति नायं अवधारणा इच्छिता, सोप्पहेतु एव मिद्धं ति पन इच्छिता ति मिद्धतो अञ्ञो पि सोप्पहेतु अत्थि, को पन सो? रूपकायगेलञ्ञं। न च रूप…प०…वचनतो ति योजना दट्ठब्बा।

वचीघोसादी ति आदि-सद्देन हुंकारादिसद्दो सङ्गण्हति। अङ्गुलिफोटादिसद्दो उतुसमुट्ठानो येव, चित्तपच्चयो पन होति। **रूपभावमत्तानी** ति जरामरणसभावानं रूपानं तंधम्ममत्तानि, ततो एव न जाति-आदिधम्मवन्तानी ति आह **"न अयं सभाववन्तानी"** ति। यथा जरा अनिच्चता च रूपभावमत्तं, एवं जाति पी ति जातिया रूपभावमत्तताय उपसंहरणत्थो **तथा**-सद्दो।

तेसं रूपधम्मानं। सञ्जातादि-सद्दो विय अभिनिब्बत्तित-सद्दो पि वत्तमानकालिको पि होती ति "अभिनिब्बत्तियमानधम्मक्खणस्मिं ति वुत्तं। **एवमपी** ति यदि पि जिरणभिज्जनभावा जिरणादिसभावानं धम्मानं जनकपच्चयकिच्चानुभावक्खणे अभावतो तप्पच्चयभाववोहारं अभिनिब्बत्ति-

---

1, म० २ : २१।

मरणे न पवत्ततीति। पटिच्चसमुप्पन्नानं धम्मानं जरामरणत्ता तेसं उप्पादे सति जरामरणं होति, असति न [११५-सी०] होति। न हि अजातं परिपच्चति भिज्जति वा तस्मा, जातिपच्चयतं सन्धाय "**जरामरणं पटिच्चसमुप्पन्नं**" ति वुत्तं।

निस्सयपटिबद्धवुत्तितो ति जायमानपरिपच्चमानभिज्जमानानं 'जायमानादिभावमत्तत्ता जायमानादिनिस्सयपटिबद्धवुत्तिका जाति-आदयो ति वुत्तं होति। यदि एवं उपादायरूपानञ्च चक्खायतनादीनं उप्पादादिसभावभूता जाति-आदयो तंनिस्सिता होन्ती ति भूतनिस्सितानं तेसं लक्खणानं उपादायभावो विय उपादायरूपनिस्सितानं उपादायुपादायभावो आपज्जतीति चे ? न, भूतपटिबद्ध-उपादायरूपलक्खणानञ्च भूतपटिबद्धभावस्स अविनिवत्तनतो। अपि च एककलापपरियापन्नानं रूपानं सहेव उप्पादादिप्पवत्तितो एकस्स कलापस्स उप्पपादादयो एकेका व होन्तीति यथा एकेकस्स कलापस्स जीवितिन्द्रियं कलापानुपालकं "उपादायरूपं" ति वुच्चति, एवं कलापुप्पादादिसभावा जाति-आदयो "उपादायरूपानि" च्चेव वुच्चन्ति। एवं विकारपरिच्छेदरूपानि च योजेतब्बानि।

कम्मसमुट्ठानसम्बन्धं उतुसमुट्ठानं कम्मविसेसेन सुवण्णदुब्बण्णसुसण्ठितदुस्सण्ठितादिविसेसं होतीति "**कम्मपच्चयं**" ति वुत्तं। कम्मविपाकानुभवनस्स कारणभूतं बाहिर-उतुसमुट्ठानं **कम्मपच्चय-उतुसमुट्ठानं**। कम्मसहायो पच्चयो, कम्मस्स वा सहायभूतो पच्चयो कम्मपच्चयो, सो व उतु कम्मपच्चय-उतु, सो समुट्ठानं एतस्सा ति **कम्म-**

वोहारञ्च न लभति, एवमपि तेसं उपादिन्नता वत्तब्बा ति सम्बन्धो। "जरामरणं पटिच्चसमुप्पन्नं" ति वचनतो तस्स परियायतं विवरति "**तेसं उप्पादे सतो**" ति आदिना।

यदि एवं ति यदि निस्सयपटिबद्धवुत्तिका जाति-आदयो, एवं सति। "महाभूतानं उपादायरूपं" ति[1] वचनतो भूतनिस्सितेसु केवलो उपादायवोहारो ति उपादाये निस्सिता पि अपरेन उपादायसद्देन विसेसेत्वा वत्तब्बा ति अधिप्पायेन "**उपादायुपादायभावो आपज्जती**" ति आह। कारणकारणे पि कारणे विय बोहारो [१७१-म०] होति "चोरेहि गामो दड्ढो" ति यथा ति दस्सेन्तो "**भूत....प०....चनतो**" ति आह। इदानि परम्परा विना निप्परियायतो उप्पादादीनं भूतपटिबद्धभावं सह निदस्सनेन दस्सेतुं "**अपि चा**" ति आदिमवोच। विकार-परिच्छेदा पि उपादायरूपविकारादिभावे भूतपटिबद्धभावाविनिवत्तितो एकस्मिं कलापे एकेका व विकारादयो ति जीवितिन्द्रियं विय कलापानुपालकं कलापविकारादिभावतो च "उपादायरूपानि" इच्चेव वुच्चन्तीति आह "**एवं विका....प०....योजेतब्बानी**" ति।

असङ्खतभावनिवारणत्थं परिनिप्फन्नता वुत्ता ति इदं अपरिनिप्फन्नसभावतो अनुपलब्भ-

---

1. अभि० १ : १४७।

पच्चय-उतुसमुट्ठानं ति वचनत्थो। सीते उण्हे वा किस्मिञ्चि उतुम्हि समागते ततो सुद्धट्ठकं उप्पज्जति, तस्स सो उतु समुट्ठानं। दुतियस्स सुद्धट्ठकस्स उतुसमुट्ठानिक-पटिबन्धकस्स सो एव पुरिमो उतु पच्चयो। ततियं पन सुद्धट्ठकं पुरिम-उतुसहायेन उतुना निब्बत्तत्ता पुब्बे वुत्तनयेनेव "**उतुपच्चय-उतुसमुट्ठानं**" ति वुत्तं। एवमयं पुरिमो उतु तिस्सो सन्ततियो घट्टेति, ततो परं अञ्ञ-उतुसमागमे अञ्ञसन्ततित्तयं, ततो च अञ्ञेन अञ्ञं ति एवं पवत्ति दट्ठब्बा। तदेतं सीतुण्हानं अप्पबहुभावे तं-सम्फस्सस्स अचिरप्पवत्तिया [१५८-म०] चिरप्पवत्तिया च वेदितब्बं, अनुपादिन्नेन दीपना न सन्ततित्तयवसेन, अथ खो मेघसमुट्ठापकमूल-उतुवसेन पकारन्तरेन दट्ठब्बा, तं दस्सेतुं **उतुसमुट्ठानो नाम वलाहको**" ति आदिमाह। रूपरूपानं विकारादिमत्तभावतो अपरि-निप्फन्नता वुत्ता। तेसं हि रूपविकारादिभावतो रूपता ति अधिप्पायो। रूपविका-रादिभावतो एव पन रूपे सति सन्ति असति न सन्तीति असङ्खतभावनिवारणत्थं परिनिप्फन्नता वुत्ता ति।

रूपकण्डवण्णना निट्ठिता।

मानताय ससविसाणं विय केनचि न संखतं ति असङ्खतं नाम सिया ति इमिस्सा आसङ्काय निवत्तनवसेन वुत्तं। अथवा रूपविकारादिभावतो रूपभावो विय रूपे सति सन्ति, असति न सन्तीति सिद्धाय पटिच्चसमुप्पन्नताय साधिता परिनिप्फन्नता तेसं सङ्खतभावं साधेन्ती असङ्खतभावं निवारणत्थं जायती ति वुत्तं "**असङ्खतभावनिवारणत्थं परिनिप्फन्नता वुत्ता**" ति।

पकिण्णककथावण्णना निट्ठिता।

रूपकण्डवण्णना निट्ठिता।

३—निक्खेपकण्डं तिकनिक्खेपकथावण्णना

[१५९–म०] **सब्बेसं** ति चित्तुप्पादवसेन रूपासङ्खतवसेन च भिन्नानं सब्बेसं फस्सादिचक्खादिपदभाजननयेन वित्थारितो। तत्थ पन असङ्खतस्स भेदाभावतो असङ्खता धातूत्वेव पदभाजनं दट्ठब्बं । येवापनकानं पन सुखुमुपादायरूपस्स च इन्द्रियविकारपरिच्छेदलक्खणरूपुपत्थम्भकभावरहितस्स हदयवत्थुस्स [११६–सी०] पदुद्धारेन इध निद्देसानरहत्ता निद्देसो न कतो ति दट्ठब्बो। न हि तथागतस्स धम्मेसु आचरियमुट्ठि अत्थीति । **निक्खिपित्वा** ति वित्थारदेसनं ठपेत्वा, अपनेत्वा ति अत्थो, वित्थारदेसनं अन्तोगधं कत्वा ति वा। गाथात्थो निदाने वुत्तो एव।

मूलवसेन पच्चयभावो **हेतुपच्चयत्थो**। पभवति एतस्मा ति **पभवो**, सो एव "**जनको**" ति विसेसितो। समुट्ठाति एतेना ति **समुट्ठानं**, तस्स विसेसनं **निब्बत्तकं** ति। सब्बानि वा एतानि परियायवचनानि। **अत्थवसेना** ति कस्मा वुत्तं, ननु कुसल-

---

३—निक्खेपकण्डं तिकनिक्खेपकथावण्णना

[१७२–म०] यथावुत्तफस्सपञ्चमकादिरासिकिच्चरहितत्ता केचि धम्मे विसुं ठपेत्वा सोवचस्सतादिअवुत्तविसेससङ्गण्हनत्थं च, वेनेय्यज्झासयवसेन वा छन्दादयो "येवापना" ति वुत्ता ति येवापनकानं पदुद्धारेन निद्देसानरहताय कारणं वुत्तं ति हदयवत्थुस्स तथा निद्देसानरहताय कारणं वदन्तो "**सुखुमुपा....प०.... हितस्सा**" ति आह। सुखुमभावे पि इन्द्रियादिसभावानि उपादायरूपानि आधिपच्चादिवसेन पाकटानि होन्ति, न अतंसभावं सुखुमुपादायरूपं ति हदयवत्थुस्स पदुद्धारेन कुसलत्तिकपदभाजने निद्देसानरहता वुत्ता। सुखुमभावतो येव हि तं महापकरणे पि "यं रूपं निस्साय मनोधातु च मनोविञ्ञाणधातु च वत्तन्ती" ति[1] निस्सितधम्ममुखेन दस्सितं ति। वेनेय्यज्झासयवसेन वा हदयवत्थु पदुद्धारेन न दस्सितं ति दट्ठब्बं। येन पन अधिप्पायेन रूपकण्डे हदयवत्थु दुविधेन रूपसङ्गहादीसु न वुत्तं, सो रूपकण्डवण्णनाय विभावितो एवा ति। **निक्खिपित्वा** ति पदस्स पक्खिपित्वा ति अत्थो ति अधिप्पायेन "वित्थारदेसनं अन्तोगधं कत्वा" ति वुत्तं। मूलादिवसेन हि देसिता कुसलादिधम्मा तंतंचित्तुप्पादादिवसेन देसिता एव नाम होन्ति तंसभावानतिवत्तनतो ति।

मूलवसेना ति सुप्पतिट्ठितभावसाधनवसेन। एतानि हेतुपदादीनि हिनोति फलं एतस्मा पवत्ततीति हेतु, पटिच्च एतस्मा एतीति पच्चयो, जनेतीति जनको, निब्बत्तेतीति निब्बत्तको

---

१. अभि० १ : ७, पट्ठाने।

मूलानं हेतुभावतो धम्मवसेना ति युत्तं ति ? सच्चमेतं, अलोभादीनं पन तिण्णं समानस्स मूलट्ठस्स वसेन दस्सिततं सन्धाय "अत्थवसेना" ति वुत्तं। इमिना **धम्मो** ति भावो, **अत्थो** ति धम्मकिच्चं अधिप्पेतं ति विञ्ञायति। "अलोभो निदानं कम्मानं समुदयाया" ति[1] आदिवचनतो तानि कुसलमूलानि समुट्ठानं एतस्सा ति पि **तं-समुट्ठानं**। तं पन तेहि समुट्ठितं होतीति "अलोभादीहि समुट्ठितं" ति आह। ते कुसलमूलतंसम्पयुत्ता समुट्ठानं एतस्सा ति पि अत्थो सम्भवति। एत्थ पन चेतनं ठपेत्वा अञ्ञे "तंसम्पयुत्ता" ति समुट्ठानभावे वत्तब्बा।

तत्थ मूलेहि अत्तनो पच्चयतो कुसले परियादियति, खन्धेहि सभावतो, कम्मेहि अञ्ञस्स निब्बत्तनकिच्चतो। मूलेहि च कुसलानं अनवज्जताय हेतुं दस्सेति, खन्धेहि तंसम्पयोगकतं अनवज्जसभावं, कम्मेहि सुखविपाकतं। मूलेहि वा निदानसम्पत्तिया

ति सेसानं वचनत्थो। "मूलट्ठस्स "प०" वुत्तं" ति कस्मा वुत्तं, ननु "पीळनट्ठो" ति आदीसु विय मूलभावो मूलट्ठो, तीणि कुसलमूलानीति अयञ्च मूलतो निक्खेपो ति ? न, मूलस्स अत्थो मूलट्ठो, सो एव मूलट्ठो ति सुप्पतिट्ठितभावसाधनट्ठेन मूलसभावानं अलोभादिधम्मानं कुसलधम्मेसु किच्चविसेसस्स अप्पितत्ता। तेनेवाह "अत्थो ति धम्मकिच्चं" ति। अथ वा अत्थवसेना ति "तीणि कुसलमूलानी" ति वुत्तानं तेसं मूलानं सभावसङ्खात-अत्थवसेन, न गाथाय वुत्त-अत्थवसेन। [१९३–म०] यस्मा पन सो मूलट्ठो येव च होति, तस्मा वुत्तं "अलोभादीनं" ति आदि। अलोभादयो विय वेदनाक्खन्धादयो पि अधिकतत्ता तं-सद्देन पटिनिद्दिसितब्बा ति वुत्तं "ते कुसलमूला तंसम्पयुत्ता" ति। तेहि अलोभादीही ति एत्थ आदि-सद्देन वा वेदनाक्खन्धादयो पि सङ्गहिता ति दस्सेतुं "ते कुसलमूला तंसम्पयुत्ता" ति वुत्तं।

"कतमे धम्मा कुसला" ति पुच्छित्वा फस्सादिभेदतो चत्तारो खन्धे दस्सेत्वा "इमे धम्मा कुसला" ति[2] वुत्तत्ता खन्धा च कुसलं ति वुत्तं "खन्धेहि सभावतो कुसले परियादीयती" ति। वेदनाक्खन्धो वा ति[3] कुसलं "प०"" विञ्ञाणक्खन्धो वा ति। अञ्ञस्स अत्तनो फलस्स। मूलेहि कुसलानं अनवज्जताय हेतुं दस्सेती ति इदं न मूलानं कुसलस्स अनवज्ज-भावसाधकत्ता वुत्तं, अथ खो तस्स अनवज्जताय सुप्पतिट्ठितभावसाधकत्ता। यदि हि मूलेहि कतो कुसलानं अनवज्जभावो भवेय्य, तंसमुट्ठानरूपस्स पि सो भवेय्य, मूलानं वा तेसं पच्चय-भावो न सिया, होति च सो। वुत्तं हेतं "हेतु हेतु प०"" पच्चयो" ति[4]। किञ्च भिय्यो कुसलानं विय अकुसलाब्याकतानम्पि तब्भावो मूलपटिबद्धो भवेय्य तथा सति अहेतुकानं अकुसला-

१. अं० १ : १२५। २. अभि० १ : १९ ध० सं०।
३. इदं पदं मूलटीकायं न दिस्सति। ४. अभि० १ : १ पट्ठाने।

आदिकल्याणतं, खन्धेहि सभावसम्पत्तिया मज्झेकल्याणतं, कम्मेहि निब्बत्तिसम्पत्तिया परियोसानकल्याणतं।

[१६०–म०] **तं"""प"""उद्धं अकुसलं नाम नत्थी** ति कस्मा वुत्तं, ननु विचिकिच्छुद्धच्चसहगतमोहो अत्थीति? सच्चमेतं, तेन पन विना तंसम्पयुत्तता नत्थीति तंसम्पयुत्तेसु गहितेसु मोहो गहितो एवा ति कत्वा "ततो उद्धं नत्थी" ति वुत्तं अञ्ञत्थ अभावा। एकस्मिं ठितं एकट्ठं, सहजभावेन एकट्ठं **सहजेकट्ठं**। पहातब्बं ति पहानं, पहानभावेन एकट्ठं **पहानेकट्ठं**। येन हि यं सह पहातब्बं, तेन तं एकस्मिं पुग्गले ठितं होति, एकस्मिं समुच्छिन्ने असमुच्छिन्ने च इतरस्स समुच्छिन्नताय असमुच्छिन्नताय च वसेन अञ्ञमञ्ञाविरहिततो।

तीणि लक्खणानी ति अनिच्चदुक्ख-अनत्तता। नामकसिणसत्तपञ्ञत्तियो तिस्सो

ब्याकतानं तब्भावो न सिया, तस्मा कुसलादीनं योनिसोमनसिकारादिपटिबद्धो कुसलादिभावो, न मूलपटिबद्धो, मूलानि पन कुसलादीनं सुप्पतिट्ठितभावसाधनानीति वेदितब्बं। सहेतुका हि धम्मा विरुळ्हमूला विय पादपा सुप्पतिट्ठिता थिरा होन्ति, न तथा अहेतुका ति। **तंसम्पयोगकतं अनवज्जसभावं** ति इदम्पि अनवज्जसभावस्स तंसम्पयोगेन निप्फादितता वुत्तं, अनवज्जसभावं पन विसेसेत्वा दस्सेतुं वुत्तं। अलोभादिसम्पयोगतो हि कुसलादीनं खन्धानं अनवज्जभावो सुप्पतिट्ठितो जायति, न अहेतुकाब्याकतानं विय न सुप्पतिट्ठितो ति। यदि एवं न तेसं खन्धानं कुसलादिभावो दस्सितो सिया? न, अधिकारतो कुसलभावस्स विञ्ञायमानत्ता। **कम्म**-सद्दो विय विपाकधम्मतावाचिनो न मूलक्खन्धसद्दा, सो च इध अविसेसतो वुत्तो ति आह "**कम्मेहि सुखविपाकतं दस्सेती**" ति। आदिकल्याणतं [१७४–म०] कुसलानं दस्सेतीति योजना। अनवज्जहेतुसभावसुखविपाकभावनिदानादिसम्पत्तियो दट्ठब्बा, योनिसोमनसिकार-अवज्जपटिपक्खता-इट्ठविपाकतावसेन पि निदानादिसम्पत्तियो योजेतब्बा। योनिसोमनसिकारतो हि कुसला अलोभादिमूलका, अलोभादिसम्पयोगतो च लोभादिपटिपक्खसुखविपाका व जाता ति।

"**कस्मा वुत्तं**" ति अनुयुञ्जित्वा चोदको "**ननू**" ति आदिना अत्तनो अधिप्पायं विवरति। इतरो यथावुत्तमोहस्स इध सम्पयुत्त-सद्देन अवुच्चमानतं **सच्चमेतं** ति सम्पटिच्छित्वा "**तेना**" ति आदिना परिहारमाह। तस्सत्थो तंसम्पयुत्ता" ति पदेन किञ्चा पि **यथावुत्तमोहो** पधानभावेन न गहितो, नानन्तरियकताय पन गुणभावेन गहितो ति। **अञ्ञत्थ अभावा** ति यथावुत्तसम्पयुत्ततो अञ्ञत्थ अभावा। न हि विचिकिच्छुद्धच्चसहगतो मोहो विचिकिच्छुद्धच्चादिधम्मेहि विना होतीति।

उप्पादादिसङ्खतलक्खणविनिवत्तनत्थं "**अनिच्चदुक्ख-अनत्तता**" ति वुत्तं। उप्पादादयो पन

पञ्ञत्तियो। परमत्थे अमुञ्चित्वा वोहरियमाना विहारमञ्चादिका उपादापञ्ञत्ति सत्तपञ्ञत्तिग्गहणेन गहिता ति वेदितब्बा, एतानि च लक्खणादीनि हेट्ठा द्वीसु कण्डेसु विञ्ञत्ति-आदीनि विय न वुत्तानि, न च सभावधम्मा ति कत्वा न लब्भन्तीति वुत्तानि। न हि कोचि सभावो कुसलत्तिकासङ्गहितो ति वत्तुं युत्तं ति।

सुखभूमी ति कामावचरादयो पि युज्जन्ति। सुखसहगता हि कामावचरादिभूमि सुखभूमि। **कामावचरादिभूमी** ति च कामावचरादिताय धम्मा एव वुच्चन्तीति कामावचरादिचित्तुप्पादेसू ति अत्थतो विञ्ञायति। एवञ्च कत्वा "सुखभूमियं" ति वत्वा तस्सा एव विभागदस्सनत्थं **"कामावचरे"** ति [११७–सी०] आदि वुत्तं। **भूमि**-सद्दो च अभिधम्मे कामावचरादीसु निरुळ्हो ति "चतूसु भूमीसु कुसलं" ति आदीसु[1] अञ्ञभूमिग्गहणं न होतीति। **पाळितो चा** ति "विसिट्ठानं पाका ति

तदवत्थधम्मविकारभावतो तंतंधम्मग्गहणेन गहिता येव। तथा हि वुत्तं "जरामरणं द्वीहि खन्धेहि सङ्गहितं" ति[2] "रूपस्स उपचयो" ति च आदि। केसकुम्भादि सब्बं नामं **नामपञ्ञत्ति**, रूपवेदनादि-उपादाना ब्रम्हविहारादिगोचरा उपादायपञ्ञत्ति **सत्तपञ्ञत्ति**, तंतंभूतनिमित्तं भावनाविसेसञ्च उपादाय गहेतब्बो ञाणगोचरविसेसो कसिणपञ्ञत्ति। **परमत्थे अमुञ्चित्वा वोहरियमाना** ति इमिना विहारमञ्चादिपञ्ञत्तीनं सत्तपञ्ञत्तिसदिसतं दस्सेति, यतो ता सत्तपञ्ञत्तिग्गहणेन गय्हन्ति। हुत्वा अभावपटिपीळन-अवसवत्तनाकारभावतो सङ्खतधम्मानं आकारभावतो सङ्खतधम्मानं आकारविसेसभूतानि लक्खणानि विञ्ञत्ति-आदयो विय वत्तब्बानि सियुं, तानि पन निस्सयानपेक्खं न लब्भन्तीति पञ्ञत्तिसभावानेव तज्जापञ्ञत्तिभावतो ति न वुत्तानि, सत्तघटादितो विसेसदस्सनत्थं पन अट्ठकथायं विसुं वुत्तानीति। नहि को…प०…वत्तुं युत्तं कुसलत्तिकस्स निप्पदेसत्ता।

भवति एत्था ति भूमि, निस्सयपच्चयभावतो सुखस्स भूमि सुखभूमि। सुखवेदनासहितं चित्तं। तस्स भूमिभेदेन निद्धारणत्थं [१७५–म०] तंनिस्सयभूता सम्पयुत्तधम्मा **"कामावचरे"** ति वुत्ता। तस्स वा एकदेसभूतस्स समुदायभावतो आधारणभावेन अपेक्खित्वा तंसमानभूमि **"कामावचरे"** ति वुत्ता। तत्थ "सुखभूमियं कामावचरे" ति द्वे पि भुम्मवचनानि भिन्नाधिकरणभावेन अट्ठकथायं वुत्तानीति उभयेसम्पि समानाधिकरणभावेन अत्थयोगं दस्सेतुं **"सुखभूमीति कामावचरादयो पि युज्जन्ती"** ति वुत्तं। यथेव हि चित्तं, एवं सब्बे पि परित्तसुखेन सम्पयुत्ता धम्मा तस्स निस्सयभावतो भूमि कामावचरा ति। अट्ठकथायम्पि वा अयमत्थो वुत्तो येवा ति दट्ठब्बं। "चित्तं" ति हि चित्तुप्पादो पि वुच्चति। तेन वुत्तं "चित्तं उप्पन्नं ति एत्थ चित्तमेव अग्गहेत्वा परोपण्णासकुसलधम्मेहि सद्धिं येव चित्तं गहितं" ति[3]। **एवञ्च कत्वा**

---

1. अभि० १ : २९५ धम्मसंगणियं। 2. अभि० ३ : १९ धातुकथायं। 3. अट्ठ० ५६।

विपाका" ति आदिवचनत्थविभावनेन पाळितो। "विपक्कभावमापन्नानं अरूपधम्मानमेतं अधिवचनं" ति आदिना भासितत्थविभावनेन **अत्थतो** च। नामपरिच्छेदादीहि तिक-दुकानं ववत्थानदस्सनेन वा **पाळितो**, तदत्थविञ्ञापनेन **अत्थतो**।

सालिफलं ति सालिपाकमाह।

अम्हाकं मातुलत्थेरो ति पुग्गलारम्मणस्स पि उपादानस्स उपादानक्खन्धा एव पच्चयो, न लोकुत्तरा, को पन वादो खन्धारम्मणस्स। तेनाह **"अग्गहितानी** ति।

[१६१-म०] यथा उपादानेहि अग्गहेतब्बा अनुपादानिया, एवं संकिलेसेहि अग्गहेतब्बा असंकिलेसिका ति कत्वा **"असं प॰ एसेव नयो"** ति आह।

दिट्ठिया गहितो अत्ता न विज्जति। येसु पन विप्पल्लत्थगाहो, ते उपादानक्खन्धा व विज्जन्ति। तस्मा यस्मिं अविज्जमाननिच्चादिविपरियासाकारगहणं अत्थि, सो व उपादानक्खन्धपञ्चकसङ्खातो कायो। तत्थ निच्चादि-आकारस्स अविज्जमानतादस्सनत्थं रुप्पनादिसभावस्सेव च विज्जमानतादस्सनत्थं विज्जमानो कायो ति विसेसेत्वा वुत्तो, लोकुत्तरा पन न कदाचि अविज्जमानाकारेन गय्हन्तीति न इदं विसेसनं अरहन्ति। सक्काये दिट्ठि, सती वा काये दिट्ठि **सक्कायदिट्ठि**। अत्तना गहिताकारस्स अविज्ज-

---

ति सुखभूमियं ति चित्तुप्पादस्स विञ्ञायमानत्ता। विभागदस्सनं विसेसदस्सनं। भासितब्बं भासितं, तदेव अत्थो ति भासितत्थो अभिधेय्यत्थो। **तदत्थविञ्ञापनेना** ति तिकदुकानं कुच्छितानं सलनादि-अत्थदीपकेन।

को पन वादो खन्धारम्मणस्सा ति पुब्बापरभावेन वत्तमाने अरहतो खन्धे एकत्तनयवसेन सन्तानतो "अम्हाकं मातुलत्थेरो" ति आदिना आलम्बित्वा पवत्तमानं उपादानं तस्स उपादान-क्खन्धे येव गण्हाति। सति पि तंसन्ततिपरियापन्ने लोकुत्तरक्खन्धे तत्थ पवत्तितुं असमत्थभावतो का पन कथा खन्धे आरब्भ पवत्तमाने। एतेन नत्थि मग्गो विसुद्धिया, नत्थि निब्बानं ति एवमादिवसेन पवत्ता मिच्छादिट्ठि-आदयो न मग्गादिविसया तं-तं-पञ्ञत्तिविसया ति दीपितं होति।

एवं सं॰॰॰प॰॰॰लेसिका ति अनुपादानियेहि असंकिलेसिकानं भेदाभावमाह।

अविज्जमानो च सो निच्चादिविपरियासाकारो चा ति **अवि॰॰॰प॰॰॰साकारो** ति पदच्छेदो। दिट्ठिया निच्चादि-अविज्जमानाकारेन गय्हमानत्ते पि न तदाकारो विय परमत्थतो अविज्जमानो, अथ खो विज्जमानो कायो सक्कायो ति अविज्जमाननिच्चादिविपरियासाकारतो विसेसनं ति **लोकुत्तरा न इदं विसेसनं अरहन्ति** "सन्तो [१७६-म०] विज्जमानो कायो सक्कायो" ति। **वत्थु अविसेसितं होतो** ति इदं "सती काये" ति एत्थ काय-सद्दो समूहत्थताय अनामसित-

मानताय सयमेव सती, न ताय गहितो अत्ता अत्तनियं वा ति अत्थो। अयं पनत्थो सम्भवतीति कत्वा वुत्तो, पुरिमो एव पन पधानो। दुतिये हि दिट्ठिया वत्थु अविसेसितं होति। कायो ति हि खन्धपञ्चके वुच्चमाने लोकुत्तरापनयनं नत्थि। न हि लोकुत्तरेसु काय-सद्दो न वत्तति। कायपस्सद्धि-आदीसु हि लोकुत्तरेसु काय-सद्दो पि लोकुत्तरक्खन्धवाचको ति। **सीलेना** ति सुद्धिया अहेतुभूतेन सीलेन। **गहित-समादानं** ति उप्पादितपरामासो व। सो हि समादियन्ति एतेन कुक्कुरसीलवतादीनीति "समादानं" ति वुत्तो। तत्थ अवीतिक्कमनीयताय **सीलं,** भत्तिवसेन सततं चरितब्बताय **वतं** दट्ठब्बं।

इधेव तिट्ठमानस्सा ति इमिस्सा येव इन्दसालगुहायं तिट्ठमानस्स। वाचुग्गतकरणं **उग्गहो**। अत्थपरिपुच्छनं **परिपुच्छा**। कुसलेहि सह चोदनापरिहरणवसेन विनिच्छय-करणं **विनिच्छयो**। बहूनं नानप्पकारानं सक्कायदिट्ठीनं अविहतत्ता ता जनेन्ति, ताहि **जनिता** ति वा **पुथुज्जना**। अविघातमेव वा जन-सद्दो वदति। **पुथु सत्थारानं मुखुल्लोकिका** ति एत्थ पुथू जना एतेसं ति **पुथुज्जना** ति वचनत्थो। **पुथु प**... **अवुट्ठिता** ति एत्थ जनेतब्बा, जायन्ति वा एत्था ति जना, गतियो। पुथू जना एतेसं ति **पुथुज्जना**। इतो परे जायन्ति एतेहीति जना, अभिसङ्खारादयो। ते एतेसं पुथू विज्जन्तीति पुथुज्जना। अभिसङ्खरणादि-अत्थो एव वा जन-सद्दो दट्ठब्बो। रागग्गि-आदयो **सन्तापा** ते एव सब्बे पि वा किलेसा **परिळाहा**। पुथु [१६२-म०]

विसेसं खन्धपञ्चकं वदतीति अधिप्पायेन वुत्तं। पसादकायो विय कुच्छितानं रागादीनं उप्पत्तिट्ठानताय कायो ति वुच्चतीति एवं पन अत्थे सति दिट्ठिया वत्थु विसेसितमेव होतीति लोकुत्तरा पि अपनीता। न हि लोकुत्तरा खन्धा उप्पत्तिट्ठानताय "कायो" ति वुच्चन्तीति। **सुद्धिया अहेतुभूतेना** ति गोसीलादिना लोकियसीलेन वा लोकुत्तरसीलस्स अपदट्ठानेन। "अवीतिक्कमनीयतासततं चरितब्बताहि वा सीलं, तपोचरणभावेन समादिन्नताय वतं। अत्तनो गवादिभावाधिट्ठानं सीलं, गच्छन्तो येव भक्खनादिगवादिकिरियाकरणं वतं। अकत्तब्बाभिमततो निवत्तनं वा सीलं, तंसमादानवतो वेसभोजनकिच्चचरणादिविसेसपटिपत्ति वतं" ति च सीलब्बतानं विसेसं वदन्ति।

इमस्सुप्पादा इदं उप्पज्जती ति उप्पादो ति व जननमत्तं अधिप्पेतं, अथ खो अविरोधो पी ति **"अविघातं जनसद्दो वदती"** ति आह। तत्थायं जनसद्दे नयो, जनिता ति जना, अविहता ति अत्थो। पुथु जना एतेसं ति पुथुज्जना ति पुथुसत्थुमानिनो सत्ता। अभि-

---

1. मुखमुख०–सी०।

पञ्चसु कामगुणेसू ति एत्थ जायतीति जनो "रागो गेधो" ति एवमादिको। पुथु जनो एतेसं ति **पुथुज्जना**। पुथूसु वा जना जाता रत्ता ति एवं रागादि-अत्थो एव जन-सद्दो दट्ठब्बो। [११८-सी०] **पलिबुद्धा** ति सम्बद्धा उपद्दुता वा। **अस्सुतवा** ति एतेन अन्धता वुत्ता ति **"अन्धपुथुज्जनो वुत्तो"** ति आह।

अनये ति अवड्ढियं। सब्बत्थ निरुत्तिलक्खणेन पदसिद्धि वेदितब्बा। अनेकेसु च कप्पसतसहस्सेसु कतं जानन्ति, पाकटञ्च करोन्ति उपकारं सतिजनन-आमिस-पटिग्गहणादिना पच्चेकसम्बुद्धा, तथेव दुक्खितस्स सक्कच्चं कातब्बं करोन्ति। सम्मासम्बुद्धो पन असङ्ख्येय्य-अप्पमेय्येसु पि कतं उपकारं मग्गफलानं उपनिस्सयञ्च जानाति, पाकटञ्च करोति, सीहो विय च जवं सब्बत्थ सक्कच्चमेव धम्मदेसनं करोति। **अरियभावो** ति येहि योगतो अरिया वुच्चन्ति, ते मग्गफलधम्मा दट्ठब्बा। **अरियकरधम्मा** अनिच्चदस्सनादयो, विपस्सियमाना वा अनिच्चादयो।

सोतानी ति तण्हादिट्ठिकिलेसदुच्चरित-अविज्जासोतानि। **"सोतानं संवरं ब्रूमी"** ति वत्वा **"पञ्ञायेते पिधीयरे"** ति वचनेन सोतानं संवरो पिदहनं समुच्छेदञाणं ति विञ्ञायति। **खन्ती** ति अधिवासना, सा च तथापवत्ता खन्धा। पञ्ञा ति एके, अदोसो एव वा। **कायदुच्चरितादीनं** ति दुस्सीलयसङ्खातानं कायवचीदुच्चरितानं मुट्ठस्सच्चसङ्खातस्स पमादस्स अभिज्झादोमनस्सानं पापकानं अक्खन्ति-अञ्ञाण-

---

सङ्खरणादि-अत्थो वा जन-सद्दो अनेकत्थत्ता धातून। खन्धायतनादीनं सवनाधीनत्ता पञ्ञाचक्खुपटिलाभस्स तेसं सवनाभावदीपकं "अस्सुतवा" ति इदं पदं अन्धतं वदति।

कतं जानन्ती ति अत्तना परेहि च कतं कुसलाकुसलं तेहि निप्फादितं सुखदुक्खं याथावतो जानन्ति। परेसं अत्तना, अत्तनो च परेहि कतं उपकारं यथावुत्ताकारेन **पाकटं करोन्ति**। ब्याधि-आदीहि दुक्खितस्स उपट्ठानादि कातब्बं, संसारदुक्खदुक्खितस्सेव वा यथावुत्ताकारेन कातब्बं करोन्ति। अरियकरधम्मा अरियसच्चानीति पुरिमसच्चद्वयवसेन वुत्तं "विपस्सियमाना अनिच्चादयो" ति। परिञ्ञादिविसेसेन वा पस्सियमाना ति अत्थे सति "अनिच्चादयो" आदि-सद्देन निच्चम्पि निब्बानं गहितं ति चतुसच्चवसेन पि योजेतब्बं, अनिच्चतादयो वा "अनिच्चादयो" ति वुत्ता ति दट्ठब्बं।

अवसेसकिलेसा किलेससोतं। ञाणं ति याथावतो जाननं। यथाभूतावबोधेन हि तस्स तानि अनुप्पत्तिधम्मतं आपादितताय [१७७-म०] सन्ताने अप्पवेसारहानि "संवुतानि पिहितानी" ति च वुच्चन्ति। तथा ति सब्बसङ्खारानं विप्पकारस्स खमनाकारेन। अविपरीतधम्मा एताय निज्झायं खमन्तीति पञ्ञा खन्ती ति। अदुट्ठस्सेव तितिक्खाभावतो तथापवत्ता खन्धा

कोसज्जानञ्च । **अनुपेक्खा** सङ्खारेहि अविवट्टनं, सालयता ति अत्थो । **धम्मट्ठितियं** पटिच्चसमुप्पादे पटिलोमभावो सस्सतुच्छेदगाहो, तप्पटिच्छादकमोहो वा । **निब्बाने पटिलोमभावो** सङ्खारेसु रति, निब्बानपटिच्छादको मोहो वा । **सङ्खारनिमित्तग्गाहो** ति यादिसस्स किलेसस्स अप्पहीनत्ता विपस्सना सङ्खारनिमित्तं न मुञ्चति, सो किलेसो दट्ठब्बो । सङ्खारनिमित्तग्गहणस्स अतिक्कमनं वा **पहानं** ।

चतुन्नं अरियमग्गानं भवितत्ता अच्चन्तं अप्पवत्तिभावेन यं पहानं ति योजना वेदितब्बा । केन पन पहानं ति ? अरियमग्गेहेवा ति विञ्ञायमानो अयमत्थो तेसं भावितत्ता अप्पवत्तिवचनेन । **समुदयपक्खिकस्सा** ति एत्थ चत्तारो पि मग्गा चतुसच्चाभिसमया ति कत्वा तेहि [१६३-म०] पहातब्बेन तेन तेन समुदयेन सह पहातब्बत्ता समुदयसभागत्ता च सच्चविभङ्गे च सब्बकिलेसानं समुदयभावस्स वुत्तत्ता "समुदयपक्खिका" ति दिट्ठि-आदयो वुच्चन्ति । कायवाचाचित्तानं विरूपप्पवत्तिया नयनं अपयापनं, कायदुच्चरितादीनं विनासनयनं वा विनयो, तेसं वा जिम्हप्पवत्तिं विच्छिन्दित्वा उजुकनयनं **विनयनं** । **एसेसे** ति एसो सो एव, अत्थतो अनञ्ञो ति अत्थो । **तज्जाते** ति अत्थतो तंसभावो व । सप्पुरिसो अरियसभावो, अरियो च सप्पुरिसभावो ति अत्थो ।

अद्वयं ति द्वयतारहितं, वण्णमेव "अच्ची" ति गहेत्वा अच्चिं वा "वण्णो एवा" ति तेसं एकत्तं पस्सन्तो विय यथातक्कितं अत्तानं "रूपं" ति, यथादिट्ठं वा रूपं "अत्ता" ति गहेत्वा तेसं एकत्तं पस्सन्तो दट्ठब्बो । एत्थ च "रूपं अत्ता" ति

ति अदोसप्पधाना खन्धा वुत्ता ति "अदोसो एव वा" ति ततियो विकप्पो वुत्तो । सतिपटिपक्खत्ता अभिज्झादोसनस्सानं "मुट्ठस्सच्चं" ति वुत्ता । अक्खन्ति दोसो । सस्सतादिअन्तविनिमुत्ता धम्मट्ठितीति सस्सतुच्छेदादिगाहो तप्पटिलोमभावो वुत्तो । दिट्ठधम्मनिब्बानवादो निब्बाने पटिलोमभावो । चरिमानुलोमञाणवज्झतण्हादिको किलेसो ति वुत्तो, पटिपदाञाणदस्सनञाणदस्सनानि विय गोत्रभुञाणं किलेसानं अप्पवत्तिकरणभावेन वत्तति, किलेसविसयातिलङ्घनभावेन पन पवत्ततीति कत्वा वुत्तं "सङ्खार.....प०.....पहानं" ति ।

दिट्ठियादीनं समुदयसभागता कम्मस्स विकुप्पादने सहकारीकारणभावो, दस्सनादिब्यापारं वा अत्तानञ्च दस्सनादिकिच्चं चक्खादीनं ति एवं हि यथातक्कितं अत्तानं रूपं ति गण्हाति । यथादिट्ठं ति तक्कदस्सनेन यथोपलद्धं ति अधिप्पायो । न हि दिट्ठिगतिको रूपायतनमेव अत्ता ति गण्हातीति । इमिस्सा पवत्तिया ति सामञ्ञेन रूपं अत्ता ति सब्बसङ्गाहकभूताय पवत्तिया । रूपे.....प०.....मानं ति चक्खादीसु तंसभावो अत्ता ति पवत्तमानं अत्तग्गहणं । अन-

इमिस्सा पवत्तिया अभावे पि रूपे अत्तग्गहणं पवत्तमानं अच्चियं वण्णग्गहणं विय। उपमायो च अनञ्ञत्तादिग्गहणनिदस्सनवसेनेव वुत्ता, न वण्णादीनं विय अत्तनो विज्जमानत्तस्स, अत्तनो विय वा वण्णादीनं अविज्जमानत्तस्स दस्सनत्थं।

सरीरनिप्फत्तिया ति सरीरपारिपूरिया। [११९-सी०] निच्छेतुं असक्कोन्तो विचिनन्तो किच्छतीति **विचिकिच्छा**। **इदप्पच्चयानं भावो** ति जाति-आदिसभावमेव आह, जाति-आदीनं वा जरामरणादि-उप्पादनसमत्थतं। सा पन जाति-आदिविनिमुत्ता नत्थीति तेसं येवाधिवचनं होति "इदप्पच्चयता" ति।

इध अनागतकिलेसा "तदेकट्ठा किलेसा" ति वुच्चन्तीति ते दस्सेतुं "**इमिस्सा च पाळिया**" ति आदि आरद्धं। **सहजेकट्ठवसेना** ति तत्थ उप्पन्नदिट्ठिया सहजेकट्ठ-वसेना ति अत्थतो विञ्ञायति। **तंसम्पयुत्तो** ति तेहि संयोजनकिलेसेहि सम्पयुत्तो ति पि अत्थो युज्जति। तथा ते संयोजनकिलेसा समुट्ठानं एतस्सा ति **तंसमुट्ठानं** ति वा। संयोजनरहितेहि **च** पन किलेसेहि सम्पयुत्तानं समुट्ठितानञ्च सब्भावतो किले-सेहेव योजना कता।

संयोजनादीनं विया ति संयोजनतदेकट्ठकिलेसादीनं यथावुत्तानं विय। **तेही** ति दस्सनभावनामग्गेहि। **अभिसङ्खारविञ्ञाणं** [१६४-म०] कुसलाकुसलं, नामरूपञ्च विपाकं ति कत्वा "**कुसलादीनम्पि पहानं अनुञ्ञातं**" ति आह।

ञ्ञत्तादिग्गहणं ति अनञ्ञत्तं अत्तनिय-अत्तनिस्सित-अत्ताधारताग्गहणं। **वण्णादीनं** ति **वण्णरुक्ख**-पुप्फमणीनं। ननु च रुक्खपुप्फमणियो परमत्थतो न विज्जन्ति? सच्चं न विज्जन्ति, तदु-पादानं पन विज्जतीति तं समुदितादिप्पकारं इध रुक्खादिपरियायेन वुत्तं ति रुक्खादिनिदस्सने पि न दोसो छायारुक्खादीनं विय रूपस्स अत्तनो च संसामिभावादिमत्तस्स अधिप्पेतत्ता।

जाति-आदिसभावं ति जातिभवादीनं निब्बत्तिनिब्बत्तनादिसभावं, उप्पादनसमत्थता पच्चयभावो।

सामञ्ञेन "तदेकट्ठा किलेसा" ति[1], परतो "अवसेसो लोभो"[1] ति आदिवचनतो पारि-सेसतो सामत्थियतो वा लब्भमानताय सति पि आगतत्ते सरूपेन पभेदेन वा दिट्ठि-आदयो विय अनागतत्ता लोभादयो "अनागता" ति वुत्ता ति आह [१७८-म०] इध ... प० ... स्सेतुं ति। **अत्थतो विञ्ञायति** लोभादीहि सहजाता हुत्वा दिट्ठिया एव पाळियं वुत्तकिलेस-भावतो। **इति पि अत्थो युज्जति** संयोजनकिलेसानम्पि पटिनिद्देसारहत्ता सम्पयुत्तसमुट्ठान-भावतो च। **संयोजनरहितेही** ति संयोजनभावरहितेहि थिन-उद्धच्च-अहिरिकानोत्तप्पेहि, थिन-अहिरिकानोत्तप्पेहि वा।

---

१. अभि० १ : २३३ धम्मसंगणियं।

हेतू चेवा ति "पहातब्बहेतुका" ति एतस्मिं समासपदे एकदेसेन समासपदत्थं वदति । एत्थ च पुरिमनयेन "इमे धम्मा दस्सनेनपहातब्बहेतुका' ति इमे येव दस्सनेनपहातब्बहेतुका, न इतो अञ्ञे ति अयं नियमो पञ्ञायति, न इमे दस्सनेन-पहातब्बहेतुका येवा ति । तस्मा इमेसं दस्सनेनपहातब्बहेतुकभावो अनियतो विचि-किच्छासहगतमोहस्स अहेतुकत्ता ति पुरिमनयो विवरणीयत्थवा होति। तस्मा पुरिम-नयेन धम्मतो दस्सनेनपहातब्बहेतुके निक्खिपित्वा अत्थतो निक्खिपितुं दुतियनयो वुत्तो।

महग्गता वा इद्धिविधादयो। **अप्पमाणारम्मणा महग्गता** चेतोपरियपुब्बेनिवासाना-गतंसञाणसम्पयुत्ता।

अनन्तरे नियुत्तानि, अनन्तरफलप्पयोजनानि, अनन्तरफलकरणसीलानि वा **आनन्त-रिकानि**। तानि पन पटिपक्खेन अनिवारणीयफलत्ता अन्तरायरहितानीति "**अनन्तरा-येन फलदायकानी**" ति वुत्तं । अनन्तरायानि वा **आनन्तरिकानी** ति निरुत्तिवसेन पदसिद्धि वेदितब्बा । **एकस्मिम्पी** ति **पि**-सद्देन अनेकस्मिम्पि आयूहिते वत्तब्बमेव नत्थीति दस्सेति। न च तेसं अञ्ञमञ्ञपटिबाहकत्तं अत्थि अप्पटिपक्खत्ता, अप्पटि-पक्खता च समानफलत्ता अनुबलप्पदानतो च।

एकदे···प०···वदति अवयवेन पि समुदायो वुच्चतीति। हेतु एतेसं अत्थीति वा **हेतुका**। **अनियतो** ति न अवधारितो। पुरिमपदावधारणवसेन गहेतब्बत्थत्ता **विवरणीयत्थवा**। **अत्थतो निक्खिपितुं** ति "तयो कुसलहेतू अलोभो अदोसो अमोहो ति आदीसु[1] विय पुरिमनयेन दस्सितधम्मे येव हेतुपहातब्बहेतुकभेदतो अत्थदस्सनवसेन निद्दिसितुं ति अत्थो।

अभिञ्ञायुत्तवज्जानं महग्गतानं परित्तारम्मणत्ताभावा "**महग्गता वा इद्धिविधादयो**" ति वुत्तं। अतीतंसञाणस्स कामावचरत्ता "**चेतो···प०···ञाणसम्पयुत्ता**" ति आह।

अनन्तरे नियुत्तानी ति चुति-अनन्तरं फलं अनन्तरं, तस्मिं नियुत्तानि तं एकन्तेन निप्फाद-नतो अनतिक्कमनकानीति अत्थो। वुत्तप्पकारस्स अनन्तरस्स करणं अनन्तरं, तं सीलानीति योजेतब्बं। अनेकेसु आनन्तरियेसु कतेसु किञ्चा पि बलवतो येव पटिसन्धिदानं, न इतरेसं, अत्तना पन कातब्बकिच्चस्स तेनेव कतत्ता तस्स विपाकस्स उपत्थम्भनवसेन पवत्तनतो न इतरानि तेन निवारितफलानि नाम होन्ति, को पन वादो पटिपक्खेसु कुसलेसू ति वुत्तं **पटिपक्खेन अनिवारणीयफलत्ता**" ति।" **अनेकस्मिम्पि···प०···नत्थी**" ति कस्मा वुत्तं, ननु अनेकेसु आनन्तरियेसु कतेसु बलवं येव पटिसन्धिदायकं ति तेन इतरेसं विपाको पटिबाहितो होतीति आह "**न च तेसं** ति आदि। तञ्च तेसं अञ्ञमञ्ञं अप्पटिबाहकत्तं मातिकावण्णनायं वित्थारेन विचारितमेव।

---

१. अभि० १ : २३९ धम्मसंगणियं ।

"नत्थि हेतु नत्थि पच्चयो सत्तानं संकिलेसाया" ति[1] एवमादिको **अहेतुकवादो**। "करोतो खो कारयतो छिन्दतो छेदापयतो...प...करोतो न करीयति पापं ति[2] एवमादिको **अकिरियवादो**। "नत्थि दिन्नं" ति[3] एवमादिको **नत्थिकवादो**। एतेसु पुरिमवादो बन्धमोक्खानं हेतुं पटिसेधेति, दुतियो कम्मं, ततियो विपाकं ति अयमेतेसं विसेसो। **तं ही** ति अहेतुकादिनियतमिच्छादिट्ठि न पन नियतभावं अप्पत्तं।

पच्चयट्ठेना ति मग्गपच्चयसङ्खातेन सम्पयोगविसिट्ठेन पच्चयभावेना ति वेदितब्बं। एत्थ च मग्गङ्गानं ठपनं मग्गपच्चयभावरहिते [१६५-म०] मग्गहेतुके दस्सेतुं, तेन मग्गहेतुके असङ्करतो ववत्थपेति। सचे पन कोचि वदेय्य "एकेकं अङ्गं [१२०-सी०] ठपेत्वा तं-तं-सम्पयुत्तानं मग्गहेतुकभावे पि "मग्गङ्गानि ठपेत्वा" ति इदं वचनं युज्जती" ति। एवं हि सति ततियनये विय इधा पि "ठपेत्वा" ति न वत्तब्बं सिया, वुत्तञ्चेतं, तस्मा वुत्तनयेनेवत्थो वेदितब्बो। मग्गङ्गामग्गङ्गानं हि सम्पयुत्तानं विसेसदस्सनत्थो

अत्थतो आपन्नं अग्गहेत्वा यथारुतवसेनेव पाळिया अत्थं गहेत्वा तेसं वादानं तप्परभावेन पवत्ति सन्धाय अहेतुकवादादीनं [१७९-म०] विसेसं दस्सेतुं "पुरिमवादो" ति आदि वुत्तं। अनिय्यानिकनिय्यानकभेदं पन सम्भारकम्मं बन्धमोक्खहेतू ति बन्धमोक्खहेतु पटिसेधेन्तो पि कम्मं पटिसेधेति। सुमङ्गलविलासिनियं[4] पन विपाकस्स कम्मकिलेससमाधिपञ्ञानं हेतुभावतो विपाको पि बन्धमोक्खहेतू ति "नत्थि हेतू ति" नत्थि वदन्तो उभयं पटिबाहती" ति वुत्तं। तत्थ कम्मं पटिसेधेन्तेन पि विपाको पटिसेधितो होति, विपाकं पटिसेधेन्तेन पि कम्मं ति तयो पि एते वादा अत्थतो उभयपटिसेधका ति वेदितब्बा। नियतमिच्छादिट्ठिं ति अहेतुकवादादि-पटिसंयुत्ते असद्धम्मे उग्गहपरिपुच्छाविनिच्छयपसुतस्स "नत्थि हेतू" ति आदिना रहो निसीदित्वा चिन्तेन्तस्स तस्मिं आरम्मणे मिच्छासति सन्तिट्ठति, चित्तं एकग्गं होति, जवनानि जवन्ति। पठमजवने सतेकिच्छो होति, तथा दुतियादीसु। सत्तमे अतेकिच्छभावं पत्तो नाम होति। या एवं पवत्ता दिट्ठि, तं सन्धाय वुत्तं "नियतमिच्छादिट्ठि" ति। ततो पुरिमभावा अनियता।

सहजात-अञ्ञमञ्ञ-निस्सय-अत्थि-अविगतादिविसिट्ठभावे पि मग्गपच्चयस्स सम्पयोगविसिट्ठता-दीपनेनेव सहजातादिविसिट्ठता पि विञ्ञायतीति पाळियं "सम्पयुत्तो" ति वुत्तं ति "**सम्पयोग-विसिट्ठेना**" ति वुत्तं। मग्ग...प०...दस्सेतुं न पन मग्गङ्गानं अञ्ञमञ्ञं मग्गपच्चयभावाभावतो ति अधिप्पायो। **एवं सती** ति यदि मग्गङ्गानं मग्गपच्चयलाभिताय पकासनो पठमनयो, एवं सन्ते। मग्गङ्गानि पि वेदनादयो विय मग्गहेतुकभावेन वत्तब्बत्ता अमग्गसभावानं अलोभादीनं

---

१. दी० १ : ४७।
२. दी० १ : ४५-४६।
३. दी० १ : ४८, म० २ : ७८; म० ३ : ८६।
४. दी० अट्ठ०-१ : १५०।

अयं नयो ति। **सेसमग्गङ्गानं** पुब्बे ठपितानं ति अधिप्पायो। फस्सादीनं हि पुरिमनये पि मग्गहेतुकता सिद्धा ति।

सम्मादिट्ठिया दुतियनये पि ठपिताय ततियनये सहेतुकभावो दस्सितो। कथं दस्सितो, ननु अरियमग्गसमङ्गिस्स "अलोभो अदोसो इमे धम्मा मग्गहेतू" ति अवत्वा "अलोभो अदोसो अमोहो इमे धम्मा मग्गहेतू" ति[1] विसुं सम्मादिट्ठि-आदिके मग्गहेतू दस्सेत्वा "तंसम्पयुत्तो...प०...विञ्ञाणक्खन्धो" ति[1] विसुं मग्गहेतुकानं दस्सितत्ता "मग्गहेतूसु अमोहो" ति[1] वुत्ताय सम्मादिट्ठिया मग्गहेतुकता न दस्सिता सिया? नो न दस्सिता। यथा हि तीणि संयोजनानि दस्सेत्वा "तदेकट्ठो लोभो दोसो मोहो, इमे धम्मा दस्सनेन पहातब्बहेतू" ति[2] विसुं पहातब्बहेतू नियमेत्वा "तदेकट्ठा च किलेसा" ति आदिवचनेन[2] लोभदोसमोहा च अञ्ञमञ्ञसहजेकट्ठा अञ्ञमञ्ञसम्पयुत्ता सङ्खारक्खन्धभूता च दस्सनेनपहातब्बहेतुका ति दस्सिता होन्ति, एवमिधापि "अलोभादयो इमे धम्मा मग्गहेतू" ति निगमिता पि अञ्ञमञ्ञसम्पयुत्तसङ्खारक्खन्धभावतो तंसम्पयुत्त-सङ्खारक्खन्धवचनेन "मग्गहेतुका" ति दस्सिता एवा ति सिद्धं होति, सम्मादिट्ठिया पि अमोहो ति वुत्ताय मग्गहेतुकभावदस्सनं।

सचे पन यो दुतियनये मग्गो चेव हेतु चा ति वुत्तो, ततो अञ्ञस्सेव अञ्ञेन असाधारणेन परियायेन मग्गहेतुभावं दस्सेत्वा तंसम्पयोगतो सम्मादिट्ठिया मग्गहेतुक-भावदस्सनत्थो ततियनयो सिया। "अरियमग्गसमङ्गिस्स अलोभो अदोसो इमे धम्मा

तदञ्ञेसं तदुभयसभावानं धम्मानं पच्चयभावदीपने ततियनये विय न ठपेतब्बानीति आह "**ठपेत्वा ति न वत्तब्बं सिया**" ति। **पुब्बे** ति पुरिमनये।

दुतियनये पी ति पि-सद्देन पठमनयं सम्पिण्डेति। तेन सम्मादिट्ठिया **पुरिमस्मिं नयद्वये** ठपितत्ता तस्स सहेतुकभावदस्सनो ततियनयो आरद्धो ति दस्सेति। ततियनये सम्मादिट्ठिया सहेतुकभावदस्सनं अनिच्छन्तो चोदको "**कथं दस्सितो**" ति चोदेत्वा "**ननू**" ति आदिना अत्तनो अधिप्पायं विवरति। इतरो "**यथा ही**" ति आदिना दस्सनेन पहातब्बहेतुभावेन वुत्तानम्पि लोभादीनं अञ्ञमञ्ञं सहजेकट्ठसम्पयुत्तसङ्खारक्खन्धपरियापन्नतो दस्सनेन [१८०-म०] पहा-तब्बहेतुकसङ्गहो विय मग्गहेतुभावेन वुत्ताय पि सम्मादिट्ठिया मग्गहेतुकभावो पि युज्जति मग्ग-हेतुसम्पयुत्तसङ्खारक्खन्धपरियापन्नभावतो ति दस्सेति।

ततो अञ्ञस्सेवा ति ततो सम्मादिट्ठिसङ्खातहेतुतो अञ्ञस्स अलोभादोसस्सेव। **अञ्ञेना** ति "मग्गो हेतू" ति इतो अञ्ञेन। अलोभादोसानं येव अधिप्पेतत्ता तेसं येव आवेणिकेन मग्गहेतू

---

१. अभि० १ : २३६ म० सं०। २. अभि० १ : २३४ म० सं०।

मग्गहेतू" ति आदि वत्तब्बं सिया। यस्मा पन "मग्गहेतू" ति इमिना अञ्ञेन साधारणेन परियायेन येसं मग्गहेतुभावो सम्भवति, ते सब्बे "मग्गहेतू" ति दस्सेत्वा [१६६-म०] तंसम्पयुत्तानं तेसं अञ्ञेसञ्च मग्गहेतुकभावदस्सनत्थो ततियनयो, तस्मा तत्थ "अमोहो" ति पि वुत्तं। न हि सो मग्गहेतु न होतीति। इमे पन तयो पि नया अत्थविसेसवसेन निक्खित्तत्ता अत्थतो निक्खेपा दट्ठब्बा। अथ वा सरूपेन वचनं धम्मतो निक्खेपो, अत्थेन अत्थतो ति एवम्पि योजना सम्भवति। तत्थ दुतियततियनया सरूपतो हेतुहेतुमन्तुदस्सनवसेन धम्मतो निक्खेपो। पठमनयो तथा अदस्सनतो अत्थेन च मग्गङ्ग-तं-सम्पयुत्तानं हेतुहेतुमन्तुभावावगमनतो अत्थतो निक्खेपो ति।

यस्मिं सभावधम्मे निन्नपोणपब्भारभावेन चित्तं पवत्तति, सो तस्स आरम्मणाधिपति वेदितब्बो। चेतोपरियञाणेन जानित्वा पच्चवेक्खमानो तेन पच्चवेक्खमानो ति वुत्तो। **एत्था पी** ति एतस्मिम्पि अट्ठकथावचने, एत्थ वा पट्ठाने मग्गादीनि ठपेत्वा अञ्ञेसं [१२१-सी०] अधिपतिपच्चयभावस्स अवचनेनेव पाटिक्खेपपाळियं। **अयमेवत्थो** ति अत्तनो मग्गफलं ठपेत्वा ति अत्थो। **वीमंसाधिपतेय्यं** ति पधानेन अधिपतिना सहजाताधिपति निदस्सितो, तयिदं नयदस्सनमत्तमेव होतीति अञ्ञो पि एवंपकारो सहजातो मग्गाधिपति निदस्सतो होति, तस्मा वीरियाधिपतेय्यं ति च योजेतब्बं। इदम्पि हि अत्थतो वुत्तमेवा ति।

ति इमिना **परियायेन**। **साधारणेन परियायेना** ति तिण्णम्पि हेतूनं अधिप्पेतत्ता मग्गामग्गसभावानं साधारणेन मग्गहेतुमग्गहेतू ति इमिना परियायेन। **तेसं** ति हेतूनं। **अञ्ञेसं** ति हेतुसम्पयुत्तानं। **अत्थविसेसवसेना** ति "मग्गहेतुका" ति पाळिया अत्थविसेसवसेन। अहेन अलोभादोसामोहेहि च सेसधम्मानं सहेतुकभावदस्सनवसेन पवत्ता दुतियततियनया "**सरूपतो हेतुहेतुमन्तदस्सनं**" ति वुत्ता। **तथा अदस्सनतो** ति सरूपेन अदस्सनतो। **अत्थेन**"' प०''''**गमनतो** ति "मग्गङ्गानि ठपेत्वा तं-सम्पयुत्तो" ति[1] वचनतो मग्गसभावानं धम्मानं मग्गपच्चयतासङ्खातो सम्पयुत्तानं हेतुभावो सरूपतो दस्सितो। मग्गहेतुभूताय पन सम्मादिट्ठिया सम्पयुत्तानं हेतुहेतुभावो अत्थतो ञापितो होतीति अत्थो।

असभावधम्मो गरुकातब्बो न होतीति "**सभावधम्मो**" ति वुत्तं। तेनेव **पट्ठानवण्णनायं**[2] "आरम्मणाधिपति जातिभेदतो कुसलाकुसलविपाककिरियरूपनिब्बानवसेन छब्बिधो" ति वक्खति। **मग्गादीनि ठपेत्वा** ति मग्गादीनि पहाय। **अञ्ञेसं** ति मग्गादितो अञ्ञेसं। **अधि**'''प०'''' **वस्सा** ति आरम्मणाधिपतिपच्चयभावस्स। पञ्ञुत्तरत्ता कुसलानं लोकुत्तरकथाय च पञ्ञाधुरत्ता वीमंसाधिपतिस्स सेसाधिपतीनं पधानता वेदितब्बा।

---

१. अभि० १ : २३६ म० सं०। २. अभि-अट्ठ० ३ : ३६१

अत्तनो सभावो **अत्तभावो**। लद्धोकासस्स कम्मस्स विपाको कप्पसहस्सातिक्कमे उप्पज्जति अनेककप्पसहस्सायुकानं सत्तानं, कप्पसहस्सातिक्कमे पि वा लद्धोकासं यं भविस्सति, तदपि लद्धोकासमेवा ति अत्तनो विपाकं सन्धाय वुच्चति। **नत्थि नाम न होती** ति अनुप्पन्नो नाम न होतीति अधिप्पायो। उप्पादीसु[1] अन्तोगधत्ता "उप्पादिनो धम्मा" ति एतेन वचनेन वुच्चतीति कत्वा आह **उप्पादिनो धम्मा नाम जातो**" ति। **अरूपसङ्खातो अत्ता** ति अरूपभवङ्गं आह। तत्थ आकासानञ्चायतनसञ्ञादिमयो अत्ता ति हि अत्थतो वोहारो पवत्तो ति।

यदि पन आयू"..."प०"..."सब्बं विपाकं ददेय्य, अलद्धोकासञ्च विपाकं देतीति कत्वा विपक्कविपाकञ्च ददेय्य, ततो एकस्सेव कम्मस्स सब्बविपाकेन भवितब्बं ति अञ्ञस्स कम्मस्स ओकासो न भवेय्य [१६७-म०] निरत्थकत्ता, उप्पत्तिया येव ओकासो न भवेय्य, उप्पन्नस्स वा फलदाने। अथ वा अलद्धोकासस्स विपाकदाने पच्चयन्तररहितस्स पि विपाकदानं आपन्नं ति अविज्जातण्हादिपच्चयन्तरखेपकस्स अञ्ञस्स अपचयगामिकम्मस्स कम्मक्खयकरस्स ओकासो न भवेय्य। भाविते पि मग्गे अविज्जादिपच्चयन्तररहितस्स च कम्मस्स विपच्चनतो समत्थता न सिया ति अत्थो। सब्बदा वा विपाकप्पवत्तिया एव भवितब्बत्ता विपाकतो अञ्ञस्स पवत्ति-ओकासो न भवेय्य।

पदेससत्तविसयत्ता पठमविकप्पस्स सकलसत्तवसेन दस्सेतुं **कप्पसहस्सातिक्कमे पि वा"** ति आदि वुत्तं। **लद्धोकासं यं भविस्सती** ति लद्धोकासं यं कम्मं पापुणिस्सति। **कप्पसहस्सातिक्कमें अवस्सं** उप्पज्जनविपाकत्ता **तदपि"...प० वुच्चती** ति अलद्धत्तलाभताय [१८१-म०] उप्पादादिक्खणं अप्पत्तस्स विपाकस्स **अनुप्पन्नभावो नत्थिभावो पाकटभावाभावतो** ति वुत्तं **नत्थि नाम न होतीति अनुप्पन्नो नाम न होती"** ति। **तत्था** ति **अरूपभवङ्गे**।

अविपक्कविपाकं कम्मं सहकारीकारणसमवायालाभेन अकतोकासं विपाकाभिमुखभावाभावतो विपक्कविपाककम्मसरिक्खकं ति वुत्तं "**अलद्धो"...प०..."देय्या**" ति। किच्चनिप्फत्तिया असति उप्पन्नम्पि कम्मं अनुप्पन्नसमानं ति "**ओकासो न भवेय्या**" ति एतस्स समत्थता न सिया ति अत्थमाह। तेन अपचयगामिकम्मकिच्चस्स ओकासाभावो दस्सितो। **पुब्बे** निरत्थकत्ता उप्पत्तिया ओकासो न भवेय्या ति पयोजनाभावतो कम्मुप्पत्तिया ओकासाभावो **वुत्तो**। "**विपाकतो अञ्ञस्स पवत्ति-ओकासो न भवेय्या**" ति इमिना असम्भवतो ति अयमेतेसं विसेसो। **धुवविपाकस्स** कम्मस्स विपाकेन निदस्सनमत्तभूतेना ति अधिप्पायो। **अरियमग्ग-आनन्तरियकम्मानं** विय महग्गतकम्मानं नियतसभावताभावा अट्ठसमापत्तीनं "**बलवविरहे**" ति आदिना

---

1. उप्पादादीसु-सी०।

तं पना ति आयूहितं कम्मं। इदं पन धुवविपाकस्स विपाकेन अधुवविपाकस्स पि लद्धोकासस्स विपाकं उप्पादीति दस्सेतुं आरद्धं ति दट्ठब्बं। अट्ठ समापत्तियो च बलवविरहे अग्गमग्गभावनाविरहे च अप्पहीनसभावतो धुवं विपच्चन्तीति **धुवविपाका** ति वुत्ता। आयूहितकम्मे वुच्चमाने अनुप्पन्नं कस्मा वुत्तं ति? यं आयूहितं भविस्सति, तत्था पि आयूहित-सद्दप्पवत्तिसब्भावा।

उपादिन्ना ति एत्थ न उपेतेन आदिन्ना ति अयमत्थो, उपसद्दो पन उपसग्गमत्तमेव, तस्मा उपादानारम्मणा उपादानेहि, अञ्ञे च अनभिनिवेसेन "अहं मग्गं भावयि,[1] मम मग्गो उप्पन्नो" ति आदिकेन गहणेन आदिन्ना इच्चेव उपादिन्ना। **उपादिन्नसद्देन** वा अमग्गफलधम्मा येव वुत्ता, इतरेहि मग्गफलधम्मा चा ति वेदितब्बं।

तिकनिक्खेपकथावण्णना निट्ठिता॥

दुकनिक्खेपकथावण्णना

मेत्तायनवसेना ति मेत्ताफरणवसेन। "मेत्तयनवसेना" ति वत्तब्बे दीघं कत्वा वुत्तं ति दट्ठब्बं। मेत्ता, मेदनं वा मेत्तायनं, तञ्च सिनेहवसेन। अनुदयतीति अनुदा ति वत्तब्बे "अनुद्दा" ति दकारागमनं कत्वा वुत्तं। [१२२-सी०] **अनुद्दायनाकारो** ति

सविसेसनधुवविपाकता वुत्ता। एत्थ च "पञ्च आनन्तरियकम्मानी" ति निदस्सनमत्तं दट्ठब्बं नियमिच्छादिट्ठिया पि धुवविपाकत्ता। यस्स कम्मस्स कतत्ता यो विपाको नियोगतो उप्पज्जिस्सति, सो तस्स अनागतकाले पि उप्पादिवोहारं लभति। सो च उप्पादिवोहारो आयूहितकम्मवसेन वुच्चमानो भाविना आयूहितभावेन मग्गो अनुप्पन्नो ति एत्थ वुत्तो ति दस्सेतुं **"यं आयूहितं भविस्सती"** ति आदि वुत्तं।

उपादानेहि आदिन्ना ति सम्बन्धो। अञ्ञे ति उपादानारम्मणेहि अञ्ञे अनुपादानिया ति अत्थो। **आदिकेन गहणेना** ति "अहं फलं सच्छाकासिं" ति एवं पच्चवेक्खणञाणसङ्खातेन गहणेन। इदानि उपेतत्थदीपकस्स उप-सद्दस्स वसेन उपादिन्न-सद्दस्स अत्थं वत्तुं **"उपादिन्नसद्देन वा"** ति आदि वुत्तं। तत्थ निब्बानस्स अनज्झत्तभावतो **"अमग्गफलधम्मा येव वुत्ता"** ति आह। **इतरेही** ति अज्झत्तपदादीहि।

तिकनिक्खेपकथावण्णना निट्ठिता।

दुकनिक्खेपकथावण्णना

[१८२–म०] मेत्ताय अयनं उपगमनं मेत्तायनं, तञ्च अत्तनो सन्ताने मेत्ताय लाभो

---

१. भावयि–सी०।

अनुरक्खणाकारो। रक्खणं हि दायना। अनुद्दायितस्सा ति अनुद्दाय अयितस्स। "जाति पि दुक्खा" ति आदिं सुणन्तस्स सवने, अनिच्चादितो सम्मसन्तस्स सम्मसने, मग्गेनेत्थ सम्मोहं विद्धंसेन्तस्स पटिवेधे, पटिविज्झित्वा पच्चवेक्खन्तस्स पच्चवेक्खणे ति चतूसु कालेसु दुक्खे ञाणं वत्तति।

[१६८–म०] चित्तस्स संरञ्जनं **चित्तस्स सारागो**। **गिज्झन्ती** ति अभिकङ्खन्ति। **सज्जन्ती** ति बन्धन्ति। **लग्गनट्ठेना** ति संवरणट्ठेन, ओलम्बनट्ठेन वा। **तस्स तस्सेव भवस्सा** ति कामभवादिसङ्खातस्स विपाककटत्तारूपस्स अभिनिब्बत्ति-अत्थं पटिसन्धिया पच्चयभाववसेन परिकड्ढति। **चित्तमस्स** भवन्तरे **विधावति** निब्बत्तति। **तण्हाविप्फन्दितनिवेसो** अट्ठसततण्हाविचरितादिभावेन तण्हापवत्ति येव।

सरितानी ति रागवसेन अल्लानि। तंसम्पयुत्तपीतिवसेन सिनिद्धानि **सिनेहितानि**। **विसता** ति वित्थता। रूपादीसु तेभूमकधम्मेसु ब्यापनवसेन **विसटा**। पुरिमवचनमेव त-कारस्स ट-कारं कत्वा वुत्तं। **विसाला** ति विपुला। **विसक्कती** ति परिसप्पति, सहति वा। रत्तो हि रागवत्थुना पादेन तालियमानो पि सहतीति। ओसक्कनं, विप्फन्दनं वा विसक्कनं ति वदन्ति। अनिच्चादिं निच्चादितो गण्हन्ती **विसंवादिका** होति। **विसंहरती** ति तथा तथा कामेसु आनिसंसं पस्सन्ती विविधेहाकारेहि नेक्खम्माभिमुखप्पवत्तितो चित्तं संहरति सङ्खिपति। **विसं** वा दुक्खं, तं **हरति** वहतीति अत्थो। दुक्खनिब्बत्तकस्स कम्मस्स हेतुभावतो **विसमूला,** विसं वा दुक्खवेदनामूलं एतिस्सा ति **विसमूला**। दुक्खसमुदयत्ता विसं फलं एतिस्सा ति **विसफला**। तण्हाय रूपादिकस्स दुक्खस्सेव परिभोगो होति, न अमतस्सा ति सा **"विसपरिभोगा"** ति वुत्ता। सब्बत्थ निरुत्तिवसेन पदसिद्धि वेदितब्बा। यो पनेत्थ पधानो अत्थो, तं दस्सेतुं पुन **"विसता वा पना"** ति आदि वुत्तं। **इत्थभावञ्ञथाभावं** ति मनुस्सभावदेवादिभावभूतं।

उप्पादनं सत्तानं अनुपगमो अत्थतो मज्जनमेवा ति "मेत्ता, मेदनं" ति वत्वा "सिनेहनं" ति आह।

तस्मिं तस्मिं विसये चित्तं संरञ्जतीति **चित्तस्स संरञ्जनं**। **तण्हाविचरितादी** ति आदिसद्देन एसनादयो सङ्गहिता। तण्हाय विपुलता विसयवसेन पवत्तिवसेन वा वेदितब्बा।

अनिच्चादिसभावस्स रूपादिकस्स निच्चादितो गहणं अभिनिवेसो विसेसतो तण्हावसेन होति तण्हारहिताय दिट्ठिया अभावा ति उपचारवसेन निमित्तस्स कत्तुभावमाह **"निच्चादितो गण्हन्ती विसंवादिका होती"** ति। पाकटेन सद्देन लब्भमानत्ता यथारुतविञ्ञायमानत्ता च **विसत्तिका-सद्दस्स** विसतसभावो **"पधानो अत्थो"** ति वुत्तो।

पणिधानकवसेना ति चित्तस्स रूपादीसु ठपनकवसेन। अञ्ञो पि बन्धु तण्हाय एव होति, सो पन अबन्धु पि होति। तण्हा पन निच्चसन्निस्सिता ति "पाटियेक्को बन्धू" ति वुत्ता। **असनतो** ति ब्यापनतो भुञ्जनतो च। तदुभयं दस्सेति "अज्झोत्थरणतो" ति आदिना। **आसीसनवसेना** ति[1] इच्छनवसेन। **अञ्ञेनाकारेना** ति जप्पनाजप्पितत्तानं जप्पाय अनञ्ञत्तदस्सनाकारेन। **चित्तं परियुट्ठाती** ति चित्तं मूसति[2]। **मारपासो** ति मारेन गहितताय रागो मारपासो।

सङ्खारेसु उप्पन्नो कम्मपथभेदं न करोती ति एतेन सत्तेसु उप्पन्नो अट्ठानकोपो करोतीति विञ्ञायति। **"अत्थं मे** [१६९-म०] नाचरि, न चरति, न चरिस्सति, पियस्स मे मनापस्स अत्थं नाचरि, न चरति, न चरिस्सति, अप्पियस्स मे अमनापस्स अनत्थं नाचरि, न चरति, न चरिस्सती" ति उप्पज्जमानो पि हि कोपो अवत्थुस्मि उप्पन्नत्ता अट्ठानकोपो एव भवितुं युत्तो। **आघातेन्तो** ति हनन्तो। **पुनरुत्तिदोसो पटिसेधितो** ति दोस-पदस्स पटिविरोध-पदस्स च द्विक्खत्तुं आगतत्ता वुत्तं। पटिघस्स वा विसेसनत्थं पुब्बे "पटिविरोधो" ति, पदोसादिविसेसनत्थं "दोसो" ति च वुत्तं, दुस्सनादिविसेसनत्थं पच्छा [१२३-सी०] "दोसो" ति, विरोधविसेसनत्थञ्च "पटिविरोधो" ति वुत्तं ति नत्थि पुनरुत्तिदोसो।

अनिद्धारितपरिच्छेदे धम्मानं अत्थितामत्तदीपके मातिकुद्देसे अपरिच्छेदेन बहुवचनेन उद्देसो कतो ति बहुवचनेनेव पुच्छति "कतमे धम्मा अप्पच्चया" ति। सभावसङ्खापरिच्छे-

---

"अन्तलिक्खचरो पासो, य्वायं चरति मानसो। तेन तं बाधयिस्सामी" ति आदिवसेन[3] मारेन गहितताय।

अनत्थचरणादि-अनभिसन्धानकताय अट्ठानभूतेसु च वस्सवातादिसङ्खारेसु उप्पन्नकोपो विय सत्तेसु अत्थाचरणादिना आरोपनाधिप्पायेसु येव तदज्झारोपनवसेन पवत्तो यदि पि अनायतनुप्पत्तिया अट्ठानाघातो येव होति, सत्तविसयत्ता पन सति चित्तस्स एकन्तब्यापत्तियं कम्मपथभेदो होति येवा ति सक्का विञ्ञातुं, अट्ठानुप्पत्तियं पनस्स न सिया कम्मपथभेदो ति आह "सत्तेसु उप्पन्नो अट्ठानकोपो करोती" ति। पटिघादिपदानं घट्टनापुरिमयामविकारुप्पत्ति समञ्ञादीसु पि दस्सनतो "पटिविरोधादिपदानि तेसं विसेसनत्थानी" ति वुत्तं।

द्वे धम्मा तयो धम्मा ति सद्दन्तरसन्निधानेन परिच्छेदवतो बहुवचनस्स दस्सनतो "अपरिच्छेदेन बहुवचनेना" ति वुत्तं। उद्देसो कतो ति इति-सद्दो हेतु-अत्थो। तेन बहुवचनेन

---

१. आसिंसन०-सी०। २. मुसति-सी०।
३. सं० १ : १११, वि० ३ : २८।

दादिवसेन हि धम्मे अजानन्तस्स वसेन उद्देसो पुच्छा च करीयतीति। तस्मा परिच्छेदं अकत्वा उद्दिट्ठा पुच्छिता च। **इमे** ति असङ्खतधातुतो उद्धं नत्थीति दीपनत्थं एकम्पि तं निद्दिसित्वा बहुवचनेनेव निगमनं कतं निद्देसतो पुब्बे बोधनेय्यस्स अजाननकालं उपादाय।

किं पन नत्थि, किं तेन न वुत्ता ति योजना कातब्बा। इदमेव मनोविञ्ञेय्यं ति नियमाभावो **ववत्थानाभावो**। चक्खुविञ्ञाणादिविञ्ञेय्यमेव चक्खादिविञ्ञेय्यं ति पाळियं वुत्तं ति मनोविञ्ञाणविञ्ञेय्येन पि भवितब्बं ति कत्वा अट्ठकथाय **"किं पन मनोविञ्ञाणेना"** ति आदि वुत्तं। **केहिचि विञ्ञेय्या केहिचि अविञ्ञेय्या** ति इदं कामावचरं मनोविञ्ञाणं आरम्मणादिवसेन भिन्दित्वा योजेतब्बं। रूपावचरादि-आरम्मणेन हि कामावचरमनोविञ्ञाणेन रूपरागादिसम्पयुत्तेन च कामावचरधम्मा न विञ्ञेय्या, इतरेन च विञ्ञेय्या। एवं कामावचरानमेव आरम्मणानं केसञ्चि सद्दादीनं रूपारम्म-

---

उद्देसकरणं बहुवचनेन पुच्छाय कारणं ति दीपेति। उद्देसानुविधायिनी हि पुच्छा ति। तथा हि सङ्खारपरिच्छिन्ने उद्देसे "कतमे वा तयो" ति सङ्खापरिच्छिन्ना व [१८३-म०] पुच्छा करीयतीति। उद्देसेन धम्मानं अत्थितामत्तवचनिच्छायं सभावभूमिकारणफलादिपरिच्छेदो विय सङ्खापरिच्छेदो पि न कातब्बो ति अधिप्पायेन "अनिद्धारितपरिच्छेदे" ति आदि वुत्तं। "अपच्चया धम्मा" ति पदतो पन हेट्ठा अनेकभेदभिन्ना धम्मा अप्परिच्छेदेन बहुवचनेनेव उद्दिट्ठा, उद्धञ्च तथा उद्दिसीयन्तीति तं सोतपतितताय भेदाभावे पि परमत्थतो अप्पच्चयधम्मस्स असङ्खतधम्मस्स च सोपादिसेसनिरुपादिसेसरागक्खयादि-असङ्खतादिवचनवचनीयभावेन उपचरितभेदे गहिते पदद्वयेन अत्थि काचि भेदमत्ता ति **अपरिच्छेदेन बहुवचनेन उद्देसो कतो** ति युत्तं सिया। उद्देसानुसारीनि **पुच्छानिगमनानीति** तानि पि तथा पवत्तानि। **निद्देसो पन यथाधिप्पेत-सभावादिपरिच्छेदविभावनवसेनेव कातब्बो** ति **असङ्खता धातु इच्चेव कतो परमत्थतो भेदाभावदीपनत्थं** ति दट्ठब्बं। **कथेतुकामतावसेन पुच्छन्तो** यस्स कथेति, तेन कातब्बपुच्छाय करणतो तग्गतं अजाननं संसयं वा अनुविधाय येव पुच्छतीति **"सभावा…प०…अजानन्तस्स वसेन पुच्छा करीयती"** ति वुत्तं। **निद्देसतो पुब्बे** ति आदिना अट्ठकथायं वुत्तं पुच्छानुसन्धि **येव विभावेति**।

भिन्दित्वा ति विभजित्वा। **रूपाव…प०…विञ्ञेय्या** ति **कामावचरकुसलमहाकिरिय-विञ्ञाणेन** महग्गतधम्मानं सम्मसनवसेन यथायोगं महग्गतप्पमाणधम्मानं पच्चवेक्खणादिवसेन रूपरागारूपरागसम्पयुत्तेन अकुसलमनोविञ्ञाणेन महग्गतधम्मानं **अभिनिवेसन-अस्सादनवसेन** तंतंपञ्ञत्तियञ्च तंतंवोहारवसेन पवत्तेन आवज्जनेन च यथावुत्तविञ्ञाणानं पुरेचारिकेन काम-**वचरधम्मा** न विञ्ञेय्या। **इतरेना** ति परित्तारम्मणेन। **कामावचरानमेव आरम्मणानं** ति

णादीहि अविञ्ञेय्यता विञ्ञेय्यता च योजेतब्बा, तथा द्वारभेदवसेन। अथ वा सोमनस्ससहगतसन्तीरणं इट्ठारम्मणमेवा ति इतरं तेन न विञ्ञेय्यं। एवं उपेक्खासहगते कुसलविपाके अकुसलविपाके चा ति सब्बत्थ यथायोगं योजेतब्बं। रूपावचरादयो कामावचरविपाकादीहि अविञ्ञेय्या, केचिदेव [१७०-म०] विञ्ञेय्या अरूपावचरेहीति योजेतब्बं अनुवत्तमानत्ता। **निब्बानेन अविञ्ञेय्यत्ता** ति "केहिचि अविञ्ञेय्या" ति इमस्स पदस्स अत्थसम्भवमत्तं सन्धाय वुत्तं, न निब्बानस्स अनुवत्तमानमनोविञ्ञाण-भावतो।

पञ्चकामगुणिकरागो ति उक्कट्ठवसेन वुत्तं। भवासवं ठपेत्वा सब्बो लोभो कामासवो ति वुत्तं सिया। सस्सतदिट्ठिसहगतो रागो भवदिट्ठिसम्पयुत्तत्ता "भवासवो" ति

निद्धारणे सामिवचनं। रूपारूपारम्मणादीहि विञ्ञाणेहि तत्थ रूपारम्मणेन विञ्ञाणेन पि सद्दादीनं अविञ्ञेय्यता रूपस्स च विञ्ञेय्यता। एवं सेसेसु पि योजना दट्ठब्बा। चक्खुद्वारिकेन सद्दादीनं अविञ्ञेय्यता रूपस्स विञ्ञेय्यता ति आदिना द्वारभेदवसेन योजेतब्बं। **इतरं** ति इट्ठमज्झत्तं अनिट्ठमनिट्ठमज्झत्तञ्च। **रूपावचरादयो कामावचरविपाकादीही** ति रूपावचरारूपा-वचरलोकुत्तरपञ्ञत्तियो कामावचरविपाकेहि लोकुत्तरा कामावचरतो ञाणविप्पयुत्तकुसलकिरियेहि अकुसलेहि च अविञ्ञेय्या ति योजेतब्बं। निब्बानस्स अविजाननसभावो एव अत्तसम्भवो।

[१८४-म०] रूपारूपावचरकम्मूपपत्तिभवे दिट्ठिरहितो लोभो भवासवो ति यथावुत्तविसयो दिट्ठिसहितो सब्बकामावचरधम्मविसयो च लोभो कामासवो भवितुं युत्तो ति वुत्तं "**भवासवं**.... प०....**सिया**" ति। कामासवभवासवविनिमुत्तस्स हि लोभस्स अभावं सयमेव वक्खतीति। **पाळिय** ति अट्ठकथाकण्डपाळियं। तत्थ यथा "कामासवो अट्ठसु लोभसहगतचित्तुप्पादेसु उप्पज्जती" ति वुत्तं, एवं "भवासवो अट्ठसु लोभसहगतचित्तुप्पादेसु उप्पज्जती" ति अवत्वा "चतूसु दिट्ठिगतविप्पयुत्तलोभसहगतचित्तुप्पादेसु उप्पज्जती" ति[1] वुत्तत्ता "भवासवो....प०....युत्तेसु एव उप्पज्जती" ति पाळियं वुत्तो ति सावधारणं वुत्तं। तथा च वक्खति "भवासवो चतूसु दिट्ठिगतविप्पयुत्तेसु अविज्जासवेन सद्धिं एकधा व एकतो उप्पज्जती" ति[2]। **सो पि रागो** ति सस्सतदिट्ठिसहगतो रागो। कामभवपत्थना विय कामासवो ति युत्तं वत्तुं। सस्सत-दिट्ठिसहगतरागकामभवपत्थनानम्पि हि भवासवो ति वत्तब्बपरियायो अत्थी ति "सस्सतदिट्ठि-सहगतो रागो भवरागवसेन पत्थना भवासवो नामा" ति वुत्तं, न तेसं इध अधिप्पेत-भवासवभावदस्सनत्थं ति अट्ठकथायं अधिप्पायो दट्ठब्बो। तथा हि "रूपारूपसङ्खाते कम्मतो च उपपत्तितो च दुविधे पि भवे आसवो भवासवो" ति वुत्तं ति। तत्थ कामभवपत्थनाय ताव कामासवभावो होतु, रूपारूपभवेसु सस्सताभिनिवेससहगतरागस्स कथं ति? सो पि

---

१. अभि० १ : ३०८ धम्मसंगणियं। २. अट्ठ० ३३५।

अट्ठकथायं वुत्तो। भवासवो पन "दिट्ठिगतविप्पयुत्तेसु एव उप्पज्जती" ति पाळियं वुत्तो। सो पि रागो कामासवो भवितुं युत्तो। दिट्ठधम्मिकसम्परायिकदुक्खानं कारण-भूता कामासवादयो पि द्विधा वुत्ता।

कामासवनिद्देसे च **कामेसू** ति कामरागदिट्ठिरागादि-आरम्मणभूतेसु तेभूमकेसु वत्थुकामेसू ति अत्थो सम्भवति। तत्थ हि उप्पज्जमाना सा तण्हा सब्बा पि न कामच्छन्दादिनामं न लभतीति। कत्तुकम्यताछन्दो अकुसले पि उप्पज्जति, न पन धम्मच्छन्दो।

अञ्ञं जीवं ति गहणं यदि पि उपादानक्खन्धेस्वेव पवत्तति, रूपे...प... विञ्ञाणे वा पन न पतिट्ठाति। ततो अञ्ञं कत्वा जीवं गण्हातीति **सस्सतदिट्ठि** होतीति। ब्रह्मादिं एकच्चं अत्तानं "होती" ति निच्चतो अञ्ञञ्च "न होती" ति अनिच्चतो गण्हन्तस्स "होती च न च होती" ति **एकच्चसस्सतदिट्ठि**। "होती" ति च पुट्ठे "नेवा" ति "न होती" ति च पुट्ठे "न" इति [१२४-सी०] सब्बत्थ पटिक्खिपन्तस्स **अमरा-विक्खेपदिट्ठि**, अमरा अनुपच्छेदा अमरमच्छसदिसी वा विक्खेपदिट्ठीति अत्थो।

पञ्चकामगुणिको रागो कामासवो ति वुत्तो ति कत्वा ब्रम्हानं विमानादीसु रागस्स दिट्ठिरागस्स च कामासवभावं पटिक्खिपति। यदि पन लोभो कामासवभवासवविनिमुत्तो

यथावुत्तविसये कामनवसेन पवत्तितो कामासवो येव नाम। सब्बे पि हि तेभूमका धम्मा कमनीयट्ठेन कामा ति। न चेत्थ अनिट्ठप्पसङ्गो दिट्ठिविप्पयुत्तलोभस्स भवासवभावेन विसुं उद्धटत्ता। अवस्सं चेतमेवं विञ्ञातब्बं, इतरथा रूपारूपभवेसु उच्छेददिट्ठिसहगतस्स पि लोभस्स भवासवभावो आपज्जेय्या ति। कामासवादयो एव दिट्ठधम्मिक-सम्परायिकासवभावेन द्विधा वुत्ता।

इध पाळिया पि भवासवविनिमुत्तलोभस्स कामासवभावो न न सक्का योजेतुं ति दस्सेतुं "कामासवनिद्देसे चा" ति आदि वुत्तं। "धम्मच्छन्दो सद्धा" ति केचि।

[१८५-म०] उपादानक्खन्धेस्वेव पवत्तति तब्बिनिमुत्तस्स धम्मस्स जीवग्गहणविसयस्स परमत्थतो अभावा। रूपे...प०...विञ्ञाणे वा पन न पतिट्ठाति रूपादीनं अविपरीतसभावमत्तो अट्ठत्वा सयं समारोपितस्स तेसु परिकप्पनामत्तसिद्धस्स कस्सचि आकारस्स अभिनिवेसनतो। तेनेवाह "ततो अञ्ञं कत्वा" ति। ततो उपादानक्खन्धतो। वेदनादयो पि हि केचि दिट्ठिगतिका अनिच्चा ति पस्सन्तीति। ततो ति वा सरीरसङ्खातरूपक्खन्धतो। "अञ्ञं जीवं अञ्ञं सरीरं" ति हि वुत्तं। होती ति भवति सस्सतं अत्ता ति अत्थो। अञ्ञं ति ब्रह्मा-इस्सरादितो अञ्ञं।

अरूपभवो विय रूपरागप्पहानेन रूपभवो कामरागप्पहानेन पत्तब्बो। रूपीब्रह्मानञ्च पञ्चकामगुणिको रागो पहीयति, न विमानादीसु रागो ति सो अकामरागो ति कत्वा कामासवो

अत्थि, सो यदा दिट्ठिगतविप्पयुत्तेसु उप्पज्जति, तदा तेन सम्पयुत्तो अविज्जासवो आसवविप्पयुत्तो ति दोमनस्सविचिकिच्छुद्धच्चसम्पयुत्तस्स विय तस्स पि आसवविप्पयुत्तता वत्तब्बा सिया "चतूसु दिट्ठिगतप्पियुत्तेसु लोभसहगतेसु चितुप्पादेसु उप्पन्नो मोहो सिया आसवसम्पयुत्तो सिया आसवविप्पयुत्तो" ति। "कामासवो अट्ठसु लोभसहगतेसु चित्तुप्पादेसु उप्पज्जती" ति, "कामासवं पटिच्च दिट्ठासवो [१७१-म०] अविज्जासवो" ति[1] च वचनतो दिट्ठिसहगतो रागो कामासवो न होतीति न सक्का वत्तुं। **किलेसपटिपाटिया** पि आहरितुं वट्टतीति आसवानं वचनं पहातब्बदस्सनत्थं ति कत्वा ते पहाने[2] आहरियमाना पहातब्बानम्पि तेसं किलेसानं उद्देसक्कमेन आहरितुं वट्टन्ति पजहनकानं मग्गानम्पीति अत्थो।

पठमकमानभाजनीये ति "सेय्योहमस्मी" ति मानस्स निद्देसे। तत्थ हि "एकच्चो जातिया वा गोत्तेन वा कोलपुत्तियेन वा वण्णपोक्खरताय वा धनेन वा अज्झेनेन[3] वा कम्मायतनेन वा सिप्पायतनेन वा विज्जाट्ठानेन वा सुतेन वा पटिभानेन वा अञ्ञतरञ्ञतरेन वा वत्थुना मानं जप्पेति, यो एवरूपो मानो मञ्ञना···प०··· केतुकम्यता चित्तस्सा" ति[4] सेय्यस्स सदिसस्स हीनस्स च पवत्तमानो पुग्गलविसेसं अनामसित्वा सेय्यमानो विभत्तो ति इदमत्थं सन्धाय **"एको मानो तिण्णं जनानं उप्पज्जतीति कथितो"** ति आह। न केवलञ्चायं पठमकमानभाजनीये एव एवं कथितो, दुतियकततियकमानभाजनीये पि कथितो एवा ति निदस्सनमत्थं एतं दट्ठब्बं। अथ वा पुग्गले अनिस्साय वुत्तानं तिण्णम्पि मानानं भाजनीयं **"पठमकमानभाजनीये"** ति आह। सेय्यस्स "सेय्योहमस्मीति मानो" ति आदीनं हि पुग्गलं आमसित्वा वुत्तानं

न होतीति अट्ठकथायं पटिक्खित्तं। टीकाकारेहि पन कामासवभवासवविनिमुत्तलोभाभावदस्सनेन रूपीब्रम्हानं विमानादिरागस्स पि कामच्छन्दादिभावतो दिट्ठिविप्पयुत्तारूपारूपभवरागविनिमुत्तो सब्बो लोभो कामासवो ति दस्सितो। तत्थ युत्तं विचारेत्वा गहेतब्बं। सिया आसवसम्पयुत्तो कामरागेन भवरागेन वा सहुप्पत्तियं, सिया आसवविप्पयुत्तो तदञ्ञरागेन सहुप्पत्तियं "चतूसु दिट्ठिगता" ति आदिपाळिया अभावदस्सनेन कामासवभवासवविनिमुत्तलोभाभावं दस्सेत्वा "कामासवो" ति आदि पाळिदस्सनेन दिट्ठिरागस्स कामासवभावं साधेति। **पहातब्बदस्सनत्थं** ति पहातब्बतादस्सनत्थं। **पहाने** ति पहाननिमित्तं।

जातिया ति खत्तियसभावादिजातिसम्पत्तिया। **गोत्तेना** ति गोतमगोत्तादि-उक्कट्ठगोत्तेन। **कोलपुत्तियेना** ति महाकुलभावेन। **वण्णपोक्खरताया** ति वण्णसम्पन्नसरीरताय। "पोक्खरं" ति

१. अभि० १० : १५४। २. पहाणा-सी०।
३. अज्झानेन-सी०। ४. अभि० २ : ४२० विभंगे।

नवन्नं मानानं भाजनीयं दुतियकमानभाजनीयं होति, तस्स मानरासिस्स पुग्गलं अनामसित्वा वुत्तमानरासितो दुतियततियकत्ता ति, अथापि च यथावुत्ते दुतियकमानभाजनीये "एकेकस्स तयो तयो माना उप्पज्जन्तीति कथितं" ति इध वुत्ताय अत्थवण्णनाय समानदस्सनत्थ **"पठमकमानभाजनीये"** ति वुत्तं। सो एव मानो इधागतो ति तत्थ कथितो एव अत्थो युज्जतीति अधिप्पायो। **मानकरणवसेना** ति "सेय्यो" ति आदिकिच्चकरणवसेन। **अपरापरे उपादाया** ति इदं पुरिमपुरिमा माना अपरापरे उपनिस्सयभावेन ते उप्पादेन्ता अच्चुग्गच्छन्तीति इममत्थं सन्धाय वुत्तं। केतुकम्यताचित्तं अच्चुग्गतभावं गच्छतीति कत्वा चित्तेनेव विसेसितं।

अक्खमनभावप्पकासनं[1] **खिय्यनं**। **मनेन पियकरणं** ति एवंपकारं पूजनं माननं ति वुच्चतीति अत्थो। [१२५-सी०] **इस्साकरणवसेना** ति लाभादि-अक्खमनकिच्चवसेन।

[१७२-म०] **अरियसावका** ति वचनं अरियसावकानं येव पटिवेधो अत्थि, ते च तं न मच्छरायन्ती "ति पटिवेधधम्मे मक्छरियाभावदस्सनत्थं। **गन्थो** ति पाळि। **कथामग्गो** ति अट्ठकथापबन्धो। **धम्मन्तरं** ति कुसलादिधम्मं भिन्दित्वा अकुसलादिं अत्तनो लोलताय तथागतभासितं तित्थियभासितं वा करोन्तो आलोलेस्सति। **अत्तानं आविकत्वा** ति अत्तानं अञ्ञथा सन्तं अञ्ञथा पवेदयित्वा। **यो पना** ति तित्थियो गहट्ठो वा अत्तनो समयस्स सदोसभावं[2] दट्ठुं अनिच्छन्तो अञ्ञाणेन अभिनिवेसेन वा।

ब्यापितुमनिच्छो ति विविच्छो, तस्स भावो **वेविच्छं**। **अनादरो** ति मच्छरियेन दाने आदररहितो। कटच्छुना गाहो भत्तस्स कटच्छुग्गाहो, कटच्छुग्गाहो विय **कटच्छुग्गाहो**। यथा हि कटच्छुग्गाहो यथावुत्ते भत्ते न सम्पसारयति, एवं मच्छरियम्पि आवासादीसू ति। गय्हति एतेना ति वा गाहो, कटच्छु एव गाहो **कटच्छुग्गाहो**। सो यथा सङ्कुटितग्गो न सम्पसारयति एवं मच्छरियम्पीति। आवरित्वा गहितं अग्गहितं, तस्स भावो **अग्गहितत्तं**, मच्छरियं। "आवासादि परेहि साधारणमसाधारणं वा मय्हेव होतू" ति पवत्तिवसेन अत्तसम्पत्तिग्गहणलक्खणता, "मा अञ्ञस्सा" ति

हि सरीरं वुच्चतीति। **मानं जप्पेती** ति **मानं** पवत्तति करोति। पवत्तो **मानो पवत्तमानो**। **पुग्गलविसेसं** ति सेय्यस्स सेय्यो ति आदिभेदं पुग्गलविसेसं। **सेय्यं भिन्दित्वा पवत्तमानो सेय्यमानो**। तिण्णं ति सेय्यस्स सेय्यादीनं तिण्णं "सेय्योहमस्मी" ति **आदिना अञ्ञं**

---

1. विक्खम्भन० सी०। 2. दोसभावं-सी०।

पवत्तिवसेन अत्तसम्पत्तिनिगूहणलक्खणता च योजेतब्बा । यं पन "परसन्तकं गण्हितु-कामो" ति वुत्तं, तं मच्छरियस्स परसन्तकलोभस्स उपनिस्सयभावं दस्सेतुं वुत्तं ति दट्ठब्बं । यदि हि तं मच्छरियप्पवत्तिदस्सनं, परसम्पत्तिग्गहणलक्खणता च वत्तब्बा सिया ति ।

अभिज्झाकामरागानं विसेसो आसवद्वय-एकासवभावो सिया, न अभिज्झाय नो-आसवभावो चा ति नो-आसवलोभस्स सब्भावो विचारेतब्बो । न हि अत्थि "आसवो च नो-आसवो च धम्मा आसवस्स धम्मस्स आसवस्स च नो-आसवस्स च धम्मस्स हेतुपच्चयेन पच्चयो" ति सत्तमो च नवमो च पञ्हो । गणनाय च "हेतुया सत्ता" ति वुत्तं, न "नवा" ति । दिट्ठिसम्पयुत्ते पन लोभे नो-आसवे विज्जमाने सत्तमनवमा पि पञ्ह-विस्सज्जनं लभेय्युं, गणना च "हेतुया नवा" ति वत्तब्बा सिया । दिट्ठिविप्पयुत्ते च लोभे नो-आसवे विज्जमाने पुब्बे दस्सितो दोसो ति ।

[१७३-म०] कामच्छन्दनीवरणनिद्देसे **कामेसू** ति तेभूमकेसु सासवेसु सब्बेसु वत्थुकामेसु । सब्बो हि लोभो कामच्छन्दनीवरणं । तेनेव तस्स आरुप्पे उप्पत्ति वुत्ता

पुग्गलं अनिस्साय वुत्तानं । सेय्यादिवसेन अत्तनो मननं पग्गहो मानो, तस्स करणं सेय्योहमस्मी ति आदिपवत्ति येवा ति वुत्तं । "सेय्यो ति आदि किच्चकरणं" ति ।

[१८६–म०] सब्बो पि लोभो अभिज्झासभावो ति अभिज्झा आसवद्वयसभावा, कामरागो कामासवसभावो एवा ति **आसवद्वय-एकासवभावो** अभिज्झाकामरागानं विसेसो वुत्तो । न अभिज्झा च धम्मा ठपेत्वा दिट्ठिं अविज्जञ्च नो-आसवसभावा । अभिज्झा च आसवद्वयसभावा एव, न अभिज्झासभावो च लोभो नत्थी ति अधिप्पायेन **"नो-आसवलोभस्स सब्भावो विचारेतब्बो"** ति आह । **गणनाय हेतुया सत्ता** ति वुत्तं ति पञ्हावारपाठं सन्धाय वुत्तं । तत्थ हि "आसवो धम्मो आसवस्स धम्मस्स हेतुपच्चयेन पच्चयो । आसवो धम्मो नो-आसवस्स धम्मस्स । आसवो धम्मो आसवस्स च नो-आसवस्स च । नो-आसवो धम्मो नो-आसवस्स । नो-आसवो धम्मो आसवस्स । नो-आसवो धम्मो आसवस्स च नो-आसवस्स च । आसवो च नो-आसवो च धम्मा नो-आसवस्स हेतुपच्चयेन पच्चयो" ति[1] इमेसं वारानं वसेन "गणनाय सत्ता" ति वुत्तं । तत्थ यदि नो-आसवसभावो पि लोभो सिया, दिट्ठिसम्पयुत्तस्स वसेन "आसवो च नो-आसवो च धम्मा मोहयथावुत्तलोभा आसवस्स धम्मस्स दिट्ठिया हेतुपच्चयेन पच्चयो" ति सत्तमो, पाळियं आगतं सत्तमं अट्ठमं कत्वा "आसवो च नो-आसवो च धम्मा आसवस्स च नो-आसवस्स च धम्मस्स हेतुपच्चयेन पच्चयो" ति नवमो पञ्हो वुच्चेय्य, न

---

१. पट्ठाने ३ : १५९-१६० पि० ।

"नोवरणं धम्मं पटिच्च नीवरणो धम्मो उप्पज्जति न पुरेजातपच्चया । आरुप्पे कामच्छदनीवरणं पटिच्च उद्धच्चनीवरणं अविज्जानीवरणं। आरुप्पे कामच्छन्दनीवरणं पटिच्च थिनमिद्धनीवरणं उद्धच्चनीवरणं अविज्जानीवरणं" ति[1] ।

इरियापथिकचित्तं ति इरियापथूपत्थम्भकं अट्ठपञ्ञासविधं चित्तं । तत्थ पन बलवथिनमिद्धसहगतं चित्तं **"इरियापथं सन्धारेतुं असक्कोन्तं"** ति वुत्तं। **ओलीयती** ति ओलम्बति ।

ओनय्हती ति छादेति अवत्थरति वा। नानारम्मणेसु पवत्तिनिवारणेन, विप्फारिकतानिवारणेनेव वा [१२६-सी०] **अन्तोसमोरोधो** । **एकच्चानं** ति सिरीसादिरुक्खानं । **रूपकायेनेव सियुं**, तेन सुखप्पटिसंवेदननिब्बानसच्छिकिरियानं रूपतापत्ति सिया ति अधिप्पायो । **तस्मा** ति "कायस्सा" ति वचनस्स रूपत्तासाधकत्ता । **न हि नामकायो सुपती** ति इदं थिनमिद्धसमुट्ठितरूपेहि रूपकायस्स गरुभावप्पत्तं अङ्गपच्चङ्गादीनं संसीदनं सोप्पं ति सन्धाय वुत्तं, न जागरणचित्तरहितं भवङ्गसन्ततिं ति। **तस्स फलत्ता** ति फलूपचारेन इन्द्रियं विय मिद्धं दस्सेतुं मिद्धस्स फलत्ता इन्द्रियनिद्देसे विय लिङ्गादीनि मिद्धनिद्देसे पि सोप्पादीनि वुत्तानीति अत्थो ।

पन वुत्तो ति। एवं दिट्ठिसम्पयुत्तलोभस्स नो-आसवभावाभावं दस्सेत्वा इतरस्स पि तं दस्सेतुं **"दिट्ठिविप्पयुत्ते चा"** ति आदि वुत्तं ।

यथारूपे रूपप्पबन्धे वत्तमाने पुग्गलो गच्छति तिट्ठति निसीदतीति वुच्चति, तथा विसदरूपस्स उप्पादकं चित्तं **इरियापथूपत्थम्भकं**। तं पन कुसलतो किरियतो च पञ्चमज्झानचित्तं अभिञ्ञाप्पत्तं अप्पत्तञ्च भिन्दित्वा सत्तपञ्ञास जवनानि वोट्ठब्बनञ्चा ति **अट्ठपञ्ञासविधं**। सहजातधम्मानं अकम्मञ्ञभावकरत्ता थिनमिद्धसहगतचित्तं विसदानि रूपानि न समुट्ठपेति न उपत्थम्भेति चा ति वुत्तं **"इरियापथं सन्धारेतुं असक्कोन्तं"** ति ।

विपक्खे पि भावतो अनेकन्तिकत्ता **रूपत्तासाधकत्तं**। **गरुभावप्पत्ति** लहुताविरहो दट्ठब्बो। सति पि अञ्ञेसम्पि अकुसलादीनं [१८७-म०] लहुताविरहे थिनमिद्धानं एकन्ततो लहुतापटिपक्खत्ता कारणानुरूपत्ता च फलस्स **थिनमिद्धसमुट्ठितरूपेही** ति वुत्तं। **न जागर....प०.... सन्ततिं** ति एतेन नामकाये सुपनस्स असिद्धतं दस्सेति। **मिद्धस्स फलत्ता** ति एत्थ मिद्धं येव निद्दाकारणं ति नायं नियमो इच्छितो, निद्दाकारणमेव पन मिद्धं ति नियमो इच्छितो ति दट्ठब्बो । तथा हि खीणासवानं निद्दाय मिद्धतो अञ्ञं कारणं करजकायस्स दुब्बलभावो अट्ठकथायं दस्सितो ति ।

---

१. ३ । ३०२ पट्ठाने ।

रूपकायस्स अन्तोसमोरोधो नत्थी ति सो नामकाये वुत्तो ति विञ्ञायति। तेन सह वुत्ता ओनाहपरियोनाहा च। रूपकायस्स वा विप्फारिकाविप्फारिकभावो नाम अत्तनो सभावेन नत्थि, नामकायस्स नामकाये विप्फारिके लहुको, अविप्फारिके गरुको ति अविप्फारिकभावेन ओनाहनादि नामकायस्सेव होतीति ओनाहादयो पि नामकाये विञ्ञायन्ति। तेनाह **"न हि रूपं नामकायस्स ओनाहो''''प''''होती"** ति। आवरणभावो विय हि ओनाहनादिभावो पि नामकायस्सेव होतीति। इतरो अधिप्पायं अजानन्तो मेघादीहि रूपेहि रूपानं ओनाहनादिं पस्सन्तो **"ननु चा"** ति आदिमाह। **यदि एवं** ति यदि रूपस्स ओनाहनादिता सिद्धा, अरूपस्स न [१७४-म०] सिया, सेतुबन्धादीसु रूपस्स आवरणं दिट्ठं ति आवरणम्पि अरूपस्स न भवेय्या ति अत्थो।

सुरामेरयपानं **अकुसलं** ति कत्वा युत्तो तस्स उपक्किलेसभावो, सुरा''''प''''पमादट्ठानानुयोगस्स **च** अकुसलत्ता पञ्ञाय दुब्बलीकरणभावो युत्तो, तथापि परस्स अधिप्पायं अनुजानित्वा सुरामेरयस्स उपक्किलेसता पञ्ञाय दुब्बलीकरणता च उपक्किलेसानं पञ्ञाय दुब्बलीकरणानञ्च पच्चयत्ता फलवोहारेन वुत्ता ति दस्सेन्तो आह **"न, पच्चयनिद्देसतो"** ति। **एवमेव खो** ति यथा जातरूपस्स अयो लोहं तिपु सीसं सज्जन्ति पञ्चुपक्किलेसेहि उपक्किलिट्ठं जातरूपं न चेव मुदु होति, न च कम्मनियं, न च पभस्सरं पभङ्गु च, न च सम्मा उपेति कम्माय, एवमेव। **पच्चयनिद्देसतो** ति उपक्किलेसपञ्ञादुब्बलीकरणानं पच्चयभावनिद्देसतो, पच्चये फलनिद्देसतो ति अत्थो। सयमेव किलेसो उपक्किलेसनिद्देसेसु निद्दिट्ठो ति अधिप्पायो।

नीवरणं हुत्वा व नीवरणसम्पयुत्ते दस्सियमाने न नीवरणतादस्सनत्थो आरम्भो,

---

छादनं, अवत्थरणं वा ओनाहो, सो रूपस्सेव सभावो ति परस्स आसङ्कं मनसि कत्वा आह **"तेन सह वुत्ता ओनाहपरियोनाहा चा"** ति। असङ्कोचवसेन विसदा पवत्ति विप्फारिकभावो। **आवरणभावो विया** ति एतेन आवरणसभावत्ते पि मिद्धस्स तब्बिधुरो अनञ्ञसाधारणत्ता ओनहनादिभावो ति दस्सेति। सामञ्ञं हि पञ्चन्नम्पि कामच्छन्दादीनं आवरणसभावो ति आवरणभावसदिसस्स ओनहनादिभावस्स नामकाये लब्भमानस्स गहितता ति एत्थाधिपायो।

पानं ति अनुयोगो ति च तंकिरियासाधिका चेतना अधिप्पेता ति सुरापानस्स सुरा''''प०''''योगस्स च अकुसलभावेन उपक्किसेसदुब्बलीकरणभावो युत्तो ति वुत्तो। "सुरामेरयस्स अज्झोहरणं पानं पमादट्ठानानुयोगो चा" ति परस्स अधिप्पायो।

नीवरणं हुत्वा वा ति आदिना इदं दस्सेति "नीवरणसभावानं नीवरणसम्पयुत्तभाव-

अथ खो मिद्धनीवरणभावस्स नीवरणसम्पयुत्ततादस्सनत्थो ति यथालाभवसेन च असम्पयुत्तस्स वचनं न युज्जति। यथा हि **तिट्ठन्तम्पि चरन्तम्पी** ति सिप्पिसम्बुकादीसु यथालाभसम्भवं तं द्वयं वुत्तं, न एवं "थिनमिद्धनीवरणं सम्पयुत्तम्पि असम्पयुत्तम्पी" ति वचनं अत्थि यं यथालाभं सम्भवेय्या ति। **चित्तजस्सासम्भववचनतो** ति "चत्तत्ता". ति आदिवचनस्स झानक्खणे चित्तजस्स थिनमिद्धस्स असम्भववचनभावतो ति अत्थो, "चत्तत्ता" ति आदिवचनेन वा असम्भवस्स वचनतो पकासनतो ति अत्थो।

कामेसु [१२७-सी०] **खो पन ' प '''सुदिट्ठो** ति इमिना कामादीनवे अञ्ञाणस्स पहानमाह। तं **तत्थ पहानं** ति तं तत्थ रूपे पहानं ति पहानं अपेक्खित्वा "तं ति वुत्तं, तं विनयनं ति वा अत्थो। तेन रूपस्स अप्पहातब्बत्तमेव दस्सेति, न पन "छ धम्मे पहाया" ति आदीसु मिद्धस्स अप्पहातब्बतादस्सनतो अञ्ञो पकारो वुत्तो। **न यथा '' प '''वुत्तं** ति छ धम्मा पञ्च नीवरणानि च यथा पहातब्बानेव [१७५-म०] होन्तानि "पहातब्बानी" ति वुत्तानि, न एवं रूपं पहातब्बमेव होन्तं "पहातब्बं" ति वुत्तं ति अत्थो।

अञ्ञेहि च सुत्तेहो ति वुत्तसुत्तानं दस्सनत्थं तथा हो ति आदिमाह। कुसलप्पवत्तिं आवरन्तीति **आवरणा**। नीवारेन्तीति **नीवरणा**। चित्तं अभिभवन्ता आरोहन्तीति **चेतसो अज्झारुहा**। आवरणादिकिच्चञ्च अरूपस्सेव युज्जति; तथा अन्धकरणादिकिच्चं। तत्थ चतूसु पदेसु पुरिमपुरिमस्स पच्छिमपच्छिमो अत्थो। संसारदुक्खं विघातो, तंजनकताय **विघातपक्खिकं**। चेतसो परियुट्ठानं अयोनिसोमनसिकारतो उप्पत्ति अकुसलरासिभावो च अरूपस्सेव होती ति अरूपमेव मिद्धं।

गणभोजनादि-अकप्पियभोजनं कप्पियसञ्ञी भुञ्जित्वा पुन जानित्वा कोचि विप्पटिसारी होति, अनवज्जञ्च भिक्खुदस्सनचेतियवन्दनादिं वज्जसञ्ञी अकत्वा कत्वा च कोचि

दस्सनपराय चोदनाय नीवरणं ति कत्थचि अदिट्ठपयोगस्स असम्पयुत्तस्स रूपस्स यथालाभतो गहणं ञायो येव न होति, सिद्धनीवरणभावसम्पयुत्तसभावानं येव पन गहणं ति तंसभावा अरूपधम्मा येव दस्सिता, न रूपं ति थिनं विय मिद्धम्पि अरूपमेवा ति विञ्ञायती" ति। **यं** ति येन वचनेन। **असम्भववचनतो** ति असम्भववचनभावतो।

तेना ति तेन रूपारम्मणस्स छन्दरागस्स पहानवचनेन। **रूपप्पहानतो अञ्ञो** ति कत्वा रूपे छन्दरागप्पहानं "अञ्ञो कारो" ति वुत्तं। यं अट्ठकथायं 'अञ्ञथा" ति वुत्तं। **इदं** ति आदिना "तं पजहथा" ति पाळिया न निप्परियायप्पहानं अधिप्पेतं ति दस्सेति।

अरूपस्सेव [१८८-म०] **युज्जती** ति सुदुद्दसं दूरङ्गमादिप्पवत्तकं चित्तं तंसम्पयुत्तो अरूपधम्मो येव विबन्धितुं समत्थो ति दस्सेति। **चेतसो परियुट्ठानं** ति कुसलचित्तस्स गहणं।

अस्सद्धो त्विप्पटिसारी होति। वत्थुं ति मूलं। **एवरूपं**[1] ति मूलवसेन एवंपकारं ति अत्थो। कुक्कुच्चपदं येवापनकेसु "कुच्छितं कतं कुकतं, तस्स भावो" ति वुत्तत्थमेव। **कुक्कुच्चायनाकारो** ति कुक्कुच्चभावनाकारो कुक्कुच्चकरणाकारो कुक्कुचचगमनाकारो वा। एतेन कुक्कुच्चं किरियभावेन दस्सेति "कप्पति न कप्पती" ति पवत्तचित्तुप्पादो व **विनयकुक्कुच्चं**।

चित्तविक्खिपनकिच्चसामञ्ञेन उद्धच्चं कुक्कुच्चञ्च सह वुत्तं ति वेदितब्बं। कामच्छन्दस्स अनागामिमग्गेन पहानं उक्कट्ठनीवरणवसेन वुत्तं ति वेदितब्बं। यदि हि लोभो नो-नीवरणो सिया, "नो-नीवरणो धम्मो नीवरणस्स धम्मस्स हेतुपच्चयेन पच्चयो" ति आदि वत्तब्बं सिया, न चेतं वुत्तं। गणनाय च "हेतुया चत्तारी" ति वुत्तं, "न नवा" ति। तस्मा सब्बो लोभो कामच्छन्दनीवरणं ति अरहत्तमग्गेनस्स पहानवचनं युत्तं।

कामो चा ति किलेसकामो च। **पुरिमदिट्ठिं उत्तरदिट्ठि उपादियती** ति पुरिम-

---

नीवरणानि हि उप्पज्जमानानि उप्पज्जितुं अप्पदानेन कुसलवारं गण्हन्ती ति वुच्चन्ति। गहणञ्चेत्थ पारियुट्ठानं "चोरा मग्गे परियुट्ठिंसू" ति आदीसु विय।

उद्धच्चं कुक्कुच्चञ्च सह वुत्तं ति उद्देसपुच्छानिगमने सन्धाय वुत्तं। यं पन अट्ठकथायं उद्धच्चस्स कुक्कुच्चेन विनाभावकारणं वत्वा "भिन्दित्वा वुत्त" ति, तं "नीवरणा चेव नीवरणसम्पयुत्ता चा" ति पदस्स निद्देसे उद्धच्चकुक्कुच्चानं विसुं निद्दिट्ठतं सन्धाय वुत्तं। कामच्छन्दस्स उक्कट्ठनीवरणता ओरम्भागियभावो। सो हि रूपरागारूपरागप्पकारकामच्छन्दं उपादाय ततो तिब्बकिच्चताय "उक्कट्ठनीवरणं" ति वुच्चति। कामच्छन्दनीवरणन्त्वेव लोभो वुत्तो, न भिन्दित्वा। कामच्छन्दनीवरणस्स च अनवसेसतो अनागामिमग्गेन पहाने वुच्चमाने चतुत्थमग्गवज्झो लोभो अनीवरणसभावो आपज्जतीति आह "यदि"' प०"' सिया" ति। नो-नीवरणो रूपरागारूपरागप्पकारो लोभधम्मो नीवरणस्स अविज्जादिकस्स। आदि-सद्देन "नो-नीवरणो धम्मो नीवरणस्स च नो-नीवरणस्स च धम्मस्स। नीवरणो च नो-नीवरणो च धम्मा नीवरणस्स धम्मस्स। नीवरणो च नो-नीवरणो च धम्मा नो-नीवरणस्स धम्मस्स। नीवरणो च नो-नीवरणो च धम्मा नीवरणस्स च नो-नीवरणस्स च धम्मस्स हेतुपच्चयेन पच्चयो" ति[2] इमे पञ्हे सङ्गण्हाति। चत्तारीति वुत्तं नीवरणपदमूलकानं तिण्णं नोनीवरणमूलकस्स एकस्स वसेन। नीवरण-नो-नीवरणतदुभयमूलकानं पन तिण्णं तिण्णं वसेन नवा ति वुत्तं। तस्मा ति यथादस्सितनयाय पाळिया अभावा नो-नीवरणलोभाभावा।

तेनेवा ति पुरिमदिट्ठि-आकारेनेव उप्पज्जमानेन। दिट्ठिगतिकेहि वुच्चमानानं "निच्चं सुभं"

---

१. एवंरूपं–सी०। २. ३ : ३०७ पट्ठाने।

दिट्ठिं "सस्सतो" ति गण्हन्ती उपादियति, पुरिमदिट्ठि-आकारेनेव वा उप्पज्जमाना उत्तरदिट्ठि तेनेव पुरिमदिट्ठिं दळ्हं करोन्ती तं उपादियतीति वुत्तं। **गोसीलगोवतादीनी** ति तथाभूतं दिट्ठिमाह। [१७६-म०] **अभिनिवेसतो** ति अभिनिवेसभावतो, अभिनिविसनतो वा। **अत्तवादमत्तमेवा** ति अत्तस्स अभावा "अत्ता" ति इदं वचनमत्तमेव। **उपादियन्ति** दळ्हं गण्हन्ति। कथं? **अत्ता** ति। अत्ता ति हि अभिनिविसन्ता वचनमेव दळ्हं कत्वा गण्हन्तीति अत्थो। एवं अत्तवादमत्तमेव उपादियन्तीति वुत्तं। "अत्तवादमत्तं" ति वा वाचावत्थुमत्तमाह। वाचावत्थुमत्तमेव हि "अत्ता" ति उपादियन्ति अत्थस्स अभावा ति।

दिन्नं ति दानमाह, तं अफलत्ता रूपं विय दानं नाम न होतीति पटिक्खिपति। महाविजितयञ्ञसदिसो [१२८-सी०] यञ्ञो **महायागो**। आमन्तेत्वा हवनं दानं **आहुनं**, पाहुनानं अतिथीनं अतिथिकिरिया **पाहुनं**, आवाहादीसु मङ्गलत्थं दानं **मङ्गलकिरिया**। **परलोके ठितो इमं लोकं "नत्थी" ति गण्हाती** ति इमं लोकं अवेक्खित्वा परलोको, परञ्च अवेक्खित्वा अयं लोको होति गन्तब्बतो आगन्तब्बतो चा ति परलोकतो इधागमनस्स[1] अभावा तत्थेव उच्छिज्जनतो चित्तेन परलोके ठितो इमं लोकं "नत्थी" ति गण्हातीति अत्थो वेदितब्बो। न हि अयं दिट्ठि परलोके निब्बत्तस्सेव होतीति। **इध लोके ठितो** ति एत्था पि अयमेव नयो। अयं वा एत्थ अत्थो "संसरणप्पदेसो इध लोको च परलोको च नाम कोचि नत्थि संसरणस्स अभावा तत्थ तत्थेव उच्छिज्जनतो" ति। पुरिमभवतो पच्छिमभवे उपपतनं उपपातो, सो येसं सीलं, ते **ओपपातिका**। ते पन चवनका उपपज्जनका होन्तीति कत्वा आह "**चवनक-उपपज्जनकसत्ता नत्थीति गण्हाती**" ति। **अनुलोमप्पटिपदं** ति निब्बानानुकूलं सीलादिप्पटिपदं।

निप्पदेसतो व गहितो ति इमिना यं आसवगोच्छके ब्रम्हानं कप्परुक्खादीसु रागस्स च दिट्ठिरागस्स च असङ्गहणेन नीवरणगोच्छके च कामच्छन्दस्स अनागामिमग्गेन पहातब्बतादस्सनेन सप्पदेसत्तं वुत्तं तं निवारितं होति। **अरहत्तमग्गेना** ति वचनेन

ति एवमादिवचनानं, दिट्ठिरहितेहि वुच्चमानानं गगनकुसुमादिलोकवोहारवचनानञ्च वत्थूनि वाचावत्थुमत्तानीति आह "वाचा...प०...वा" ति।

[१८९-म०] **चित्तेन परलोके ठितो** ति यस्मिं लोके निब्बत्तिवसेन सयं ठितो, ततो अञ्ञं लोकं परलोको ति चित्तेन गहेत्वा ठितो।

नहि पुरिमेही ति आदिना पठममग्गादीहि समुग्घाटित-अपायगमनीयभावादिका एव

---

१. ०तस्स-सी०।

चतूहि मग्गेहि पहातब्बता वुत्ता ति दट्ठब्बं । न हि पुरिमेहि अतनुकता मोहादयो अरहत्तमग्गेन पहीयन्तीति ।

निरति-अत्थेना ति पीतिविरहेन, बलवनिकन्तिविरहेन वा। न हि दुक्खाय वेदनाय रज्जन्तीति। अव-सद्देन अवगाहत्थो अधो-अत्थो चा ति द्विधा **अव-सद्दस्स** अत्थो वुत्तो।

[१७७-म०] विचिकिच्छासहगतो मोहरणो पहानेकट्ठेन दिट्ठिसम्पयुत्तेन रागरणेन **सरणो,** उद्धच्चसहगतो रूपराग-अरूपरागसङ्खातेन। **अरणविभङ्गसुत्ते**[1] पन "यो कामपटिसन्धिसुखिनो सोमनस्सानुयोगो हीनो गम्मो पोथुज्जनिको अनरियो अनत्थसंहितो, सदुक्खो एसो धम्मो स-उपघातो स-उपायासो सपरिळाहो मिच्छापटिपदा। तस्मा एसो धम्मो सरणो" ति आदिवचनतो फलभूतदुक्ख-उपघात-उपायासपरिळाहसभावभूतो मिच्छापटिपदाभावो व "सरणो" ति विञ्ञायतीति तेहि सब्बाकुसलानं सरणता सिद्धा होतीति।

सुत्तन्तिकदुकनिक्खेपकथावण्णना

विवेचितत्ता ति विसुं कतत्ता पकासितत्ता **असेसेत्वा खेपेतो** ति वजिरं अत्तना पतितट्ठानं असेसेत्वा खेपेति पुन अपाकतिकता-आपादनेन।

तप्पती ति विप्पटिसारी होति, अनुसोचति वा।

रागादयो दुतियमग्गादीहि पहीयन्ती ति दस्सेति ।

उपट्ठिते पि दुग्गतिनिमित्तादिके न तथा तिब्बो लोभो उप्पज्जति। यथा सुगतिनिमित्तादिके ति आह "बलवनिकन्ति विरहेना" ति।

एकस्मिं चित्तुप्पादे उप्पन्नानं विय एकस्मिं सन्ताने उप्पन्नानम्पि सहपवत्तिपरियायो अत्थीति पहानेकट्ठेन रागरणेन विचिकिच्छुद्धच्चसहगतमोहस्स सरणता वुत्ता। उद्धच्चविचिकिच्छाहि यो मोहो सहजातो भवे, सो पि रागेन सरणो पहानेकट्ठभावतो ति। लोभदोसमोहतदेकट्ठकिलेसतंसम्पयुत्तक्खन्धतंसमुट्ठानकम्मभेदतो सब्बस्स पि अकुसलस्स सङ्गहणवसेन पवत्तो सरणपदनिद्देसो अरणविभङ्गसुत्तेन पि अञ्ञदत्थु संसन्दतीति दस्सेतुं **"अरणविभङ्गसुत्ते"** ति आदिमाह। यं पन अट्ठकथायं सम्पयोगप्पहानेकट्ठभावदीपनेन रागादीनं सब्बेसं वा अकुसलधम्मानं सरणभावदस्सनं, तं पाळिया यथादस्सितधम्मानं अञ्ञमञ्ञसरणभावदस्सनपरं, तदञ्ञधम्मानं सरणभावपटिसेधनपरं ति अरणविभङ्ग-सुत्तविरोधो ति दट्ठब्बं। सुत्तन्तदेसनाय वा परियायकथाभावतो निप्परियायतो सरणभावो विय अरणभावो पि अकुसलधम्मानं येवा ति तथापवत्ताय अट्ठकथाय न कोचि सुत्तविरोधो ति दट्ठब्बं।

---

१. म० ३ : ३१८–३१९ ।

अहं ति इति-सद्दपरेन अहंसद्देन हेतुभूतेन यो अत्थो विञ्ञायति, सो संकथीयति, उदीरीयतीति अत्थो। अञ्ञथा हि वुच्चमानस्स वचनेन पकासियमानस्स पदत्थस्स सङ्खादिभावे सब्बेसं कुसलादिधम्मानं अधिवचनादिता सिया ति। **भावो** ति सत्त-वेवचनं ति भणन्ति, धातुया वा एतं अधिवचनं। **दत्तो** ति एत्तावता सत्तपञ्ञत्तिं दस्सेत्वा अञ्ञम्पि उपादापञ्ञत्तिं दस्सेतुं "**मञ्चो**" ति आदिमाह। **अहं ति च** पवत्तं अधिवचनं वदन्तेन सुणन्तेन च पुब्बे गहितसञ्ञेन अत्थप्पकासनभावेन विञ्ञायति। न हि तस्मिं अविञ्ञाते तदत्थविजाननं अत्थीति विसेसेन [१२९-सी०] अधिवचनं "ञायतीति **समञ्ञा**" ति वुत्तं। एतस्सत्थस्स अहं ति इदं अधिवचनं ति एवं वा सञ्ञागहणवसेन ञायति समञ्ञायति पाकटा होतीति **समञ्ञा**। **पञ्ञापीयती** ति अहं ति इदं एतस्स अधिवचनं ति एवं ठपीयतीति अत्थो। **वोहरीयती** ति वुच्चति। **उद्धेय्यं** ति उद्धरितब्बं। **अपि नामसहस्सतो** ति अनेकेहि पि नामसहस्सेहीति अत्थो। सयमेव उपपतनसीलं नामं "**ओपपातिकनामं**" ति वुच्चति।

सुत्तन्तिकदुकनिक्खेपकथावण्णना

अहं-सद्देन हेतुभूतेन यो अत्थो ति एत्थ अहं-सद्दो अत्थो ति अधिप्पेतो। अत्थान-बोधनत्थो हि सद्दप्पयोगो। अत्थपराधीनो केवलो अत्थपदत्थको, सो पदत्थविपरियेसकारिना पन इति-सद्देन परतो पयुत्तेन सद्दपदत्थको जायति यथा गावीति अयमाहा ति गो-सद्दं आहा ति विञ्ञायति। तेन विञ्ञत्तिविकारसहितो सद्दो पञ्ञत्तीति दस्सेति। तथा हि "बुद्धस्स [१९०-म०] भगवतो वोहारो लोकियसोते पटिहञ्ञती" ति आदिना[1] पञ्ञत्तिया वचनभावं साधयति। **अञ्ञथा** ति आदिना पञ्ञत्तिया असद्दसभावत्ते दोसमाह। **अधि-वचनादिता सिया**, तथा च अधिवचनादीनं अधिवचनपथादितो विसेसो न सिया ति दुको येव न सम्भवेय्या ति अधिप्पायो। अट्ठकथायं पन सकसन्ततिपरियापन्ने रूपादयो धम्मे समूहतो सन्तानतो च एकत्तवसेन गहेत्वा अहं ति वोहरियमाना उपादापञ्ञत्ति सङ्खायति वोहरीयतीति सङ्खा ति अधिप्पेता। तथा सेसेसु यथासम्भवं दट्ठब्बं। तेनेवाह "दत्तो ति एत्तावता सत्तपञ्ञत्तिं दस्सेत्वा अञ्ञम्पि उपादापञ्ञत्तिं दस्सेतुं ति आदि। **पदत्थस्सा** ति अहं-सद्दादिपदाभिधेय्यस्स, परमत्थस्स वा। अधिवचनं सद्दो ति अधिप्पायेन "**वदन्तेना**" ति आदि वुत्तं। सो हि अत्तना ञापेतब्बमत्थं सयं ञातो एव ञापेती ति अग्गहितसम्बन्धस्स न सद्दो अत्थप्पकासनसमत्थो ति वुत्तं "पुब्बे गहितसञ्ञेना" ति। **विसेसेन ञायती ति समञ्ञा** ति सं-सद्दस्स विसेसत्थतं आह।

---

1. अभि० ४ : २०१ कथा०।

[१७८–म०] करीयतीति कम्मं, नाममेव कम्मं **नामकम्मं**। तथा **नामधेय्यं**। करणठपनसद्दा पि हि कम्मत्था होन्तीति। अथ करणत्था, करीयति च ठपीयति च एतेन अत्थो एवंनामो ति पञ्ञापीयतीति करणं ठपनञ्च नाम होति। अथ भावत्था, ञापनमत्तमेव करणं ठपनं ति च वुत्तं। **नामनिरुत्ति नामब्यञ्जनं** ति नाममिच्चेव वुत्तं होति। न हि पथवीसङ्खातं अत्थप्पकारमत्तं निवदति ब्यञ्जयति वा पथवीति नामं निवदति ब्यञ्जयति वा, तस्मा अनामस्स निरुत्तिब्यञ्जनभावनिवारणत्थं "नामनिरुत्ति नामब्यञ्जनं" ति वुत्तं। एवं **नामाभिलापो** ति एत्था पि नयो। एत्थ पन सङ्खा समञ्ञा पञ्ञत्ति वोहारो ति चतूहि पदेहि पञ्ञापितब्बतो पञ्ञत्ति वुत्ता, इतरेहि पञ्ञापनतो।

तत्थ च "पुरिमा उपादापञ्ञत्ति उप्पादवयकिच्चरहिता लोकसङ्केतसिद्धा, पच्छिमा नामपञ्ञत्ति, याय पुरिमा पञ्ञत्ति रूपादयो च सोतद्वारविञ्ञाणसन्तानानन्तरमुप्पन्नेन गहितपुब्बसङ्केतेन मनोद्वारविञ्ञाणसन्तानेन गहिताय पञ्ञापीयन्ती" ति आचरिया वदन्ति। एतस्मिं पन इमिस्सा पाळिया अट्ठकथाय च अत्थे सति यं वुत्तं मातिकायं "वचनमत्तमेव अधिकारं कत्वा पवत्ता अधिवचना नाम, सहेतुकं कत्वा वुच्चमाना अभिलापा निरुत्ति नाम, पकारेन ञापनतो पञ्ञत्ति नामा" ति[1], तेन विरोधो सिया। न हि उप्पादवयकिच्चरहितस्स वचनमत्तं अधिकारं कत्वा पवत्ति अत्थि उप्पादादिसहितस्सेव पवत्तिसब्भावतो, न च वचनवचनत्थविमुत्तस्स नामस्स निद्धारेत्वा सहेतुकं कत्वा वुच्चमानता अत्थि, नापि अनिद्धारितसभावस्स पदत्थस्स तेन तेन पकारेन ञापनं अत्थीति।

करीयती ति इदं इमस्सत्थस्स अधिवचनं ति एवं निक्खिपियति। **नामभूतं वचनमेव** तं तं अत्थं निद्धारेत्वा सहेतुकं कत्वा वदति ब्यञ्जयति चा ति आह "**नाममिच्चेव वुत्तं होती**" ति। तेनेवाह "**न हि पथवी**" ति आदि। **पथवीसङ्खातं** ति पथवी-सद्दाभिधेय्यं।

आचरिया ति अट्ठकथाय संवण्णनका आचरिया, न अट्ठकथाचरिया ति अधिप्पायेन वदति। **मातिकायं** ति मातिकावण्णनायं। **तेना** ति मातिकावण्णनावचनेन। इमिस्सा पाळिया अट्ठकथाय च अत्थदस्सनस्स एतस्स यथावुत्तस्स आचरियवादस्स विरोधो सिया, तमेव विरोधं "**न ही**" ति आदिना विवरति। तत्थ अधिवचनपथादिभावेन वुत्तानं धम्मानं पकासकस्स सभावस्स विञ्ञत्तिविकारसहितसद्दस्सेव वचनमत्तं अधिकारं कत्वा पवत्ति आदि युज्जति, न असभावस्सा ति अधिप्पायेन "**उप्पादवयकिच्चरहितस्सा**" ति आदि वुत्तं। तत्थ **अनिद्धारितसभावस्सा** ति परमत्थतो अनुपलद्धसभावस्स।

---

1. अट्ठ० १ : ४४।

दुविधा चायं पञ्ञत्ति यथावुत्तप्पकारा ति अट्ठकथावचनञ्च न दिस्सति, अट्ठकथायं पन विज्जमानपञ्ञत्ति-आदयो छ पञ्ञत्तियो व वुत्ता । तत्थ रूपं" वेदना" ति आदिका विज्जमानपञ्ञत्ति । "इत्थी पुरिसो" ति आदिका अविज्जमानपञ्ञत्ति । "तेविज्जो छळभिञ्ञो" ति आदिका विज्जमानेन अविज्जमानपञ्ञत्ति । "इत्थिसद्दो पुरिससद्दो" ति आदिका अविज्जमानेन विज्जमानपञ्ञत्ति । "चक्खुविञ्ञाणं सोतविञ्ञाणं" ति आदिका विज्जमानेन विज्जमानपञ्ञत्ति । "खत्तियकुमारो ब्राम्हणकुमारो" ति आदिका अविज्जमानेन अविज्जमानपञ्ञत्ति। न चेत्थ यथावुत्तप्पकारा दुविधा पञ्ञत्ति [१७९-म०] वुत्ता ति सक्का विञ्ञातुं। विज्जमानस्स हि सङ्खा ... प० ... अभिलापो विज्जमानपञ्ञत्ति । अविज्जमानस्स च सङ्खादिका अविज्जमानपञ्ञत्ति । तेसं येव [१३०-सी०] विसेसनविसेसितब्बभावेन पवत्ता सङ्खादयो इतरा ति ।

अविज्जमानपञ्ञत्तिवचनेन पञ्ञापितब्बा उपादापञ्ञत्ति, तस्सा पञ्ञापनभूता नामपञ्ञत्ति च वुत्ता, इतरेहि नामपञ्ञत्ति येव यथावुत्ता ति चे? न, असिद्धत्ता। सति हि उजुके पुरिमे पाळि-अनुगते अत्थे अयमत्थो इमाय अट्ठकथाय वुत्तो ति असिद्धमेतं। यदि च सत्तरथघटादिदिसाकालकसिण-अजटाकासकसिणुग्घाटिमाकास-आकिञ्चञ्ञायतनविसयनिरोधसमापत्ति-आदिप्पकारा उपादापञ्ञत्ति अविज्जमानपञ्ञत्ति, एतेनेव

दुविधा ति पञ्ञापनपञ्ञापितब्बभेदतो दुविधा। यथावुत्तप्पकारा ति उप्पादवयकिच्चरहिता ति आदिप्पकारा। अट्ठकथायं पुग्गलपञ्ञत्तिवण्णनायं । [१९१-म०] ननु च तत्थ उपनिधापञ्ञत्ति-आदयो अपरा पि पञ्ञत्तियो वुत्ता, अथ कस्मा "छ पञ्ञत्तियो व वुत्ता" ति वुत्तं ? सच्चं वुत्ता, ता पन विज्जमानपञ्ञत्ति-आदीसु छसु एव अन्तोगधा ति "अट्ठकथायं विज्जमानपञ्ञत्ति-आदयो छ पञ्ञत्तियो व वुत्ता" ति वुत्तं।

तत्थ रूपादि विय अविज्जमानत्ता पञ्ञापितब्बत्ता च अविज्जमानपञ्ञत्ति, अविज्जमानस्स च सत्तरथादि-अत्थस्स पञ्ञापनतो अविज्जमानपञ्ञत्तीति एवं अविज्जमानपञ्ञत्तिवचनेन यथावुत्ता दुविधा पि पञ्ञत्ति सङ्गहिता ति आह "अविज्जमान ... प० ... वुत्ता" ति। इतरेही ति विज्जमानपञ्ञत्ति-आदीहि अवसेसेहि पञ्चहि, रूपवेदनादीनं सत्तरथादीनञ्च अत्थानं पकारेहि ञापनतो तंतंवाचको सद्दो येव विसयभेदतो विज्जमानपञ्ञत्ति-आदिभेदा पञ्ञत्ति सङ्खादीहि दसहि पदेहि वुत्ता ति अयं पुरिमो अत्थो, सो च यथारुतवसेनेन पाळिया विञ्ञायमानत्ता "पाळि-अनुगतो उजुको" ति च वुत्तो। यदि चा ति आदीसु सत्तादिका यथावुत्तप्पकारा उपादापञ्ञत्ति यदि अविज्जमानपञ्ञत्ति, या अत्थीति न वत्तब्बा। अविज्जमाना च सा पञ्ञापितब्बतो पञ्ञत्ति चा ति तेसं आचरियानं लद्धीति अधिप्पायो। इदानि तस्सा लद्धिया वसेन पञ्ञत्तिपथा ति वुत्तधम्मानम्पि विज्जमानपञ्ञत्तिभावापत्तिचोदनेन तत्थ दोसं दस्सेति

वचनेन तस्सा अविज्जमानता वुत्ता ति न सा अत्थीति वत्तब्बा। यथा च पञ्ञापितब्बतो अविज्जमानानं सत्तादीनं अविज्जमानपञ्ञत्तिभावो, एवं रूपादीनं विज्जमानानं पञ्ञापेतब्बतो विज्जमानपञ्ञत्तिभावो आपज्जति। ततो "सब्बे धम्मे[1] पञ्ञत्ती" ति पञ्ञत्तिपथेहि अविसिट्ठो पञ्ञत्तिधम्मनिद्देसो वत्तब्बो सिया।

अथा पि पञ्ञापितब्बपञ्ञापनविसेसदस्सनत्थो सङ्खादिनिद्देसो तथा पि "एकधम्मो सब्बधम्मेसु निपतति, सब्बधम्मा एकधम्मस्मिं निपतन्ती" ति आदिना पञ्ञापितब्बानं पञ्ञत्तिपथभावस्स दस्सितत्ता पञ्ञापितब्बानं पञ्ञत्तिभावे पञ्ञत्तिपथा पञ्ञत्तिसद्देनेव वुत्ता ति पञ्ञत्तिपथपदं न वत्तब्बं सिया, नापि सक्का पञ्ञापितब्बपञ्ञापनविसेसदस्सनत्थो सङ्खादिनिद्देसो ति वत्तुं सङ्खादिसद्दानं समानत्थत्ता। वुत्तं हि "मरणेन पि तं पहीयति, यं पुरिसो ममिदं ति मञ्ञती" ति[2] एत्थ "पुरिसो ति सङ्खा समञ्ञा ...प... अभिलापो" ति[2] तथा "मागण्डियो ति तस्स ब्राम्हणस्स नामं सङ्खा समञ्ञा" ति आदि[3]। न च "अयं इत्थन्नामो" ति सङ्केतग्गहणं "रूपं तिस्सो" ति आदिवचनग्गहणञ्च मुञ्चित्वा अञ्ञस्स असिद्धसभावस्स अत्थपञ्ञापने

"यथा चा" ति आदिना। ततो ति यस्मा अविज्जमानत्ता पञ्ञापितब्बत्ता च सत्तरथादीनं अविज्जमानपञ्ञत्तिभावो विय विज्जमानत्ता पञ्ञापितब्बत्ता च सब्बेसं सभावधम्मानं विज्जमानपञ्ञत्तिभावो आपज्जति, तस्मा ति अत्थो।

"अथा" ति आदिना पञ्ञत्तिपथनिद्देसतो विसिट्ठस्स पञ्ञत्तिधम्मनिद्देसस्स सयमेव कारणमासङ्कति। "नापी" ति आदिना तस्स कारणस्स असिद्धतं दस्सेति। "पुरिसो ति सङ्खा" ति आदीसु सङ्खादयो पि नामादीहि अत्थतो अविसिट्ठा वुत्ता ति आह "सङ्खादिसद्दानं समानत्थत्ता" ति। वचनग्गहणं वचनुच्चारणं। अञ्ञस्सा ति नामपञ्ञत्तिं सन्धायाह। तेसं ति सङ्केतग्गहणवचनग्गहणानं। असमत्थता न सम्भवतीति योजना। तमेव असम्भवं "यदि ही" ति आदिना विवरति। पञ्ञत्तिया ति नामपञ्ञत्तिया। पञ्ञत्तिपञ्ञापने ति याय नामपञ्ञत्तिया उपादायपञ्ञत्ति रूपादयो च पञ्ञापीयन्ति, या च सोतद्वारविञ्ञाणसन्तानानन्तरमुप्पन्नेन गहितपुब्बसङ्केतेन मनोद्वारविञ्ञाणसन्तानेन गय्हति, सा अयं नामा ति [१९२–म०] तस्सा पञ्ञापने असङ्करतो ठपने। अथ वा सोतद्वारविञ्ञाणसन्तानानन्तरमुप्पन्नेन मनोद्वारविञ्ञाणसन्तानेन पञ्ञत्तिया गाहापने परिच्छिन्दने। तस्सा अञ्ञा पञ्ञत्ति वत्तब्बा सिया ति तस्सा नामपञ्ञत्तिया ञापने सङ्केतग्गहणवचनग्गहणानं सहकारीकारणभूता अञ्ञा नामपञ्ञत्ति अत्थीति वत्तब्बा अनञ्ञातब्बा सिया। ततो अत्थविजाननमेव न सिया

---

१. धम्मा–सी०। २. खु० ७ : १०३–१०४ महानिद्देसे।

३. खु० ७ : १५६ महानिद्देसे।

समत्थता सम्भवति, तेसञ्च असमत्थता। यदि हि तेसं विना पञ्ञत्तिया अत्थपञ्ञापने असमत्थता सिया, पञ्ञत्तिपञ्ञापने च असमत्थता ति तस्सा अञ्ञा पञ्ञत्ति वत्तब्बा सिया, तस्सा तस्सा ति अनवत्थानं, ततो अत्थविजाननमेव न सिया।

नापि सङ्केतग्गहणं सङ्केतस्स पञ्ञत्तिभावे "अयं इमस्स भासितस्स अत्थो" ति वा, "इमस्सत्थस्स इदं वचनं जोतकं" ति वा। सञ्ञुप्पादमत्ते पन सङ्केतग्गहणे वचनस्स [१८०-म०] वचनत्थविनिमुत्तस्स कप्पने पयोजनं नत्थि। "बुद्धस्स भगवतो वोहारो लोकिये सोते पटिहञ्ञति"[1] "अभिजानासि नो त्वं आनन्द, इतो पुब्बे एवरूपं नामधेय्यं सुतं यदिदं जनवसभो" ति[2], "नामञ्च सावेति कोण्डञ्ञो अहं भगवा" ति[3] आदीहि च पञ्ञत्तिया वचनभावो सिद्धो। तस्मा पाळिया अट्ठकथाय च अविरुद्धो अत्थो विचारेत्वा गहेतब्बो।

ति केवलानि सङ्केतग्गहणवचनग्गहणानि अत्थपञ्ञापने विय पञ्ञत्तिञापने पि असमत्थानि, पञ्ञत्ति च ञाता येव तेसं सहकारीकरणं तंजाननत्थं पञ्ञत्ति-अनन्तरपरिकप्पने च अनवत्थानापत्तीति अत्थाधिगमस्स सम्भवो एव न भवेय्य।

सङ्केतो रूपादीसु न किञ्चि होति, भूतादिनिमित्तं भावनाविसेसञ्च उपादाय वोहरियमाना कसिणादिपञ्ञत्ति विय तं तं सङ्केतितब्बं सङ्केतकरणञ्च उपादाय वोहारमत्तो, तस्स च पञ्ञापिका नामपञ्ञत्तीति यथावुत्तदोसापत्ति दस्सेन्तो "नापि सङ्केतग्गहणं" ति अवोच। ननु च अत्थविजाननासम्भवचोदनेनेव सङ्केतग्गहणाभावो पि दस्सितो ति ? सच्चमेतं, सङ्केते पन आचरियानं मतिभेदो विज्जति। तत्थ एकपक्खिको अयं दोसो ति दस्सनत्थं तस्स विसुं वचनं वुच्चमाना रूपादयो धम्मावचनत्था पञ्ञापितब्बा च, तदभिधायको सद्दो पञ्ञत्तीति। एत्तावता सब्बवोहारो सिज्झतीति अधिप्पायेन "वचन...प०...जनं नत्थी" ति आह। पञ्ञत्तिया वचनभावो सिद्धो पटिहननसोतब्बतादीपकत्ता तेसं पाठानं ति अधिप्पायो। आदि-सद्देन अत्थि केचि बुद्धस्स भगवतो वोहारं सुणन्ति, "निरुत्तिपटिसम्भिदा पच्चुप्पन्नारम्मणा" ति[4] एवमादिं सङ्गण्हाति। तस्मा ति यस्मा "पञ्ञत्तिधम्मा" ति पदस्स यथावुत्तपञ्ञत्तियो अत्थो ति एतस्मिं पक्खे मातिकावण्णनाय विरोधो, अट्ठकथायं अवुत्तता, इमिस्सा पाळिया अननुगमो, सब्बे धम्मा पञ्ञत्तीति निद्दिसितब्बता, पञ्ञत्तिपथपदस्स न-वत्तब्बता, अनवत्थानापत्तितो अत्थविजाननासम्भवो ति अनेके दोसा, विञ्ञत्तिविकारसहितस्स पन सद्दस्स पञ्ञत्तिभावे यथावुत्तदोसाभावो अनेकेसं पाठप्पदेसानञ्च अनुलोमनं, तस्मा। तत्थ युत्तं गहेतब्बं ति अधिप्पायेनाह "पाळि...प०...तब्बो" ति।

---

१. अभि० ४ : २०१ कथावत्थुयं। २. दी० २ : १५५।
३. सं० १ : १९४। ४. अभि० २ : ३६४।

यदि सत्तादयो अविज्जमानपञ्ञत्ति न होन्ति, का पन अविज्जमानपञ्ञत्ति नामा ति? पकासितो अयमत्थो "अविज्जमानानं सत्तादीनं सङ्खा....प०.... अभिलापो अविज्जमानपञ्ञत्ती" ति। सत्तादीनञ्च अविज्जमानत्ता अत्थिता नेव वत्तब्बा, [१३१-सी०] ये च वदेय्युं "रूपादीनि विय अविज्जमानत्ता अविज्जमानता वुत्ता, न नत्थिभावतो" ति, अयञ्च वादो हेवत्थिकथाय[1] पटिसिद्धो, न च रूपं वेदना न होतीति अविज्जमानं नाम होति।

[१९३-म०] यदि सत्ता ति आदिना सद्दस्स पञ्ञत्तिभावे अट्ठकथाय विरोधमाह। एवं पञ्ञत्तिभावे यदि सद्दस्स पञ्ञत्तिभावो, तस्स परमत्थत्तो विज्जमानत्ता रूपादि-अत्थस्स च पञ्ञापनतो विज्जमानपञ्ञत्तिभावो एव सिया, न अविज्जमानपञ्ञत्तिभावो। न हि ते सत्तादयो पञ्ञत्ती ति। एवञ्च अविज्जमानपञ्ञत्तिया अभावो एव सिया। वुत्ता च अट्ठकथायं[2] "अविज्जमानपञ्ञती" ति। इतरो विसयस्स अविज्जमानत्ता तस्स अविज्जमानपञ्ञत्तिभावो ति यथावुत्तविरोधाभावं दस्सेन्तो "अविज्जमानानं" ति आदिमाह। इदानि सत्तादिविसयस्स केनचि पि परियायेन अत्थिताय अभावदस्सनेन तब्बिसयाय पञ्ञत्तिया अविज्जमानञ्ञत्तिभावं येव ववत्थपेति "अयञ्च वादो" ति। विज्जमाना एव सत्तादयो रूपादिसभावाभाववसेन "अविज्जमाना" ति वुच्चन्ति, न सब्बथा अभावतो। तथा हि तथा तथा पञ्ञापियमानभावेन विञ्ञायन्ती ति यथावुत्तरूपो वादो "रूपं अत्थी ति? हेवत्थि हेव नत्थीति। सेवत्थि सेव नत्थीति। न हेवं वत्तब्बे। सेवत्थि सेव नत्थीति। आमन्ता। अत्थट्ठो नत्थट्ठो" ति[3] एवं पवत्ताय हेवत्थिकथाय। यत्थ हि रूपादयो धम्मा रूपादिसभावेन अत्थि, वेदनादिसभावेन नत्थि, तस्मा सब्बमेविदं एवं अत्थि एवं नत्थीति एवंलद्धिके सन्धाय "रूपं अत्थी" ति पुच्छा सकवादिस्स। "हेवत्थि हेव नत्थी" ति विस्सज्जनं परवादिस्स। अथ नं सकवादी यदि रूपमेव एवं अत्थि एवं नत्थीति लद्धि, एवं सन्ते सो एव अत्थि सो एव नत्थि नामा ति पुच्छन्तो "सेवत्थी" ति आह। इतरो तेनेव सभावेन अत्थितं, तेनेव नत्थितं सन्धाय पटिक्खिपति। दुतियं पुट्ठो सकभावेन अत्थितं, परभावेन नत्थितं सन्धाय पटिजानाति। ततो सकवादी "अत्तट्ठो नत्थट्ठो" ति आदिना अत्थिता वा नत्थिता वा अञ्ञमञ्ञविरुद्धा एकस्मिं धम्मे विना कालभेदेन असम्भवत्ता ति किं एकत्तं आपज्जतीति दस्सेन्तो परवादिं निग्गण्हातीति। पटिसिद्धो ति च "रूपं 'रूपं' ति हेवत्थि, रूपं 'वेदना' ति हेव नत्थी" ति आदिना[4] वुत्ताय रूपवेदनासञ्ञासङ्खारविञ्ञाणानं सकभावेन अत्थिताय परभावेन नत्थिताय च पटिसेधनेन सत्तादीनम्पि तथाभावो पटिसेधितो होतीति कत्वा वुत्तं।

१. सेवत्थिकथाय सी०; अभि० ४ : १५० कथा०। २. अभि० अट्ठ० ३ : २६।
३. अभि० ४ : १५२ कथा०। ४. अभि० ४ : १५३ कथा०।

एवं सत्तादयो पि यदि अत्थि, रूपादयो न होन्तीति अविज्जमाना ति न वत्तब्बा। यस्मा पन येसु रूपादीसु चक्खादीसु च तथा तथा पवत्तमानेसु "सत्तो इत्थी रथो घटो" ति आदिका विचित्तसञ्ञा उप्पज्जति, सञ्ञानुलोमानि च अधिवचनानि, तेहि रूपचक्खादीहि अञ्ञो सत्तरथादिसञ्ञावलम्बितो वचनत्थो विज्जमानो न होति, तस्मा सत्तरथादि-अभिलापा "अविज्जमानपञ्ञत्ती" ति वुच्चन्ति, न च ते "मुसा" ति वुच्चन्ति लोकसमञ्ञावसेन पवत्तत्ता। ततो एव ते अभिलापा 'सम्मुतिसच्चं" ति वुच्चन्ति। सो च वचनत्थो सयं अविज्जमानो पि विज्जमानस्स वचनस्सेव वसेन पञ्ञत्तिवोहारं लभति, "सम्मुतिसच्चं ति च वुच्चति यथागहितसञ्ञावसेन पवत्तवचनत्थभावतो। "सम्मुतिञाणं सच्चारम्मणमेव, नाञ्ञारम्मणं" ति[1] कथाय च "पथवीकसिणादि चीवरादि च सम्मुतिसच्चम्ही" ति[2] इमिनाव अधिप्पायेन वुत्तं ति विञ्ञायति। यस्मा रूपादीसु सन्तानेन पवत्तमानेसु एकत्तग्गहणवसेन ते अमुञ्चित्वा पवत्तं सत्तादिग्गहणं चक्खुविञ्ञाणादीनि विय रूपादीसु तेसु खन्धेसु चक्खादीसु च असन्तं अविज्जमानं सत्तरथादिं गण्हाति, तस्मा तं परित्तारम्मणादिभावेन न वत्तब्बं ति वुत्तं। तथा यं खन्धसमूहसन्तानं एकत्तेन गहितं उपादाय "कल्याणमित्तो [१८१-म० पापमित्तो पुग्गलो" ति गहणं पञ्ञत्ति च पवत्तति, तं तदुपा-

---

[१९४-म०] **रूपादयो न होन्ती** ति रूपादिसभावा न होन्ति। **तथा तथा** ति समूहसन्तानादिवसेन। **विचित्तसञ्ञा** परिकप्पवसेन उप्पज्जति। यदि सत्तरथादिसञ्ञावलम्बितो वचनत्थो विज्जमानो न होति, ननु सत्तरथादि-अभिलापा अनरियवोहारा जायन्तीति आह **"न च ते अभिलापा"** ति आदि। अत्तनो वसेन किञ्चि अहोन्तं पञ्ञापकस्स वचनस्सेव वसेन पञ्ञापितब्बत्ता **पञ्ञत्तिवोहारं लभति**। इमिना व अधिप्पायेना ति आदि **"सयं अविज्जमानो"** ति आदिना वुत्तमेवत्थं सन्धायाह। **तं** ति सत्तादिग्गहणं। "ब्रह्मविहारचतुक्कं सत्तपञ्ञत्ति आरब्भ पवत्तत्ता न-वत्तब्बारम्मणं नाम होती" ति आदिना अट्ठकथायं[3] तत्थ तत्थ **न वत्तब्बं** ति वुत्तं। यदि परित्तादिभावेन न वत्तब्बं, कथं अविज्जमानस्स सत्तादिकस्स पच्चयभावो ति आह "**खन्धसमूहसन्तानं**" ति आदि। **तं** ति खन्धसमूहसन्तानं। **तदुपादानभूतं** ति पुग्गलो ति गहणपञ्ञत्तीनं कारणभूतं। यदि पुग्गलसञ्ञाय सेवमानस्स कुसलादि-उप्पत्ति होति, कथं पुग्गलदस्सनं मिच्छादस्सनं ति पटिसिद्धं ति आह **"यस्मा पना"** ति आदि। **पथवीधातु उपलब्भती** ति पुग्गलाभावे विपक्खवसेन निदस्सनमाह इदं हेत्थ अनुमानं। **न रूपादयो विवेचेत्वा पुग्गलो उपलब्भति** तेसं अग्गहणे तथारूपाय बुद्धिया अभावतो सेवनादयो

---

१. अभि० ४ : २७७ कथा०। २. सम्मुतिसच्चं ति-सी०।
३. अभि० अट्ठ० १ : ३२६।

दानभूतं पुग्गलससञ्ञाय सेवमानस्स कुसलाकुसलानं उप्पत्ति होतीति "पुग्गलो पि उपनिस्सयपच्चयेन पच्चयो" ति[1] वुत्तं। यस्मा पन पुग्गलो नाम कोचि भावो नत्थि, तस्सा यथा आपोधातु-आदीनि चित्तेन विवेचेत्वा पथवीधातु उपलब्भति, न एवं रूपादयो खन्धे विवेचेत्वा पुग्गलो उपलब्भति। पटिसेधिता च पुग्गलकथाय पुग्गलदिट्ठि। वजिराय च भिक्खुनिया वुत्तं—

"किं नु सत्तो ति पच्चेसि[2] मारदिट्ठिगतं नु ते।
सुद्धसङ्खारपुञ्जोयं नयिध सत्तुपलब्भती" ति[3]॥

सत्तो ति पन वचनस्स पञ्ञत्तिया पवत्ति दस्सेतुं सा एवमाह—

"यथापि अङ्गसम्भारा, होति सद्दो रथो इति।
एवं खन्धेसु सन्तेसु होति सत्तो ति सम्मुती" ति[3]॥

यदि पुग्गलो न विज्जति कथं पुग्गलग्गहणस्स सारम्मणता सिया ति? अविज्ज-

---

विया ति। पुग्गलो उपलब्भति सच्छिकट्ठपरमत्थेन यो छविञ्ञाणविञ्ञेय्यो ति संसरति मुच्चति वा ति एवं दिट्ठिया परिकप्पितपुग्गलो व पटिसेधितो, न वोहारपुग्गलो ति दस्सेन्तो पटिसे" प०"' दिट्ठी" ति आह।

गाथाय पञ्चसु खन्धेसु रूपं वेदना सञ्ञा चेतना विञ्ञाणं ति एतेसु तं नाम धम्मं सत्तो ति जानासि नु, एतेसु एकम्पि सत्तो ति गण्हितुं नारहतीति दस्सेति। अथ एतेहि अञ्ञो एको सत्तो अत्थीति पच्चेसि। एवम्पि मारदिट्ठिगतं नु ते। नु-सद्दो दिट्ठिगतमेवेति अवधारणत्थो। कस्मा? यस्मा सुद्धसङ्खारपुञ्जोयं। तमेवत्थं विवरति "नयिध सत्तूपलब्भती" ति। यस्मा पच्चक्खतो वा अनुमानतो वा अनुपलद्धितो नत्थि एत्थ कोचि सत्तो नामा ति अधिप्पायो। यदि सत्तो नत्थि, कथं सत्तो संसारमापादीति आदि नीयतीति। किमेत्थ नेतब्बं, सत्तो ति वोहारसत्तो अधिप्पेतो, यस्मा सत्त-सद्दो [१९५–म०] वोहारे पवत्तती ति। दुतियगाथाय सम्बन्धं दस्सेन्तो "सत्तो पना" ति आदिमाह। अङ्गसम्भारा ति अङ्गसम्भारतो अक्खचक्क-ईसादि-अङ्गसम्भारमुपादाया ति अत्थो। सत्तो ति वोहारो।

अविज्जमानस्सा ति अच्चन्तं अविज्जमानस्स ससविञ्ञाणादिकस्स। यदि अच्चन्तं अविज्जमानं, कथं तं गय्हतीति आह "परिकप्पितं" ति। लोकसञ्ञातं घटादि। एत्थ पन यथा अत्तानं आरब्भ उप्पज्जमानकधम्मानं तंसन्ततिपतितानञ्च किलेसुपतापाभावेन अस्सत्थभावपच्चयताय उप्पादादिरहितम्पि निब्बानं "अस्सासनकरसं" ति वुच्चति, एवं अत्तानं आरब्भ

---

१. अभि० ८ : ७–८। २. पच्चेति–सी०।
३. सं० १ : १३५; खु० ८ : ३८१ महानिद्देसे; अभि० ४ : ६८ कथा०।

मानस्स पि आरम्मणस्स गहणतो। अविज्जमानम्पि हि परिकप्पितं लोकसञ्ञातं वा विज्जमानं वा सभावभूतं आरम्मणं गहेत्वाव उप्पज्जनतो सारम्मणता वुत्ता।

पवत्तनकधम्मवसेन उप्पादादिरहिता पि पञ्ञत्ति पवत्ता ति वुत्ता। हेतु-अत्थो वा अन्तोनीतो ति पवत्तिता वोहारिता ति अत्थो दट्ठब्बो। तथा नामपञ्ञत्ति पञ्ञपेतब्बमत्थं गहिता येव पञ्ञापेति, विञ्ञत्ति विय अधिप्पायं विञ्ञापेन्तीति सा गहेतब्बाभावतो वुच्चमानत्थद्वारेन वुच्चमाना ति वुत्ता। पञ्ञापितब्बपञ्ञत्तिया पन वुच्चमानभावे वत्तब्बमेव नत्थि। तथा पकारतो ञापनभावेन ञापेतब्बञापनं ति कत्वा गहेतब्बत्ता येव च तस्सा अनिद्धारितसभावता पटिक्खित्ता दट्ठब्बा। न हि सभावधम्मानं कक्खळफुसनादि सरूपतो सद्देन वचनीयभावं भजति, अपि च खो नेसं कालदेसादिभेदभिन्नानं विनिवत्त-अञ्ञजातियको सजातियसाधारणो पुब्बसङ्केतानुरूपं अज्झारोपसिद्धो सामञ्ञाकारो वचनीयो। तत्था पि न विना केनचि पवत्ति-निमित्तेन सद्दो पवत्ततीति तस्स पवत्तिनिमित्तभूतो लोकसङ्केतसिद्धो तंतंवचनत्थनियतो सामञ्ञाकारविसेसो नाम पञ्ञत्तीति पुब्बाचरिया। सो हि तस्मिं तस्मिं अत्थे सद्दं नामेति, तस्स तस्स वा अत्थस्स नामसञ्ञं करोतीति नामं, पकारेहि ञापनतो पञ्ञत्ति चा ति।

कस्स पन सो आकारविसेसो ति? पञ्ञापेतब्बत्थस्सा ति वेदितब्बं। अनेकाकारा हि अत्था ति। एवञ्च कत्वा तस्सा पञ्ञत्तिया गहेतब्बतावचनञ्च समत्थितं भवति, अवस्सञ्च एतमेवं सम्पटिच्छितब्बं। अञ्ञथा वचनवचनीयभेदानं सङ्करो सिया, सब्बो पि अत्थो सब्बस्स सद्दस्स वचनीयो, सब्बो च सद्दो सब्बस्स अत्थस्स वाचको ति न चेत्थ सङ्केत-ग्गहणेनेव तेसं पवत्ता ति सक्का वत्तुं ववत्थितेसु एव तेसु सङ्केतग्गहणस्स पवत्तितो।

[१९६–म०] अपरे पन "यथा धूमतो अग्गि-अनुमाने न केवलेन धूमेनेव अग्गि विञ्ञायति, धूमस्स पन अग्गिना अविनाभावसङ्खातो सम्बन्धो विञ्ञायमानो धूमेन अग्गि विञ्ञायति, एवं सद्देन अत्थविजानने न केवलेन सद्देन तदत्थो विञ्ञायति। तंतं-सद्दस्स पन तेन तेन अत्थेन अविनाभावसङ्खातो सम्बन्धो विञ्ञायमानो तेन तेन सद्देन अत्थं ञापेतीति वेदितब्बं। अञ्ञथा अग्गहितसम्बन्धेन पि सद्दसवनमत्तेन तदत्थो विञ्ञायेय्या ति। सो यमेत्थ यथावुत्तरूपो सम्बन्धो, सो तस्स तस्स अत्थस्स सञ्ञापनभावेन नामं ति परमत्थतो अभावा लोकसङ्केतवसेन लोकसङ्केतो ति वा सिद्धो ञातो ति लोकसङ्केतसिद्धो ति, सद्देन पकासिय-मानानं अत्थप्पकारानं अधिगमहेतुताय पकारतो ञापनतो पञ्ञत्ती ति च वुत्तो" ति वण्णयन्ति।

सङ्खतासङ्खतविनिमुत्तस्स पि ञेय्यविसेसस्स अभावे घटादिसद्दाभिधेय्या विय पथवीफस्सादि-सद्दवचनीयो पि न लब्भति येवा ति सब्बवोहारलोपो सिया। यस्मा च रूपारूपधम्मा पबन्धसङ्खाततंतंविसेसाकारवसेनेव पवत्तन्ति, न केवला, तस्मा तेसं ते सण्ठानसमूह-अवत्था-

सारम्मणा ति हि वचनं चित्तचेतसिकानं आरम्मणेन विना अप्पवत्तिञ्ञेव दीपेति, न तेहि गहितस्स आरम्मणस्स विज्जमानतं अविज्जमानतं वा ति। अयं सङ्खता-

---

विसेसाकारा यदि पि परमत्थतो किञ्चि न होन्ति, परमत्थतो पन विज्जमानानं रूपादीनं उपादानानं वसेन विज्जमानभावं लभित्वा तंतं-गहणानुरूपं तंतं-अभिलापाधिकरणं भवति। उपादाय पञ्ञत्ति हि उपादानतो यथा अञ्ञा अनञ्ञा ति च न वत्तब्बा, एवं सब्बथा अत्थि नत्थीति च न वत्तब्बा। तयो पि हि एते सन्ता येवा ति एवं ताव मातिकावण्णनाय न कोचि विरोधो। सङ्खायति संकथीयतीति सङ्खा ति अयमत्थो कथेतब्बभावेन वचनत्थे येव निरूळ्हो, न वचनस्मि ति वचनपक्खस्स उजुकता सम्भवति। वचनपक्खो येव पाळि-अनुगतो, न परम्परागतो यथावुत्तो अत्थो ति कुतो पनेतं लब्भा। नहि अनीतो अत्थो पाळि-अननुगतो, नापि सब्बा पाळि-नीतत्था एवा ति यथावुत्ता दुविधा पञ्ञत्तियो अट्ठकथायं छहि पञ्ञत्तीहि यथासम्भवं वुत्ता येवा ति सिद्धमेतं अत्थीति न वत्तब्बा ति।

यदि परमत्थतो अत्थितापटिसेधो, इट्ठमेतं। अथ वोहारतो, सत्तरथघटादीहि सत्त-रथादिवचनप्पयोगो येव न सम्भवेय्या ति। [१९७-म०] नहि वचनीयरहितो वचनप्पयोगो अत्थीति। परमत्थधम्मानं असभावधम्मभूताय पञ्ञत्तिया विभागदस्सनत्था अधिवचनादिदुकत्तय-देसना ति न परमत्थधम्मानं रूपादीनं पञ्ञत्तिभावापत्तीति। न च पञ्ञत्तिपथपञ्ञत्तिधम्म-निद्देसानं अविसेसवचनं युत्तं, सद्दस्सेव पन पञ्ञत्तिभावे सिया काचि तेसं विसेसमत्ता। पञ्ञापितब्बस्स अपरमत्थसभावस्सेव पञ्ञत्तिभावो अधिप्पेतो ति न सब्बो पञ्ञत्तिपथो पञ्ञत्तिसद्देन वुत्तो, पञ्ञत्ति च पञ्ञापेतब्बभावेन वुत्ता ति। पञ्ञत्तिपथपदं वत्तब्बमेव। एवञ्चेतं इच्छितब्बं। इतरथा सदस्स च पञ्ञापितब्बताय पञ्ञत्तिपथभावो ति पञ्ञत्तिपदं न वत्तब्बं सिया ति च सक्का वत्तुं, निक्खेपकण्डे विभत्ता येव पञ्ञत्ति "पुरिसो मागण्डियो" ति एत्था पि दस्सिता ति न न सक्का वत्तुं। तथा पि हि यथावुत्त-उपादायपञ्ञत्तिनाम-पञ्ञत्तीनं सभावसम्भवतो ति सङ्खादिसद्दानं समानत्थता पि तेसं मतिमत्तमेव, विञ्ञत्ति विय अधिप्पायं विञ्ञापेन्ता सयं ञाता येव नामपञ्ञत्ति पञ्ञापेतब्बमत्थं पञ्ञापेति गहितसरूपताय पदीपो विय रूपगतविधंसने ति न पञ्ञत्ति-अन्तरपरिकप्पनेन पयोजनं अत्थि पञ्ञापेतब्बत्थ-पञ्ञापने, नामपञ्ञत्तिपञ्ञापने पन उपादानभेदभिन्ना उपादायपञ्ञत्ति विय तंतंवचनवचनत्थ-भेदभिन्ना नामपञ्ञत्तीति अञ्ञा पञ्ञत्ति इच्छिता एव। न च अनवत्थानदोसो तंतंवचनस्स तदत्थविभावने सहकारीकारणभावेन पटिनियतसरूपत्ता। एतेन सङ्केतग्गहणाभावो पि पटिसिद्धो दट्ठब्बो, तथा नामपञ्ञत्तिया पयोजनाभावो। दस्सितप्पयोजना हि सा पुब्बे ति।

"वोहारे लोकियसोते पटिहञ्ञती" ति आदीसु सोतब्बस्स सद्दस्स वसेन तब्बिसयभूता वोहारादयो पटिहननसोतब्बतापरियायेन वुत्ता ति दट्ठब्बा। सद्दो येव वा तत्थ वोहारादि-

सङ्खत- [१३२-सी०] विनिमुत्तस्स अत्थितापटिसेधं सब्बथा अनुवत्तन्तानं विनिच्छयो।

नामकरणट्ठेना ति अञ्ञं अनपेक्खित्वा सयमेव अत्तनो नामकरणसभावतो ति अत्थो। यं हि परस्स नामं करोति, तस्स च तदपेक्खत्ता अञ्ञापेक्खं नामकरणं ति नामकरणसभावता न होति। तस्मा महाजनस्स ञातीनं गुणानञ्च सामञ्ञनामादिकारकानं नामभावो नापज्जति। यस्स च अञ्ञेहि नाम करीयति, तस्स च नामकरणसभावता नत्थीति नत्थि येव नामभावो, वेदनादीनं पन सभावसिद्धत्ता वेदनादिनामस्स नामकरणसभावतो नामता वुत्ता। पथवी-आदिनिदस्सनेन नामस्स सभावसिद्धतं येव निदस्सेति, न नामभावसामञ्ञं, निरुळ्हत्ता पन नामसद्दो अरूपधम्मेसु एव वुत्तो, न पथवी-आदीसू ति तेसं नामभावो मातिकाय च पथवी-आदीनं [१८२-म०] नामतानापत्ति वुत्ता व। न हि पथवी-आदिनामं विजहित्वा केसादिनामेहि रूपधम्मानं विय वेदनादिनामं विजहित्वा अञ्ञेन नामेन अरूपधम्मानं वोहरितब्बेन पिण्डाकारेन प्रवत्ति अत्थीति।

सहचारिताय तथा वुत्तो। न हि सक्का सब्बत्थ एकरसा देसना पवत्तीति वत्तुं। तथा हि कत्थचि सुखा दुक्खा, सुखा पि वेदना दुक्खा ति वुच्चन्ति, दुक्खा सुखा, दुक्खा पि सुखा ति, एवं यथावुत्ता दुविधा पि पञ्ञत्ति अधिवचनादिपाठस्स अत्थभावेन अट्ठकथायं वुत्ता येवा ति। अयं सङ्खतासङ्खतविनिमुत्तं ञेय्यविसेसं इच्छन्तानं वसेन विनिच्छयो।

सति पि परेसं सामञ्ञादिनामकारकानं नामकरणभावे परानपेक्खताय ततो अतिविय युत्तो इध नामकरणसभावो [१९८-म०] उक्कंसपरिच्छेदेन नामकरणत्थो ति अधिप्पेतो ति दस्सेतुं "अञ्ञं अनपेक्खित्वा" ति आदिमाह। नामकरणसभावता न होति असभाविकताय कदाचिदेव पवत्तितो चा ति अधिप्पायो। सभावसिद्धत्ता ति वेदनादीनं वेदनादिनामकरणधम्मतं आह। यदि वेदनादीनं केनचि अकतं सकनामं आदाय येव पवत्तनतो ओपपातिकनामानं नामकरणट्ठेन नामभावो, एवं सति पथवी-आदीनम्पि नामभावो आपज्जति, अञ्ञथा पथवी-आदि निदस्सनमेव न सिया ति अनुयोगं मनसिकत्वा आह "पथवी-आदिनिदस्सनेना" ति आदि। एकदेससामञ्ञेन हि यथाधिप्पेतेन उपमा होति, न सब्बसामञ्ञेना ति। एवम्पि यदि सभावसिद्धनामत्ता वेदनादयो नामं, पथवी-आदीनम्पि अनिवत्तनीयो नामभावो ति आह "निरुळ्हत्ता" ति आदि। तेन यं निमित्तं वेदनादीसु नामसद्दप्पवत्ति, सति पि तदञ्ञेसं तंनिमित्तयोगे गो-सद्दो विय कुक्कुटादिसत्तपिण्डे निरुळ्हतो वेदनादीसु नाम-सद्दो पवत्तो ति दस्सेति। तथा हि अनेकेसु सुत्तपदेसेसु तेसं येव नामवोहारो दिस्सति। नामतानापत्ति वुत्ता केसकुम्भादिनामन्तरापज्जनतो। एतमेवत्थं निदस्सनभावेन "न ही" ति आदिना विवरति। यदि पि समूहादिघनविनिब्भोगाभावतो वेदनादि-अरूपधम्मेसु पि पिण्डाकारेन गहणं पवत्तति, तं पन येभुय्येन अत्थातिपरिकप्पमुखेन एकधम्मवसेनेव, न समूहवसेना ति वुत्तं "अञ्ञेन....प....नत्थी" ति।

अथ वा रूपधम्मा चक्खादयो रूपादयो च तेसं पकासकपकासितब्बभावतो विना नामेन पाकटा होन्ति, न एवं अरूपधम्मा ति अधिवचनसम्फस्सो विय नामायत्त-गहणीयभावेन "नामं" ति वुत्ता, पटिघसम्फस्सो पि न चक्खादीनि विय नामेन विना पाकटो ति "नामं" ति वुत्तो। अरूपताय वा अञ्ञनामसभागत्ता सङ्गहितोयं, अञ्ञफस्ससभागत्ता वा। वचनत्थो पि हि "रूपयतीति रूपं नामयतीति नामं" ति इध पच्छिमपुरिमानं सम्भवति। **रूपयती** ति विना पि नामेन अत्तानं पकासयती ति अत्थो, **नामयती** ति नामेन विना अपाकटभावतो अत्तनो पकासकं नामं करोतीति अत्थो। **आरम्मणाधिपतिपच्चयताया** ति सति पि रूपस्स आरम्मणाधिपतिपच्चयभावे न परमस्सासभूतं निब्बानं विय सातिसयं तं नामनसभावेन पच्चयो ति निब्बानमेव "नामं" ति वुत्तं।

वट्टमूलसमुदाचारदस्सनत्थं ति सत्तानं वट्टमूलसमुदाचारो नाम अविज्जा च भवतण्हा च, तं-दस्सनत्थं ति अत्थो। तत्थ समुदाचरतीति समुदाचारो, वट्टमूलमेव समुदाचारो वट्टमूलसमुदाचारो, वट्टमूलदस्सनेन वट्टमूलानं पवत्ति दस्सिता होतीति वट्टमूलानं समुदाचारस्स दस्सनत्थं ति पि अत्थो।

एकेकस्मिञ्च अत्ता ति च लोको ति च गहणविसेसं उपादाय **"अत्ता च लोको चा"** ति वुत्तं। एकं वा खन्धं अत्ततो गहेत्वा अञ्ञं अत्तनो उपभोगभूतो लोको ति

पकासकपकासितब्बभावो विसयिविसयभावो एव। **अधिवचनसम्फस्सो** मनोसम्फस्सो। सो नाममन्तरेन गहेतुं असक्कुणेय्यताय पाकटो ति निदस्सनभावेन वुत्तो। **"अधिवचनसम्फस्सो विया"** ति वचनेन मनोसम्फस्सतप्पकारानमेव नामभावो सिया, न पटिघसम्फस्सतप्पकारानं ति आसङ्काय निवत्तनत्थं **"पटिघसम्फस्सो पी"** ति आदिमाह। तत्थ पञ्चविञ्ञाणसहगतो फस्सो पटिघसम्फस्सो। पि-सद्दो सम्भावने। इदं वुत्तं होति—विसयीविसयसंघट्टनसमुप्पत्तिया अञ्ञफस्सको ओळारिको पि पटिघसम्फस्सो न रूपधम्मा विय विभूताकारो, ततो नामायत्तगहणियभावो नामस्सेवा ति। **अरूपताय वा** ति आदिना सामञ्ञतो विसेसतो च पटिघसम्फस्सस्स उपचार-वसेन नामभावमाह। **पच्छिमपुरिमानं** ति "नामञ्च रूपञ्चा" ति इमं अनुपुब्बिं सन्धाय वुत्तं। **सति पि रूपस्सा** ति आदिना [१९९-म०] नामवोहारहेतुं अनञ्ञसाधारणं निब्बानस्स अधिपतिपच्चयभावं एव विभावेति, यतो अरियानं अञ्ञविसयविनिस्सटं निन्नपोणपब्भारभावेन असङ्खतधातुयं एव चित्तं पवत्तती ति।

वट्टस्मिं आदीनवपटिच्छादनतो तदस्सादनाभिनन्दतो च वट्टस्स मूलं पधानकारणं ति **वट्टमूलं**।

एकेकस्मिं रूपादिके यथाभिनिविट्ठे वत्थुस्मिं अहंमानाधारनिमित्ततं कुसलाकुसलतब्बिपाक-

गण्हन्तस्स अत्तनो अत्तानं "अत्ता" ति गहेत्वा परस्स अत्तानं "लोको" ति गण्हन्तस्स वा वसेन **"अत्ता च लोको चा"** ति वुत्तं। तं **भविस्सती** ति तं द्विधा पि गहितं खन्धपञ्चकं भविस्सतीति निविट्ठा परामसन्तीति अत्थो।

सह सिक्खितब्बो धम्मो सहधम्मो, तत्थ भवं **सहधम्मिकं**। कम्मत्थे वत्तमानतो दोवचस्ससद्दतो आय-सद्दं अनञ्ञत्थं[1] कत्वा "दोवचस्सायं" ति वुत्तं ति अधिप्पायेन **"दुब्बचस्स कम्मं"** ति आह। दोवचस्सस्स वा अयनं पवत्ति **दोवचस्सायं**। वचनस्स [१३३–सी०] पटिविरुद्धवचनं [१८३–म०] **पटाणिकगहणं**। गुणेहि गरूसु गारवेन वसनं **गरुवासो**। जाति-आदीहि जेट्ठकेसु पटिस्सुणितब्बेसु वसनं **सजेट्ठकवासो**। ओत्तप्पितब्बा वा **गरुनो**। हिरियितब्बा **जेट्ठका**। याय चेतनाय दुब्बचो होति, सा दोवचस्सता भवितुं अरहतीति **"सङ्खारक्खन्धो येवा"** ति आह।

दु-सद्देन युत्तं नाम **दुन्नामं**। अनुपसङ्कमन्तस्स पि अनुसिक्खनं सेवना ति अधिप्पायेन **"भजना ति उपसङ्कमना"** ति आह। सब्बतो भागेना ति कायवाचाचित्तेहि आवि **चेव रहो च**।

विनयो ति विभङ्गखन्धका वुत्ता। वत्थुवीतिक्कमतो पुब्बे परतो च आपत्ति आपज्जन्तो नाम न होतीति सह वत्थुना आपत्तिं परिच्छिन्दति। तेनाह **"सह वत्थुना ·· प० ··· आपत्तिकुसलता नामा"** ति। **सह कम्मवाचाया** ति अब्भानतिणवत्थारककम्मवाचाय "अहं भन्ते, इत्थन्नामं आपत्तिं आपज्जिं" ति आदिकाय च। सहेव हि कम्मवाचाय आपत्तिवुट्ठानञ्च परिच्छिन्दती ति। आपत्तिया वा कारणं **वत्थु**, वुट्ठानस्स कारणं **कम्मवाचा** ति कारणेन सह फलस्स जाननवसेन **"सह वत्थुना सह कम्मवाचाया"** ति वुत्तं।

अयमेवत्थो **सह परिकम्मेना** ति एत्थ वुत्तो। **वुट्ठानकपञ्ञाया** ति वुट्ठानस्स

लोकाधारतञ्च समारोपेत्वा पवत्तग्गहणविसेसो। या काचि दिट्ठि निविसमाना धम्मसभावं अतिच्चपरामसनाकारेनेव निविसतीति वुत्तं "परामसन्तीति अत्थो" ति।

चेतनाप्पधानो सङ्खारक्खन्धो ति कत्वा "याय चेतनाया" ति आदि वुत्तं।

दुन्नामं गारय्हनामं। अनुपसङ्कमन्तस्सा ति आदिना सेवनभजनानं विसेसमाह।

आपत्ति-आपत्तिवुट्ठानपरिच्छेदजाननूपायदस्सनं सह वत्थुना सह कम्मवाचायादिवचनं ति इममत्थं दस्सेन्तो "वत्थुवीतिक्कमतो" ति आदिमाह। "आपत्तिकुसलता आपत्तिवुट्ठानकुसलता" ति[2] हि वुत्तं ति। कारणजाननेन फलं सुट्ठु ञातं होतीति तं दस्सेतुं "आपत्तिया वा"

---

1. अनञ्ञत्तं–सी०। 2. अभि० १ : १६ धम्मसंगणियं।

कारणभूताय परिकम्मपञ्ञाय।

धातुविसया सब्बा पि पञ्ञा **धातुकुसलता,** तदेकदेसा मनसिकारकुसलता ति अधिप्पायेन पुरिमपदे पि **उग्गहमनसिकारजाननपञ्ञा** वुत्ता। पुरिमपदे वा वाचुग्गताय धातुपाळिया मनसिकरणं "मनसिकारो" ति वुत्तं। तत्थ उग्गण्हन्ती मनसिकरोन्ती धातुपाळिया अत्थं सुणन्ती गन्थतो च अत्थतो च धारेन्ती "अयं चक्खुधातु नामा" ति आदिना सभावतो अट्ठारसेवा ति गणनतो च परिच्छेदं जानन्ती च पञ्ञा **उग्गहपञ्ञादिका** वुत्ता। पच्छिमपदे पञ्चविधा पि सा पञ्ञा उग्गहो ति ततो च पवत्तो अनिच्चादिमनसिकारो "उग्गहमनसिकारो" ति वुत्तो, तस्स जाननं पवत्तनमेव, यथापवत्तं वा उग्गहं, एवमेव पवत्तो उग्गहो ति जाननं **उग्गहजाननं।** मनसिकारो पि "एवं पवत्तेतब्बो एवञ्च पवत्तो" ति जाननं **मनसिकारजाननं।** तदुभयम्पि [१८४-म०] मनसिकारकोसल्लं ति वुत्तं। उग्गहो पि हि मनसिकारसम्पयोगतो मनसिकारनिरुत्तिं लद्धुं युत्तो ति यो च मनसि कातब्बो, यो च मनसिकरणुपायो, सब्बो सो मनसिकारो ति वत्तुं वट्टतीति। तत्थ च कोसल्लं **मनसिकारकुसलता** ति।

तीसु पि वा… प… वट्टती ति तस्सा च उग्गहादिभावो वुत्तो। **सम्मसनं** पञ्ञा, सा मग्गसम्पयुत्ता अनिच्चादिसम्मसनकिच्चं साधेति निच्चसञ्ञादिपजहनतो। **मनसिकारो** सम्मसनसम्पयुत्तो तथेव अनिच्चादिमनसिकारकिच्चं मग्गसम्पयुत्तो साधेति। तेनाह **"सम्मसनमनसिकारा लोकियलोकुत्तरमिस्सका"** ति। **इमिना पन पच्चयेन इदं होती** ति एवं अविज्जादीनं सङ्खारादिपच्चयुप्पन्नस्स पच्चयभावजाननं **पटिच्चसमुप्पादकुसलता** ति दस्सेति।

अम्बबीजादीनि अनुपादिन्नकदस्सनत्थं वुत्तानि। सोतविञ्ञाणादीनं विसभागा अननुरूपा अनुप्पादका येव चक्खादयो [१३४-सी०] **"विसभागपच्चया"** ति वुत्ता, तेहि अनुप्पज्जमानानेव च सोतविञ्ञाणादीनि **"विसभागपच्चयसमुप्पन्नधम्मा"** ति। सोतविञ्ञाणेन वा विसभागस्स चक्खुविञ्ञाणस्स पच्चयो ति विसभागपच्चयो, चक्खायतनस्स विसभागेन सोतायतनेन पच्चयेन समुप्पन्नो **विसभागपच्चयसमुप्पन्नो।**

अज्जवनिद्देसे **अज्जवो अज्जवता** ति उजुता उजुकता इच्चेव वुत्तं होतीति अज्जवमद्दवनिद्देसेसु उजुकतामुदुतानिद्देसेहि विसेसं मद्दवनिद्देसे वुत्तं **"नीचचित्तता"** ति

ति आदिमाह।

तस्सा ति मनसिकारकुसलताय।

अनुप्पज्जमानानेव अनुप्पज्जन्तानेव।

पदमाह। तत्थ "नीचचित्तता मुदुता" ति पुन मुदुतावचनं नीचचित्तताय विसेसनत्थं। ओमानो पि हि नीचचित्तता होति न पन मुदुता ति।

परेसं दुक्कटं दुरुत्तञ्च पटिविरोधाकरणेन **अत्तनो उपरि आरोपेत्वा वासेन्ति। चित्तस्स सकमनता** ति चित्तस्स अब्यापन्नो सको मनोभावो ति अत्थो। चित्तं ति वा चित्तप्पबन्धं एकत्तेन गहेत्वा तस्स अन्तरा उप्पन्नेन पीतिसहगतमनेन सकमनत्तं आह। अत्तमनो वा पुग्गलो तस्स भावो अत्तमनता। सा न सत्तस्सा ति पुग्गलदिट्ठि-निवारणत्तं **"चित्तस्सा"** ति वुत्तं।

[१८५–म०] कायवाचाहि कत्तब्बस्स अकरणेन असादियितब्बस्स सादियनेन **च मनसा पि आचरति** एव, इन्द्रियसंवरादिभेदनवसेन वा एतं वुत्तं ति वेदितब्बं।

सदोसवणे रुक्खे निय्यासपिण्डियो, अहिच्छत्तकानि वा उट्ठितानि **"अण्डकानी"** ति वदन्ति। फेग्गुरुक्खस्स पन कुथितस्स अण्डानि विय उट्ठिता चुण्णपिण्डियो गण्ठियो वा **"अण्डकानी"** ति वेदितब्बा। पदुमनाळं विय सोतं घंसयमाना विय पविसन्ती **कक्कसा** दट्ठब्बा। कोधेन निब्बत्ता तस्स परिवारभूता **कोधसामन्ता। पुरे** संवड्ढ-नारी पोरी, सा विय सुकुमारा मुदुका वाचा पोरी विया ति **पोरी। तत्था** ति "भासिता होती" ति वुत्ताय किरियाया ति पि योजना सम्भवति, **तत्थ** वाचाया ति वा। **सण्हवाचता** ति आदिना तं वाचं पवत्तयमानं चेतनं दस्सेति।

आमिसालाभेन यं छिद्दं होति, तं आमिसालाभेन **"छिद्दं"** ति वुत्तं। **द्वे येव ही** ति यथावुत्तानि आमिसधम्मालाभेहि पवत्तमानानि छिद्दानि आह। **गमनसभागेना** ति गमनमग्गस्स अनुच्छविकदिसाभागेन। **सङ्गहपक्खे ठत्वा** ति सङ्गहं करोमिच्चेव कथे-तब्बं, न लाभसक्कारकामतादीहीति अत्थो। अवस्सं कातब्बं **किच्चं,** इतरं **करणीयं।** अब्भानतो अञ्ञं आपत्तिवुट्ठानं **"वुट्ठानं"** ति वुत्तं।

ससम्भारकथा ति दस्सनस्स कारणसहिता ति अत्थो, ससम्भारस्स **वा दस्स-नस्स** कथा **ससम्भारकथा। यस्स चक्खुन्द्रियासंवरस्स हेतू** ति वत्वा पुन **"तस्स चक्खुन्द्रियस्स सतिकवाटेन पिदहनत्थाया"** ति वुत्तं, न असंवरस्सा ति। तदिदं यं

अकरणेन अनादरवसेना ति अधिप्पायो।

फेग्गुरुक्खस्स सिग्गु-आदिकस्स।

चक्खुन्द्रियासंवरस्सा ति चक्खुन्द्रियासंवरणस्स। **असंवुतचक्खुन्द्रियस्सेव हेतू** ति चक्खु-द्वारिकस्स अभिज्झादि-अन्वास्सवनस्स [२००–म०] तंद्वारिकविञ्ञाणस्स विय **चक्खुन्द्रियं** पधान-कारणं। सति हि असंवुतत्ते चक्खुन्द्रियस्स ते ते अन्वास्सवन्तीति असंवरियमानचक्खुन्द्रियहेतुको

चक्खुन्द्रियासंवरस्स हेतु अभिज्झादि-अन्वास्सवनं दस्सितं, तं असंवुतचक्खुन्द्रियस्सेव हेतुपवत्तं दस्सितं ति कत्वा वुत्तं ति वेदितब्बं, **यत्वाधिकरणं** ति हि यस्स चक्खुन्द्रियस्स कारणा ति अत्थो । कस्स च कारणा ति? असंवुतस्स । किञ्च असंवुतं? यस्स चक्खुन्द्रियासंवरस्स हेतु [१३५-सी०] अन्वास्सवन्ति तदुपलक्खितं, तस्स संवराया ति अयमेत्थ योजना ।

जवनक्खणे पन दुस्सील्यं वा ति आदि पुन अवचनत्थं इधेव सब्बं वुत्तं ति छसु द्वारेसु यथासम्भवं योजेतब्बं । न हि पञ्चद्वारे कायवचीदुच्चरितसङ्खातं दुस्सील्यं अत्थीति ।

यथा किं ति आदिना नगरद्वारे असंवरे [१८६-म०] सति तंसम्बन्धानं घरादीनं असंवुतता विय जवने असंवरे सति तंसम्बन्धानं द्वारादीनं असंवुतता ति एवं अञ्ञेसं संवरे, अञ्ञेसं संवुततासामञ्ञमेव निदस्सेति, न पुब्बापरसामञ्ञं अन्तो बहि सामञ्ञं वा । सति वा द्वारभवङ्गादिके पुन उप्पज्जमानं जवनं बाहिरं विय

सो असंवरो तथावुत्तो ति अट्ठकथाय अधिप्पायं दस्सेति । इदानि यथावुत्ते अधिप्पाये ठत्वा "यत्वाधिकरणं ति हि" ति आदिना पाळिया योजनं दस्सेति । कस्स चा ति पकारं पुच्छति, कथंविधस्स कथंसण्ठितस्सा ति अत्थो । न हि सरूपे वुत्ते पुन सरूपपुच्छाय पयोजनं अत्थि । अन्वास्सवन्ति अभिज्झादयो । तदुपलक्खितं ति अन्वास्सवूपलक्खितं चक्खुन्द्रियं असंवुतं ति योजना ।

यथासम्भवं ति दुस्सील्यासंवरो मनोद्वारवसेन, सेसासंवरो छद्वारवसेन योजेतब्बो । मुट्ठस्सच्चादीनं सतिपटिपक्खा कुसलधम्मादिभावतो सिया पञ्चद्वारे उप्पत्ति, न त्वेव कायिकवाचसिकवीतिक्कमभूतस्स दुस्सील्यस्स तत्थ उप्पत्ति पञ्चद्वारिकजवनानं अविञ्ञत्तिजनकत्ता ति तमेव यथासम्भवं "न हि पञ्चद्वारे" ति आदिना विवरति ।

यथा किं ति येन पकारेन जवने उप्पज्जमानो असंवरो "चक्खुन्द्रिये असंवरो" ति वुच्चति, तंनिदस्सनं किं ति अत्थो । तत्थायं पवत्तिक्कमो—पञ्चद्वारे रूपादि-आरम्मणे आपाथगते नियमितादिवसेन कुसलाकुसलजवने उप्पज्जित्वा भवङ्गं ओतिण्णे मनोद्वारिकजवनं तं येवारम्मणं कत्वा भवङ्गं ओतरति, पुन तस्मिं येव द्वारे "इत्थिपुरिसो" ति आदिना ववत्थपेत्वा जवनं भवङ्गं ओतरति । पुन वारे पसादरज्जनादिवसेन जवनं जवति । पुन यदि तं आरम्मणं आपाथं आगच्छति, तंसदिसमेव पञ्चद्वारादीसु जवनं तदा उप्पज्जमानकं सन्धाय "एवमेव जवने दुस्सील्यादीसु उप्पन्नेसु तस्मिं असंवरे सति द्वारम्पि अगुत्तं" ति आदि वुत्त । अयं पन उक्कट्ठनयो परिचितारम्मणं सन्धाय वुत्तो, अपरिचिते अन्तरन्तरा पञ्चद्वारे उप्पज्जित्वा तदनुरूपं मनोद्वारे पि उप्पज्जतीति । द्वारभवङ्गादीनं जवनेन सम्बन्धो एकसन्ततिपरियापन्नतो दट्ठब्बो ।

कत्वा नगरद्वारसमानं वुत्तं, इतरञ्च अन्तोनगरद्वारसमानं। जवने वा असंवरे उप्पन्ने ततो परं द्वारभवङ्गादीनं असंवरहेतुभावापत्तितो नगरद्वारसदिसेन **जवनेन** पविसित्वा दुस्सील्यादिचोरानं द्वारभवङ्गादिमूसनं कुसलभण्डविनासनं कथितं ति दट्ठब्बं।

इमिना आहारेन नित्थरणत्थेन अत्थिकभावो **इदमत्थिकता**। **आहारपरिभोगे असन्तुस्सना** ति आहारपरिभोगक्खणे पवत्ता असन्तुस्सना, दवत्थादि-अभिलासो ति अत्थो। एत्थ च **असन्तुट्ठिता** लोभो, **अमत्तञ्ञुता अप्पटिसङ्खा** च मोहो ति इमे द्वे धम्मा **"भोजने अमत्तञ्ञुता"** ति वेदितब्बा।

सति द्वारभवङ्गादिके ति पच्चयभावेन पुरिमनिप्फन्नं जवनकाले असन्तम्पि भवङ्गादि चक्खादि विय फलनिप्फत्तिया सन्तञ्ञेव नामा ति वुत्तं। न हि धरमानं येव सन्तति वुच्चतीति। **बाहिरं विय कत्वा** ति परमत्थतो जवनस्स बाहिरभावे इतरस्स च अब्भन्तरभावे असति पि [२०१–म०] "पभस्सरमिदं भिक्खवे, चित्तं, तञ्च खो आगन्तुकेहि उपक्किलेसेहि उपक्किलिट्ठं" ति आदिवचनतो[1] आगन्तुकभूतस्स कदाचि कदाचि उप्पज्जमानस्स जवनस्स बाहिरभावो तब्बिधुरस्स इतरस्स अब्भन्तरभावो परियायतो वुत्तो ति दस्सेति। **असंवरहेतुभावापत्तितो** ति द्वारादीनं असंवरहेतुभावापज्जनस्स पाकटभावं सन्धायाह। उप्पन्ने हि असंवरे द्वारादीनं तस्स हेतुभावो पञ्ञायतीति। **द्वारभवङ्गादिमूसनं** ति द्वारभवङ्गादीसु मूसनं। यस्मिं हि द्वारे असंवरो उप्पज्जति, सो तत्थ द्वारादीनं संवरूपनिस्सयभावं उपच्छिन्दन्तो येव पवत्ततीति। तेनेवाह **"कुसलभण्डविनासनं"** ति।

एत्थ च "चक्खुना रूपं दिस्वा" ति आदिपाळियं संवरो, संवरितब्बं, संवरणूपायो, यतो च सो संवरो, यत्थ च सो संवरो ति इमं पभेदं दस्सेत्वा योजेतब्बा। कथं? "रक्खति····प०···· संवरं आपज्जती" ति एतेन **संवरो** वुत्तो। सति पच्चुट्ठपेती ति अयं हेत्थ अत्थो ति। **चक्खादि संवरितब्बं**। न निमित्तग्गाही होति नानुब्यञ्जनग्गाहीति **संवरणूपायो**। "यत्वाधिकरणं" ति आदिना संवरणावधि। रूपादयो **संवरविसयो** ति। किञ्च पटिसङ्खाभावना बलसङ्गहितभावेन दुविधो पि इन्द्रियसंवरो? तत्थ पुरिमेन विसयेसु आदीनवदस्सनं, इतरेन आदीनवप्पहानं। तथा पुरिमेन परियुट्ठानप्पहानं, इतरेन अनुसयप्पहानं। तथा पुरिमो लोकियमग्गसङ्गहितो, दुतियो लोकुत्तरमग्गसंगहितो ति अयम्पि विसेसो वेदितब्बो।

दवत्थादि अभिलासो ति दवो एव अत्थो पयोजनं ति दवत्थो, सो आदि येसं ते दवत्थादयो। तेसु, तेसं वा अभिलासो, दवो वा अत्थो एतस्सा ति दवत्थो, तदादिको दवत्थादि, को पन सो ति आह "अभिलासो" ति। **आहारपरिभोगे असन्तुस्सना** ति आहारपरिभोगे अतित्ति। बहुनो उळारस्स च पत्थनावसेन पवत्ता भिय्योकम्यता असन्तुस्सना ति एवमेत्थ अत्थो युज्जति।

---

1. अं० १ : १० पि०।

"सेय्योहमस्मी" ति आदिना पवत्तमानो व **मानमदो**। असद्धम्मसेवनासमत्थत्तं निस्साय पवत्तो मानो, रागो एव वा **पुरिसमदो**। सक्करसप्पिखीरादीनि योजेत्वा बहलपक्कं भोजनं **पिण्डरसभोजनं**, बहलपक्कं वा मंसरसादिभोजनं। **मन्दं** ति अप्पं। **ठितिया** ति ठितत्थं। तदत्थञ्च भुञ्जन्तो यस्मा "कायं ठपेस्सामी" ति भुञ्जति, तस्मा **"ठपनत्थाया"** ति वुत्तं। **अभुत्तपच्चया उप्पज्जनका** ति इदं खुदाय[1] विसेसनं यस्सा अप्पवत्ति भोजनेन कातब्बा तस्सा दस्सनत्थं। **सकलं सासनं** ति पाळिधम्मम्पि सब्ब-कुसले पि सङ्गण्हाति। अभुत्तपच्चया उप्पज्जनकवेदना, भुत्तपच्चया न उप्पज्जनक-वेदना ति एतासं को विसेसो? पुरिमा यथापवत्ता जिघच्छानिमित्ता वेदना। सा हि अभुञ्जन्तस्स भिय्यो पवत्तनवसेन उप्पज्जतीति। पच्छिमा पि खुदानिमित्ता व अङ्गदाहसूलादिवेदना अप्पवत्ता। सा हि भुत्तपच्चया पुब्बे अनुप्पन्ना व न उप्पज्जिस्सति। विहिंसानिमित्तता चेतासं विहिंसाय विसेसो।

यात्रा ति यापना वुत्ता, पुब्बे पि "यापनाया" ति वुत्तं, को एत्थ विसेसो? पुब्बे "यापनाया ति जीवितिन्द्रिययापनत्थाया" ति वुत्तं, इध पन चतुन्नं इरिया-

मज्जनाकारेन पवत्ति मानस्सेवा ति कत्वा "मानो व मानमदो" ति वुत्तं। तथा हि जातिमदादयो "मानो मञ्ञना" ति आदिना [२०२-म०] मानभावेनेव विभत्ता ति। खुदा नाम कम्मजतेजो। तं पन अभुत्ते भुत्ते च उप्पज्जती ति यं तत्थ आमासयसङ्खातस्स सरीर-देसस्स पीळनतो विहिंसासद्दवचनीयं, तदेव दस्सेतब्बं, इतरञ्च निवत्तेतब्बं ति अभुत्तपच्चया उप्पज्जनकत्तेन खुदा विसेसिता ति आह "खुदाय विसेसनं" ति। ये पन "कम्मजतेजपच्चया दुक्खा वेदना खुदा" ति वदन्ति तेसं अभुत्तपच्चया उप्पज्जनका ति विसेसनमेव न युज्जति। सति पि तस्मिं भूतत्थकथने विहिंसूपरतिपुराणवेदनापटिहननानं विसेसाभावो आपज्जती ति पुरिमो येवेत्थ अत्थो। एतासं को विसेसो ति अभुत्तपच्चया उप्पज्जनकवेदना, भुत्तपच्चया न उप्पज्जनकवेदना ति द्वे पि चेता वेदना यावता अनागता येवा ति अधिप्पायो। सति पि अनागतत्ते पुरिमा उप्पन्नसदिसी, इतरा पन अतंसदिसी अच्चन्तं अनुप्पन्ना वा ति अयमेत्थ विसेसो। तेनेव "यथापवत्ता" ति पुरिमायं वुत्तं, इतरत्थ च "अप्पवत्ता" ति। अथ वा अभुत्तपच्चया उप्पज्जनकवेदना पुब्बे कतकम्मस्स विपाकत्ता पुराणवेदना नाम। अप्पच्चवेक्ख-णादि-अयुत्तपरिभोगपच्चया पच्चवेक्खणादियुत्तपरिभोगतो आयतिं न उप्पज्जिस्सतीति भुत्तपच्चया न उप्पज्जनकवेदना नववेदना नाम। विहिंसानिमित्तता विहिंसानिब्बत्तता।

यापेन्ति एतेना ति यापना ति वुत्तस्स सरीरयापनकारणस्स जीवितिन्द्रियस्स पि यापन-

१. खुद्दाय-सी०।

पथानं अविच्छेदसङ्खाता यापना यात्रा ति अयमेत्थ [१८७-म०] विसेसो। दायकदेय्य-धम्मानं अत्तनो च पमाणं अजानित्वा पटिग्गहणं, सद्धादेय्यविनिपातनत्थं वा पटिग्गहणं **अधम्मिकपटिग्गहणं**, येन वा आपत्तिं आपज्जेय्य। अपच्चवेक्खितपरिभोगो अधम्मेन **परिभोगो**। अनवज्जे अनिन्दितब्बे पच्चये सावज्जं सनिन्दं परिभोगेन अत्तानं करोति। **अनवज्जता च भविस्सती** ति अत्तनो पकति-अग्गिबलादिं जानित्वा "एवं मे अगरहितब्बता च [१३६-सी०] भविस्सती" ति पमाणयुत्तं आहारेतीति अत्थो।

सुखो इरियापथविहारो **फासुविहारो**। **एत्तकं हि भुञ्जित्वा**....**प**.. **पवत्तन्ती** ति इरियापथानं सुखप्पवत्तिया कारणभूतं भुञ्जनं पिवनञ्च इरियापथेहि कारणभावेन गहितत्ता तेहि साधितं विय वुत्तं। "अभुत्वा उदकं पिवे" ति लिखन्ति, "भुत्वाना" ति पन पाठो। पुन पि हि अप्पस्सेव अनुजाननवसेन—

"कप्पियं तं[1] चे[1] छादेति, चीवरं इदमत्थिकं।
अलं फासुविहाराय
पल्लङ्केन निसिन्नस्स, जण्णुके नाभिवस्सति।
अलं फासुविहाराया" ति[2]—

आह।

कारणं ति इमस्स विसेसस्स दस्सनत्थं "जीवितिन्द्रिययापनत्थाया" ति वत्वा न केवलं जीवितिन्द्रियस्सेव यापनाकारणमाहारो, अथ खो ठानादिपवत्ति-आकारविसेसयुत्तस्स सकलसरीरस्स पि यापनकारणं ति तंदीपनत्थं यात्रा ति वचनं ति यापना मे भविस्सतीति अविसेसेन वुत्तं ति दस्सेन्तो "**चतुन्नं इरियापथानं अविच्छेदसङ्खाता यापना यात्रा**" आह। अट्ठान-योजन-अपरिभोगदुप्परिभोगादिवसेन सद्धादेय्यस्स विनासनं **सद्धादेय्यविनिपातनं**। **येन** ति गणभोजनलक्खणप्पत्तस्स थूपीकतादिकस्स वा पटिग्गहणेन। सावज्जं सनिन्दं परिभोगं करोती ति वा अत्थो।

इरिया... **प**.... **वुत्तं** ति सुखं पवत्तमानेहि इरियापथेहि तेसं तथापवत्तिया कारणं ति गहितत्ता विदितत्ता यथावुत्तभुञ्जनपिवनानि पुब्बकालकिरियाभावेन वुच्चमानानि इरियापथकत्तुकानि विय वुत्तानीति अत्थो। यथा हि "पञ्ञाय चस्स दिस्वा आसवा परिक्खीणा [२०३-म०] होन्ती" ति[3] दस्सनस्स खयहेतुता, "घतं पिवित्वा बलं भवति, सीहं दिस्वा भयं भवती" ति च पानदस्सनानं बलभयहेतुता वुच्चति, एवं भुञ्जनपिवनानं इरियापथसुखप्पवत्तिहेतुभावो वुत्तो ति एवमेत्थ

१–१. च तं–सी०। २. खु० २ : ३६६ थेरगाथायं।
३. म० १ : २०८; म० २ : १६०–१६८।

भोजनानिसंसो ति यथावुत्तेहि अट्ठहङ्गेहि समन्नागतस्स भोजनस्स अगरहितब्बता सुखविहारो च आनिसंसो ति अत्थो। युत्तस्स निद्दोसस्स भोजनस्स परिमाणस्स च वसेन जाननं **युत्तपमाणजाननं** नाम।

विनासं पत्तिया नट्ठा, पटिपक्खेहि अभिभूतत्ता मुट्ठा च सति यस्स, सो नट्ठमुट्ठस्सति[1], तस्स भावो **नट्ठमुट्ठस्सतिता**।

विसुद्धिप्पत्तं ति मग्गफलसीलं वुच्चति। **लोकुत्तरधम्मा वा** ति लोकुत्तरसति-आदिधम्मा व। सीलसम्पदा पन रूपारूपावचरा नत्थीति सम्भवतो योजेतब्बा।

[१८८–म०] भोगूपकरणेहि **सभोगो**। **चतुन्नं सच्चानं अनुलोमं** ति चतुसच्चप्पटिवेधस्स अनुलोमं ति अत्थो। "सच्चानं" ति हि पटिविज्झितब्बेहि पटिवेधो वुत्तो, चतुसच्चप्पटिवेधस्स वा उपनिस्सयभूतं पटिविज्झितब्बानं चतुन्नं सच्चानं अनुलोमं ति वुत्तं।

"मम घरं धुरं कत्वा भिक्खं पविसथा" ति दिय्यमानं **धुरभत्तं** ति वदन्ति। निच्चभत्तादि वा अञ्ञे पि आणापेत्वा सयं धुरं हुत्वा दिन्नं **धुरभत्तं**।

पटिवासेति नामा ति निवत्तेति नाम ओसक्केति नाम।

अत्थो दट्ठब्बो। सुलभानवज्जभावो विय अप्पभावो पि पच्चयानं परमसल्लेखवुत्तीनं सुखविहाराय परियत्तो ति चीवरसेनासनानं अप्पभावुक्कंसानुजाननवसेन पवत्ताहि अनन्तरगाथाहि इधा पि धम्मसेनापतिना सुखविहाराय परियत्तो अप्पभावुक्कंसो अनुञ्ञातो ति विञ्ञायतीति "पुन पी" ति आदिना "भुत्वाना" ति पाठं समत्थयति।

सति-आदिधम्मा ति सतिपञ्ञासमाधिवीरियसम्मावाचादिधम्मा, ये छहि दुकेहि परिग्गहिता।

पटिविज्झितब्बेहि पटिवेधो वुत्तो। विसयेन पि हि विसयी वुच्चति सहचरभावतो। यथा—

"उप्पादेत्वान संवेगं, दुक्खेनस्स च हेतुना।
वड्ढयित्वा सम्मसित्वा, मुत्तिया मग्गमब्रवी" ति,

सच्चपरियोसाने ति च।

यथा दुक्खादीनं परिञ्ञादिवसेन पवत्तमानं पटिवेधञाणं असम्मोहतो ते अविलोमेत्वा अविरोधेत्वा पवत्तति नाम, एवं तदुपनिस्सयभावं विपस्सनाञाणम्पि यथाबलं ते अविलोमेत्वा पवत्ततीति चतुन्नं सच्चानं अनुलोमं ति वुत्तं ति दुतियो अत्थविकप्पो वुत्तो। एत्थ च "चतुन्नं सच्चानं ति पदं विना उपचारेन वुत्तं, पुरिमस्मिं उपचारेना ति दट्ठब्बं। सम्मादिट्ठिप्पधानत्ता वा सेसमग्गङ्गादीनं मग्गसच्चेकदेसस्स पटिवेधस्स अनुलोमं समुदायानुलोमं वुत्तं, चतुसच्चेकदेसस्स मग्गस्स]] वा।

---

१. नट्ठा मुट्ठस्सति–सी०।

पुब्बे निवत्थक्खन्धा ति पुरिमजातीसु सन्ततिपरियापन्ने खन्धे आह। **खन्धपटिबद्धं** ति वत्थाभरणयानगामजनपदादि। **खयसमये** ति मग्गक्खणं आह।

अधिमुच्चनट्ठेना ति अनिग्गहितपक्खन्दनसङ्खातेन यथासुखं पवत्तनट्ठेन।

खीणानं अन्तो अवसानं निट्ठितभावो खीणन्तो, खीणानं वा आदिकालो, तस्मिं **खीणन्ते**। एस नयो **निरुद्धन्ते** ति आदीसु।

दुकनिक्खेपकथावण्णना निट्ठिता।

निक्खेपकण्डवण्णना निट्ठिता।

खयसमये ति खयसमूहे। "किलेसानं खयवसेन पत्तधम्मपुञ्जे" ति च वदन्ति।

अपरिबन्धभावेन निरासङ्का, आरम्मणे अभिरतिभावेन च पवत्ति अधिमुच्चनट्ठो ति आह "अनि···प····त्तनट्ठेना" ति।

[२०४ म०] अरियमग्गप्पवत्तिया उत्तरकालं पवत्तमानं फलञाणं तंतंमग्गवज्झकिलेसानं खयपरियोसाने पवत्तत्ता "खीणं ते ञाणं" ति वुत्तं। यस्मा पन तं मग्गानन्तरं उप्पज्जति, तस्मा मग्गेन ठानसो खीणेसु किलेसेसु तेसं खीणभावानन्तरं पवत्तमानं खीणभावानं पठमकाले पवत्तं ति पि वुच्चती ति दुतियो विकप्पो वुत्तो।

दुकनिक्खेपकथावण्णना निट्ठिता।

निक्खेपकण्डवण्णना निट्ठिता।

४–अट्ठकथाकण्डं तिक-अत्थुद्धारवण्णना

[१८९-म०] **नयमग्गं** ति सुत्तन्तभाजनीयादिनयगमनं अनुलोमादिनयगमनञ्च। तम्पि हि एत्थ अत्थेसु निच्छितेसु सुखं समानेन्ति।

पञ्हुद्धारं ति एकूनपञ्ञासाय एकूनपञ्ञासाय नवसु नवसु च पञ्हेसु लब्भमानस्स उद्धरणं, तेसु येव लब्भमानानं गणनानं ठपनं **गणनाचारो**[1]। **अत्थुद्धारं** ति "इमे नाम चित्तुप्पादादयो अत्था कुसलादिका" ति उद्धरणं। **कण्णिकं कण्णिकं** ति चित्तुप्पादकण्डरूपकण्डेसु विभत्ते पसटे धम्मे "चतूसु भूमीसु कुसलं द्वादसाकुसलचित्तुप्पादा" ति आदिना रासिरासिवसेन सह गन्थेत्वा ति अत्थो। घटगोच्छका कण्णिकवेवचनानेव। एत्थ पन **चतूसु भूमीसु कुसलं** ति एकवचननिद्देसो चतुभूमकानं कुसलफस्सा-

---

४. अट्ठकथाकण्डं तिक-अत्थुद्धारवण्णना

[२०५-म०]**नयगमनं** ति नीयति, नेति, नीयन्ति वा एतेना ति नयो, गम्मति एतेना ति गमनं, नयो व, नयस्स वा गमनं नयगमनं। गति एव वा गमनं। पठमेन आदि-सद्देन अभिधम्मभाजनीयादिसङ्गहासङ्गहादि-एककादिसुद्धिकसच्छिकट्ठादिमूलमूलादिका पञ्चपकरणिका नयगति सङ्गय्हति। अनुलोमादी ति पन पच्चनीय-अनुलोमपच्चनीय–पच्चनीयानुलोमपकारा एकमूलादिप्पकारा च। एत्थ अत्थेसु निच्छितेसू ति एतस्मिं अट्ठकथाकण्डे चित्तुप्पादवसेन भूमन्तरविसेसयोगतो सब्बेसं मातिकापदानं अत्थेसु सङ्खेपतो ववत्थापितेसु।

पञ्हुद्धारं ति आदीसु "सिया कुसलं धम्मं पटिच्च कुसलो धम्मो उप्पज्जेय्य हेतुपच्चया" ति आदिना[2] कुसलपदं आदिं कत्वा कुसलाकुसलाब्याकतन्ता तिस्सो कुसलादिका, कुसलाब्याकत-अकुसलाब्याकतकुसलाकुसलन्ता तिस्सो, कुसलाकुसलाब्याकतन्ता एका ति कुसलादिका सत्त पुच्छा, तथा अकुसलादिका, अब्याकतादिका, कुसलाब्याकतादिका अकुसलाब्याकतादिका, कुसलाकुसलादिका, कुसलाकुसलाब्याकतादिका ति सत्तान्नं सत्तकानं वसेन धम्मानुलोमे कुसलत्तिकं निस्साय हेतुपच्चये एकूनपञ्ञास पुच्छा, तथा सेसपच्चयेसु सेसतिकेसु धम्मवचनीयादीसु च। तं सन्धाय "एकूनपञ्ञासाय एकूनपञ्ञासाया" ति वुत्तं। "सिया हेतुं धम्मं पटिच्च हेतुधम्मो उप्पज्जेय्य हेतुपच्चया" ति आदिना[3] "हेतुं पटिच्च हेतु, हेतुं पटिच्च न-हेतु, हेतुं पटिच्च हेतु च न-हेतु च। न-हेतुं पटिच्च न-हेतु न-हेतुं पटिच्च हेतु, न-हेतुं पटिच्च हेतु च न-हेतु च।

---

१. गणनचारो–सी०। २. अभि० १ : ११ पट्ठाने।

३. अभि० ३ : १ पट्ठाने।

दीनं कुसलभावे एकत्तूपगमनतो । चित्तुप्पादकण्ड-रूपकण्डेसु चतुभूमिचित्तुप्पादादिवसेन [१३७-सी०] विञ्ञातधम्मस्स वसेनायं अत्थुद्धारदेसना आरद्धा ति तत्थ यं चतूसु भूमीसु कुसलं विभत्तं याव विञ्ञातं, इमे धम्मा कुसला ति अत्थो ।

यदि पि कुसलत्तिकवित्थारो पुब्बे विञ्ञातो, तथा पि तत्थ धम्मा समयवसेन फस्सादिसभाववसेन च विभत्ता भिन्ना विञ्ञाता, न पन एकस्मिं लक्खणे समानेत्वा तस्मा तत्थ[1] वुत्तं समयादिभेदं वज्जेत्वा सब्बभेदभिन्नानं एकस्मिं कुसलादिलक्खणे समानेत्वा बोधनत्थं इध कुसलत्तिकनिद्देसो पुन विभत्तो । एत्थ च एकवचनेन कुसलनिद्देसं कत्वा बहुवचनेन निगमनस्स कारणं वुत्तमेव । यदि धम्मानं कुसलत्ते एकत्तूपगमनं, कस्मा एकवचनेन पुच्छा पि न कता ? उद्देसे कुसल-सद्दस्स धम्मविसेसनभावतो तब्बिसेसनानं धम्मानं पुच्छितत्ता तेसञ्च अनिद्धारितसङ्खाविसेसत्ता, निद्देसे पन

हेतुञ्च न-हेतुं च पटिच्च हेतु, हेतुञ्च न-हेतुञ्च पटिच्च न-हेतु, हेतुञ्च न-हेतुं च पटिच्च हेतु च न-हेतु चा" ति एकेकस्मिं दुके हेतुपच्चयादीसु एकमेकस्मिं पच्चये नव नव पुच्छा होन्ति । ता सन्धाय "नवसु नवसु पञ्हेसू" ति वुत्तं ।

लब्भमानस्सा ति कुसलत्तिके ताव पटिच्चवारे हेतुपच्चये "कुसलं धम्मं पटिच्च कुसलो धम्मो उप्पज्जति हेतुपच्चया, कुसलं [२०६-म०] एकं खन्धं पटिच्च तयो खन्धा" ति आदिना[2] कुसलेन कुसलं, कुसलेन अब्याकतं, कुसलेन कुसलाब्याकतं, अकुसलेन अकुसलं, अकुसलेन अब्याकतं, अकुसलेन अकुसलाब्याकतं, अब्याकतेन अब्याकतं, कुसलाब्याकतेन अब्याकतं, अकुसलाब्याकतेन अब्याकतं ति नवन्नं नवन्नं पञ्हानं अत्थतो सम्भवन्तस्स पञ्हस्स विस्सज्जनवसेन उद्धरणं, तथा सेसपच्चयवारत्तिकादीसु । तेसु येवा ति यथावुत्तेसु एव पञ्हेसु अत्थसम्भवतो यथाविभत्तानं पञ्हविस्सज्जनानं "हेतुया नवा" ति आदिना गणनाठपनं । पसटे धम्मे ति यथा हेट्ठा कण्डद्वये "यस्मिं समये कामावचरं कुसलं चित्तं" ति आदिना[3] विप्पकिण्णे मुत्तपुप्फे विय फस्सादयो धम्मे । अविसिट्ठनिद्देसो सामञ्ञनिद्देसो । विञ्ञातधम्मस्स पुग्गलस्सा ति अधिप्पायो ।

यदि चित्तुप्पादरूपकण्डेसु चतुभूमिचित्तुप्पादादिवसेन विञ्ञातधम्मस्स अत्थुद्धारदेसना आरद्धा, एवं सन्ते इध कस्मा कुसलत्तिकनिद्देसो वुत्तो ति आह यदि पि कुसलत्तिकवित्थारो" ति आदि । धम्मविसेसनभावतो ति "धम्मा" ति पदस्स पधानभावं दस्सेति । अतो हि तदभिधेय्या पुच्छितब्बा जाता । विञ्ञाताही ति भूमीनं विसेसनलक्खणयोगमाह । एत्थ पधानं

१. एत्थ-सी० । २. अभि० १ : २० पट्ठाने ।
३. अभि० १ । १८ धम्मसंगणियं ।

चतूहि भूमीहि वित्थारतो विञ्ञाताहि कुसले विसेसेत्वा दस्सेतीति युत्तं "चतूसु भूमीसु कुसलं" ति एकत्तं नेत्वा वचनं। कुसलपदं हि एत्थ पधानं, तञ्च विसेसितब्बानपेक्खं कुसलाकारमेव अत्तनो सभावे ठितं गहेत्वा पवत्तमानं एकत्तमेव उपादाय पवत्तति, न भेदं ति।

[१९०-म०] **द्वादस अकुसलचित्तुप्पादा** ति एत्था पि पठमाकुसलचित्तुप्पादो समयफस्सादिवसेन भेदं अनामसित्वा सोमनस्ससहगतदिट्ठिगतसम्पयुत्तचित्तुप्पादभावे एकत्तं नेत्वा वुत्तो, एवं याव द्वादसमो ति **"द्वादस अकुसलचित्तुप्पादा"** ति वुत्तं। एवं **चतूसु भूमीसु विपाको** ति आदीसु पि यथायोगं योजेतब्बं।

चित्तुप्पादा ति एत्थ उप्पज्जति एत्था ति उप्पादो, किं उप्पज्जति ? चित्तं, चित्तस्स उप्पादो चित्तुप्पादो ति एवं अवयवेन समुदायोपलक्खणवसेन अत्थो सम्भवति। एवं हि सति चित्तचेतसिकरासि चित्तुप्पादो ति सिद्धो होति। अट्ठकथायं पन "चित्तमेव उप्पादो चित्तुप्पादो" ति अञ्ञस्सुप्पज्जनकस्स निवत्तनत्थं चित्तग्गहणं कतं, चित्तस्स अनुप्पज्जनकभावनिवत्तनत्थं उप्पादग्गहणं, चित्तुप्पादकण्डे वा "चित्तं उप्पन्नं होती" ति चित्तस्स उप्पज्जनकभावो पाकटो ति कत्वा "चित्तमेव उप्पादो" ति वुत्तं,

---

ति किञ्चा पि उद्देसे कुसलपदेन धम्मा विसेसितब्बा, "चतूसु भूमीसु कुसलं" ति इमस्मिं पन निद्देसे भूमीहि विसेसितब्बत्ता कुसलपदं पधानं ति विसेसनभावेन वचनिच्छाय अभावतो सति पि विसेसितब्बधम्मानं कामावचरादिफस्सादिभेदे तदनपेक्खं अनवज्जसुखविपाकतासङ्खातं अत्तनो कुसलाकारमेव गहेत्वा पवत्तमानत्ता **"एकत्तमेव उपादाय पवत्तती"** ति वुत्तं। सब्बे पि हि कुसला धम्मा अनवज्जसुखविपाकताय एकसभावा येवा ति।

यथायोगं योजेतब्बं ति चतूहि भूमीहि आधारभूताहि विसेसेत्वा समयफस्सादिभेदं अनामसित्वा विपाकभावेन एकत्तं नेत्वा "चतूसु भूमीसु विपाको" ति वुत्तं ति योजेतब्बं। एस नयो "तीसु भूमीसु किरियाब्याकतं" ति आदीसु पि।

उप्पज्जति एत्था ति उप्पादो, चेतसिका। ते हि चित्तस्स सब्बथा पि निस्सयादिपच्चयभावतो एत्थ च उप्पत्तिया आधारभावेन अपेक्खिता। [२०७-म०] यथा च चेतसिका चित्तस्स, एवं चित्तम्पि चेतसिकानं निस्सयादिपच्चयभावतो आधारभावेन वत्तब्बतं अरहतीति यथावुत्तं उप्पादसद्दाभिधेय्यतं न विनिवत्तति। इदं वुत्तं होति—"चित्तुप्पादो" ति एत्थ उप्पादस्स विसेसनभावेन पवत्तमानम्पि चित्तं अत्तनि यथावुत्त-उप्पाद-अत्थसम्भवतो अपरिच्चत्तविसेसितब्बभावमेव हुत्वा तस्स विसेसनभावं पटिपज्जतीति। यदाह "अवयवेन समुदायोपलक्खणवसेन अत्थो सम्भवती" ति। चित्तसमानगतिकस्स इध चित्तग्गहणेन गहेतब्बताय

चित्तस्स अनुप्पज्जनकस्स निवत्तेतब्बस्स सब्भावा उप्पादग्गहणं कतं ति वेदितब्बं। अयञ्चत्थो "द्वेपञ्चविञ्ञाणानी" ति आदीसु विय चित्तप्पधानो निद्देसो ति कत्वा वुत्तो ति दट्ठब्बो।

छसु द्वारेसू ति एत्थ पञ्चद्वारे वत्तब्बमेव नत्थि, मनोद्वारे पि परित्तारम्मणमेव जवनं तदारम्मणसङ्खातं भवङ्गं अनुबन्धति। तं हि परित्तस्स कम्मस्स विपाको, विपाको च इट्ठानिट्ठारम्मणानुभवनं, कम्मानुरूपो च विपाको होतीति परित्तकम्मविपाको परित्तारम्मणस्सेव अनुभवनं होति। तस्मा सब्बं तदारम्मणं "परित्तारम्मणं" ति वुत्तं। यदि एवं महग्गतविपाको पि महग्गतानुभवनमेव आपज्जतीति चे ? न, समाधिप्पधानस्स कम्मस्स अप्पनाप्पत्तस्स सञ्ञावसारम्मणस्स तादिसेनेव विपाकेन भवितब्बत्ता। तस्मा समाधि सुखानुभवनभूतो, सो पि कम्मानुरूपतो येव कम्मारम्मणो होतीति [१३८–सी०] दट्ठब्बो। कम्मानुरूपतो एव च तदारम्मणं परित्तारम्मणम्पि महग्गतजवनं नानुबन्धति।

ततो एव पटिसन्धि-आदिभूतो कामावचरविपाको कम्मनिमित्तम्पि परित्तमेव आरम्मणं करोति, न महग्गतं अप्पमाणं वा। यस्मा पन वुत्तं "महग्गतारम्मणो धम्मो परित्ता-

---

"द्वेपञ्चविञ्ञाणानी" ति निदस्सनेन वक्खमानत्ता" "चित्त·····प०·····गहणं कतं" ति वुत्तं। तत्थ अञ्ञस्सा ति रूपस्स।

पञ्चद्वारे वत्तब्बमेव नत्थि एकन्तपरित्तारम्मणत्ता पञ्चद्वारिकचित्तानं। **इट्ठानिट्ठारम्मणानुभवनं** ति विपाकस्स पकप्पेत्वा आरम्मणग्गहणाभावमाह। ततो कम्मानुरूपं पवत्तमानो विपाको परित्तकम्मविपाकताय परित्तारम्मणे येव पवत्तितुमरहति, न महग्गतप्पमाणारम्मणे ति अधिप्पायो। समाधिप्पधानस्स पि कस्सचि कम्मस्स अप्पना-अप्पत्तस्स एकन्तेन सदिसविपाकताअभावतो **"अप्पनाप्पत्तस्सा"** ति कम्मं विसेसितं। **वण्णलक्खणादिं अग्गहेत्वा लोकसञ्ञानुरोधेनेव गहिते पथवादिके परिकम्मसञ्ञाय समुप्पादितत्ता पटिभागनिमित्तसङ्खातं सञ्ञावसं आरम्मणं अस्सा ति सञ्ञावसारम्मणं।** **तादिसेनेवा** ति समाधिप्पधानताय अप्पनाप्पत्तीहि विय सञ्ञावसारम्मणताय च निब्बिसेसेनेव। सो पी ति पि-सद्दो सम्पिण्डनत्थो। तेनेतं दस्सेति "अत्तनो कम्मस्स समानभूमिकधम्मारम्मणताय विय तस्स आरम्मणारम्मणताय पि विपाको कम्मानुरूपो येव नाम होती" ति।

यदि एवं कस्मा महग्गतप्पमाणारम्मणस्स परित्तकम्मस्स विपाको तदारम्मणारम्मणो न होतीति ? अप्पनाप्पत्तकम्मविपाकस्स विय तस्स कम्मारम्मणारम्मणताय [1]नियमाभावतो कम्मा-

---

१. अप्पणा०–सी०।

रम्मणस्स धम्मस्स कम्मपच्चयेन पच्चयो, अप्पमाणारम्मणो धम्मो परित्तारम्मणस्स धम्मस्स कम्मपच्चयेन पच्चयो" ति, न च महग्गतप्पमाणविपाको परित्तारम्मणो अत्थि, इध च सब्बकामावचरविपाकानं परित्तारम्मणता व वुत्ता, तस्मा कम्मानुरूपतो [१९१–म०] महग्गतप्पमाणारम्मणम्पि परित्तकम्मं यदि पटिसन्धिं देति, कम्मगति-निमित्तारम्मणमेव देति। पवत्तिविपाकम्पि रूपादिपरित्तारम्मणमेवा ति वेदितब्बं।

खीणासवानं वासनावसेन सतिविप्पयुत्तहसनं पवत्तमानं परित्तेस्वेव पवत्तति, न इतरेसु किलेसविरहे तादिसहसनपच्चयभावाभावतो। तस्मा तस्स परित्तारम्मणता वुत्ता। खीणासवानं असक्कच्चदानादीनि आदराकरणवसेनेव वेदितब्बानि, न कोस-ज्जादि-अकुसलवसेन। पटिप्पसद्धसब्बुस्सुक्का हि ते उत्तमपुरिसा ति। तेसं आदरा-करणञ्च निरुस्सुक्कता एवा ति वेदितब्बा।

अतिपगुणानं ति वचनं निरादरस्स ञाणविप्पयुत्तपच्चवेक्खणस्स विसयदस्सनं, न तस्सेवा ति विसयनियमनं। ञाणसम्पयुत्तस्स पि हि अतिपगुणानं विसयता सुट्ठुतरं

नुरूपताय च अनेकरूपत्ता। यथा अत्तनो कम्मसदिसस्स महग्गतजवनस्स परित्तारम्मणस्स पि तदारम्मणं नानुबन्धकं परिचयाभावतो, एवं अत्तनो कम्मस्स निमित्तभूते पि तस्स सहकारी-कारणाहि अपरियादिन्ने महग्गतप्पमाणे आरम्मणे परिचयाभावतो परित्तविपाको न पवत्तति, कम्मनिमित्तारम्मणो पन जायमानो परित्तेनेव तेन होतीति [२०८-म०] आह **"पटिसन्धि-आदिभूतो"** ति आदि। **यस्मा पना** ति आदिना पाळिया व यथावुत्तमत्थं निच्छिनोति। नानाक्खणिककम्मपच्चयो हि एत्थ अधिप्पेतो पच्चयपच्चयुप्पन्नानं भिन्नारम्मणताय वुत्तत्ता। **न चा** ति आदिना परित्तविपाका एव इध पच्चयुप्पन्नभावेन वुत्ता ति दस्सेति। **इधा** ति इमस्मिं अत्थुद्धारकण्डे।

सतिवेपुल्लप्पत्तानं सतिविरहितस्स कायकम्मस्स सम्भवं दस्सेतुं **"वासनावसेना** ति वुत्तं। अवीतरागानं अपरित्ते पि कत्थचि आरम्मणे सिया चेतसो उप्पिलावितत्तं ति **"किलेसविरहे"** ति विसेसेत्वा वुत्तं। **आदराकरणवसेन वा** ति आदराकरणमत्तवसेनेवा ति विसेसनिवत्ति-अत्थो एव-सद्दो तमेव निवत्तेतब्बं विसेसं दस्सेति, नाञ्ञथा। **कोसज्जादी** ति आदि-सद्देन दोसादयो सङ्गण्हाति। **आदराकरणं निरुस्सुक्कता एवा** ति आदरं करोन्तो निरुस्सुक्कभावेनेव न होन्ति, न पन आदरं न करोन्ति येवा ति दट्ठब्बं। एकच्चे पन "अकम्मञ्ञसरीरताय अञ्ञविहितताय च खीणासवानं असक्कच्चदानादिपवत्ति न अनादरवसेना" ति वदन्ति।

अतिपगुणानं ति सुभावितानं सुट्ठुतरं वसिप्पत्तानं। एवं **पगुणज्झानेसु पि पवत्ति होति** तत्थ विचारणुस्साहस्स मन्दभावतो ति अधिप्पायो। **पुब्बे दस्सितं** ति "तीणि लक्खणानीति

होति एव। यथा पगुणं गन्थं सज्झायन्तो द्वे तयो वाचनामग्गे गते पि न सल्लक्खेति ञाणविप्पयुत्तसतिमन्तेन सज्झायितत्ता, एवं पगुणज्झानेसु पि पवत्ति होतीति आह **"अतिपगुणानं"** ति आदि । **कसिणनिमित्तादिपञ्ञत्ती** ति पुब्बे दस्सितं सब्बं उपादापञ्ञत्तिमाह। तं पन रूपादयो विय अविज्जमानो विज्जमानो च अत्थो ति आचरिया वदन्ति । सम्मुतिसच्चे पन वुच्चमानानं कसिणनिमित्तादि वाचावत्थुमत्ततो वचनवोहारेनेव पञ्ञत्तीति वुच्चति। तस्स हि पञ्ञापनं अविज्जमानपञ्ञत्तीति तस्स अविज्जमानत्तं अट्ठकथायं वुत्तं ति । अविज्जमानम्पि पन तं विज्जमानमिव गहेत्वा पवत्तमानाय सञ्ञाय परित्तादीसु "अयं नाम धम्मो आरम्मणं" ति न सक्का वत्तुं ते एव धम्मे उपादाय पवत्तमानाय पि धम्मेस्वेव अट्ठानतो। तस्मा सा ससम्पयुत्ता परित्तादि-आरम्मणा ति न वत्तब्बा ति वुत्ता । **न वत्तब्बारम्मणा** ति इदं पन वचनं यथागहिताकारस्स सञ्ञाविसयस्स[1] न-वत्तब्बतं सन्धाय न-वत्तब्बं आरम्मणं एतेसं ति न-वत्तब्बारम्मणा, चित्तुप्पादा ति अञ्ञपदत्थसमासं कत्वा अट्ठकथायं वुत्तं।

चतुपञ्ञासचित्तुप्पादानं रूपस्स च वसेन **पञ्चपण्णासाय। केवलं** ति विना परामसनेन। **अनिट्ठङ्गतवसेना** ति अनिच्छयगमनवसेन[2], अनिच्छयं वा द्वेळ्हं गतो चित्तुप्पादो अनिट्ठङ्गतो, तेनाकारेन पवत्ति **"अनिट्ठङ्गतवसेन पवत्ती"** ति वुत्ता। नानारम्मणेसु चित्तस्स विक्खिपनं **विक्खेपो**। अनवट्ठानं **अवूपसमो**। गोत्रभुवोदाने गोत्रभू ति गहेत्वा **"गोत्रभुकाले"** ति आह।

अहं ति वा" ति आदिना पुब्बे दस्सितं। अविज्जमानो अपरमत्थभावतो, **विज्जमानो च** लोकसङ्केतसिद्धिया सम्मुतिसच्चभावतो अत्थो अरीयति चितेन गम्मति ञायतो" ति आचरिया वदन्ति। यतो तब्बिसया चित्तुप्पादा न **वत्तब्बं आरम्मणं एतेसं ति न-वत्तब्बारम्मणा** ति अञ्ञपदत्थसमासवसेन वुच्चन्ति। अयं पन वादो हेवत्थिकवादो विय होतीति तस्स अच्चन्तं अविज्जमानतं मञ्ञन्तो इतो च अञ्ञथा अविज्जमानपञ्ञत्ति दस्सेतुं **"सम्मुतिसच्चे पना"** ति आदिमाह। कथं पन तस्स अच्चन्तमविज्जमानत्ते तब्बिसयानं धम्मानं पवत्ति नवत्तब्बारम्मणभावो चा ति आह "अविज्जमानम्पी" ति आदि। **परित्तादि-आरम्मणा ति न वत्तब्बा** ति वुत्ता ति परित्तादयो विय तस्स विसुं ववत्थितभावं निसेधेति।

विक्खिपनं नानारम्मणेसु चित्तस्स पवत्तनं। अनवट्ठानं एकस्मिं येव पवत्तितुं अप्पदानं। दुतियादिमग्गपुरेचारिकं फलसमापत्तिपुरेचारिकञ्च [२०९-म०] कामावचरञाणं निब्बानारम्मणताय लोकुत्तरचित्तस्स आवज्जनट्ठानीयताय च पठममग्गपुरेचारिकञाणेन समानं ति कत्वा वुत्तं **गोत्रभुवोदानेन गोत्रभू ति गहेत्वा"** ति।

---

१. पञ्ञाविसयस्स–सी०। २. अनिच्छागतवसेन–सी०।

[१९२-म०]**सब्बत्थपादकचतुत्थं** ति इध [१३९-सी०] **सब्बत्थ-सद्दो** सामि-अत्थो दट्ठब्बो, सब्बेसु वा विपस्सनादीसु पादकं कारणं सब्बत्थपादकं ति फलस्स विसयभावेन निद्देसो। **आकासकसिणचतुत्थं** ति परिच्छेदाकासकसिणचतुत्थमाह। तं हि रूपावचरं, न इतरं ति । **कुसलतो पि द्वादसविधं किरियतो पी** ति चतुवीसतिविधता वुत्ता होति। **वट्टस्स पि पादकं होति येवा** ति कुसलं किरियञ्च एकतो कत्वा सब्बत्थ-पादकं वुत्तं ति किरियज्झानस्स अवट्टपादकत्ता सासङ्कं वदति।

महग्गतचित्ते समोदहती ति इदं "सो एवं समाहिते चित्ते" ति आदिना नयेन वुत्तं पाकटं पादकज्झानचित्तं परिकम्मेहि गहेत्वा चित्ते रूपकायं अधिट्ठानचित्तेन समोदहतीति कत्वा वुत्तं।

सब्बत्थ पादकं ति निप्फादेतब्बे, पयोजने वा भुम्मं "चेतसो अवूपसमे" ति आदीसु विय। तेन सब्बेसु विपस्सनादीसु निप्फादेतब्बेसू ति अत्थो। तेनेवाह "सब्बेसू" ति आदि। अतीतंसञाणस्स कामावचरत्ता इद्धिविधादीसु तस्स अग्गहणं दट्ठब्बं। तस्स पन अतीतसत्त-दिवसतो हेट्ठा याव पच्चुप्पन्नपटिसन्धि, ताव विसयो ति वदन्ति। अतीतसत्तदिवसेसु पि खन्धपटिबद्धानं तस्स विसयभावो युत्तो विय दिस्सति।

पादकज्झानचित्तं परिकम्मेहि गहेत्वा ति पादकज्झानं समापज्जित्वा वुट्ठाय "इदं चित्तं विय अयं कायो सीघगमनो होतू" ति पुब्बभागपरिकम्मेहि रूपकायस्स विय पादकज्झानचित्तस्स पि गहेतब्बतं सन्धाय वुत्तं। इदं पन अधिट्ठानं एवं पवत्ततीति वेदितब्बं। अधिप्पेतट्ठानपापुण-नत्थं गन्तुकामतं पुरक्खत्वा पादकज्झानं समापज्जित्वा वुट्ठाय "इदं चित्तं विय अयं कायो सीघगमनो होतू" ति करजकायारम्मणं परिकम्मं कत्वा भवङ्गं ओतरित्वा वुट्ठाय पादकज्झानं समापज्जित्वा पुन भवङ्गे ओतिण्णे मनोद्वारावज्जनं रूपकायं आरम्मणं कत्वा उप्पज्जति अनुलोमानि च। ततो अधिट्ठानचित्तम्पि तमेवारम्मणं कत्वा उप्पज्जति। तस्सानुभावेन यथाधिप्पेतट्ठानं गतो येव होति। एवं अदिस्समानेन कायेन गच्छन्तो पनायं किं तस्स अधिट्ठानचित्तस्स उप्पादक्खणे गच्छति, उदाहु ठितिक्खणे भङ्गक्खणे वा ति? तीसु खणेसु गच्छतीति इच्छन्ति। **चित्ते** ति पादकज्झानचित्ते। **समोदहती** ति चित्तानुगतिकं चित्तं विय सीघगमनं करोतीति अत्थो। यथा हि चित्तं इच्छितक्खणे अतिदूरे पि विसयं आरब्भ पवत्तति, एवं रूपकायस्स पि लहुपरिवत्तिभावापादनं चित्तवसेन कायपरिणामनं। न चेत्थ रूपधम्मानं दन्धपरिवत्तिभावतो एकचित्तक्खणेन देसन्तरुप्पत्ति न युज्जतीति वत्तब्बा अधिट्ठान-चित्तेन रूपकायस्स लहुपरिवत्तिभावस्स आपादितत्ता। तेनेवाह "चित्तवसेन कायं अधिट्ठहित्वा सुखसञ्ञञ्च लहुसञ्ञञ्च ओक्कमित्वा अदिस्समानेन कायेन ब्रह्मलोकं गच्छती" ति[1]। अचिन्तेय्यो हि इद्धिमन्तानं इद्धिविसयो ति।

---

१. विसुद्धि० ३३७ बौ० आ०।

पादकज्झानचित्तं रूपकाये समोदहती ति इदम्पि यथावुत्तं पादकज्झानचित्तं आरम्मणं कत्वा चित्तसन्तानं रूपकाये समोदहितं तदनुगतिकं कत्वा अधिट्ठातीति कत्वा वुत्तं।

इदं पन अधिट्ठानद्वयं अदिस्समानकायतं दिस्समानकायतञ्च आपादेति। गन्तु-कामतापरिकम्मवसेन तंसम्पयुत्ताय सञ्ञाय सुखसञ्ञालहुसञ्ञाभावतो गमनम्पि निप्फा-

---

[२१०–म०] **चित्तसन्तानं रूपकाये समोदहितं** ति यत्तकेहि चित्तेहि दिस्समानेन कायेन यथा-धिप्पेतट्ठानप्पत्ति, तत्तकानं चित्तानं पबन्धस्स दन्धगमनकरणतो इमस्स अधिट्ठानस्स करजकाये आरोपितं तदनुगणं ति अत्थो। इदम्पि अधिट्ठानपादकज्झानं समापज्जित्वा वुट्ठाय "अयं कायो विय इदं चित्तं दन्धगमनं होतू" ति समापज्जित्वा वुट्ठितज्झानचित्तारम्मणं परिकम्मं कत्वा भवङ्गं ओतरित्वा भवङ्गतो वुट्ठाय पादकज्झानं समापज्जित्वा पुन भवङ्गे ओतिण्णे मनोद्वारावज्जनं पादकज्झानं आरम्मणं कत्वा उप्पज्जति अनुलोमानि च। ततो अधिट्ठानचित्तम्पि तमेवा-रम्मणं कत्वा उप्पज्जति। तस्सानुभावेन अन्तरा पञ्चविञ्ञाणादीसु उप्पन्नेसु पि अपतन्तो इच्छितट्ठानं गच्छति। एवं गच्छन्तो च सचे इच्छति, पथवीकसिणवसेन आकासे मग्गं निम्मि-नित्वा पदसा गच्छति। सचे इच्छति, वायोकसिणवसेन वायुं अधिट्ठहित्वा तूलपिचु विय वायुना गच्छति। अपि च गन्तुकामता व एत्थ पमाणं। सति हि गन्तुकामताय एवं कता-धिट्ठानो अधिट्ठानवेगक्खित्तोवेसो इस्सासपक्खित्तो सरो विय दिस्समानो गच्छतीति। तत्थ आकासे मग्गं निम्मिनित्वा गच्छन्तो विना पि अभिञ्ञाञाणेन पकतिपथवियं विय गच्छति। तेनेव "पदसा गच्छती" ति वुत्तं। वायुं अधिट्ठहित्वा गच्छन्तो अभिञ्ञाञाणसमुट्ठितवायोधातु-परम्पराय गच्छति। उभयत्था पि अन्तरावनरामणीयकादीनि पेक्खमानो आपाथगते सद्दे च सुणमानो गच्छतीति वदन्ति। केचि पन "अदिस्समानेन कायेन एकचित्तक्खणेनेव इच्छित-ानगमने दिस्समानेन कायेन पदसा वायुना च गमने अभिञ्ञाचित्तसमुट्ठितकायविञ्ञत्ति-विप्फारेन गमनं" ति वदन्ति। अपरे "अभिञ्ञाचित्तस्स विञ्ञत्तिनिब्बत्तनकिच्चं नत्थी" ति वदन्ति।

अधिट्ठानद्वयं ति चित्तकायवसेन कायचित्तपरिणामनभूतं रूपकायपादकज्झानचित्तारम्मणं उभयं अधिट्ठानं। **तंसम्पयुत्ताया** ति यथावुत्त-अधिट्ठानद्वयसम्पयुत्ताय। **सुखसञ्ञालहुसञ्ञाभावतो** ति सुखसञ्ञालहुसञ्ञासब्भावतो, तब्भावं आपज्जनतो ति अत्थो। **सुखसञ्ञा** ति चेत्थ उपेक्खासम्पयुत्ता सञ्ञा। उपेक्खा हि "सन्तं सुखं" ति वुत्ता। सा येव च सञ्ञा नीव-रणेहि चेव वितक्कादीहि पच्चनीकेहि च विमुत्तत्ता "लहुसञ्ञा" ति पि वेदितब्बा। ताहि

देतीति दट्ठब्बं।

सोतापन्नस्स चित्तं ति सोतापन्नस्स पाटिपुग्गलिकं मग्गफलचित्तं ति वेदितब्बं। मारादीनं हि भगवतो चित्तजाननं वुत्तं ति चेतोपरियञाणलाभी कस्मा सासवचित्तं न जानिस्सतीति। **छिन्नवटुमका** छिन्नसंसारवट्टा बुद्धा। **मग्गफलनिब्बानपच्चवेक्खणतो पी** ति एत्थ मग्गफलपच्चवेक्खणानि ताव पुब्बेनिवासानुस्सतिञाणेन मग्गफलेसु ञातेसु पवत्तन्ति, निब्बानपच्चवेक्खणञ्च निब्बानारम्मणेसु अप्पमाणधम्मेसु ञातेसू ति मग्गादि-पच्चवेक्खणानि पुब्बेनिवासानुस्सतिञाणस्स अप्पमाणारम्मणतं साधेन्तीति वेदितब्बानि। "अप्पमाणा खन्धा पुब्बेनिवासानुस्सतिञाणस्स आरम्मणपच्चयेन पच्चयो" इच्चेव[1] हि वुत्तं, न निब्बानं ति। तस्मा पुब्बेनिवासानुस्सतिञाणेन एव मग्गफलपच्चवेक्खण-किच्चे वुच्चमाने पि निब्बानपच्चवेक्खणता न सक्का वत्तुं, अट्ठकथायं पन तस्स पि निब्बानारम्मणता अनुञ्ञाता ति दिस्सति।

समोक्कन्ताहि रूपकायो पि तूलपिचु विय सल्लहुको होति। सो एवं [म०–२११] वात-क्खित्ततूलपिचुना विय सल्लहुकेन एकचित्तक्खणेन अदिस्समानेन च कायेन यथारुचि गच्छतीति।

"मुत्तो वतम्हि ताय अनत्थसंहिताय दुक्करकारिकाय, साधु वतम्हि सम्मासम्बोधिं सम्बुज्झं" ति[2] पवत्तं भगवतो चेतोपरिवितक्कमञ्ञाय मारो "अमुत्तभावमस्स करिस्सामी" ति,

"तपो कम्मा अपक्कम्म, यं न सुज्झन्ति माणवा।
असुद्धो मञ्ञसि सुद्धो, सुद्धिमग्गा अपरद्धो" ति[2] ॥—

आह्हा ति एवमादि सन्धाय "मारादीनम्पि भगवतो चित्तजाननं वुत्तं" ति वुत्तं। निब्बान-पच्चवेक्खणञ्च पुब्बेनिवासानुस्सतिञाणेन निब्बाना…प०…ञातेसु पवत्ततीति सम्बन्धो। निब्बाना…प०…ञातेसू ति इदं अभिञ्ञाञाणस्स परतो पवत्तमानं पच्चवेक्खणं अभिञ्ञा-ञाणस्स विसये विय अभिञ्ञाञाणविसयविसये पि कदाचि पवत्तितुं अरहतीति ति कत्वा वुत्तं। **अप्पमाणारम्मणतं** ति अप्पमाणक्खन्धारम्मणतं ति अत्थो। **तस्मा** ति यस्मा **पुब्बेनिवासानु-स्सतिञाणस्स** निब्बानारम्मणभावदीपको कोचि पाठो नत्थि, तस्मा। **पच्चवेक्खणकिच्चे वुच्चमाने** ति रुळ्हिं अग्गहेत्वा मग्गादीनं अतीतानं पति पति अवेक्खनं अनुस्सरणं पच्चवेक्खणं ति पुब्बेनिवासानुस्सतिञाणस्स किच्चं येव पच्चवेक्खणं ति वुच्चमाने ति अत्थो। **अनुञ्ञाता ति दिस्सती** ति "मग्गफलनिब्बानपच्चवेक्खणतो" ति इदमेव सन्धाय वुत्तं। अयं हेत्थ अत्थो —पुब्बेनिवासानुस्सतिञाणेन निब्बानारम्मणे खन्धे दिस्वा "इमे धम्मा किं नु खो आरब्भ पवत्ता" ति आवज्जेन्तस्स पुब्बेनिवासानुस्सतिञाणं निब्बानारम्मणे पवत्ततीति। अनागतंसञाणे पि एसेव नयो।

---

१. २ : ३३९ पट्ठाने। २. सं० १ : १०३।

कामावचरे निब्बत्तिस्सती ति निब्बत्तक्खन्धजाननमाह । **निब्बानधातुया परि-निब्बायिस्सती** ति निब्बानारम्मणेहि मग्गफलेहि किलेसपरिनिब्बानभूतेहि परिनिब्बा-यिस्सतीति अत्थो सम्भवति ।

[१९३–म०] **असहजातत्ता** ति असम्पयुत्तत्ता ति अत्थो । न हि अरूपधम्मानं अरूपधम्मेहि सहजातता सम्पयोगतो अञ्ञा अत्थीति । **"अञ्ञधम्मारम्मणकाले"** ति वुत्तं, मग्गारम्मणकाले पि पन गरुं अकरणे मग्गाधिपतिभावेन न वत्तब्बता योजेतब्बा ।

नियोगा ति नियोगतो ति इममत्थं सन्धाय **"नियमेना"** ति आह, नियोगवन्तो

यदि एवं कस्मा परित्तत्तिके "अप्पमाणो धम्मो महग्गतस्स धम्मस्स आरम्मणपच्चयेन पच्चयो" ति[1] एत्थ "अप्पमाणा खन्धा चेतोपरियञाणस्स पुब्बेनिवास-अनागतंसञाणस्स आर-म्मणपच्चयेन पच्चयो" ति अज्झत्तत्तिके च "बहिद्धा धम्मो बहिद्धाधम्मस्स, बहिद्धा धम्मो अज्झत्तस्स धम्मस्स आरम्मणपच्चयेन पच्चयो" ति[2] एतेसं विभङ्गेसु "बहिद्धा [२१२–म०] खन्धा इद्धिविधञाणस्स चेतोपरिय-पुब्बेनिवास-यथाकम्मूपग-अनागतंस-आवज्जनाय आरम्मणपच्चयेन पच्चयो" ति[2] एत्तकमेव वुत्तं, न वुत्तं निब्बानं ति । चेतोपरिय-इद्धिविधादिञाणेहि सह वुत्तत्ता ति चे, एवम्पि विसुं विभजितब्बं सिया । न हि विसुं विभजनारहं सह विभ-तीति ? न, अवचनस्स अञ्ञकारणत्ता । यानि हि पुथुज्जनानं पुब्बेनिवास-अनागतंसञाणानि, तेसं अविसयो एव निब्बानं । अरियानं पन मग्गफलचित्तञाणेहि सच्छिकतनिब्बानानं इमेहि ञाणेहि पच्चवक्खकरणे पयोजनं नत्थी ति साधारणेन इद्धिविधञाणादीनं गहितत्ता निब्बानं न वुत्तं ति दट्ठब्बं । **निब्बत्तक्खन्धजाननमाह,** न निब्बत्तकक्खन्धजाननं । यथाकम्मूपगञाण-किच्चं हि तं ति । **अत्थो सम्भवती** ति इदं अतागतंसञाणस्स पि अनिब्बानारम्मणतं सन्धाय वुत्तं ।

१४२९. मग्गारम्णत्तिके यस्मा चित्तुपादकण्डे बोधितेसु चित्तुप्पादेसु एकन्ततो मग्गारम्मणा येव केचि नत्थि, मग्गारम्मणा येव पन कदाचि मग्गाधिपतिनो होन्ति, तस्मा "कतमे धम्मा मग्गारम्मणा" ति एकमेव पुच्छं कत्वा तयो पि कोट्ठासा लब्भमानवसेन विभत्ता । इमिना नयेन परतो पि एवरूपेसु ठानेसु अत्थो वेदितब्बो । "चित्तुप्पादा" ति, "मग्गारम्मणा" ति च वुत्तधम्मानं येव मग्गहेतुकत्ताभावं साधेतुं "असहजातत्ता" ति इदं हेतुवचनं ति "असम्पयुत्तत्ता ति अत्थो" ति वुत्तं । तेनेवाह "न हि अरूपधम्मानं" ति आदि । अञ्ञधम्मारम्मणकाले एवा" ति अवधारणस्स अग्गहितत्ता गरुं अकत्वा मग्गारम्मणकाले पि मग्गाधिपतिभावेन न वत्तब्बा

---

१. २ : ३३९ पट्ठाने । २. २ : ४६४-४६५ पट्ठाने ।

वा **नियोगा**, नियता ति अत्थो। चित्तुप्पादकण्डे हि बोधितेसु चित्तुप्पादेसु एकन्तेन अनागतारम्मणो कोचि नत्थीति।

कम्मं वा कम्मनिमित्तं वा आरब्भ पवत्तियं अतीतारम्मणा वा ति वुत्तं, कम्मनिमित्तं पन आरब्भ पवत्तियं पच्चुप्पन्नारम्मणभावञ्च पटिसन्धिया **पटिच्चसमुप्पादविभङ्गवण्णनायं** वक्खति। तस्मा इदं मनोद्वारचुतियं अतीतकम्मनिमित्तं मनोद्वारे आपाथगतं सन्धाय वुत्तं ति वेदितब्बं। स तदारम्मणाय चुतिया पञ्चचित्तक्खणावसिट्ठायुके गतिनिमित्ते पटिसन्धिया पवत्ताय चत्तारि [१४०-सी०] भवङ्गानि पच्चुप्पन्नारम्मणानि, इतरत्थ[1] च छ सन्धायाह **"ततो परं भवङ्गकाले वा"** ति। यदा हि गतिनिमित्तारम्मणे **जवने पवत्ते** अनुप्पन्ने एव तदारम्मणे चुति होति रूपावचरारूपावचरसत्तस्स विय कामधातुं उपपज्जन्तस्स[2] तदा पटिसन्धितो परानि छ भवङ्गानि पच्चुप्पन्नारम्मणानि होन्तीति। दिट्ठिसम्पयुत्तेहि अस्सादनादीनि सपरामासानेव दट्ठब्बानि। **पण्णत्तिनिब्बानारम्मणानञ्च जवनानं पुरेचारिककाले** ति येसं पुरेचारिककाले एकन्तेन आवज्जनाय अतीतादि-आरम्मणभावेन न-वत्तब्बता, तेसं

ति अयम्पि अत्थो अट्ठकथायं परिग्गहितो येवा ति दट्ठब्बं। "गरुं कत्वा पच्चवेक्खणकाले" ति हि वुत्तत्ता गरुं अकत्वा पच्चवेक्खणकाले पि अत्थि एव। तदा च मग्गाधिपतिभावेन न वत्तब्बा ते धम्मा ति भिय्यो पि सिद्धो वायमत्थो।

१४३४ **अतीतारम्मणा वा** ति उद्धटं, "अतीतारम्मणा" ति पन अट्ठकथा पाठोबहूसु पोत्थकेसु दिस्सति। **तस्मा** ति यस्मा **पटिच्चसमुप्पादविभङ्गवण्णनायं**[3] "मरणसमये ञातका अयं तात, तवत्थाय बुद्धपूजा करीयति, चित्तं पसादेही, ति वत्वा" ति आदिना पञ्चद्वारे रूपादि-आरम्मणूपसंहरणं तत्थ तदारम्मणपरियोसानानं [२१३-म०] चुद्दसन्नं चित्तानं पवत्तिञ्च वत्वा तस्मिं येव एकचित्तक्खणट्ठितिके आरम्मणे पटिसन्धिचित्तं उप्पज्जती ति पच्चुप्पन्नारम्मणभावं पटिसन्धिया वक्खति, तस्मा ति अत्थो। द्वे भवङ्गानि आवज्जनं मरणस्सासन्नभावे मन्दीभूतवेगत्ता पञ्च जवनानि द्वे तदारम्मणानि चुतिचित्तं ति एकादस चित्तक्खणा अतीता ति आह **"पञ्चचित्तक्खणावसिट्ठायुके"** ति। **इतरत्था** ति अञ्ञतदारम्मणाय चुतिया। इदानि तमेव "इतरत्था" ति सङ्खेपतो वुत्तमत्थं वित्थारतो दस्सेतुं "यदा ही" ति आदिमाह। चुतिया तदारम्मणरहितत्ता पटिसन्धिया च पच्चुप्पन्नारम्मणत्ता "रूपा....प०....ज्जन्तस्सा" ति

---

१. इतरे-सी०। २. उप्पन्नस्स-सी०।
३. अभि० अट्ठ० २ : १६१ सम्मोहविनोदनियं।

वसेन नयं दस्सेति। निब्बानारम्मणानम्पि जवनानं पुरेचारिककाले सा तथा न वत्तब्बा, न पन एकन्तेन मग्गफलवीथीसु तस्सा अनिब्बानारम्मणत्ता।

इमे गन्धा ति ननु पच्चुप्पन्ना गन्धा गहिता, कथं एत्थ अनागतारम्मणता होतीति? "अट्ठारसवस्साधिकानि द्वे वस्ससतानि मा सुस्सिसू' ति पवत्तितो, अनागते मा सुस्सिसू ति हि अनागतं गन्धं गहेत्वा पवत्ततीति अधिप्पायो। चित्तवसेन कायं परिणामेन्तो अभिमुखीभूतं तदा विज्जमानमेव कायं आरम्मणं करोतीति पच्चुप्पन्नारम्मणं अधिट्ठानचित्तं होति। तथा अत्तनो कायस्स दीघरस्साणुथूलनीलादिभावापादनवसेन अञ्ञस्स च पटिहारियस्स करणे [१९४-म०] योजेतब्बं।

एत्थन्तरे एकद्वेसन्ततिवारा वेदितब्बा ति एत्थन्तरे पवत्ता रूपसन्तति-अरूपसन्ततिवारा एकद्वेसन्ततिवारा नामा ति वेदितब्बा ति अत्थो। अतिपरित्तसभाव-उतु-आदिसमुट्ठाना वा "एकद्वेसन्ततिवारा" ति वुत्ता। **उभयमेतं पच्चुप्पन्नं** ति अद्धापच्चुप्पन्नं होन्तं एतं उभयं होतीति अत्थो। **संहीरती** ति तण्हादिट्ठाभिनन्दनाहि आकड्ढीयति।

केची ति अभयगिरिवासिनो ति वदन्ति, ते पन चित्तस्स ठितिक्खणं न इच्छन्तीति "ठितिक्खणे वा पटिविज्झती" ति न वत्तब्बं सिया। तथा ये "इद्धिमस्स च परस्स च एकक्खणे वत्तमानं चित्तं उप्पज्जती" ति वदन्ति, तेसं "ठितिक्खणे वा भङ्गक्खणे वा पटिविज्झती" ति वचनं न समेति। न हि तस्मिं खणद्वये उप्पज्ज-

---

उदाहटं। छ भवङ्गानि पच्चुप्पन्नारम्मणानि होन्ति, नव चित्तक्खणा अतीता ति सत्तचित्तक्खणावसिट्ठायुके गतिनिमित्ते पटिसन्धिया पवत्तत्ता ति दट्ठब्बं।

विज्जमानमेव कायं आरम्मणं करोती ति एतेन सुखलहुसञ्ञोक्कमनेन पच्चुप्पन्नस्सेव भूतुपादायरूपसङ्घातस्स लहुपरिवत्तिभावापादानं, न भाविनो ति दस्सेति।

एत्थन्तरे ति अपाकटकालतो पट्ठाय याव पाकटकालो, एतस्मिं अन्तरे। यस्मा पन कस्सचि किञ्चि सीघं पाकटं होति, कस्सचि दन्धं तस्मा "**एकद्वेसन्ततिवारा**" ति अनियमेत्वा वुत्तं। "वचनसिलिट्ठतावसेन वुत्तं" ति एके, केचि पन "एत्थन्तरे पवत्ता रूपधम्मा अरूपधम्मा च पच्चुप्पन्ना ति गहिते एको सन्ततिवारो होति, तं पन द्विधा विभजित्वा अपाकटकालं आदिं कत्वा येभुय्येन पाकटकालतो ओरभावो एको कोट्ठासो येभुय्येन पाकटकालं आदिं कत्वा याव सुपाकटकालो एको ति एते द्वे सन्ततिवारा। इमिना नयेन सेससन्ततिवारभेदा पि वेदितब्बा। तत्थ कालवसेन सब्बेसं समानभावं अग्गहेत्वा धम्मानं सदिसप्पवत्तिवसेन सन्ततिपरिच्छेदो दीपितब्बो" ति वदन्ति। किञ्चि किञ्चि कालं सदिसं पवत्तमाना पि हि उतुचित्तादिसमुट्ठाना

मानं परचित्तेन सह एकक्खणे उप्पज्जति नामा ति। ठितिभङ्गक्खणेसु च उप्पज्ज-मानं एकदेसं पच्चुप्पन्नारम्मणं, एकदेसं अतीतारम्मणं आपज्जति। यञ्च वुत्तं "परस्स चित्तं जानिस्सामीति रासिवसेन महाजनस्स चित्ते आवज्जिते" ति, एत्थ च महाजनो अत्तना परे अनेके पुग्गला ति परेसं चित्तं जानिस्सामीति आवज्जनप्पवत्ति वत्तब्बा सिया।

अथा पि **परस्सा** ति महाजनस्सा ति अत्थो सम्भवेय्य, तथापि तस्स पुग्गलस्सेव वा चित्तरासिं आवज्जित्वा एकस्स पटिविज्झनं अयुत्तं। न हि रासि-आवज्जनं एक-देसावज्जनं होतीति। तस्मा तेहि "महाजनस्स चित्ते आवज्जिते" ति आदि न वत्तब्बं।

यं पन ते वदन्ति "यस्मा इद्धिमस्स च परस्स च एकक्खणे चित्तं उप्पज्जती" ति, तत्थायं अधिप्पायो सिया—चेतोपरियञाणलाभी परस्स चित्तं ञातुकामो [१४१-सी०] पादकज्झानं समापज्जित्वा वुट्ठाय अतीतादिविभागं अकत्वा चित्तसामञ्ञेन "इमस्स चित्तं जानामी" ति परिकम्मं कत्वा पुन पादकज्झानं समापज्जित्वा वुट्ठाय सामञ्ञे-नेव चित्तं आवज्जित्वा तिण्णं चतुन्नं वा परिकम्मानं अनन्तरा चेतोपरियञाणेन परचित्तं पटिविज्झति विभावेति रूपं विय दिब्बचक्खुना। ततो परं पन कामावचर-चित्तेहि सरागादिववत्थानं होति नीलादिववत्थानं विय। तत्थ दिब्बचक्खुना दिट्ठहदय-वत्थुरूपस्स सत्तस्स अभिमुखीभूतस्स चित्तसामञ्ञेन चित्तं आवज्जयमानं आवज्जनं अभिमुखीभूतं विज्जमानं चित्तं आरम्मणं कत्वा चित्तं आवज्जेति। परिकम्मानि च तं तं विज्जमानं चित्तं चित्तसामञ्ञेनेव [१९५-म०] आरम्मणं कत्वा चित्तजानन-परिकम्मानि हुत्वा पवत्तन्ति। चेतोपरियञाणं पन विज्जमानं चित्तं पटिविज्झन्तं विभा-वेन्तं तेन सह एकक्खणे एव उप्पज्जति। तत्थ यस्मा सन्तानस्स सन्तानग्गहणतो एकत्तवसेन आवज्जनादीनि चित्तन्त्वेव पवत्तानि, तञ्च चित्तमेव, यं चेतोपरियञाणेन विभावितं, तस्मा समानाकारप्पवत्तितो न अनिट्ठे मग्गफलवीथितो अञ्ञस्मिं ठाने

रूपधम्मा सन्ततिवारा ति वुच्चन्ति। यदाह "अतिपरित्ता" ति आदिना, अरूपसन्तति पि चेत्थ यथावुत्तरूपसन्ततिपरिच्छिन्ना सङ्गहिता येवा ति दट्ठब्बं। पच्चुप्पन्नेसु धम्मेसु संहीरती ति तण्हादिट्ठीहि आकङ्खनीयट्ठानभावेन वुत्तं। "यो चावुसो मनो ये च धम्मा, ति विसयि-विसयभूता एकभवभूता च एकसन्ततिपरियापन्ना धम्मा विभागं अकत्वा गय्हमाना अद्धा पच्चु-प्पन्नं होति, सति पन [२१४-म०] विभागकरणे खणसन्ततिपच्चुप्पन्नता लब्भतीति आह 'अद्धा पच्चुप्पन्नं होन्तं एतं उभयं होती" ति।

तस्मा ति महाजनस्स। अतीतादिविभागं अकत्वा ति आवज्जनादीनं समानाकारप्पवत्तिया उपायं

नानारम्मणता आवज्जनजवनानं होति। पच्चुप्पन्नारम्मणञ्च परिकम्मं पच्चुप्पन्नारम्मणस्स चेतोपरियञाणस्स आसेवनपच्चयो ति सिद्धं होति।

अतीतत्तिको च एवं अभिन्नो होति। अञ्ञथा सन्ततिपच्चुप्पन्ने अद्धापच्चुप्पन्ने च पच्चुप्पन्नं ति इध वुच्चमाने अतीतानागतानञ्च पच्चुप्पन्नता आपज्जेय्य, तथा च सति "पच्चुप्पन्नो धम्मो पच्चुप्पन्नस्स धम्मस्स अनन्तरपच्चयेन पच्चयो" ति आदि वत्तब्बं सिया, न च तं वुत्तं। "अतीतो धम्मो पच्चुप्पन्नस्स धम्मस्स अनन्तरपच्चयेन पच्चयो, पुरिमा पुरिमा अतीता खन्धा पच्छिमानं पच्छिमानं पच्चुप्पन्नानं खन्धानं अनन्तर ...प०... अनुलोमं गोत्रभुस्सा" ति आदिवचनतो[1] पन अद्धासन्ततिपच्चुप्पन्नेस्वेव अनन्तरातीता चत्तारो खन्धा अतीता ति विञ्ञायन्ति, न च अभिधम्ममातिकाय आगतस्स पच्चुप्पन्नपदस्स अद्धासन्ततिपच्चुप्पन्नपदत्थता कत्थचि पाळियं वुत्ता। तस्मा तेहि इद्धिमस्स च परस्स च एकक्खणे चित्तुप्पत्तिया चेतोपरियञाणस्स पच्चुप्पन्नारम्मणता वुत्ता। यदा पन "यं इमस्स चित्तं पवत्तं, तं जानामि। यं भविस्सति, तं जानिस्सामी" ति वा आभोगं कत्वा पादकज्झानसमापज्जनादीनि करोति, तदा आवज्जनपरिकम्मानि चेतोपरियञाणञ्च अतीतानागतारम्मणानेव होन्ति आवज्जनेनेव विभागस्स कतत्ता।

यो पन "इद्धिमा परस्स चित्तं जानितुकामो आवज्जेति, आवज्जनं खणपच्चुप्पन्नं आरम्मणं कत्वा तेनेव सह निरुज्झति, ततो चत्तारि पञ्च वा जवनानि। येसं पच्छिमं

दस्सेति। सिद्धं होती ति खणपच्चुप्पन्नारम्मणत्ते पि परिकम्मचेतोपरियञाणानं अयं पाळि सुट्ठु नीता होतीति अत्थो।

अतीतत्तिको च एवं अभिन्नो होती ति एवं खणपच्चुप्पन्ने येव धम्मे इध पच्चुप्पन्नो ति गय्हमाने अञ्ञपदसङ्गहितस्सेव अनन्तरपच्चयभावं पकासेन्तो अतीतत्तिको च पट्ठाने अभेदतो सम्मा अत्थस्स उद्धटत्ता अविनासितो होति। अथ वा अतीतत्तिको ति पट्ठाने अतीतत्तिकपाळि, इमाय अतीतत्तिकपाळिया यथावुत्तकारणतो येव अभिन्नो अविसिट्ठो अञ्ञदत्थु संसन्दति समेतीति अत्थो।

यथासम्भवं ति आवज्जनाय अनागतारम्मणता, जवनानं पच्चुप्पन्नातीतारम्मणता अनागतपच्चुप्पन्नातीतारम्मणता ति योजेतब्बं। नानारम्मणता न सिया अद्धा

---

१. पट्ठान-२ : ४३३।

इद्धिचित्तं, सेसानि कामावचरानि, तेसं सब्बेसम्पि तदेव निरुद्धं चित्तमारम्मणं होति, न च तानि नानारम्मणानि होन्ति, अद्धावसेन पच्चुप्पन्नारम्मणत्ता" ति इदं वचनं निस्साय "आवज्जनजवनानं पच्चुप्पन्नातीतारम्मणभावे पि [१४२-सी०] नानारम्मणत्ताभावो विय एकद्वितिचतुपञ्चचित्तक्खणानागतेसु पि चित्तेसु आवज्जितेसु आवज्जनजवनानं यथासम्भवं अनागतपच्चुप्पन्नातीतारम्मणभावे पि नानारम्मणता [१९६-म०] न सिया, तेन चतुपञ्चचित्तक्खणानागते आवज्जिते अनागतारम्मणपरिकम्मानन्तरं खणपच्चुप्पन्नारम्मणं चेतोपरियञाणं सिद्धं" ति वदन्ति, तेसं वादो "अनागतारम्मणो धम्मो पच्चुप्पन्नारम्मणस्स धम्मस्स आसेवनपच्चयेन पच्चयो, पच्चुप्पन्नारम्मणो धम्मो अतीतारम्मणस्स धम्मस्स आसेवनपच्चयेन पच्चयो" ति इमेसं पञ्हानं अनुद्धटत्ता गणनाय च "आसेवने तीणी" ति वुत्तत्ता न सिज्झति। न हि कुसलकिरियमहग्गतं अनासेवनं अत्थीति।

एतस्स च वादस्स निस्सयभावो आवज्जनजवनानं खणपच्चुप्पन्ननिरुद्धारम्मणतावचनस्स न सिज्झति, यं पवत्तं यं पवत्तिस्सतीति वा विसेसं अकत्वा गहणे आवज्जनस्स अनागतग्गहणभावं, तदभावा जवनानम्पि वत्तमानग्गहणाभावञ्च सन्धायेव तस्स वुत्तता। तदा हि भवङ्गचलनानन्तरं अभिमुखीभूतमेव चित्तं आरब्भ आवज्जना पवत्ततीति।

वसेन पच्चुप्पन्नारम्मणत्ता ति अधिप्पायो। अयञ्च अत्थो एकिस्सा जवनवीथिया एकस्मिं[1] येव चित्ते पवत्तियं आवज्जनादीनं अनागतादि-आरम्मणता सम्भवतीति सम्भवदस्सनवसेन वुत्तो ति यथाधिप्पेतस्स अभिञ्ञाचित्तस्स खणपच्चुप्पन्ने पवत्तिं योजेत्वा दस्सेतुं "तेना" ति आदिमाह। तीणी ति "अतीतारम्मणो धम्मो अतीतारम्मणस्स धम्मस्स आसेवनपच्चयेन पच्चयो, अनागतारम्मणो धम्मो अनागतारम्मणस्स धम्मस्स, पच्चुप्पन्नारम्मणो धम्मो पच्चुप्पन्नारम्मणस्स धम्मस्स आसेवनपच्चयेन पच्चयो ति[1] पदन्तरसङ्गहितधम्मानपेक्खा धम्मा तीणि पञ्हविस्सज्जनानीति अत्थो। अनासेवनं नत्थी ति आसेवनलाभे सति यथाधम्मसासने अवचनस्स कारणं नत्थीति अवचनेन तत्थ इतरेसं पञ्हानं पटिसेधो विञ्ञायतीति अधिप्पायो।

एतस्स वादस्सा ति "आवज्जनजवनानं अनागतपच्चुप्पन्नारम्मणत्ते पि चेतोपरियञाणं सिद्धं" ति वादस्स। निस्सयभावो ति अत्थसम्भवतो यथावुत्तनयस्स जोतकभावो। यं ति चित्तं। तस्सा ति [२१५-म०] आवज्जनजवनानं खणपच्चुप्पन्ननिरुद्धारम्मणतावचनस्स। एत्थ च कालविसेसं आमसति, अनागता येव च आवज्जना पवत्ततीति नयिदं युज्जमानकं। अथ

---

१. पट्ठान-२ : ४५०।

जाननचित्तस्स पि वत्तमानारम्मणभावे आवज्जनजाननचित्तानं सहट्ठानदोसापत्तिया रासि-एकदेसावज्जनपटिवेधे सम्पत्तसम्पत्तावज्जनजानने च अनिट्ठे ठाने आवज्जनजवनानं नानारम्मणभावदोसापत्तिया च यं वुत्तं "खणपच्चुप्पन्नं चित्तं चेतोपरियञाणस्स आरम्मणं होती" ति तं अयुत्तं ति पटिक्खिपित्वा यथावुत्तदोसानापत्तिकालवसेनेव अद्धासन्ततिपच्चुप्पन्नारम्मणत्ता नानारम्मणताभावं दिस्वा आवज्जनजवनानं वत्तमानतं निरुद्धारम्मणभावो वुत्तो ति, तम्पि वचनं पुरिमवादिनो नानुजानेय्युं। तस्मिं हि सति आवज्जना कुसलानं ति आदीसु विय अञ्ञपदसङ्गहितस्स अनन्तरपच्चयविधानतो "पच्चुप्पन्नारम्मणा आवज्जना अतीतारम्मणानं खन्धानं अनन्तरपच्चयेन पच्चयो" ति वत्तब्बं सिया, न वुत्तं ति।

कस्मा पनेवं चेतोपरियञाणस्स पच्चुप्पन्नारम्मणता विचारिता, ननु "अतीतो धम्मो पच्चुप्पन्नस्स धम्मस्स, अनागतो धम्मो पच्चुप्पन्नस्स धम्मस्स आरम्मणपच्चयेन पच्चयो" ति[1] एतेसं विभङ्गेसु "अतीता खन्धा इद्धिविधञाणस्स चेतोपरियञाणस्स पुब्बेनिवासानुस्सतिञाणस्स यथाकम्मूपगञाणस्स आवज्जनाय आरम्मणपच्चयेन पच्चयो" ति[1], "अनागता खन्धा इद्धिविधञाणस्स चेतोपरियञाणस्स अनागतंसञाणस्स आवज्जनाय आरम्मणपच्चयेन पच्चयो" ति[1], उप्पन्नत्तिके च "अनुप्पन्ना खन्धा, [१९७–म०] उप्पादिनो खन्धा इद्धिविधञाणस्स चेतोपरियञाणस्स अनागतंसञाणस्स

"यं इमस्स चित्तं भविस्सति, तं जानामी" ति आभोगं करोति, एवं सति परिकम्माभिञ्ञाचित्तानम्पि अनागतारम्मणत्तमेवा ति सब्बत्थ आवज्जनजवनानं अनागतपच्चुप्पन्नारम्मणता न सिज्झतीति आह "पवत्ति ...... वुत्तत्ता" ति। दोसापत्तिया ति दोसापज्जनेन, दोसापत्तितो वा। रासि-एकदेसावज्जनपटिवेधे ति यथारुतवसेनेव पुरिमवादिपक्खमाह, सम्पत्तसम्पत्तावज्जनजानने ति अत्तना निद्धारितपक्खं। पुरिमवादिनो नानुजानेय्युं ति अद्धासन्ततिपच्चुप्पन्नपदत्थता अभिधम्ममातिकायं आगतपच्चुप्पन्नपदस्स नत्थीति अधिप्पाये ठत्वा नानुजानेय्युं। एत्थ च सति पि सभावभेदे आकारभेदाभावतो एकत्तनयवसेन आवज्जनपरिकम्माभिञ्ञाचित्तानं नानारम्मणतादोसो नत्थीति खणपच्चुप्पन्नारम्मणता चेतोपरियञाणस्स पुरिमवादीनं अधिप्पायविभावनमुखेन दस्सिता। अट्ठकथायं पन "सभावभेदे सति नानारम्मणतादोसाभावो नत्थि एवा ति एकस्मिं एव चित्ते अद्धासन्ततिवसेन पच्चुप्पन्नारम्मणता विभाविता" ति द्वीसु पि वादेसु यं युत्तं, तं विचारेत्वा गहेतब्बं।

---

१. पट्ठान–२ : ४३१–४३२।

आवज्जनाय आरम्मणपच्चयेन पच्चयो" ति[1] चेतोपरियञाणग्गहणं कत्वा "पच्चुप्पन्नो धम्मो पच्चुप्पन्नस्सा" ति एतस्स विभङ्गे "पच्चुप्पन्ना खन्धा इद्धिविधञाणस्स आवज्जनाय आरम्मणपच्चयेन पच्चयो" ति[2], उप्पन्नत्तिके च "उप्पन्ना खन्धा इद्धिविधञाणस्स आवज्जनाय आरम्मणपच्चयेन पच्चयो" ति[3] एत्तकस्सेव [१४३–सी०] वुत्तत्ता "पच्चुप्पन्नचित्ते चेतोपरियञाणं नप्पवत्तती" ति विञ्ञायति । यदि हि पवत्तेय्य, पुरिमेसु विय इतरेसु च चेतोपरियञाणग्गहणं कत्तब्बं सिया ति ? सच्चं कत्तब्बं, नयदस्सनवसेन पनेतं सङ्खित्तं ति अञ्ञाय पाळिया विञ्ञायति। 'अतीतारम्मणो धम्मो पच्चुप्पन्नारम्मणस्स धम्मस्स आरम्मणपच्चयेन पच्चयो[4], अनागतारम्मणो धम्मो पच्चुप्पन्नारम्मणस्स । पच्चुप्पन्नारम्मणो धम्मो पच्चुप्पन्नारम्मणस्सा" ति[5] एतेसं हि विभङ्गेसु "चेतोपरियञाणेन अतीतारम्मणपच्चुप्पन्नचित्तसमङ्गिस्स चित्तं जानाति। अतीतारम्मणा पच्चुप्पन्ना खन्धा चेतोपरियञाणस्स आवज्जनाय आरम्मणपच्चयेन पच्चयो" ति[5], चेतोपरियञाणेन अनागतारम्मणपच्चुप्पन्नचित्तसमङ्गिस्स चित्तं प····चेतोपरियञाणेन पच्चुप्पन्नारम्मणपच्चुप्पन्नचित्तसमङ्गिस्स चित्तं जानाति। पच्चुप्पन्नारम्मणा पच्चुप्पन्ना खन्धा चेतोपरियञाणस्स आवज्जनाय आरम्मणपच्चयेन पच्चयो" ति[5] चेतोपरियञाणस्स पच्चुप्पन्नारम्मणे पवत्ति वुत्ता ति तेनेवायं विचारणा कता ति वेदितब्बा।

तेसं ति तेसु द्वीसु ञाणेसू ति निद्धारणे सामिवचनं । **कुसला खन्धा** ति इद्धिविधपुब्बेनिवासानागतंसञाणापेक्खो बहुवचननिद्देसो, न चेतोपरियञाणयथाकम्मूपगञाणापेक्खो ति। तेसं चतुक्खन्धारम्मणभावस्स असाधको ति चे? न, अञ्ञत्थ "अवितक्कविचारमत्ता खन्धा च विचारो च चेतोपरियञाणस्स पुब्बेनिवासानुस्सतिञाणस्स अनागतंसञाणस्स आरम्मणपच्चयेन पच्चयो" ति[6] "सवितक्कसविचारा

तेनेवा ति यस्मा अतीतत्तिके उप्पन्नत्तिके च चेतोपरियञाणस्स वत्तमानधम्मारम्मणभावजोतनो पाठो न दिस्सति, तेनेव कारणेन ।

द्वीसु ञाणेसू ति पुब्बेनिवासचेतोपरियञाणेसु । **कम्ममुखेन गय्हन्ती** ति सति पि आरम्मणभावे चत्तारो खन्धा यथाकम्मूपगञाणेन कम्मद्वारेन कुसलाकुसला इच्चेव गय्हन्ति, न

---

१. पट्ठान–२ : ४२४ ।
२. पट्ठान–२ : ४३२ ।
३. पट्ठान–२ : ४२३ ।
४. पट्ठान–२ : ४४३ ।
५. पट्ठान–२ : ४४३–४४४ ।
६. पट्ठान–२ : ५२ ।

खन्धा च वितक्को च चेतोपरियञाणस्स पुब्बेनिवासानुस्सतिञाणस्स अनागतंसञाणस्स आरम्मणपच्चयेन पच्चयो" ति[1] च वुत्तत्ता चेतोपरियञाणापेक्खो पि बहुवचननिद्देसो ति इमस्सत्थस्स सिद्धितो। [१९८–म०] एवमपि यथाकम्मूपगञाणस्स "अवितक्कविचारमत्ता खन्धा च विचारो चा" ति आदीसु अवुत्तत्ता चतुक्खन्धारम्मणता न सिज्झतीति ? न, तत्थ अवचनस्स अञ्ञकारणत्ता। यथाकम्मूपगञाणेन हि कम्मसंसट्ठा चत्तारो खन्धा कम्मप्पमुखेन गय्हन्ति। तं हि यथा चेतोपरियञाणं पुरिमपरिकम्मवसेन सवितक्कादिविभागं सरागादिविभागञ्च चित्तं विभावेति, न एवं सविभागं विभावेति कम्मवसेनेव पन समुदायं विभावेतीति "अवितक्कविचारमत्ता खन्धा च विचारो चा" ति आदिके विभागकरणे तं न वुत्तं, न चतुक्खन्धानारम्मणतो ति। इदं पन अवचनस्स कारणं ति। केचि तत्थापि "पुब्बेनिवासानुस्सतिञाणस्स यथाकम्मूपगञाणस्स अनागतंसञाणस्सा" ति पठन्ति एव। न हि तं कुसलाकुसलविभागं विय सवितक्कादिविभागं कम्मं विभावेतुं असमत्थं। दुच्चरितसुचरितभावविभावनम्पि हि लोभादि-अलोभादिसम्पयोगविसेसविभावनं होतीति।

नियकज्झत्तपरियायस्स अभावेना ति सभावधम्मत्ता केनचि परियायेन नियकज्झत्तं [१४४–सी०] अहोन्तं सब्बथा बहिद्धाभावेनेव "एकन्तबहिद्धा" ति वुत्तं, न असभावधम्मत्ता बहिद्धा पि अहोन्तं कसिणादि विय **नियकज्झत्तमत्तस्स असम्भवतो। असभावधम्मत्ता** एव हि कसिणादि-अज्झत्ताधम्मभूतो च कोचि भावो न होतीति अज्झत्तत्तिके न वुत्तं ति अधिप्पायो। तं सब्बं आकिञ्चञ्ञायतनादि अतीतारम्मणत्तिके

पन विभागसो ति दस्सेति। लोभादिसम्पयोगविसेसेन दुच्चरितभावो, अलोभादिसम्पयोगविसेसेन च सुचरितभावो लक्खीयतीति दुच्चरितसुचरितानि विभावेन्तं लोभादयो पि विभावेति येव नाम होतीति आह "दुच्चरित...प०...भावनं होती" ति।

असभावधम्मस्स "अहं" ति आदिपञ्ञत्तिया अज्झत्तधम्मुपादानताय सिया कोचि अज्झत्तपरियायो, न पन सभावधम्मस्स असत्तसन्तानेव तस्सा ति वुत्तं "सभाव...प०... अहोन्तं" ति। तथा हि "अत्तनो खन्धादीनि पच्चवेक्खन्तस्सा" ति एत्थ "अज्झत्तारम्मणा" ति पदस्स अत्थविवरणवसेन "अज्झत्तं गय्हमानं अहं ति पञ्ञत्ति आदिसद्देन [२१६-म०] गण्हाती" ति वक्खति। यदि एवं तस्स अज्झत्तत्तिके पि अज्झत्तभावो वत्तब्बो सिया ? न, बहिद्धाभावस्स विय अज्झत्तभावस्स पि अज्झत्तत्तिके निप्परियायवसेन अधिप्पेतत्ता ति। यदाह

---

१. पट्ठान–२ : ४८।

"न वत्तब्बारम्मणं" ति सम्बन्धो। एत्थ च वुत्तं ति अनुञ्ञातत्ता वचनतो ति एतेहि कारणेहि पकासितं ति अत्थो।

इदानि तं ति "एतं हि आकिञ्चञ्ञायतनं" ति वुत्तं आकिञ्चञ्ञायतनं तं-सद्देन अकड्ढित्वा वदति। यो पनायमेत्थ अत्थो वुत्तो "आकिञ्चञ्ञायतनं एकम्पि इध वुच्चमानं अतीतारम्मणत्तिके तेन सहेकारम्मणतम्पि सन्धाय कामावचरकुसलादीनं न-वत्तब्बारम्मणताय वुत्तत्ता इधापि तेसं न वत्तब्बारम्मणभावं दीपेतीति कत्वा तस्मि वुत्ते तानि पि वुत्तानेव होन्ति, तस्मा विसुं न वुत्तानी" ति, तमञ्ञे नानुजानन्ति। न हि ईदिसं लेसवचनं अट्ठकथाकण्डे अत्थि। यदि सिया, परित्तारम्मणत्तिके येसं समानारम्मणानं परित्तादि-आरम्मणता न वत्तब्बता च वुत्ता। पुन अतीतारम्मणत्तिके तेसु एकमेव वत्वा अञ्ञं न वत्तब्बं सिया। तथा वेदनात्तिके समानवेदनानं येसं सुखाय वेदनाय [१९९-म०] सम्पयुत्तता वुत्ता, तेसु एकमेव पीतित्तिके सुखसहगत-निद्देसे वत्वा अञ्ञं न वत्तब्बं सिया। एवं उपेक्खासहगतनिद्देसादीसु योजेतब्बं। लेसेन पन विना अट्ठकथाकण्डे अत्थुद्धारस्स कतत्ता आकिञ्चञ्ञायतनस्स विय कामावचरकुसलादीनम्पि अज्झत्तारम्मणत्तिके न-वत्तब्बताय सति तानि पि न-वत्तब्बानीति

"असमा"'प०"न वुत्तं" ति। आकिञ्चञ्ञायतनादी ति आदिसद्देन आवज्जनानि तस्स पुरेचारिक-उपचारचित्तानि तस्स आरम्मणेन पवत्तनकपच्चवेक्खण-अस्सादनादिचित्तानि च सङ्गण्हाति।

आकिञ्चञ्ञायतनं तं-सद्देन आकड्ढित्वा वदति, न पन तं सब्बं ति वुत्तं, यञ्च तस्स पुरेचारिकं ति अत्थो। लेसवचनं ति एकदेससारुप्पेन समानारम्मणभावेन एकदेसस्सेव वचनं। लिस्सति सिलिस्सति एकदेसेन अल्लीयतीति हि लेसो। येसं ति कामावचरकुसलाकुसलमहा-किरियावज्जनचित्तानं कुसलकिरियाभेदस्स रूपावचरचतुत्थस्स च। एवं उपेक्खासहगतनिद्देसा-दीसू ति येसं अदुक्खमसुखाय वेदनाय सम्पयुत्तता वुत्ता, तेसु एकमेव उपेक्खासहगतनिद्देसं वत्वा इतरं न वत्तब्बं सिया ति अत्थो। आदिसद्देन हेतुसम्पयुत्तकामावचरादिनिद्देसे सङ्गण्हाति। तत्था पि हि परित्तसहेतुकादिभावेन वुत्तेसु धम्मेसु एकमेव वत्वा इतरं न वत्तब्बं सिया ति। **अभावनानिट्ठप्पवत्तिया** ति अभावनानिट्ठप्पवत्तिया अभावनाकारस्स उक्कंसप्प-वत्तिया ति अत्थो, अभावस्स वा उक्कंसप्पवत्तिया। **नवत्तब्बं जातं** अज्झत्तारम्मणादिभावेना ति अधिप्पायो। **तानि** ति आकिञ्चञ्ञायतनेन समानारम्मणानि आवज्जनादीनि। यदि एवं "**अभावनासामञ्ञे**" ति कस्मा वुत्तं। नहि आकिञ्चञ्ञायतनारम्मणस्स पच्चवेक्खण-अस्सादनादिवसेन

वत्तब्बानि, न पन वुत्तानि। तस्मा अभावनासामञ्ञे पि याय अभावनानिट्ठप्पवत्तिया आकिञ्चञ्ञायतनं पवत्तमानं न-वत्तब्बं जातं, तस्सा पवत्तिया अभावेन तानि न-वत्तब्बानीति न वुत्तानि।

गहणविसेसनिम्मितानेव हि कसिणादीनि सभावतो अविज्जमानानीति तदारम्मणानं बहिद्धागहणवसेन बहिद्धारम्मणता वुत्ता। आकिञ्चञ्ञायतनं पन न बहिद्धागहण-भावेन पवत्तति, नापि अज्झत्तग्गहणभावेन पवत्ततीति न वत्तब्बं ति वुत्तं। येन पन गहणाकारेन आकिञ्चञ्ञायतनं पवत्तति, न तेन सब्बञ्ञुतञ्ञाणम्पि पवत्तति। यदि पवत्तेय्य, तम्पि आकिञ्चञ्ञायतनमेव भवेय्य। यथाहि किलेसानं गोचरं पवत्तिविसे-सञ्च सब्बं जानन्तं सब्बञ्ञुतञ्ञाणं न यथा ते गण्हन्ति, तथा गण्हाति तस्स पि किलेस-भावापत्तितो, एवं आकिञ्चञ्ञायतनस्स च पवत्तनाकारं यथासभावतो जानन्तं तं आकिञ्चञ्ञायतनमिव न गण्हाति किमङ्गं पन अञ्ञं ति। तेन कामावचरकुसलानं न-वत्तब्बता न वुत्ता ति। अयं "आकिञ्चञ्ञायतनस्स विसयभूतो अपगमो नाम एको अत्थो अत्थी" ति अनिच्छन्तानं आचरियानं विनिच्छयो।

विपाकं पन न कस्सचि आरम्मणं होती ति विपाकं आकासानञ्चायतनं विपाकादीसु विञ्ञाणञ्चायतनेसु न [१४५-सी०] कस्सचि आरम्मणं होतीति अत्थो, तथा आकि-ञ्चञ्ञायतनञ्च नेवसञ्ञानासञ्ञायतनस्स। यथा हि विपाकत्तिके विपाकधम्म-धम्मनेवविपाकनविपाकधम्मधम्ममूलकेसु पञ्हेसु "आकासानञ्चायतनकुसलं विञ्ञाण-

---

पवत्तचित्तानं अभावनाकारेन पवत्ति अत्थीति ? न, अभावेतब्बताय अधिप्पेतत्ता। न भावी-यतीति हि अभावनं, न न भावेतीति।

गहणविसेसनिमित्तानी ति आदीसु अयमधिप्पायो—यदि पि भावनाञाणनिम्मिताकार-मत्तेसु सभावतो अविज्जमानेसु विसयेसु येभुय्येन महग्गता धम्मा पवत्तन्ति, बहिद्धाकारग्गहण-वसेन पन कसिणादीनं बहिद्धाभावो ति तदारम्मणधम्मा बहिद्धारम्मणा ति वुत्तं। कसिणानं हि सन्तानं मुञ्चित्वा उपट्ठानं विसेसतो वड्ढितकसिणवसेन विञ्ञायति, पठमारुप्पविञ्ञाणाभावस्स पन न बहिद्धाकारो, नापि [२१७-म०] अज्झत्ताकारो ति उभयाकारविधुरे तस्मिं अनञ्ञ-साधारणेन पवत्तियाकारेन पवत्तमानं आकिञ्चञ्ञायतनमेव न वत्तब्बारम्मणं वुत्तं, न इतरे इतराकारप्पवत्तितो ति। कामावचरकुसलानं ति निदस्सनमत्तं दट्ठब्बं।

आकिञ्चञ्ञायतनविपाकं नेवसञ्ञानासञ्ञायतनस्स विपाकादिकस्सा ति अत्थवसेन विभत्ति

ञायतनकुसलस्स आरम्मणपच्चयेन पच्चयो, आकिञ्चञ्ञायतनकुसलं नेवसञ्ञानासञ्ञायतनकुसलस्स, तथा विपाकस्स किरियस्स। आकासानञ्चायतनकिरियं विञ्ञाणञ्चायतनकिरियस्स आकिञ्चञ्ञायतनकिरियं नेवसञ्ञानासञ्ञायतनकिरियस्स आरम्मणपच्चयेन पच्चयो" ति[1] वुत्तं, [२००-म०] न तथा विपाकधम्ममूलकेसु "आकासानञ्चायतनआकिञ्चञ्ञायतनविपाका विञ्ञाणञ्चायतननेवसञ्ञानासञ्ञायतनविपाककुसलकिरियानं आरम्मणपच्चयेन पच्चयो" ति वुत्ता। **विपाकतो वुट्ठहित्वा चित्तस्स अभिनीहारासम्भवतो** ति विपाकं आरम्मणं कत्वा अभिनीहारासम्भवतो ति अत्थो। विपाकस्स हि आरम्मणं कत्वा नत्थि अभिनीहारो ति।

अत्तनो खन्धादीनी ति अरूपक्खन्धे "खन्धा" ति गहेत्वा **आदि**-सद्देन रूपं गण्हाति। अज्झत्तं वा गय्हमानं अहं ति पञ्ञत्ति **आदि**-सद्देन गण्हाति। एस नयो परेसं खन्धादिग्गहणे च। पुन पञ्ञत्तिग्गहणेन कसिणविहारादि-अनिन्द्रियबद्धुपादायपञ्ञत्तिमाह। **आदि**-सद्देन वा अहं परं पण्णत्तिग्गहणे सब्बं उपादायपञ्ञत्तिं। कम्मादीसु कम्मं अज्झत्तं, कम्मनिमित्तं उभयं, गतिनिमित्तं बहिद्धा ति दट्ठब्बं। अत्तनो सरीरे एव किमि हुत्वा निब्बत्तमानस्स गतिनिमित्तम्पि अज्झत्तं सिया। **मल्लिकाय** कुम्मासं ददमानाय रञ्ञो अग्गमहेसिट्ठानलाभं **सन्ततिमहामत्तस्स** हत्थिक्खन्धगतस्स अरहत्तप्पत्ति **सुमनमालाकारस्स** च पुप्फमुट्ठिना पूजेन्तस्स पच्चेकबोधिसच्छिकिरियं निस्साय भगवा सितं पात्वाकासि।

इमस्मिं तिके ओकासं लभन्ती ति परित्तारम्मणातीतारम्मणत्तिकेसु अलद्धोकासानि न वत्तब्बानीति वुत्तानि, इध पन न वत्तब्बानि न होन्ति, अज्झत्तादीसु

परिणामेतब्बा। अभिनीहारासम्भवतो ति समापत्तिचित्तस्स अभिनीहरणासम्भवतो। कुसलमेव विपाकस्स आरम्मणं ति कत्वा "विपाकस्स" ति आदि वुत्तं।

असभावधम्मत्ते पि बहिद्धाकारेन गहणीयभावतो कसिणानं बहिद्धाभावो विय एकन्ततो इध अज्झत्तधम्मुपादानताय अहं ति पञ्ञत्तिया सिया अज्झत्ताभावो ति वुत्तं "अज्झत्तं" ति आदि। "खन्धादी ति आदिसद्देन धातु-आयतनादि सङ्गण्हती" ति च वदन्ति। एस

---

1. पट्ठान-१ : १२३-१२६।

एकारम्मणतं लभन्तीति अत्थो। एतानि हि पञ्च सब्बत्थपादकाकासाल ककसिणचतुत्थानं कसिणारम्मणत्ता, ब्रम्हविहारचतुत्थस्स पञ्ञत्ति-आरम्मणत्ता, आनापानचतुत्थस्स निमित्तारम्मणत्ता **बहिद्धारम्मणानी** ति । **सकायचित्तानं** ति सककायचित्तानं, तेन पयोजनं नत्थि, तस्मा न तं अज्झत्तारम्मणं ति अत्थो। **अनिन्द्रियबद्धस्स वा रूपस्सा** ति एत्थ "तिस्सन्नं वा पञ्ञत्तीनं" ति इदम्पि **वा-सद्देन** आहरितब्बं, नयदस्सनं वा एतं दट्ठब्बं । ईदिसे हि काले बहिद्धारम्मणं ति ।

तिक-अत्थुद्धारवण्णना निट्ठिता ॥

नयो ति "अरूपक्खन्धे खन्धा ति गहेत्वा" ति आदिकं वण्णनानीति आह। **परेसं खन्धादिग्गहणे** ति परेसं खन्धादीति इमस्स पदस्स कथने उच्चारणे । **सब्बं उपादापञ्ञत्ति आह** आदिसद्देना ति सम्बन्धो ।

तिक-अत्थुद्धारवण्णना निट्ठिता ।

दुक-अत्थुद्धारवण्णना

[२०१-म०] **मानो…प…एकधा वा** ति इदं अवुत्तप्पकारदस्सनवसेन वुत्तं, अञ्ञथा मानो कामरागाविज्जासञ्ञोजनेहि एकतो उप्पज्जतीति द्विधा ति वत्तब्बो सिया। एस नयो भवरागादीसु। **तथा विचिकिच्छा** ति एत्थ **तथा** ति एतस्स एकधा वा ति अत्थो।

ससङ्खारिकेसू ति इदं कामच्छन्दनीवरणस्स तीहि नीवरणेहि सद्धिं उप्पज्जनट्ठानदस्सनमत्तं [१४६-सी०] दट्ठब्बं, न नियमतो तत्थ तस्स तेहि उप्पत्तिदस्सनत्थं थिनमिद्धस्स अनियतत्ता। **हेट्ठिमपरिच्छेदेना** ति उद्धच्चस्स सब्बाकुसले उप्पज्जनतो उद्धच्चसहगते द्वे, अञ्ञेसु थिनमिद्धकुक्कुच्चविरहे तीणि हेट्ठिमन्ततो उप्पज्जन्तीति कत्वा "द्वे तीणी" ति वुत्तं ति अत्थो। यत्तकानं पन एकतो उप्पत्तियं नीवरणा चेव नीवरणसम्पयुत्ता चा ति अयमत्थो सम्भवति, हेट्ठिमन्तेन तेसं दस्सनत्थं "द्वे" ति वुत्तं। ततो उद्धम्पि पवत्तियं अयमत्थो सम्भवति एत्था ति दस्सनत्थं **"तीणी"** ति वुत्तं। **द्वे तीणी** ति च द्वे वा तीणि वा ति अनियमनिद्देसो ति चत्तारि वा पञ्च वा ति पि विञ्ञायति। यत्थ सहुप्पत्ति, तत्थ नीवरणा चेव नीवरणसम्पयुत्ता

दुक-अत्थुद्धारवण्णना

अञ्ञथा ति वुत्तप्पकारस्स दस्सने। वुत्तप्पकारस्स दस्सनतो एव हि अट्ठकथायं ससङ्खारिकानं थिनमिद्धविरहे असङ्खारिकसदिसी योजना न दस्सिता। **भवरागादीसू** ति भवरागमूलिकादीसु योजनासु।

द्वे ति उद्धच्चाविज्जानीवरणानि। **तीणी** ति कामच्छन्दब्यापादविचिकिच्छासु एकेकेन उद्धच्चाविज्जानीवरणानि। **द्वे वा तीणी वा** ति पालियं वा-सद्दस्स लुत्तनिद्दिट्ठतं आह। अथ वा निपातसद्दसन्निधाने पि नामपदादीहि एव समुच्चयादि-अत्थो वुच्चति, न निपातपदेहि तेसं अवाचकत्ता ति अन्तरेन पि निपातपदं अयमत्थो लब्भति। तथा वचनिच्छाय सम्भवो एव हेत्थ पमाणं ति पाळियं "द्वे तीणी" ति वुत्तं। [२१८-म०] **यत्थ सहुप्पत्ती** ति आदिना "द्वे तीणी" ति लक्खणवचनं ति सब्बसाधारणमत्थमाह। तथा हि

च होन्तीति एतस्स वा लक्खणस्स दस्सनमेतं ति । यत्थ चत्तारि पञ्च च उप्पज्जन्ति, तत्थ चायमत्थो साधितो होति । एवञ्च कत्वा किलेसगोच्छके च "द्वे तयो" ति वुत्तं । लक्खणदस्सनवसेन हि किलेसा चेव किलेससम्पयुत्ता च वुत्ता, न सब्बेसं सम्भवन्तानं सरूपेन दस्सनवसेना ति ।

यदि उद्धच्चं सब्बाकुसले उप्पज्जति, कस्मा वुत्तं "उद्धच्चनीवरणं उद्धच्चसहगते चित्तुप्पादे उप्पज्जती" ति ? सुत्तन्ते वुत्तेसु पञ्चसु नीवरणेसु अञ्ञनीवरणरहितस्स उद्धच्चस्स विसयविसेसदस्सनत्थं । छट्ठं पन नीवरणं अभिधम्मे इतरेहि सहगतं ति तस्स अञ्ञनीवरणरहितस्स न कोचि विसयविसेसो अत्थि, अत्तना सहगतेहि विना उप्पज्जनट्ठानाभावा तदुपलक्खितस्स चित्तुप्पादस्स अभावा च नत्थेव विसयविसेसो, तस्मा "तं सब्बाकुसले उप्पज्जती" ति वुत्तं । उद्धच्चसहगतो पन वुत्तचित्तुप्पादो सेसधम्मानं उद्धच्चानुवत्तनभावेन तदुपलक्खितो उद्धच्चस्स विसयविसेसो, तस्मा सब्बाकुसले उप्पज्जमानं उद्धच्चं सामञ्ञेन "[२०२-म०] उद्धच्चनीवरणं" ति गहेत्वा पि तं अत्तनो विसयविसेसेन पकासेतुं "उद्धच्चसहगते चित्तुप्पादे उप्पज्जती" ति आह । एवञ्च पकासनं विसयविसेसेसु लोभदोमनस्ससहगतससङ्खारिकविचिकिच्छुद्धच्च-सहगतेसु पञ्च नीवरणानि ववत्थपेत्वा तेसं ब्यापकभावेन छट्ठं पकासेतुं कतं ति वेदितब्बं ।

"एवञ्च कत्वा किलेसगोच्छके चा" ति वुत्तं । तस्सायमधिप्पायो—किलेसद्वयसहितस्सेव चित्तुप्पादस्स अभावे पि पाळियं द्विग्गहणं कतं, किलेसानञ्च सम्भवन्तानं सब्बेसं सरूपेन गहणं न कतं ति द्वे तयो ति लक्खणकरणं ति विञ्ञायतीति ।

यदि सब्बाकुसले उप्पज्जनकस्स पि उद्धच्चस्स एको एव चित्तुप्पादो विसयभावेन वुच्चति, अविज्जानीवरणस्स पि तथा वत्तब्बं ति अधिप्पायेन "कस्मा वुत्तं" ति आदिना चोदेति । इतरो उद्धच्चनीवरणस्सेव तथा वत्तब्बतं अविज्जानीवरणस्स तथा वत्तब्बताभावञ्च दस्सेतुं "सुत्तन्ते" ति आदिमाह । तत्थ सुत्तन्ते वुत्तेसु पञ्चसु नीवरणेसू ति उद्धच्चसहगते उद्धच्चस्स अविज्जानीवरणेन नीवरणसहिततं आसङ्कित्वा वुत्तं । ननु च सुत्तन्ते पि "अविज्जानीवरणानं सत्तानं" ति आदीसु[1] अविज्जा "नीवरणं" ति वुत्ता ति ? सच्चमेतं, झानङ्गानं पटिपक्खभावेन पन सुत्तन्ते बहुलं कामच्छन्दादयो पञ्चेव नीवरणानि वुत्तानीति येभुय्यवुत्तिवसेन एवं वुत्तं ति दट्ठब्बं ।

---

१. सं० २ : १५१ ।

केचि पन "उद्धच्चसहगते ति सामञ्ञेन सब्बं उद्धच्चं 'उद्धच्चं' ति गहेत्वा तेन सहगते चित्तुप्पादे" ति वदन्ति, अयं पनत्थो न बहुमतो द्वादसमचित्तुप्पादस्स विय सब्बाकुसलचित्तुप्पादानं उद्धच्चेन अनुपलक्खितत्ता, सति च उपलक्खितत्ते "अट्ठसु लोभसहगतेसू" ति आदीसु विय अञ्ञेसं चित्तुप्पादानं निवत्तनत्थं "द्वादससु उद्धच्चसहगतेसू" ति वत्तब्बत्ता। उद्धच्चानुपलक्खितत्ता पन सब्बाकुसलानं अविज्जा-नीवरणं विय इदम्पि "सब्बाकुसलेसु उप्पज्जती" ति वत्तब्बं सिया, न पन वुत्तं तस्मा वुत्तनयेनेव अत्थो वेदितब्बो।

यस्मा च अविज्जानीवरणं विय उद्धच्चनीवरणञ्च सब्बाकुसलेसु उप्पज्जति, तस्मा निक्खेपकण्डे "कामच्छन्दनीवरणं उद्धच्चनीवरणेन नीवरणञ्चेव नीवरणसम्पयुत्तञ्चा" ति [१४७-सी०] आदि[1] वुत्तं। तेन एकस्मिं येव चित्तुप्पादे उद्धच्चनीवरणं उप्प-ज्जतीति अग्गहेत्वा अधिप्पायो मग्गितब्बो ति।

किलेसगोच्छके लोभादीनि दस किलेसवत्थूनि इमिना अनुक्कमेन इधेव अभिधम्मे आगतानि। तस्मा इधेव वुत्तस्स उद्धच्चकिलेसस्स अत्तना सह वुत्तेहि किलेसेहि

केचि पन "यथा निक्खेपकण्डे कुसलपटिपक्खभूतानि दुब्बलानि पि नीवरणानि पट्ठाने विय दस्सितानि। तथा हि पट्ठाने[2] 'नीवरणं धम्मं पटिच्च नीवरणो धम्मो उप्पज्जति न पुरेजातपच्चया। अरूपे कामच्छन्दनीवरणं पटिच्च थिनमिद्धनीवरणं उद्धच्चनीवरणं' ति आदि वुत्तं, न एवं अट्ठकथाकण्डे। अट्ठकथाकण्डे पन झानपटिपक्खभूतानि येव नीवरणानि निद्दिट्ठा-नीति 'उद्धच्चनीवरणं उद्धच्चसहगते चित्तुप्पादे उप्पज्जती' ति वुत्तं। अट्ठकथायं पन उद्ध-च्चनीवरणस्स कामच्छन्दादीहि एकतो उप्पत्तिदस्सनं निक्खेपकण्डानुसारेन कतं एकतो उप्पत्तिया पभेददस्सनत्थं। तत्थ हि पाळियं येव तानि वित्थारतो वुत्तानी" ति वदन्ति। अयञ्च वादो "उद्धच्चनीवरणं उद्धच्चसहगते चित्तुप्पादे उप्पज्जती" ति इदमेव वचनं ञापकं ति कत्वा वुत्तो। अञ्ञथा अविज्जानीवरणं विय वत्तब्बं सिया। नहि इतो अञ्ञं परियुट्ठान-पट्ठायीनि येव नीवरणानि अत्थुद्धारकण्डे अधिप्पेतानीति इमस्स अत्थस्स साधकं वचनं अत्थि, इदं वचनं द्वेतोणिवचनस्स सामञ्ञेन सब्बनीवरणसङ्गाहकत्ता यथावुत्तवचनस्स [२१९-म०] विसयविसेसप्पकासनसङ्खातेन पयोजनन्तरेन वुत्तभावस्स दस्सितत्ता च ञापकं न भवतीति दिस्सति, तस्मा विचारेत्वा गहेतब्बं।

अग्गहेत्वा ति यथारुतवसेनेव अत्थं अग्गहेत्वा यथा निक्खेपकण्डपट्ठानादीहि न इमिस्सा

---

१. अभि० १ ध० सं० २६१। २. पट्ठान—३ : ३०२।

रहितस्स विसयविसेसो नत्थीति विसयविसेसेन पकासनं अकत्वा "उद्धच्चञ्च अहिरिकञ्च अनोत्तप्पञ्च सब्बाकुसलेसु उप्पज्जती" ति वुत्तं। किलेसा चेव संकिलिट्ठ-पदनिद्देसे यस्मा संकिलिट्ठपदं किलेससम्पयुत्तपदेन असमानत्थं केवलं मलेन उपतापिततं विबाधिततञ्च दीपेति, तस्मा किलेसा चेव किलेससम्पयुत्तपदनिद्देसेन समानं निद्देसं अकत्वा "ते व किलेसा किलेसा चेव संकिलिट्ठा चा" ति वुत्तं।

द्वे तयो किलेसा ति एत्थ "द्वे तयो ति हेतुगोच्छकादीसु वुत्ताधिकारवसेन रूळ्हिया वुत्तं" ति केचि वदन्ति। यदि अत्थं अनपेक्खित्वा रूळ्हिया वुच्चेय्य, गन्थगोच्छके च "यत्थ द्वे तयो [२०३-म०] गन्था एकतो उप्पज्जन्ती" ति वत्तब्बं सिया। यञ्च वदन्ति "यत्थ द्वे तयो अञ्ञेहि एकतो उप्पज्जन्तीति इमस्सत्थस्स सम्भवतो एकतो-सद्दो किलेसगोच्छके सात्थको, न हेतुगोच्छकादीसु तेन विना पि अधिप्पायविजाननतो" ति तम्पि न, हेतुगोच्छकादीसु पि नाना-उप्पत्तियं हेतू चेव हेतुसम्पयुत्तादिग्गहणनिवारणत्थत्ता एकतो-सद्दस्स, तस्मा रुळ्ही-अन्वत्थकथारोपनञ्च वज्जेत्वा यथा वुत्तेनेव नयेन अत्थो वेदितब्बो ति। **लोभो छधा** ति आदिना लोभ-

---

पाळिया विरोधो होति, एवं अधिप्पायो गवेसितब्बो ति यथावुत्तमेवत्थं निगमेति।

तेसं ति लोभादितो अञ्ञेसं। **दस्सिता** ति कथं दस्सिता? **मानो ताव** लोभ-मोह-उद्धच्च-अहिरिकानोत्तप्पेहि, लोभमोहथिनउद्धच्च-अहिरिकानोत्तप्पेहि, तथा दिट्ठि, विचिकिच्छा मोह-उद्धच्च-अहिरिकानोत्तप्पेहि थिनं लोभमोहदिट्ठि-उद्धच्च-अहिरिकानोत्तप्पेहि, लोभमोह-मान-उद्धच्च-अहिरिकानोत्तप्पेहि लोभमोह-उद्धच्च-अहिरिकानोत्तप्पेहि, दोसमोह-उद्धच्च-अहिरिकानोत्तप्पेहि, उद्धच्चं लोभमोहदिट्ठि-अहिरिकानोत्तप्पेहि, लोभमोहदिट्ठिथिन-अहिरिकानोत्तप्पेहि, लोभ-मोहमान-अहिरिकानोत्तप्पेहि, लोभमोहमानथिन-अहिरिकानोत्तप्पेहि, लोभमोहथिन-अहिरिकानोत्तप्पेहि, लोभमोह-अहिरिकानोत्तप्पेहि, दोसमोह-अहिरिकानोत्तप्पेहि, दोसमोहथिन-अहिरिकानोत्तप्पेहि, मोह-विचिकिच्छा-अहिरिकानोत्तप्पेहि, मोह-अहिरिकानोत्तप्पेहि एकतो उप्पज्जति।

यथा च उद्धच्चं, एवं अहिरिकानोत्तप्पानि च योजेत्वा वेदितब्बानि। कथं? अहिरिकं लोभमोहदिट्ठि-उद्धच्चानोत्तप्पेहि, लोभमोहदिट्ठिथिन-उद्धच्चानोत्तप्पेहि, लोभमोहमान-उद्धच्चानोत्तप्पेहि, लोभमोहमानथिन-उद्धच्चानोत्तप्पेहि, लोभमोहथिन-उद्धच्चानोत्तप्पेहि, लोभमोह-उद्धच्चानोत्तप्पेहि, दोसमोह-उद्धच्चानोत्तप्पेहि, दोसमोहथिन-उद्धच्चानोत्तप्पेहि, मोहविचिकिच्छा-उद्धच्चानोत्तप्पेहि, मोह-उद्धच्चानोत्तप्पेहि च एकतो उप्पज्जति। अनोत्तप्पं लोभमोहदिट्ठि-उद्धच्चाहिरिकेहि, लोभमोह-

पटिघमोहानं अञ्ञेहि एकतो उप्पत्तिदस्सनेनेव तेसम्पि लोभादीहि एकतो उप्पत्ति दस्सिता ति वेदितब्बा सेसं उत्तानत्थमेवा ति।

अट्ठकथाकण्डवण्णना निट्ठिता॥

चत्तारि च सहस्सानि पुन तीणि सतानि च।
अट्ठसालिनिया एते पदा लीनत्थजोतका॥

धम्ममित्तो ति नामेन सक्कच्चं अभियाचितो।
आनन्दो इति नामेन कता गन्था सुबुद्धिना ति॥

इति अट्ठसालिनिया लीनत्थपदवण्णना धम्मसङ्गणीमूलटीका समत्ता।

दिट्ठिथिन-उद्धच्चाहिरिकेहि, लोभमोहमान-उद्धच्चाहिरिकेहि, लोभमोहमानथिन-उद्धच्चाहिरिकेहि, लोभमोहथिन-उद्धच्चाहिरिकेहि, लोभमोह-उद्धच्चाहिरिकेहि, दोसमोह-उद्धच्चाहिरिकेहि, दोस-[२२०-म०] मोहथिन-उद्धच्चाहिरिकेहि, मोहविचिकिच्छा-उद्धच्चाहिरिकेहि, मोह-उद्धच्चाहिरिकेहि च एकतो उप्पज्जतीति एवमेत्थ मानादीनम्पि एकतो उप्पत्ति वेदितब्बा। सेसं उत्तानत्थमेव।

इति धम्मसङ्गणीमूलटीकाय लीनत्थ-पदवण्णना

धम्मसङ्गणी-अनुटीका समत्ता।

परिशिष्ट—१

उद्धटगन्थानुक्कमणी

ये धम्मा हेतुप्पभवा हेतूं तेसं तथागतो आह।
तेसं च यो निरोधो एवंवादी महासमणो ॥

गन्थागतसद्दानं अकारादिक्कमेन अनुक्कमणी

[अ]

[आ]

[इ]

[प]

[य]

सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालयः

श्रुतम् मे गोपाय